



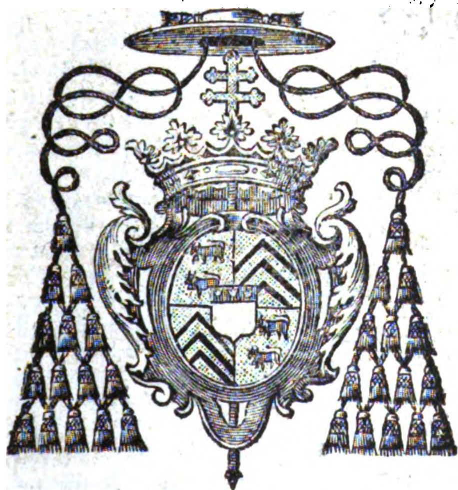
Vol. 2

# BREVIARIUM ECCLESIÆ ROTOMAGENSIS

Autoritate Illustrissimi ac Reverendissimi in Christo Patris D. D. LUDOVICI DE LAVERGNE DE TRESSAN Rotomagensis Archiepiscopi, Primatis Normaniæ.

*De consensu Venerabilis Capituli reformatum & editum.*

PARS VERNA.



ROTOMAGI,
Apud JORE Patrem & Filium, Illustrissimi ac Reverendissimi Archiepiscopi ejusque Cleri Biblio-Typographos, in vico Judæorum.

MDCCXXVIII.

*CUM PRIVILEGIO REGIS.*

## *Ordo observatus in hujusce Breviarii editione.*

IN omnibus Officiis omnia ex purissimo Scripturarum fonte deprom sunt sensu nativo, aut Patrum interpretatione recepto. Sermones scriptis antiquiorum Patrum excerpti sunt, & in rebus historicis, p batissimis tantùm autoribus fides est adhibita.

Jejuniorum ferè omnium, Vigiliarum, Orationum publicarum, solemnitatum observandæ institutiones ex Scriptoribus antiquis aut coæ neis referuntur.

Psalterium per hebdomadam recitatur eâ distinctum partitione, q visa est opportunior. Unicuique Feriæ inserta sunt Capitula propr Die Dominico commendatur Amor in Deum. Feria II. Amor Dei e homines. Feria III. Charitas in proximum. Feria IV. Spei dotes ex muntur. Feria V. agitur de Fide. Feria VI. de Christi Passione. Et t dem Sabbato de diversis vitæ christianæ regulis. Hymni ad ment Urbani VIII. emendati sunt, suffecti novi ad Vesperas, qui sex dier opus exhibent. In Mysteriis & Officiis Sanctorum Hymni quadragi & suprà ad usum hujus Breviarii de novo conditi sunt.

Scriptura sacra in totam anni seriem eâ cautione distributa est, diebus Dominicis Lectiones primi Nocturni concinnentur ex libro hi rico occurrente; Lectiones verò secundi ex libris Sapientiæ, Canti Ecclesiastæ, Ecclesiastici & Proverbiorum : Duæ autem priores Lec nes tertii Nocturni desumantur ex libris moralibus novi Testamenti, ut materia tertii Nocturni sit affinis cum materia secundi, & hæc se morali exponat quod modo historico in primo Nocturno lectum e nona Lectio Evangelium est cum Homilia.

Eâ ratione Mysteriorum & Sanctorum Officia sive in Proprio, s in Communi concinnata sunt, ut in primis Vesperis exhibeatur qu propheticum est; & in Nocturnis paulatim crescat materiæ subje expositio; & tandem in Laudibus gratiarum actiones Deo referant

In condendis Responsoriis selecta sunt, quantùm licuit, testimo Scripturæ, quæ ad orationem efformandam visa sunt aptiora; in dem Responsorio novum Testamentum veteri semper adjungitur.

Singulis diebus Canon unus ad absolutionem Capituli legendus assig tur : & ut illi Canones majori polleant autoritate, ex Conciliis gene libus, tum etiam ex Conciliis & Synodis Provinciæ Rotomagensis seligi cura fuit.

Prophetiæ quæ Christum venturum edocuerunt, leguntur ferè om tempore Adventûs. A Vigilia Epiphaniæ usque ad diem octavam ej dem solemnitatis, recitantur quæ spectant Gentium vocationem; Te pore verò Passionis, quæ Christum passurum prænuntiaverunt. In Fe & intra Octavam solemnitatis Eucharistiæ antiqua colliguntur mon menta, quibus & realitas Corporis Christi & sacrificii veritas, tum Co munionis antiqua disciplina evincuntur & elucidantur.

In Officio Defunctorum referuntur omnia veteris & novi Testamen tum etiam ferè omnium sanctorum Patrum testimonia, quibus futu corporum resurrectio Purgatorii veritas, & antiquus usus orandi Defunctis contra impugnantes hæreses comprobantur.

ã ij

# TABULA FESTORUM

| *Anni Domini.* | *Aureus Numerus.* | *Epacta.* | *Indictio.* | *Littera Dominicales.* | *Dominica post Epiph.* | *Septuagesima.* | *Dies Cinerum.* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1728 | 19 | xviij | 6 | d c | 2 † | 25 Jan. | 11 Febr. |
| 1729 | 1 | * | 7 | b | 5 † | 13 Febr. | 2 Mart. |
| 1730 | 2 | xj | 8 | a | 4 | 5 Febr. | 22 Febr. |
| 1731 | 3 | xxij | 9 | g | 2 | 21 Jan. | 7 Febr. |
| 1732 | 4 | iij | 10 | f e | 4 † | 10 Febr. | 27 Febr. |
| 1733 | 5 | xiv | 11 | d | 3 † | 1 Febr. | 18 Febr. |
| 1734 | 6 | xxv | 12 | c | 6 | 21 Febr. | 10 Mart. |
| 1735 | 7 | vj | 13 | b | 4 † | 6 Febr. | 23 Febr. |
| 1736 | 8 | xvij | 14 | a g | 3 | 29 Jan. | 15 Febr. |
| 1737 | 9 | xxviij | 15 | f | 5 † | 17 Febr. | 6 Mart. |
| 1738 | 10 | ix | 1 | e | 3 † | 2 Febr. | 19 Febr. |
| 1739 | 11 | xx | 2 | d | 2 † | 25 Jan. | 11 Febr. |
| 1740 | 12 | j | 3 | c b | 5 † | 14 Febr. | 2 Mart. |
| 1741 | 13 | xij | 4 | a | 3 | 29 Jan. | 15 Febr. |
| 1742 | 14 | xxiij | 5 | g | 2 | 21 Jan. | 7 Febr. |
| 1743 | 15 | iv | 6 | f | 4 † | 10 Febr. | 27 Febr. |
| 1744 | 16 | xv | 7 | e d | 3 † | 2 Febr. | 19 Febr. |
| 1745 | 17 | xxvj | 8 | c | 5 † | 14 Febr. | 3 Mart. |
| 1746 | 18 | vij | 9 | b | 4 † | 6 Febr. | 23 Febr. |
| 1747 | 19 | xviij | 10 | a | 3 † | 29 Jan. | 15 Febr. |
| 1748 | 1 | * | 11 | g f | 5 | 11 Febr. | 28 Febr. |
| 1749 | 2 | xj | 12 | e | 3 † | 2 Febr. | 19 Febr. |
| 1750 | 3 | xxij | 13 | d | 2 † | 25 Jan. | 11 Febr. |
| 1751 | 4 | iij | 14 | c | 4 † | 7 Febr. | 24 Febr. |
| 1752 | 5 | xiv | 15 | b a | 3 | 30 Jan. | 16 Febr. |
| 1753 | 6 | xxv | 1 | g | 6 | 18 Febr. | 7 Mart. |
| 1754 | 7 | vj | 2 | f | 4 † | 10 Febr. | 27 Febr. |
| 1755 | 8 | xvij | 3 | e | 2 † | 26 Jan. | 12 Febr. |
| 1756 | 9 | xxviij | 4 | d c | 5 † | 15 Febr. | 3 Mart. |
| 1757 | 10 | ix | 5 | b | 4 † | 6 Febr. | 23 Febr. |
| 1758 | 11 | xx | 6 | a | 2 | 22 Jan. | 8 Febr. |
| 1759 | 12 | j | 7 | g | 5 | 11 Febr. | 28 Febr. |
| 1760 | 13 | xij | 8 | f e | 3 † | 3 Febr. | 20 Febr. |
| 1761 | 14 | xxiij | 9 | d | 1 † | 18 Jan. | 4 Febr. |
| 1762 | 15 | iv | 10 | c | 4 † | 7 Febr. | 24 Febr. |
| 1763 | 16 | xv | 11 | b | 3 † | 30 Jan. | 16 Febr. |
| 1764 | 17 | xxvj | 12 | a g | 6 | 19 Febr. | 7 Mart. |
| 1765 | 18 | vij | 13 | f | 3 † | 3 Febr. | 20 Febr. |
| 1766 | 19 | xviij | 14 | e | 2 † | 26 Jan. | 12 Febr. |
| 1767 | 1 | * | 15 | d | 5 † | 15 Febr. | 4 Mart. |

# MOBILIUM TEMPORARIA.

| Anni Domini. | PASCHA. | ASCENSIO DOMINI. | PENTECOSTE. | FESTUM CORPORIS CHRISTI. | Dominica post Pente.. | Dominica prima Adventus. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1728 | 28 Mart. | 6 Maii. | 16 Maii. | 27 Maii. | 27 | 28 Nov. |
| 1729 | 17 April. | 26 Maii. | 5 Junii. | 16 Junii. | 24 | 27 Nov. |
| 1730 | 9 April. | 18 Maii. | 28 Maii. | 8 Junii. | 26 | 3 Dec. |
| 1731 | 25 Mart. | 3 Maii. | 13 Maii. | 24 Maii. | 28 | 2 Dec. |
| 1732 | 13 April. | 22 Maii. | 1 Junii. | 12 Junii. | 25 | 30 Nov. |
| 1733 | 5 April. | 14 Maii. | 24 Maii | 4 Junii. | 26 | 29 Nov. |
| 1734 | 25 April. | 3 Junii. | 13 Junii. | 24 Junii. | 23 † | 28 Nov |
| 1735 | 10 April. | 19 Maii. | 29 Maii. | 9 Junii. | 25 | 27 Nov. |
| 1736 | 1 April. | 10 Maii. | 20 Maii. | 31 Maii. | 27 | 2 Dec. |
| 1737 | 21 April. | 30 Maii. | 9 Junii. | 20 Junii. | 24 | 1 Dec. |
| 1738 | 6 April. | 15 Maii. | 25 Maii | 5 Junii. | 26 | 30 Nov. |
| 1739 | 29 Mart. | 7 Maii | 17 Maii. | 28 Maii. | 27 | 29 Nov. |
| 1740 | 17 April. | 26 Maii. | 5 Junii. | 16 Junii. | 24 | 27 Nov. |
| 1741 | 2 April. | 11 Maii. | 21 Maii. | 1 Junii. | 27 | 3 Dec. |
| 1742 | 25 Mart. | 3 Maii. | 13 Maii. | 24 Maii. | 28 | 2 Dec. |
| 1743 | 14 April. | 23 Maii. | 2 Junii. | 13 Junii. | 25 | 1 Dec. |
| 1744 | 5 April. | 14 Maii. | 24 Maii. | 4 Junii. | 26 | 29 Nov. |
| 1745 | 18 April. | 27 Maii. | 6 Junii. | 17 Junii. | 24 | 28 Nov. |
| 1746 | 10 April. | 19 Maii. | 29 Maii. | 9 Junii. | 25 | 27 Nov. |
| 1747 | 2 April. | 11 Maii. | 21 Maii. | 1 Junii. | 27 | 3 Dec. |
| 1748 | 14 April. | 23 Maii. | 2 Junii. | 13 Junii. | 25 | 1 Dec. |
| 1749 | 6 April. | 15 Maii. | 25 Maii. | 5 Junii. | 26 | 30 Nov. |
| 1750 | 29 Mart. | 7 Maii. | 17 Maii. | 28 Maii. | 27 | 29 Nov. |
| 1751 | 11 April. | 20 Maii. | 30 Maii. | 10 Junii. | 25 | 28 Nov. |
| 1752 | 2 April. | 11 Maii. | 21 Maii. | 1 Junii. | 27 | 3 Dec. |
| 1753 | 22 April. | 31 Maii. | 10 Junii. | 21 Junii. | 24 | 2 Dec. |
| 1754 | 14 April. | 23 Maii. | 2 Junii. | 13 Junii. | 25 | 1 Dec. |
| 1755 | 30 Mart. | 8 Maii. | 18 Maii. | 29 Maii. | 27 | 30 Nov. |
| 1756 | 18 April. | 27 Maii. | 6 Junii. | 17 Junii. | 24 | 28 Nov. |
| 1757 | 10 April. | 19 Maii. | 29 Maii. | 9 Junii. | 25 | 27 Nov. |
| 1758 | 26 Mart. | 4 Maii. | 14 Maii. | 25 Maii. | 28 | 3 Dec. |
| 1759 | 15 April. | 24 Maii. | 3 Junii. | 14 Junii. | 25 | 2 Dec. |
| 1760 | 6 April. | 15 Maii. | 25 Maii. | 5 Junii. | 26 | 30 Nov. |
| 1761 | 22 Mart. | 30 April. | 10 Maii. | 21 Maii. | 28 | 29 Nov. |
| 1762 | 11 April. | 20 Maii. | 30 Maii. | 10 Junii. | 25 | 28 Nov. |
| 1763 | 3 April. | 12. Maii. | 22 Maii. | 2 Junii. | 26 | 27 Nov. |
| 1764 | 22 April. | 31 Maii. | 10 Junii. | 21 Junii. | 24 | 2 Dec. |
| 1765 | 7 April. | 16 Maii. | 26 Maii. | 6 Junii. | 26 | 1 Dec. |
| 1766 | 30 Mart. | 8 Maii. | 18 Maii. | 29 Maii. | 27 | [illegible]0 Nov. |
| 1767 | 19 April. | 28 Maii. | 7 Junii. | 18 Junii. | 24 | 20 Nov. |
| 1768 | 2 April. | 12 Maii. | 22 Maii. | 2 Junii. | 26 | 27 Nov. |

# JANUARIUS.

| Cyclus Epact. | Litt. Dom. | Dies Mensis | | | Obitus |
|---|---|---|---|---|---|
| * | a | Cal. | 1 | CIRCUNCISIO DOMINI, & OCTAVA NATIVITATIS EJUS, *Triplex secunda Classis.* | |
| xxix | b | iiij | 2 | Festum sancti Basilii Magni, Cæsariensis in Cappadocia Episcopi & Ecclesiæ Doctoris, (è 1. Januarii.) *semiduplex. Commem.* S. Fulgentii, Ruspensis Episcopi, (è die 1.) | an. 379. an. 533. |
| xxviij | c | iij | 3 | Genovefæ Virginis Parisiensis, *simplex.* | an. 512. |
| xxvij | d | Prid. | 4 | Titi, Cretensis Episcopi, discipuli S. Pauli, *simplex.* | Circa an. 90. |
| xxvj | e | Non. | 5 | Vigilia Epiphaniæ Domini *sine jejunio. Commem.* S. Eduardi Regis Angliæ. | c. an. 1066. |
| 25. xxv | f | viij | 6 | EPIPHANIA seu MANIFESTATIO DOMINI, *Solemne.* | |
| xxiiij | g | vij | 7 | De Octava Epiphaniæ. | |
| xxiij | a | vj | 8 | De Octava Epiphaniæ. *Commem.* S. Luciani, Bellovacensis Episcopi. | c. 3. sec. |
| xxij | b | v | 9 | De Octava Epiphaniæ. | |
| xxj | c | iiij | 10 | De Octava Epiphaniæ. *Commem.* S. Guillelmi, Bituricensis Episcopi. | an. 1209. |
| xx | d | iij | 11 | De Octava Epiphaniæ. | |
| xix | e | Prid. | 12 | De Octava Epiphaniæ. | |
| xviij | f | Idib. | 13 | Baptismus Christi, & Octava Epiph. *duplex majus.* | |
| xvij | g | xix | 14 | Hilarii, Pictaviensis Episcopi, & Ecclesiæ Doctoris, (è die 13.) *Semiduplex. Commem.* S. Felicis Presbyteri Nolani & Confessoris fidei. | c. an. 368 c. an. 265 |
| xvj | a | xviij | 15 | Pauli, primi Eremitæ, Thebaïdis, *semiduplex. Commem.* S. Mauri, Glannofoliensis Abbatis. | c. an. 341 an. 604. |
| xv | b | xvij | 16 | | |
| xiiij | c | xvj | 17 | Antonii Abbatis. | an. 356. |
| xiij | d | xv | 18 | *Prima Septuagesima.* | |
| xij | e | xiiij | 19 | Remigii Pontificis Rotomagensis, *simplex.* | an. 773. |
| xj | f | xiij | 20 | Fabiani Papæ & Sebastiani Romæ, Martyrum; *duplex majus.* [In Ecclesia Metropolitana, *Triplex secunda Classis.*] | an. 250. c. an. 288 |
| x | g | xij | 21 | Agnetis, Romæ Virginis & Martyris, *simplex.* | c. an. 304 |
| ix | a | xj | 22 | Vincentii Diaconi Cæsaraugustani, Valentiæ in Hispania Martyris, *duplex minus.* | an. 304. |
| viij | b | x | 23 | Waningi, Laïci Rotomagensis, *semiduplex.* | |
| vij | c | ix | 24 | Timothei, Ephesini Episcopi & Martyris, (è die 22.) *simplex.* | an. 97. |
| vj | d | viij | 25 | Conversio S. Pauli Apostoli: *an.* 34. *vel* 35. *duplex minus.* | |
| v | e | vij | 26 | Polycarpi, Smyrnensis Episcopi & Martyris. (è die 23. Febr.) *simplex. Commem.* S. Paulæ, Viduæ Romanæ. | an. 147. vel 166. an. 404. |
| iiij | f | vj | 27 | Joannis Chrysostomi, Constantinopolitani Episc. & Ecclesiæ Doctoris, (è die 14. Septemb.) *semiduplex.* | an. 704. |
| iij | g | v | 28 | Caroli Magni, Imperatoris, & Regis Franciæ, *semiduplex.* [In Ecclesia Metropolitana, *Tripl.x secunda classis.*] *Commem.* S. Cyrilli, Alexandrini Episcopi, & Ecclesiæ Doctoris. | an. 814. an. 448. |
| ij | a | iv | 29 | Francisci Salesii, Genevensis Episcopi, (è 28. Decembris.) *duplex minus.* | an. 1622 |
| j | b | iij | 30 | Bathildis, Francorum Reginæ, Viduæ, *semiduplex.* | c. an. 680. |
| * | c | Prid. | 31 | Juliani Cenomanensis Episcopi, *semiduplex.* | c. an. [illegible] |

| Cycl. Epact. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | | Obiere |
|---|---|---|---|---|---|
| xxix | d | Cal. | 1 | Severi Abrincensis Episcopi, *duplex minus. Commem.* S. Ignatii, Antiocheni Episcopi & Martyris, (è 20. Decembris.) | an. 107. |
| xxviij | c | iiij | 2 | PRÆSENTATIO DOMINI, & PURIFICATIO B. MARIÆ VIRGINIS, *Triplex primæ classis.* | |
| xxvij | f | iij | 3 | Austrebertæ Virginis Rotomagensis, Abbatissæ Pauliaci, *semiduplex. Commem.* S. Blasii, Sebasteni Episcopi & Martyris. | an. 704. c. an. 316 |
| 25. xxv | g | Prid. | 4 | Isidori Presbyteri & Solitarii, *semiduplex.* *Prima dies Cinerum.* | an. 445. |
| xxv. xxiiij | a | Non. | 5 | Agathæ Virginis & Martyris Catanensis, *simplex.* | an. 250. |
| xxiij | b | viij | 6 | Amandi Trajectensis Episcopi, *simplex. Commem.* S. Vedasti Atrebatensis Episcopi. | an. 675. c. an. 539 |
| xxij | c | vij | 7 | | |
| xxj | d | vj | 8 | | |
| xx | e | v | 9 | Ansberti Rotomagensis Pontificis, *semiduplex.* | an. 696. |
| xix | f | iiij | 10 | | |
| xviij | g | iij | 11 | | |
| xvij | a | Prid. | 12 | | |
| xvj | b | Idib. | 13 | | |
| xv | c | xvj | 14 | | |
| xiiij | d | xv | 15 | | |
| xiij | e | xiiij | 16 | | |
| xij | f | xiij | 17 | | |
| xj | g | xij | 18 | | |
| x | a | xj | 19 | | |
| ix | b | x | 20 | | |
| viij | c | ix | 21 | *Ultima Septuagesima.* | |
| vij | d | viij | 22 | | |
| vj | e | vij | 23 | Vigilia *sine jejunio.* | |
| v | f | vj | 24 | Matthiæ Apostoli, *duplex majus.* | 1. sec. |
| iiij | g | v | 25 | Prætextati, Rotomagensis Pontificis, *simplex.* | an. 586. |
| iij | a | iiij | 26 | | |
| ij | b | iij | 27 | Honorinæ Virginis & Mart. Rotomag. *simplex.* | 4. sec. |
| j | c | Prid. | 28 | Martyrum, qui obiere in charitatis officio erga pestilentiâ conflictatos Alexandriæ, *simplex.* | an. 263 |

In anno Bissextili Februarius est dierum 29. Vigilia S. Matthiæ fit die 24. Festum verò S. Matthiæ celebratur 25. Februarii & bis dicitur, sexto Kalendas, id est, 24. & 25. Littera autem Dominicalis, quæ assumpta fuit mense Januario, mutatur in præcedentem: ut, si in Januario Littera Dominicalis fuit, *a*, mutatur in præcedentem, quæ est, *g*; & sic de aliis.

# MARTIUS.

| Cyclus Epact. | Litt. Dom. | Dies Mensis | | | Obitus |
|---|---|---|---|---|---|
| * | d | Gal. | 1 | | |
| xxix | e | vj | 2 | | |
| xxviij | f | v | 3 | | |
| xxvij | g | iiij | 4 | Adriani, Martyris & Sociorum, *simplex*. | an. 306. |
| xxvj | a | iij | 5 | | |
| 25. xxv. | b | Prid. | 6 | | |
| xxiiij | c | Non. | 7 | Perpetuæ & Felicitatis, Carthaginensium Martyrum *commemoratio*. [ De S. Thoma Aquinate fit die 15. Julii. ] | c. an. 204. |
| xxiij | d | viij | 8 | *Primum Novilunium Paschale.* | |
| xxij | e | vij | 9 | Martyrum, qui pro Sacris libris interiere *commemoratio*. | an. 303. |
| xxj | f | vj | 10 | *Ultima dies Cinerum.* | |
| xx | g | v | 11 | | |
| xix | a | iiij | 12 | [ De S. Gregorio Papa & Ecclesiæ Doctore fit die 3. Septembris. ] | |
| xviij | b | iij | 13 | | |
| xvij | c | Prid. | 14 | | |
| xvj | d | Idib. | 15 | | |
| xv | e | xvij | 16 | | |
| xiiij | f | xvj | 17 | Patricii Episcopi, Hiberniæ Apostoli *commemoratio*. | an. 460. |
| xiij | g | xv | 18 | Cyrilli, Jerosolymitani Episcopi *commemoratio*. | an. 386. |
| xij | a | xiiij | 19 | [ De S. Joseph fit die 12. Decembris. ] | |
| xj | b | xiij | 20 | Joachim, Patris B. Mariæ Virginis *commem.* | |
| x | c | xij | 21 | [ De S. Benedicto, Cassinensi Abbate fit die 11. Julii. ] | |
| ix | d | xj | 22 | *Primum Pascha.* | |
| viij | e | x | 23 | | |
| vij | f | ix | 24 | | |
| vj | g | viij | 25 | ANNUNTIATIO & INCARNATIO DOMINI, *Triplex primæ Classis*; [ *à Dominica Palmarum transfertur in Feriam secundam post Octavam Paschæ.* ] | |
| v | a | vij | 26 | Hermelandi Abbatis *commemoratio*. | |
| iiij | b | vj | 27 | Eutichii Subdiaconi & Sociorum pro divinitate Verbi Alexandriæ occisorum *commem.* | an. 356. |
| iij | c | v | 28 | | |
| ij | d | iiij | 29 | | |
| j | e | iij | 30 | | |
| * | f | Prid. | 31 | | |

¶ Feria VI. post Dominicam Passionis fit Officium de B. Maria compatiente, *Duplex majus*. Si in eamdem Feriam inciderit Festum Annuntiationis, tunc de beata Maria compatiente nihil fit hoc anno.

APRILIS.

| Cyclus Epact. | Litt. Dom. | Dies Mensis. | | | Obiere |
|---|---|---|---|---|---|
| xxix | g | Cal. | 1 | [ De S. Maria Ægyptia pœnitente fit die 7. Maii. ] | |
| xxviij | a | iiij | 2 | Francisci de Paula, institutoris Ordinis Minimorum, *semiduplex.* | anno 1507. |
| xxvij | b | iij | 3 | | |
| 25. xxvj | c | Prid | 4 | [ De S. Ambrosio, Mediolanensi Episcopo & Ecclesiæ Doctore fit die 7. Decembris. ] | |
| xxv. xxiiij | d | Non. | 5 | *Ultimum Novilunium Paschale.* | |
| xxiij | e | viij | 6 | | |
| xxij | f | vij | 7 | | |
| xxj | g | vj | 8 | Galterii Rotomagensis, Abbatis Pontisarensis, *semiduplex.* | anno 1099. |
| xx | a | v | 9 | Hugonis, Rotomagensis Pontificis, *simplex.* | an. 730. |
| xix | b | iiij | 10 | Gaucherii Rotomagensis Presbyteri, *duplex minus. Commem.* Omnium SS. Presbyterorum & Levitarum. | an. 1130 |
| xviij | c | iij | 11 | Leonis Papæ & Ecclesiæ Doctoris, *semiduplex.* | an. 461. |
| xvij | d | Prid. | 12 | | |
| xvj | e | Idib. | 13 | Justini, Romæ, Christianæ Religionis Apologistæ, ac Martyris, *simplex.* | an. 167. vel 168. |
| xv | f | xviij | 14 | | |
| xiiij | g | xvij | 15 | | |
| xiij | a | xvj | 16 | | |
| xij | b | xv | 17 | | |
| xj | c | xiiij | 18 | Apollonii Senatoris Romani, Martyris, *simplex.* | c. an. 186 |
| x | d | xiij | 19 | | |
| ix | e | xij | 20 | Martyrum pro solemnitate Paschali occisorum, *simplex.* | an. 459. |
| viij | f | xj | 21 | Anselmi, Abbatis Beccensis, deinde Cantuariensis Episcopi, *simplex.* | anno 1109. |
| vij | g | x | 22 | | |
| vj | a | ix | 23 | Georgii Martyris in Oriente *Commem.* | 3. vel 4. sec. |
| v | b | viij | 24 | | |
| iiij | c | vij | 25 | Marci Evangelistæ, *duplex majus.* *Ultimum Pascha.* | an. 68. |
| iij | d | vj | 26 | | |
| ij | e | v | 27 | | |
| j | f | iiij | 28 | | |
| * | g | iij | 29 | | |
| xxix | a | Prid. | 30 | Eutropii, Santonensis Episc. & Martyris, *simplex.* Adjutoris, Monachi Rotomagensis *Commemoratio.* *Prima Ascensio.* | c. 3. sec. anno 1131. |

# MAIUS.

| Cyclus Epact. | Lit. Dom. | Dies Mensis. | | | Obiere |
|---|---|---|---|---|---|
| xxviij | b | Cal. | 1 | PHILIPPI ET JACOBI ( Alphæi ) Apostolorum , *duplex majus.* | 1. sec. |
| xxvij | c | vj | 2 | Athanasii , Alexandrini Episcopi , & Ecclesiæ Doctoris , *semiduplex.* | an. 373. |
| xxvj | d | v | 3 | Revelatio , seu Inventio S. Crucis , anno 326. *duplex majus. Comment.* S. Alexandri Papæ & Martyris. | c. anno 119. |
| 25. xxv | e | iiij | 4 | Monnicæ Viduæ Tagastensis , *semiduplex.* | an. 387. vel 388. |
| xxiiij | f | iij | 5 | | |
| xxiij | g | Prid. | 6 | Joannis Apostoli & Evangelistæ , ante portam Latinam , Circa annum 95. *duplex minus.* | |
| xxij | a | Non. | 7 | Mariæ Ægyptiæ pœnitentis , *semiduplex.* | c. anni 421. vel 432. |
| xxj | b | viij | 8 | | |
| xx | c | vij | 9 | Gregorii Nazianzeni , Constantinopolitani Episcopi , & Ecclesiæ Doctoris , *semiduplex.* | an. 391. |
| xix | d | vj | 10 | *Prima Pentecoste.* | |
| xviij | e | v | 11 | Mamerti , Viennensis Episcopi , *simplex.* | c.an.475 |
| xvij | f | iiij | 12 | Epiphanii , Salaminæ Episcopi , *simplex.* | an. 403. |
| xvj | g | iij | 13 | | |
| xv | a | Prid. | 14 | Pachomii , Tabennæ in Thebaïde Abbatis , Cœnobiticæ vitæ institutoris , *simplex.* | an. 348. vel 349. |
| xiiij | b | Idib. | 15 | | |
| xiij | c | xvij | 16 | Martyrum pro Unitate catholica occisorum , *simplex.* | an. 459. |
| xij | d | xvj | 17 | | |
| xj | e | xv | 18 | | |
| x | f | xiiij | 19 | | |
| ix | g | xiij | 20 | | |
| viij | a | xij | 21 | *Primus Terminus Festi Corporis Christi.* | |
| vij | b | xj | 22 | | |
| vj | c | x | 23 | | |
| v | d | ix | 24 | | |
| iiij | e | viij | 25 | [ In Ecclesia Metropolitana ad Missam majorem , *commem.* S. Urbani Papæ & Martyris. | an. 230. |
| iiij | f | vij | 26 | | |
| ij | g | vj | 27 | Ildeverti , Meldensis Episcopi , *simplex.* | an. 690. |
| j | a | v | 28 | Germani , Parisiensis Episcopi , *simplex.* | an. 576. |
| * | b | iiij | 29 | | |
| xxix | c | iij | 30 | | |
| xxviij | d | Prid. | 31 | | |

| Cyclus Epact. | Litt. Dom. | Dies Mensis | | | Obiere |
|---|---|---|---|---|---|
| xxvij | e | Cal. | 1 | | |
| 25. xxvj | f | iiij | 2 | Pothini, Lugdunensis Episcopi, & Sociorum, Martyrum, *simplex*. *Commem.* SS. Marcellini Presbyteri, & Petri Exorcistæ, Romanorum Martyrum. | an. 177. an. 304. |
| xxv. xxiv | g | iij | 3 | Clotildis, Francorum Reginæ, Viduæ, *duplex minus*. *Ultima Ascensio.* | c. an. 540. |
| xxiij | a | Prid. | 4 | | |
| xxij | b | Non | 5 | | |
| xxj | c | viij | 6 | | |
| xx | d | vij | 7 | | |
| xix | e | vj | 8 | Gildardi, Pontificis Rotomagensis, *semiduplex*. *Commem.* S. Medardi, Noviomensis Episcopi. | an. 545. an. 529. |
| xviij | f | v | 9 | | |
| xvij | g | iiij | 10 | | |
| xvj | a | iij | 11 | Barnabæ, Gentium Apostoli, *duplex majus*. | c. an. 70. |
| xv | b | Prid. | 12 | | |
| xiiij | c | Idib. | 13 | *Ultima Pentecoste.* | |
| xiij | d | xviij | 14 | [ De S. Basilio Magno fit die 2. Januarii. ] | |
| xij | e | xvij | 15 | | |
| xj | f | xvj | 16 | Cyrici, & Julittæ matris ejus, Tarsi in Cilicia, Martyrum, *simplex*. | an. 305. |
| x | g | xv | 17 | | |
| ix | a | xiiij | 18 | | |
| viij | b | xiij | 19 | Gervasii & Protasii, Mediolanensium Martyrum, *semiduplex*. | c. 1. sec. |
| vij | c | xij | 20 | Latuini, Sagiensis Episcopi, *simplex*. | |
| vj | d | xj | 21 | | |
| v | e | x | 22 | Paulini, Nolani Episcopi, *simplex*. | an. 431. |
| iiij | f | ix | 23 | Vigilia *cum jejunio*. | |
| iij | g | viij | 24 | NATIVITAS S. JOANNIS BAPTISTÆ, *Triplex secundæ classis.* *Ultimus Terminus Festi Corporis Christi.* | |
| ij | a | vij | 25 | De Octava Nativitatis S. Joannis Baptistæ, *simplex*. *Commem.* S. Prosperi Ecclesiæ Doctoris. | an. 456. vel 457. |
| j | b | vj | 26 | De Octava Nativ. S. Joannis Bapt. *simplex*: *Commem.* SS. Joan. & Pauli, Romæ Martyrum. | c. an. 362 |
| * | c | v | 27 | Irenæi, Lugdunensis Episcopi & Ecclesiæ Doctoris, ac Sociorum ejus, Martyrum, *semiduplex*. *Commem.* Octavæ Nativitatis S. Joannis Baptistæ. | c. an. 202 |
| xxix | d | iiij | 28 | Vigilia *cum jejunio*. *Commem.* Octavæ S. Joannis Baptistæ. | |
| xxviij | e | iij | 29 | PETRI ET PAULI Apostolorum, *Triplex secundæ classis.* | an. 66. |
| xxvij | f | Prid. | 30 | *Commemoratio* S. Pauli Apostoli, *duplex majus*: *Commem.* S. Petri Apostoli; & Octavæ Nativitatis S. Joannis Baptistæ. | an. 66. |

| Cyclus Epact. | Litt. Dom. | Dies Mensis | | | Obiere |
|---|---|---|---|---|---|
| xxvj | g | Cal. | 1 | Octava Nativitatis S. Joannis Baptistæ, & ipsius Decollatio, *duplex minus.* *Commem.* Octavæ SS. Petri & Pauli. | an. 32. |
| 25. xxv. | a | vj | 2 | Visitatio beatæ Mariæ Virginis, *duplex majus.* [ In Ecclesia Metropolitana, *Triplex secundæ classis.* ] *Commem.* Octavæ SS. Petri & Pauli. | |
| xxiiij | b | v | 3 | De Octava SS. Petri & Pauli, *simplex. Commem.* S. Martialis, Lemovicensis Episcopi. | c. 2. sec. |
| xxiij | c | iiij | 4 | De Octava SS. Petri & Pauli, *simplex.* | |
| xxij | d | iij | 5 | De Octava SS. Petri & Pauli, *simplex.* | |
| xxj | e | Prid. | 6 | Octava SS. Petri & Pauli Apostolorum, & Cathedra, seu Pontificatus S. Petri Antiochiæ primùm, deinde Romæ, *duplex minus.* | |
| xx | f | Non. | 7 | Pantæni, Presbyteri Alexandrini, *semiduplex.* | c. an. 214. |
| xix | g | viij | 8 | | |
| xviij | a | vij | 9 | | |
| xvij | b | vj | 10 | Septem Fratrum, ac S. Felicitatis eorum matris, Romæ Martyrum, *simplex.* | c. an. 164. |
| xvj | c | v | 11 | Benedicti, Cassinensis Abbatis, (è 21. Martii.) *semiduplex. Translatio circa annum* 660. | an. 543. vel 544. |
| xv | d | iiij | 12 | Cleti Papæ & Martyris, *simplex.* | 1. sec. |
| xiiij | e | iij | 13 | | |
| xiij | f | Prid. | 14 | Bonaventuræ, Albanensis Episcopi & Doctoris, *semiduplex.* | an. 1274 |
| xij | g | Idib. | 15 | Thomæ Aquinatis, Presbyteri & Doctoris, (è 7. Martii.) *semiduplex. Canonizatio an.* 1323. | an. 1274 |
| xj | a | xvij | 16 | | |
| x | b | xvj | 17 | Clari Presbyteri & Martyris Rotomagensis, *semiduplex. Commem.* SS. Sperati & Sociorum ejus, Martyrum Scillitanorum. | an. 20[illegible] |
| ix | c | xv | 18 | | |
| viij | d | xiiij | 19 | Arsenii Diaconi Romani, Solitarii Sceteis, *simplex.* | an. 44[illegible] |
| vij | e | xiij | 20 | | |
| vj | f | xij | 21 | Victoris, Massiliensis Martyris, & Sociorum, *simplex.* | an. 29[illegible] |
| v | g | xj | 22 | Mariæ Magdalenes, *duplex minus.* | 1. sec. |
| iiij | a | x | 23 | Wandregisili Abbatis Rotomagensis, *semiduplex.* | an. 667. |
| iij | b | ix | 24 | Vigilia *sine jejunio.* | |
| ij | c | viij | 25 | JACOBI ZEBEDÆI Apostoli, *duplex majus. Commem.* S. Christophori Martyris in Licia. | an. 44. |
| j | d | vij | 26 | Annæ Matris B. Mariæ Virginis, *duplex minus.* | 1. sec. |
| * | e | vj | 27 | | |
| xxix | f | v | 28 | | |
| xxviij | g | iiij | 29 | Lazari, Marthæ Christi hospitæ & Mariæ Sororum ejus, *semiduplex.* (è 17. Octobris.) | 1. sec. |
| xxvij | a | iij | 30 | | |
| 25. xxvj | b | Prid. | 31 | Germani, Antissiodorensis Episcopi, *simplex. Commem.* S. Ignatii Loyolæ, Presbyteri, institutoris Societatis Jesu. | an. 448. vel 449. an. 1556. |

| Cyclus Epact. | Litt. Dom. | Dies Mensis | | | Obiere |
|---|---|---|---|---|---|
| xv. xxiv | c | Cal. | 1 | Liberatio S. Petri è carcere *an. 44. semiduplex.* *Commem.* S. Exuperii, Bajocensis Episcopi. | c. 4. sec. |
| xxiij | d | iiij | 2 | Omnium Sanctorum antiquæ Legis, *duplex minus. Commem.* S. Stephani I. Papæ & Martyris. | an. 257. |
| xxij | e | iij | 3 | Revelatio seu Inventio Corporis S. Stephani, Diaconi & Protomartyris, Jerosolymis, *simplex.* 19. *Decembris anno* 415. | |
| xxj | f | Prid. | 4 | Dominici Presbyteri, institutoris Ordinis Prædicatorum (è 6.) *semiduplex.* | an. 1221 |
| xx | g | Non. | 5 | | |
| xix | a | viij | 6 | Transfiguratio Domini, *anno* 32. *duplex majus.* [In Metropolitana Ecclesia, *Triplex secundæ classis.*] *Commem.* S. Xisti II. Papæ & Mart. | an. 258. |
| xviij | b | vij | 7 | Victricii, Rotomagensis Pontificis & Confessoris fidei, *duplex minus.* | an. 407. |
| xvij | c | vj | 8 | | |
| xvj | d | v | 9 | Vigilia *cum jejunio.* | |
| xv | e | iiij | 10 | Laurentii Diaconi Romani, & Mart. *duplex maj.* | an. 258. |
| xiv | f | iij | 11 | Taurini, Ebroïcensis Episcopi, *semiduplex.* | c. 3. sec. |
| xiij | g | Prid. | 12 | Claræ, Assisii in Umbria Virginis (è die 11.) *simplex.* [Reductio Normaniæ ad Carolum VII. Francorum Regem, *anno* 1450.] | an. 1253. |
| xij | a | Idib. | 13 | Radegundis, Franc. Reginæ, Viduæ, *semiduplex.* | an. 587. |
| xj | b | xix | 14 | Vigilia *cum jejunio.* | |
| x | c | xviij | 15 | ASSUMPTIO BEATÆ MARIÆ VIRGINIS, Ecclesiæ Metropolitanæ, ac totius Diœcesis Patronæ. *Solemne.* | 1. sec. |
| ix | d | xvij | 16 | De Octava Assumptionis. *Commem.* S. Rochi Laïci apud montem Pessulanum. | an. 1327. |
| viij | e | xvj | 17 | De Octava Assumptionis. | |
| vij | f | xv | 18 | De Octava Assumptionis. | |
| vj | g | xiiij | 19 | De Octava Assumptionis. | |
| v | a | xiij | 20 | Bernardi, Primi Abbatis Claravallensis, & Ecclesiæ Doctoris, *duplex minus. Commem.* Octavæ Assumptionis, & S. Philiberti primi Abbatis Gemmeticensis. | an. 1153. |
| iiij | b | xij | 21 | De Octava Assumptionis. | |
| iij | c | xj | 22 | Octava Assumptionis beatæ Mariæ Virginis. *Commem.* Voti Ludovici XIII. & Dedicationis Ecclesiæ beatæ Mariæ Majoris, *duplex majus.* [In Ecclesia Metropolitana, *Triplex secundæ classis.*] | |
| ij | d | x | 23 | Vigilia *sine jejunio.* | |
| j | e | ix | 24 | Bartholomæi Apostoli, *duplex majus.* | 1. sec. |
| * | f | viij | 25 | Ludovici IX. Francorum Regis, *duplex majus.* | an. 1270. |
| xxix | g | vij | 26 | Audoëni, Rotomagensis Pontificis, (è die 24.) *duplex minus.* | an. 683. |
| xxviij | a | vj | 27 | Cæsarii, Arelatensis Episcopi, & Ecclesiæ Doctoris, *simplex.* *Commem.* S. Viviani, Santonensis Episcopi. | an. 542. c. 6. sec. |
| xxvij | b | v | 28 | Augustini Hipponensis Episcopi, & Ecclesiæ Doctoris, *duplex minus.* | an. 430. |
| xxvj | c | iiij | 29 | | |
| 25. xxv. | d | iij | 30 | | |
| xxiv | e | Prid. | 31 | | |

# SEPTEMBER.

| Cyclus Epact. | Litt. Dom. | | Dies Mensis. | | Obiere |
|---|---|---|---|---|---|
| xxiiij | f | Cal. | 1 | Ægidii Abbatis in Occitania, *simplex. Commem.* S. Lupi, Senonensis Episcopi. | an. 552. vel 558. |
| xxiij | g | iiij | 2 | | an. 623. |
| xxj | a | iij | 3 | Gregorii Papæ, & Ecclesiæ Doctoris (è 12. Martii) *Ordinatio anno 590. duplex minus.* | an. 604. |
| xx | b | Prid. | 4 | | |
| xix | c | Non. | 5 | | |
| xviij | d | viij | 6 | | |
| xvij | e | vij | 7 | Clodoaldi Presbyteri, *simplex.* | an. 561. |
| xvj | f | vj | 8 | NATIVITAS B. MARIÆ VIRGINIS, *Triplex prima classis.* | |
| xv | g | v | 9 | De Octava Nativitatis B. Mariæ. *Commemoratio* S. Gorgonii in Bithynia Martyris. | c.an.303 |
| xiiij | a | iiij | 10 | De Octava Nativitatis B. Mariæ. | |
| xiij | b | iij | 11 | De Octava Nativitatis B. Mariæ. | |
| xij | c | Prid. | 12 | De Octava Nativitatis B. Mariæ. | |
| xj | d | Idib. | 13 | De Octava Nativitatis B. Mariæ. | |
| x | e | xviij | 14 | Exaltatio S. Crucis, *duplex minus.* (Imperante Constantino *anno* 628.) *Commem.* Octavæ Nativitatis beatæ Mariæ. | |
| ix | f | xvij | 15 | Octava Nativitatis beatæ Mariæ, *duplex minus.* | |
| viij | g | xvj | 16 | Cornelii Papæ & Martyris, & Cypriani, Carthaginensis Episcopi & Martyris, & Ecclesiæ Doctoris. (è 14.) *semiduplex. Commem.* S. Euphemiæ, Chalcedonensis Virginis & Martyris. | an. 352. an. 258. c.an.307 |
| vij | a | xv | 17 | | |
| vj | b | xiiij | 18 | Sinerii Abrincensis Episcopi, *semiduplex.* | c.an.565 |
| v | c | xiij | 19 | Januarii, Beneventi Episcopi & Martyris, *simplex.* | c. 4. sec. |
| iiij | d | xij | 20 | [De Vigilia S. Matthæi fit Feriâ quartâ Quatuor Temporum.] | |
| iij | e | xj | 21 | Laudi Constantiensis Episcopi, *simplex*, [De S. Matthæo Apostolo & Evangelista fit Feriâ quintâ Quatuor Temporum.] | an. 566. vel 567. |
| ij | f | x | 22 | Mauricii & Sociorum, Martyrum, *semiduplex.* | an. 286. |
| j | g | ix | 23 | Lini Papæ & Martyris, *simplex. Commem.* S. Theclæ, Iconii Virginis & Martyris. | c. an. 78. c.fin:1.s. |
| * | a | viij | 24 | Geremari, Abbatis Rotomagensis, *semiduplex.* | an. 658. |
| xxix | b | vij | 25 | Firmini Ambianensis Episcopi & Mart. *simplex.* | c.an.287 |
| xxviij | c | vj | 26 | | |
| xxvij | d | v | 27 | Cosmæ & Damiani Fratrum, Martyrum, *semiduplex.* | c.an.303 |
| 25. xxvj | e | iiij | 28 | | |
| xxv. xxiv | f | iij | 29 | MICHAELIS ARCHANGELI, ET OMNIUM ANGELORUM. *Triplex secunda classis.* | |
| xxiij | g | Prid. | 30 | Hieronymi, Stridoniensis Presbyteri, & Ecclesiæ Doctoris, *duplex minus.* | an. 420. |

| Cyclus Epact. | Litt. Dom. | Dies Mensis | | | Obierė |
|---|---|---|---|---|---|
| xxiij | a | Cal. | 1 | Remigii, Remensis Episcopi, (è 31. Januarii) *Translatio anno 852. simplex.* | an. 533. |
| | | | | ¶ *Dominica prima Octobris, celebratur* ANNIVERSARIUM DEDICATIONIS Ecclesiæ Metropolitanæ Rotomagensis, & aliarum Ecclesiarum totius Diœcesis, *Triplex prima classis*, Intra Octavam, *semiduplex.* | |
| xxij | b | vj | 2 | Angelorum Custodum, *semiduplex. Commem.* S. Leodegarii, Augustodunensis Episcopi & Martyris. | an. 685. |
| xx | c | v | 3 | | |
| xix | d | iiij | 4 | Francisci Assisiatis in Umbria, institutoris Ordinis Minorum, *semiduplex.* | an. 1225 vel 1226 |
| xviij | e | iij | 5 | | |
| xvij | f | Prid. | 6 | *Commemoratio* S. Brunonis Monachi, institutoris Ordinis Cartusianorum, Et S. Fidei, Aginnensis Virginis & Martyris. | an. 1101 c. an. 287. |
| xvj | g | Non | 7 | | |
| xv | a | viij | 8 | ¶ *Dominica secunda Octobris*, Festivitas SS. NICASII ac MELLONI qui Rotomagensem Ecclesiam fundaverunt, *Triplex prima classis.* | c. 2. sec. |
| xiiij | b | vij | 9 | Dionysii, Parisiensis Episcopi & Sociorum ejus Martyrum, *duplex minus. Commem.* S. Dionysii Areopagitæ, primi Athenarum Episcopi & Martyris. | c. 2. sec. c. an. 95. |
| xiij | c | vj | 10 | Evodi, Pontificis Rotomagensis, *simplex.* | an. 549. |
| xij | d | v | 11 | | |
| xj | e | iiij | 12 | | |
| x | f | iij | 13 | | |
| ix | g | Prid. | 14 | | |
| viij | a | Idib. | 15 | Theresiæ, Abulensis Virginis Ordinis Carmelitarum instauratricis, *semiduplex.* | an. 1582 |
| vij | b | xvij | 16 | | |
| vj | c | xvj | 17 | | |
| v | d | xv | 18 | Lucæ Evangelistæ, *duplex majus.* [In Ecclesia Metropolitana, *Triplex secunda classis.*] | 1. sec. |
| iiij | e | xiiij | 19 | Justi Martyris, *simplex.* | vi. sec. |
| iij | f | xiij | 20 | | |
| ij | g | xij | 21 | Hilarionis, Abbatis in Palæstina, *simplex. Commem.* SS. Ursulæ & Sociarum, Virginum *prima classis.* | an. 371. 4. vel 5. s. |
| j | a | xj | 22 | | |
| * | b | x | 23 | ROMANI, Pontificis Rotomagensis, *Triplex prima classis.* | an. 646. |
| xxix | c | ix | 24 | De Octava S. Romani. | |
| xxviij | d | viij | 25 | De Octava S. Romani. | |
| xxvij | e | vij | 26 | De Octava S. Romani. | |
| xxvj | f | vj | 27 | Vigilia *cum jejunio Commem.* Octavæ S. Romani. | |
| 25. xxv. | g | v | 28 | SIMONIS ET JUDÆ Apostolorum, *duplex majus. Commem.* Octavæ S. Romani. | 1. sec. |
| xxiiij | a | iiij | 29 | De Octava S. Romani. | |
| xxiij | b | iij | 30 | Octava S. Romani, & *Commem.* Omnium SS. Rotomagensium Pontificum, *duplex minus.* | |
| xxij | c | Prid. | 31 | Vigilia *cum jejunio: Commem.* S. Quintini, apud Augustam Veromanduorum Episcopi & Martyris. | an. 287. |

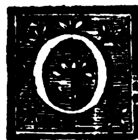
| Cyclus Epact. | Litt. Dom. | Dies Mensis | | | Obiere |
|---|---|---|---|---|---|
| xxj | d | Cal. | 1 | OMNIUM SANCTORUM, *Solemne.* | |
| xx | e | iiij | 2 | COMMEMORATIO OMNIUM FIDELIUM DEFUNCTORUM instituta anno 998. *duplex majus.* | |
| xix | f | iij | 3 | De Octava Omnium Sanctorum. | |
| xviij | g | Prid. | 4 | De Octava Omnium Sanctorum. | |
| xvij | a | Non. | 5 | De Octava Omnium Sanctorum. | |
| xvj | b | viij | 6 | De Octava Omnium Sanctorum. | |
| xv | c | vij | 7 | De Octava omnium Sanctorum. | |
| xiiij | d | vj | 8 | Veneratio SS. Reliquiarum, & Octava omnium Sanctorum, *duplex majus.* [ In Ecclesia Metropolitana, *Triplex secundæ classis.* ] | |
| xiij | e | v | 9 | Caroli, Mediolanensis Episcopi ( è 3. ) *semiduplex.* | an. 1584 |
| xij | f | iiij | 10 | | |
| xj | g | iij | 11 | MARTINI, Turonensis Episcopi, (ex 8.) *duplex majus.* | c. an. 397 |
| x | a | Prid. | 12 | Martini Papæ & Martyris, ( è 16. Septembris ) *simplex.* | an. 655. |
| ix | b | Idib. | 13 | Bricii, Turonensis Episcopi, *simplex.* [ In Ecclesia Metropolitana, *duplex majus.* | c. an. 444 |
| viij | c | xviij | 14 | Laurentii de Augo, Dubliniensis Episcopi, *semiduplex.* | an. 1181. |
| vij | d | xvij | 15 | Maclovii, Alethensis Episcopi, *simplex. Commem.* S. Sidonii Abbatis Rotomagensis. | c. an. 565<br>c. an. 689 |
| vj | e | xvj | 16 | | |
| v | f | xv | 17 | Gregorii Thaumaturgi, Neocæsareæ Episcopi, & Ecclesiæ Doctoris, *semiduplex. Commem.* S. Dionysii, Alexandrini Episcopi. | c. an. 270<br>c. an. 264 |
| iiij | g | xiiij | 18 | S. Romani Diaconi & Martyris, *simplex.* | c. an. 363 |
| iij | a | xiij | 19 | | |
| ij | b | xij | 20 | | 2. 3. vel |
| j | c | xj | 21 | Præsentatio B. Mariæ Virginis, *duplex majus.* | 4. sec. |
| * | d | x | 22 | Cæciliæ Virginis & Martyris; *duplex minus.* | an. 100. |
| xxix | e | ix | 23 | Clementis Papæ & Martyris, *semiduplex.* | 1. vel 2. f. |
| xxviij | f | viij | 24 | Chrysogoni, Romani Martyris, *simplex. Commem.* S. Anastasiæ, Romanæ Viduæ & Martyris. | an. 304.<br>an. 304. |
| xxvij | g | vij | 25 | Catharinæ, Alexandrinæ Virginis & Martyris, *semiduplex.* | |
| 25. xxvj | a | vj | 26 | | |
| xxv. xxiv | b | v | 27 | *Prima sedes Adventus.* | |
| xxiij | c | iiij | 28 | | |
| xxij | d | iij | 29 | Vigilia *cum jejunio : Commem.* S. Saturnini, Tolosani, Episcopi & Martyris. | 1. sec.<br>an. 250. |
| xxj | e | Prid. | 30 | ANDREÆ Apostoli, *duplex majus.* | c. an. 70. |

Digitized by Google

| Cyclus Epact. | Lit. Dom. | | Dies Mensis. | | Obiere |
|---|---|---|---|---|---|
| xx | f | Cal. | 1 | Eligii, Noviomensis Episcopi, (è 30. Novembris) *semiduplex. Commem.* S. Candidi, Trajectensis Episcopi. | c. an. 659. c. 5 sec. |
| xix | g | iiij | 2 | | |
| xviij | a | iij | 3 | *Commem.* S. Francisci Xaverii Presbyteri. *Ultima sedes Adventus.* | an. 1552. |
| xvij | b | Prid. | 4 | | |
| xvj | c | Non. | 5 | | |
| xv | d | viij | 6 | Nicolai, Myrensis Episcopi in Licia, *duplex minus.* | 3. 4. vel 5. s. |
| xiv | e | vij | 7 | Ambrosii, Mediolanensis Episcopi, & Ecclesiæ Doctoris (è 4. Aprilis.) *ordinatio anno* 374. *duplex minus.* | an. 397. |
| xiij | f | vj | 8 | CONCEPTIO B. MARIÆ VIRGINIS, *Triplex primæ classis.* | |
| xij | g | v | 9 | *Commem.* Octavæ Conceptionis B. Mariæ. | |
| xj | a | iiij | 10 | *Commem.* Octavæ Conceptionis B. Mariæ. | |
| x | b | iij | 11 | *Commem.* Octavæ Conceptionis B. Mariæ. | |
| ix | c | Prid. | 12 | Joseph Sponsi B. Mariæ Virginis, (è 19. Martii) *duplex majus.* [In Ecclesia Metropolitana *triplex secundæ classis.*] *Commem.* Octavæ Conceptionis B. Mariæ. | 1. sec. |
| viij | d | Ibid. | 13 | *Commem.* S. Luciæ Syracusanæ Virginis & Martyris; & Octavæ Conceptionis B. Mariæ. | an. 304. vel 305. |
| vij | e | xix | 14 | *Commem.* Octavæ Conceptionis B. Mariæ. | |
| vj | f | xviij | 15 | Octava Conceptionis B. Mariæ Virginis, *duplex minus.* | |
| v | g | xvij | 16 | | |
| iiij | a | xvj | 17 | | |
| iij | b | xv | 18 | | |
| ij | c | xiiij | 19 | | |
| j | d | xiij | 20 | Vigilia *sine jejunio.* | |
| * | e | xij | 21 | Thomæ Apostoli, *duplex majus.* | 1. sec. |
| xxix | f | xj | 22 | | |
| xxviij | g | x | 23 | | |
| xxvij | a | ix | 24 | Vigilia *cum jejunio.* | |
| xxvj | b | viij | 25 | NATIVITAS DOMINI, *Solemne.* | |
| 25, xxv. | c | vij | 26 | STEPHANI, Diaconi & Protomartyris, *duplex majus. Commem.* Octavæ Nativitatis Domini. | an. 33. |
| xxiv | d | vj | 27 | JOANNIS, Apostoli & Evangelistæ, *duplex majus. Commem.* Octavæ Nativitatis Domini. | c. an. 100 |
| xxiij | e | v | 28 | Innocentium Martyrum, *duplex majus. Commem.* Octavæ Nativitatis Domini. | |
| xxij | f | iiij | 29 | Thomæ, Cantuariensis Episcopi & Martyris, *duplex minus. Commem.* Octavæ Nativitatis Domini. | an. 1170. |
| xxj | g | iij | 30 | Officium Dominicæ intra Octavam Nativitatis Domini, *duplex minus. Commem.* S. Ursini, Bituricensis Episcopi. | circa 2. sec. |
| 19. xx | a | Prid. | 31 | Silvestri Papæ, *duplex minus. Commem.* Octavæ Nativitatis Domini. | an. 335. |

Hæc Epacta 19. nunquam est in usu, nisi quando eodem anno concurrit cum Aureo numero xix.

# ORDO
# DIVINI OFFICII
## SINGULIS DIEBUS RECITANDI.



FFICII divini undecim sunt Classes.

Officium vel est Feriale vel Festivum.

Feriale distinguitur in minus, medium & majus.

Festivum, vel Simplex est, vel Semiduplex; aut Duplex minus, aut Duplex majus; aut Triplex secundæ Classis, aut Triplex primæ Classis; vel tandem Solemne. Prætereà inter Duplex minus & Duplex majus suum locum tenet Officium de Dominica.

In unoquoque Officio octo sunt partes; scilicet Officium Nocturnum, Laudes Matutinæ, Prima Hora, Tertia, Sexta, Nona, Vesperæ, & Completorium.

### *DE OFFICIO NOCTURNO.*

AD Officium Nocturnum, dictis secretò Oratione Dominicâ, Salutatione Angelicâ & Symbolo Apostolorum, os sibi pollice signans Celebrans clarâ voce dicit: *Domine, labia*, &c. Deinde manu extensâ signando se à fronte ad pectus & à sinistro humero ad dextrum (quod servatur initio omnium Horarum) eodem tono dicit: *Deus in adjutorium*, &c. Tùm canticum *Alleluia*, vel ejus loco à Septuagesima ad Pascha, *Laus tibi, Domine, Rex æternæ gloriæ.*

Posteà Invitatorium cum Psalmo, *Venite, exultemus*, hoc modo dicitur. Bis dicitur integrum ante Psalmum, integrum semel dicitur pòst primum Versum, post tertium & post quintum. Sed post Versum secundum & post quartum sola dicitur reclamatio, quæ Asterisco * notatur. Post Versum *Gloria Patri*, &c. dicitur primò reclamatio, deinde Invitatorium integrum.

In Festis verò Solemnibus Invitatorium dicitur integrum post quemlibet Versum.

Post Invitatorium dicitur Hymnus, ut in Proprio vel in Communi.

Post Hymnum, vel unum vel tria Nocturna recitantur.

Quando cantatur Officium, ante Psalmum aut Canticum intonatur primum Antiphonæ vocabulum: sed illud non pronuntiatur hoc loco si Officium recitetur sine cantu, nisi Antiphona dicenda sit integra, ut Antiphonæ ad *Benedictus* & *Magnificat* in Triplicibus & Solemnibus, & Majores Antiphonæ circa finem Adventûs.

In Officio Solemni, in Triplici primæ Classis, & in Officio de Dominica extra Paschale tempus, tria dicuntur Nocturna: in reliquis Officiis, & toto tempore Paschali unicum Nocturnum.

Quando unicum dicitur Nocturnum, extra tempus Paschale, novem recitantur Psalmi cum novem aut tribus Antiphonis. Tempore Paschali tres tantùm Psalmi recitantur cum una aut tribus Antiphonis. Ultimam Antiphonam sequitur Versiculus. Deinde altâ voce dicitur *Pater noster* & secretò, usque ad Versiculum, *Et ne nos*, &c. qui clarâ voce pronuntiatur; posteà Absolutio. Statim Lector parumper se inclinans, & vertens faciem versùs Celebrantem ab eo petit Benedictionem, dicens: *Jube, Domne, benè dicere.* Lectores singuli ante singulas Lectiones idem observant, tum legitur Lectio voce distinctâ, ut commodè ab astantibus possit audiri; hinc legenda est in loco ambonis, id est in Chori parte inferiori, vel in ipso medio ubi numerosus est Clerus. Absolutiones & Benedictiones invenientur post has Rubricas.

Recitatio trium Lectionum cum totidem Responsoriis cum Versu, *Gloria Patri*, in fine ultimi in unoquoque Nocturno communior est regula: quibusdam tamen casibus infrà observandis quarta aut decima Lectio sine subsequente Responsorio superadditur.

Dictis Lectionibus omnibus & Responsoriis, dicitur Hymnus *Te Deum*, si dicendus sit. Dici autem debet hic Hymnus toto tempore Paschali, & per annum in omnibus Festis, necnon in omnibus Dominicis, præterquam in Dominicis Adventûs, & Dominicis à Septuagesima ad Dominicam in Ramis Palmarum inclusivè.

### *DE LAUDIBUS MATUTINIS.*

SI Laudes Matutinæ separatim ab Officio Nocturno recitantur, dictis se-

secretò *Pater* & *Ave*, Celebrans junctis manibus inchoat Versum Sacerdotalem.

Sed si post Officium Nocturnum Laudes continenter recitantur, statim finito Nocturno Celebrans incipit à Versu Sacerdotali, deinde dicit *Deus in adjutorium*, &c. Posteà cum quinque Antiphonis Officio convenientibus dicuntur primo tres Psalmi, secundò Canticum ex veteri vel novo Testamento desumptum, tertiò & alius Psalmus.

Post Psalmos & Antiphonas dicuntur Capitulum, Hymnus, Versiculus, Canticum Evangelicum, *Benedictus Dominus*, &c. cum sua Antiphona.

Dictâ hâc Antiphonâ in Feriis majoribus & mediis, Litaniæ, seu Preces flexis genibus recitantur, in quarum fine Celebrans (solus stans) dicit: *Dominus vobiscum* & *Oremus*, cantat Orationem; & dicto *Amen* omnes surgunt.

In ceteris omnibus Officiis dictâ post Canticum *Benedictus* Antiphonâ, statim Celebrans omnibus stantibus dicit, *Dominus vobiscum* & *Oremus*. Et cantat Orationem Officio convenientem. Et post Orationem rursùs repetit *Dominus vobiscum*, & dicitur *Benedicamus Domino*.

Posteà si facienda sit aliqua Commemoratio, fit hoc loco, dicendo Antiphonam, Versum & Orationem.

Commemorationes autem vel singulares sunt, vel Communes.

Commemoratio singularis non fit nisi alicujus Festi in eamdem ipsam diem incidentis. Antiphona sumitur ex Laudibus in Proprio vel in Communi; & dicitur ea quæ posita est ad *Benedictus*: Versus habetur post hymnum similiter in Laudibus.

Post Commemorationes singulares si quæ occurrant, fiunt Communes in iis quibus competunt diebus, hoc ordine: primo de Cruce, secundo de B. Maria, tertio de SS. Pontificibus Rothomagensibus & de Patrono Ecclesiæ, qui sese invicem pro sua dignitate antecedunt, ultimo loco pro Pace.

Fit commemoratio de Christo crucifixo redivivo per totum tempus Paschale, nisi sit Festum Triplex: per annum fit tantùm in Feriali Officio. Non fit commemoratio de Cruce ab initio Adventûs usque ad Purificationem B. Mariæ, nec à Dominica Passionis usque ad Feriam secundam post Dominicam in Albis depositis.

Ceteræ Commemorationes Communes fiunt in Festis Simplicibus & Semiduplicibus ac in Feriis à Purificatione ad Dominicam Passionis, & à Festo Sanctæ Trinitatis, usque ad Adventum.

Præterea fit de sola Sancta Maria à Circumcisione ad Purificationem in Feriis, Festis Simplicibus & Semiduplicibus, ac Dominicis.

Insupèr tam de Sancta Maria quàm de Patrono Ecclesiæ in Dominicis à Purificatione ad Dominicam Passionis, & à Dominicâ tertia post Pentecosten usquè ad Adventum fit commemoratio.

Porrò quando fit commemoratio Christi crucifixi & redivivi, & quando fit commemoratio solius B. Mariæ, hæ commemorationes habentur in Proprio de Tempore. Quando autem fiunt aliæ commemorationes Communes, omnes inveniuntur in Psalterio.

Finitis Commemorationibus Celebrans dicit *Dominus vobiscum*. Deinde dicitur *Benedicamus Domino*, ℟. *Deo gratias*, & submissâ voce *Fidelium animæ*, &c. secretò *Pater noster*.

Si immediatè sequatur Prima, statim fine *Pater* & *Ave* incipitur absolutè, quòd observatur quoties duæ Horæ simul junguntur, quod raro fiet.

## DE PRIMA.

AD Primam dictis secretò *Pater* & *Ave* dicitur *Deus in adjutorium*, & Hymnus *Jam lucis*. Deinde dicuntur tres Psalmi cum una Antiphona.

Ante Antiphonam in Officio de Dominica in modum quarti Psalmi additur Symbolum *Quicumque*.

Post Antiphonam dicitur Capitulum, & Responsorium breve cum suo versu. Posteà Preces seu Litaniæ (si dicendæ sint.) Tandem *Dominus vobiscum*. Oratio, *Domine Deus*. Post Orationem repetitur *Dominus vobiscum*, & dicitur *Benedicamus Domino*, ℟. *Deo gratias*.

Deinde, nisi priùs recitanda sit Prima de B. Maria, in Choro aut in Capitulo legitur Martyrologium.

Post Martyrologium, vel statim post *Benedicamus* dicitur, ℣. *Pretiosa* cum Oratione *Sancta Maria*.

Tùm si sit negotiosus dies, dicuntur preces *Deus in adjutorium*, &c. Si sit dies Festus in populo, hæ preces omittuntur.

Posteà Lector eo ritu quo in Lectionibus Officii Nocturni petit Benedictionem dicens, *Jube, Domne, benè dicere*, & Celebrans benedicit, dicens: *Bonitatem & disciplinam & scientiam doceat nos Dominus*. Chorus respondet: *Amen*. Lector legit Canonem, qui semper terminatur, his verbis: *Tu autem, Domine, miserere nostri*. ℟. *Deo gratias*.

Canon si appositus fuerit in Proprio Sanctorum, hic solus legitur: si non sit in Proprio Sanctorum (quod sæpiùs eveniet) habebitur in Proprio de Tempore.

Lecto Canone dicitur *Adjutorium*, &c. ut in Psalterio.

*De Horis Tertia, Sexta & Nona.*

AD Tertiam, Sextam & Nonam, dictis secretò *Pater* & *Ave*, dicitur: *Deus in adjutorium*, &c. & Hymnus: deinde tres Psalmi cum una Antiphona; tùm Capitulum & Responsorium breve cum suo versu. Posteà si Officium fiat de Feria majore aut media, Litaniæ seu Preces flexis genibus recitantur, in quarum fine Celebrans surgens dicit: *Dominus vobiscum*, & *Oremus*, & cantat Orationem.

Si non fiat Officium de Feria majore aut media, statim post Versum cunctis stantibus Celebrans dicto, *Dominus vobiscum*, & *Oremus*, cantat Orationem; posteà repetit *Dominus vobiscum*, deinde dicitur, *Benedicamus Domino*, ℟. *Deo gratias*, &c. submissâ voce *Fidelium animæ*, & secretò *Pater noster*.

*DE VESPERIS.*

A Vesperis præcedentis diei incipit omne Officium Festivum. Simplex dictâ Nonâ, cetera dicto Completorio propriæ diei terminantur.

Vesperæ præcedentis diei, primæ Vesperæ appellantur: Vesperæ diei propriæ, secundæ Vesperæ nominantur.

Feriale Officium incipit ubi Festivum deficit.

Ad Vesperas dictis secretò *Pater* & *Ave*, dicitur *Deus in adjutorium*. Deinde cum quinque Antiphonis Officio convenientibus quinque Psalmi Feriales, nisi aliter notetur, & posteà Capitulum.

Post Capitulum additur Responsorium (quando dicendum est.)

Post Responsorium vel Capitulum dicuntur Hymnus, Versiculus, Canticum Evangelicum *Magnificat*, cum Antiphona.

Dictâ hâc Antiphonâ, si Feriæ majoris aut mediæ fit Officium, Litaniæ seu Preces recitantur ut in Laudibus.

In ceteris omnibus Officiis, dictâ post Canticum *Magnificat* Antiphonâ, statim Celebrans cunctis stantibus dicit, *Dominus vobiscum* & *Oremus*, & cantat Orationem Officio convenientem. Et post Orationem rursùs repetit *Dominus vobiscum*. Et dicitur, *Benedicamus Domino*.

Posteà si facienda sit aliqua Commemoratio, fit hoc loco, dicendo Antiphonam, Versum & Orationem.

Commemorationes fiunt eo ordine, quem præscripsimus in Laudibus: sed hìc dicitur ea Antiphona quæ posita est ad *Magnificat*, & Versus qui habetur post Hymnum in Vesperis.

Insuper observandum est tam in Vesperis quam in Laudibus, ne iterentur eadem Antiphona idemque Versus, pro Commemoratione debere ad Laudes Antiphonam & Versum desumi ex primis Vesperis, & similiter ad Vesperas desumi ex Laudibus.

Dictâ ultimâ Oratione, Vesperæ terminantur ut Laudes.

*DE COMPLETORIO.*

AD Completorium absolutè dicitur *Converte nos*, & *Deus in adjutorium*. Tùm recitantur tres Psalmi cum una Antiphona, Capitulum, Hymnus, Versiculus, Canticum Evangelicum *Nunc dimittis*, cum sua Antiphona.

Post hanc Antiphonam, cunctis stantibus si Officium fiat de Festo Simplici vel de Feria minori, aut genua submittentibus si Officium fiat de Feria media vel majori, Litaniæ seu Preces recitantur.

In aliis Officiis statim post Antiphonam Celebrans dicit *Dominus vobiscum*, & *Oremus*, & cantat Orationem; & posteà rursùs repetit: *Dominus vobiscum*, & dicitur, *Benedicamus Domino*, ℟. *Deo gratias*. Et Celebrans dicit, *Benedicat & custodiat*, &c.

His ex devotione addi solet una ex Antiphonis ad B. Mariam cum Versiculo & oratione pro tempore, ut habetur in fine Psalterii.

*Quæ in superioribus capitibus dubia remanent, hæc in sequentibus definientur.*

*De Feriali Officio minore.*

OFficium fit Feriale minus extra Dominicas, Adventum, Quadragesimam, Quatuor Tempora & Vigilias, quando nullum occurrit Festum.

Officium istud ritè ordinabit qui præscripta in Psalterio præcisè servabit.

Lectiones Officii Nocturni cum Responsoriis habentur in Proprio de Tempore. Et in fine cujusque Horæ dicitur Oratio Dominicæ præcedentis sumpta ex eodem Proprio.

*De Feriali Officio majore & medio.*

FIt Officium Feriale majus in Quatuor Temporibus, in Vigiliis, & per totam Quadragesimam, exceptis Dominicis.

In Feriali Officio majore ad Nocturnum tertia Lectio legitur de Evangelio cum Homilia.

Fit Officium Feriale medium per totum Adventum, exceptis Dominicis, & Feriis in quibus fit Officium de Festo non Simplici.

In Feriali Officio medio ad Nocturnum

dus Lectiones leguntur de Scriptura occurrente.

Ad Laudes Matutinas, Horasque sequentes usque ad Completorium inclusivè in Officio Feriali tam majore quàm medio Litaniæ, seu preces flexis genibus recitantur.

### DE OFFICIO SIMPLICI.

Officium fit Simplex, quando ita notatur in Kalendario, vel in Proprio Sanctorum.

Ad primas Vesperas Psalmi cum suis Antiphonis dicuntur de Feria; deinde Capitulum, Hymnus, Versiculus, Antiphona ad *Magnificat*, & Oratio dicuntur de Sancto: Tum fiunt Commemorationes, tam singulares si quæ sint, quàm Communes.

Completorium dicitur ut in Feriali Officio minore.

Ad Nocturnum, Invitatorium, Hymnus, Psalmi cum suis Antiphonis, & Versiculus dicuntur de Feria: Absolutio & Benedictiones ut habentur ante Psalterium. Duæ priores Lectiones leguntur ex Scriptura occurrente; ita ut ex tribus quæ assignantur in Proprio de Tempore fiant duæ, primæ scilicet secundam adjungendo: & tertia secundæ locum teneat. Duo priora Responsoria erunt secundum & tertium Feriæ, dempto *Gloria Patri*. Deinde tertia addetur Lectio de Sancto cum suo Responsorio. Denique Hymnus *Te Deum*.

Ad Laudes Matutinas, Versus Sacerdotalis de Sancto ut in Communi nisi sit proprius; Psalmi Feriales præter Canticum, quod est proprium pro Sanctis in unaquaque Feria, cum Antiphonis de Sancto; Capitulum, Hymnus, Versiculus, Antiphona ad *Benedictus*, & Oratio de Sancto. Tum fiunt Commemorationes.

Ad Primam Psalmi Feriales cum prima Antiphona de Laudibus; Capitulum *Regi sæculorum* cum suo Responsorio brevi. Deinde Litaniæ seu Preces, & reliqua ut in Feriali Officio minore.

Ad Tertiam, Psalmi Feriales cum secunda Antiphona de Laudibus; ad Sextam, Psalmi Feriales, cum tertia Antiphona de Laudibus; ad Nonam, Psalmi Feriales cum quinta Antiphona de Laudibus: deinde Capitula cum suis brevibus Responsoriis & Versiculis de Sancto, ut in Communi. Denique Oratio propria, ut in Proprio Sanctorum.

Dictâ Nonâ terminatur Officium Simplex.

*Ad quam Classem pertineant cetera de quibus dicendum superest Officia indicabit Kalendarium, vel Proprium sive Sanctorum, sive de Tempore.*

### DE OFFICIO SEMIDUPLICI.

Ad primas Vesperas Officii Semiduplicis dicuntur Psalmi Feriales cum Antiphonis de Sancto; deinde Capitulum, Hymnus, Versiculus, Antiphona ad *Magnificat* & Oratio de Sancto ut in Communi vel proprio: tum fiunt Commemorationes communes.

Ad Completorium, Psalmi, Antiphona & Capitulum de Feria; Hymnus de Sanctis *Dona Deus*; Versus & reliqua ut in Dominica.

Ad Nocturnum post Invitatorium & Hymnum de Sancto, Psalmi Feriales terni dicuntur cum tribus Antiphonis ex Nocturno de Communi secundum Feriam occurrentem assumptis; Feriâ secundâ aut quintâ Antiphonæ ex primo Nocturno; Feriâ tertiâ aut sextâ ex secundo Nocturno; tandem Feriâ quartâ aut in Sabbato ex tertio Nocturno desumuntur. Similiter Versiculus & tria Responsoria ex eodem Nocturno, quo Antiphonæ accipiuntur. Duæ priores Lectiones leguntur ex Scriptura occurrente; ita ut ex tribus quæ notantur in Proprio de Tempore fiant duæ, sicut & de Simplici Officio observavimus. Tertia Lectio addetur de Sancto. Denique post tertium Responsorium Hymnus, *Te Deum*.

Ad Laudes & Horas omnia dicuntur ut in Officio Simplici, præter preces aut Litanias quæ ad Primam debent omitti.

Ad secundas Vesperas, Psalmi Feriales, Antiphonæ & cetera de Sancto. Tum fiunt Commemorationes communes.

Completorium dicitur ut suprà post primas Vesperas.

### *De Officio B. Mariæ in Sabbato, & aliis Festivitatibus.*

Quoties Feriâ vj. occurrit Festum Semiduplex aut suprà, fit tantùm Commemoratio de beata Maria in Sabbato; & ad Completorium dicitur Hymnus, *Dona Deus*, cum sua Doxologia, cetera ut in Psalterio.

Quando verò Feriâ vj. Vesperæ integræ dicuntur de beata Maria; ad Completorium, Capitulum, Hymnus, Versiculus, Antiphona ad *Nunc dimittis* & Oratio dicuntur, ut notatur in Officio B. Mariæ in Sabbato; quod observatur quoties Vesperæ dicuntur de B. Maria; nisi aliter notetur.

Ad Laudes loco Cantici quod reperitur in Psalterio, dicitur Canticum Judith, *Aperite portas*, ut in Laudibus Officii parvi, quod observatur quoties

fit Officium B. Mariæ, nisi aliter notetur in proprio.

Ad Primam Capitulum, *Regi sæculorum.*

In ℟. br. ℣. *Qui natus es de Maria Virgine.*

Ad Hymnos Horarum Doxologia

*Qui natus es de Virgine.*
*Jesu, tibi sit gloria,*
*Cum Patre, cumque Spiritu*
*In sempiterna secula. Amen.*

Nisi sit propria.

### DE OFFICIO DUPLICI MINORE.

AD primas Vesperas Officii Duplicis minoris dicuntur Psalmi Feriales cum Antiphonis de Sancto: Deinde Capitulum, Responsorium, Hymnus, Versiculus, Antiphona ad *Magnificat*, & Oratio de Sancto ut in Communi vel Proprio. Nec fiunt Commemorationes nisi singulares.

Completorium dicitur ut in Officio Semiduplici.

Ad Nocturnum, post Invitatorium & Hymnum de Sancto, Psalmi Feriales terni dicuntur cum tribus Antiphonis ex Nocturno de Communi secundum Feriam occurrentem assumtis. Similiter Versiculus & tria Responsoria ex eodem Nocturno assumuntur. Prima Lectio legitur ex Scriptura occurrente; ita ut ex tribus quæ assignantur in Proprio de Tempore unica fiat: secunda Lectio legetur de Sancto: tertia de Evangelio & Homilia, & post tertium Responsorium addetur Hymnus, *Te Deum.*

Ad Laudes Matutinas, Versus Sacerdotalis de Sancto, ut in Communi vel in Proprio; Psalmi Feriales cum Antiphonis de Sancto; Capitulum, Hymnus, Versiculus, Antiphona ad *Benedictus*, & Oratio de Sancto. Nec fiunt Commemorationes, nisi singulares.

Prima, Tertia, Sexta & Nona dicuntur ut in Officio Simplici, præter Preces quæ ad Primam debent omitti.

Ad secundas Vesperas, Psalmi Feriales dicuntur cum Antiphonis de Sancto: deinde Capitulum, Hymnus, Versus, Antiphona ad *Magnificat* & Oratio de Sancto. Nec fiunt Commemorationes nisi singulares.

Completorium dicitur ut in Officio Semiduplici.

### DE DOMINICA.

OFficium de Dominica ordine dispositum est partim in Psalterio, partim in Proprio de Tempore.

Quando non fit Officium de Dominica, de ea semper fit commemoratio, tam in primis quàm in secundis Vesperis, etiamsi fuerit Festum solemne, nisi aliter notetur in Breviario.

### DE OFFICIO DUPLICI MAJORE.

IN Officio Duplici majore, si Nocturnum exceperis, omnia dicuntur ut in Duplici minore.

Ad Nocturnum; Invitatorium & Hymnus dicuntur de Sancto, ut in Proprio vel Communi. Deinde recitantur novem Psalmi Feriales, singuli cum singulis Antiphonis de Sancto. Tùm Versiculus, Lectiones & Responsoria dicuntur ut in Officio Duplici minore. Denique Hymnus, *Te Deum.*

### DE OFFICIO TRIPLICI *Secundæ Classis.*

IN Officio Triplici secundæ Classis tam ad primas quam ad secundas Vesperas, dicuntur Psalmi Feriales cum Antiphonis de Sancto: deinde Capitulum, Responsorium, Hymnus & Versiculus de Sancto. Antiphona ad *Magnificat* Triplicatur, id est ter cantatur, primò ante Canticum, secundò ante Versum *Gloria Patri*: tertiò post Versum *Sicut erat.* Post Orationem de Sancto si occurrat Festum Simplex, aut Semiduplex de eo fit commemoratio.

Completorium dicitur ut in Officio Semiduplici.

Nocturnum dicitur ut in Officio Duplici majore.

Laudes dicuntur ut in Officio Semiduplici, Triplicatâ tamen Antiphonâ ad Canticum *Benedictus.*

Ad Horas, Responsoriis brevibus additur Duplex *Alleluia, alleluia*, quod etiam post primum Versum resumitur; secundo Versiculo simplex additur *Alleluia*, sicut & Responsioni.

### DE OFFICIO TRIPLICI *Primæ Classis.*

IN Officio Triplici primæ Classis Vesperæ dicuntur ut in Triplici secundæ Classis, addito tantùm *Alleluia* in fine Versiculorum, & Antiphonæ ad *Magnificat.*

Completorium dicitur ut in Officio Semiduplici.

Noctis Officium in tria Nocturna distribuitur.

In Laudibus Matutinis Triplicatur Antiphona ad *Benedictus*, addito *Alleluia*, in fine ipsius.

Ad Horas, Responsoria brevia dicuntur ut in Triplici secundæ Classis.

### DE OFFICIO SOLEMNI.

IN Officio solemni omnia dicuntur ut in Triplici primæ Classis.

Ad Officium Nocturnum, Invitatorium repetitur integrum post quemlibet Versum Psalmi *Venite*, *exultemus*.

## DE OCTAVIS.

Non fit Octava nisi de Festo Solemni, aut Triplici primæ vel secundæ Classis.

Ad Officium Nocturnum, intra Octavas, quæ sunt ritûs Semiduplicis aut Duplicis, tres dicuntur Antiphonæ Nocturni occurrentis, si Psalmi non sint proprii; si autem novem Antiphonæ diei Festi desumantur ex Psalmis Festo propriis, & iidem novem Psalmi recitentur per Octavam; tres Psalmi primi Nocturni dicuntur sub una Antiphona e tribus ejusdem Nocturni occurrente secundum Feriam, ita ut prima Antiphona primi Nocturni recitetur Feria II & V. secunda Antiphona ejusdem Nocturni recitetur Feria III. & VI. tertia vero Antiphona Feriâ IV. & Sabbato. Et sic in secundo & tertio Nocturno, nisi pro Octava habeantur in Proprio tres Antiphonæ.

℣. & ℟℟. desumuntur ex Nocturno diei Festi occurrente secundum Feriam, nisi aliter notetur in Proprio.

Intra Octavam Officii Solemnis, Officium fit Duplex minus, aut Semiduplex, ut notatur in Proprio. Dies vero Octava est semper Duplex majus, & per totam Octavam Responsoria brevia dicuntur cum duplici *Alleluia*, ut in die Festo.

In Dominicis, quæ occurrunt intra Octavas, totum Officium fit de Dominica, ut in Psalterio & in Proprio de Tempore, cum Commemoratione Octavæ; nisi aliter notetur.

Intra Octavam Officii Triplicis primæ Classis, ritus est Semiduplex, exceptâ tamen Octavâ Corporis Christi, quæ est ritûs Duplicis minoris propter reverentiam Sanctissimi Sacramenti, exceptâ quoque Octavâ Conceptionis beatæ Mariæ, intra quam fit tantùm de ea Commemoratio propter Adventum Domini, in die verò Octava fit Duplex minus. Responsoria brevia dicuntur ut in die Festo, omisso, *Alleluia*, quod additur intra Octavam Corporis Christi.

In Die Octava, Officium fit Duplex minus, nisi aliter notetur in Proprio, & additur *Alleluia* Responsoriis brevibus.

Intra Octavam Triplicis secundæ Classis, Officium fit ut in Simplicibus. Dies Octava est Semiduplex, nisi aliter notetur. Intra Octavam, & in die Octava Responsoriis brevibus non additur *Alleluia*.

Intra Octavas Sanctorum, ad Completorium dicitur Hymnus, *Deus Deus*, nisi aliter notetur.

*Annotationes pro tempore Paschali.*

Tempus Paschale incipit à primis Vesperis sancti diei Paschæ, & usque ad Sabbatum post Pentecosten protenditur, quo die, dictâ Nonâ, terminatur.

Tempore Paschali in fine omnium Antiphonarum, Versiculorum & Responsoriorum dicitur *Alleluia*.

Ad Vesperas, Completorium & Laudes Matutinas dicuntur singulis diebus Psalmi Feriales: Ad Horas Psalmi de Dominica; sed ad Primam non dicitur Symbolum *Quicumque* nisi in Dominica die.

Ad Officium Nocturnum dicuntur tantùm tres Psalmi in Proprio de Tempore assignati.

In Officio Simplici, Invitatorium, Hymnus, Antiphona dicuntur ut in Feriis, & habentur in Proprio de Tempore. Versus & duo priora Responsoria dicuntur secundùm Feriam, & habentur in eodem loco. Ex tribus Lectionibus de Feria fiunt duæ. Tertia cum suo Responsorio erit de Sancto

In Officio Semiduplici & suprà, Invitatorium dicitur ut in Communi Sanctorum, nisi sit Proprium, Hymnus, Antiphona, Versus & tria Responsoria dicuntur de Sancto. Dicitur autem Antiphona prima Nocturni secundam Feriam occurrentis. In Semiduplici duæ priores Lectiones leguntur de Scriptura occurrente; ita ut ex tribus fiant duæ: Tertia est de Sancto.

In Duplicibus prima Lectio est ex duabus prioribus de Feria; secunda de Sancto; tertia de Evangelio & Homilia: & omittitur tertia Lectio Ferialis de Epistola Apostoli.

In Officio Triplici & in Solemni ad Nocturnum dicuntur tres Antiphonæ cum tribus Psalmis in Proprio assignatis, Lectiones ut in Duplicibus.

Ad Laudes Matutinas, & ad Vesperas post Octavam Paschæ tam in Feriali Officio quàm in Simplici, Semiduplici ac Duplici, nec non in Officio de Dominica fit Commemoratio de Cruce.

Ad Horas, Responsoriis brevibus additur duplex *Alleluia*, *alleluia*, quod etiam post primum Versum pro reclamatione resumitur.

## DE OCCURRENTIA.

Translatione & anticipatione Officiorum Officia dicuntur sibi occurrere, quando incidunt in eumdem diem.

Si duo, plurave Festa sibi occurrunt, Officium fiet de digniore: minus di-

gnum aut transfertur, aut anticipatur, aut hoc anno siletur, aut de eo fit Commemoratio.

Non siletur nisi Simplex aut Semiduplex incidens in Solemne aut Feriam privilegiatam primæ Classis, vel Vigilia alicujus Sancti incidens in Feriam majorem aut mediam.

Simplicia & Semiduplicia nec anticipantur, nec transferuntur.

Festa mobilia non transferuntur.

Una Dominica ferè sexies in septennio anticipatur, nempe Dominica abundans, cujus Commemoratio fit ante Septuagesimam, vel in Hebdomada vigesima secunda post Pentecosten, ultimâ die Festo Duplici aut Triplici non impeditâ. In hac igitur die Officium fit de Feria; sed in Nocturno tertia Lectio erit de Homilia; ad *Benedictus* Antiphona, & ad omnes Horas usque ad Nonam inclusivè Oratio erit de Dominica superabundante: Missa quoque de eadem Dominica, cum Commemoratione Festi Simplicis aut Semiduplicis occurrentis in primis Vesperis, Nocturno, Laudibus & Missa; atque etiam, quando Festum fuerit Semiduplex, in secundis Vesperis.

Notandum in Nocturno Commemorationem alicujus Sancti non aliter fieri, quam per Lectionem ejus Legendæ seu Historiæ: Commemorationem verò Dominicæ, vel Feriæ majoris fieri per Lectionem Homiliæ.

Si Simplex aut Semiduplex inciderit in Festum Solemne, aut Feriam privilegiatam primæ Classis, Officium fiet de Festo Solemni, aut de Feria privilegiata sine ulla Commemoratione Festi tum Simplicis tum Semiduplicis.

Si Simplex in aliud quodcunque Festum (excepto Triplici primæ Classis) aut in Dominicam, aut in Feriam mediam, aut Majorem inciderit de eo fiet Commemoratio hujus simplicis in primis Vesperis, Nocturno & Laudibus.

Semiduplex si inciderit in Dominicam, vel in Feriam privilegiatam secundæ aut tertiæ Classis, aut in Festum Duplex vel Triplex primæ Classis; fiet Commemoratio Semiduplicis in utrisque Vesperis, Nocturno & Laudibus.

Si Simplex incidat in Sabbatum extra Adventum & Ferias Majores aut privilegiatas, Officium fit de B. Maria semper Virgine cum Commemoratione Festi Simplicis, nisi sit dies intra Octavam; tunc enim fit de Octava. Si in tale Sabbatum nullum inciderit aliud Festum, Officium fit de Beata Virgine.

Vigilia si inciderit in Dominicam, Officium aut Commemoratio Vigiliæ atque etiam jejunium, si præceptum fuerit, fiet per Anticipationem in Sabbato præcedenti. Similiter si inciderit Vigilia S. Joannis Baptistæ in Festum Corporis Christi aut in Octavam ejusdem Festi, Jejunium & Officium Vigiliæ fiunt per Anticipationem in Feria quarta.

Dies Octava si inciderit in Festum Solemne aut Triplex, aut in Dominicam privilegiatam secundæ Classis, aut in diem jejunii, fit tantùm Commemoratio de Octava.

Si Festum S. Sylvestri inciderit in Dominicam, Officium hujus Sancti fiet per Anticipationem in præcedenti Sabbato.

Si in Quadragesimam inciderit Festum S. Matthiæ, ejus Officium fiet in Feria tertia ante diem Cinerum, cum Commemoratione alterius Festi, si quod forsan occurrat.

Duplex minus si in quamcunque Dominicam aut Feriam privilegiatam, aut diem jejunii, aut in Festum superioris gradûs inciderit, transferetur in primam diem Festo Triplici, Duplici, vel Semiduplici non impeditam.

Duplex majus si occurrat Dominicæ non privilegiatæ, Officium fiet de Duplici cum Commemoratione Dominicæ in utrisque Vesperis, Nocturno, Laudibus & Missa: si in Dominicam privilegiatam, aut Festum superioris gradûs, aut Feriam privilegiatam primæ, aut secundæ Classis inciderit, transferetur.

Solemne aut Triplex si in Dominicam privilegiatam primæ Classis inciderit, transferetur. Si in Dominicam secundæ Classis inciderit, fiet Officium de Triplici cum Commemoratione Dominicæ.

¶ Si Festi operum vacui tranferatur Officium, vacatio non transfertur, nisi Festum sit Triplex.

## DE CONCURRENTIA.

Concurrere dicuntur duo Officia quando alterum, antè incipit quàm alterum terminari extra concursum debeat; quod nisi in Vesperis non accidit.

In concursu duorum Officiorum, attendendum est ad gradum & ad dignitatem. Gradus intelligitur per denominationem in Rubrica appositam; dignitas per objectum Festi. Sic Festa Domini ceteris digniora sunt; Festa Deiparæ ceterorum Sanctorum Festis præeunt, &c. Solemne Triplici superius est, Triplex Duplici, & sic de aliis.

Si duo concurrentia sint ejusdem gradûs & dignitatis, Vesperæ dicuntur de Festo

Festo praecedenti usque ad Capitulum; deinde Capitulum & reliqua dicuntur de sequenti cum Commemoratione praecedentis.

Si diversi sint gradûs, Vesperae dicuntur de superiore cum Commemoratione inferioris.

In primis Vesperis Officii Solemnis, aut Triplicis primae Classis non fit Commemoratio praecedentis, nisi fuerit Duplex majus, aut superioris gradûs.

In secundis Vesperis Officii Solemnis non fit Commemoratio subsequentis, nisi fuerit Duplex minùs, aut superioris gradûs.

In secundis Vesperis Festi Triplicis primae Classis non fit Commemoratio Festi simplicis; de quocunque verò alio fit Commemoratio.

Si concurrentium aequales sint gradûs, Vesperae dicuntur de digniore, cum alterius Commemoratione.

*DE OFFICIO PARVO B. MARIAE, & aliis.*

Officium parvum Beatae Mariae, Officium Defunctorum, Septem Psalmi Poenitentiales, Litaniae, Psalmi graduales quando & quomodo dici debeant, videre est circa finem Breviarii.

*DE EXCEPTIONIBUS.*

Cum regulae ferè omnes quamvis generales, semper aliquam patiantur exceptionem, admonemus observationes singulares suo loco haberi in Proprio.

*Quaedam observanda ab iis, qui privatim recitant Breviarium.*

Qui privatim recitat, ante Lectiones aut potius Benedictiones dicit: *Jube, Domine, benedicere*, non *Domne*.

Ante & post Orationes dicit: *Domine, exaudi orationem meam*; non *Dominus vobiscum*, etiamsi fuerit Sacerdos.

Ad Primam, aut Completorium, quando fit Confessio, dicit tantùm unâ vice *Confiteor*, omissis his vocabulis, *tibi Pater, te Pater, vobis fratres, vos fratres*. Deinde dicit: *Misereatur nostri omnipotens Deus, & dimissis peccatis nostris perducat nos ad vitam aeternam. Amen.*

*ADDITIO AD FERIAS MAJORES.*

Quoties in Feria majore post Homiliam non additur Responsorium Evangelicum, tria Responsoria sumuntur de Feria occurrente.

Si Feria major inciderit in Sabbatum, tertium Responsorium erit semper tertium de Feria quarta; nisi aliter notetur in Proprio.

Non dicuntur Preces ad Laudes extra Adventum, nisi sit jejunium.

# TABULA
## Exhibens gradus & distinctionem Officiorum.

*SOLEMNIA.*

Nativitas Domini.
Epiphania Domini.
Pascha.
Ascensio Domini.
Pentecoste.
Assumptio Beatæ Mariæ Virginis.
Festum omnium Sanctorum.
Festum Patroni Ecclesiæ Privatæ.

*TRIPLICIA PRIMÆ CLASSIS.*

Conceptio Beatæ Mariæ Virginis.
Præsentatio Domini, & Purificatio beatæ Mariæ Virginis.
Annuntiatio, & Incarnatio Domini.
Festum Corporis Christi.
Nativitas B. Mariæ Virginis.
Dedicatio Ecclesiarum.
Festum SS. Nicasii Neustriæ Apostoli & Sociorum Martyrum, ac Melloni, qui Rotomagensem Ecclesiam fundaverunt.
Sancti Romani.

*TRIPLICIA SECUNDÆ CLASSIS.*

Circuncisio Domini.
Festum SS. Trinitatis.
Nativitas sancti Joannis Baptistæ.
Festum Sanctorum Apostolorum Petri & Pauli.
Festum S. Michaëlis Archangeli, & omnium Angelorum.

*In Metropoli Triplicia secundæ Classis, per Diœcesim Duplicia majora.*

Joseph sponsi B. Mariæ Virginis.
Fabiani & Sebastiani.
Visitatio B. Mariæ Virginis.
Transfiguratio Domini.
Octava Assumptionis, & Commemoratio voti Ludovici XIII. & Dedicationis Ecclesiæ B. Mariæ Majoris.
Festum S. Lucæ Evangelistæ.
Veneratio SS. Reliquiarum.

*In Metropoli Triplex secunda Classis, per Diœcesim Semiduplex.*

Festum sancti Caroli Magni.

*DUPLICIA MAJORA.*

Andreæ Apostoli.
Thomæ Apostoli.
Stephani Protomartyris.
Joannis Apostoli & Evangelistæ.
Sanctorum Innocentium.
Baptismus Domini.
Matthiæ Apostoli.
Beatæ Mariæ compatientis.
Marci Evangelistæ.
Philippi & Jacobi Apostolorum.
Inventio sanctæ Crucis,
Octava Ascensionis Domini.
Festum Sacerdotii Domini.
Barnabæ Apostoli.
Commemoratio S. Pauli Apostoli.
Jacobi Zebedæi Apostoli.
Laurentii Martyris.
Bartholomæi Apostoli.
Ludovici Regis Francorum.
Exaltatio sanctæ Crucis.
Matthæi Apostoli & Evangelistæ.
Simonis & Judæ.
Commem. omnium fidelium Defunct.
Martini Episcopi.
Præsentatio B. Mariæ Virginis.

*In Metropoli.*

Bricii Episcopi.

*Dominica privilegiata primæ Classis, de quibus semper fit Officium.*

Dominica prima Adventûs.
Dominica prima Quadragesimæ.
Dominica Passionis.
Dominica Palmarum.
Dominica in Albis depositis.

*Dominica privilegiata secunda Classis, de quibus fit Officium nisi occurrat Solemne vel Triplex primæ Classis.*

Dominicæ Adventûs.
Dominica Septuagesimæ.
Dominica Sexagesimæ.
Dominica Quinquagesimæ.
Dominicæ Quadragesimæ.

*Vigiliæ privilegiatæ, de quibus Officium fit etiam in Dominica.*

Vigilia Nativitatis Domini.
Vigilia Epiphaniæ Domini.

*Feriæ privilegiatæ primæ Classis, in quibus non fit Officium nec Commemoratio alicujus Festi.*

Feria 5. in Cœna Domini.
Feria 6. Parasceve.
Sabbatum Sanctum.
Feria 2. Paschæ.
Feria 3. Paschæ.
Feria 2. Pentecostes.
Feria 3. Pentecostes.

*Feriæ privilegiatæ secundæ Classis, in quibus non fit Officium cujusquam Festi, sed Commemoratio tantùm.*

Feriæ intra Octavam Epiphaniæ.
Feria 4. Cinerum.
Feriæ 2. 3. & 4. Majoris Hebdomadæ.
Feriæ 4. 5. 6. & Sabbato intra Octavam Paschæ.
Vigilia Pentecostes.
Feriæ 4. 5. 6. & Sabbato intra Octavam Pentecostes.

*Feriæ privilegiatæ tertiæ Classis, in quibus non fit Officium Festi nisi Triplicis primæ Classis.*

Omnes Feriæ Quadragesimæ.
Omnes dies intra Octavam Corporis Christi.

# RUBRICÆ

## De Occurrentia & Concurrentia in duabus Tabulis abbreviatæ.

### TABULA I. De Occurrentia.

MOBILIA Festa si eâdem die occurrunt, quâ & hæc Festa FIXA.

| MOBILIA | Simplex. | Semiduplex. | Vigilia. | Duplex Minus. | Dies intra Octavam. | Octava. | Duplex Majus. | Triplex 2. Classis. | Triplex 1. Classis. | Solemne. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Solemne, | 4 | 4 | 2 | 1 | 4 | 2 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| Triplex primæ Classis, | 4 | 3 | 2 | 2 | 4 | 2 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| Triplex secundæ Classis, | 3 | 3 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 |
| Dom. privil. 1. Classis, | 3 | 3 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| Dom. privileg. 2. Classis, | 3 | 3 | 0 | 1 | 3 | 2 | 1 | 1 | 6 | 6 |
| Domin. per annum, | 3 | 3 | 2 | 1 | 3 | 2 | 6 | 6 | 6 | 6 |
| Octava, | 3 | 3 | 2 | 1 | 3 | 0 | 5 | 5 | 5 | 5 |
| Feria privileg. 1. Classis. | 4 | 4 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| Feria privileg. 2. Classis. | 3 | 3 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| Feria Quadragesimæ, | 3 | 3 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 6 | 6 |
| Feria 4. Temporum, | 3 | 3 | 4 | 1 | 3 | 3 | 1 | 1 | 6 | 6 |
| B. Maria in Sabbato, | 3 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 |

1. Officium Mobilis, Translatio Fixi.
2. Officium Mobilis, Anticipatio Fixi.
3. Officium Mobilis, Commemoratio Fixi.
4. Officium Mobilis, Silentium Fixi.
5. Officium Fixi, Anticipatio Mobilis.
6. Off. Fixi, Comm. Mob.
7. Officium Fixi, Silentium Mobilis.

| Si concurrat / cum | Simplici. | Die intra Octavam. | Semiduplici. | Octava. | Duplici Minore. | Dominica per annum. | Duplici Majore. | Dominica Privilegiata. | Triplici secundæ Classis. | Triplici primæ Classis. | Solemni. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Solemne. | 3 | 3 | 3 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 6 |
| Triplex 1. Classis, | 3 | 3 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 6 | 4 |
| Triplex 2. Classis, | 1 | 3 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 6 | 4 | 4 |
| Dom. privilegiata, | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 4 | 4 | 4 |
| Dom. per annum, | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 4 | 4 | 0 | 4 | 4 | 4 |
| Duplex majus, | 1 | 1 | 1 | 6 | 1 | 6 | 6 | 1 | 4 | 4 | 4 |
| Octava, | 1 | 1 | 1 | 4 | 1 | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 |
| Duplex minus, | 1 | 1 | 1 | 6 | 2 | 4 | 4 | 4 | 4 | 5 | 5 |
| Semiduplex, | 1 | 1 | 2 | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | 5 | 5 |
| Dies intra Octav. | 1 | 6 | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | 5 | 5 |

1. Vesperæ de 1. Commem. de 2.
2. Vesperæ de 1. à Capitulo de 2.
3. Vesp. de 1. Silentium de 2.
4. Vesperæ de 2. Commem. de 1.
5. Vesperæ de 2. Silentium de 1.
6. Vesperæ de digniore, Comm. de altero.

In his duabus Tabulis o significat occursum, vel concursum talem nunquam reperiri.

## ORATIO DICENDA *ante Officium divinum.*

APeri, Dómine, os meum ad benedicéndum nomen sanctum tuum, munda quoque cor meum ab ómnibus vanis, pervérsis, & aliénis cogitatiónibus, intelléctum illúmina, affectum inflámma, ut dignè & atténtè, ac devótè hoc Officium recitáre váleam, & audíri mérear in conspéctu divínæ Majestátis tuæ; Per Christum Dóminum nostrum. Amen.

## ORATIO DICENDA *post Officium divinum.*

SAcrosánctæ & indivíduæ Trinitáti, crucifíxi Dómini nostri Jesu Christi humanitáti, beatíssimæ ac gloriosíssimæ vírginis Maríæ fecunditáte & integritáti, omniúmque Sanctórum universitáti, sit sempitérna laus, honor, virtus, & glória ab omni creatúra, nobísque remíssio peccatórum, per infiníta sécula seculórum. Amen.

Beáta víscera Maríæ vírginis, quæ portavérunt, & beáta úbera, quæ lactavérunt ætérni Patris Fílium. Amen.

### *Alia Oratio.*

SU'scipe clementíssime Deus, précibus & méritis beátæ Maríæ semper vírginis, & ómnium Sanctórum & Sanctárum officium servitútis nostræ: & si quid dignum laude égimus, propítius réspice, & quod negligénter actum est, clementer ignósce. Qui in Trinitáte perfécta vivis & regnas Deus, per ómnia sécula seculórum. Amen.

# INDEX

## Rerum quæ continentur in selectis Canonibus post Primam.

### PARS HIEMALIS.

# ABSOLUTIONES ET BENEDICTIONES dicendæ ante Lectiones Nocturnorum.

## DOMINICA,

*Et in Officiis novem Lectionum.*

### IN PRIMO NOCTURNO.

*Absolutio.*

DEus noster inclínet corda nostra ad se, ut custodiámus mandáta ejus. 3. *Reg.* 8. 58. ℟. Amen.

*Benedictiones.*

1. Deus spei répleat nos omni gáudio, & pace in credéndo. *Rom.* 15. 13. ℟. Amen.

2. Fílius Dei det nobis sensum, ut cognoscámus verum Deum. 1. *Joan.* 5. 20. ℟. Amen.

3. Spíritus veritátis dóceat nos omnem veritátem. *Joan.* 16. 13. ℟. Amen.

### IN II. NOCTURNO.

*Absolutio.*

DA, Dómine, mercédem sustinéntibus te, & exáudi oratiónes servórum tuórum. *Eccli.* 36. 18. ℟. Amen.

*Benedictiones.*

1. Pater Dómini nostri Jesu Christi benedícat nos in omni benedictióne spirituáli. *Eph.* 1. 3. ℟. Amen.

2. Superabúndet in nobis grátia Dómini nostri, cum fide & dilectióne. 1. *Timot.* 1. 14. ℟. Amen.

3. Ipse Spíritus póstulet pro nobis gemítibus inenarrabílibus. *Rom.* 8. 26. ℟. Amen.

### IN III. NOCTURNO.

*Absolutio.*

DIrige nos, Deus, in viam justítiæ, & sciant omnes, qui hábitant terram, quia tu es Deus conspéctor seculórum. *Eccli.* 36. 19. ℟. Amen.

*Benedictiones.*

1. Misericórdia & pax à Deo Patre, & Christo Jesu Dómino nostro. *Tim.* 1. 2. ℟. Amen.

2. Cháritas Dei diffundátur in córdibus nostris per Spíritum sanctum. *Rom.* 5. 5. ℟. Amen.

3. Evangélium virtus Dei, sit in salútem omni credénti. *Rom.* 1. 16. ℟. Amen.

*Si legatur Evangelium ex ambone, dicitur,*

Super montem excélsum ascénde tu, qui evangelízas Sion. *Isa.* 40. 9. ℟. Amen.

*Si pro decima Lectione legitur aliud Evangelium cum Homilia, Benedictio erit,*

Fúlgeat nobis illuminátio Evangélii Jesu Christi, qui est imágo Dei. 2. *Corint.* 4. 4. ℟. Amen.

*Si verò decima Lectio sit*

*de Sancto, Benedictio erit,*
Ipse Deus pacis sanctíficet nos per ómnia. *Thess.* 5. 23. ℟. Amen.

IN FESTIS DOMINI.

*Si sint novem Lectionum, omnia ut in Dominica; si verò sint trium Lectionum, Absolutio & Benedictiones secundùm Feriam occurrentem. Tertia Benedictio pro Lectione Evangelii ut in die Dominica.*

Evangélium virtus Dei, *&c.*

*Si quarta occurrat Lectio de Evangelio cum Homilia, vel de Sancto, ut suprà in die Dominica, quando occurrit decima Lectio.*

IN FESTIS B. MARIÆ VIRGINIS,

*Et Sanctorum quæ sunt novem Lectionum, Absolutiones & Benedictiones dicuntur in primo & tertio Nocturno ut suprà; in secundo autem Nocturno, ut sequuntur.*

*Absolutio.*

Benefáciat vobis Deus, & memínerit testaménti sui quod locútus est ad A'braham, & I'saac, & Jacob servórum suórum fidélium, & det vobis cor ómnibus ut colátis eum. 2. *Mach.* 1. *v.* 2. 3. ℟. Amen.

1. *Benedictio*, Deus det nobis illuminátos óculos cordis nostri, ut sciámus quæ sit spes vocatiónis ejus in Sanctis. *Ephes.* 1. *v.* 17. 18. ℟. Amen.

2. Dignos nos fáciat Deus in partem sortis Sanctórum, in lúmine, qui erípuit nos de potestáte tenebrárum. *Coloss.* 1. *v.* 12. 13. ℟. Amen.

3. Aperiántur óculi nostri, ut convertámur à ténebris ad lucem, & accipiámus sortem inter Sanctos. *Act.* 26. 18. ℟. Amen.

*In Festis trium Lectionum B. Mariæ Virginis, & in Sabbato, quando fit de Beata, & in Festis Sanctorum, quæ sunt trium Lectionum, dicuntur Absolutio & tres Benedictiones.*

*Absolutio.* Benefáciat vobis Deus, *&c.*

1. *Benedictio.* Deus det nobis, *&c.*

2. Dignos nos fáciat, *&c.*

3. Aperiántur, *&c. ut suprà.*

*Si pro tertia Lectione legendum sit Evangelium cum Homilia, Benedictio erit,*

Evangélium virtus Dei sit in salútem omni credénti. *Rom.* 1. 16. ℟. Amen.

*Si quarta occurrat Lectio de Evangelio cum Homilia, vel de Sancto, ut suprà in die Dominica, quando occurrit decima Lectio.*

IN FESTIS SIMPLICIBUS.

*Absolutio & duæ primæ Benedictiones dicuntur de Feria*

*occurrente. Tertia verò Benedictio*, Aperiántur óculi nostri, ut convertámur à ténebris ad lucem, & accipiámus sortem inter Sanctos. *Act*. 26. 18. ℟. Amen.

IN FERIALI OFFICIO.

*Absolutiones & Benedictiones sumuntur secundùm Feriam, hoc ordine, scilicet*

*Feriâ II. & V. ex I. Nocturno.*

*Feriâ III. & VI. ex II. Nocturno.*

*Feriâ IV. & Sabbato ex III. Nocturno, sed loco tertiæ Benedictionis, dicitur sequens*

*Benedictio.*

Pater Dómini nostri Jesu Christi det nobis Christum habitáre per fidem in córdibus nostris. *Ephes*. 3. *v*. 14. 16. 17. ℟. Amen.

*Quando in Feriis majoribus pro tertia Lectione legitur Evangelium cum Homilia, loco tertiæ Benedictionis, dicitur*, Dóminus det verbum evangelizántibus virtúte multâ. *Ps*. 67. 12. ℟. Amen.

*Si quarta occurrat Lectio de Evangelio cum Homilia, vel de Sancto, ut suprà in die Dominica, quando occurrit decima Lectio.*

TOTO TEMPORE PASCHALI

*Ad Trinitatem exclusivè, tam in Festis quàm in Dominicis & Feriis, Absolutio & Benedictiones.*

*Absolutio.*

Per Resurrectiónem Jesu Christi, qui est in déxtera Dei, vitæ ætérnæ herédes efficiámur. 1. *Petri* 3. *v*. 21. 22. ℟. Amen.

*Benedictiones.*

1. Det nos Deus expectáre Fílium suum de cœlis, quem suscitávit ex mórtuis. 1. *Thess*. 1. 10. ℟. Amen.

2. Interpéllet pro nobis, qui mórtuus est & resurréxit. *Rom*. 8. 34. ℟. Amen.

3. Spíritus ejus qui suscitávit Jesum Christum à mórtuis hábitet in nobis. *Rom*. 8. 11. ℟. Amen.

*Si occurrat Evangelium cum Homilia, loco tertiæ Benedictionis, dicitur*, Evangélium non sit tantùm in sermóne, sed & in virtúte. 1. *Thess*. 1. 5. ℟. Amen.

*Si quarta occurrat Lectio de Evangelio cum Homilia, vel de Sancto, ut suprà, in die Dominica, quando occurrit decima Lectio.*

*Ad Primam ante Canonem in quocunque tempore, nisi aliter notetur.*

*Benedictio.*

Bonitátem & disciplínam & sciéntiam dóceat nos Dóminus. *Psalm*. 118. 86. ℟. Amen.

PSALTERIUM

# PSALTERIUM
# DISPOSITUM
# PER HEBDOMADAM.
## *Pars Vernalis.*

## DOMINICA DIE
### AD OFFICIUM NOCTURNUM
*Primò dicitur secretò,*

PATER noster, qui es in cœlis, sanctificétur nomen tuum: advéniat regnum tuum: fiat volúntas tua, sicut in cœlo & in terra: panem nostrum quotidiánum da nobis hódiè: & dimítte nobis débita nostra, sicut & nos dimíttimus debitóribus nostris: & ne nos indúcas in tentatiónem; sed líbera nos à malo. Amen. *Matth.* 6. 9. *ad* 13.

AVe María grátiâ plena; Dóminus tecum: benedícta tu in muliéribus, & benedíctus fructus ventris tui, Jesus. *Luc.* 1. 28. 42.

Sancta María, mater Dei, ora pro nobis peccatóribus nunc & in hora mortis nostræ. Amen.

CRedo in Deum Patrem omnipoténtem, creatórem cœli & terræ. Et in Jesum Christum, fílium ejus únicum, Dóminum nostrum; qui concéptus est de Spíritu sancto, natus ex María vírgine; passus sub Póntio Piláto, crucifíxus, mórtuus, & sepúltus: descéndit ad ínferos: tértiâ die resurréxit à mórtuis: ascéndit ad cœlos; sedet ad déxteram Dei Patris omnipoténtis: inde ventúrus est judicáre vivos & mórtuos. Credo in Spíritum sanctum, sanctam Ecclésiam cathólicam, Sanctórum communiónem, remissiónem peccatórum, carnis resurrectiónem, vitam ætérnam. Amen.

*Deinde clarâ voce dicitur,*

DÓmine lábia mea apéries; ℟. Et os meum annuntiábit laudem tuam. *Ps.* 50. *v.* 16.

DEus in adjutórium meum inténde, ℟. Dómine, ad adjuvándum me festína. *Ps.* 69. 1.

Glória Patri, & Fílio, &c.

Spiritui sancto; sicut erat in principio, & nunc, & semper, & in sécula seculórum. Amen. Allelúia.

*A Septuagesima ad Pascha loco*, Allelúia, *dicitur*, Laus tibi, Dómine, Rex ætérnæ glóriæ, *& sic in aliis Horis.*

*Per Annum dicitur*

*Invitatorium*, Dóminum, qui fecit nos, * Veníte, adorémus. *Ps.* 94. 6.

*Repetitur*, Dóminum, qui fecit nos, * Veníte, adorémus.

*Psalmus* 94.

VEníte, exultémus Dómino; jubilémus Deo salutári nostro: præoccupémus fáciem ejus in confessióne, & in psalmis jubilémus ei.

*Repetitur*, Dóminum, qui fecit nos, * Veníte, adorémus.

Quóniam Deus magnus Dóminus, & Rex magnus super omnes deos; quóniam non repéllet Dóminus plebem suam, quia in manu ejus sunt omnes fines terræ, & altitúdines móntium ipse cónspicit.

*Repetitur*, * Veníte, adorémus.

Quóniam ipsius est mare, & ipse fecit illud, & áridam fundavérunt manus ejus: veníte, adorémus, & procidámus ante Deum, plorémus coram Dómino, qui fecit nos; quia ipse est Dóminus Deus noster: nos autem pópulus ejus, & oves páscuæ ejus.

*Repetitur*, Dóminum, qui fecit nos, * Veníte, adorémus.

Hódiè si vocem ejus audiéritis, nolíte obduráre corda vestra; sicut in exacerbatióne secúndùm diem tentatiónis in desérto, ubi tentavérunt me patres vestri; probavérunt, & vidérunt ópera mea.

*Repetitur*, * Veníte, adorémus.

Quadraginta annis próximus fui generatióni huic; & dixi: Semper hi errant corde; ipsi verò non cognovérunt vias meas; quibus jurávi in ira mea; Si introíbunt in réquiem meam.

*Repetitur*, Dóminum, qui fecit nos, * Veníte, adorémus.

Glória Patri, & Fílio, & Spirítui sancto; sicut erat in princípio, & nunc, & semper, & in sécula seculórum. Amen.

*Repetitur*, * Veníte, adorémus.

*Deinde repetitur Invitatorium*, Dóminum, qui fecit nos, * Veníte, adorémus.

*Sic semper in omni Officio dicitur Invitatorium, nisi aliter notetur.*

*Per Annum. Hymnus.*

PRIMO die, quo Trínitas
Beáta mundum cóndidit,
Vel quo resúrgens cónditor
Nos, morte victâ, líberat.

Pulsis procul torpóribus,
Surgámus omnes ócyùs,
Et nocte quærámus Deum,
Prophéta sicut præcipit.

Nostras preces ut áudiat,
Suámque dextram pórrigat,
Et expiátos sórdibus
Reddat polórum sédibus.

Ut, quique sacratíssimo
Hujus diéi témpore
Horis quiétis psállimus,
Donis beátis múneret.

Jam nunc patérna cláritas,
Te postulámus áffatim;
Absint faces libídinis,
Et omnis actus nóxius.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

## IN I. NOCTURNO.

*Per Annum, Antiphona. 3. toni.* a. Beátus vir.

*Asteriscus hic * notat mediationem & pausam.*

*Psalmus* 1.

Beátus vir, qui non ábiit in consílio impiórum, & in via peccatórum non stetit, * & in cáthedra pestiléntiæ non sedit:

Sed in lege Dómini volúntas ejus, * & in lege ejus meditábitur die ac nocte.

Et erit tanquam lignum, quod plantátum est secus decúrsus aquárum, * quod fructum suum dabit in témpore suo:

Et fólium ejus non défluet: * & ómnia quæcúnque fáciet prosperabúntur.

Non sic ímpii, non sic; * sed tanquam pulvis, quem prójicit ventus à fácie terræ.

Ideo non resúrgent ímpii in judício, * neque peccatóres in concílio justórum.

Quóniam novit Dóminus viam justórum, * & iter impiórum períbit.

Glória Patri, & Fílio, * & Spirítui sancto;

Sicut erat in princípio, & nunc, & semper, * & in sécula seculórum. Amen.

*Hi versus,* Glória *&* Sicut erat, *dicuntur in fine Psalmorum & Canticorum, nisi aliter notetur.*

*Ant.* Beátus vir, qui in lege Dómini meditábitur die ac nocte. *v.* 1. & 2.

*Ant.* 3. c. Servíte.

*Psalmus.* 2.

Quare fremuérunt Gentes, * & pópuli meditáti sunt inánia?

Astitérunt reges terræ, & príncipes convenérunt in unum * advérsùs Dóminum, & advérsùs Christum ejus.

Dirumpámus víncula eórum, * & projiciámus à nobis jugum ipsórum.

Qui hábitat in cœlis irridébit eos; * & Dóminus subsannábit eos.

Tunc loquétur ad eos in

ira sua, * & in furóre suo conturbábit eos.

Ego autem constitútus sum rex ab eo super Sion montem sanctum ejus, * prædicans præcéptum ejus.

Dóminus dixit ad me: * Fílius meus es tu, ego hódiè génui te.

Póstula à me, & dabo tibi Gentes hereditátem tuam, * & possessiónem tuam términos terræ.

Reges eos in virga férrea, * & tanquam vas fíguli confrínges eos.

Et nunc reges intellígite; * erudímini qui judicátis terram.

Servíte Dómino in timóre, * & exultáte ei cum tremóre.

Apprehéndite disciplínam, * nequándo irascátur Dóminus, & pereátis de via justa.

Cùm exárserit in brevi ira ejus, * beáti omnes qui confídunt in eo.

*Antiph.* Servíte Dómino in timóre, & exultáte ei cum tremóre. *v.* 11.

*Ant.* 2. d. Exúrge, Dómine.

*Psalmus 3.*

DO'mine, quid multiplicáti sunt qui tríbulant me? * multi insúrgunt advérsùm me.

Multi dicunt ánimæ meæ: * non est salus ipsi in Deo ejus.

Tu autem, Dómine, suscéptor meus es, * glória mea, & exáltans caput meum.

Voce meâ ad Dóminum clamávi, * & exaudívit me de monte sancto suo.

Ego dormívi, & soporátus sum; * & exurréxi, quia Dóminus suscépit me.

Non timébo míllia pópuli circundántis me: * exúrge, Dómine, salvum me fac Deus meus;

Quóniam tu percussísti omnes adversántes mihi sine causa; * dentes peccatórum contrivísti.

Dómini est salus; * & super pópulum tuum benedíctio tua.

*Ant.* Exúrge, Dómine, salvum me fac, Deus meus. *v.* 6.

*Per Annum,* ℣. In nóctibus extóllite manus vestras in Sancta. ℟. Et benedícite Dóminum. *Ps.* 133. *v.* 3.

*Post versiculum cujuslibet Nocturni dicitur,* Pater noster. *Absolutio & Benedictiones ordine, quo habentur ante Psalterium. Deinde leguntur Lectiones cum Responsoriis, ut in Proprio de Tempore assignantur.*

IN II. NOCTURNO.

*Per Annum, Antiphona.* 4. *toni.* e. Deus meus.

*Psalmus 17.*

DI'ligam te, Dómine, fortitúdo mea: * Dóminus firmamén-

tum meum, & refúgium meum, & liberátor meus.

Deus meus adjútor meus, * & sperábo in eum.

Protéctor meus, & cornu salútis meæ, * & suscéptor meus.

Laudans invocábo Dóminum, * & ab inimícis meis salvus ero.

Circumdedérunt me dolóres mortis, * & torréntes iniquitátis conturbavérunt me.

Dolóres inférni circumdedérunt me: * præoccupavérunt me láquei mortis.

In tribulatióne mea invocávi Dóminum, * & ad Deum meum clamávi;

Et exaudívit de templo sancto suo vocem meam; * & clámor meus in conspéctu ejus, introívit in aures ejus.

Commóta est; & contrémuit terra; fundaménta móntium conturbáta sunt, & commóta sunt, * quóniam irátus est eis.

Ascéndit fumus in ira ejus, & ignis à fácie ejus exársit; * carbónes succénsi sunt ab eo.

Inclinávit cœlos, & descéndit, * & calígo sub pédibus ejus.

Et ascéndit super Chérubim, & volávit; * volávit super pennas ventórum.

Et pósuit ténebras latíbulum suum; in circúitu ejus tabernáculum ejus: * tenebrósa aqua in núbibus áëris.

Præ fulgóre in conspéctu ejus nubes transiérunt, * grando & carbónes ignis.

Et intónuit de cœlo Dóminus, & Altíssimus dedit vocem suam; * grando & carbónes ignis.

Et misit sagíttas suas, & dissipávit eos: * fúlgura multiplicávit, & conturbávit eos.

Et apparuérunt fontes aquárum, * & reveláta sunt fundaménta orbis terrárum.

Ab increpatióne tua, Dómine, * ab inspiratióne spíritûs iræ tuæ.

Misit de summo, & accépit me; * & assúmpsit me de aquis multis.

Glória Patri, &c.

*Antiph.* Deus meus adjútor meus, & sperábo in eum. *v.* 2.

*Ant.* 5. f. Salvum.

*Divisio Psalmi* 17.

ERípuit me de inimícis meis fortíssimis, & ab iis qui odérunt me; * quóniam confortáti sunt super me.

Prævenérunt me in die afflictiónis meæ; * & factus est Dóminus protéctor meus.

Et edúxit me in latitúdinem: * salvum me fecit, quóniam vóluit me.

Et retríbuet mihi Dóminus secúndùm justítiam meam, * & secúndùm puritátem mánuum meárum retríbuet mihi.

Quia custodívi vias Dómi-

ni, * nec ímpiè gessi à Deo meo.

Quóniam ómnia judícia ejus in conspéctu meo, * & justítias ejus non répuli à me.

Et ero immaculátus cum eo, * & observábo me ab iniquitáte mea.

Et retríbuet mihi Dóminus secúndùm justítiam meam, * & secúndùm puritátem manuum meárum in conspéctu oculórum ejus.

Cum sancto sanctus eris, * & cum viro innocénte ínnocens eris.

Et cum elécto eléctus eris, * & cum pervérso pervertéris.

Quóniam tu pópulum húmilem salvum fácies, * & óculos superbórum humiliábis.

Quóniam tu illúminas lucérnam meam, Dómine; * Deus meus illúmina ténebras meas.

Quóniam in te erípiar à tentatióne, * & in Deo meo transgrédiar murum.

*Antiph.* Salvum me fecit Dóminus, quóniam vóluit me. *v.* 20.

*Ant.* 6. f. Deus meus.

*Altera divisio Psalmi* 17.

DEus meus, impollúta via ejus; elóquia Dómini igne examináta: * protéctor est ómnium sperántium in se.

Quóniam quis Deus præter Dóminum? * aut quis Deus præter Deum nostrum?

Deus qui præcínxit me virtúte, * & pósuit immaculátam viam meam.

Qui perfécit pedes meos tanquam cervórum, * & super excélsa státuens me.

Qui docet manus meas ad prælium: * & posuísti, ut arcum æreum, bráchia mea.

Et dedísti mihi protectiónem salútis tuæ, * & déxtera tua suscépit me.

Et disciplína tua corréxit me in finem, * & disciplína tua ipsa me docébit.

Dilatásti gressus meos subtus me, * & non sunt infirmáta vestígia mea.

Pérsequar inimícos meos, & comprehéndam illos; * & non convértar donec defíciant.

Confríngam illos, nec póterunt stare: * cadent subtus pedes meos.

Et præcinxísti me virtúte ad bellum; * & supplantásti insurgéntes in me subtus me.

Et inimícos meos dedísti mihi dorsum, * & odiéntes me dispérdidísti.

Clamavérunt, nec erat qui salvos fáceret: * ad Dóminum, nec exaudívit eos.

Et comminuam eos ut púlverem ante fáciem venti; * ut lutum plateárum delébo eos.

Erípies me de contradictiónibus pópuli; * constítues me in caput Géntium.

Pópulus, quem non cognó-

vi, servívit mihi; * in audítu auris obedívit mihi.

Fílii aliéni mentíti sunt mihi, * fílii aliéni inveteráti sunt, & claudicavérunt à sémitis suis.

Vivit Dóminus, & benedíctus Deus meus; * & exaltétur Deus salútis meæ.

Deus qui das vindíctas mihi, & subdis pópulos sub me; * liberátor meus de inimícis meis iracúndis.

Et ab insurgéntibus in me exaltábis me; * à viro iníquo erípies me.

Proptéreà confitébor tibi in natiónibus, Dómine, * & nómini tuo psalmum dicam.

Magníficans salútes Regis ejus, & fáciens misericórdiam christo suo David, * & sémini ejus usque in séculum.

*Ant.* Deus meus protéctor est ómnium sperántium in se. *v. 31.*

*Per Annum.* ℣. Médiâ nocte surgébam ad confiténdum tibi, ℟. Super judícia justificatiónis tuæ. *Psal.* 118. 62.

IN III. NOCTURNO.

*Per Annum, Antiphona. 7. toni.* a. Exáudi.

*Psalmus 27.*

AD te, Dómine, clamábo, Deus meus ne síleas à me; * ne, quándo táceas à me, & assimilábor descendéntibus in lacum.

Exáudi, Dómine, vocem deprecatiónis meæ, dùm oro ad te; * dùm extóllo manus meas ad templum sanctum tuum.

Ne simul trahas me cum peccatóribus; * & cum operántibus iniquitátem ne perdas me.

Qui loquúntur pacem cum próximo suo, * mala autem in córdibus eórum.

Da illis secúndùm ópera eórum, * & secúndùm nequítiam adinventiónum ipsórum.

Secúndùm ópera mánuum eórum tríbue illis, * redde retributiónem eórum ipsis.

Quóniam non intellexérunt ópera Dómini, & in ópera mánuum ejus, * déstrues illos, & non ædificábis eos.

Benedíctus Dóminus; * quóniam exaudívit vocem deprecatiónis meæ.

Dóminus adjútor meus, & protéctor meus; * in ipso sperávit cor meum, & adjútus sum.

Et reflóruit caro mea; * & ex voluntáte mea confitébor ei.

Dóminus fortitúdo plebis suæ; * & protéctor salvatiónum christi sui est.

Salvum fac pópulum tuum, Dómine, & bénedic hereditáti tuæ; * & rege eos, & extólle illos usque in ætérnum.

*Ant.* Exáudi, Dómine, vo-

cem deprecatiónis meæ, dùm oro ad te. *v.* 2.

*Ant.* 8. g. Dómine.

*Psalmus* 29.

EXaltábo te, Dómine, quóniam suscepísti me; * nec delectásti inimícos meos super me.

Dómine Deus meus, clamávi ad te; * & sanásti me.

Dómine, eduxísti ab inférno ánimam meam: * salvásti me à descendéntibus in lacum.

Psállite Dómino sancti ejus; * & confitémini memóriæ sanctitátis ejus.

Quóniam ira in indignatióne ejus; * & vita in voluntáte ejus.

Ad vésperum demorábitur fletus, * & ad matutínum lætítia.

Ego autem dixi in abundántia mea; * Non movébor in ætérnum.

Dómine, in voluntáte tua * præstitísti decóri meo virtútem.

Avertísti fáciem tuam à me, * & factus sum conturbátus.

Ad te, Dómine, clamábo; * & ad Deum meum deprecábor.

Quæ utílitas in sánguine meo, * dùm descéndo in corruptiónem?

Nunquid confitébitur tibi pulvis, * aut annuntiábit veritátem tuam?

Audívit Dóminus, & misértus est mei; * Dóminus factus est adjútor meus.

Convertísti planctum meum in gáudium mihi; * conscidísti saccum meum, & circumdedísti me lætítiâ,

Ut cantet tibi glória mea, & non compúngar: * Dómine Deus meus, in ætérnum confitébor tibi.

*Ant.* Dómine Deus meus, in ætérnum confitébor tibi. *v.* 15.

*Ant.* 1. d. Benedícitus.

*Psalmus* 65.

JUbiláte Deo omnis terra, psalmum dícite nómini ejus, * date glóriam laudi ejus.

Dícite Deo, Quàm terribília sunt ópera tua, Dómine! * in multitúdine virtútis tuæ mentiéntur tibi inimíci tui.

Omnis terra adóret te, & psallat tibi, * psalmum dicat nómini tuo.

Veníte, & vidéte ópera Dei: * terríbilis in consíliis super fílios hóminum.

Qui convértit mare in áridam, in flúmine pertransíbunt pede: * ibi lætábimur in ipso.

Qui dominátur in virtúte sua in ætérnum, óculi ejus super Gentes respíciunt: * qui exásperant, non exalténtur in semetípsis.

Benedícite Gentes Deum nostrum, * & audítam fácite vocem laudis ejus,

Qui pósuit ánimam meam ad vitam, * & non dedit in commotiónem pedes meos.

Quóniam probásti nos, Deus; * igne nos examinásti, sicut examinátur argéntum.

Induxísti nos in láqueum, posuísti tribulatiónes in dorso nostro, * imposuísti hómines super cápita nostra.

Transívimus per ignem & aquam, * & eduxísti nos in refrigérium.

Introíbo in domum tuam in holocáustis; * reddam tibi vota mea, quæ distinxérunt lábia mea.

Et locútum est os meum * in tribulatióne mea.

Holocáusta medulláta ófferam tibi cum incénso aríetum; * ófferam tibi boves cum hircis.

Veníte, audíte, & narrábo, omnes qui timétis Deum, * quanta fecit ánimæ meæ.

Ad ipsum ore meo clamávi, * & exaltávi sub lingua mea.

Iniquitátem si aspéxi in corde meo, * non exáudiet Dóminus.

Proptéreà exaudívit Deus, * & atténdit voci deprecatiónis meæ.

Benedíctus Deus, * qui non amóvit oratiónem meam, & misericórdiam suam à me.

*Ant.* Benedíctus Deus, qui non amóvit oratiónem meam, & misericórdiam suam à me. *v.* 19.

*Per Annum.* ℣. Memor fui nocte nóminis tui, Dómine, ℟. Et custodívi legem tuam. *Psal.* 118. 55.

*Sequens Hymnus semper dicitur post ultimum Responsorium in omnibus Dominicis & Festis, nisi aliter notetur.*

*Hymnus.*

TE Deum laudámus: * te Dóminum confitémur.

Te ætérnum Patrem * omnis terra venerátur.

Tibi omnes A'ngeli, * tibi cœli & univérsæ potestátes,

Tibi Chérubim & Séraphim * incessábili voce proclámant;

Sanctus,

Sanctus,

Sanctus, * Dóminus Deus Sàbaoth.

Pleni sunt cœli & terra * majestátis glóriæ tuæ.

Te gloriósus * Apostolórum chorus,

Te Prophetárum * laudábilis númerus,

Te Mártyrum candidátus * laudat exércitus.

Te per orbem terrárum * sancta confitétur Ecclésia,

Patrem * imménsæ majestátis;

Venerándum tuum verum * & únicum Fílium;

Sanctum quoque * Paraclétum Spíritum.

Tu Rex glóriæ, Christe.
Tu Patris * sempitérnus es Fílius.
Tu ad liberándum suscep-túrus hóminem, * non hor-ruísti Vírginis úterum.
Tu devícto mortis acú-leo, * aperuísti credéntibus regna cœlórum.
Tu ad déxteram Dei se-des * in glória Patris.
Judex créderis * esse ven-túrus.
Te ergo, quæsumus, fámu-lis tuis súbveni, * quos pre-tióso sánguine redemísti.
Ætérnâ fac * cum Sanctis tuis glóriâ munerári.
Salvum fac pópulum tuum, Dómine, * & bénedic here-ditáti tuæ;
Et rege eos, * & extólle il-los usque in ætérnum.
Per síngulos dies * benedí-cimus te,
Et laudámus nomen tuum in séculum, * & in séculum séculi.
Dignáre, Dómine, die isto * sine peccáto nos custo-díre.
Miserére nostri, Dómine, * miserére nostri.
Fiat misericórdia tua, Dó-mine, super nos, * quemád-modum sperávimus in te.
In te, Dómine, sperávi, * non confúndar in ætérnum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

*Per Annum.* ℣. *Sacerdota-lis.* Bonum est psállere nómini tuo, Altíssime; ℟. Ad annun-tiándum manè misericórdiam tuam. *Psal.* 91. *v.* 1. & 2.

DEus in adjutórium meum inténde, ℟. Dómine, ad adjuvándum me festína. *Psal.* 69. 1.

Glória Patri, & Fílio, & Spirítui sancto; sicut erat in princípio, & nunc, & sem-per, & in sécula seculórum. Amen. Allelúia.

*Per Annum, Antiphona.* 8. *toni.* c. In matutínis.

*Psalmus* 62.

DEus, Deus meus; * ad te de luce vígilo. Sitívit in te ánima mea; * quàm multiplíciter tibi caro mea!
In terra desérta, & ínvia, & inaquósa, sic in sancto appárui tibi, * ut vidérem virtútem tuam, & glóriam tuam.
Quóniam mélior est mise-ricórdia tua super vitas; * lá-bia mea laudábunt te.
Sic benedícam te in vita mea, * & in nómine tuo le-vábo manus meas.
Sicut ádipe & pinguédine repleátur ánima mea, * & lá-biis exultatiónis laudábit os meum.

Si memor fui tui super stratum meum, * in matutinis meditábor in te.

Quia fuisti adjútor meus, * & in velaménto alárum tuárum exultábo.

Adhǽsit ánima mea post te; * me suscépit déxtera tua.

Ipsi verò in vanum quæsiérunt ánimam meam; * introíbunt in inferióra terræ, tradéntur in manus gládii, partes vúlpium erunt.

Rex verò lætábitur in Deo, laudabúntur omnes qui jurant in eo; * quia obstrúctum est os loquéntium iníqua.

*Ant.* In matutinis meditábor in te, Dómine, quia fuisti adjútor meus. *v.* 7.

*Ant.* 3. g. Paráta.

*Psalmus* 92.

DO'minus regnávit, decórem indútus est; * indútus est Dóminus fortitúdinem, & præcinxit se.

E'tenim firmávit orbem terræ, * qui non commovébitur.

Paráta sedes tua ex tunc; * à século tu es.

Elevavérunt flúmina, Dómine, * elevavérunt flúmina vocem suam.

Elevavérunt flúmina fluctus suos, * à vócibus aquárum multárum.

Mirábiles elatiónes maris; * mirábilis in altis Dóminus.

Testimónia tua credibília facta sunt nimis: * domum tuam decet sanctitúdo, Dómine, in longitúdinem diérum.

*Ant.* Paráta sedes tua, Deus, ex tunc, à século tu es. *v.* 3.

*Ant.* 2. D. Dóminus.

*Psalmus* 99.

JUbiláte Deo omnis terra; * servíte Dómino in lætítia.

Introíte in conspéctu ejus, * in exultatióne.

Scitóte quóniam Dóminus ipse est Deus; ipse fecit nos, & non ipsi nos: * pópulus ejus & oves páscuæ ejus.

Introíte portas ejus in confessióne, átria ejus in hymnis, * confitémini illi.

Laudáte nomen ejus, quóniam suávis est Dóminus, * in ætérnum misericórdia ejus, & usque in generatiónem & generatiónem véritas ejus.

*Antiph.* Dóminus ipse est Deus, ipse fecit nos, & non ipsi nos. *v.* 3.

*Ant.* 4. f. Benedícat.

*Canticum trium puerorum.*

*Dan.* 3. 57.

BEnedícite ómnia ópera Dómini Dómino; * laudáte & superexaltáte eum in sécula.

Benedícite A'ngeli Dómini Dómino: * benedícite cœli Dómino.

Benedícite aquæ omnes, quæ super cœlos sunt, Dómi-

no: * benedícite omnes virtútes Dómini Dómino.

Benedícite sol & luna Dómino: * benedícite stellæ cœli Dómino.

Benedícite omnis imber & ros Dómino:* benedícite omnes spíritus Dei Dómino.

Benedícite ignis & æstus Dómino: * benedícite frigus & æstus Dómino.

Benedícite rores & pruína Dómino: * benedícite gelu & frigus Dómino.

Benedícite gláçies & nives Dómino: * benedícite noctes & dies Dómino.

Benedícite lux & ténebræ Dómino:* benedícite fúlgura & nubes Dómino.

Benedícat terra Dóminum;* laudet & superexáltet eum in sécula.

Benedícite montes & colles Dómino, * benedícite univérsa germinántia in terra Dómino.

Benedícite fontes Dómino: * benedícite mária & flúmina Dómino.

Benedícite cete, & ómnia quæ movéntur in aquis Dómino:* benedícite omnes vólucres cœli Dómino.

Benedícite omnes béstiæ & pécora Dómino: * benedícite fílii hóminum Dómino.

Benedícat I'sraël Dóminum; * laudet & superexáltet eum in sécula.

Benedícite sacerdótes Dómini Dómino: * benedícite servi Dómini Dómino.

Benedícite spíritus & ánimæ justórum Dómino: * benedícite sancti & húmiles corde Dómino.

Benedícite Anánia, Azária, Mísaël Dómino; * laudáte & superexaltáte eum in sécula.

*Hìc, loco* Glória Patri, *dícitur*,

Benedicámus Patrem, & Fílium * cum sancto Spíritu;

Laudémus & superexaltémus eum * in sécula seculórum. Amen.

*Ant.* Benedícat I'sraël Dóminum; laudet & superexáltet eum in sécula. *v.* 74.

*Ant.* 7. c. Júvenes.

*Psalmus* 148.

LAudáte Dóminum de cœlis; * laudáte eum in excélsis:

Laudáte eum omnes A'ngeli ejus; * laudáte eum omnes virtútes ejus:

Laudáte eum sol & luna; * laudáte eum omnes stellæ & lumen:

Laudáte eum cœli cœlórum; * & aquæ omnes quæ super cœlos sunt, laudent nomen Dómini,

Quia ipse dixit, & facta sunt; * ipse mandávit, & creáta sunt.

Státuit ea in ætérnum, &

in sæculum sæculi: * præcéptum pósuit, & non præteríbit.

Laudáte Dóminum de terra, * dracónes, & omnes abýssi;

Ignis, grando, nix, glácies, spíritus procellárum, * quæ fáciunt verbum ejus;

Montes & omnes colles, * ligna fructífera, & omnes cedri;

Béstiæ & univérsa pécora, * serpéntes & vólucres pennátæ.

Reges terræ & omnes pópuli, * príncipes, & omnes júdices terræ,

Júvenes & vírgines, senes cum junióribus laudent nomen Dómini; * quia exaltátum est nomen ejus solíus.

Conféssio ejus super cœlum & terram; & exaltávit cornu pópuli sui.

Hymnus ómnibus sanctis ejus, * fíliis Iſraël, pópulo appropinquánti sibi.

Glória Patri, &c.

*Ant.* Júvenes & vírgines, senes cum junióribus laudent nomen Dómini. *v.* 12.

*Per Annum, Capitulum. Deuter. 6. v. 4. 5. 6. 7.*

AUdi Iſraël, Dóminus Deus noster, Dóminus unus est. Díliges Dóminum Deum tuum ex toto corde tuo, & ex tota ánima tua, & ex tota fortitúdine tua; erúntque verba hæc in corde tuo, & meditáberis in eis sedens in domo tua, & ámbulans in itínere, dórmiens atque consúrgens.

℟. Deo grátias.

*Sic respondetur in fine omnium Capitulorum.*

*Per Annum. Hymnus.*

ÆTÉRNE rerum Cónditor,
Noctem diémque qui regis,
Et témporum das témpora,
Ut álleves fastídium.

NOCTÚRNA lux viántibus,
A nocte noctem ségregans,
Præco diéi jam sonat,
Jubárque solis évocat.

JESU labántes réspice,
Et nos vidéndo córrige;
Si réspicis, lapsi stabunt,
Fletúque culpa sólvitur.

TU lux refúlge sénsibus,
Mentísque somnum díscute,
Te nostra vox primùm sonet,
Et vota solvámus tibi.

UT ipse nobis ánnuas,
Affla preces quas fúndimus:
Si corda dent suspíria,
Orígo sis & términus!

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum.* ℣. Prævenérunt óculi mei ad te dilúculò, ℟. Ut meditárer elóquia tua. *Ps.* 118. *v.* 148.

*Ant. Ad* Benedíctus, *ut in Proprio.*

*Canticum Zachariæ. Luc.* 1. 68.

BEnedíctus Dóminus Deus I'sraël; * quia visitávit, & fecit redemptiónem plebis suæ.

Et eréxit cornu salútis nobis, * in domo David púeri sui.

Sicut locútus est per os sanctórum, * qui à século sunt, Prophetárum ejus:

Salútem ex inimícis nostris,* & de manu ómnium qui odérunt nos:

Ad faciéndam misericórdiam cum pátribus nostris, * & memorári testaménti sui sancti.

Jusjurándum quod jurávit ad A'braham patrem nostrum, * datúrum se nobis:

Ut sine timóre de manu inimicórum nostrórum liberáti, * serviámus illi.

In sanctitáte & justítia coram ipso, * ómnibus diébus nostris.

Et tu puer, Prophéta Altíssimi vocáberis;* præíbis enim ante fáciem Dómini paráre vias ejus.

Ad dandam sciéntiam salútis plebi ejus, * in remissiónem peccatórum eórum:

Per víscera misericórdiæ Dei nostri, * in quibus visitávit nos, óriens ex alto;

Illumináre his, qui in ténebris, & in umbra mortis sedent: * ad dirigéndos pedes nostros in viam pacis.

Glória Patri.

*Post Canticum dicitur Ant.*

*Deinde*, ℣. Dóminus vobíscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Tum Oratio propria cum integra conclusione, & post Orationem*,

℣. Dóminus vobíscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

*Solus recitans loco*, ℣. Dóminus vobíscum, *dicit*,

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam.

℟. Et clamor meus ad te véniat.

*Si qua occurrat commemoratio, hoc loco fit per Antiphonam, Versiculum, & Orationem, quæ sumuntur ex Proprio vel Communi, ut suis locis notatur.*

*Post Commemorationes occurrentes vel si non occurrant, dicto*, Benedicámus, *fit Commemoratio de Sancta Maria.*

*Per Annum, Antiph.* Benedícta tu inter mulíeres, & benedíctus fructus ventris tui. *Luc.* 1. 42.

℣. Elégit eam Dóminus,

℟. In habitatiónem sibi. *Psal.* 131. 13.

Orémus. *Oratio.*

PRótege, Dómine, fámulos tuos subsídiis pacis; & beátæ Maríæ semper vírginis patrocíniis confidéntes, à cunctis hóstibus & perículis redde secúros. Per Dóminum nostrum Jesum Christum fílium tuum, qui tecum vivit & regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

*Sic terminatur Oratio prima & ultima.*

*In Ecclesia Metropolitana diebus Dominicis non additur alia Commemoratio: In aliis verò Ecclesiis post prædictam Commemorationem, fit Commemoratio Patroni Titularis Ecclesiæ per Antiphonam, Versum & Orationem propriam.*

*Deinde repetitur,*

℣. Dóminus vobíscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

*Post quamlibet Horam, si aliud Officium non sequatur, dicitur secretò,*

Fidélium ánimæ, per misericórdiam Dei, requiéscant in pace. ℟. Amen.

*Deinde*, Pater noster, *secretò.*

## AD PRIMAM HORAM DIEI.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium, &c. *ut suprà.*

*Hymnus.*

JAM lucis orto sídere,
Deum precémur súpplices,
Ut in diúrnis áctibus
Nos servet à nocéntibus.

LINGUAM refrænans témperet,
Ne litis horror ínsonet:
Visum fovéndo cóntegat,
Ne vanitátes háuriat.

SINT pura cordis íntima,
Absístat & vecórdia;
Carnis terat supérbiam
Potûs cibíque párcitas.

UT cùm dies abscésserit,
Diémque nox excéperit,
Mundi per abstinéntiam
Ipsi canámus glóriam.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum, Antiphona.* I. *toni.* a. Benedíctus es.

*Psalmus* 117.

COnfitémini Dómino quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Dicat nunc Israël quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Dicat nunc domus Aaron, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Dicant nunc qui timent Dóminum, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

De tribulatióne invocávi

Dóminum, * & exaudívit me in latitúdine Dóminus.

Dóminus mihi adjútor; * non timébo quid fáciat mihi homo.

Dóminus mihi adjútor; * & ego despíciam inimícos meos.

Bonum est confídere in Dómino, * quàm confídere in hómine.

Bonum est speráre in Dómino, * quàm speráre in princípibus.

Omnes gentes circuiérunt me; * & in nómine Dómini quia ultus sum in eos.

Circundántes circundedérunt me; * & in nómine Dómini quia ultus sum in eos.

Circundedérunt me sicut apes, & exarsérunt sicut ignis in spinis; * & in nómine Dómini quia ultus sum in eos.

Impúlsus evérsus sum ut cáderem, * & Dóminus suscépit me.

Fortitúdo mea & laus mea Dóminus, * & factus est mihi in salútem.

Vox exultatiónis & salútis * in tabernáculis justórum.

Déxtera Dómini fecit virtútem, déxtera Dómini exaltávit me, * déxtera Dómini fecit virtútem.

Non móriar, sed vivam; * & narrábo ópera Dómini.

Castígans castigávit me Dóminus, * & morti non trádidit me.

Aperíte mihi portas justítiæ, ingréssus in eas confitébor Dómino: * hæc porta Dómini, justi intrábunt in eam.

Confitébor tibi quóniam exaudísti me, * & factus es mihi in salútem.

Lápidem quem reprobavérunt ædificántes, * hic factus est in caput ánguli.

A Dómino factum est istud, * & est mirábile in óculis nostris.

Hæc est dies quam fecit Dóminus; * exultémus & lætémur in ea.

O Dómine, salvum me fac, ô Dómine, benè prosperáre: * benedíctus qui venit in nómine Dómini.

Benedíximus vobis de domo Dómini: * Deus Dóminus & illúxit nobis.

Constitúite diem solémnem in condénsis, * usque ad cornu altáris.

Deus meus es tu, & confitébor tibi; * Deus meus es tu, & exaltábo te.

Confitébor tibi quóniam exaudísti me, * & factus es mihi in salútem.

Confitémini Dómino quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

*Psalmus* 118.

BEáti immaculáti in via, * qui ámbulant in lege Dómini.

Beáti qui scrutántur testimónia

mónia ejus, * in toto corde exquírunt eum;

Non enim qui operántur iniquitátem, * in viis ejus ambulavérunt.

Tu mandásti * mandáta tua custodíri nimis.

Útinam dirigántur viæ meæ * ad custodiéndas justificatiónes tuas!

Tunc non confúndar; * cùm perspéxero in ómnibus mandátis tuis.

Confitébor tibi in directióne cordis, * in eo quòd dídici judícia justítiæ tuæ.

Justificatiónes tuas custódiam; * non me derelínquas usquequáque.

In quo córrigit adolescéntior viam suam; * in custodiéndo sermónes tuos.

In toto corde meo exquisívi te; * ne repéllas me à mandátis tuis.

In corde meo abscóndi elóquia tua, * ut non peccem tibi.

Benedíctus es, Dómine, * doce me justificatiónes tuas.

In lábiis meis * pronuntiávi ómnia judícia oris tui.

In via testimoniórum tuórum delectátus sum, * sicut in ómnibus divítiis.

In mandátis tuis exercébor, * & considerábo vias tuas.

In justificatiónibus tuis meditábor, * non obliviscar sermónes tuos.

*Divisio Psalmi* 118.

RETríbue servo tuo, vivífica me, * & custódiam sermónes tuos.

Revéla óculos meos, * & considerábo mirabília de lege tua.

Íncola ego sum in terra; * non abscóndas à me mandáta tua.

Concupívit ánima mea desideráre justificatiónes tuas * in omni témpore.

Increpásti supérbos; * maledícti qui declínant à mandátis tuis.

Aufer à me oppróbrium & contémptum; * quia testimónia tua exquisívi.

Étenim sedérunt príncipes, & advérsùm me loquebántur; * servus autem tuus exercebátur in justificatiónibus tuis.

Nam & testimónia tua, meditátio mea est, * & consílium meum justificatiónes tuæ.

Adhæsit paviménto ánima mea, * vivífica me secúndùm verbum tuum.

Vias meas enuntiávi, & exaudísti me; * doce me justificatiónes tuas.

Viam justificatiónum tuárum ínstrue me, * & exercébor in mirabílibus tuis.

Dormitávit ánima mea præ

tædio, * confirma me in verbis tuis.

Viam iniquitátis ámove à me, * & de lege tua miserére mei.

Viam veritátis elégi, * judícia tua non sum oblítus.

Adhæsi testimóniis tuis, Dómine; * noli me confúndere.

Viam mandatórum tuórum cucúrri, * cùm dilatásti cor meum.

*Quando fit Officium de Dominica ut in Psalterio, & in Festo SS. Trinitatis dicitur sequens Symbolum.*

QUicúnque vult salvus esse,* ante ómnia opus est ut téneat cathólicam fidem.

Quam nisi quisque íntegram inviolatámque serváverit, * absque dúbio in ætérnum períbit.

Fides autem cathólica hæc est, * ut unum Deum in Trinitáte, & Trinitátem in unitáte venerémur.

Neque confundéntes persónas, * neque substántiam separántes:

Alia est enim persóna Patris, ália Fílii, * ália Spíritûs sancti.

Sed Patris, & Fílii, & Spíritûs sancti una est divínitas,* æquális glória, coætérna majéstas.

Qualis Pater, talis Fílius, * talis Spíritus sanctus.

Increátus Pater, increátus Fílius, * increátus Spíritus sanctus.

Imménsus Pater, imménsus Fílius, * imménsus Spíritus sanctus.

Ætérnus Pater, ætérnus Fílius, * ætérnus Spíritus sanctus:

Et tamen non tres ætérni,* sed unus ætérnus.

Sicut non tres increáti, nec tres imménsi, * sed unus increátus, & unus imménsus.

Simíliter omnípotens Pater, omnípotens Fílius, * omnípotens Spíritus sanctus:

Et tamen non tres omnipoténtes, * sed unus omnipotens.

Ita Deus Pater, Deus Fílius, * Deus Spíritus sanctus.

Et tamen non tres Dii; * sed unus est Deus.

Ita Dóminus Pater, Dóminus Fílius, * Dóminus Spíritus sanctus:

Et tamen non tres Dómini; * sed unus est Dóminus.

Quia sicut singillátim unamquámque persónam, Deum ac Dóminum confitéri christiánâ veritáte compéllimur; * ita tres Deos aut Dóminos dícere cathólicâ religióne prohibémur.

Pater à nullo est factus, * nec creátus, nec génitus.

Fílius à Patre solo est; *

non factus, nec creátus, sed génitus.

Spíritus sanctus à Patre & Fílio;* non factus, nec creátus, nec génitus, sed procédens.

Unus ergò Pater, non tres Patres; unus Fílius, non tres Filii;* unus Spíritus sanctus, non tres Spíritus sancti.

Et in hac Trinitáte nihil prius aut postérius, nihil majus aut minus;* sed totæ tres persónæ coætérnæ sibi sunt & coæquáles.

Ita ut per ómnia, sicut jam suprà dictum est,* & únitas in Trinitáte, & Trínitas in unitáte veneránda sit.

Qui vult ergò salvus esse,* ita de Trinitáte séntiat.

Sed necessárium est ad ætérnam salútem,* ut Incarnatiónem quoque Dómini nostri Jesu Christi fidéliter credat.

Est ergò fides recta, ut credámus & confiteámur,* quia Dóminus noster Jesus Christus Dei filius, Deus & homo est.

Deus est ex substántia Patris ante sécula génitus;* & homo est ex substántia matris in século natus.

Perféctus Deus, perféctus homo;* ex ánima rationáli & humána carne subsístens.

Æquális Patri secúndùm divinitátem;* minor Patre secúndùm humanitátem.

Qui licèt Deus sit & homo;* non duo tamen, sed unus est Christus.

Unus autem non conversióne divinitátis in carnem;* sed assumptióne humanitátis in Deum.

Unus omnínò non confusióne substántiæ,* sed unitáte persónæ.

Nam sicut ánima rationális & caro unus est homo,* ita Deus & homo unus est Christus:

Qui passus est pro salúte nostra, descéndit ad ínferos,* tértiâ die resurréxit à mórtuis;

Ascéndit ad cœlos, sedet ad déxteram Dei Patris omnipoténtis,* inde ventúrus est judicáre vivos & mórtuos:

Ad cujus advéntum omnes hómines resúrgere habent cum corpóribus suis,* & redditúri sunt de factis própriis ratiónem;

Et qui bona égérunt, ibunt in vitam ætérnam;* qui verò mala, in ignem ætérnum.

Hæc est fides cathólica,* quam nisi quisque fidéliter firmitérque credíderit, salvus esse non póterit.

*Ant.* Benedíctus es, Dómine, doce me justificatiónes tuas. *Psal.* 118. 12.

*Per Annum, Capitulum. Deuter.* 10. 12.

QUid Dóminus Deus tuus petit à te, I'sraël, nisi

ut tímeas Dóminum Deum tuum, & ámbules in viis ejus, & díligas eum, ac sérvias Dómino Deo tuo in toto corde tuo, & in tota ánima tua.

℟. Deo grátias.

*Quando fit de Festo, dicetur Capitulum sequens.* 1. *Timot.* 1. 17.

REgi seculórum immortáli, invisíbili, soli Deo honor, & glória in sécula seculórum. Amen.

℟. Deo grátias.

℟. *breve*, Christe fili Dei vivi, * Miserére nobis. *Repetitur*, Christe fili Dei vivi, * Miserére nobis. ℣. Qui sedes ad déxteram Patris, * Miserére nobis. ℣. Glória Patri, & Fílio, & Spirítui sancto. *Repetitur*, Christe fili Dei vivi, miserére nobis.

℣. Exúrge, Dómine, ádjuva nos, ℟. Et rédime nos propter nomen tuum. *Matt.* 16. 16. *Tob.* 8. 10. *Hebr.* 1. 3. *Psal.* 43. 26.

℣. Dóminus vobíscum,

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

DO'mine Deus omnípotens, qui ad princípium hujus diéi nos pervenire fecísti, tuâ nos hódiè salva virtúte: ut in hac die ad nullum declinémus peccátum, sed semper ad tuam justítiam faciéndam nostra procédant elóquia, dirigántur cogitatiónes & ópera; Per Dóminum nostrum Jesum Christum fílium tuum, qui tecum vivit & regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum.

℟. Amen.

℣. Dóminus vobíscum.

℟. Et cum spíritu tuo.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

*Deinde sive in Choro, sive in Capitulo legitur Martyrologium. Posteà Hebdomadarius dicit submissâ voce.*

℣. Pretiósa in conspéctu Dómini, ℟. Mors Sanctórum ejus. *Ps.* 115. 5.

*Et absolutè sine Oremus.*

*Oratio.*

SAncta María, & omnes Sancti intercédant pro nobis ad Dóminum; ut nos mereámur ab eo adjuvári, & salvári qui vivit & regnat in sécula seculórum. ℟. Amen.

*Lector dicit altâ voce.* Jube, Domne, benè dícere.

*Solus recitans* [Dómine.]

*Benedictio.* Bonitátem, & disciplínam, & sciéntiam dóceat nos Dóminus. *Psal.* 118. 66.

*Hìc addatur Lectio Canonum juxta ordinem in Proprio de Tempore notatum, quæ sic finietur.* Tu autem, Dómine, miserére nostri.

*Hebdomadarius dicit,*

℣. Adjutórium nostrum in nómine Dómini,

℟. Qui fecit cœlum & terram. *Psal.* 123. 8.
℣. Benedícite, ℟. Deus.
℣. Dóminus nos benedícat, & ab omni malo deféndat, & ad vitam perdúcat ætérnam. ℟. Amen.
℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

## AD TERTIAM HORAM DIEI.

Pater noster. Ave María.
Deus in adjutórium, *ut suprà.*

*Hymnus.*

NUnc sancte nobis Spíritus,
Unum Patri cum Fílio,
Dignáre promptus íngerì
Nostro refúsus péctori.
Os, lingua, mens, sensus, vigor,
Confessiónem pérsonent;
Flamméscat igne cháritas,
Accéndat ardor próximos.
Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum, Ant.* 4. 2. In toto corde.

*Ex Psalmo* 118.

LEgem pone mihi, Dómine, viam justificatiónum tuárum, * & exquíram eam semper.
Da mihi intelléctum, & scrutábor legem tuam, * & custódiam illam in toto corde meo.
Deduc me in sémitam mandatórum tuórum, * quia ipsam vólui.
Inclína cor meum in testimónia tua, * & non in avarítiam.
Avérte óculos meos ne vídeant vanitátem; * in via tua vivífica me.
Státue servo tuo elóquium tuum, * in timóre tuo.
A'mputa oppróbrium meum quod suspicátus sum; * quia judícia tua jucúnda.
Ecce concupívi mandáta tua; * in æquitáte tua vivífica me.
Et véniat super me misericórdia tua, Dómine, * salutáre tuum secúndum elóquium tuum.
Et respondébo exprobrántibus mihi verbum; * quia sperávi in sermónibus tuis.
Et ne áuferas de ore meo verbum veritátis usquequáque; * quia in judíciis tuis supersperávi.
Et custódiam legem tuam semper, * in séculum & in séculum séculi.
Et ambulábam in latitúdine; * quia mandáta tua exquisívi.
Et loquébar de testimóniis tuis in conspéctu regum, * & non confundébar.

Et meditábar in mandátis tuis, * quæ diléxi.

Et levávi manus meas ad mandáta tua quæ diléxi; * & exercébar in justificatiónibus tuis.

MEmor esto verbi tui servo tuo, * in quo mihi spem dedísti.

Hæc me consoláta est in humilitáte mea; * quia elóquium tuum vivificávit me.

Supérbi iníquè agébant usquequáque, * à lége autem tua non declinávi.

Memor fui judiciórum tuórum à sǽculo, Dómine; * & consolátus sum.

Deféctio ténuit me, * pro peccatóribus derelinquéntibus legem tuam.

Cantábiles mihi erant justificatiónes tuæ, * in loco peregrinatiónis meæ.

Memor fui nocte nóminis tui, Dómine, * & custodívi legem tuam.

Hæc facta est mihi; * quia justificatiónes tuas exquisívi.

Pórtio mea, Dómine, * dixi custodíre legem tuam.

Deprecátus sum fáciem tuam in toto corde meo, * miserére mei secúndùm elóquium tuum.

Cogitávi vias meas, * & convérti pedes meos in testimónia tua.

Parátus sum, & non sum turbátus, * ut custódiam mandáta tua.

Funes peccatórum circumpléxi sunt me; * & legem tuam non sum oblítus.

Médiâ nocte surgébam ad confiténdum tibi, * super judícia justificatiónis tuæ.

Párticeps ego sum ómnium timéntium te, * & custodiéntium mandáta tua.

Misericórdiâ tuâ, Dómine, plena est terra; * justificatiónes tuas doce me.

BOnitátem fecísti cum servo tuo, Dómine, * secúndùm verbum tuum.

Bonitátem, & disciplínam, & sciéntiam doce me; * quia mandátis tuis crédidi.

Priúsquam humiliárer, ego delíqui; * proptéreà elóquium tuum custodívi.

Bonus es tu, * & in bonitáte tua doce me justificatiónes tuas.

Multiplicáta est super me iníquitas superbórum; * ego autem in toto corde meo scrutábor mandáta tua.

Coagulátum est sicut lac cor eórum; * ego verò legem tuam meditátus sum.

Bonum mihi quia humiliásti me, * ut discam justificatiónes tuas.

Bonum mihi lex oris tui, * super míllia auri & argénti.

Manus tuæ fecérunt me, & plasmavérunt me; * da mihi

intelléctum, & discam mandáta tua.

Qui timent te, vidébunt me, & lætabúntur; * quia in verba tua supersperávi.

Cognóvi, Dómine, quia æquitas judícia tua, * & in veritáte tua humiliásti me.

Fiat misericórdia tua ut consolétur me, * secúndùm elóquium tuum servo tuo.

Véniant mihi miseratiónes tuæ, & vivam; * quia lex tua meditátio mea est.

Confundántur supérbi, quia injústè iniquitátem fecérunt in me; * ego autem exercébor in mandátis tuis.

Convertántur mihi timéntes te, * & qui novérunt testimónia tua.

Fiat cor meum immaculátum in justificatiónibus tuis, * ut non confúndar.

*Ant.* In toto corde meo scrutábor mandáta tua, Dómine. *Psal.* 118. 69.

*Capitulum.* 1. *Joan.* 5. 3.

HÆc est cháritas Dei, ut mandáta ejus custodiámus; & mandáta ejus grávia non sunt.

℟. *br.* Inclína cor meum, Deus, * In testimónia tua. *Repetitur*, Inclína cor meum, Deus, * In testimónia tua. ℣. Avérte óculos meos ne vídeant vanitátem, in via tua vivífica me. * In testimónia tua. ℣. Glória Patri & Fílio, & Spirítui sancto. *Repetitur*, Inclína cor meum, Deus, in testimónia tua.

℣. Deduc me in sémitam mandatórum tuórum, ℟. Quia ipsam vólui. *Psal.* 118. 35. 36. 37.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD SEXTAM HORAM DIEI.

Pater noster. Ave María.
Deus in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

RECTOR potens, verax Deus,
Qui témperas rerum vices;
Splendóre manè illúminas,
Et ígnibus merídiem.

EXTINGUE flammas lítium,
Aufer calórem nóxium,
Confer salútem córporum,
Verámque pacem córdium.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum*, *Ant.* 2. d. Inclinávi.

*Ex Psalmo* 118.

DEfécit in salutáre tuum ánima mea, * & in verbum tuum supersperávi.

Defecérunt óculi mei in elóquium tuum, * dicéntes: Quando consoláberis me?

Quia factus sum sicut uter in pruína ; * justificatiónes tuas non sum oblítus.

Quot sunt dies servi tui ? * quando fácies de persequéntibus me judícium ?

Narravérunt mihi iníqui fabulatiónes, * sed non ut lex tua.

O'mnia mandáta tua véritas : * iníquè persecúti sunt me, ádjuva me.

Pauló minùs consummavérunt me in terra; * ego autem non derelíqui mandáta tua.

Secúndùm misericórdiam tuam vivífica me, * & custódiam testimónia oris tui.

In ætérnum, Dómine, * verbum tuum pérmanet in cœlo ;

In generatiónem & generatiónem véritas tua : * fundásti terram, & pérmanet.

Ordinatióne tuâ persevérat dies ; * quóniam ómnia sérviunt tibi.

Nisi quòd lex tua meditátio mea est, * tunc fortè periíssem in humilitáte mea.

In ætérnum non oblivíscar justificatiónes tuas ; * quia in ipsis vivificásti me.

Tuus sum ego, * salvum me fac, quóniam justificatiónes tuas exquisívi.

Me expectavérunt peccatóres ut pérderent me;* testimónia tua intelléxi.

Omnis consummatiónis vidi finem ; * latum mandátum tuum nimis.

Quómodo diléxi legem tuam, Dómine ! * totâ die meditátio mea est.

Super inimícos meos prudéntem me fecísti mandáto tuo, * quia in ætérnum mihi est.

Super omnes docéntes me intelléxi ; * quia testimónia tua meditátio mea est.

Super senes intelléxi;* quia mandáta tua quæsívi.

Ab omni via mala prohíbui pedes meos, * ut custódiam verba tua.

A judíciis tuis non declinávi ; * quia tu legem posuísti mihi.

Quàm dúlcia fáucibus meis elóquia tua ! * super mel ori meo.

A mandátis tuis intelléxi ; * proptéreà odívi omnem viam iniquitátis.

Lucérna pédibus meis verbum tuum, * & lumen sémitis meis.

Jurávi, & státui * custodíre judícia justítiæ tuæ.

Humiliátus sum usquequáque, Dómine ; * vivífica me secúndùm verbum tuum.

Voluntária oris mei beneplácita fac, Dómine ; * & judícia tua doce me.

A'nima mea in mánibus meis semper, * & legem tuam non sum oblítus.

Posuérunt peccatóres láqueum mihi, * & de mandátis tuis non errávi.

Hereditáte acquisívi testimónia tua in ætérnum; *quia exultátio cordis mei sunt.

Inclinávi cor meum ad faciéndas justificatiónes tuas in ætérnum, * propter retributiónem.

INíquos ódio hábui, * & legem tuam diléxi.

Adjútor & suscéptor meus es tu; * & in verbum tuum supersperávi.

Declináte à me malígni, * & scrutábor mandáta Dei mei.

Súscipe me secúndùm elóquium tuum, & vivam; * & non confúndas me ab expectatióne mea.

A'djuva me, & salvus ero;* & meditábor in justificatiónibus tuis semper.

Sprevísti omnes discedéntes à judíciis tuis; * quia injústa cogitátio eórum.

Prævaricántes reputávi omnes peccatóres terræ; * ideò diléxi testimónia tua.

Confíge timóre tuo carnes meas, * à judíciis enim tuis tímui.

Feci judícium & justítiam;* non tradas me calumniántibus me.

Súscipe servum tuum in bonum; * non calumniéntur me supérbi.

O'culi mei defecérunt in salutáre tuum, * & in elóquium justítiæ tuæ.

Fac cum servo tuo secúndùm misericórdiam tuam; * & justificatiónes tuas doce me.

Servus tuus sum ego; * da mihi intelléctum, ut sciam testimónia tua.

Tempus faciéndi, Dómine; * dissipavérunt legem tuam.

I'deò diléxi mandáta tua, * super aurum & topázion.

Proptéreà ad ómnia mandáta tua dirigébar; * omnem viam iníquam ódio hábui.

*Antiphona.* Inclinávi cor meum, Dómine, ad faciéndas justificatiónes tuas in ætérnum. *Psal.* 118. 112.

*Capitulum.* 1. *Joan.* 4. 16.

DEus cháritas est, & qui manet in charitáte, in Deo manet, & Deus in eo.

℟. *breve*, In ætérnum, Dómine, * Non oblivíscar justificatiónes tuas; *Repetitur.* In ætérnum, Dómine, * Non oblivíscar justificatiónes tuas. ℣. Quia in ipsis vivificásti me. * Non oblivíscar justificatiónes tuas. ℣. Glória. *Repetitur*, In ætérnum, &c.

℣. Lucérna pédibus meis verbum tuum. ℟. Et lumen sémitis meis. *Ps.* 118. 93. 105.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

AD NONAM HORAM
DIEI.

Pater. Ave.
Deus in adjutórium.

*Hymnus.*

RERUM, Deus, tenax vigor,
Immótus in te pérmanens,
Lucis diúrnæ témpora
Succéssibus detérminans:

LARGI'RE lucem véspere,
Quæ corda nusquam déserat;
Sed præmium mortis sacræ
Perénnis instet glória.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum, Ant.* 3. a. Mandáta.

*Ex Psalmo* 118.

MIrabília testimónia tua; * ídeò scrutáta est ea ánima mea.

Declarátio sermónum tuórum illúminat, * & intelléctum dat párvulis.

Os meum apérui,& attráxi spíritum; * quia mandáta tua desiderábam.

A'spice in me, & miserére mei * secúndùm judícium diligéntium nomen tuum.

Gressus meos dírige secúndùm elóquium tuum, * & non dominétur mei omnis injustítia.

Rédime me à calúmniis hóminum, * ut custódiam mandáta tua.

Fáciem tuam illúmina super servum tuum, * & doce me justificatiónes tuas.

E'xitus aquárum deduxérunt óculi mei; * quia non custodiérunt legem tuam.

Justus es, Dómine, * & rectum judícium tuum.

Mandásti justítiam testimónia tua, * & veritátem tuam nimis.

Tabéscere me fecit zelus meus; * quia oblíti sunt verba tua inimíci mei.

Ignítum elóquium tuum veheménter, * & servus tuus diléxit illud.

Adolescéntulus sum ego & contémptus; * justificatiónes tuas non sum oblítus.

Justítia tua, justítia in ætérnum; * & lex tua véritas.

Tribulátio & angústia invenérunt me; * mandáta tua meditátio mea est.

Æ'quitas testimónia tua in ætérnum; * intelléctum da mihi, & vivam.

CLamávi in toto corde meo, exáudi me, Dómine; * justificatiónes tuas requíram.

Clamávi ad te, salvum me fac, * ut custódiam mandáta tua.

Prævéni in maturitáte, & clamávi; * quia in verba tua supersperávi.

Prævenérunt óculi mei ad te dilúculò, * ut meditárer elóquia tua.

Vocem meam audi secúndùm misericórdiam tuam, Dómine, * & secúndùm judícium tuum vivífica me.

Appropinquavérunt persequéntes me iniquitáti; * à lege autem tua longè facti sunt.

Propè es tu, Dómine, * & omnes viæ tuæ véritas.

Inítio cognóvi de testimóniis tuis; * quia in ætérnum fundásti ea.

Vide humilitátem meam, & éripe me; * quia legem tuam non sum oblítus.

Júdica judícium meum, & rédime me; * propter elóquium tuum vivífica me.

Longè à peccatóribus salus; * quia justificatiónes tuas non exquisiérunt.

Misericórdiæ tuæ multæ, Dómine; * secúndùm judícium tuum vivífica me.

Multi qui persequúntur me, & tribulant me; * à testimóniis tuis non declinávi.

Vidi prævaricántes, & tabescébam; * quia elóquia tua non custodiérunt.

Vide quóniam mandáta tua diléxi, Dómine; * in misericórdia tua vivífica me.

Princípium verbórum tuórum véritas: * in ætérnum ómnia judícia justítiæ tuæ.

PRíncipes persecúti sunt me gratis; * & à verbis tuis formidávit cor meum.

Lætábor ego super elóquia tua, * sicut qui invénit spólia multa.

Iniquitátem ódio hábui, & abominátus sum; * legem autem tuam diléxi.

Sépties in die laudem dixi tibi, * super judícia justítiæ tuæ.

Pax multa diligéntibus legem tuam, * & non est illis scándalum.

Expectábam salutáre tuum, Dómine; * & mandáta tua diléxi.

Custodívit ánima mea testimónia tua, * & diléxit ea veheménter.

Servávi mandáta tua & testimónia tua; * quia omnes viæ meæ in conspéctu tuo.

Appropínquet deprecátio mea in conspéctu tuo, Dómine; * juxta elóquium tuum da mihi intelléctum.

Intret postulátio mea in conspéctu tuo; * secúndùm elóquium tuum éripe me.

Eructábunt lábia mea hymnum, * cùm docúeris me justificatiónes tuas.

Pronuntiábit lingua mea elóquium tuum; * quia ómnia mandáta tua æquitas.

Fiat manus tua ut salvet me; * quóniam mandáta tua elégi.

Concupívi salutáre tuum, Dómine; * & lex tua meditátio mea est.

Vivet ánima mea, & laudábit te; * & judícia tua adjuvábunt me.

Errávi sicut ovis quæ périit; * quære servum tuum, quia mandáta tua non sum oblítus.

*Ant.* Mandáta tua diléxi, Dómine, in misericórdia tua vivífica me. *Psal.* 118. 159.

*Capitulum.* 1. *Timot.* 1. 5.

Finis præcépti est cháritas de corde puro & consciéntia bona & fide non ficta.

℟. *breve*, Clamávi in toto corde meo * Exáudi me, Dómine. *Repetitur*, Clamávi. ℣. Justificatiónes tuas requíram. * Exáudi. ℣. Glória. *Repetitur*, Clamávi.

℣. Clamávi ad te salvum me fac, ℟. Ut custódiam mandáta tua. *Psal.* 118. 145. 146.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

AD VESPERAS.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium.

*Per Annum*, *Ant.* 1. d. Dixit.

*Psalmus* 109.

Dixit Dóminus Dómino meo, * Sede à dextris meis,

Donec ponam inimícos tuos, * scabéllum pedum tuórum.

Virgam virtútis tuæ emíttet Dóminus ex Sion, * domináre in médio inimicórum tuórum.

Tecum princípium in die virtútis tuæ in splendóribus sanctórum, * ex útero ante lucíferum génui te.

Jurávit Dóminus, & non pœnitébit eum; * Tu es sacérdos in ætérnum, secúndùm órdinem Melchísedech.

Dóminus à dextris tuis, * confrégit in die iræ suæ reges.

Judicábit in natiónibus, implébit ruínas, * conquassábit cápita in terra multórum.

De torrénte in via bibet; * proptéreà exaltábit caput.

*Ant.* Dixit Dóminus Dómino meo, Sede à dextris meis. *v.* 1.

*Per Annum*, *Ant.* 2. D. Sanctum.

*Psalmus* 110.

Confitébor tibi, Dómine, in toto corde meo, * in consílio justórum & congregatióne.

Magna ópera Dómini, * exquisíta in omnes voluntátes ejus.

Conféssio & magnificéntia opus ejus, * & justítia ejus manet in séculum séculi.

Memóriam fecit mirabílium suórum, misericors & mise-

ritor Dóminus, * escam dedit timéntibus se.

Memor erit in séculum testaménti sui, * virtútem óperum suórum annuntiábit pópulo suo;

Ut det illis hereditátem géntium: * ópera mánuum ejus, véritas & judícium.

Fidélia ómnia mandáta ejus, confirmáta in séculum séculi; * facta in veritáte & æquitáte.

Redemptiónem misit pópulo suo; * mandávit in ætérnum testaméntum suum.

Sanctum & terríbile nomen ejus: * inítium sapiéntiæ, timor Dómini.

Intelléctus bonus ómnibus faciéntibus eum; * laudátio ejus manet in séculum séculi.

*Ant.* Sanctum & terríbile nomen ejus: inítium sapiéntiæ, timor Dómini. *v.* 9.

*Per Annum, Ant.* 3. A. Qui timet.

*Psalmus* 111.

BEátus vir, qui timet Dóminum, * in mandátis ejus volet nimis.

Potens in terra erit semen ejus: * generátio rectórum benedicétur.

Glória & divítiæ in domo ejus: * & justítia ejus manet in séculum séculi.

Exórtum est in ténebris lumen rectis, * misericors & miserátor & justus.

Jucúndus homo, qui miserétur & cómmodat, dispónet sermónes suos in judício; * quia in ætérnum non commovébitur.

In memória ætérna erit justus, * ab auditióne mala non timébit.

Parátum cor ejus speráre in Dómino, confirmátum est cor ejus, * non commovébitur, donec despíciat inimícos suos.

Dispérsit, dedit paupéribus, justítia ejus manet in séculum séculi, * cornu ejus exaltábitur in glória.

Peccátor vidébit, & irascétur, déntibus suis fremet & tabéscet: * desidérium peccatórum peribit.

*Ant.* Qui timet Dóminum, in mandátis ejus volet nimis. *v.* 1.

*Per Annum, Ant.* 7. c. Sit nomen.

*Psalmus* 112.

LAudáte púeri Dóminum, * laudáte nomen Dómini.

Sit nomen Dómini benedíctum, * ex hoc nunc, & usque in séculum.

A solis ortu usque ad occásum, * laudábile nomen Dómini.

Excélsus super omnes gentes Dóminus, * & super cœlos glória ejus.

Quis sicut Dóminus Deus noster, qui in altis hábitat, *

& humília réspicit in cœlo & in terra ?

Súscitans à terra inopem, * & de stércore érigens páuperem ;

Ut cóllocet eum cum princípibus, * cum princípibus pópuli sui.

Qui habitáre facit stérilem in domo, * matrem filiórum lætántem.

*Ant.* Sit nomen Dómini benedíctum, ex hoc nunc, & usque in séculum. *v.* 2.

*Per Annum, Ant.* 1. *irreg.* d. Nos qui vívimus.

*Psalmus* 113.

IN éxitu I'sraël de Ægypto, * domus Jacob de pópulo bárbaro.

Facta est Judæa sanctificátio ejus, * I'sraël potéstas ejus.

Mare vidit & fugit; * Jordánis convérsus est retrórsùm ;

Montes exultavérunt ut arietes, * & colles sicut agni óvium.

Quid est tibi mare, quòd fugísti ? * & tu Jordánis, quia convérsus es retrórsùm ?

Montes exultástis sicut arietes, * & colles sicut agni óvium.

A fácie Dómini mota est terra, * à fácie Dei Jacob.

Qui convértit petram in stagna aquárum, * & rupem in fontes aquárum.

Non nobis, Dómine, non nobis, * sed nómini tuo da glóriam super misericórdia tua & veritáte tua ;

Nequándo dicant gentes; * Ubi est Deus eórum ?

Deus autem noster in cœlo : * ómnia quæcúnque vóluit, fecit.

Simulácra géntium, argéntum & aùrum, * ópera mánuum hóminum.

Os habent & non loquéntur, * óculos habent, & non vidébunt.

Aures habent, & non áudient ; * nares habent, & non odorábunt.

Manus habent, & non palpábunt ; pedes habent, & non ambulábunt ; * non clamábunt in gútture suo.

Símiles illis fiant qui fáciunt ea, * & omnes qui confídunt in eis.

Domus I'sraël sperávit in Dómino, * adjútor eórum & protéctor eórum est.

Domus A'aron sperávit in Dómino, * adjútor eórum & protéctor eórum est.

Qui timent Dóminum, speravérunt in Dómino ; * adjútor eórum & protéctor eórum est.

Dóminus memor fuit nostri, * & benedíxit nobis.

Benedíxit dómui I'sraël, * benedíxit dómui A'aron.

Benedíxit ómnibus, qui ti-

ment Dóminum, * pusíllis cum majóribus.

Adjíciat Dóminus super vos, * super vos & super fílios vestros.

Benedícti vos à Dómino, * qui fecit cœlum & terram.

Cœlum cœli Dómino; * terram autem dedit fíliis hóminum.

Non mórtui laudábunt te, Dómine, * neque omnes qui descéndunt in inférnum.

Sed nos qui vívimus, benedícimus Dómino, * ex hoc nunc, & usque in séculum.

*Ant.* Nos qui vívimus, benedícimus Dómino. *v.* 18.

*Per Annum, Capitulum. Eccli.* 2. *v.* 10. 12.

QUi timétis, Dóminum, dilígite illum, & illuminabúntur corda vestra. Quis enim permánsit in mandátis ejus, & derelíctus est? aut quis invocávit eum, & despéxit illum?

℟. Deo grátias.

*Per Annum, Hymnus.*

LUcis Creátor óptime,
Miri labóris ártifex,
Jubes, nihil fit ómnia;
Ináne terram sústinet.

Hinc longa currunt sécula;
Tu semper idem pérmanes:
Nutu poténti cóndita
Moves, movéri néscius.

Et lux, & umbra mútuò
Tibi, Creátor, mílitant;
Zelo pari, fac æmulus
Homo tibi desérviat.

Fac mens graváta crímine,
Dolóre vero cóncita,
Laboriósis flétibus,
Pœnas repéndat débitas.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Dirigátur, Dómine, orátio mea, ℟. Sicut incénsum in conspéctu tuo. *Ps.* 140. 2.

*Canticum B. Mariæ Virginis. Luc.* 1. 46.

MAgníficat * ánima mea Dóminum.

Et exultávit spíritus meus * in Deo salutári meo.

Quia respéxit humilitátem ancíllæ suæ: * ecce enim ex hoc beátam me dicent omnes generatiónes.

Quia fecit mihi magna, qui potens est; * & sanctum nomen ejus.

Et misericórdia ejus à progénie in progénies * timéntibus eum.

Fecit poténtiam in bráchio suo: * dispérsit supérbos mente cordis sui.

Depósuit poténtes de sede, * & exaltávit húmiles.

Esuriéntes implévit bonis; * & dívites dimísit inánes.

Suscépit Israël púerum suum, * recordátus misericórdiæ suæ.

Sicut locútus est ad patres nostros, * Abraham, & sémini ejus in sécula.

*Ant. & Oratio conveniens ut in Proprio de Tempore; & in fine,*

℣. Dóminus vobíscum,
℟. Et cum spíritu tuo.
℣. Benedicámus Dómino.
℟. Deo grátias.

*Si qua occurrat Commemoratio, hoc loco fit. Deinde Commemoratio de sancta Maria.*

*Per Annum, Ant.* Beátam me dicent omnes generatiónes, quia fecit mihi magna, qui potens est. *Luc.* 1. *v.* 48. 49.

℣. Sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus, ℟. Deus in médio ejus. *Psal.* 45. *v.* 5. 6.

Orémus. *Oratio.*

COncéde nos fámulos tuos, quǽsumus, Dómine Deus, perpétuâ mentis & córporis sanitáte gaudére; & gloriósâ beátæ Maríæ semper vírginis intercessióne à præsénti liberári trístítia, & ætérnâ pérfrui lætítia. Per Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

(*In Metropoli verò, & in Ecclesiis quæ sunt sub invocatione B. Mariæ*; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit, &c.)

*In Ecclesia Metropolitana diebus Dominicis non additur alia Commemoratio: in aliis verò Ecclesiis quæ non sunt sub invocatione B. Mariæ, post prædictam Commemorationem, fit Commemoratio Patroni Titularis Ecclesiæ per Antiphonam, Versum & Orationem propriam.*

*Deinde repetitur,*

℣. Dóminus vobíscum.
℟. Et cum spíritu tuo.
℣. Benedicámus Dómino.
℟. Deo grátias.

## AD COMPLETORIUM.

℣. Convérte nos, Deus salutáris noster; ℟. Et avérte iram tuam à nobis. *Ps.* 84. 4.

Deus in adjutórium, &c.

*Per Annum, Ant.* 8. g. Miserére.

*Psalmus* 4.

CUm invocárem exaudívit me Deus justítiæ meæ: * in tribulatióne dilatásti mihi.

Miserére mei, * & exáudi oratiónem meam.

Fílii hóminum úsquequò gravi corde? * ut quid dilígitis vanitátem, & quæritis mendácium?

Et scitóte quóniam mirificávit Dóminus sanctum suum: * Dóminus exáudiet me, cùm clamávero ad eum.

Irascímini, & nolíte peccáre: * quæ dícitis in córdibus vestris, in cubílibus vestris compungímini.

Sacrificáte

Sacrificáte sacrificium justítiæ, & speráte in Dómino; * multi dicunt: Quis osténdit nobis bona?

Signátum est super nos lumen vultûs tui, Dómine: * dedísti lætítiam in corde meo.

A fructu fruménti, vini, & ólei sui, * multiplicáti sunt.

In pace in idípsum * dórmiam & requiéscam;

Quóniam tu, Dómine, singuláriter in spe * constituísti me.

*Psalmus 90.*

QUi hábitat in adjutório Altíssimi, * in protectióne Dei cœli commorábitur.

Dicet Dómino: Suscéptor meus es tu; & refúgium meum; * Deus meus sperábo in eum.

Quóniam ipse liberávit me de láqueo venántium, * & à verbo áspero.

Scápulis suis obumbrábit tibi, * & sub pennis ejus sperábis.

Scuto circúndabit te véritas ejus, * non timébis à timóre noctúrno.

A sagítta volánte in die, à negótio perambulánte in ténebris, * ab incúrsu, & dæmónio meridiáno.

Cadent à látere tuo mille, & decem míllia à dextris tuis; * ad te autem non appropinquábit.

Verúntamen óculis tuis considerábis, * & retributiónem peccatórum vidébis.

Quóniam tu es, Dómine, spes mea; * Altíssimum posuísti refúgium tuum.

Non accédet ad te malum, * & flagéllum non appropinquábit tabernáculo tuo.

Quóniam Ángelis suis mandávit de te, * ut custódiant te in ómnibus viis tuis.

In mánibus portábunt te, * ne forte offéndas ad lápidem pedem tuum.

Super áspidem & basilíscum ambulábis, * & conculcábis leónem & dracónem.

Quóniam in me sperávit, liberábo eum; * prótegam eum, quóniam cognóvit nomen meum.

Clamábit ad me, & ego exáudiam eum; * cum ipso sum in tribulatióne: erípiam eum, & glorificábo eum.

Longitúdine diérum replébo eum, * & osténdam illi salutáre meum.

*Psalmus 133.*

ECce nunc benedícite Dóminum * omnes servi Dómini;

Qui statis in domo Dómini, * in átriis domûs Dei nostri,

In nóctibus extóllite manus vestras in sancta, * & benedícite Dóminum.

Benedícat te Dóminus ex Sion, * qui fecit cœlum & terram.

*Ant.* Miserére mei, Dómine, & exáudi oratiónem meam. *Psal.* 4. 2.

*Per Annum etiam in Festis hac die occurrentibus, nisi aliter notetur.*

*Capitulum* 1. *Thess.* 5. 5. 6.

VOs fílii lucis estis, & fílii diéi: non sumus noctis, neque tenebrárum: ígitur non dormiámus sicut & céteri, sed vigilémus & sóbrii simus.

℟. Deo grátias.

*Per Annum.* *Hymnus.*

DIem sacrátum, Cónditor,
Quo das tibi quiéscere;
Quo te sepúlcro súscitas;
Quiéta nox fac óccupet.

In nocte, nostra sit quies
Legem tuam revólvere;
In ótio, sit máximum
Laudáre te negótium.

In mente sis, ut cógitem;
In corde sis, ut díligam;
In te movémur, & sumus;
Sit vita per te, sit salus.

Noctúrna per siléntia,
Sit laus Patri, laus Fílio;
Qui nostra pax es, & quies
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Custódi me, Dómine, ut pupíllam óculi, ℟. Sub umbra alárum tuárum prótege me. *Ps.* 16. 8.

*Per Annum*, *Ant.* 6. F. In manus tuas.

*Canticum Simeonis. Luc.* 2. 29.

NUnc dimíttis servum tuum, Dómine, * secúndùm verbum tuum in pace.

Quia vidérunt óculi mei, * salutáre tuum.

Quod parásti, * ante fáciem ómnium populórum.

Lumen ad revelatiónem Géntium, * & glóriam plebis tuæ Isráël.

*Ant.* In manus tuas comméndo spíritum meum, redemísti me, Dómine Deus veritátis. *Psal.* 30. 6.

℣. Dóminus vobíscum.
℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

VIsita, quǽsumus, Dómine, habitatiónem nostram, & omnes insídias inimíci ab ea longè repélle; Angeli tui sancti hábitent in ea, qui nos in pace custódiant, & benedíctio tua sit super nos semper. Per Dóminum.

℟. Amen.
℣. Dóminus vobíscum.
℟. Et cum spíritu tuo.
℣. Benedicámus Dómino.
℟. Deo grátias.

℣. Benedícat & custódiat nos omnípotens & miséricors Dóminus Pater, & Fílius, & Spíritus sanctus. ℟. Amen.

*Ad Completorium in festis Beatæ Mariæ Virginis, Octa-*

*tis, & quando fit de ea Officium in Sabbato.*

*Hymnus.*

VIRGÍNEIS títulis matris quæ jungit honóres,
Hac natos fóveat nocte benígna suos.
FÚLGIDA stella maris, secli dùm mérgimur undis,
Sit lux in ténebris, & benè fida quies.
SI sopor obrépit, casti fac mater amóris
Cor vígilans uno spiret amóre Dei.
O Regína potens própiùs res áspice nostras;
Dicáris pópuli vita salúsque tui.
GLÓRIA summa Patri, compar sit glória Nato,
Quo péperit Virgo glória Spirítui. Amen.

*Per Annum. In Festis Sanctorum Semiduplicibus & suprà.*

*Hymnus.*

DONA, Deus, suffrágiis
Sancti suis nos ádjuvent,
Ut quos adóptas fílios
Curâ patérnâ prótegas.
AD sancta proni tóllimus
In nocte palmas súpplices;
Donis, quibus nos múneras,
Grates tibi rependimus.
TU de Sion nos réspice.
Corpus tibi fac súbditum,
Fac casta mens te cógitet,
Hostémque per te cómprimat.
NOCTÚRNA per siléntia,
Sit laus Patri, laus Fílio,
Qui nostra pax es, & quies,
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

---

FERIA SECUNDA
AD OFFICIUM NOCTURNUM.

Pater. Ave. Credo.

Dómine lábia mea apéries, *ut suprà, pag.* 1.

Deus in adjutórium, &c. *& sic aliis diebus.*

*Per Annum, Invitatorium,* Veníte, * Exultémus Dómino. *Psal.* 94. 1.

*Continuatur Psalmus,* Jubilémus Deo salutári nostro, &c. *ut suprà, pag.* 2.

*Per Annum. Hymnus.*

SOMNO reféctis ártubus,
Spretó cubíli, súrgimus:
Nobis, Pater, canéntibus
Adésse te depóscimus.
TE lingua primùm cóncinat,
Te mentis ardor ámbiat:
Ut áctuum sequéntium,
Tu Sancte, sis exórdium.
CEDANT ténebræ lúmini,
Et nox diúrno síderi:
Ut culpa, quam nox íntulit,
Lucis labáscat múnere.
PRECA'MUR iidem súpplices,
Noxas ut omnes ámputes,
Et ore te canéntium
Laudéris omni témpore.
QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves

Sit par tibi laus, Spiritus.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Per Annum, Antiphona.*
6. *f.* Quàm.

*Psalmus* 103.

BEnedic, ánima mea, Dómino; * Dómine Deus meus, magnificátus es vehem énter.

Confessiónem & decórem induísti, * amíctus lúmine sicut vestiménto.

Exténdens cœlum sicut pellem; * qui tegis aquis superióra ejus.

Qui ponis nubem ascénsum tuum; * qui ámbulas super pennas ventórum.

Qui facis Angelos tuos, spíritus, * & minístros tuos, ignem uréntem;

Qui fundásti terram super stabilitátem suam; * non inclinábitur in séculum séculi.

Abyssus, sicut vestiméntum, amíctus ejus: * super montes stábunt aquæ.

Ab increpatióne tua fúgient; * à voce tonítrui tui formidábunt.

Ascéndunt montes, & descéndunt campi, * in locum quem fundásti eis.

Términum posuísti, quem non transgrediéntur, * neque converténtur operíre terram.

Qui emíttis fontes in convállibus, * inter médium móntium pertransíbunt aquæ.

Potábunt omnes béstiæ agri; * expectábunt ónagri in siti sua.

Super ea vólucres cœli habitábunt, * de médio petrárum dabunt voces.

*Divisio Psalmi* 103.

RIgans montes de superióribus suis: * de fructu óperum tuórum satiábitur terra;

Prodúcens fœnum juméntis, * & herbam servitúti hóminum;

Ut edúcas panem de terra; * & vinum lætíficet cor hóminis;

Ut exhilaret fáciem in óleo; * & panis cor hóminis confirmet.

Saturabúntur ligna campi, * & cedri Líbani, quas plantávit.

Illic pásseres nidificábunt: * Heródii domus dux est eórum.

Montes excélsi cervis; * petra refúgium herináciis.

Fecit lunam in témpora; * sol cognóvit occásum suum.

Posuísti ténebras, & facta est nox; * in ipsa pertransíbunt omnes béstiæ silvæ:

Cátuli leónum rugiéntes ut rápiant, * & quærant à Deo escam sibi.

Ortus est sol, & congregáti sunt, * & in cubílibus suis collocabúntur.

Exibit homo ad opus

suum, * & ad operatiónem suam usque ad vésperam.

*Altera divisio Psalmi* 103.

QUàm magnificáta sunt ópera tua, Dómine! ómnia in sapiéntia fecísti; * impléta est terra possessióne tuâ.

Hoc mare magnum, & spatiósum mánibus: * illic reptília, quorum non est númerus, animália pusílla cum magnis.

Illic naves pertransíbunt, * draco iste, quem formásti ad illudéndum ei.

O'mnia à te expéctant, * ut des illis escam in témpore.

Dante te illis, cólligent; * aperiénte te manum tuam, ómnia implebúntur bonitáte.

Averténte autem te fáciem, turbabúntur; * áuferes spíritum eórum, & defícient, & in púlverem suum reverténtur.

Emíttes Spíritum tuum, & creabúntur; * & renovábis fáciem terræ.

Sit glória Dómini in sǽculum: * lætábitur Dóminus in opéribus suis:

Qui réspicit terram, & facit eam trémere, * qui tangit montes, & fúmigant.

Cantábo Dómino in vita mea, * psallam Deo meo quándiu sum.

Jucúndum sit ei elóquium meum; * ego verò delectábor in Dómino.

Defíciant peccatóres à terra, & iníqui ita ut non sint: * bénedic, ánima mea, Dómino.

*Ant.* Quàm magnificáta sunt ópera tua, Dómine! ómnia in sapiéntia fecísti. *v.* 24.

IN II. NOCTURNO.

*Per Annum, Ant.* 4. *irreg. c.* Ipse.

*Psalmus* 104.

COnfitémini Dómino, & invocáte nomen ejus, * annuntiáte inter Gentes ópera ejus.

Cantáte ei, & psállite ei, * narráte ómnia mirabília ejus.

Laudámini in nómine sancto ejus: * lætétur cor quæréntium Dóminum.

Quǽrite Dóminum, & confirmámini; * quǽrite fáciem ejus semper.

Mementóte mirabílium ejus, quæ fecit; * prodígia ejus & judícia oris ejus.

Semen A'braham, servi ejus, * fílii Jacob elécti ejus.

Ipse Dóminus, Deus noster; * in univérsa terra judícia ejus.

Memor fuit in sǽculum testaménti sui, * verbi, quod mandávit in mille generatiónes;

Quod dispósuit ad A'braham, * & juraménti sui ad I'saac.

Et státuit illud Jacob in præcéptum, * & I'sraël in testaméntum ætérnum.

Dicens: Tibi dabo terram

Chânaan, * funiculum hereditátis vestræ.

Cùm essent nùmero brevi, paucíssimi, * & íncolæ ejus.

Et pertransiêrunt de gente in gentem, * & de regno ad pópulum álterum.

Non relíquit hóminem nocére eis, * & corrípuit pro eis reges.

Nolíte tángere christos meos, * & in Prophétis meis nolíte malignári.

Et vocávit famem super terram, * & omne firmaméntum panis contrívit.

Misit ante eos virum; * in servum venúndatus est Joseph.

Humiliavêrunt in compédibus pedes ejus, ferrum pertránsiit ánimam ejus, * donec veníret verbum ejus.

Elóquium Dómini inflammávit eum; * misit rex, & solvit eum, princeps populórum, & dimísit eum.

Constítuit eum Dóminum domûs suæ, * & príncipem omnis possessiónis suæ:

Ut erudíret príncipes ejus sicut semetípsum, * & senes ejus prudéntiam docéret.

*Divisio Psalmi* 104. Et

INtrávit Israël in Ægyptum, * & Jacob áccola fuit in terra Cham.

Et auxit pópulum suum veheménter, * & firmávit eum super inimícos ejus.

Convértit cor eórum ut odírent pópulum ejus, * & dolum fácerent in servos ejus.

Misit Móysen servum suum, * A'aron, quem elégit ipsum.

Pósuit in eis verba signórum suórum, * & prodigiórum in terra Cham.

Misit ténebras, & obscurávit, * & non exacerbávit sermónes suos.

Convértit aquas eórum in sánguinem, * & occídit pisces eórum.

E'didit terra eórum ranas * in penetrálibus regum ipsórum.

Dixit, & venit cœnomyía & cínifes, * in ómnibus fínibus eórum.

Pósuit plúvias eórum grándinem, * ignem comburéntem in terra ipsórum.

Et percússit víneas eórum, & ficúlneas eórum, * & contrívit lignum fínium eórum.

Dixit, & venit locústa, & bruchus, * cujus non erat númerus:

Et comédit omne fœnum in terra eórum, * & comédit omnem fructum terræ eórum.

Et percússit omne primogênitum in terra eórum, * primítias omnis labóris eórum.

Et edúxit eos cum argénto & auro; * & non erat in tríbubus eórum infírmus.

*Altera divisio Psalmi* 104.

LÆtáta est Ægýptus in profectióne eórum; * quia incúbuit timor eórum super eos.

Expándit nubem in protectiónem eórum, * & ignem ut lucéret eis per noctem.

Petiérunt, & venit cotúrnix; * & pane cœli saturâvit eos.

Dirúpit petram, & fluxérunt aquæ, * abiérunt in sicco flúmina;

Quóniam memor fuit verbi sancti sui, * quod hábuit ad A'braham púerum suum.

Et edúxit pópulum suum in exultatióne, * & eléctos suos in lætítia.

Et dedit illis regiónes géntium; * & labóres populórum possedérunt;

Ut custódiant justificatiónes ejus, * & legem ejus requírant.

*Ant.* Ipse Dóminus, Deus noster, in univérsa terra judícia ejus. *v.* 7.

IN III. NOCTURNO.

*Per Annum, Ant.* 3. c. Salvos.

*Psalmus* 105.

COnfitémini Dómino quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Quis loquétur poténtias Dómini, * audítas fáciet omnes laudes ejus?

Beáti qui custódiunt judícium, * & fáciunt justítiam in omni témpore.

Meménto nostrì, Dómine, in beneplácito pópuli tui; * vísita nos in salutâri tuo.

Ad vidéndum in bonitáte electórum tuórum, ad lætándum in lætítia gentis tuæ; * ut laudéris cum hereditáte tua.

Peccávimus cum pátribus nostris, * injústè égimus, iniquitátem fécimus.

Patres nostri in Ægýpto non intellexérunt mirabília tua, * non fuérunt mémores multitúdinis misericórdiæ tuæ.

Et irritavérunt ascendéntes in mare, * mare Rubrum.

Et salvâvit eos propter nomen suum, * ut notam fáceret poténtiam suam.

Et increpuit mare Rubrum, & exsiccátum est; * & dedúxit eos in abyssis sicut in desérto.

Et salvâvit eos de manu odiéntium, * & redémit eos de manu inimíci.

Et opéruit aqua tribulántes eos; * unus ex eis non remánsit.

Et credidérunt verbis ejus, * & laudavérunt laudem ejus.

Citò fecérunt, oblíti sunt óperum ejus, * & non sustinuérunt consílium ejus.

Et concupiérunt concupiscéntiam in desérto, * & tentavérunt Deum in inaquóso.

Et dedit eis petitiónem ipsórum, * & misit saturitátem in ánimas eórum.

*Divisio Psalmi* 105. Et

IRritavérunt Móysen in castris, * Aaron sanctum Dómini.

Apérta est terra, & deglutívit Dathan, * & opéruit super congregatiónem Abiron.

Et exársit ignis in synagóga eórum, * flamma combússit peccatóres.

Et fecérunt vitulum in Horeb, * & adoravérunt sculptile.

Et mutavérunt glóriam suam * in similitúdinem vituli comedéntis fœnum.

Oblíti sunt Deum, qui salvávit eos, * qui fecit magnália in Ægypto, mirabília in terra Cham, terribília in mari Rubro.

Et dixit ut dispérderet eos, * si non Móyses eléctus ejus stetisset in confractióne in conspéctu ejus.

Ut avérteret iram ejus, * ne dispérderet eos.

Et pro níhilo habuérunt terram desiderábilem; * non credidérunt verbo ejus.

Et murmuravérunt in tabernáculis suis; * & non exaudiérunt vocem Dómini.

Et elevávit manum suam super eos, * ut prostérneret eos in desérto;

Et ut dejiceret semen eórum in natiónibus,* & dispérgeret eos in regiónibus.

Et initiáti sunt Beélphegor; * & comedérunt sacrifícia mortuórum.

Et irritavérunt eum in adinventiónibus suis; & multiplicáta est in eis ruína.

Et stetit Phínees, & placávit; * & cessávit quassátio;

Et reputátum est ei in justítiam, * in generatiónem & generatiónem usque in sempitérnum.

*Altera divisio Psalmi* 105. Et

IRritavérunt eum ad aquas contradictiónis; * & vexátus est Móyses propter eos;

Quia exacerbavérunt spíritum ejus, * & distinxit in lábiis suis.

Non disperdidérunt gentes, * quas dixit Dóminus illis.

Et commixti sunt inter gentes, & didicérunt ópera eórum, & serviérunt sculptílibus eórum; * & factum est illis in scándalum.

Et immolavérunt filios suos, * & filias suas dæmóniis.

Et effudérunt sánguinem innocéntem, sánguinem filiórum suórum & filiárum

suárum, * quas sacrificavérunt sculptílibus Chánaan.

Et inféctа est terra in sanguínibus, & contamináta est in opéribus eórum; * & fornicáti sunt in adinventiónibus suis.

Et irátus est furóre Dóminus in pópulum suum, * & abominátus est hereditátem suam.

Et trádidit eos in manus géntium, * & domináti sunt eórum, qui odérunt eos.

Et tribulavérunt eos inimíci eórum * & humiliáti sunt sub mánibus eórum.

Sæpè liberávit eos: * ipsi autem exacerbavérunt eum in consílio suo; & humiliáti sunt in iniquitátibus suis.

Et vidit cùm tribularéntur, * & audívit oratiónem eórum.

Et memor fuit testaménti sui, * & pœnítuit eum secúndùm multitúdinem misericórdiæ suæ.

Et dedit eos in misericórdias, * in conspéctu ómnium qui céperant eos.

Salvos nos fac, Dómine Deus noster, * & cóngrega nos de natiónibus;

Ut confiteámur nómini sancto tuo, * & gloriémur in laude tua.

Benedíctus Dóminus Deus Israël à século & usque in séculum; * & dicet omnis pópulus: Fiat, fiat.

*Ant.* Salvos nos fac, Dómine Deus noster, ut confiteámur nómini sancto tuo. *v.* 47.

*Per Annum.* ℣. In die clamávi & nocte coram te. ℟. Intret in conspéctu tuo orátio mea, Dómine. *Psal.* 87. 1. 2.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos; ℟. Quemádmodum sperávimus in te. *Ps.* 32. *v.* 22.

Deus in adjutórium.

*Per Annum*, *Ant.* 1. D. Bonum est.

*Psalmus* 91.

Bonum est confitéri Dómino, * & psállere nómini tuo, Altíssime;

Ad annuntiándum manè misericórdiam tuam, * & veritátem tuam per noctem,

In decachórdo psaltério, * cum cántico, in cíthara.

Quia delectásti me, Dómine, in factúra tua; * & in opéribus mánuum tuárum exultábo.

Quàm magnificáta sunt ópera tua, Dómine! * nimis profúndæ factæ sunt cogitatiónes tuæ.

Vir insípiens non cognóscet, * & stultus non intélliget hæc.

Cùm exórti fúerint peccatóres sicut fœnum, * & appárúerint omnes, qui operántur

iniquitátem ; ut intéreant in séculum séculi.

Tu autem Altíssimus, * in ætérnum, Dómine.

Quóniam ecce inimíci tui, Dómine, quóniam ecce inimíci tui períbunt ; * & dispergéntur omnes, qui operântur iniquitátem.

Et exaltábitur sicut unicórnis cornu meum, * & senéctus mea in misericórdia úberi.

Et despéxit óculus meus inimícos meos ; * & in insurgéntibus in me malignántibus áudiet auris mea.

Justus ut palma florébit, * sicut cedrus Líbani multiplicábitur.

Plantáti in domo Dómini,* in átriis domûs Dei nostri florébunt.

Adhuc multiplicabúntur in senécta úberi, * & benè patiéntes erunt :

Ut annúntient, quóniam rectus Dóminus Deus noster, * & non est iníquitas in eo.

*Ant.* Bonum est confitêri Dómino. *v.* 2.

*Ant.* 3. a. Confitémini.

*Psalmus* 135.

CONfitémini Dómino quóniam bonus, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Confitémini Deo deórum,* quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Confitémini Dómino dominórum,* quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Qui facit mirabília magna solus, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Qui fecit cœlos in intelléctu, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Qui firmávit terram super aquas, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Qui fecit luminária magna,* quóniam in ætérnum misericórdia ejus ;

Solem in potestátem diéi,* quóniam in ætérnum misericórdia ejus ;

Lunam & stellas in potestátem noctis, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus ;

Qui percússit Ægyptum cum primogénitis eórum, * quóniam in ætêrnum misericórdia ejus.

Qui edûxit I'sraël de médio eórum, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

In manu poténti, & bráchio excélso, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Qui divísit mare Rubrum in divisiónes, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Et edúxit I'sraël per médium ejus,* quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Et excússit Pharaónem, & virtútem ejus in mari Rubro,*

quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

*Ant.* Confitémini Dómino quóniam in ætérnum misericórdia ejus. *v.* 1.

*Ant.* 3. A. Confitémini.

*Divisio Psalmi* 135.

QUi tradúxit pópulum suum per desértum, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Qui percússit reges magnos, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Et occídit reges fortes, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Sehon regem Amorrhæórum, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Et Og regem Basan, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Et dedit terram eórum hereditátem, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus,

Hereditátem Israël servo suo, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Quia in humilitáte nostra memor fuit nostri, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Et redémit nos ab inimícis nostris, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Qui dat escam omni carni. * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Confitémini Deo cœli, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

Confitémini Dómino dominórum, * quóniam in ætérnum misericórdia ejus.

*Ant.* Confitémini Dómino, qui redémit nos ab inimícis nostris. *v.* 24.

*Ant.* 5. a. Fortitúdo.

*Canticum Moysi, Exod.* 15. 1.

CAntémus Dómino, gloriósè enim magnificátus est, * equum & ascensórem dejécit in mare.

Fortitúdo mea & laus mea Dóminus, * & factus est mihi in salútem.

Iste Deus meus, & glorificábo eum; * Deus patris mei, & exaltábo eum.

Dóminus quasi vir pugnátor, * Omnípotens nomen ejus.

Currus Pharaónis, & exércitum ejus projécit in mare: * elécti príncipes ejus submérsi sunt in mari Rubro.

Abyssi operuérunt eos, * descendérunt in profúndum quasi lapis.

Déxtera tua, Dómine, magnificáta est in fortitúdine, * déxtera tua, Dómine, percússit inimícum.

Et in multitúdine glóriæ tuæ deposuísti adversários tuos: * misísti iram tuam, quæ devorávit eos sicut stípulam;

Et in spíritu furóris tui congregátæ sunt aquæ: * stetit unda fluens, congregátæ

ſunt abýſſi in médio mari.

Dixit inimícus: Pérſequar & comprehéndam, dívidam ſpólia,* implébitur ánima mea.

Evaginábo gládium meum,* interfíciet eos manus mea.

Flavit ſpíritus tuus, & opéruit eos mare;* ſubmérſi ſunt quaſi plumbum in aquis veheméntibus.

Quis símilis tui in fórtibus, Dómine? quis símilis tui? * magníficus in ſanctitáte, terríbilis atque laudábilis, fáciens mirabília.

Extendíſti manum tuam,* & devorávit eos terra.

Dux fuíſti in miſericórdia tua pópulo, quem redemíſti;* & portáſti eum in fortitúdine tua, ad habitáculum ſanctum tuum.

Aſcendérunt pópuli, & iráti ſunt;* dolóres obtinuérunt habitatóres Philíſthiim.

Tunc conturbáti ſunt príncipes Edom, robúſtos Moab obtínuit tremor,* obriguérunt omnes habitatóres Chánaan.

Irruat ſuper eos formído & pavor,* in magnitúdine bráchii tui: fiant immóbiles quaſi lapis;

Donec pertránſeat pópulus tuus, Dómine,* donec pertránſeat pópulus tuus iſte, quem poſſedíſti.

Introdúces eos, & plantábis in monte hereditátis tuæ,* firmíſſimo habitáculo tuo; quod operátus es, Dómine:

Sanctuárium tuum, Dómine,* quod firmavérunt manus tuæ.

Dóminus regnábit * in ætérnum & ultrà.

Ingréſſus eſt enim eques Phárao cum cúrribus & equítibus ejus in mare;* & redúxit ſuper eos Dóminus aquas maris:

Fílii autem Iſraël ambulavérunt per ſiccum * in médio ejus.

*Ant.* Fortitúdo mea & laus mea Dóminus. *v.* 2.

[*In Feſtis, loco ſuperioris Cantici, dicitur ſequens Canticum.*

1. *Par.* 29. 10.

BEnedíctus es, Dómine, Deus Iſraël patris noſtri,* ab ætérno in ætérnum.

Tua eſt, Dómine, magnificéntia,* & poténtia, & glória, atque victória; & tibi laus.

Cuncta enim quæ in cœlo ſunt,* & in terra, tua ſunt:

Tuum, Dómine, regnum,* & tu es ſuper omnes príncipes.

Tuæ divítiæ, & tua eſt glória:* tu domináris ómnium,

In manu tua virtus & poténtia:* in manu tua magnitúdo, & impérium ómnium.

Nunc ígitur, Deus noſter, confitémur tibi,* & laudá-

mus nomen tuum inclytum.

Tua sunt ómnia : * & quæ de manu tua accépimus, dédimus tibi. ]

*Ant.* 2. d. Qui statis.

*Psalmus* 134.

LAudáte nomen Dómini, * laudáte servi Dóminum.

Qui statis in domo Dómini, * in átriis domûs Dei nostri.

Laudáte Dóminum, quia bonus Dóminus ; * psállite nómini ejus, quóniam suáve.

Quóniam Jacob elégit sibi Dóminus, * I'sraël in possessiónem sibi.

Quia ego cognóvi quòd magnus est Dóminus, * & Deus noster præ ómnibus diis.

O'mnia quæcúnque vóluit, Dóminus fecit in cœlo, & in terra, * in mari, & in ómnibus abyssis.

Edúcens nubes ab extrémo terræ; fúlgura in plúviam fecit : * qui prodúcit ventos de thesáuris suis ;

Qui percússit primogénita Ægypti : * ab hómine usque ad pecus,

Et misit signa & prodígia in médio tui, Ægypte, * in Pharaónem, & in omnes servos ejus.

Qui percússit gentes multas, * & occídit reges fortes.

Sehon regem Amorrhæórum, & Og regem Basan, * & ómnia regna Chánaan.

Et dedit terram eórum hereditátem, * hereditátem I'sraël pópulo suo.

Dómine, nomen tuum in ætérnum : * Dómine, memoriále tuum in generatióne & generatiónem.

Quia judicábit Dóminus pópulum suum, * & in servis suis deprecábitur.

Simulácra géntium argéntum & aurum, * ópera mánuum hóminum ;

Os habent, & non loquéntur ; * óculos habent, & non vidébunt ;

Aures habent, & non áudient ; * neque enim est spíritus in ore ipsórum.

Símiles illis fiant qui fáciunt ea ; * & omnes qui confídunt in eis.

Domus I'sraël benedícite Dómino, * domus A'aron benedícite Dómino.

Domus Levi benedícite Dómino ; * qui timétis Dóminum, benedícite Dómino.

Benedíctus Dóminus ex Sion, * qui hábitat in Jerúsalem.

*Ant.* Qui statis in domo Dómini, in átriis domûs Dei nostri, laudáte Dóminum.

*v.* 2. 3.

*Per Annum, Capitulum.* *Ephes.* 2. 4. 5.

DEus qui dives est in misericórdia, propter nimiam suam charitátem, quâ

diléxit nos, & cùm essémus mórtui peccátis, convivificávit nos in Christo, cujus grátiâ estis salváti.

*Per Annum.* *Hymnus.*

SPLENDOR Patérnæ glóriæ,
De luce lucem próferens,
Primórdiis lucis novæ,
Diem dies illúminans.

VERÚSQUE sol illábere,
Micans nitóre pérpeti:
Jubárque sancti Spíritûs
Infúnde nostris sénsibus.

VOTIS vocémus & Patrem,
Patrem poténtis grátiæ,
Patrem perénnis glóriæ,
Culpam relégét lúbricam.

INFÓRMET actus strénuos;
Dentes retúndat ínvidi:
Casus secúndet ásperos:
Agénda rectè dírigat.

MENTEM gubérnet & regat,
Sit pura nobis cástitas:
Fides calóre férveat,
Fraudis venéna nésciat.

CHRISTÚSQUE nobis sit cibus,
Potúsque noster sit fides,
Læti bibámus sóbriam
Profusiónem Spíritûs.

LÆTUS dies hic tránseat:
Pudor sit ut dilúculum:
Fides velut merídies,
Crepúsculum mens nésciat.

AURÓRA lucem próvehit,
Cum luce nobis pródeat,
In Patre totus Fílius,
Et totus in Verbo Pater.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum.* ℣. Repléti sumus manè misericórdiâ tuâ: ℞. Exultávimus, & delectáti sumus. *Ps.* 89. *v.* 14.

*Per Annum, ad* Benedíctus, *Ant.* Benedíctus Dóminus Deus Iſraël. *Luc.* 1. 68.

*Canticum idem, pag.* 14.

*In Feriis Adventûs, Quadragesimæ, Quatuor Temporum, Vigiliarum, quæ jejunantur, exceptâ Vigiliâ Nativitatis Domini, & Vigiliâ ac Quatuor Temporibus Pentecostes, post Antiphonam ad* Benedíctus, *& Antiphonam ad* Magníficat *dicuntur flexis genibus sequentes Preces.*

Kýrie eléïson, Christe eléïson, Kýrie eléïson.

Pater noster, *secretò usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem. ℞. Sed líbera nos à malo.

℣. Ego dixi: Dómine, miserére mei: ℞. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi. *Ps.* 40. 5.

℣. Convértere, Dómine, úsquequò? ℞. Et deprecábilis esto super servos tuos. *Ps.* 89. 13.

℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos: ℞. Quemádmodum sperávimus in te. *Ps.* 32. 22.

℣. Orémus pro Pastóre nostro N. ℟. Dóminus consérvet eum & vivíficet eum. *Ps.* 40. 3.

℣. Sacerdótes tui induántur justítiam: ℟. Et sancti tui exúltent. *Ps.* 131. 9.

℣. Dómine, salvum fac Regem: ℟. Et exáudi nos in die, quâ invocavérimus te. *Ps.* 19. 10.

℣. Salvum fac pópulum tuum, Dómine, & bénedic hereditáti tuæ: ℟. Et rege eos, & extólle illos usque in ætérnum. *Ps.* 27. 9.

℣. Memor esto congregatiónis tuæ, ℟. Quam possedísti ab inítio. *Ps.* 73. 2.

℣. Fiat pax in virtúte tua: ℟. Et abundántia in túrribus tuis. *Ps.* 121. 7.

℣. Pro frátribus nostris abséntibus. ℟. Salvos fac servos tuos, Deus meus, sperántes in te. *Ps.* 85. 2.

℣. Pro infírmis, afflíctis & captívis. ℟. Líbera eos, Deus Israël, ex ómnibus tribulatiónibus suis. *Ps.* 24. 22.

℣. Mitte eis, Dómine, auxílium de sancto: ℟. Et de Sion tuére eos. *Ps.* 19. 3.

℣. Orémus pro fidélibus defúnctis. ℟. Edúcat eos Dóminus in lucem, & vídeant justítiam ejus. *Mich.* 7. 9.

*Deinde dicitur Psalmus,* De profúndis, *ut infrà in Vesperis Feria quarta, & in fine* Glória Patri. *In Vesperis, ejus loco, dicitur Psalmus,* Miserére mei Deus &c. *ut in Completorio Sabbati.*

*Finito Psalmo dicitur,* ℣. Dómine Deus virtútum, convérte nos: ℟. Et osténde fáciem tuam, & salvi érimus. *Ps.* 79. 8.

℣. Exúrge, Dómine, ádjuva nos: ℟. Et rédime nos propter nomen tuum. *Psal.* 43. 26.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam: ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

℣. Dóminus vobíscum.

℟. Et cum spíritu tuo.

*Deinde dicitur Oratio conveniens.*

*Si facienda sit Commemoratio alicujus Festi occurrentis, fit hoc loco.*

Suffragia ad Laudes

*Dicuntur in Festis Semiduplicibus, Simplicibus & Feriis extrà Adventum, tempus Passionis, & tempus Paschale.*

*Commemoratio de Sancta Cruce, in Feriali Officio tantùm.*

*Ant.* Aspiciámus in auctórem fídei, & consummatórem Jesum, qui propósito sibi gáudio sustínuit Crucem, confusióne contémptâ. *Hebr.* 12. 2.

℣. Apud Dóminum miseri-

córdia, ℟. Et copiósa apud eum redémptio. *Ps.* 129. 7.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui eripuísti nos de potestáte tenebrárum, & transtulísti in regnum Fílii dilectiónis tuæ; per sánguinem crucis ejus concéde, ut, carnem nostram crucifigéntes, peccátis mórtui, justítiæ vivámus. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*De sancta Maria.*

*Ant.* Benedícta tu inter mulíeres, & benedíctus fructus ventris tui. *Luc.* 1. 42.

℣. Elégit eam Dóminus, ℟. In habitatiónem sibi. *Psal.* 131. 13.

Orémus. *Oratio.*

PRótege, Dómine, fámulos tuos subsídiis pacis; & beátæ Maríæ semper vírginis patrocíniis confidéntes, à cunctis hóstibus & perículis redde secúros. Per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*De sanctis Nicasio, Mellono, & aliis sanctis Pontificibus Ecclesiæ Rothomagensis.*

*Ant.* Super muros tuos Jerúsalem constítui custódes, totâ die, & totâ nocte in perpétuum non tacébunt. *Isaiæ.* 62. 6.

℣. Sacerdótes tui induántur justítiam, ℟. Et sancti tui exúltent. *Ps.* 131. 9.

Orémus. *Oratio.*

BEnígnis pópulum tuum, Deus, résove auxíliis per mérita sanctórum Nicásii, Mellóni, Victrícii, Románi; atque aliórum beatórum Pontíficum, quos Rothomagénsis venerátur Ecclésia, & contra ómnia adversántia eórum nos defénde suffrágiis. Per Christum.

*De Patrono vel Titulari Ecclesiæ fiat Commemoratio consueta antè vel post Commemorationes prædictas, pro dignitate illius, & ultimo loco de Pace.*

*De Pace.*

*Ant.* Convértat vultum suum Dóminus ad nos, & det nobis pacem. *Num.* 6. 26.

℣. Rogáte quæ ad pacem sunt Jerúsalem, ℟. Et abundántia diligéntibus te. *Psal.* 121. 6.

Orémus. *Oratio.*

DEus auctor pacis & amátor, quem nosse, vívere; cui servíre, regnáre est; prótege ab ómnibus impugnatiónibus súpplices tuos; ut, qui in defensióne tua confídimus, nullíus hostilitátis arma timeámus. Per Dóminum nostrum Jesum Christum fílium tuum, qui tecum vivit & regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus; per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

*Deinde*

*Deinde repetitur,*
℣. Dóminus vobíscum;
℟. Et cum spíritu tuo.
℣. Benedicámus Dómino.
℟. Deo grátias.
Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.
Pater noster, *secretò.*
*Sic finitur qualibet Hora, nisi aliud sequatur Officium.*

## AD PRIMAM.

Pater. Ave.
Deus in adjutórium, &c. *ut suprà.*

*Per Annum.* *Hymnus.*

JAM lucis orto sídere,
Deum precémur súpplices,
Ut in diúrnis áctibus
Nos servet à nocéntibus.

LINGUAM refrænans témperet,
Ne litis horror ínsonet:
Visum fovéndo cóntegat,
Ne vanitátes háuriat.

SINT pura cordis íntima,
Absistat & vecórdia;
Carnis terat supérbiam
Potûs cibíque párcitas.

UT cùm dies abscésserit,
Diémque nox excéperit,
Mundi per abstinéntiam
Ipsi canámus glóriam.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Pars Hiemalis.*

*Ant.* 1. d. Reminíscere.

*Psalmus* 5.

VErba mea áuribus pércipe, Dómine, * intéllige clamórem meum.

Inténde voci oratiónis meæ, * Rex meus, & Deus meus.

Quóniam ad te orábo; Dómine, * manè exáudies vocem meam.

Manè astábo tibi, & vidébo, * quóniam non Deus volens iniquitátem tu es.

Neque habitábit juxta te malígnus, * neque permanébunt injústi ante óculos tuos.

Odísti omnes, qui operántur iniquitátem: * perdes omnes, qui loquúntur mendácium.

Virum sánguinum & dolósum, * abominábitur Dóminus.

Ego autem in multitúdine misericórdiæ tuæ introíbo in domum tuam: * adorábo ad templum sanctum tuum in timóre tuo.

Dómine, deduc me in justítia tua; * propter inimícos meos dírige in conspéctu tuo viam meam.

Quóniam non est in ore eórum véritas; * cor eórum vanum est.

Sepúlcrum patens est guttur eórum, linguis suis do-

lósè agébant, * júdica illos Deus.

Décidant à cogitatiónibus suis, secúndùm multitúdinem impietátum eórum expélle eos, * quóniam irritavérunt te, Dómine.

Et læténtur omnes, qui sperant in te, * in ætérnum exultábunt,& habitábis in eis.

Et gloriabúntur in te omnes, qui díligunt nomen tuum, * quóniam tu benedíces justo.

Dómine, ut scuto bonæ voluntátis tuæ, * coronásti nos.

*Psalmus 24.*

AD te, Dómine, levávi ánimam meam: * Deus meus, in te confído, non erubéscam.

Neque irrídeant me inimíci mei: * étenim univérsi qui sústinent te, non confundéntur.

Confundántur omnes iníqua agéntes, * supervácuè.

Vias tuas, Dómine, demónstra mihi; * & sémitas tuas édoce me.

Dírige me in veritáte tua, & doce me; * quia tu es Deus salvátor meus, & te sustínui totâ die.

Reminíscere miseratiónum tuárum, Dómine, * & misericordiárum tuárum, quæ à século sunt.

Delícta juventútis meæ, * & ignorántias meas ne memíneris.

Secúndùm misericórdiam tuam meménto mei tu, * propter bonitátem tuam, Dómine.

Dulcis & rectus Dóminus; * propter hoc legem dabit delinquéntibus in via.

Díriget mansuétos in judício: * docébit mites vias suas.

Univérsæ viæ Dómini, misericórdia & véritas, * requiréntibus testaméntum ejus & testimónia ejus.

Propter nomen tuum, Dómine, propitiáberis peccáto meo; * multum est enim.

*Divisio Psalmi 24.*

QUis est homo qui timet Dóminum? * legem státuit ei in via, quam elégit.

A'nima ejus in bonis demorábitur; * & semen ejus hereditábit terram.

Firmaméntum est Dóminus timéntibus eum; * & testaméntum ipsíus, ut manifestétur illis.

O'culi mei semper ad Dóminum; * quóniam ipse evéllet de láqueo pedes meos.

Réspice in me, & miserére mei; * quia únicus & pauper sum ego.

Tribulatiónes cordis mei multiplicátæ sunt: * de necessitátibus meis érue me.

Vide humilitátem meam,

& labórem meum; * & dimitte univérsa delícta mea.

Réspice inimícos meos, quóniam multiplicáti sunt, * & ódio iníquo odérunt me.

Custódi ánimam meam, & érue me: * non erubéscam, quóniam sperávi in te.

Innocéntes & recti adhæsérunt mihi; * quia sustínui te.

Líbera, Deus, I'sraël * ex ómnibus tribulatiónibus suis.

*Ant.* Reminíscere miseratiónum tuárum, Dómine, & misericordiárum tuárum, quæ à sǽculo sunt. *Ps.* 24. 6.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Joan.* 4. 10.

IN hoc est chéritas: non quasi nos dilexérimus Deum, sed quóniam ipse prior diléxit nos, & misit Fílium suum propitiatiónem pro peccátis nostris.

*In omnibus Festis, nisi aliter notetur, dicitur Capitulum sequens.* 1. *Timoth.* 1. 17.

REgi seculórum immortáli, invisíbili, soli Deo honor, & glória in sǽcula seculórum. Amen.

℟. *breve*, Christe fili Dei vivi, * Miserére nobis. *Repetitur*, Christe fili Dei vivi, * Miserére nobis. ℣. Qui sedes ad déxteram Patris, * Miserére nobis. ℣. Glória Patri, & Fílio, & Spirítui sancto. *Repet.* Christe fili Dei vivi, miserére nobis.

℣. Exúrge, Dómine, ádjuva nos, ℟. Et rédime nos propter nomen tuum. *Matt.* 16. 16. *Tob.* 8. 10. *Heb.* 1. 3. *Psal.* 43. 26.

[*In Festis Triplicibus, Duplicibus, Semiduplicibus, & intra Octavas immediatè post* ℣. Exúrge, Dómine, &c. *dicitur*,

℣. Dóminus vobíscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

*Et Oratio*, Dómine Deus omnípotens, &c. *ut infrà*, *pag.* 53.]

*In Simplicibus autem & in Feriis dicuntur mediocri voce Preces sequentes, & flexis genibus dicuntur, cum in Laudibus dictæ fuerunt Preces feriales.*

Kýrie eléïson, Christe eléïson, Kýrie eléïson.

Pater noster, *secretò usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem, ℟. Sed líbera nos à malo.

Credo in Deum, *secretò usque ad* ℣. Carnis resurrectiónem, ℟. Vitam ætérnam. Amen.

℣. Ego ad te, Dómine, clamávi; ℟. Et manè orátio mea prævéniet te. *Ps.* 87. 14.

℣. Repleátur os meum laude; ℟. Ut cantem glóriam tuam: totâ die magnitúdinem tuam. *Psal.* 70. 8.

℣. Dómine, avérte fáciem tuam à peccátis meis; ℟. Et

omnes iniquitátes meas dele. *Psal.* 50. 11.

℣. Cor mundum crea in me, Deus; ℟. Et Spíritum rectum ínnova in viscéribus meis. *Ibidem.* 12.

℣. Ne projícias me à fácie tua: ℟. Et Spíritum sanctum tuum ne áuferas à me. *Ibid.* 13.

℣. Redde mihi lætítiam salutáris tui, ℟. Et Spíritu principáli confírma me. *Ibidem.* 14.

*Cum ad Laudes dictæ sunt Preces, hìc adduntur Preces sequentes, at verò si Preces feriales dictæ non fuerunt, statim dicitur*, ℣. Adjutórium, *ut infrà.*

℣. E'ripe me, Dómine, ab hómine malo, ℟. A viro iníquo éripe me. *Ps.* 139. 2.

℣. E'ripe me de inimícis meis, Deus meus: ℟. Et ab insurgéntibus in me líbera me. *Psal.* 58. 2.

℣. E'ripe me de operántibus iniquitátem. ℟. Et de viris sánguinum salva me. *Ibidem.* 3.

℣. Sic Psalmum dicam nómini tuo in séculum séculi; ℟. Ut reddam vota mea de die in diem. *Psal.* 60. 9.

℣. Exáudi nos, Deus salutáris noster; ℟. Spes ómnium fínium terræ, & in mari longè. *Psal.* 64. 6.

℣. Deus in adjutórium meum inténde. ℟. Dómine, ad adjuvándum me festína. *Psal.* 69. 2.

℣. Deus sanctus, Deus fortis, Deus immortális. ℟. Miserére nobis. *Eccli.* 46. 6. *Esth.* 14. 19: 1. *Timoth.* 1. 17. *Tob.* 8. 10.

℣. Bénedic, ánima mea, Dómino. ℟. Et ómnia quæ intra me sunt nómini sancto ejus. *Psal.* 102. 1.

℣. Bénedic, ánima mea, Dómino. ℟. Et noli oblivísci omnes retributiónes ejus. *Ibidem.* 2.

℣. Qui propitiátur ómnibus iniquitátibus tuis; ℟. Qui sanat omnes infirmitátes tuas. *Ibidem.* 3.

℣. Qui rédimit de intéritu vitam tuam; ℟. Qui corónat te in misericórdia, & miseratiónibus. *Ibidem.* 4.

℣. Adjutórium nostrum in nómine Dómini. ℟. Qui fecit cœlum & terram. *Ps.* 123. 8.

*Deinde Hebdomadarius facit Confessionem, mediocri voce dicens:*

COnfíteor Deo omnipoténti, beátæ Maríæ semper vírgini, beáto Michaéli archángelo, beáto Joánni-Baptístæ, sanctis Apóstolis Petro & Paulo, ómnibus Sanctis, (& vobis fratres;) quia peccávi nimis cogitatióne, verbo, & ópere; meâ culpâ, meâ culpâ, meâ máximâ culpâ. I'deò precor beá-

tam Maríam semper vírginem, beátum Michaélem archángelum, beátum Joánnem-Baptístam, sanctos Apóstolos Petrum & Paulum, omnes Sanctos, (& vos fratres,) oráre pro me ad Dóminum Deum nostrum.

*Chorus respondet*,

Misereátur tui omnípotens Deus, & dimíssis peccátis tuis, perdúcat te ad vitam ætérnam.

*Hebdomadarius dicit:* Amen.

*Deinde Chorus repetit Confessionem; & ubi dictum est*, vobis fratres, *&* vos fratres; *dicit*, tibi pater, *&* te pater.

*Factâ Confessione à Choro, Hebdomadarius dicit:*

Misereátur vestri omnípotens Deus, & dimíssis peccátis vestris, perdúcat vos ad vitam ætérnam.

℟. Amen.

*Qui solus recitat, semel dicit* Confíteor, *ut suprà, omissis vocibus quæ clauduntur parenthesi; Et semel* Misereátur nostri, &c.

Indulgéntiam, absolutiónem, & remissiónem peccatórum nostrórum tríbuat nobis omnípotens & miséricors Dóminus. ℟. Amen.

℣. Dignáre, Dómine, die isto. ℟. Sine peccáto nos custodíre.

℣. Miserére nostri, Dómine, ℟. Miserére nostri. *Psal.* 122. 3.

℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos: ℟. Quemádmodum sperávimus in te. *Psal.* 32. 22.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam: ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Psal.* 101. 1.

℣. Dóminus vobíscum,

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

Dómine Deus omnípotens, qui ad princípium hujus diéi nos perveníre fecísti, tuâ nos hódiè salva virtúte: ut in hac die ad nullum declinémus peccátum, sed semper ad tuam justítiam faciéndam nostra procédant elóquia, dirigántur cogitatiónes & ópera; Per Dóminum nostrum Jesum Christum fílium tuum, qui tecum vivit & regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

℣. Dóminus vobíscum.

℟. Et cum spíritu tuo.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

*Deinde Martyrologium legitur in Choro, in Metropolitana verò in Capitulo, attamen ubi dicitur parvum Officium, Prima de B. Maria, præponitur lectioni Martyrologii.*

*Posteà Hebdomadarius dicit*,

℣. Pretiósa in conspéctu Dómini, ℟. Mors Sanctórum ejus. *Ps.* 115. 5.

*Et absolutè sine Oremus.*

*Oratio.*

Sancta María, & omnes Sancti intercédant pro nobis ad Dóminum; ut nos mereámur ab eo adjuvári, & salvári qui vivit & regnat in sǽcula sæculórum. ℟. Amen.

[*Si sit Festum in Populo, statim post Orationem*, Sancta María, & omnes Sancti, &c. *fit lectio Canonum.*]

℣. Deus in adjutórium meum inténde, ℟. Dómine, ad adjuvándum me festína, *& dicitur ter, ultimo additur*, Glória Patri, &c.

Kýrie eléïson, Christe eléïson, Kýrie eléïson.

Pater noster, *secretò usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem. ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Réspice in servos tuos, Dómine, & in ópera tua, & dírige fílios eórum.

℟. Et sit splendor Dómini Dei nostri super nos, & ópera mánuum nostrárum dírige super nos, & opus mánuum nostrárum dírige. *Ps.* 89. 16. 17.

Glória Patri & Fílio, & Spirítui sancto: sicut erat in princípio, & nunc, & semper, & in sǽcula sæculórum. Amen.

Orémus. *Oratio.*

Dírigere & sanctificáre, régere & gubernáre dignáre, Dómine Deus, Rex cœli & terræ, hódiè corda & córpora nostra, sensus, sermónes, & actus nostros in lege tua, & in opéribus mandatórum tuórum: ut hic & in ætérnum, te auxiliánte, salvi & líberi esse mereámur Salvátor mundi, qui vivis & regnas in sǽcula sæculórum. ℟. Amen.

*Hìc addatur Lectio Canonum juxta ordinem in Proprio de Tempore notatum, quæ sic finietur*, Tu autem, Dómine, miserére nostri.

*Hebdomadarius dicit*,

℣. Adjutórium nostrum in nómine Dómini,

℟. Qui fecit cœlum & terram. *Psal.* 123. 8.

℣. Benedícite, ℟. Deus.

℣. Dóminus nos benedícat, & ab omni malo defèndat, & ad vitam perdúcat ætérnam. ℟. Amen.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

## AD TERTIAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium, *ut suprà.*

*Per Annum. Hymnus.*

Nunc sancte nobis Spíritus,

Unum Patri cum Fílio,
Dignáre promptus íngeri
Nostro refúsus péctori.
Os, lingua, mens, sensus, vigor,
Confessiónem pérsonent;
Flamméscat igne cháritas,
Accéndat ardor próximos.
Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum*, *Ant.* 2. d. Tóllite.

*Psalmus* 19.

EXáudiat te Dóminus in díe tribulatiónis; * prótegat te nomen Dei Jacob.

Mittat tibi auxílium de sancto, * & de Sion tueátur te.

Memor sit omnis sacrifícii tui, * & holocáustum tuum pingue fiat.

Tríbuat tibi secúndùm cor tuum, * & omne consílium tuum confírmet.

Lætábimur in salutári tuo, * & in nómine Dei nostri magnificábimur.

Ímpleat Dóminus omnes petitiónes tuas; * nunc cognóvi quóniam salvum fecit Dóminus christum suum.

Exáudiet illum de cœlo sancto suo: * in potentátibus salus déxteræ ejus.

Hi in cúrribus, & hi in equis; * nos autem in nómine Dómini Dei nostri invocábimus.

Ipsi obligáti sunt, & cecidérunt; * nos autem surréximus & erécti sumus.

Dómine, salvum fac regem; * & exáudi nos in die, quâ invocavérimus te.

*Psalmus* 42.

JU'dica me Deus, & discérne causam meam de gente non sancta, * ab hómine iníquo & dolóso érue me,

Quia tu es, Deus, fortitúdo mea: * quare me repulísti? & quare tristis incédo, dùm afflígit me inimícus?

Emítte lucem tuam & veritátem tuam: * ipsa me deduxérunt, & adduxérunt in montem sanctum tuum, & in tabernácula tua.

Et introíbo ad altáre Dei, * ad Deum, qui lætíficat juventútem meam.

Confitébor tibi in cíthara, Deus, Deus meus: * quare tristis es, ánima mea, & quare contúrbas me?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi; * salutáre vultûs mei, & Deus meus.

*Psalmus* 95.

CAntáte Dómino cánticum novum, * cantáte Dómino, omnis terra.

Cantáte Dómino, & benedícite nómini ejus, * annun-

niáte de die in diem salutáre ejus.

Annuntiáte inter Gentes glóriam ejus, * in ómnibus pópulis mirabília ejus.

Quóniam magnus Dóminus, & laudábilis nimis; * terríbilis est super omnes deos.

Quóniam omnes dii géntium dæmónia: * Dóminus autem cœlos fecit.

Conféssio & pulchritúdo in conspéctu ejus, * sanctimónia & magnificéntia in sanctificatióne ejus.

Afférte Dómino pátriæ Géntium, afférte Dómino glóriam & honórem, * afférte Dómino glóriam nómini ejus.

Tóllite hóstias, & introíte in átria ejus, * adoráte Dóminum in átrio sancto ejus.

Commoveátur à fácie ejus univérsa terra: * dícite in Géntibus, quia Dóminus regnávit.

E'tenim corréxit orbem terræ, qui non commovébitur; * judicábit pópulos in æquitáte.

Læténtur cœli, & exúltet terra, commoveátur mare, & plenitúdo ejus; * gaudébunt campi, & ómnia quæ in eis sunt.

Tunc exultábunt ómnia ligna silvárum à fácie Dómini, quia venit; * quóniam venit judicáre terram.

Judicábit orbem terræ in æquitáte, * & pópulos in veritáte sua.

*Ant.* Tóllite hóstias, & introíte in átria ejus, adoráte Dóminum in átrio sancto ejus. *Psal.* 95. 8.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Joan.* 4. 9.

IN hoc appáruit cháritas Dei in nobis, quóniam Fílium suum unigénitum misit Deus in mundum, ut vivámus per eum.

℟. *br.* Ego dixi, * Dómine, miserére mei; *Repet.* Ego dixi; * Dómine, miserére mei, ℣. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi. * Dómine, miserére mei. ℣. Glória Patri. *Repetitur*, Ego dixi. *Psal.* 40. 5.

℣. Adjútor meus esto, ne derelínquas me; ℟. Neque despícias me, Deus salutáris meus. *Psal.* 26. 9.

*Quando ad Laudes dictæ sunt Preces tunc ad Tertiam Sextam, & Nonam dicuntur flexis genibus & medocri voce Preces sequentes.*

Kýrie eléïson, Christe eléïson, Kýrie eléïson.

Pater noster, &c. *secretò usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem. ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Dómine Deus virtútum, convérte nos; ℟. Et osténde fáciem tuam, & salvi érimus. *Psal.* 79. 20.

℣. Exúrge, Dómine, ádjuva nos; ℟. Et rédime nos propter nomen tuum. *Psal.* 43. 26.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 1.

℣. Dóminus vobíscum.

℟. Et cum spíritu tuo.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD SEXTAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium, &c.

*Per Annum. Hymnus.*

RECTOR potens, verax Deus,
Qui témperas rerum vices;
Splendóre manè illúminas,
Et ígnibus merídiem.

EXTINGUE flammas lítium,
Aufer calórem nóxium,
Confer salútem córporum,
Verámque pacem córdium.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum, Ant.* 2. d. Exáudi.

*Psalmus* 20.

DÓmine in virtúte tua lætábitur rex; * & super salutáre tuum exultábit veheménter.

Desidérium cordis ejus tribuísti ei, * & voluntáte labiórum ejus non fraudásti eum.

Quóniam prævenísti eum in benedictiónibus dulcédinis; * posuísti in cápite ejus corónam de lápide pretióso.

Vitam pétiit à te; * & tribuísti ei longitúdinem diérum in séculum, & in séculum séculi.

Magna est glória ejus in salutári tuo; * glóriam & magnum decórem impónes super eum.

Quóniam dábis eum in benedictiónem in séculum séculi; * lætificábis eum in gáudio cum vultu tuo.

Quóniam rex sperat in Dómino, * & in misericórdia Altíssimi non commovébitur.

Inveniátur manus tua ómnibus inimícis tuis: * déxtera tua invéniat omnes, qui te odérunt.

Pones eos ut clíbanum ignis in témpore vultûs tui: * Dóminus in ira sua conturbábit eos, & devorábit eos ignis.

Fructum eórum de terra perdes, * & semen eórum à fíliis hóminum.

Quóniam declinavérunt in te mala; * cogitavérunt consília, quæ non potuérunt stabilíre.

Quóniam pones eos dorsum: * in relíquiis tuis præparábis vultum eórum.

Exaltáre, Dómine, in virtúte tua: * cantábimus & psallémus virtútes tuas.

*Psalmus* 26.

DO'minus illuminátio mea, & salus mea, * quem timébo?

Dóminus protéctor vitæ meæ, * à quo trepidábo?

Dùm appropiant super me nocéntes, * ut edant carnes meas.

Qui tríbulant me inimíci mei, * ipsi infirmáti sunt, & cecidérunt.

Si consístant advérsùm me castra, * non timébit cor meum.

Si exúrgat advérsùm me prælium, * in hoc ego sperábo.

Unam pétii à Dómino, hanc requíram, * ut inhábitem in domo Dómini ómnibus diébus vitæ meæ:

Ut vídeam voluptátem Dómini, * & vísitem templum ejus.

Quóniam abscóndit me in tabernáculo suo: * in die malórum protéxit me in abscóndito tabernáculi sui.

In petra exaltávit me, * & nunc exaltávit caput meum super inimícos meos.

Circuívi, & immolávi in tabernáculo ejus hóstiam vociferatiónis: * cantábo, & psalmum dicam Dómino.

*Divisio Psalmi* 26.

EXáudi, Dómine, vocem meam, quâ clamávi ad te: * miserére mei, & exáudi me.

Tibi dixit cor meum, exquisívit te fácies mea: * fáciem tuam, Dómine, requíram.

Ne avértas fáciem tuam à me; * ne declínes in ira à servo tuo.

Adjútor meus esto, ne derelínquas me, * neque despícias me, Deus salutáris meus.

Quóniam pater meus & mater mea dereliquérunt me; * Dóminus autem assúmpsit me.

Legem pone mihi, Dómine, in via tua, * & dírige me in sémitam rectam propter inimícos meos.

Ne tradíderis me in ánimas tribulántium me; * quóniam insurrexérunt in me testes iníqui, & mentíta est iníquitas sibi.

Credo vidére bona Dómini, * in terra vivéntium.

Expécta Dóminum, viríliter age, & confortétur cor tuum, * & sústine Dóminum.

*Ant.* Exáudi, Dómine, vocem meam, quâ clamávi ad te. *v.* 7.

*Per Annum*, *Capitulum.* I. *Joan.* 3. I.

VIdéte qualem charitátem dedit nobis Pater,

ut filii Dei nominémur & simus.

℟. *br.* Benedícam Dóminum * In omni témpore. *Repetitur*, Benedícam Dóminum * In omni témpore. ℣. Semper laus ejus in ore meo. * In omni témpore. ℣. Glória. *Repetitur*, Benedícam. *Psal.* 33. 2.

℣. Laudábo Dóminum in vita mea, ℟. Psallam Deo meo quándiù fúero. *Psal.* 145. 2.

*Preces, si dicendæ sint, habentur suprà ad Tertiam.* *pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD NONAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium.

*Per Annum. Hymnus.*

RErum, Deus, tenax vigor,
Immótus in te pérmanens,
Lucis diúrnæ témpora
Succéssibus detérminans:

Largíre lucem véspere,
Quæ corda nusquam déserat;
Sed præmium mortis sacræ
Perénnis instet glória.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum, Ant.* 4. *ir-reg.* c. Deus.

*Psalmus* 52.

DIxit insípiens in corde suo: * Non est Deus.

Corrúpti sunt, & abominábiles facti sunt in iniquitátibus: * non est qui fáciat bonum.

Deus de cœlo prospéxit super fílios hóminum, * ut vídeat si est intélligens, aut requírens Deum.

Omnes declinavérunt, simul inútiles facti sunt: * non est qui fáciat bonum, non est usque ad unum.

Nonne scient omnes, qui operántur iniquitátem, * qui dévorant plebem meam ut cibum panis?

Deum non invocavérunt: * illic trepidavérunt timóre, ubi non erat timor.

Quóniam Deus dissipávit ossa eórum, qui homínibus placent: * confúsi sunt, quóniam Deus sprevit eos.

Quis dabit ex Sion salutáre Iſraël? * cùm convérterit Deus captivitátem plebis suæ, exultábit Jacob, & lætábitur Iſraël.

*Psalmus* 72.

QUàm bonus Iſraël Deus, * his qui recto sunt corde!

Mei autem penè moti sunt pedes: * penè effúsi sunt gressus mei.

Quia zelávi super iníquos, * pacem peccatórum videns;

Quia non est respéctus morti eórum, * & firmaméntum in plaga eórum.

In labóre hóminum non sunt, * & cum homínibus non flagellabúntur.

I'deò ténuit eos supérbia, * opérti sunt iniquitáte & impietáte suâ.

Pródiit quasi ex ádipe iníquitas eórum : * transiérunt in afféctum cordis.

Cogitavérunt, & locúti sunt nequítiam : * iniquitátem in excélso locúti sunt.

Posuérunt in cœlum os suum ; * & lingua eórum transívit in terra.

I'deò convertétur pópulus meus hìc ; * & dies pleni inveniéntur in eis.

Et dixérunt : Quómodo scit Deus, * & si est sciéntia in Excélso ?

Ecce ipsi peccatóres, & abundántes in século, * obtinuérunt divítias.

Et dixi : Ergò sine causa justificávi cor meum, * & lavi inter innocéntes manus meas ;

Et fui flagellátus totâ die, * & castigátio mea in matutínis.

Si dicébam: Narrábo sic, * ecce natiónem filiórum tuórum reprobávi.

Existimábam ut cognóscerem hoc, * labor est ante me.

Donec intrem in sanctuárium Dei, * & intélligam in in novíssimis eórum.

Verúntamen propter dolos posuísti eis ; * dejecísti eos dùm allevaréntur.

Quómodo facti sunt in desolatiónem, súbitò defecérunt ? * periérunt propter iniquitátem suam.

Velut sómnium surgéntium, Dómine, * in civitáte tua imáginem ipsórum ad níhilum rédiges.

Quia inflammátum est cor meum, & renes mei commutáti sunt ; * & ego ad níhilùm redáctus sum, & nescívi.

Ut juméntum factus sum apud te, * & ego semper tecum.

*Divisio Psalmi 72.*

TEnuísti manum déxteram meam, & in voluntáte tua deduxísti me, * & cum glória suscepísti me.

Quid enim mihi est in cœlo ? * & à te quid vólui super terram ?

Defécit caro mea, & cor meum : * Deus cordis mei ; & pars mea Deus in ætérnum.

Quia ecce, qui elóngant se à te, períbunt : * perdidísti omnes, qui fornicántur abs te.

Mihi autem adhærére Deo bonum est, * pónere in Dómino Deo spem meam ;

Ut annúntiem omnes præ-

dicatiónes tuas, * in portis fíliæ Sion.

*Ant.* Deus cordis mei, & pars mea Deus in ætérnum.

*Per Annum, Capitulum. Rom.* 5. 8. 9.

COmméndat charitátem suam Deus in nobis, quóniam cùm adhuc peccatóres essémus, secúndùm tempus Christus pro nobis mórtuus est.

℞. *br.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine, *Repet.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine. ℣. Et ab aliénis parce servo tuo. * Munda me, Dómine. ℣. Glória Patri. *Repet.* Ab occúltis. *Ps.* 18. 13. 14.

℣. Pérfice gressus meos in sémitis tuis, ℞. Ut non moveántur vestígia mea. *Ps.*16.5.

*Preces si dicendæ sint, habentur suprà ad Tertiam.*

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

AD VESPERAS.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium.

*Per Annum, Ant.* 1. d. Convértere.

*Psalmus* 114.

DIléxi, quóniam exáudiet Dóminus * vocem oratiónis meæ.

Quia inclinávit aurem suam mihi; * & in diébus meis invocábo.

Circumdedérunt me dolóres mortis; * & perícula inférni invenérunt me.

Tribulatiónem & dolórem invéni, * & nomen Dómini invocávi.

O Dómine, líbera ánimam meam: * misericors Dóminus, & justus, & Deus noster miserétur.

Custódiens párvulos Dóminus; * humiliátus sum, & liberávit me.

Convértere, ánima mea, in réquiem tuam; * quia Dóminus benefécit tibi.

Quia erípuit ánimam meam de morte, * óculos meos à lácrymis, pedes meos à lapsu.

Placébo Dómino * in regióne vivórum.

*Ant.* Convértere, ánima mea, in réquiem tuam, quia Dóminus benefécit tibi. *v.* 7.

*Ant.* 2. f. Quid retríbuam.

*Psalmus* 115.

CRédidi, propter quod locútus sum: * ego autem humiliátus sum nimis.

Ego dixi in excéssu meo: * Omnis homo mendax.

Quid retríbuam Dómino, * pro ómnibus quæ retríbuit mihi?

Cálicem salutáris accípiam; * & nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam coram omni pópulo

ejus: * pretiósa in conspéctu Dómini mors sanctórum ejus.

O Dómine, quia ego servus tuus, * ego servus tuus, & fílius ancíllæ tuæ.

Dirupísti víncula mea; * tibi sacrificábo hóstiam laudis, & nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam in conspéctu omnis pópuli ejus, * in átriis domûs Dómini, in médio tui Jerúsalem.

*Ant.* Quid retríbuam Dómino pro ómnibus, quæ retríbuit mihi? *v.* 3.

*Ant.* 3. c. Ad Dóminum.

*Psalmus* 119.

AD Dóminum cùm tribulárer clamávi, * & exaudívit me.

Dómine, líbera ánimam meam à lábiis iníquis, * & à lingua dolósa.

Quid detur tibi, aut quid apponátur tibi * ad linguam dolósam?

Sagíttæ poténtis acútæ, * cum carbónibus desolatóriis.

Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est: habitávi cum habitántibus Cedar; * multùm íncola fuit ánima mea.

Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus; * cùm loquébar illis, impugnábant me gratis.

*Ant.* Ad Dóminum cùm tribulárer clamávi, & exaudívit me. *v.* 1.

*Ant.* f. 2. Auxílium.

*Psalmus* 120.

LEvávi óculos meos in montes, * unde véniet auxílium mihi.

Auxílium meum à Dómino, * qui fecit cœlum & terram.

Non det in commotiónem pedem tuum; * neque dormítet qui custódit te.

Ecce non dormitábit, neque dórmiet, * qui custódit Israël.

Dóminus custódit te, Dóminus protéctio tua * super manum déxteram tuam.

Per diem sol non uret te, * neque luna per noctem.

Dóminus custódit te ab omni malo; * custódiat ánimam tuam Dóminus.

Dóminus custódiat introítum tuum, & éxitum tuum; * ex hoc nunc, & usque in séculum.

*Ant.* Auxílium meum à Dómino, qui fecit cœlum & terram. *v.* 2.

*Ant.* 5. a. In domum.

*Psalmus* 121.

LÆtátus sum in his, quæ dicta sunt mihi: * in domum Dómini íbimus.

Stantes erant pedes nostri * in átriis tuis Jerúsalem.

Jerúsalem, quæ ædificátur

ut civitas; * cujus participátio ejus in idipsum.

Illuc enim ascendérunt tribus, tribus Dómini, testimónium Israël, * ad confiténdum nómini Dómini.

Quia illic sedérunt sedes in judício, * sedes super domum David.

Rogáte quæ ad pacem sunt Jerúsalem; * & abundántia diligéntibus te.

Fiat pax in virtúte tua, * & abundántia in túrribus tuis.

Propter fratres meos, & próximos meos, * loquébar pacem de te.

Propter domum Dómini Dei nostri, * quæsívi bona tibi.

*Ant.* In domum Dómini íbimus. *v.* 1.

*Per Annum, Capitulum.* 2. *Thessal.* 2. 15. 16.

DOminus noster Jesus Christus, & Deus, & Pater noster, qui diléxit nos, & dedit consolatiónem ætérnam, & spem bonam in grátia, exhortétur corda vestra, & confírmet in omni ópere & sermóne bono.

*Per Annum. Hymnus.*

SI spléndidis colóribus,
Sublíme cœlum píngitur:
Manu perítâ, vívidos,
Deus, colóres ímprimis.

QUANTA refúlges glóriâ!
Nimbis thronus stat péndulis:
Supérque ventórum leves
Pennas, triúmphans ámbulas.

VERBO magístro, vítreos
Impónis undæ límites;
Et quò jubes, fert cóncito
Imbres procélla vórtice.

TIBI rebélles, Cónditor,
Metu salúbri cóncute;
Et súbditos non désine
Mollíre rore grátiæ.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. In Deo laudábimur totâ die: ℟. Et in nómine tuo confitébimur in séculum. *Psal.* 43. 9.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g.
Magníficat ánima mea Dóminum. *Luc.* 1. 46.

*Preces si dicendæ sint, habentur suprà pag. 46.*

SUFFRAGIA AD VESPERAS

*Dicuntur in Festis Semiduplicibus, Simplicibus & Feriis extra Adventum, tempus Passionis & tempus Paschale.*

*Commemoratio de sancta Cruce in Officio Feriali tantùm.*

*Ant.* Mihi absit gloriári nisi in Cruce Dómini nostri Jesu Christi. *Gal.* 6. 14.

℣. Omnis terra adóret te, & psallat tibi; ℟. Psalmum dicat nómini tuo. *Ps.* 65. 4.

Orémus. *Oratio.*

PErpétuâ nos, quæsumus, Dómine, pace custódi, quos per lignum sanctæ Crucis redímere dignátus es, qui vivis & regnas Deus, per ómnia sécula seculórum.

℟. Amen.

*De Sancta Maria.*

*Per Annum, Ant.* Beátam me dicent omnes generatiónes, quia fecit mihi magna, qui potens est. *Luc.* 1. 48. 49.

℣. Sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus, ℟. Deus in médio ejus. *Psal.* 45. *v.* 5. 6.

Orémus. *Oratio.*

COncéde nos fámulos tuos, quæsumus, Dómine Deus, perpétuâ mentis & córporis sanitáte gaudére; & gloriósâ beátæ Maríæ semper vírginis intercessióne à præsénti liberári tristítia, & ætérnâ pérfrui lætítiâ. Per Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

*De sanctis Nicasio, Mellono & aliis sanctis Pontificibus Ecclesiæ Rothomagensis.*

*Ant.* Hi sunt ante thronum Dei, & sérviunt ei die ac nocte in templo ejus: & qui sedet in throno, habitábit super illos. *Apoc.* 7. 15.

℣. Exultábunt Sancti in glória, ℟. Lætabúntur in cubílibus suis. *Ps.* 149. 5.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui nobis sanctos Nicásium, Mellónum, Victrícium, Románum, & álios beátos Pontífices quos Rothomagénsis venerátur Ecclésia, præfícere dignátus es, da, ipsis intercedéntibus, ut, eórum salutáribus mónitis informáti, ad te, qui via, véritas, & vita es, secúri perveníre valeámus, Qui vivis & regnas in sécula seculórum. ℟. Amen.

*De Patrono vel Titulari Ecclesiæ fiat Commemoratio consueta ante vel post Commemorationes prædictas, pro dignitate illius, & ultimo loco de Pace.*

*De Pace.*

*Ant.* Deus ómnium, qui fecit nobíscum secúndùm suam misericórdiam, det nobis jucunditátem cordis & fieri pacem in diébus nostris. *Eccli.* 50. 24. 25.

℣. Fiat pax in virtúte tua, ℟. Et abundántia in túrribus tuis. *Psal.* 121. 7.

Orémus. *Oratio.*

DEus à quo sancta desidéria, recta consília & justa sunt ópera; da servis tuis illam, quam mundus dare non potest, pacem; ut & corda nostra mandátis tuis dédita, & hóstium subláta formídine, témpora sint tua protectióne tranquílla. Per Dóminum, &c.

℣. Bene-

℣. Benedicámus Dómino.
℟. Deo grátias.

## AD COMPLETORIUM.

℣. Convérte nos, Deus salutáris noster; ℟. Et avérte iram tuam à nobis. *Ps.* 84. 5.

Deus in adjutórium, &c.

*Per Annum*, *Ant.* 8. g. Salvum.

*Psalmus 6.*

DO'mine, ne in furóre tuo árguas me; * neque in ira tua corrípias me.

Miserére mei, Dómine, quóniam infirmus sum: * sana me, Dómine, quóniam conturbáta sunt ossa mea.

Et ánima mea turbáta est valdè: * sed tu, Dómine, úsquequò?

Convértere, Dómine, & éripe ánimam meam: * salvum me fac propter misericórdiam tuam.

Quóniam non est in morte qui memor sit tui: * in inférno autem quis confitébitur tibi?

Laborávi in gémitu meo, lavábo per síngulas noctes lectum meum; * lácrymis meis stratum meum rigábo.

Turbátus est à furóre óculus meus; * inveterávi inter omnes inimícos meos.

Discédite à me omnes, qui operámini iniquitátem; * quóniam exaudívit Dóminus vocem fletûs mei.

Exaudívit Dóminus deprecatiónem meam; * Dóminus oratiónem meam suscépit.

Erubéscant & conturbéntur veheménter omnes inimíci mei: * convertántur & erubéscant valdè velóciter.

*Pars Vernalis.*

*Psalmus 7.*

DO'mine Deus meus, in te sperávi; * salvum me fac ex ómnibus persequéntibus me, & líbera me.

Nequándo rápiat ut leo ánimam meam, * dùm non est qui rédimat, neque qui salvum fáciat.

Dómine Deus meus, si feci istud, * si est iníquitas in mánibus meis:

Si réddidi retribuéntibus mihi mala, * décidam méritò ab inimícis meis inánis.

Persequátur inimícus ánimam meam, & comprehéndat, & concúlcet in terra vitam meam, * & glóriam meam in púlverem dedúcat.

Exúrge, Dómine, in ira tua, * & exaltáre in fínibus inimicórum meórum.

Et exúrge, Dómine Deus meus, in præcépto quod mandásti, * & synagóga populórum circúndabit te.

Et propter hanc * in altum regrédere:

Dóminus júdicat pópulos. * Júdica me, Dómine, secúndùm justítiam meam, & se-

cúndùm innocéntiam meam super me.

Consumétur nequítia peccatórum, & díriges justum,* scrutans corda & renes Deus.

Justum adjutórium meum à Dómino, * qui salvos facit rectos corde.

*Divisio Psalmi 7.*

DEus judex justus, fortis & pátiens, * nunquid iráscitur per singulos dies?

Nisi convérsi fuéritis, gládium suum vibrábit: * arcum suum teténdit, & parávit illum.

Et in eo parávit vasa mortis, * sagíttas suas ardéntibus effécit.

Ecce partúriit injustítiam, concépit dolórem, * & péperit iniquitátem.

Lacum apéruit, & effódit eum; * & incidit in fóveam quam fecit.

Convertétur dolor ejus in caput ejus; * & in vérticem ipsius iníquitas ejus descéndet.

Confitébor Dómino secúndùm justítiam ejus; * & psallam nómini Dómini altíssimi.

*Ant.* Salvum me fac, Dómine, propter misericórdiam tuam. *Psal.* 6. 5.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Pet.* 5. 8.

SO'brii estóte, & vigiláte; quia adversárius vester diábolus tanquam leo rúgiens circuit quærens quem dévoret, cui resístite fortes in fide.

*Per Annum, in Festis Simplicibus & Feriis, Hymnus.*

TE lucis ante términum,
Rerum Creátor, póscimus,
Ut pro tua cleméntia
Hac nocte nos custódias.

PROCUL recédant sómnia,
Et nóctium phantásmata,
Hostémque nostrum cómprime,
Ut casta surgant córpora.

NOCTU'RNA per siléntia,
Sit laus Patri, laus Fílio,
Qui nostra pax es, & quies
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Custódi me, Dómine, ut pupíllam óculi, ℟. Sub umbra alárum tuárum prótege me. *Ps.* 16. 8.

*Per Annum, Ant.* 6. F. In manus tuas.

*Canticum Simeonis. Luc.* 2. 29.

NUnc dimíttis servum tuum, Dómine, * secúndùm verbum tuum in pace.

Quia vidérunt óculi mei * salutáre tuum.

Quod paráſti * ante fáciem ómnium populórum.

Lumen ad revelatiónem Géntium, * & glóriam plebis tuæ I'sraël.

*Ant.* In manus tuas comméndo spíritum meum; rede-

misisti me, Dómine Deus veritátis. *Psal.* 30. 6.

*In Simplicibus & Feriis dicuntur Preces sequentes, & flexis genibus dicuntur, cum in Laudibus dictæ fuerunt Preces feriales.*

PRECES.

Kýrie eléïson, Christe eléïson, Kýrie eléïson.

Pater noster, *secretò usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem. ℟. Sed líbera nos à malo.

Credo in Deum, *secretò usque ad* ℣. Carnis resurrectiónem. ℟. Vitam ætérnam. Amen.

℣. Benedíctus es, Dómine Deus patrum nostrórum; ℟. Et laudábilis, & gloriósus, & superexaltátus in sǽcula. *Dan.* 3. 52.

℣. Benedíctum nomen glóriæ tuæ sanctum; ℟. Et laudábile, & superexaltátum in ómnibus sǽculis. *Dan.* 3. 52.

℣. Benedíctus es in firmaménto cœli; ℟. Et laudábilis, & gloriósus in sǽcula. *Dan.* 3. 56.

℣. Benedícat nos Deus, Deus noster, ℟. Benedícat nos Deus. *Psal.* 66. 7. 8.

*Deinde Hebdomadarius facit Confessionem, mediocri voce dicens,*

Confíteor Deo omnipoténti, beátæ Maríæ semper vírgini, beáto Michaéli archángelo, beáto Joánni-Baptístæ, sanctis Apóstolis Petro & Paulo, ómnibus Sanctis, (& vobis fratres;) quia peccávi nimis cogitatióne, verbo, & ópere; meâ culpâ, meâ culpâ, meâ máximâ culpâ. Ideò precor beátam Maríam semper vírginem, beátum Michaélem archángelum, beátum Joánnem-Baptístam, sanctos Apóstolos Petrum & Paulum, omnes Sanctos, (& vos fratres,) oráre pro me ad Dóminum Deum nostrum.

*Chorus respondet,*

Misereátur tui omnípotens Deus, & dimíssis peccátis tuis, perdúcat te ad vitam ætérnam. *Hebdomadarius dicit,* Amen.

*Deinde Chorus repetit Confessionem; & ubi dictum est, vobis fratres, & vos fratres; dicit, tibi pater, & te pater.*

*Factâ Confessione à Choro, Hebdomadarius dicit,*

Misereátur vestri omnípotens Deus, & dimíssis peccátis vestris, perdúcat vos ad vitam ætérnam.

℟. Amen.

*Qui solus recitat, semel dicit* Confíteor, *ut suprà, omissis vocibus quæ clauduntur parenthesi; & semel,* Misereátur nostri omnípotens Deus, &c.

INdulgéntiam, absolutiónem, & remissiónem peccatórum nostrórum tribuat nobis omnípotens & miséricors Dóminus. ℟. Amen.

℣. Dignáre, Dómine, nocte istâ, ℟. Sine peccáto nos custodíre.

℣. Miserére nostri, Dómine; ℟. Miserére nostri. *Psal.* 122. 3.

℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos: ℟. Quemádmodum sperávimus in te. *Ps.* 32. 22.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam: ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

℣. Dóminus vobíscum.

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

VIsita, quǽsumus, Dómine, habitatiónem nostram, & omnes insídias inimíci ab ea longè repélle; Angeli tui sancti hábitent in ea, qui nos in pace custódiant, & benedíctio tua sit super nos semper. Per Dóminum nostrum, &c.

℟. Amen.

℣. Dóminus vobíscum.

℟. Et cum spíritu tuo.

℣. Benedicámus Dómino.

℟. Deo grátias.

℣. Benedícat & custódiat nos omnípotens & miséricors Dóminus Pater, & Fílius, & Spíritus sanctus. ℟. Amen.

## FERIA TERTIA AD OFFICIUM NOCTURNUM.

Pater. Ave. Credo.

Dómine lábia mea apéries, *ut suprà, pag.* 1.

Deus in adjutórium meum inténde, &c.

*Per Annum, Invitatorium.*

Præoccupémus fáciem Dómini in confessióne, & * in psalmis jubilémus ei. *Ps.* 94. 2.

*Psalmus*, Veníte, &c. *ut suprà pag.* 2.

*Per Annum. Hymnus.*

CAndor Patérni lúminis
Lux ipse lucis, & dies,
Noctem canéndo rúmpimus:
Assíste postulántibus.

Aufer tenébras méntium,
Fuga catérvas dæmonum:
Expélle somnoléntiam,
Ne pigritántes óbruat.

Sic, Christe, nobis ómnibus
Indúlgeas credéntibus,
Ut prosit exorántibus,
Quod præcinéntes psállimus.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

## IN I. NOCTURNO.

*Per Annum, Ant.* 3. c. Dómine.

*Psalmus* 8.

DOmine Dóminus noster, * quàm admirábile est nomen tuum in univérsa terra!

Quóniam eleváta est magnificéntia tua * super cœlos.

Ex ore infántium & lacténtium perfecísti laudem propter inimícos tuos, * ut déstruás inimícum & ultórem.

Quóniam vidébo cœlos tuos, ópera digitórum tuórum; * lunam & stellas, quæ tu fundásti.

Quid est homo, quòd memor es ejus? * aut fílius hóminis, quóniam vísitas eum?

Minuísti eum paulò minùs ab A'ngelis, glóriâ & honóre coronásti eum: * & constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

O'mnia subjecísti sub pédibus ejus, * oves & boves univérsas, ínsuper & pécora campi;

Vólucres cœli, & pisces maris, * qui perámbulant sémitas maris.

Dómine Dóminus noster, * quàm admirábile est nomen tuum in univérsa terra!

*Psalmus* 18.

COEli enárrant glóriam Dei, * & ópera mánuum ejus annúntiat firmaméntum.

Dies diéi erúctat verbum, * & nox nocti índicat sciéntiam.

Non sunt loquélæ, neque sermónes, * quórum non audiántur voces eórum.

In omnem terram exívit sonus eórum, * & in fines orbis terræ verba eórum.

In sole pósuit tabernáculum suum; * & ipse tanquam sponsus procédens de thálamo suo:

Exultávit ut gigas ad curréndam viam; * à summo cœlo egréssio ejus.

Et occúrsus ejus usque ad summum ejus; * nec est qui se abscóndat à calóre ejus.

*Divisio Psalmi* 18.

LEx Dómini immaculáta, convértens ánimas: * testimónium Dómini fidéle, sapiéntiam præstans párvulis.

Justítiæ Dómini rectæ, lætificántes corda: * præcéptum Dómini lúcidum, illúminans óculos.

Timor Dómini sanctus, pérmanens in séculum séculi: * judícia Dómini vera, justificáta in semetípsa.

Desiderabília super aurum & lápidem pretiósum multum, * & dulcióra super mel & favum.

E'tenim servus tuus custódit ea; * in custodiéndis illis retribútio multa.

Delícta quis intélligit? ab occúltis meis munda me; * & ab aliénis parce servo tuo.

Si mei non fúerint domináti, tunc immaculátus ero, * & emundábor à delícto máximo.

Et erunt ut compláceant elóquia oris mei; * & meditátio cordis mei in conspéctu tuo semper.

Dómine adjútor meus, * & redémptor meus.

*Antiph.* Dómine adjútor meus, & redémptor meus.

℣. 15.

IN II. NOCTURNO.

*Per Annum*, *Ant.* 2. d. Tu es Deus.

*Psalmus* 75.

NOtus in Judǽa Deus; * in Israël magnum nomen ejus.

Et factus est in pace locus ejus, * & habitátio ejus in Sion.

Ibi confrégit poténtias árcuum, * scutum, gládium, & bellum.

Illúminans tu mirabíliter à móntibus ætérnis; * turbáti sunt omnes insipiéntes corde.

Dormiérunt somnum suum, * & nihil invenérunt omnes viri divitiárum in mánibus suis.

Ab increpatióne tua, Deus Jacob, * dormitavérunt qui ascendérunt equos.

Tu terríbilis es, & quis resístet tibi? * ex tunc ira tua.

De cœlo audítum fecísti judícium; * terra trémuit & quiévit.

Cum exúrgeret in judícium Deus, * ut salvos fáceret omnes mansuétos terræ.

Quóniam cogitátio hóminis confitébitur tibi; * & relíquiæ cogitatiónis diem festum agent tibi.

Vovéte, & réddite Dómino Deo vestro, * omnes qui in circúitu ejus affértis múnera.

Terríbili & ei qui aufert spíritum príncipum, * terríbili apud reges terræ.

*Psalmus* 76.

VOce meâ ad Dóminum clamávi; * voce meâ ad Deum, & inténdit mihi.

In die tribulatiónis meæ Deum exquisívi, mánibus meis nocte contra eum, * & non sum decéptus.

Rénuit consolári ánima mea, * memor fui Dei, & delectátus sum, & exercitátus sum, & defécit spíritus meus.

Anticipavérunt vigílias óculi mei; * turbátus sum, & non sum locútus.

Cogitávi dies antíquos, & annos ætérnos in mente hábui.

Et meditátus sum nocte cum corde meo, * & exercitábar, & scopébam spíritum meum.

Nunquid in ætérnum projíciet Deus? * aut non appónet ut complacítior sit adhuc?

Aut in finem misericórdiam suam abscíndet, * à generatióne in generatiónem ?

Aut obliviscétur miseréri Deus ? * aut continébit in ira sua misericórdias suas ?

Et dixi, Nunc cœpi : * hæc mutátio déxteræ Excélsi.

Memor fui óperum Dómini, * quia memor ero ab inítio mirabílium tuórum.

Et meditábor in ómnibus opéribus tuis, * & in adinventiónibus tuis exercébor.

*Divisio Psalmi 76.*

DEus, in sancto via tua : quis Deus magnus sicut Deus noster ? * tu es Deus, qui facis mirabília.

Notam fecísti in pópulis virtútem tuam : * redemísti in bráchio tuo pópulum tuum, fílios Jacob, & Joseph.

Vidérunt te aquæ, Deus, vidérunt te aquæ, & timuérunt, * & turbátæ sunt abýssi.

Multitúdo sónitus aquárum ; * vocem dedérunt nubes.

Etenim sagíttæ tuæ tránseunt ; * vox tonítrui tui in rota.

Illuxérunt corruscatiónes tuæ orbi terræ ; * commóta est & contrémuit terra.

In mari via tua, & sémitæ tuæ in aquis multis ; * & vestígia tua non cognoscéntur.

Deduxísti sicut oves pópulum tuum, * in manu Móysi & A'aron.

*Ant.* Tu es Deus qui facis mirabília. *v.* 15.

IN III. NOCTURNO.

*Per Annum, Ant.* 3. a. Quis intélliget.

*Psalmus* 106.

COnfitémini Dómino quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Dicant qui redémpti sunt à Dómino, * quos redémit de manu inimíci :

Et de regiónibus congregávit eos ; * à Solis Ortu, & Occásu, ab Aquilóne & Mari.

Erravérunt in solitúdine in inaquóso, * viam civitátis habitáculi non invenérunt.

Esuriéntes, & sitiéntes, * ánima eórum in ipsis defécit.

Et clamavérunt ad Dóminum cùm tribularéntur ; * & de necessitátibus eórum erípuit eos.

Et dedúxit eos in viam rectam, * ut irent in civitátem habitatiónis.

Confiteántur Dómino misericórdiæ ejus, * & mirabília ejus fíliis hóminum.

Quia satiávit ánimam inánem, * & ánimam esuriéntem satiávit bonis.

Sedéntes in ténebris, & umbra mortis, * vinctos in mendicitáte & ferro.

Quia exacerbavérunt elóquia Dei, * & consílium Altíssimi irritavérunt.

Et humiliátum est in labóribus cor eórum; * infirmáti sunt, nec fuit qui adjuváret.

Et clamavérunt ad Dóminum cùm tribularéntur; * & de necessitátibus eórum liberávit eos.

Et edúxit eos de ténebris, & umbra mortis, * & víncula eórum disrúpit.

*Divisio Psalmi* 106.

Confiteántur Dómino misericórdiæ ejus, * & mirabília ejus fíliis hóminum.

Quia contrívit portas æreas, * & vectes férreos confrégit.

Suscépit eos de via iniquitátis eórum; * propter injustítias enim suas humiliáti sunt.

Omnem escam abomináta est ánima eórum; * & appropinquavérunt usque ad portas mortis.

Et clamavérunt ad Dóminum cùm tribularéntur, * & de necessitátibus eórum liberávit eos.

Misit verbum suum, & sanávit eos, * & erípuit eos de interitiónibus eórum.

Confiteántur Dómino misericórdiæ ejus, * & mirabília ejus fíliis hóminum;

Et sacríficent sacrifícium laudis, * & annúntient ópera ejus in exultatióne.

Qui descéndunt mare in návibus, * faciéntes operatiónem in aquis multis,

Ipsi vidérunt ópera Dómini, * & mirabília ejus in profúndo.

Dixit, & stetit spíritus procéllæ; * & exaltáti sunt fluctus ejus.

Ascéndunt usque ad cœlos, & descéndunt usque ad abyssos; * ánima eórum in malis tabescêbat.

Turbáti sunt, & moti sunt sicut ébrius; * & omnis sapiéntia eórum devoráta est.

Et clamavérunt ad Dóminum cùm tribularéntur; * & de necessitátibus eórum edúxit eos.

Et státuit procéllam ejus in auram; * & siluérunt fluctus ejus.

Et lætáti sunt quia siluérunt; * & dedúxit eos in portum voluntátis eórum.

*Altera divisio Psalmi* 106.

Confiteántur Dómino misericórdiæ ejus, * & mirabília ejus fíliis hóminum;

Et exáltent eum in ecclésia plebis, * & in cáthedra seniórum laudent eum.

Pósuit flúmina in desér-

-tum, * & éxitus aquárum in sitim;

Terram fructíferam in salsúginem, * à malítia inhabitántium in ea.

Pósuit desértum in stagna aquárum, * & terram sine aqua in éxitus aquárum.

Et collocávit illic esuriéntes; * & constituérunt civitátem habitatiónis.

Et seminavérunt agros, & plantavérunt víneas, * & fecérunt fructum nativitátis.

Et benedíxit eis, & multiplicáti sunt nimis; * & juménta eórum non minorávit.

Et pauci facti sunt, * & vexáti sunt à tribulatióne malórum, & dolóre.

Effúsa est contémptio super príncipes; * & erráre fecit eos in ínvio, & non in via.

Et adjúvit páuperem de inópia, * & pósuit sicut oves famílias.

Vidébunt recti, & lætabúntur, * & omnis iníquitas oppilábit os suum.

Quis sápiens, & custódiet hæc, * & intélliget misericórdias Dómini?

*Ant.* Quis intélliget misericórdias Dómini? *v.* 43.

*Per Annum.* ℣. In die mandávit Dóminus misericórdiam suam; ℟. Et nocte cánticum ejus. *Psal.* 41. 9.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Magnificáte Dóminum mecum; ℟. Et exaltémus nomen ejus in idípsum. *Psal.* 33. 4.

Deus in adjutórium.

*Per Annum*, *Ant.* 4. d: Præténde.

*Psalmus* 35.

DIxit injústus, ut delínquat in semetípso: * non est timor Dei ante óculos ejus.

Quóniam dolósè egit in conspéctu ejus, * ut inveniátur iníquitas ejus ad ódium.

Verba oris ejus iníquitas, & dolus; * nóluit intellígere, ut benè ágeret.

Iniquitátem meditátus est in cubíli suo; ástitit omni viæ non bonæ, * malítiam autem non odívit.

Dómine, in cœlo misericórdia tua, * & véritas tua usque ad nubes.

Justítia tua sicut montes Dei: * judícia tua abýssus multa.

Hómines & juménta salvábis, Dómine: * quemádmodum multiplicásti misericórdiam tuam, Deus.

Fílii autem hóminum * in tégmine alárum tuárum sperábunt.

Inebriabúntur ab ubertáte

domûs tuæ ; * & torrénte voluptátis tuæ potábis eos.

Quóniam apud te est fons vitæ ; * & in lúmine tuo vidébimus lumen.

Prætende misericórdiam tuam sciéntibus te, * & justítiam tuam his, qui recto sunt corde.

Non véniat mihi pes supérbiæ ; * & manus peccatóris non móveat me.

Ibi cecidérunt qui operántur iniquitátem , * expúlsi sunt, nec potuérunt stare.

*Ant.* Prætende, Dómine, misericórdiam tuam sciéntibus te. *v.* 11.

*Ant.* 6. f. Rex.

*Psalmus* 46.

OMnes Gentes, pláudite mánibus, * jubiláte Deo in voce exultatiónis.

Quóniam Dóminus excélsus, terríbilis ; * Rex magnus super omnem terram.

Subjécit pópulos nobis, * & Gentes sub pédibus nostris.

Elégit nobis hereditátem suam : * spéciem Jacob, quam diléxit,

Ascéndit Deus in júbilo, * & Dóminus in voce tubæ.

Psállite Deo nostro, psállite : * psállite Regi nostro, psállite.

Quóniam Rex omnis terræ Deus ; * psállite sapiénter.

Regnábit Deus super Gentes : * Deus sedet super sedem sanctam suam.

Príncipes populórum congregáti sunt cum Deo A'braham ; * quóniam dii fortes terræ veheménter eleváti sunt.

*Ant.* Rex omnis terræ Deus; psállite sapiénter. *v.* 8.

*Ant.* 3. A. Exáudi nos.

*Psalmus* 64.

TE decet hymnus, Deus, in Sion ; * & tibi reddétur votum in Jerúsalem.

Exáudi oratiónem meam; * ad te omnis caro véniet.

Verba iniquórum prævaluérunt super nos ; * & impietátibus nostris tu propitiáberis.

Beátus quem elegísti , & assumpsísti , * inhabitábit in átriis tuis.

Replébimur in bonis domûs tuæ : * sanctum est templum tuum, mirábile in æquitáte.

Exáudi nos, Deus salutáris noster , * spes ómnium fínium terræ , & in mari longè.

Præparans montes in virtúte tua, accínctus poténtiâ: * qui contúrbas profúndum maris, sonum flúctuum ejus.

Turbabúntur Gentes , & timébunt qui hábitant términos à signis tuis : * éxitus matutíni & véspere delectábis.

Visitásti terram , & ine-

briásti eam; * multiplicásti locupletáre eam.

Flumen Dei replétum est aquis, parásti cibum illórum, * quóniam ita est præparátio ejus.

Rivos ejus inébria, multíplica genímina ejus; * in stillicídiis ejus lætábitur gérminans.

Benedíces corónæ anni benignitátis tuæ; * & campi tui replebúntur ubertáte.

Pinguéscent speciósa desérti, * & exultatióne colles accingéntur.

Indúti sunt aríetes óvium, & valles abundábunt fruménto: * clamábunt, étenim hymnum dicent.

*Ant.* Exáudi nos, Deus salutáris noster, spes ómnium fínium terræ. *v.* 6.

*Ant.* 2. d. Deus.

*Canticum Annæ.* 1. *Reg.* 2. 1.

EXultávit cor meum in Dómino, * & exaltátum est cornu meum in Deo meo.

Dilatátum est os meum super inimícos meos; * quia lætáta sum in salutári tuo.

Non est sanctus, ut est Dóminus, neque enim est álius extra te; * & non est fortis sicut Deus noster.

Nolíte multiplicáre loqui sublímia gloriántes: * recédant vétera de ore vestro.

Quia Deus scientiárum Dóminus est, * & ipsi præparántur cogitatiónes.

Arcus fórtium superátus est, * & infírmi accíncti sunt róbore.

Repléti priùs, pro pánibus se locavérunt; * & famélici saturáti sunt.

Donec stérilis péperit plúrimos; * & quæ multos habébat fílios, infirmáta est.

Dóminus mortíficat & vivíficat, * dedúcit ad ínferos & redúcit.

Dóminus páuperem facit & ditat, * humíliat & súblevat.

Súscitat de púlvere egénum, * & de stércore élevat páuperem;

Ut sédeat cum príncipibus, * & sólium glóriæ téneat.

Dómini enim sunt cárdines terræ, * & pósuit super eos orbem.

Pedes sanctórum suórum servábit, & ímpii in ténebris conticéscent; * quia non in fortitúdine sua roborábitur vir.

Dóminum formidábunt adversárii ejus; * & super ipsos in cœlis tonábit.

Dóminus judicábit fines terræ, & dabit impérium Regi suo, * & sublimábit cornu Christi sui.

*Ant.* Deus scientiárum Dóminus est. *v.* 3.

[ *In Festis, loco superioris Cantici, dicitur sequens Canticum.*

*Tob.* 13. 1.

MAgnus es, Dómine, in ætérnum, * & in ómnia sécula regnum tuum.

Quóniam tu flagéllas, & salvas: dedúcis ad ínferos & redúcis: * & non est qui effúgiat manum tuam.

Confitémini Dómino, filii Israël, * & in conspéctu Géntium laudáte eum:

Quóniam ideò dispérsit vos inter Gentes, quæ ignórant eum, * ut vos enarrétis mirabília ejus,

Et faciátis scire eos: * quia non est álius Deus omnípotens præter eum.

Ipse castigávit nos propter iniquitátes nostras: * & ipse salvábit nos propter misericórdiam suam.

Aspícite ergo quæ fecit nobíscum, & cum timóre & tremóre confitémini illi: * Regémque seculórum exaltáte in opéribus vestris.

Ego autem in terra captivitátis meæ confitébor illi; * quóniam osténdit majestátem suam in gentem peccatrícem.

Convertímini itaque, peccatóres, & fácite justítiam coram Deo, * credéntes quòd fáciet vobíscum misericórdiam suam.

Ego autem, & ánima mea, * in eo lætábimur.

Benedícite Dóminum omnes elécti ejus: * ágite dies lætítiæ, & confitémini illi. ]

*Ant.* 5. f. Secúndùm.

*Psalmus* 150.

LAudáte Dóminum in sanctis ejus; * laudáte eum in firmaménto virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus: * laudáte eum secúndùm multitúdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ: * laudáte eum in psaltério, & cíthara.

Laudáte eum in týmpano, & choro: * laudáte eum in chordis, & órgano.

Laudáte eum in cýmbalis benesonántibus; laudáte eum in cýmbalis jubilatiónis: * omnis spíritus laudet Dóminum.

*Ant.* Secúndùm multitúdinem magnitúdinis ejus laudáte Dóminum. *v.* 2.

*Per Annum, Capitulum. Rom.* 13. 8. 9.

FRatres; Némini quidquam debeátis, nisi ut ínvicem diligátis: qui enim díligit próximum, legem implévit. Nam si quod est áliud mandátum, in hoc verbo instaurátur: Díliges próximum tuum sicut teípsum.

*Per Annum.* *Hymnus.*

ALes diéi núntius
Lucem propínquam præcinit :
Nos excitátor méntium
Jam Christus ad vitam vocat.

Auférte, clamat, léctulos,
Ægro sopóre désides :
Castíque, recti, ac sóbrii,
Vigiláte : jam sum próximus.

Jesum ciámus vócibus,
Flentes, precántes, sóbrii :
Inténta supplicátio
Dórmire cor mundum vetat.

Tu Christe, somnum díscute :
Tu rumpe noctis víncula :
Tu solve peccátum vetus,
Novúmque lumen íngere.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum.* ℣. Audítam fac mihi manè misericórdiam tuam; ℞. Quia in te sperávi. *Psal.* 142. 8.

*Per Annum, ad* Benedíctus, *Ant.* Eréxit Dóminus cornu salútis nobis, in domo David púeri sui. *Luc.* 1. 69.

*Preces quando dicuntur, & Suffragia habentur suprà in Laudibus Feriæ secundæ. pag.* 46. 47.

AD PRIMAM.

Pater. Ave.
Deus in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

Jam lucis orto sídere, &c. *ut suprà, pag.* 49.

*Ant.* 1. d. Exúrge.

*Psalmus* 9.

COnfitébor tibi, Dómine, in toto corde meo; * narrábo ómnia mirabília tua.

Lætábor & exultábo in te; * psallam nómini tuo, Altíssime.

In converténdo inimícum meum retrórsum : * infirmabúntur & períbunt à fácie tua.

Quóniam fecísti judícium meum & causam meam : * sedísti super thronum qui júdicas justítiam.

Increpásti Gentes, & périit ímpius : * nomen eórum delésti in ætérnum & in séculum séculi.

Inimíci defecérunt frámeæ in finem; * & civitátes eórum destruxísti.

Périit memória eórum cum sónitu; * & Dóminus in ætérnum pérmanet.

Parávit in judício thronum suum; * & ipse judicábit orbem terræ in æquitáte, judicábit pópulos in justítia.

Et factus est Dóminus refúgium páuperi; * adjútor in opportunitátibus, in tribulatióne.

Et sperent in te qui novérunt nomen tuum; * quóniam non dereliquísti quærentes te, Dómine.

Psállite Dómino, qui hábitat in Sion; * annuntiáte inter Gentes stúdia ejus:

Quóniam requírens sánguinem eórum recordátus est: * non est oblítus clamórem páuperum.

*Divisio Psalmi 9.*

MIserére mei, Dómine; * vide humilitátem meam de inimícis meis.

Qui exáltas me de portis mortis, * ut annúntiem omnes laudatiónes tuas in portis fíliæ Sion.

Exultábo in salutári tuo: * infíxæ sunt Gentes in intéritu quem fecérunt.

In láqueo isto quem abscondérunt, * comprehénsus est pes eórum.

Cognoscétur Dóminus judícia fáciens: * in opéribus mánuum suárum comprehénsus est peccátor.

Convertántur peccatóres in inférnum, * omnes Gentes quæ obliviscúntur Deum.

Quóniam non in finem oblívio erit páuperis: * patiéntia páuperum non períbit in finem.

Exúrge, Dómine, non confortétur homo: * judicéntur Gentes in conspéctu tuo.

Constítue, Dómine, legislatórem super eos: * ut sciant Gentes quóniam hómines sunt.

*Altera divisio Psalmi 9.*

UT quid, Dómine, recessísti longè, * déspicis in opportunitátibus, in tribulatióne?

Dùm supérbit ímpius, incénditur pauper: * comprehendúntur in consíliis quibus cógitant.

Quóniam laudátur peccátor in desidériis ánimæ suæ; * & iníquus benedícitur.

Exacerbávit Dóminum peccátor, * secúndùm multitúdinem iræ suæ non quæret.

Non est Deus in conspéctu ejus: * inquinátæ sunt viæ illíus in omni témpore.

Auferúntur judícia tua à fácie ejus: * ómnium inimicórum suórum dòminábitur.

Dixit enim in corde suo: * Non movébor à generatióne in generatiónem sine malo.

Cujus maledictióne os plenum est, & amaritúdine, & dolo: * sub lingua ejus labor & dolor.

Sedet in insídiis cum divítibus in occúltis, * ut interfíciat innocéntem.

O'culi ejus in páuperem respíciunt: * insidiátur in abscóndito, quasi leo in spelúnca sua.

Insidiátur ut rápiat páupe-

sem; * rápere páuperem, dùm áttrahit eum.

In láqueo suo humiliábit eum, * inclinábit se, & cadet cùm dominátus fúerit páuperum.

Dixit enim in corde suo: Oblitus est Deus, * avértit fáciem suam, ne vídeat in finem.

Exúrge*, Dómine Deus, exaltétur manus tua; * ne oblivíscáris páuperum.

Propter quid irritávit ímpius Deum? * dixit enim in corde suo: Non requíret.

Vides, quóniam tu labórem & dolórem consíderas, * ut tradas eos in manus tuas.

Tibi derelíctus est pauper: * órphano tu eris adjútor.

Cóntere bráchium peccatóris & malígni: * quærétur peccátum illíus, & non inveniétur.

Dóminus regnábit in ætérnum, & in séculum séculi: * peribitis, Gentes, de terra illíus.

Desidérium páuperum exaudívit Dóminus: * præparatiónem cordis eórum audívit auris tua.

Judicáre pupíllo & húmili, * ut non appónat ultrà magnificáre se homo super terram.

*Ant.* Exúrge, Dómine Deus, exaltétur manus tua; ne oblivíscáris páuperum. *v.* 33.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Joan.* 2. 8.

Filíoli mei: Ténebræ transiérunt, & verum lumen jam lucet. Qui dicit se in luce esse, & fratrem suum odit, in ténebris est usque adhuc. Qui díligit fratrem suum, in lúmine manet, & scándalum in eo non est.

℞. *breve.* Christe fili Dei vivi, &c.

*Et Preces habentur suprà* *pag.* 51.

AD TERTIAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium. &c.

*Hymnus.*

Nunc sancte &c. *pag.* 54.

*Ant.* 2. d. Ostende.

*Psalmus* 28.

Afférte Dómino, fílii Dei, * afférte Dómino fílios aríetum.

Afférte Dómino glóriam & honórem, afférte Dómino glóriam nómini ejus; * adoráte Dóminum in átrio sancto ejus.

Vox Dómini super aquas, Deus majestátis intónuit; * Dóminus super aquas multas.

Vox Dómini in virtúte: * vox Dómini in magnificéntia.

Vox Dómini confringéntis cedros; * & confringet Dóminus cedros Líbani.

Et comminuet eas tanquam vítulum Líbani; * & diléc-

tus quemádmodum fílius unicórnium.

Vox Dómini intercidéntis flammam ignis ; vox Dómini concutiéntis desértum, * & commovébit Dóminus desértum Cades.

Vox Dómini præparántis cervos, & revelábit condénsa ; * & in templo ejus omnes dicent glóriam.

Dóminus dilúvium inhabitáre facit ; * & sedébit Dóminus Rex in ætérnum.

Dóminus virtútem pópulo suo dabit ; * Dóminus benedícet pópulo suo in pace.

*Psalmus* 84.

BEnedixísti, Dómine, terram tuam, * avertísti captivitátem Jacob.

Remisísti iniquitátem plebis tuæ, * operuísti ómnia peccáta eórum.

Mitigásti omnem iram tuam, * avertísti ab ira indignatiónis tuæ.

Convérte nos, Deus salutáris noster, * & avérte iram tuam à nobis.

Nunquid in ætérnum irascéris nobis? * aut exténdes iram tuam à generatióne in generatiónem.

Deus, tu convérsus vivificábis nos, * & plebs tua lætábitur in te.

Osténde nobis, Dómine, misericórdiam tuam, * & salutáre tuum da nobis.

A'udiam quid loquátur in me Dóminus Deus, * quóniam loquétur pacem in plebem suam.

Et super sanctos suos, * & in eos qui convertúntur ad cor.

Verúntamen prope timéntes eum salutáre ipsius ; * ut inhábitet glória in terra nostra.

Misericórdia & véritas obviavérunt sibi ; * justítia & pax osculátæ sunt.

Véritas de terra orta est ; * & justítia de cœlo prospéxit.

E'tenim Dóminus dabit benignitátem, * & terra nostra dabit fructum suum.

Justítia ante eum ambulábit, * & ponet in via gressus suos.

*Psalmus* 149.

CAntáte Dómino cánticum novum ; * laus ejus in ecclésia sanctórum.

Lætétur I'sraël in eo, qui fecit eum, * & fílii Sion exúltent in rege suo.

Laudent nomen ejus in choro, * in týmpano & psaltério psallant ei ;

Quia beneplácitum est Dómino in pópulo suo, * & exaltábit mansuétos in salútem.

Exultábunt sancti in glória, * lætabúntur in cubílibus suis.

Exaltatiónes Dei in gútture eórum,

eórum, * & gládii ancípites in mánibus eórum.

Ad faciéndam vindíctam in natiónibus, * increpatiónes in pópulis;

Ad alligándos reges eórum in compédibus, * & nóbiles eórum in mánicis férreis.

Ut fáciant in eis judícium conscríptum: * glória hæc est ómnibus sanctis ejus.

*Ant.* Osténde nobis, Dómine, misericórdiam tuam, & salutáre tuum da nobis. *Psal.* 84. 8.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Joan.* 4. 20. 21.

SI quis díxerit quóniam díligo Deum, & fratrem suum óderit, mendax est. Qui enim non díligit fratrem suum quem videt, Deum, quem non videt, quómodo potest dilígere? Et hoc mandátum habémus à Deo, ut qui díligit Deum, díligat & fratrem suum.

℟. *br.* Ego dixi, * Dómine, miserére mei; *Repet.* Ego dixi; * Dómine, miserére mei; ℣. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi. * Dómine, miserére mei. ℣. Glória Patri & Fílio, & Spirítui sancto. *Repetitur*, Ego. *Psal.* 40. 5.

℣. Adjútor meus esto, ne derelínquas me; ℟. Neque despícias me, Deus salutáris meus. *Psal.* 26. 9.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

AD SEXTAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

RECTOR potens, &c. *pag.* 57.

*Per Annum; Ant.* 6. *Si* Dóminus.

*Psalmus* 36.

NOli æmulári in malignántibus, * neque zeláveris faciéntes iniquitátem.

Quóniam tanquam fœnum velóciter arélcent; * & quemádmodum ólera herbárum citò décident.

Spera in Dómino, & fac bonitátem, * & inhábita terram, & pascéris in divítiis ejus.

Delectáre in Dómino, * & dabit tibi petitiónes cordis tui.

Revéla Dómino viam tuam, & spera in eo, * & ipse fáciet.

Et edúcet quasi lumen justítiam tuam, & judícium tuum tanquam merídiem: * súbditus esto Dómino, & ora eum.

Noli æmulári in eo, qui prosperátur in via sua; * in hómine faciénte injustítias.

Désine ab ira, & derelin-

que furórem : * noli æmulári ut malignéris.

Quóniam qui malignántur, exterminabúntur ; * sustinéntes autem Dóminum, ipsi hereditábunt terram.

Et adhuc pusíllum, & non erit peccátor ; * & quæres locum ejus, & non invénies.

Mansuéti autem hereditábunt terram, * & delectabúntur in multitúdine pacis.

Obsérvábit peccátor justum, * & stridébit super eum déntibus suis.

Dóminus autem irridébit eum, * quóniam próspicit quòd véniet dies ejus.

Gládium evaginavérunt peccatóres, * intendérunt arcum suum,

Ut dejíciant páuperem & inopem, * ut trucídent rectos corde.

Gládius eórum intret in corda ipsórum ; * & arcus eórum confringátur.

Mélius est módicum justo * super divítias peccatórum multas.

Quóniam bráchia peccatórum conteréntur, * confírmat autem justos Dóminus.

*Divisio Psalmi 36.*

NOvit Dóminus dies immaculatórum, * & heréditas eórum in ætérnum erit.

Non confundéntur in témpore malo, & in diébus famis saturabúntur, * quia peccatóres períbunt.

Inimíci verò Dómini mox ut honorificáti fúerint & exaltáti, * deficiéntes quemádmodum fumus defícient.

Mutuábitur peccátor, & non solvet : * justus autem miserétur, & tríbuet.

Quia benedicéntes ei hereditábunt terram : * maledicéntes autem ei dispeníbunt.

Apud Dóminum gressus hóminis dirigéntur ; * & viam ejus volet.

Cùm cecíderit, non collidétur, * quia Dóminus suppónit manum suam.

Júnior fui, étenim sénui, * & non vidi justum derelíctum, nec semen ejus quærens panem.

Totâ die miserétur & cómmodat, * & semen illíus in benedictióne erit.

Declína à malo, & fac bonum ; * & inhábita in séculum séculi.

Quia Dóminus amat judícium, & non derelínquet sanctos suos ; * in ætérnum conservabúntur.

Injústi puniéntur ; * & semen impiórum períbit.

Justi autem hereditábunt terram, * & inhabitábunt in séculum séculi super eam.

*Altera divisio Psalmi 36.*

OS justi meditábitur sapiéntiam ; * & lingua

ejus loquétur judícium.

Lex Dei ejus in corde ipsius; * & non supplantabúntur gressus ejus.

Considerat peccàtor justum, * & quærit mortificáre eum.

Dóminus autem non derelinquet eum in mánibus ejus,* nec damnábit eum cùm judicábitur illi.

Expécta Dóminum, & custódi viam ejus; & exaltábit te, ut hereditáte cápias terram: * cùm perierint peccatóres, vidébis.

Vidi ímpium superexaltátum, * & elevátum sicut cedros Líbani;

Et transívi, & ecce non erat; * & quæsívi eum, & non est invéntus locus ejus.

Custódi innocéntiam, & vide æquitátem; * quóniam sunt relíquiæ hómini pacífico.

Injústi autem dispeŕibunt simul: * relíquiæ impiórum interíbunt.

Salus autem justórum à Dómino; * & protéctor eórum in témpore tribulatiónis.

Et adjuvábit eos Dóminus, & liberábit eos; & éruet eos à peccatóribus, & salvábit eos; * quia speravérunt in eo.

*Ant.* Dóminus amat judícium, & non derelínquet sanctos suos. *v.* 28.

*Per Annum, Capitulum. 1. Joan. 4. 12. 13.*

CHaríssimi; Si diligámus invicem, Deus in nobis manet, & cháritas ejus in nobis perfécta est. In hoc cognóscimus quóniam in eo manémus, & ipse in nobis: quóniam de Spíritu suo dedit nobis.

℞. *br.* Benedícam Dóminum * In omni témpore. *Repetit.* Benedícam Dóminum * In omni témpore. ℣. Semper laus ejus in ore meo * In omni témpore. ℣. Glória. *Repet.* Benedícam. *Ps.* 33. 2.

℣. Laudábo Dóminum in vita mea, ℞. Psallam Deo meo quándiù fúero. *Psal.* 145. 2.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD NONAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium meum inténde.

*Hymnus.*

RERUM Deus, &c. *pag.* 59.

*Per Annum, Ant.* 1. D. Hereditátem.

*Psalmus 57.*

SI verè útique justítiam loquímini, * recta judicáte filii hóminum.

E'tenim in corde iniquitátes operámini; * in terra in-

justítias manus vestræ concínnant.

Alienáti sunt peccatóres à vulva, erravérunt ab útero,* locúti sunt falsa.

Furor illis secúndùm similitúdinem serpéntis, * sicut áspidis surdæ, & obturántis aures suas.

Quæ non exáudiet vocem incantántium, * & venéfici incantántis sapiénter.

Deus cónteret dentes eórum in ore ipsórum: * molas leónum confrínget Dóminus.

Ad níhilum devénient tanquam aqua decúrrens: * inténdit arcum suum donec infirméntur.

Sicut cera, quæ fluit, auferéntur:* supercécidit ignis, & non vidérunt solem.

Priúsquam intellígerent spinæ vestræ rhamnum, * sicut vivéntes, sic in ira absórbet eos.

Lætábitur justus cùm víderit vindíctam; * manus suas lavábit in sánguine peccatóris.

Et dicet homo: Si útique est fructus justo, * útique est Deus júdicans eos in terra.

*Psalmus* 93.

DEus ultiónum Dóminus, * Deus ultiónum líberè egit.

Exaltáre qui júdicas terram, * redde retributiónem supérbis.

U'squequò peccatóres, Dómine, * úsquequò peccatóres gloriabúntur?

Effabúntur, & loquéntur iniquitátem, * loquéntur omnes, qui operántur injustítiam?

Pópulum tuum, Dómine, humiliavérunt, * & hereditátem tuam vexavérunt.

Víduam & ádvenam interfecérunt, * & pupíllos occidérunt.

Et dixérunt: Non vidébit Dóminus, * nec intélliget Deus Jacob.

Intellígite insipiéntes in pópulo, * & stulti aliquándo sápite.

Qui plantávit aurem, non áudiet? * aut qui finxit óculum, non consíderat?

Qui córripit Gentes, non árguet? * qui docet hóminem sciéntiam?

Dóminus scit cogitatiónes hóminum, * quóniam vanæ sunt.

*Divisio Psalmi* 93.

BEátus homo, quem tu erudíeris, Dómine, * & de lege tua docúeris eum.

Ut mítiges ei à diébus malis, * donec fodiátur peccatóri fóvea.

Quia non repéllet Dóminus plebem suam, * & hereditátem suam non derelínquet,

Quoadúsque justítia con-

vertátur in judícium, * & qui juxta illam omnes, qui recto sunt corde.

Quis consúrget mihi advérsùs malignántes? * aut quis stabit mecum advérsùs operántes iniquitátem?

Nisi quia Dóminus adjúvit me, * paulò minus habitásset in inférno ánima mea.

Si dicébam: Motus est pes meus, * misericórdia tua, Dómine, adjuvábat me.

Secúndùm multitúdinem dolórum meórum in corde meo, * consolatiónes tuæ lætificavérunt ánimam meam.

Nunquid adhæret tibi sedes iniquitátis, * qui fingis labórem in præcépto?

Captábunt in ánimam justi, * & sánguinem innocéntem condemnábunt.

Et factus est mihi Dóminus in refúgium, * & Deus meus in adjutórium spei meæ.

Et reddet illis iniquitátem ipsórum, & in malítia eórum dispérdet eos; * dispérdet illos Dóminus Deus noster.

*Ant.* Hereditátem suam non derelínquet Dóminus. *v.* 14.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Joan.* 3. 18.

FIlíoli mei: Non diligâmus verbo, neque linguâ, sed ópere & veritáte.

℟. *br.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine, *Repet.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine. ℣. Et ab aliénis parce servo tuo. * Munda me, Dómine. ℣. Glória Patri. *Repet.* Ab occúltis. *Psal.* 18. 13. 14.

℣. Pérfice gressus meos in sémitis tuis, ℟. Ut non moveántur vestígia mea. *Ps.* 16. 5.

*Preces, si dicenda sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

AD VESPERAS.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium, &c.

*Ant.* 2. d. Miserére.

*Psalmus.* 122.

AD te levávi óculos meos, * qui hábitas in cœlis.

Ecce sicut óculi servórum, * in mánibus dominórum suórum;

Sicut óculi ancíllæ * in mánibus dóminæ suæ;

Ita óculi nostri ad Dóminum Deum nostrum, * donec misereátur nostri.

Miserére nostri, Dómine, miserére nostri; * quia multùm repléti sumus despectióne:

Quia multùm repléta est ánima nostra; * oppróbrium abundántibus, & despéctio supérbis.

*Ant.* Miserére nostri, Dómine, miserére nostri. *v.* 3.

*Ant.* 3. a. Adjutórium.

*Psalmus* 123.

NIsi quia Dóminus erat in nobis, dicat nunc Iſraël; * niſi quia Dóminus erat in nobis.

Cùm exúrgerent hómines in nos, * fortè vivos deglutiſſent nos.

Cùm iraſcerétur furor eórum in nos, * fórſitan aqua abſorbuiſſet nos.

Torréntem pertransívit ánima noſtra * fórſitan pertransíſſet ánima noſtra aquam intolerábilem.

Benedíctus Dóminus, * qui non dedit nos in captiónem déntibus eórum.

A'nima noſtra ſicut paſſer erépta eſt, * de láqueo venántium.

Láqueus contrítus eſt, * & nos liberáti ſumus.

Adjutórium noſtrum in nómine Dómini, * qui fecit cœlum & terram.

*Ant.* Adjutórium noſtrum in nómine Dómini. *v.* 8.

*Ant.* 4. d. Bénefac.

*Psalmus* 124.

QUi confídunt in Dómino, ſicut mons Sion: * non commovébitur in ætérnum, qui hábitat in Jeruſálem.

Montes in circúitu ejus; * & Dóminus in circúitu pópuli ſui, ex hoc nunc & uſque in ſéculum.

Quia non relínquet Dóminus virgam peccatórum ſuper ſortem juſtórum; * ut non exténdant juſti ad iniquitátem manus ſuas.

Bénefac, Dómine, bonis,* & rectis corde.

Declinántes autem in obligatiónes, addúcet Dóminus cum operántibus iniquitátem; * pax ſuper Iſraël.

*Ant.* Bénefac, Dómine, bonis, & rectis corde. *v.* 4.

*Ant.* 5. a. Convérte.

*Psalmus* 125.

IN convertèndo Dóminus captivitátem Sion, * facti ſumus ſicut conſoláti.

Tunc replétum eſt gáudio os noſtrum; * & lingua noſtra exultatióne.

Tunc dicent inter Gentes:* Magnificávit Dóminus fácere cum eis.

Magnificávit Dóminus fácere nobíſcum; * facti ſumus lætántes.

Convérte, Dómine, captivitátem noſtram, * ſicut torrens in Auſtro.

Qui ſéminant in lácrymis,* in exultatióne metent.

Eúntes ibant & flebant, * mitténtes ſémina ſua.

Veniéntes autem vénient cum exultatióne, * portántes manípulos ſuos.

*Ant.* Convérte, Dómine, captivitátem noſtram. *v.* 4.

*Ant.* 7. c. Niſi Dóminus.

*Psalmus* 126.

NIsi Dóminus ædificáverit domum, * in vanum laboravérunt qui ædificant eam.

Nisi Dóminus custodíerit civitátem, * frustra vigilat qui custódit eam.

Vanum est vobis ante lucem súrgere: * súrgite postquam sedéritis, qui manducátis panem dolóris.

Cum déderit diléctis suis somnum; * ecce heréditas Dómini, fílii; merces, fructus ventris.

Sicut sagíttæ in manu poténtis; * ita fílii excussórum.

Beátus vir qui implévit desidérium suum ex ipsis; * non confundétur cùm loquétur inimícis suis in porta.

*Ant.* Nisi Dóminus ædificáverit domum, in vanum laboravérunt qui ædificant eam. *v.* 2.

*Per Annum, Capitulum. Galat.* 5. 13.

PEr charitátem Spíritûs servíte ínvicem. Omnis enim lex in uno sermóne implétur: Díliges próximum tuum sicut teípsum.

*Per Annum. Hymnus.*

TERRÆ marísque Cónditor,
Aquis refúsis ímperas;
Vix imperántem séntiunt:
Siccáta tellus énatat.

FONTES creas & flúmina,
Marísque metas ímprimis;
Littus ferítur flúctibus,
Tu frangis undas déxterâ.

SOL arva nondum cónfovet,
Glebas nec imber mólliit;
Tellus abúndat trítico,
Et gloriátur flóribus.

DONA, Creátor, córdibus,
Quæ semináſti gérmina:
Tibi, tuæque débitos
Proférre fructus glóriæ.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. A custódia matutína usque ad noctem speret Iſraël in Dómino; ℟. Quia apud Dóminum misericórdia. *Psal.* 129. 6. 7.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 5. a. Exultávit spíritus meus in Deo salutári meo. *Luc.* 1. 47.

*Preces si dicendæ sint, habentur suprà, pag.* 46.

*Suffragia verò pag.* 63.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD COMPLETORIUM.

℣. Convérte nos, Deus, &c.
Deus in adjutórium, &c.

*Per Annum, Ant.* 4. d. Réspice.

*Psalmus* 10.

IN Dómino confído: quómodo dícitis ánimæ meæ: * Tránsmigra in montem sicut passer?

Quóniam ecce peccatóres intendérunt arcum, paravérunt sagíttas suas in pháretra, * ut sagíttent in obscúro rectos corde.

Quóniam quæ perfecísti, destruxérunt; * justus autem quid fecit?

Dóminus in templo sancto suo, * Dóminus in cœlo sedes ejus.

O'culi ejus in páuperem respíciunt; * pálpebræ ejus intérrogant fílios hóminum.

Dóminus intérrogat justum & ímpium: * qui autem díligit iniquitátem, odit ánimam suam.

Pluet super peccatóres láqueos: * ignis, & sulphur, & spíritus procellárum, pars cálicis eórum.

Quóniam justus Dóminus, & justítias diléxit: * æquitátem vidit vultus ejus.

*Psalmus* 11.

SAlvum me fac, Dómine, quóniam defécit sanctus;* quóniam diminútæ sunt veritátes à fíliis hóminum.

Vana locúti sunt unusquísque ad próximum suum; * lábia dolósa, in corde & corde locúti sunt.

Dispérdat Dóminus univérsa lábia dolósa, * & linguam magníloquam.

Qui dixérunt: Linguam nostram magnificábimus, lábia nostra à nobis sunt, * quis noster Dóminus est?

Propter misériam inopum, & gémitum páuperum,* nunc exúrgam, dicit Dóminus.

Ponam in salutári; * fiduciáliter agam in eo.

Elóquia Dómini, elóquia casta; * argéntum igne examinátum, probátum terræ, purgátum séptuplum.

Tu, Dómine, servábis nos, & custódies nos, * à generatióne hac in ætérnum.

In circúitu ímpii ámbulant: * secúndùm altitúdinem tuam multiplicásti fílios hóminum.

*Psalmus* 12.

U'Squequò, Dómine, oblivíscéris me in finem? * U'squequò avértis fáciem tuam à me?

Quándiù ponam consília in ánima mea, * dolórem in corde meo per diem?

U'squequò exaltábitur inimícus meus super me? * réspice, & exáudi me, Dómine Deus meus.

Illúmina óculos meos, ne unquam obdórmiam in morte; * nequándo dicat inimícus meus: Præválui advérsùs eum.

Qui tríbulant me, exultábunt si motus fúero; * ego autem in misericórdia tua sperávi.

Exultábit cor meum in salutári tuo; cantábo Dómi-

no qui bona tribuit mihi, * & psallam nómini Dómini altíssimi.

*Ant.* Réspice & exáudi me, Dómine Deus meus. *v.* 4.

*Per Annum*, *Capitulum.* *Thren.* 2. 19.

LAuda in nocte, in princípio vigiliárum: effúnde sicut aquam cor tuum ante conspéctum Dómini; lèva ad eum manus tuas.

*Per Annum.* *Hymnus.*

Te lucis ante términum, &c. Nunc dimíttis. *Preces & Oratio ut suprà*, *pag.* 66.

---

FERIA QUARTA
AD OFFICIUM NOCTURNUM.

Pater. Ave. Credo.

Dómine lábia mea apéries, *ut suprà pag.* 1.

Deus in adjutórium, &c.

*Per Annum*, *Invitatorium.*

Deus magnus Dóminus, * Veníte, adorémus. *Ps.* 94. 3.

*Psalmus*, Veníte, &c. *ut suprà*, *pag.* 2.

*Per Annum.* *Hymnus.*

RErum Creátor óptime,
Rectórque noster áspice:
Nos à quiéte nóxia,
Mersos sopóre, líbera.

Te, sancte Christe, póscimus:
Ignósce culpis ómnibus:
Ad confiténdum súrgimus,
Morásque noctis rúmpimus.

Mentes, manúsque tóllimus,
Prophéta sicut nóctibus
Nobis geréndum præcipit,
Paulúsque gestis cénsuit.

Vides malum, quod fécimus:
Occúlta nostra pándimus,
Preces geméntes fúndimus.
Dimítte quod peccávimus.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Per Annum*, *Ant.* 4. E. Beáta.

*Psalmus* 23.

DÓmini est terra, & plenitúdo ejus, * orbis terrárum, & univérsi qui hábitant in eo.

Quia ipse super mária fundávit eum, * & super flúmina præparávit eum.

Quis ascéndet in montem Dómini? * aut quis stabit in loco sancto ejus?

Innocens mánibus, & mundo corde, * qui non accépit in vano ánimam suam, nec jurávit in dolo próximo suo.

Hic accípiet benedictiónem à Dómino, * & misericórdiam à Deo salutári suo.

Hæc est generátio quæréntium eum, * quæréntium fáciem Dei Jacob.

Attóllite portas príncipes vestras, & elevámini portæ

ætenáles ; * & introíbit Rex glóriæ.

Quis est iste Rex glóriæ ? * Dóminus fortis & potens, Dóminus potens in prælio.

Attóllite portas príncipes vestras, & elevámini portæ æternáles ; * & introíbit Rex glóriæ.

Quis est iste Rex glóriæ ? * Dóminus virtútum ipse est Rex glóriæ.

*Psalmus 32.*

EXultáte justi in Dómino:* rectos decet collaudátio.

Confitémini Dómino in cíthara : * in psaltério decem chordárum psállite illi.

Cantáte ei cánticum novum : * benè psállite ei in vociferatióne.

Quia rectum est verbum Dómini, * & ómnia ópera ejus in fide.

Díligit misericórdiam & judícium : * misericórdiâ Dómini plena est terra ;

Verbo Dómini cœli firmáti sunt ; * & spíritu oris ejus omnis virtus eórum.

Cóngregans sicut in utre aquas maris ; * ponens in thesáuris abyssos.

Tímeat Dóminum omnis terra : * ab eo autem commoveántur omnes inhabitántes orbem.

Quóniam ipse dixit, & facta sunt : * ipse mandávit, & creáta sunt.

Dóminus díssipat consília Géntium ; * réprobat autem cogitatiónes populórum, & réprobat consília príncipum.

Consílium autem Dómini in ætérnum manet : * cogitatiónes cordis ejus in generatióne & generatiónem.

*Divisio Psalmi 32.*

BEáta gens, cujus est Dóminus Deus ejus; * pópulus quem elégit in hereditátem sibi.

De cœlo respéxit Dóminus,* vidit omnes fílios hóminum.

De præparáto habitáculo suo * respéxit super omnes, qui hábitant terram.

Qui finxit singillátim corda eórum : * qui intélligit ómnia ópera eórum.

Non salvátur rex per multam virtútem ; * & gigas non salvábitur in multitúdine virtútis suæ.

Fallax equus ad salútem,* in abundántia autem virtútis suæ non salvábitur.

Ecce óculi Dómini super metuéntes eum ; * & in eis qui sperant super misericórdia ejus.

Ut éruat à morte ánimas eórum, * & alat eos in fame.

A'nima nostra sústinet Dóminum; * quóniam adjútor & protéctor noster est.

Quia in eo lætábitur cor nostrum; * & in nómine sancto ejus sperávimus.

Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos; * quemádmodum sperávimus in te.

*Ant.* Beáta gens, cujus est Dóminus Deus ejus. *Ps.32.12.*

IN II. NOCTURNO.

*Per Annum, Ant.* 2. d. Benedíctus.

*Psalmus 67.*

EXúrgat Deus, & dissipéntur inimíci ejus; * & fúgiant qui odérunt eum, à fácie ejus.

Sicut déficit fumus, defíciant: * sicut fluit cera à fácie ignis, sic péreant peccatóres à fácie Dei.

Et justi epuléntur, & exúltent in conspéctu Dei, * & delectént ur in lætítia.

Cantáte Deo, psalmum dícite nómini ejus: * iter fácite ei, qui ascéndit super occásum, Dóminus nomen illi.

Exultáte in conspéctu ejus; * turbabúntur à fácie ejus, patris orphanórum, & júdicis viduárum.

Deus in loco sancto suo; * Deus, qui inhabitáre facit unius moris in domo;

Qui edúcit vinctos in fortitúdine, * simíliter eos, qui exásperant, qui hábitant in sepúlcris.

Deus cùm egrederéris in conspéctu pópuli tui, * cùm pertransíres in desérto,

Terra mota est, étenim cœli distillavérunt à fácie Dei Sínaï, * à fácie Dei I'sraël.

Plúviam voluntáriam segregábis, Deus, hereditáti tuæ; * & infirmáta est, tu verò perfecísti eam.

Animália tua habitábunt in ea; * parásti in dulcédine tua páuperi, Deus.

*Divisio Psalmi 67.*

DO'minus dabit verbum evangelizántibus * virtúte multâ.

Rex virtútum diléсti, dilécti, * & speciéi domûs divídere spólia.

Si dormiátis inter médios cleros, pennæ colúmbæ deargentátæ, * & posterióra dorsi ejus in pallóre auri.

Dùm discérnit cœléstis reges super eam, * nive dealbabúntur in Selmon.

Mons Dei, mons pinguis; * mons coagulátus, mons pinguis.

Ut quid suspicámini montes coagulátos? * mons in quo beneplácitum est Deo habitáre in eo: étenim Dóminus habitábit in finem.

Currus Dei decem míllibus múltiplex, míllia lætántium: * Dóminus in eis in Sina, in sancto.

Ascendísti in altum, cepísti captivitátem; * accepísti dona in homínibus.

E'tenim non credéntes * inhabitáre Dóminum Deum.

Benedíctus Dóminus die

quotídiè : * prósperum iter fáciet nobis Deus salutárium nostrórum.

Deus noster, Deus salvos faciéndi; * & Dómini Dómini éxitus mortis.

Verúntamen Deus confrínget cápita inimícorum suórum, * vérticem capílli perambulántium in delíctis suis.

Dixit Dóminus : Ex Basan convértam, * convértam in profúndum maris;

Ut intingátur pes tuus in sánguine, * lingua canum tuórum ex inimícis, ab ipso.

Vidérunt ingréssus tuos, Deus, * ingréssus Dei mei, Regis mei qui est in sancto.

Prævenérunt príncipes conjúncti psalléntibus, * in médio juvenculárum tympanistriárum.

*Altera divisio Psalmi 67.*

IN ecclésiis benedícite Deo Dómino, * de fóntibus Ísraël.

Ibi Bénjamin adolescéntulus, * in méntis excéssu.

Príncipes Juda, duces eórum; * príncipes Zábulon, príncipes Néphthali.

Manda, Deus, virtúti tuæ; * confírma hoc, Deus, quod operátus es in nobis.

A templo tuo in Jerúsalem, * tibi ófferent reges múnera.

Íncrepa feras arúndinis, congregátio taurórum in vaccis populórum, * ut exclúdant eos, qui probáti sunt argénto.

Díssipa Gentes quæ bella volunt; vénient legáti ex Ægýpto; * Æthiópia prævéniet manus ejus Deo.

Regna terræ, cantáte Deo; * psállite Dómino.

Psállite Deo, qui ascéndit super cœlum cœli, * ad Oriéntem.

Ecce dabit voci suæ vocem virtútis, * date glóriam Deo.

Super Ísraël magnificéntia ejus, * & virtus ejus in núbibus.

Mirábilis Deus in sanctis suis, Deus Ísraël ipse dabit virtútem & fortitúdinem plebi suæ : * benedíctus Deus.

*Ant.* Benedíctus Dóminus die quotídiè. *v.* 20.

IN III. NOCTURNO.

*Per Annum*, *Ant.* 3. & Sanctus.

*Psalmus* 96.

DÓminus regnávit; exúltet terra, * lætentur ínsulæ multæ.

Nubes & calígo in circúitu ejus, * justítia & judícium corréctio sedis ejus.

Ignis ante ipsum præcédet, * & inflammábit in circúitu inimícos ejus.

Illuxérunt fúlgura ejus orbi terræ, * vidit, & commóta est terra.

Montes ſicut cera fluxérunt à fácie Dómini, * à fácie Dómini omnis terra.

Annuntiavérunt cœli juſtítiam ejus, * & vidérunt omnes pópuli glóriam ejus.

Confundántur omnes, qui adórant ſculptília, * & qui gloriántur in ſimulácris ſuis.

Adoráte eum, omnes A'ngeli ejus: * audívit, & lætáta eſt Sion.

Et exultavérunt fíliæ Judæ, * propter judícia tua, Dómine;

Quóniam tu Dóminus altíſſimus ſuper omnem terram, * nimis exaltátus es ſuper omnes deos.

Qui dilígitis Dóminum, odíte malum: * cuſtódit Dóminus ánimas ſanctórum ſuórum, de manu peccatóris liberábit eos.

Lux orta eſt juſto, * & rectis corde lætítia.

Lætámini juſti in Dómino, * & confitémini memóriæ ſanctificatiónis ejus.

*Pſalmus* 97.

CAntáte Dómino cánticum novum, * quia mirabília fecit.

Salvávit ſibi déxtera ejus, * & bráchium ſanctum ejus.

Notum fecit Dóminus ſalutáre ſuum; * in conſpéctu Géntium revelávit juſtítiam ſuam.

Recordátus eſt miſericórdiæ ſuæ, * & veritátis ſuæ dómui I'ſraël.

Vidérunt omnes términi terræ * ſalutáre Dei noſtri.

Jubiláte Deo omnis terra, * cantáte, & exultáte, & pſállite.

Pſállite Dómino in cíthara, * in cíthara & voce pſalmi.

In tubis ductílibus, & voce tubæ córneæ, * jubiláte in conſpéctu regis Dómini.

Moveátur mare, & plenitúdo ejus; * orbis terrárum, & qui hábitant in eo.

Flúmina plaudent manu, ſimul montes exultábunt à conſpéctu Dómini, * quóniam venit judicáre terram.

Judicábit orbem terrárum in juſtítia, * & pópulos in æquitáte.

*Pſalmus* 98.

DO'minus regnávit, iraſcántur pópuli; * qui ſedet ſuper Chérubim, moveátur terra.

Dóminus in Sion magnus, * & excélſus ſuper omnes pópulos.

Confiteántur nómini tuo magno, * quóniam terríbile & ſanctum eſt.

Et honor Regis judícium díligit; * tu paráſti directiónes, judícium & juſtítiam in Jacob tu feciſti.

Exaltáte Dóminum Deum noſtrum, & adoráte ſcabél-

lum pedum ejus; * quóniam sanctum est.

Móyses & A'aron in sacerdótibus ejus, * & Sámuel inter eos, qui invocant nomen ejus.

Invocábant Dóminum, & ipse exaudiébat eos; * in colúmna nubis loquebátur ad eos.

Custodiébant testimónia ejus, * & præcéptum quod dedit illis.

Dómine Deus noster, tu exaudiébas eos; * Deus, tu propítius fuísti eis, & ulcíscens in omnes adinventiónes eórum.

Exaltáte Dóminum Deum nostrum, & adoráte in monte sancto ejus; * quóniam sanctus Dóminus Deus noster.

*Ant.* Sanctus Dóminus Deus noster. *v.* 9.

*Per Annum.* ℣. In die mandávit Dóminus misericórdiam suam; ℞. Et nocte cánticum ejus. *Psal.* 41. 9.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Adjútor meus, tibi psallam, ℞. Quia Deus suscéptor meus es. *Ps.* 58. 18.

Deus in adjutórium meum inténde.

*Per Annum*, *Ant.* 1. d. Tu es.

*Psalmus* 43.

DEus, áuribus nostri audívimus, patres nostri annuntiavérunt nobis opus, * quod operátus es in diébus eórum & in diébus antíquis.

Manus tua Gentes dispérdidit, & plantásti eos: * afflixísti pópulos, & expulísti eos.

Nec enim in gládio suo possedérunt terram, * & bráchium eórum non salvávit eos;

Sed déxtera tua, & bráchium tuum, & illuminátio vultûs tui; * quóniam complacuísti in eis.

Tu es ipse Rex meus, & Deus meus, * qui mandas salútes Jacob.

In te inimícos nostros ventilábimus cornu, * & in nómine tuo spernémus insurgéntes in nobis.

Non enim in arcu meo sperábo; * & gládius meus non salvábit me.

Salvásti enim nos de affligéntibus nos, * & odiéntes nos confudísti.

*Ant.* Tu es ipse Rex meus, & Deus meus, qui mandas salútes Jacob. *v.* 5.

*Ant.* 2. d. In Deo.

*Divisio Psalmi* 43.

IN Deo laudábimur totâ die; * & in nómine tuo confitébimur in séculum.

Nunc autem repulísti & confudísti nos; * & non egrediéris, Deus, in virtútibus nostris.

Avertísti nos retrórsum post inimícos nostros; * & qui odérunt nos, diripiébant sibi.

Dedísti nos tanquam oves escárum, * & in Géntibus dispersísti nos.

Vendidísti pópulum tuum sine prétio; * & non fuit multitúdo in commutatiónibus eórum.

Posuísti nos oppróbrium vicínis nostris, * subsannatiónem & derísum his, qui sunt in circúitu nostro.

Posuísti nos in similitúdinem Géntibus, * commotiónem cápitis in pópulis.

Totâ die verecúndia mea contra me est, * & confúsio faciéi meæ coopéruit me,

A voce exprobrántis, & obloquéntis, * à fácie inimíci, & persequéntis.

Hæc ómnia venérunt super nos, nec oblíti sumus te, * & iniquè non égimus in testaménto tuo.

Et non recéssit retrò cor nostrum, * & declinásti sémitas nostras à via tua;

Quóniam humiliásti nos in loco afflictiónis, * & coopéruit nos umbra mortis.

*Ant.* In Deo laudábimur totâ die. *v.* 9.

*Ant.* 3. c. Exúrge.

*Altera divisio Psalmi* 43.

SI oblíti sumus nomen Dei nostri, * & si expándimus manus nostras ad Deum aliénum,

Nonne Deus requíret ista?* ipse enim novit abscóndita cordis.

Quóniam propter te mortificámur totâ die, * æstimáti sumus sicut oves occisiónis.

Exúrge, quare obdórmis, Dómine: * exúrge, & ne repéllas in finem.

Quare fáciem tuam avértis, * oblivísceris inópiæ nostræ & tribulatiónis nostræ?

Quóniam humiliáta est in púlvere ánima nostra; * conglutinátus est in terra venter noster.

Exúrge, Dómine, ádjuva nos, * & rédime nos propter nomen tuum.

*Ant.* Exúrge, quare obdórmis, Dómine: exúrge, & ne repéllas in finem. *v.* 23.

*Ant.* 5. a. Adónaï.

*Canticum Judith.* 16. 2.

INcípite Dómino in tympanis, * cantáte Dómino in cymbalis.

Moduláṁini illi psalmum novum; * exaltáte, & invocáte nomen ejus.

Dóminus cónterens bella, * Dóminus nomen est illi.

Qui pósuit castra sua in médio pópuli sui, * ut erí-

peret nos de manû ómnium inimicórum nostrórum.

Hymnum cantémus Dómino, * hymnum novum cantémus Deo nostro.

Adónaï Dómine, magnus es tu, * & præclárus in virtúte tua, & quem superáre nemo potest.

Tibi sérviat omnis creatúra tua: * quia dixísti, & facta sunt:

Misísti Spíritum tuum, & creáta sunt, * & non est qui resístat voci tuæ.

Montes à fundaméntis movebúntur cum aquis: * petræ, sicut cera, liquéscent ante fáciem tuam.

Qui autem timent te, * magni erunt apud te per ómnia.

*Ant.* Adónaï Dómine, magnus es tu, & præclárus in virtúte tua. *v.* 16.

[*In Festis, loco superioris Cantici, dicitur sequens Canticum.*

*Eccli.* 39. 19.

COllaudáte cánticum, * & benedícite Dóminum in opéribus suis.

Date nómini ejus magnificéntiam, * & confitémini illi in voce labiórum vestrórum, & in cánticis labiórum, & cítharis,

Et sic dicétis in confessióne: * Opera Dómini univérsa bona valde.

In verbo ejus stetit aqua sicut congéries: * & in sermóne oris illíus sicut exceptória aquárum:

Quóniam in præcépto ipsíus placor fit, * & non est minorátio in salúte ipsíus.

O'pera omnis carnis coram illo, * & non est quidquam abscónditum ab óculis ejus.

A século usque in séculum réspicit, * & nihil est mirábile in conspéctu ejus.]

*Ant.* 8. c. Deo nostro.

*Psalmus* 146.

LAudáte Dóminum quóniam bonus est psalmus; * Deo nostro sit jucúnda decoráque laudátio.

Ædíficans Jerúsalem Dóminus, * dispersiónes Israélis congregábit.

Qui sanat contrítos corde, * & álligat contritiónes eórum.

Qui númerat multitúdinem stellárum, * & ómnibus eis nómina vocat.

Magnus Dóminus noster, & magna virtus ejus, * & sapiéntiæ ejus non est númerus.

Suscípiens mansuétos Dóminus; * humílians autem peccatóres usque ad terram.

Præcínite Dómino in confessióne; * psállite Deo nostro in cíthara.

Qui óperit cœlum núbibus, *

bus, * & parat terræ plúviam.

Qui prodúcit in móntibus fœnum, * & herbam servitúti hóminum.

Qui dat juméntis escam ipsórum, * & pullis corvórum invocántibus eum.

Non in fortitúdine equi voluntátem habébit; * nec in tíbiis viri beneplácitum erit ei.

Beneplácitum est Dómino super timéntes eum, * & in eis qui sperant super misericórdia ejus.

*Ant.* Deo nostro sit jucúnda, decoráque laudátio. *v.* I.

*Per Annum, Capitulum. Rom.* 15. 4.

QUæcúnque scripta sunt, ad nostram doctrínam scripta sunt, ut per patiéntiam, & consolatiónem Scripturárum spem habeámus.

*Per Annum. Hymnus.*

NOx, & tenébræ, & núbila,
Confúsa mundi, & túrbida:
Lux intrat; albéscit polus:
Christus venit: discédite.

Caligo terræ scinditur
Percússa solis spículo,
Rebúsque jam color redit
Vultu niténtis síderis.

Te, Christe, solum nóvimus;
Te, mente purâ & símplici,
Flendo, & canéndo, quæsumus,
Inténde nostris sénsibus.

*Pars Vernalis.*

Sunt multa fucis íllita,
Quæ luce purgéntur tuâ;
Tu vera lux cœléstium,
Vultu seréno illúmina.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum*, ℣. Exultábo manè misericórdiam tuam, Dómine; ℟. Quia factus es suscéptor meus. *Psal.* 58. 17.

*Per Annum, Ad* Benedíctus. *Ant.* 6. *f.* Jusjurándum jurávit ad A'braham patrem nostrum, datúrum se nobis. *Luc.* 1. 73.

*Preces, quando dicuntur, & Suffragia habentur supra in Laudibus Feriæ secundæ pag.* 46. 47.

## AD PRIMAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

Jam lucis orto sídere, &c. *ut suprà. pag.* 49.

*Ant.* I. a. Non avértas.

*Psalmus* 101.

DO'mine, exáudi oratiónem meam; * & clamor meus ad te véniat.

Non avértas fáciem tuam à me; * in quacúnque die tríbulor, inclína ad me aurem tuam.

In quacúnque die invoca-

vero te, * velóciter exáudi me.

Quia defecérunt ſicut fumus dies mei; * & oſſa mea ſicut crémium aruérunt.

Percúſſus ſum ut fœnum, & áruit cor meum; * quia oblítus ſum comédere panem meum.

A voce gémitûs mei * adhæſit os meum carni meæ.

Símilis factus ſum pellicáno ſolitúdinis; * factus ſum ſicut nyctícorax in domicílio.

Vigilávi, * & factus ſum ſicut paſſer ſolitárius in tecto.

Totâ die exprobrábant mihi inimíci mei; * & qui laudábant me, advérsùm me jurábant.

Quia cínerem tanquam panem manducábam, * & potum meum cum fletu miſcébam.

A fácie iræ & indignatiónis tuæ; * quia élevans alliſiſti me.

Dies mei ſicut umbra declinavérunt; * & ego ſicut fœnum árui.

Tu autem, Dómine, in ætérnum pérmanes; * & memoriále tuum in generatiónem & generatiónem.

*Diviſio Pſalmi* 101.

TU exúrgens miſeréberis Sion, * quia tempus miſeréndi ejus, quia venit tempus.

Quóniam placuérunt ſervis tuis lápides ejus; * & terræ ejus miſerebúntur.

Et timébunt Gentes nomen tuum, Dómine, * & omnes reges terræ glóriam tuam.

Quia ædificávit Dóminus Sion, * & vidébitur in glória ſua.

Reſpéxit in oratiónem humílium, * & non ſprevit precem eórum.

Scribántur hæc in generatióne áltera; * & pópulus, qui creábitur, laudábit Dóminum.

Quia proſpéxit de excélſo ſancto ſuo: * Dóminus de cœlo in terram aſpéxit.

Ut audíret gémitus compeditórum, * ut sólveret fílios interemptórum.

Ut annúntient in Sion nomen Dómini, * & laudem ejus in Jerúſalem.

In conveniéndo pópulos in unum & reges, * ut ſérviant Dómino.

Reſpóndit ei in via virtútis ſuæ: * Paucitátem diérum meórum núntia mihi.

Ne révoces me in dimídio diérum meórum, * in generatiónem & generatiónem anni tui.

*Altera diviſio Pſalmi* 101.

INítio tu, Dómine, terram fundáſti; * & ópera mánuum tuárum ſunt cœli.

Ipſi períbunt, tu autem

permanes; * & omnes sicut vestiméntum veteráscent.

Et sicut opertórium mutábis eos, & mutabúntur: * tu autem idem ipse es, & anni tui non defícient.

Fílii servórum tuórum habitábunt, * & semen eórum in séculum dirigétur.

*Ant.* Non avértas fáciem tuam à me; in quacúnque die tribulor, inclína ad me aurem tuam. *v.* 3.

*Per Annum, Capitulum.* *Eccli.* 2. 9. 11.

QUi timétis Dóminum, speráte in illum, & in oblectatiónem véniet vobis misericórdia. Scitóte, quia nullus sperávit in Dómino, & confúsus est.

℟. *br.* Christe fili Dei vivi, &c.

*Et Preces habentur suprà* *pag.* 51.

## AD TERTIAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium meum inténde, &c.

*Hymnus.*

NUNC sancte &c. *pag.* 54.

*Ant.* 2. d. Voluntáriè.

*Psalmus* 49.

DEus deórum Dóminus locútus est, & vocávit terram, * à solis órtu usque ad occásum.

Ex Sion spécies decóris ejus: * Deus manifèstè véniet: Deus noster, & non silébit.

Ignis in conspéctu ejus exardéscet; * & in circúitu ejus tempéstas válida.

Advocábit cœlum desúrsùm, & terram, * discérnere pópulum suum.

Congregáte illi sanctos ejus, * qui órdinant testaméntum ejus super sacrifícia.

Et annuntiábunt cœli justítiam ejus, * quóniam Deus judex est.

Audi pópulus meus, & loquar; I'sraël, & testificábor tibi; * Deus Deus tuus ego sum.

Non in sacrifíciis tuis árguam te: * holocáusta autem tua in conspéctu meo sunt semper.

Non accípiam de domo tua vítulos, * neque de grégibus tuis hircos.

Quóniam meæ sunt omnes feræ silvárum, * juménta in móntibus & boves.

Cognóvi ómnia volatília cœli; * & pulcritúdo agri mecum est.

Si esuríero, non dicam tibi; * meus est enim orbis terræ, & plenitúdo ejus.

Nunquid manducábo carnes taurórum? * aut sánguinem hircórum potábo?

I'mmola Deo sacrifícium laudis, * & redde Altíssimo vota tua.

Et invoca me in die tribu-

latiónis: * éruam te, & honorificábis me.

*Divisio Psalmi 49.*

PEccatóri autem dixit Deus: * Quare tu enárras justítias meas, & assúmis testaméntum meum per os tuum?

Tu verò odísti disciplínam, * & projecísti sermónes meos retrórsùm.

Si vidébas furem, currébas cum eo, * & cum adúlteris pórtionem tuam ponébas.

Os tuum abundávit malítiâ; * & lingua tua concinnábat dolos.

Sedens advérsùs fratrem tuum loquebáris, & advérsùs fílium matris tuæ ponébas scándalum; * hæc fecísti, & tácui.

Existimásti, iníque, quòd ero tui símilis: * árguam te, & státuam contra fáciem tuam.

Intellígite hæc qui obliviscímini Deum; * ne quando rápiat, & non sit qui erípiat.

Sacrifícium laudis honorificábit me: * & illic iter, quo osténdam illi salutáre Dei.

*Psalmus 53.*

DEus, in nómine tuo salvum me fac, * & in virtúte tua júdica me.

Deus, exáudi oratiónem meam, * áuribus pércipe verba oris mei;

Quóniam aliéni insurrexérunt advérsùm me, & fortes quæsiérunt ánimam meam, * & non proposuérunt Deum ante conspéctum suum.

Ecce enim Deus ádjuvat me, * & Dóminus suscéptor est ánimæ meæ.

Avérte mala inimícis meis,* & in veritáte tua dispérde illos.

Voluntáriè sacrificábo tibi, * & confitébor nómini tuo, Dómine, quóniam bonum est;

Quóniam ex omni tribulatióne eripuísti me; * & super inimícos meos despéxit óculus meus.

*Ant.* Voluntáriè sacrificábo tibi, & confitébor nómini tuo, Dómine. *v.* 8.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Pet.* 3. 15.

CHaríssimi: Dóminum Christum sanctificáte in córdibus vestris, paráti semper ad satisfactiónem omni poscénti vos ratiónem de ea, quæ in vobis est, spe.

℟. *br.* Ego dixi, * Dómine, miserére mei; *Repet.* Ego dixi; * Dómine, miserére mei, ℣. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi. * Dómine, miserére mei. ℣. Glória Patri & Fílio, & Spirítui sancto. *Repetitur*, Ego. *Psal.* 40. 5.

℣. Adjútor meus esto, ne derelínquas me; ℟. Neque

despícias me, Deus salutáris meus. *Psal. 26. 9.*

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag. 56.*

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD SEXTAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium. &c.

*Hymnus.*

Rector potens &c. *pag. 57.*

*Ant. 6. f.* Bénedic.

*Psalmus 100.*

MIsericórdiam & judícium * cantábo tibi, Dómine.

Psallam & intélligam in via immaculáta, * quando vénies ad me.

Perambulábam in innocéntia cordis mei, * in médio domûs meæ.

Non proponébam ante óculos meos rem injústam, * faciéntes prævaricatiónes odívi.

Non adhæsit mihi cor pravum, * declinántem à me malignum non cognoscébam.

Detrahéntem secrétò próximo suo, * hunc persequébar.

Supérbo óculo & insatiábili corde, * cum hoc non edébam.

O'culi mei ad fidéles terræ, ut sédeant mecum; * ámbulans in via immaculáta, hic mihi ministrábat.

Non habitábit in médio domûs meæ qui facit supérbiam; * qui lóquitur iníqua, non diréxit in conspéctu oculórum meórum.

In matutíno interficiébam omnes peccatóres terræ, * ut dispérderem de civitáte Dómini omnes operántes iniquitátem.

*Psalmus 102.*

BE'nedic, ánima mea, Dómino, * & ómnia, quæ intra me sunt, nómini sancto ejus.

Bénedic, ánima mea, Dómino, * & noli oblivísci omnes retributiónes ejus.

Qui propitiátur ómnibus iniquitátibus tuis, * qui sanat omnes infirmitátes tuas.

Qui rédimit de intéritu vitam tuam, * qui corónat te in misericórdia & miseratiónibus.

Qui replet in bonis desidérium tuum: * renovábitur ut áquilæ juvéntus tua.

Fáciens misericórdias Dóminus, * & judícium ómnibus injúriam patiéntibus.

Notas fecit vias suas Móysi, * fíliis I'sraël voluntátes suas.

Miserátor, & miséricors Dóminus, * longánimis, & multùm miséricors.

Non in perpétuum irascétur, * neque in ætérnum comminábitur.

Non secúndùm peccáta nostra fecit nobis, * neque secúndùm iniquitátes nostras retríbuit nobis.

Quóniam secúndùm altitúdinem cœli à terra, * corroborávit misericórdiam suam super timéntes se.

Quantùm distat Ortus ab Occidénte, * longè fecit à nobis iniquitátes nostras.

*Divisio Psalmi* 102.

QUómodò miserétur pater filiórum, misértus est Dóminus timéntibus se, * quóniam ipse cognóvit figméntum nostrum.

Recordátus est quóniam pulvis sumus; * homo sicut fœnum dies ejus, tanquam flos agri sic efflorébit.

Quóniam spíritus pertransíbit in illo, & non subsístet, * & non cognóscet ámplius locum suum.

Misericórdia autem Dómini ab ætérno, * & usque in ætérnum super timéntes eum.

Et justítia illíus in fílios filiórum, * his qui servant testaméntum ejus;

Et mémores sunt mandatórum ipsíus, * ad faciéndum ea.

Dóminus in cœlo parávit sedem suam; * & regnum ipsíus ómnibus dominábitur.

Benedícite Dómino, omnes A'ngeli ejus, potentes virtúte, faciéntes verbum illíus, * ad audiéndam vocem sermónum ejus.

Benedícite Dómino, omnes virtútes ejus, * minístri ejus, qui fácitis voluntátem ejus.

Benedícite Dómino, ómnia ópera ejus, in omni loco dominatiónis ejus; * bénedic, ánima mea, Dómino.

*Ant.* Bénedic, ánima mea, Dómino. *v.* 22.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Joan.* 3. 2. 3.

CHaríssimi, nunc fílii Dei sumus: & nondum appáruit quid érimus. Scimus quóniam cùm apparúerit, símiles ei érimus, quóniam vidébimus eum sícuti est. Et omnis qui habet hanc spem in eo, sanctíficat se, sicut & ille sanctus est.

℟. *br.* Benedícam Dóminum * In omni témpore. *Repetit.* Benedícam Dóminum * In omni témpore. ℣. Semper laus ejus in ore meo * In omni témpore. ℣. Glória. *Repet.* Benedícam. *Psal.* 33. 2.

℣. Laudábo Dóminum in vita mea, ℟. Psallam Deo meo quándiù fúero. *Psal.* 145. 2.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam, pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

AD NONAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

Rerum, Deus, &c. pag. 59.

*Ant.* 2. d. A'djuva me.

*Psalmus* 108.

Deus, laudem meam ne tacúeris; * quia os peccatóris, & os dolósi super me apértum est.

Locúti sunt advérsùm me linguâ dolósâ, & sermónibus ódii circundedérunt me, * & expugnavérunt me gratis.

Pro eo ut me diligerent, detrahébant mihi; * ego autem orábam.

Et posuérunt advérsùm me mala pro bonis, * & ódium pro dilectióne mea.

Constitue super eum peccatórem; * & diábolus stet à dextris ejus.

Cùm judicátur, éxeat condemnátus; * & orátio ejus fiat in peccátum.

Fiant dies ejus pauci; * & episcopátum ejus accípiat alter.

Fiant filii ejus órphani, * & uxor ejus vídua.

Nutántes transferántur filii ejus, & mendícent, * & ejiciántur de habitatiónibus suis.

Scrutétur fœnerátor omnem substántiam ejus; * & dirípiant aliéni labóres ejus.

Non sit illi adjútor; * nec sit qui misereátur pupíllis ejus.

*Divisio Psalmi* 108.

Fiant nati ejus in intéritum; * in generatióne una deleátur nomen ejus.

In memóriam rédeat iniquitas patrum ejus in conspéctu Dómini; * & peccátum matris ejus non deleátur.

Fiant contra Dóminum semper, & dispéreat de terra memória eórum; * pro eo quòd non est recordátus fácere misericórdiam.

Et persecútus est hóminem inopem, & mendícum, * & compúnctum corde mortificáre.

Et diléxit maledictiónem, & véniet ei; * & nóluit benedictiónem, & elongábitur ab eo.

Et induit maledictiónem sicut vestiméntum, * & intrávit sicut aqua in interióra ejus, & sicut óleum in óssibus ejus.

Fiat ei sicut vestiméntum, quo operítur, * & sicut zona, quâ semper præcíngitur.

Hoc opus eórum, qui détrahunt mihi apud Dóminum, * & qui loquúntur mala advérsùs ánimam meam.

Et tu, Dómine, Dómine, fac mecum propter nomen tuum, * quia suávis est misericórdia tua.

*Altera divisio Psalmi* 108.

LIbera me, quia egénus & pauper ego sum; * & cor meum conturbátum est intra me.

Sicut umbra cùm declinat ablátus sum, * & excússus sum sicut locústæ.

Génua mea infirmáta sunt à jejúnio; * & caro mea immutáta est propter óleum.

Et ego factus sum oppróbrium illis, * vidérunt me, & movérunt cápita sua.

A'djuva me, Dómine Deus meus; * salvum me fac secúndùm misericórdiam tuam,

Et sciant quia manus tua hæc, * & tu, Dómine, fecísti eam.

Maledícent illi, & tu benedíces; * qui insúrgunt in me, confundántur; servus autem tuus lætábitur.

Induántur, qui détrahunt mihi, pudóre; * & operiántur sicut diplóide confusióne suâ.

Confitébor Dómino nimis in ore meo, * & in médio multórum laudábo eum;

Quia ástitit à dextris páuperis, * ut salvam fáceret à persequéntibus ánimam meam.

*Ant.* A'djuva me, Dómine Deus meus, salvum me fac secúndùm misericórdiam tuam. *ѵ.* 26.

*Per Annum, Capitulum, Heb.* 10. 35.

FRatres; Nolíte amíttere confidéntiam vestram, quæ magnam habet remuneratiónem. Patiéntia enim vobis necessária est; ut voluntátem Dei faciéntes, reportétis promissiónem.

℟. *br.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine; *Repet.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine. ℣. Et ab aliénis parce servo tuo. * Munda me, Dómine. ℣. Glória Patri, *Repet.* Ab occúltis. *Psal.* 18, 13. 14.

℣. Pérfice gressus meos in sémitis tuis, ℟. Ut non moveántur vestígia mea. *Ps.* 16. 5.

*Preces, si dicenda sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

AD VESPERAS.

Pater, Ave.

Deus in adjutórium, &c.

*Ant.* 8. c. Beáti.

*Psalmus* 127.

BEáti omnes qui timent Dóminum, * qui ámbulant in viis ejus.

Labóres mánuum tuárum quia manducábis, * beátus es, & benè tibi erit.

Uxor tua sicut vitis abúndans, * in latéribus domûs tuæ.

Fílii tui sicut novéllæ olivárum, * in circúitu mensæ tuæ.

Ecce ſic benedicétur homo, * qui timet Dóminum.

Benedícat tibi Dóminus ex Sion; * & vídeas bona Jerúſalem ómnibus diébus vitæ tuæ.

Et vídeas fílios filiórum tuórum, * pacem ſuper Iſraël.

*Ant.* Beáti omnes qui timent Dóminum. *v.* 1.

*Ant.* 3. c. Confundántur.

*Pſalmus* 128.

SÆpè expugnavérunt me à juventúte mea, * dicat nunc Iſraël.

Sæpè expugnavérunt me à juventúte mea; * étenim non potuérunt mihi.

Supra dorſum meum fabricavérunt peccatóres; * prolongavérunt iniquitátem ſuam.

Dóminus juſtus concídit cervíces peccatórum: * confundántur, & convertántur retrórſum omnes qui odérunt Sion.

Fiant ſicut fœnum tectórum: * quod priúſquam evellátur, exáruit;

De quo non implévit manum ſuam qui metit, * & ſinum ſuum qui manípulos cólligit.

Et non dixérunt qui præteribant; Benedíctio Dómini ſuper vos, * benedíximus vobis in nómine Dómini.

*Ant.* Confundántur omnes qui odérunt Sion. *v.* 5.

*Ant.* 3. g. Sperávit.

*Pſalmus* 129.

DE profúndis clamávi ad te, Dómine: * Dómine, exáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendéntes, * in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes obſerváveris, Dómine: * Dómine, quis ſuſtinébit?

Quia apud te propitiátio eſt; * & propter legem tuam ſuſtínui te, Dómine.

Suſtínuit ánima mea in verbo ejus, * ſperávit ánima mea in Dómino.

A cuſtódia matutína uſque ad noctem, * ſperet Iſraël in Dómino.

Quia apud Dóminum miſericórdia, * & copióſa apud eum redémptio.

Et ipſe rédimet Iſraël, * ex ómnibus iniquitátibus ejus.

*Ant.* Sperávit ánima mea in Dómino. *v.* 5.

*Ant.* 4. a. Speret.

*Pſalmus* 130.

DOmine, non eſt exaltátum cor meum; * neque eláti ſunt óculi mei.

Neque ambulávi in magnis, * neque in mirabílibus ſuper me.

Si non humíliter ſentiébam; * ſed exaltávi ánimam meam;

Sicut ablactátus est super matre sua, * ita retribútio in ánima mea.

Speret Isráël in Dómino, * ex hoc nunc & usque in séculum.

*Ant.* Speret Isráël in Dómino. *v.* 3.

*Ant.* 1. a. Quàm bonum.

*Psalmus* 132.

ECce quàm bonum, & quàm jucúndum, * habitáre fratres in unum.

Sicut unguéntum in cápite, quod descéndit in barbam, barbam A'aron, * quod descéndit in oram vestiménti ejus.

Sicut ros Hermon, * qui descéndit in montem Sion.

Quóniam illic mandávit Dóminus benedictiónem, * & vitam usque in séculum.

*Antiph.* Quàm bonum, & quàm jucúndum habitáre fratres in unum. *v.* 1.

*Per Annum, Capitulum. Rom.* 15. 13.

DEus spei rèpleat vos omni gáudio & pace in credéndo, ut abundétis in spe, & virtúte Spíritûs sancti.

*Per Annum. Hymnus.*

QUAM grande nobis, Conditor,
Astris volúmen éxplicas!
His te poténtem flámmeis
Donas legéndum lítteris.

TE sol vocánte prósilit;
Lunâque lux reflécitur:
Stellæ micant, & síngulis
Tu certa ponis nómina.

QUI luce tantâ múneras
Terram, Deus; quàm díligi,
Quàm dignus es perénnibus
Orbis coli præcóniis!

ÆTHER quot ignes éxhibet;
Tot óribus te prædicat;
Ut prædicéris plénius,
His ora nostra júngimus.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Ad te clamávi totâ die, Dómine; ℟. Lætífica ánimam servi tui. *Psal.* 85. 3. 4.

*Ad Magnificat. Ant.* 1. a. Misericórdia ejus à progénie in progénies timéntibus eum. *Luc.* 1. 50.

*Preces, si dicendæ sint, habentur suprà. pag. 46.*

*Suffragia verò pag. 63.*

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD COMPLETORIUM.

℣. Convérte nos, Deus, &c.

Deus in adjutórium, &c.

*Per Annum, Ant.* 3. A. Consérva me.

*Psalmus* 13.

DIxit insipiens in corde suo: * Non est Deus.

Corrúpti sunt, & abomi-

nábiles facti sunt in stúdiis suis; * non est qui fáciat bonum, non est usque ad unum.

Dóminus de cœlo prospéxit super filios hóminum, * ut vídeat si est intélligens, aut requírens Deum.

Omnes declinavérunt, simul inútiles facti sunt: * non est qui fáciat bonum, non est usque ad unum.

Sepúlcrum patens est guttur eórum; linguis suis dolósè agébant; * venénum áspidum sub lábiis eórum.

Quorum os maledictióne & amaritúdine plenum est: * velóces pedes eórum ad effundéndum sánguinem.

Contrítio & infelícitas in viis eórum, & viam pacis non cognovérunt: * non est timor Dei ante óculos eórum.

Nonne cognóscent omnes qui operántur iniquitátem, * qui dévorant plebem meam sicut escam panis?

Dóminum non invocavérunt; * illic trepidavérunt timóre, ubi non erat timor.

Quóniam Dóminus in generatióne justa est: consílium inopis confudístis, * quóniam Dóminus spes ejus est.

Quis dabit ex Sion salutáre Israël? * cùm avérterit Dóminus captivitátem plebis suæ, exultábit Jacob, & lætábitur Israël.

*Psalmus* 14.

DO'mine, quis habitábit in tabernáculo tuo? * aut quis requiéscet in monte sancto tuo?

Qui ingréditur sine mácula, * & operátur justítiam;

Qui lóquitur veritátem in corde suo, * qui non egit dolum in lingua suá;

Nec fecit próximo suo malum, * & oppróbrium non accépit advérsùs próximos suos;

Ad níhilum dedúctus est in conspéctu ejus malígnus; * timéntes autem Dóminum gloríficat;

Qui jurat próximo suo, & non décipit; * qui pecúniam suam non dedit ad usúram, & múnera super innocéntem non accépit.

Qui facit hæc, * non movébitur in ætérnum.

*Psalmus* 15.

CONsérva me, Dómine, quóniam sperávi in te: * dixi Dómino: Deus meus es tu, quóniam bonórum meórum non eges.

Sanctis qui sunt in terra ejus, * mirificávit omnes voluntátes meas in eis.

Multiplicátæ sunt infirmitátes eórum; * pósteà acceleravérunt.

Non congregábo conventícula eórum de sanguínibus ; * nec memor ero nóminum eórum per lábia mea.

Dóminus pars hereditátis meæ, & cálicis mei : * tu es, qui restítues hereditátem meam mihi.

Funes cecidérunt mihi in præcláris ; * étenim heréditas mea præclára est mihi.

Benedícam Dóminum, qui tríbuit mihi intelléctum ; * ínsuper & usque ad noctem increpuérunt me renes mei.

Providébam Dóminum in conspéctu meo semper ; * quóniam à dextris est mihi, ne commóvear.

Propter hoc lætátum est cor meum, & exultávit lingua mea ; * ínsuper & caro mea requiéscet in spe.

Quóniam non derelínques ánimam meam in inférno ; * nec dabis Sanctum tuum vidére corruptiónem.

Notas mihi fecísti vias vitæ, adimplébis me lætítiâ cum vultu tuo ; * delectatiónes in déxtera tua usque in finem.

*Ant.* Consérva me, Dómine, quóniam sperâvi in te. *Psal.* 15. 1.

*Per Annum, Capitulum. Eccli.* 32. 17. 18.

BEnedícito Dóminum, qui fecit te. Qui vigiláverint ad illum invénient benedictiónem.

*Per Annum. Hymnus.*

TE lucis ante términum, &c. Nunc dimíttis. *Preces & Oratio ut suprà, pag.* 66.

## FERIA QUINTA AD OFFICIUM NOCTURNUM.

Pater. Ave. Credo.

Dómine lábia mea apéries, *ut suprà, pag.* 1.

Deus in adjutórium, &c.

*Per Annum, Invitatorium.*

Non repéllet Dóminus plebem suam : * Veníte adorémus. *Ps.* 93. 14.

*Psalmus*, Veníte, &c. *ut suprà pag.* 2.

*Per Annum. Hymnus.*

NOx atra rerum cóntegit
Terræ colóres ómnium ;
Nos confiténtes, póscimus
Te, juste Judex córdium ;

Ut áuferas piácula,
Sordésque mentis ábluas :
Donésque, Christe, grátiam,
Ut arceântur crímina.

Mens ecce torpet ímpia,
Quam culpa mordet nóxia :
Obscúra gestit tóllere,
Et te, Redémptor, quǽrere.

Qui nos creâvit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

## IN I. NOCTURNO.

*Per Annum, Ant.* 3. Cæ Deus.

*Psalmus 77.*

ATténdite, pópule meus, legem meam; * inclináte aurem vestram in verba oris mei.

Apériam in parábolis os meum; * loquar propositiónes ab inítio.

Quanta audívimus, & cognóvimus ea, * & patres nostri narravérunt nobis,

Non sunt occultáta à fíliis eórum, * in generatióne áltera.

Narrántes laudes Dómini, & virtútes ejus, * & mirabília ejus quæ fecit.

Et suscitávit testimónium in Jacob, * & legem pósuit in Iſraël.

Quanta mandávit pátribus nostris nota fácere ea fíliis suis, * ut cognóscat generátio áltera.

Fílii qui nascéntur, & exúrgent, * & narrábunt fíliis suis.

Ut ponant in Deo spem suam, & non obliviscántur óperum Dei, * & mandáta ejus exquírant.

Ne fiant sicut patres eórum, * generátio prava & exásperans;

Generátio, quæ non diréxit cor suum, * & non est créditus cum Deo spíritus ejus.

Fílii Ephrem intendéntes & mitténtes arcum, * convérsi sunt in die belli.

Non custodiérunt testaméntum Dei, * & in lege ejus noluérunt ambuláre.

Et oblíti sunt benefactórum ejus, * & mirabílium ejus, quæ osténdit eis.

Coram pátribus eórum fecit mirabília in terra Ægýpti, * in campo Táneos.

Interrúpit mare, & perdúxit eos, * & státuit aquas quasi in utre.

Et dedúxit eos in nube diéi, * & totâ nocte in illuminatióne ignis.

*Divisio Psalmi 77.*

INterrúpit petram in erémo, * & adaquávit eos velut in abýsso multa.

Et edúxit aquam de petra, * & dedúxit tanquam flúmina aquas.

Et apposuérunt adhuc peccáre ei, * in iram excitavérunt Excélsum in inaquóso.

Et tentavérunt Deum in córdibus suis, * ut péterent escas animábus suis.

Et malè locúti sunt de Deo, * dixérunt: Nunquid póterit Deus paráre mensam in desérto?

Quóniam percússit petram, & fluxérunt aquæ, * & torréntes inundavérunt.

Nunquid & panem póterit dare, * aut paráre mensam pópulo suo?

Ídeò audívit Dóminus, &

distulit; * & ignis accénsus est in Jacob, & ira ascéndit in I'sraël.

Quia non credidérunt in Deo, * nec speravérunt in salutári ejus.

Et mandávit núbibus désuper, * & jánuas cœli apéruit.

Et pluit illis manna ad manducándum, * & panem cœli dedit eis.

Panem Angelórum manducávit homo; * cibária misit eis in abundántia.

*Altera divisio Psalmi 77.*

TRánstulit Austrum de cœlo, * & indúxit in virtúte sua A'fricum.

Et pluit super eos sicut púlverem carnes, * & sicut arénam maris volatília pennáta.

Et cecidérunt in médio castrórum eórum, * circa tabernácula eórum.

Et manducavérunt & saturáti sunt nimis, & desidérium eórum áttulit eis; * non sunt fraudáti à desidério suo.

Adhuc escæ eórum erant in ore ipsórum, * & ira Dei ascéndit super eos.

Et occídit pingues eórum, * & eléctos I'sraël impedívit.

In ómnibus his peccavérunt adhuc; * & non credidérunt in mirabílibus ejus.

Et defecérunt in vanitáte dies eórum, * & anni eórum cum festinatióne.

Cùm occíderet eos, quærébant eum, & revertebántur, * & dilúculò veniébant ad eum,

Et rememoráti sunt, quia Deus adjútor est eórum, * & Deus excélsus redémptor eórum est.

Et dilexérunt eum in ore suo, * & linguâ suâ mentíti sunt ei;

Cor autem eórum non erat rectum cum eo, * nec fidéles hábiti sunt in testaménto ejus.

Ipse autem est miséricors, & propítius fiet peccátis eórum, * & non dispérdet eos.

Et abundávit ut avérteret iram suam, * & non accéndit omnem iram suam;

Et recordátus est quia caro sunt, * spíritus vadens, & non rédiens.

*Ant.* Deus excélsus ipse est miséricors, & propítius fiet peccátis. *v.* 38.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 4. f. Elégit.

*Divisio Psalmi 77.*

QUóties exacerbavérunt eum in desérto, * in iram concitavérunt eum in inaquóso?

Et convérsi sunt, & tentavérunt Deum, * & sanctum I'sraël exacerbavérunt.

Non sunt recordáti manûs ejus, * die quâ redémit eos de manu tribulántis.

Sicut pósuit in Ægypto signa sua, * & prodígia sua in campo Táneos.

Et convértit in sánguinem flúmina eórum, * & imbres eórum, ne bíberent.

Misit in eos cœnomyíam, & comédit eos, * & ranam, & dispérdidit eos.

Et dedit ærúgini fructus eórum, * & labóres eórum locústæ.

Et occídit in grándine víneas eórum, * & moros eórum in pruína.

Et trádidit grándini juménta eórum, * & possessiónem eórum igni.

Misit in eos iram indignatiónis suæ, indignatiónem, & iram, & tribulatiónem, * immissiónes per ángelos malos.

Viam fecit sémitæ iræ suæ, non pepércit à morte animábus eórum, * & juménta eórum in morte conclúsit.

Et percússit omne primogénitum in terra Ægypti, * primítias omnis labóris eórum in tabernáculis Cham.

Et ábstulit sicut oves pópulum suum, * & perdúxit eos tanquam gregem in desérto.

Et dedúxit eos in spe, & non timuérunt; * & inimícos eórum opéruit mare.

*Altera divisio Psalmi* 77. Et

INdúxit eos in montem sanctificatiónis suæ, * montem, quem acquisívit déxtera ejus.

Et ejécit à fácie eórum Gentes; * & sorte divísit eis terram in funículo distributiónis.

Et habitáre fecit in tabernáculis eórum * tribus Ísraël.

Et tentavérunt, & exacerbavérunt Deum excélsum, * & testimónia ejus non custodiérunt.

Et avertérunt se, & non servavérunt pactum quemádmodum patres eórum, * convérsi sunt in arcum pravum.

In iram concitavérunt eum in cóllibus suis; * & in sculptílibus suis ad æmulatiónem eum provocavérunt.

Audívit Deus, & sprevit; * & ad níhilum redégit valdè Ísraël.

Et répulit tabernáculum Silo, * tabernáculum suum; ubi habitávit in homínibus.

Et trádidit in captivitátem virtútem eórum, * & pulcritúdinem eórum in manus inimíci.

Et conclúsit in gládio pópulum suum, * & hereditátem suam sprevit.

Júvenes eórum comédit ignis; * & vírgines eórum non sunt lamentátæ.

Sacerdótes eórum in gládio cecidérunt; * & víduæ eórum non plorabántur.

Et excitátus est tanquam

dórmiens Dóminus, * tanquam potens crapulátus à vino.

Et percússit inimícos suos in posterióra: * oppróbrium sempitérnum dedit illis.

Et répulit tabernáculum Joseph, * & tribum E'phraïm non elégit.

Sed elégit tribum Juda, * montem Sion quem diléxit.

*Altera divisio Psal.* 77. Et

Ædificávit sicut unicórnium sanctifícium suum in terra, * quam fundávit in sécula.

Et elégit David servum suum, * & sústulit eum de grégibus óvium.

De post fœtántes accépit eum * páscere Jacob servum suum, & I'sraël hereditátem suam.

Et pavit eos in innocéntia cordis sui, * & in intelléctibus mánuum suárum dedúxit eos.

*Ant.* Elégit Dóminus tribum Juda, montem Sion quem diléxit. *v.* 68.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 5. f. Dómine.

*Psalmus* 88.

Misericórdias Dómini * in ætérnum cantábo.

In generatiónem & generatiónem * annuntiábo veritátem tuam in ore meo.

Quóniam dixísti: In ætérnum misericórdia ædificábitur in cœlis; * præparábitur véritas tua in eis.

Dispósui testaméntum eléctis meis, jurávi David servo meo: * Usque in ætérnum præparábo semen tuum;

Et ædificábo in generatiónem & generatiónem * sedem tuam.

Confitebúntur cœli mirabília tua, Dómine: * étenim veritátem tuam in ecclésia sanctórum.

Quóniam quis in núbibus æquábitur Dómino, * símilis erit Deo in fíliis Dei?

Deus, qui glorificátur in concílio sanctórum, * magnus & terríbilis super omnes qui in circúitu ejus sunt.

Dómine Deus virtútum, quis símilis tibi? * potens es, Dómine, & véritas tua in circúitu tuo.

Tu domináris potestáti maris; * motum autem flúctuum ejus tu mítigas.

Tu humiliásti sicut vulnerátum, supérbum; * in bráchio virtútis tuæ dispersísti inimícos tuos.

Tui sunt cœli, & tua est terra: * orbem terræ & plenitúdinem ejus tu fundásti.

Aquilónem, & mare tu creásti; * Thabor & Hermon in nómine tuo exultábunt.

Tuum bráchium cum poténtia; * firmétur manus tua, & exaltétur déxtera tua.

Justítia

Justítia & judícium præparátio sedis tuæ; * misericórdia & véritas præcédent fáciem tuam.

*Divisio Psalmi* 88.

BEátus pópulus, qui scit jubilatiónem; * Dómine, in lúmine vultûs tui ambulábunt;

Et in nómine tuo exultábunt totâ die, * & in justítia tua exaltabúntur.

Quóniam glória virtútis eórum tu es; * & in beneplácito tuo exaltábitur cornu nostrum.

Quia Dómini est assúmtio nostra, * & sancti Israël Regis nostri.

Tunc locútus es in visióne sanctis tuis, & dixísti: * Pósui adjutórium in poténte, & exaltávi eléctum de plebe mea.

Invéni David servum meum, * óleo sancto meo unxi eum.

Manus enim mea auxiliábitur ei, * & bráchium meum confortábit eum.

Nihil profíciet inimícus in eo, * & fílius iniquitátis non appónet nocére ei.

Et concídam à fácie ipsíus inimícos ejus, * & odiéntes eum in fugam convértam.

Et véritas mea, & misericórdia mea cum ipso; * & in nómine meo exaltábitur cornu ejus.

*Pars Vernalis.*

Et ponam in mari manum ejus, * & in flumínibus déxteram ejus.

Ipse invocábit me: Pater meus es tu, * Deus meus, & suscéptor salútis meæ.

Et ego primogénitum ponam illum * excélsum præ régibus terræ.

In ætérnum servábo illi misericórdiam meam, * & testaméntum meum fidéle ipsi.

Et ponam in séculum séculi semen ejus, * & thronum ejus sicut dies cœli.

Si autem derelíquerint fílii ejus légem meam, * & in judíciis meis non ambuláverint.

Si justítias meas profanáverint, * & mandáta mea non custodíerint.

Visitábo in virga iniquitátes eórum, * & in verbéribus peccáta eórum.

Misericórdiam autem meam non dispérgam ab eo, * neque nocébo in veritáte mea:

Neque profanábo testaméntum meum, * & quæ procédunt de lábiis meis, non fáciam írrita.

*Altera divisio Psal.* 88.

SEmel jurávi in sancto meo, si David méntiar: * semen ejus in ætérnum manébit.

Et thronus ejus sicut sol in conspéctu meo, * & sicut luna perfécta in ætérnum, & testis in cœlo fidélis.

Tu verò repulísti & despe-

xísti, * distulísti christum tuum.

Evertísti testaméntum servi tui, * profanásti in terra Sanctuárium ejus.

Destruxísti omnes sepes ejus; * posuísti firmaméntum ejus formídinem.

Diripuérunt eum omnes transeúntes viam, * factus est oppróbrium vicínis suis.

Exaltásti déxteram depriméntium eum, * lætificásti omnes inimícos ejus.

Avertísti adjutórium gládii ejus, * & non es auxiliátus ei in bello.

Destruxísti eum ab emundatióne, * & sedem ejus in terram collisísti.

Minorásti dies témporis ejus, * perfudísti eum confusióne.

Usquequò, Dómine, avértis in finem, * exardéscet sicut ignis ira tua?

Memoráre quæ mea substántia: * nunquid enim vanè constituísti omnes fílios hóminum?

Quis est homo, qui vivet, & non vidébit mortem, * éruet ánimam suam de manu ínferi?

Ubi sunt misericórdiæ tuæ antíquæ, Dómine, * sicut jurásti David in veritáte tua?

Memor esto, Dómine, oppróbrii servórum tuórum, * (quod contínui in sinu meo) multárum Géntium;

Quod exprobravérunt inimíci tui, Dómine, * quod exprobravérunt commutatiónem christi tui.

Benedíctus Dóminus in ætérnum. * Fiat, fiat.

*Ant.* Dómine Deus virtútum, quis símilis tibi. *v. 9.*

℣. Deum exquisívi, mánibus meis nocte contra eum; ℟. Et non sum decéptus. *Ps. 76. v. 3.*

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Laudábo nomen Dei cum cántico, ℟. Et magnificábo eum in laude. *Psal.* 68. 31.

Deus in adjutórium.

*Per Annum, Ant.* 3. Exultáte.

*Psalmus* 80.

EXultáte Deo adjutóri nostro, * jubiláte Deo Jacob.

Súmite psalmum, & da tympanum, * psaltérium jucúndum cum cíthara.

Buccináte in Neoménia tubâ, * in insígni die solemnitátis vestræ;

Quia præcéptum in Israel est, * & judícium Deo Jacob.

Testimónium in Joseph posuit illud, cùm exíret de terra Ægypti: * linguam quam non nóverat, audívit.

Divértit ab onéribus dorsum

sum ejus; * manus ejus in cóphino serviérunt.

In tribulatióne invocásti me, & liberávi te; * exaudívi te in abscóndito tempestátis; probávi te apud aquam contradictiónis.

Audi pópulus meus, & contestábor te: * Israël, si audíeris me, non erit in te Deus recens, neque adorábis deum aliénum.

Ego enim sum Dóminus Deus tuus, qui edúxi te de terra Ægypti; * diláta os tuum, & implébo illud.

Et non audívit pópulus meus vocem meam, * & Israël non inténdit mihi.

Et dimísi eos secúndum desidéria cordis eórum, * ibunt in adinventiónibus suis.

Si pópulus meus audísset me, * Israël si in viis meis ambulásset,

Pro níhilo fórsitan inimícos eórum humiliássem, * & super tribulántes eos misíssem manum meam.

Inimíci Dómini mentíti sunt ei; * & erit tempus eórum in sécula.

Et cibávit eos ex ádipe fruménti; * & de petra, melle saturávit eos.

*Ant.* Exultáte Deo adjutóri nostro, jubiláte Deo Jacob. *v.* 2.

*Ant.* 2. d. Psallam.

*Psalmus* 107.

PArátum cor meum, Deus, parátum cor meum; * cantábo, & psallam in glória mea.

Exúrge, glória mea, exúrge psaltérium & cíthara; * exúrgam dilúculo.

Confitébor tibi in pópulis, Dómine; * & psallam tibi in natiónibus.

Quia magna est super cœlos misericórdia tua, * & usque ad nubes véritas tua.

Exaltáre super cœlos, Deus, & super omnem terram glória tua; * ut liberéntur dilécti tui.

Salvum fac déxtera tua, * & exáudi me.

*Ant.* Psallam tibi, Dómine, quia magna est super cœlos misericórdia tua. *v.* 4. 5.

*Ant.* 6. F. Da nobis.

*Divisio Psalmi* 107.

DEus locútus est in sancto suo, exultábo, & dívidam Sichimam, * & convállem tabernaculórum dimétiar.

Meus est Galaad, & meus est Manásses, * & Ephraïm suscéptio cápitis mei;

Juda rex meus, * Moab lebes spei meæ.

In Idumæam exténdam calceaméntum meum; * mihi alienígenæ amíci facti sunt.

Quis dedúcet me in civitátem munítam? * quis dedúcet me usque in Idumæam?

Nonne tu Deus, qui repulísti nos, * & non exíbis, Deus, in virtútibus nostris?

Da nobis auxílium de tribulatióne; * quia vana salus hóminis.

In Deo faciémus virtútem; * & ipse ad níhilum dedúcet inimícos nostros.

*Ant.* Da nobis auxílium de tribulatióne; quia vana salus hóminis. *v.* 13.

*Ant.* 5. a. Convérsus est.

*Canticum Isaïæ.* 12. 1.

COnfitébor tibi, Dómine, quóniam irátus es mihi;* convérsus est furor tuus, & consolátus es me.

Ecce Deus salvátor meus,* fiduciáliter agam, & non timébo;

Quia fortitúdo mea, & laus mea Dóminus, * & factus est mihi in salútem.

Hauriétis aquas in gáudio de fóntibus salvatóris, * & dicétis in illa die: Confitémini Dómino, & invocáte nomen ejus:

Notas fácite in pópulis adinventiónes ejus: * mementóte quóniam excélsum est nomen ejus.

Cantáte Dómino, quóniam magnificè fecit: * annuntiáte hoc in univérsa terra.

Exúlta, & lauda habitátio Sion, * quia magnus in médio tui sanctus Isráël.

*Ant.* Convérsus est furor tuus, Dómine, & consolátus es me. *v.* 1.

[ *In Festis, loco superioris Cantici, dicitur sequens*

*Canticum Isaiæ.* 26. 1.

URbs fortitúdinis nostræ Sion: * Salvátor ponétur in ea, murus & antemurále.

Aperíte portas, * & ingrediátur gens justa, custódiens veritátem.

Vetus error ábiit: servábis pacem; * pacem, quia in te sperávimus.

Sperástis in Dómino in séculis ætérnis, * in Dómino Deo forti in perpétuum.

Quia incurvábit habitántes in excélso, * civitátem sublímem humiliábit.

Humiliábit eam usque ad terram, * détrahet eam usque ad púlverem.

Conculcábit eam pes, * pedes paúperis, gressus egenórum.

Sémita justi recta est, * rectus callis justi ad ambulándum.

Et in sémita judiciórum tuórum, Dómine, sustinúimus te: * nomen tuum & memoriále tuum in desidério ánimæ.

A'nima mea desiderávit te in nocte; * sed & spíritu meo in præcórdiis meis de manè vigilábo ad te.

Cùm féceris judícia tua in

terra, * justítiam discent habitatóres orbis.

Misereámur ímpio, & non discet justítiam: * in terra sanctórum iníqua gessit, & non vidébit glóriam Dómini.

Dómine, exaltétur manus tua, * & non vídeant;

Vídeant, & confundántur zelántes pópuli: * & ignis hostes tuos dévoret.

Dómine, dabis pacem nobis: * ómnia enim ópera nostra operátus es nobis.]

*Ant.* 3. c. Lauda.

*Psalmus* 147.

LAuda, Jerúsalem, Dóminum; * lauda Deum tuum Sion.

Quóniam confortávit seras portárum tuárum; * benedíxit fíliis tuis in te.

Qui pósuit fines tuos pacem; * & ádipe fruménti sátiat te.

Qui emíttit elóquium suum terræ; * velóciter currit sermo ejus.

Qui dat nivem sicut lanam; * nébulam sicut cínerem spargit.

Mittit crystállum suam sicut buccéllas; * ante fáciem frígoris ejus quis sustinébit?

Emíttet verbum suum, & liquefáciet ea; * flabit spíritus ejus, & fluent aquæ.

Qui annúntiat verbum suum Jacob, * justítias & judícia sua Israël.

Non fecit táliter omni natióni; * & judícia sua non manifestávit eis.

*Ant.* Lauda, Jerúsalem, Dóminum, lauda Deum tuum, Sion. *v.* 1.

*Per Annum, Capitulum. Heb.* 11. 1.

FRatres: Est fides sperandárum substántia rerum, arguméntum non apparéntium.

*Per Annum. Hymnus.*

LUx ecce surgit áurea:
Pallens facéssat cæcitas
Quæ nosmet in præceps diù
Erróre traxit dévio.

HÆc lux serénum cónferat,
Purósque nos præstet sibi:
Nihil loquámur súbdolum,
Volvámus obscúrum nihil.

SIc tota decúrrat dies,
Ne lingua mendax, ne manus,
Oculíve peccent lúbrici,
Ne noxa corpus ínquinet.

SPECULATOR adstat désuper,
Qui nos diébus ómnibus,
Actúsque nostros próspicit
A luce prima in vésperum.

QUi nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum.* ℣. Manè astábo tibi, Dómine, ℟. Et

videbo; quóniam non Deus volens iniquitátem tu es. *Ps.* 5. 5.

*Per Annum*, *Aa* Benedíctus, *Ant.* 5. f. Serviámus Dómino in sanctitáte & justítia ómnibus diébus nostris. *Luc.* 1. 74. 75.

*Preces quando dicuntur, & Suffragia habentur suprà in Laudibus Feria secunda. pag.* 46. 47.

AD PRIMAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

JAM lucis orto sídere, &c. *ut suprà*, *pag.* 49.

*Ant.* 2. d. Sit splendor.

*Psalmus* 66.

DEus misereátur nostri, & benedícat nobis; * illúminet vultum suum super nos, & misereátur nostri.

Ut cognoscámus in terra viam tuam, * in ómnibus Géntibus salutáre tuum.

Confiteántur tibi pópuli, Deus, * confiteántur tibi pópuli omnes.

Læténtur & exúltent Gentes, * quóniam júdicas pópulos in æquitáte, & Gentes in terra dírigis.

Confiteántur tibi pópuli, Deus, confiteántur tibi pópuli omnes; * terra dedit fructum suum.

Benedícat nos Deus, Deus noster, benedícat nos Deus; * & métuant eum omnes fines terræ.

*Psalmus* 89.

DO'mine, refúgium factus es nobis, * à generatióne in generatiónem.

Priúsquàm montes fíerent, aut formarétur terra & orbis, * à século & usque in séculum tu es Deus.

Ne avértas hóminem in humilitátem; * & dixísti: Convertímini fílii hóminum.

Quóniam mille anni ante óculos tuos, tanquam dies hestérna quæ prætériit, * & custódia in nocte.

Quæ pro níhilo habéntur, * eórum anni erunt.

Manè sicut herba tránseat, manè flóreat, & tránseat: * véspere décidat, indúret, & aréscat.

Quia defécimus in ira tua, * & in furóre tuo turbáti sumus.

Posuísti iniquitátes nostras in conspéctu tuo; * séculum nostrum in illuminatióne vultûs tui.

Quóniam omnes dies nostri defecérunt; * & in ira tua defécimus.

Anni nostri sicut aránea meditabúntur; * dies annorum nostrórum, in ipsis septuagínta anni.

Si autem in potentátibus octogínta anni; * & ámplius

eórum, labor & dolor.

Quóniam supervénit mansuetúdo, * & corripiémur.

*Divisio Psalmi* 89.

QUis novit potestátem iræ tuæ, * & præ timóre iram tuam dinumeráre?

Déxteram tuam sic notam fac, * & erudítos corde in sapiéntia.

Convértere, Dómine; úsquequò? * & deprecábilis esto super servos tuos.

Repléti sumus manè misericórdiâ tuâ: * & exultávimus, & delectáti sumus ómnibus diébus nostris.

Lætáti sumus pro diébus, quibus nos humiliásti, * annis, quibus vídimus mala.

Réspice in servos tuos, & in ópera tua, * & dírige fílios eórum.

Et sit splendor Dómini Dei nostri super nos, & ópera mánuum nostrárum dírige super nos, * & opus mánuum nostrárum dírige.

*Ant.* Sit splendor Dómini Dei nostri super nos. *Psal.* 89. 17.

*Per Annum, Capitulum. Hebr.* 11. 6.

SIne fide impossíbile est placére Deo. Crédere enim opórtet accedéntem ad Deum quia est, & inquiréntibus se remunerátor sit.

℟. *breve.* Christe fili Dei vivi, &c.

*Et Preces habentur suprà* *pag.* 51.

## AD TERTIAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium meum inténde, &c.

*Hymnus.*

NUNC sancte &c. *pag.* 54.

*Ant.* 1. d. Dómine.

*Psalmus* 41.

QUemádmodum desíderat cervus ad fontes aquárum, * ita desíderat ánima mea ad te, Deus.

Sitívit ánima mea ad Deum fortem vivum: * quando véniam & apparébo ante fáciem Dei?

Fuérunt mihi lácrymæ meæ panes die ac nocte, * dum dícitur mihi quotídiè: Ubi est Deus tuus?

Hæc recordátus sum, & effúdi in me ánimam meam, * quóniam transíbo in locum tabernáculi admirábilis, usque ad domum Dei,

In voce exultatiónis, & confessiónis, * sonus epulántis.

Quare tristis es, ánima mea, * & quare contúrbas me?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi; * salutáre vultûs mei, & Deus meus.

*Divisio Psalmi* 41.

AD meípsum ánima mea conturbáta est: * proptéreà memor ero tui de terra Jordánis, & Hermóniim à monte módico.

Abýssus abýssum invocat, * in voce cataractárum tuárum.

Omnia excélsa tua, & fluctus tui, * super me transiérunt.

In die mandávit Dóminus misericórdiam suam, * & nocte cánticum ejus.

Apud me orátio Deo vitæ meæ, * dicam Deo: Suscéptor meus es.

Quare oblítus es mei? * & quare contristátus incédo, dùm affligit me inimícus?

Dùm confringúntur ossa mea, * exprobravérunt mihi qui tríbulant me inimíci mei.

Dùm dicunt mihi per síngulos dies: Ubi est Deus tuus? * quare tristis es, ánima mea, & quare contúrbas me?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi; * salutáre vultûs mei, & Deus meus.

*Psalmus* 83.

QUàm dilécta tabernácula tua, Dómine virtútum! * concupíscit & déficit ánima mea in átria Dómini.

Cor meum & caro mea * exultavérunt in Deum vivum.

Etenim passer invénit sibi domum, * & turtur nidum sibi, ubi ponat pullos suos.

Altária tua, Dómine virtútum, * Rex meus, & Deus meus.

Beáti, qui hábitant in domo tua, Dómine, * in sécula seculórum laudábunt te.

Beátus vir, cujus est auxílium abs te, * ascensiónes in corde suo dispósuit, in valle lacrymárum, in loco quem pósuit.

Etenim benedictiónem dabit legislátor, ibunt de virtúte in virtútem; * vidébitur Deus deórum in Sion.

Dómine Deus virtútum, exáudi oratiónem meam, * áuribus pércipe, Deus Jacob.

Protéctor noster áspice, Deus, * & réspice in fáciem christi tui.

Quia mélior est dies una in átriis tuis * super míllia.

Elégi abjéctus esse in domo Dei mei, * magis quàm habitáre in tabernáculis peccatórum.

Quia misericórdiam & veritátem díligit Deus, * grátiam & glóriam dabit Dóminus.

Non privábit bonis eos, qui ámbulant in innocéntia: * Dómine virtútum, beátus homo qui sperat in te.

*Ant.* Dómine virtútum,

beátus homo qui sperat in te. *Psal.* 83. 13.

*Per Annum, Capitulum. Rom.* 10. 10. 11.

CORde créditur ad justítiam: ore autem conféssio fit ad salútem: dicit enim Scriptúra: Omnis qui credit in illum, non confundétur.

℟. *br.* Ego dixi, * Dómine, miserére mei; *Repet.* Ego dixi; * Dómine, miserére mei; ℣. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi. * Dómine, miserére mei. ℣. Glória Patri & Fílio, & Spirítui sancto. *Repetitur*, Ego. *Psal.* 40. 5.

℣. Adjútor meus esto, ne derelínquas me; ℟. Neque despícias me, Deus salutáris meus. *Psal.* 26. 9.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag. 56.*

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

AD SEXTAM.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

RECTOR potens, &c. *pag.* 57.

*Ant.* 6. *f.* Suávis est.

*Psalmus* 22.

DÓminus regit me, & nihil mihi déerit; * in loco páscuæ ibi me collocávit.

Super aquam refectiónis educávit me; * ánimam meam convértit.

Dedúxit me super sémitas justítiæ, * propter nomen suum.

Nam & si ambulávero in médio umbræ mortis, non timébo mala, * quóniam tu mecum es.

Virga tua, & báculus tuus, * ipsa me consoláta sunt.

Parásti in conspéctu meo mensam, * advérsùs eos qui tríbulant me.

Impinguásti in óleo caput meum; * & calix meus inébrians quàm præclárus est!

Et misericórdia tua subsequétur me * ómnibus diébus vitæ meæ.

Et ut inhábitem in domo Dómini, * in longitúdinem diérum.

*Psalmus* 33.

BEnedícam Dóminum in omni témpore: * semper laus ejus in ore meo.

In Dómino laudábitur ánima mea: * áudiant mansuéti, & læténtur.

Magnificáte Dóminum mecum; * & exaltémus nomen ejus in idípsum.

Exquisívi Dóminum, & exaudívit me; * & ex ómnibus tribulatiónibus meis erípuit me.

Accédite ad eum, & illu-

minámini, * & fácies vestræ non confundéntur.
Iste pauper clamávit, & Dóminus exaudívit eum; * & de ómnibus tribulatiónibus ejus salvávit eum.
Immíttet A'ngelus Dómini in circúitu timéntium eum, * & erípiet eos.
Gustáte, & vidéte quóniam suávis est Dóminus: * beátus vir, qui sperat in eo.
Timéte Dóminum, omnes sancti ejus; * quóniam non est inópia timéntibus eum.
Dívites eguérunt, & esuriérunt; * inquiréntes autem Dóminum non minuéntur omni bono.
*Divisio Psalmi* 33.
VEníte, fílii, audíte me: * timórem Dómini docébo vos.
Quis est homo qui vult vitam, * díligit dies vidére bonos?
Próhibe linguam tuam à malo, * & lábia tua ne loquántur dolum.
Divérte à malo, & fac bonum: * inquíre pacem, & perséquere eam.
O'culi Dómini super justos; * & aures ejus in preces eórum.
Vultus autem Dómini super faciéntes mala, * ut perdat de terra memóriam eórum.
Clamavérunt justi, & Dóminus exaudívit eos; * & ex ómnibus tribulatiónibus eórum liberávit eos.
Juxtà est Dóminus iis, qui tribuláto sunt corde; * & húmiles spíritu salvábit.
Multæ tribulatiónes justórum, * & de ómnibus his liberábit eos Dóminus.
Custódit Dóminus ómnia ossa eórum; * unum ex his non conterétur.
Mors peccatórum péssima: * & qui odérunt justum, delínquent.
Rédimet Dóminus ánimas servórum suórum; * & non delínquent omnes qui sperant in eo.
*Ant.* Suávis est Dóminus, beátus vir qui sperat in eo. *Psal.* 33. 9.
*Per Annum, Capitulum. Jacobi* 2. 14.
QUid próderit, fratres mei, si fidem quis dicat se habére, ópera autem non hábeat? Nunquid póterit fides salváre eum? Fides si non hábeat ópera, mórtua est in semetípsa.
℟. *br.* Benedícam Dóminum * In omni témpore. *Repetit.* Benedícam Dóminum * In omni témpore. ℣. Semper laus ejus in ore meo * In omni témpore. ℣. Glória. *Repet.* Benedícam. *Ps.* 33. 2.
℣. Laudábo Dóminum in vita mea, ℟. Psallam Deo

meo quámdiu fúero. *Psal.* 145. 2.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD NONAM.

Pater. Ave.

Deus in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

RERUM Deus, &c. *pag.* 59.

*Per Annum, Ant.* 2. d. Ne memíneris.

*Psalmus* 78.

DEus, venérunt Gentes in hereditátem tuam, polluérunt templum sanctum tuum, * posuérunt Jerúsalem in pomórum custódiam.

Posuérunt morticína servórum tuórum, escas volatílibus cœli; * carnes sanctórum tuórum béstiis terræ.

Effudérunt sánguinem eórum tanquam aquam in circúitu Jerúsalem; * & non erat qui sepelíret.

Facti sumus oppróbrium vicínis nostris, * subsannátio & illúsio his, qui in circúitu nostro sunt.

Usquequò, Dómine, irascéris in finem? * accendétur velut ignis zelus tuus?

Effúnde iram tuam in Gentes, quæ te non novérunt, * & in regna, quæ nomen tuum non invocavérunt;

Quia comedérunt Jacob, * & locum ejus desolavérunt.

Ne memíneris iniquitátum nostrárum antiquárum, citò antícipent nos misericórdiæ tuæ, * quia páuperes facti sumus nimis.

A'djuva nos, Deus salutáris noster, & propter glóriam nóminis tui, Dómine, líbera nos, * & propítius esto peccátis nostris propter nomen tuum.

Ne fortè dicant in Géntibus; * Ubi est Deus eórum?

Et innotéscat in natiónibus coram óculis nostris * últio sánguinis servórum tuórum, qui effúsus est.

Introëat in conspéctu tuo gémitus compeditórum, * secúndùm magnitúdinem bráchii tui pósside fílios mortificatórum.

Et redde vicínis nostris séptuplum in sinu eórum, * impropérium ipsórum, quod exprobravérunt tibi, Dómine.

Nos autem pópulus tuus, & oves páscuæ tuæ, * confitébimur tibi in sǽculum.

In generatiónem & generatiónem, * annuntiábimus laudem tuam.

*Psalmus* 79.

QUi regis Ifraël, inténde, * qui dedúcis, velut ovem, Joseph.

Qui sedes super Chérubim, * manifestáre coram E'phraïm, Bénjamin, & Manásse.

E'xcita poténtiam tuam, & veni, * ut salvos fácias nos.

Deus, convérte nos; * & osténde fáciem tuam, & salvi érimus.

Dómine Deus virtútum, * quoúsque irascéris super oratiónem servi tui?

Cibábis nos pane lacrymárum, * & potum dábis nobis in lácrymis in mensúra.

Posuísti nos in contradictiónem vicínis nostris; * & inimíci nostri subsannavérunt nos.

Deus virtútum, convérte nos; * & osténde fáciem tuam, & salvi érimus.

*Divisio Psalmi 79.*

VI'neam de Ægypto transtulísti: * ejecísti Gentes, & plantásti eam.

Dux itíneris fuísti in conspéctu ejus; * plantásti radíces ejus, & implêvit terram.

Opéruit montes umbra ejus, * & arbústa ejus cedros Dei.

Exténdit pálmites suos usque ad mare, * & usque ad flumen propágines ejus.

Ut quid destruxísti macériam ejus? * & vindémiant eam omnes, qui prætergrediúntur viam?

Exterminávit eam aper de silva, * & singuláris ferus depástus est eam.

Deus virtútum, convértere; * réspice de cœlo, & vide, & vísita víneam istam.

Et pérfice eam, quam plantávit déxtera tua: * & super fílium hóminis, quem confirmásti tibi.

Incénsa igni, & suffóssa, * ab increpatióne vultûs tui períbunt.

Fiat manus tua super virum déxteræ tuæ, * & super fílium hóminis, quem confirmásti tibi.

Et non discédimus à te, vivificábis nos; * & nomen tuum invocábimus.

Dómine Deus virtútum, convérte nos; * & osténde fáciem tuam, & salvi érimus.

*Ant.* Ne memíneris iniquitátum nostrárum antiquárum, Dómine. *Ps.* 78. 8.

*Per Annum, Capitulum. Rom.* 4. 5.

FRatres: Credénti in eum, qui justíficat ímpium, reputátur fides ejus ad justítiam secúndùm propósitum grátiæ Dei.

℟. *br.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine, *Repet.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine. ℣. Et ab aliénis parce servo tuo. * Munda me, Dómine. ℣. Glória Patri. *Repet.* Ab occúltis. *Psal.* 18. 13. 14.

℣. Pérfice gressus meos in sémitis tuis, ℟. Ut non moveántur vestígia mea. *Psal.* 16. 5.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag. 56.*

*Oratio. ut in Proprio de Tempore.*

## AD VESPERAS.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium, &c.

*Ant.* 5. a. Sacerdótes.

*Psalmus* 131.

MEménto, Dómine, David, * & omnis mansuetúdinis ejus.

Sicut jurávit Dómino, * votum vovit Deo Jacob.

Si introíero in tabernáculum domûs meæ, * si ascéndero in lectum strati mei;

Si dédero somnum óculis meis, * & pálpebris meis dormitatiónem.

Et réquiem tempóribus meis, donec invéniam locum Dómino, * tabernáculum Deo Jacob.

Ecce audívimus eam in Ephrata, * invénimus eam in campis silvæ.

Introíbimus in tabernáculum ejus; * adorábimus in loco, ubi stetérunt pedes ejus.

Surge, Dómine, in réquiem tuam, * tu & arca sanctificatiónis tuæ.

Sacerdótes tui induántur justítiam; * & sancti tui exúltent.

Propter David servum tuum, * non avértas fáciem christi tui.

*Ant.* Sacerdótes tui induántur justítiam. *v.* 9.

*Ant.* 4. d. Sancti.

*Divisio Psalmi* 131.

JUrávit Dóminus David veritátem, & non frustrábitur eum: * de fructu ventris tui ponam super sedem tuam.

Si custodíerint fílii tui testaméntum meum, * & testimónia mea hæc, quæ docébo eos.

Et fílii eórum usque in séculum, * sedébunt super sedem tuam.

Quóniam elégit Dóminus Sion; * elégit eam in habitatiónem sibi.

Hæc réquies mea in séculum séculi; * hic habitábo, quóniam elégi eam.

Víduam ejus benedícens benedícam; * páuperes ejus saturábo pánibus.

Sacerdótes ejus índuam salutári; * & sancti ejus exultatióne exultábunt.

Illuc prodúcam cornu David, * parávi lucérnam christo meo.

Inimícos ejus índuam con-

fusióne; * super ipsum autem efflorébit sanctificátio mea.

*Ant.* Sancti ejus exultatióne exultábunt. *v.* 16.

*Ant.* 8. c. Sédimus.

*Psalmus* 136.

SUper flúmina Babylónis, illic sédimus & flévimus,* cùm recordarémur Sion.

In salícibus, in médio ejus, * suspéndimus órgana nostra.

Quia illic interrogavérunt nos, qui captívos duxérunt nos, * verba cantiónum.

Et qui abduxérunt nos: * Hymnum cantáte nobis de cánticis Sion.

Quómodo cantábimus cánticum Dómini, * in terra aliéna?

Si oblítus fúero tui, Jerúsalem, * obliviόni detur déxtera mea.

Adhæreat lingua mea fáucibus meis, * si non meminero tui.

Si non proposúero Jerúsalem, * in princípio lætitiæ meæ.

Memor esto, Dómine, filiórum Edom, * in die Jerúsalem;

Qui dicunt: Exinaníte, exinaníte * usque ad fundaméntum in ea.

Fília Babylónis mísera: * beátus qui retríbuet tibi retributiónem tuam, quam retribuísti nobis.

Beátus, qui tenébit, * & allídet párvulos tuos ad petram.

*Ant.* Sédimus & flévimus, cùm recordarémur Sion. *v.* 1.

*Ant.* 5. a. Dómine.

*Psalmus* 137.

COnfitébor tibi, Dómine, in toto corde meo, * quóniam audísti verba oris mei.

In conspéctu Angelórum psallam tibi; * adorábo ad templum sanctum tuum.

Et confitébor nómini tuo super misericórdia tua, & veritáte tua; * quóniam magnificásti super omne nomen sanctum tuum.

In quacúnque die invocávero te, exáudi me; * multiplicábis in ánima mea virtútem.

Confiteántur tibi, Dómine, omnes reges terræ, * quia audiérunt ómnia verba oris tui;

Et cantent in viis Dómini, * quóniam magna est glória Dómini.

Quóniam excélsus Dóminus, & humília réspicit, * & alta à longè cognóscit.

Si ambulávero in médio tribulatiónis, vivificábis me, & super iram inimicórum meórum extendísti manum tuam, & salvum me fecit déxtera tua.

Dóminus retríbuet pro me

Dómine, misericórdia tua in sæculum, * ópera mánuum tuárum ne despícias.

*Ant.* Dómine, misericórdia tua in sæculum. *v.* 8.

*Ant.* 3. g. Tu es.

*Psalmus* 141.

VOce meâ ad Dóminum clamávi; * voce meâ ad Dóminum deprecátus sum.

Effúndo in conspéctu ejus oratiónem meam, * & tribulatiónem meam ante ipsum pronúntio.

In deficiéndo ex me spíritum meum, * & tu cognovísti sémitas meas.

In via hac quâ ambulábam, * abscondérunt láqueum mihi.

Considerábam ad déxteram, & vidébam; * & non erat qui cognósceret me.

Périit fuga à me, * & non est qui requírat ánimam meam.

Clamávi ad te, Dómine,* dixi: Tu es spes mea, pórtio mea in terra vivéntium.

Inténde ad deprecatiónem meam, * quia humiliátus sum nimis.

Líbera me à persequéntibus me, * quia confortáti sunt super me.

Educ de custódia ánimam meam ad confiténdum nómini tuo; * me expéctant justi, donec retríbuas mihi.

*Ant.* Tu es spes mea, Dómine, pórtio mea in terra vivéntium. *v.* 6.

*Per Annum, Capitulum.* *Rom.* 5. 1. 2.

JUstificáti ex fide, pacem habeámus ad Deum, per Dóminum nostrum Jesum Christum: per quem & habémus accéssum per fidem in grátiam istam, in qua stamus, & gloriámur in spe glóriæ filiórum Dei.

*Per Annum. Hymnus.*

DIe cadénte, Cónditor,
Cœli loquáces Incolæ,
Mutíque cives æquoris,
Te prosequántur láudibus.

LAUDENT Benígnum, próvido
Qui format omnes númine;
Laudent Poténtem, qui mari,
Cœlóque donat vívere.

ALAS leves quis cómmodet,
Quibus colúmba tóllitur?
Terræ tenácis ímmemor
Cœlo quiéscet spíritus.

JUNCTO poténtes fœdere,
Fides, & alma cháritas:
Reddant amátis sédibus
Quos víncula carnis ággravant.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos fóves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Os meum annuntiábit justítiam tuam, ℟. Totâ die salutáre tuum. *Psal.* 70. 15.

*Ad* Magnificat. *Ant.* 3. a. Potens est Dóminus, & sanctum nomen ejus. *Luc.* 1. 49.

*Preces si dicendæ sint, habentur suprà, pag.* 46.

*Suffragia verò pag.* 63.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD COMPLETORIUM.

℣. Convérte nos, Deus, &c.

Deus, in adjutórium, &c.

*Per Annum, Ant.* 2. D. Exáudi.

*Psalmus* 31.

BEáti quórum remíssæ sunt iniquitátes, * & quorum tecta sunt peccáta.

Beátus vir, cui non imputávit Dóminus peccátum, * nec est in spíritu ejus dolus.

Quóniam tácui, inveteravérunt ossa mea, * dùm clamárem totâ die.

Quóniam die ac nocte graváta est super me manus tua:* convérsus sum in ærúmna mea, dùm configitur spina.

Delíctum meum cógnitum tibi feci; * & injustítiam meam non abscóndi.

Dixi: Confitébor advérsùm me injustítiam meam Dómino: * & tu remisísti impietátem peccáti mei.

Pro hac orábit ad te omnis sanctus, * in témpore opportúno.

Verúntamen in dilúvio aquárum multárum * ad eum non approximábunt.

Tu es refúgium meum à tribulatióne, quæ circúndedit me; * exultátio mea, érue me à circundántibus me.

Intelléctum tibi dabo, & instruam te in via hac, quâ gradiéris: * firmábo super te óculos meos.

Nolíte fieri sicut equus & mulus, * quibus non est intelléctus.

In camo & fræno maxillas eórum constringe, * qui non appróximant ad te.

Multa flagélla peccatóris;* sperántem autem in Dómino misericórdia circúndabit.

Lætámini in Dómino, & exultáte justi, * & gloriámini omnes recti corde.

*Psalmus* 38.

DIxi: Custódiam vias meas, * ut non delínquam in lingua mea.

Pósui ori meo custódiam,* cùm consísteret peccátor advérsùm me.

Obmútui, & humiliátus sum, & sílui à bonis, * & dolor meus renovátus est.

Concáluit cor meum intra me; * & in meditatióne mea exardéscet ignis.

Locútus sum in lingua mea: * Notum fac mihi, Dómine, finem meum.

Et númerum diérum meórum

hem quis est, * ut sciam quid desit mihi.

Ecce mensurábiles posuísti dies meos; * & substántia mea tanquam níhilum ante te.

Verúntamen univérsa vánitas, * omnis homo vivens.

Verúntamen in imágine pertránsit homo; * sed & frustrà conturbátur.

Thesaurízat, * & ignórat cui congregábit ea.

Et nunc quæ est expectátio mea? nonne Dóminus? * & substántia mea apud te est.

*Divisio Psalmi 38.*

AB ómnibus iniquitátibus meis érue me: * oppróbrium insipiénti dedísti me.

Obmútui, & non apérui os meum, * quóniam tu fecisti.

A'move à me plagas tuas, * à fortitúdine manûs tuæ ego deféci.

In increpatiónibus propter iniquitátem corripuísti hóminem, & tabéscere fecísti sicut aráneam ánimam ejus: * verúntamen vanè conturbátur omnis homo.

Exáudi oratiónem meam, Dómine, & deprecatiónem meam; * áuribus pércipe lácrymas meas.

Ne síleas; quóniam ádvena ego sum apud te, & peregrinus, * sicut omnes patres mei.

Remítte mihi, ut refrígerer priúsquam ábeam; * & ámpliùs non ero.

*Ant.* Exáudi oratiónem meam, Dómine, & deprecatiónem meam. *Ps.* 38. 13.

*Per Annum; Capitulum. Jud. v.* 20. 21.

CHaríssimi, superædificántes vosmetípsos sanctíssimæ vestræ fidei, in Spíritu sancto orántes, vosmetípsos in dilectióne Dei serváte, expectántes misericórdiam Dómini nostri Jesu Christi in vitam ætérnam.

*Per Annum. Hymnus.*

TE lucis ante términum, &c. Nunc dimíttis. *Preces & Oratio ut suprà, pag. 66.*

---

## FERIA SEXTA

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

Pater. Ave. Credo.

Dómine, lábia mea apéries, *ut suprà pag.* 1.

Deus, in adjutórium, &c.

*Per Annum, Invitatorium.*

Veníte, adorémus; & * Procidámus ante Deum. *Psal.* 94. 6.

*Psalmus,* Veníte, &c. *ut suprà, pag.* 2.

*Per Annum. Hymnus.*

TU Trinitátis únitas,
Orbem poténter qui regis,
Atténde laudis cánticum
Quod excubántes psállimus.
NAM léctulo consúrgimus

Noctis quiéto témpore,
Ut flagitémus ómnium
A te medélam vúlnerum.
Si fraude lusi dæmonum
In nocte quid delíquimus,
Tuâ poténti grátiâ
Dies renáscens déleat.
Nec corpus adstet sórdidum,
Nec torpor instet córdium,
Nec críminis contágio
Tepéscat ardor spíritûs.
Ob hoc, Redémptor, quæsumus,
Reple tuo nos lúmine,
Per quod diérum círculis
Nullis ruámus áctibus.
Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Per Annum*, *Ant*. 3. g. Ego autem.

*Psalmus* 51.

QUid gloriáris in malítia, * qui potens es in iniquitáte?

Tota die injustítiam cogitávit lingua tua; * sicut novácula acúta fecísti dolum.

Dilexísti malítiam super benignitátem, * iniquitátem magis, quàm loqui æquitátem.

Dilexísti ómnia verba præcipitatiónis, * lingua dolósa.

Proptéreà Deus déstruet te in finem, * evéllet te, & emigrábit te de tabernáculo tuo, & radícem tuam de terra v[...] véntium.

Vidébunt justi, & time[...] bunt, & super eum ridébun[...] & dicent: * Ecce homo, q[...] non pósuit Deum adjutóre[...] suum,

Sed sperávit in multitúdi[...] divitiárum suárum, * & pr[...] váluit in vanitáte sua.

Ego autem, sicut oliv[...] fructífera in domo Dei, * sp[...] rávi in misericórdia Dei i[...] ætérnum, & in séculum sécul[...]

Confitébor tibi in séculu[...] quia fecísti, * & expectáb[...] nomen tuum, quóniam bo[...] num est in conspéctu sanctó[...] rum tuórum.

*Psalmus* 54.

EXáudi, Deus, oratióne[...] meam, & ne despéxer[...] deprecatiónem meam, * in[...] ténde mihi, & exáudi me.

Contristátus sum in exer[...] citatióne mea, * & contur[...] bátus sum à voce inimíci, &[...] à tribulatióne peccatóris.

Quóniam declinavérunt i[...] me iniquitátes; * & in ira mo[...] lésti erant mihi.

Cor meum conturbátum est in me; * & formído mo[...] tis cécidit super me.

Timor & tremor venéru[...] super me; * & contexéru[...] me ténebræ;

Et dixi: Quis dabit m[...] pennas sicut colúmbæ? * [...] volábo & requiéscam.

Ecce elongávi fúgiens, * & mansi in solitúdine.

Expectábam eum, qui salvum me fecit * à pusillanimitáte spíritûs, & tempestáte.

Præcipita, Dómine, dívide linguas eórum; * quóniam vidi iniquitátem & contradictiónem in civitáte.

Die ac nocte circúndabit eam super muros ejus iníquitas; * & labor in médio ejus, & injustítia.

Et non defécit de platéis ejus * usúra, & dolus.

Quóniam si inimícus meus maledixísset mihi, * sustinuíssem útique;

Et si is, qui óderat me, super me magna locútus fuísset, * abscondíssem me fórsitan ab eo.

Tu verò homo unánimis, * dux meus, & notus meus,

Qui simul mecum dulces capiébas cibos; * in domo Dei ambulávimus cum consensu.

Véniat mors super illos, * & descéndant in inférnum vivéntes;

Quóniam nequítiæ in habitáculis eórum, * in médio eórum.

Ego autem ad Deum clamávi; * & Dóminus salvábit me.

*Divisio Psalmi* 54.

VE'spere, & manè, & merídie narrábo & annuntiábo; * & exáudiet vocem meam.

Rédimet in pace ánimam meam ab his, qui appropínquant mihi; * quóniam inter multos erant mecum.

Exáudiet Deus, & humiliábit illos, * qui est ante sécula.

Non enim est illis commutátio, & non timuérunt Deum: * exténdit manum suam in retribuéndo.

Contaminavérunt testaméntum ejus, divísi sunt ab ira vultûs ejus; * & appropinquávit cor illíus.

Molliti sunt sermónes ejus super óleum, * & ipsi sunt jácula.

Jacta super Dóminum curam tuam, & ipse te enútriet: * non dabit in ætérnum fluctuatiónem justo.

Tu verò, Deus, dedúces eos * in púteum intéritûs.

Viri sánguinum & dolósi non dimidiábunt dies suos: * ego autem sperábo in te, Dómine.

*Ant.* Ego autem sperábo in te, Dómine. *Ps.* 54. 24.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 4. *irreg.* c. Deus meus.

*Psalmus* 58.

E'Ripe me de inimícis meis, Deus meus, * & ab insurgéntibus in me líbera me.

E'ripe me de operántibus

iniquitátem, * & de viris sánguinum salva me.

Quia ecce cepérunt ánimam meam: * irruérunt in me fortes.

Neque iniquitas mea, neque peccátum meum, Dómine, * sine iniquitáte cucúrri, & diréxi.

Exúrge in occúrsum meum, & vide: * & tu Dómine Deus virtútum, Deus Israël.

Inténde ad visitándas omnes Gentes, * non misereáris ómnibus, qui operántur iniquitátem.

Converténtur ad vésperam, & famem patiéntur ut canes, * & circuíbunt civitátem.

Ecce loquéntur in ore suo, & gládius in lábiis eórum; * quóniam quis audívit?

Et tu Dómine, deridébis eos: * ad níhilum dedúces omnes Gentes.

Fortitúdinem meam ad te custódiam, quia, Deus, suscéptor meus es: * Deus meus, misericórdia ejus prævéniet me.

*Divisio Psalmi 58.*

DEus osténdet mihi super inimícos meos; * ne occídas eos: nequándo obliviscántur pópuli mei.

Dispérge illos in virtúte tua, * & depóne eos protéctor meus, Dómine.

Delíctum oris eórum, sermónem labiórum ipsórum; * & comprehendántur in supérbia sua.

Et de execratióne & mendácio annuntiabúntur, * in consummatióne, in ira consummatiónis, & non erunt.

Et scient quia Deus dominábitur Jacob, * & finium terræ.

Converténtur ad vésperam, & famem patiéntur ut canes, * & circuíbunt civitátem.

Ipsi dispergéntur ad manducándum; * si verò non fúerint saturáti, & murmurábunt.

Ego autem cantábo fortitúdinem tuam, * & exultábo manè misericórdiam tuam.

Quia factus es suscéptor meus, & refúgium meum, * in die tribulatiónis meæ.

Adjútor meus, tibi psallam, quia Deus, suscéptor meus es; * Deus meus, misericórdia mea.

*Psalmus 60.*

EXáudi, Deus, deprecatiónem meam, * inténde oratióni meæ.

A fínibus terræ ad te clamávi, dùm anxiarétur cor meum, * in petra exaltásti me.

Deduxísti me, quia factus es spes mea, * turris fortitúdinis à fácie inimíci.

Inhabitábo in tabernáculo tuo in sǽcula, * prótegar in velaménto alárum tuárum;

Quóniam tu, Deus meus, exaudísti oratiónem meam; * dedísti hereditátem timéntibus nomen tuum.

Dies super dies regis adjícies; * annos ejus usque in diem generatiónis & generatiónis.

Pérmanet in ætérnum in conspéctu Dei: * misericórdiam & veritátem ejus quis requíret?

Sic psalmum dicam nómini tuo in sǽculum sǽculi, * ut reddam vota mea de die in diem.

*Ant.* Deus meus, misericórdia ejus prævéniet me. *Psal.* 58. II.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 3. a. Exáudi me.

*Psalmus* 68.

SAlvum me fac, Deus, * quóniam intravérunt aquæ usque ad ánimam meam.

Infixus sum in limo profúndi, * & non est substántia.

Veni in altitúdinem maris, * & tempéstas demérsit me.

Laborávi clamans, raucæ factæ sunt fauces meæ: * defecérunt óculi mei, dùm spero in Deum meum.

Multiplicáti sunt super capillos cápitis mei, * qui odérunt me gratis.

Confortáti sunt qui persecúti sunt me inimíci mei injústè: * quæ non rápui, tunc exolvébam.

Deus, tu scis insipiéntiam meam; * & delícta mea à te non sunt abscóndita.

Non erubéscant in me, qui expéctant te, Dómine, * Dómine virtútum.

Non confundántur super me * qui quærunt te, Deus Israël.

Quóniam propter te sustínui oppróbrium; * opéruit confúsio fáciem meam.

Extráneus factus sum frátribus meis, * & peregrínus fíliis matris meæ.

Quóniam zelus domûs tuæ comédit me; * & oppróbria exprobrántium tibi, cecidérunt super me.

Et opérui in jejúnio ánimam meam; * & factum est in oppróbrium mihi.

Et pósui vestiméntum meum cilícium; * & factus sum illis in parábolam.

Advérsùm me loquebántur qui sedébant in porta; * & in me psallébant qui bibébant vinum.

Ego verò oratiónem meam ad te, Dómine; * tempus beneplácitì, Deus.

In multitúdine misericórdiæ tuæ exáudi me, *

in veritáte salútis tuæ.

E'ripe me de luto, ut non infígar: * líbera me ab iis, qui odérunt me, & de profúndis aquárum.

Non me demérgat tempéstas aquæ, neque absórbeat me profúndum, * neque úrgeat super me púteus os suum.

*Divisio Psalmi* 68.

EXáudi me, Dómine, quóniam benígna est misericórdia tua: * secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum réspice in me.

Et ne avértas fáciem tuam à púero tuo, * quóniam tríbulor, velóciter exáudi me.

Inténde ánimæ meæ, & líbera eam; * propter inimícos meos éripe me.

Tu scis impropérium meum, & confusiónem meam, * & reveréntiam meam.

In conspéctu tuo sunt omnes, qui tríbulant me, * impropérium expectávit cor meum, & misériam.

Et sustínui qui simul contristarétur, & non fuit; * & qui consolarétur, & non invéni.

Et dedérunt in escam meam fel, * & in siti mea potavérunt me acéto.

Fiat mensa eórum coram ipsis in láqueum, * & in retributiónes, & in scándalum.

Obscuréntur óculi eórum ne vídeant, * & dorsum eórum semper incúrva.

Effúnde super eos iram tuam, * & furor iræ tuæ comprehéndat eos.

Fiat habitátio eórum desérta, * & in tabernáculis eórum non sit qui inhábitet.

Quóniam quem tu percussísti, persecúti sunt; * & super dolórem vúlnerum meórum addidérunt.

Appóne iniquitátem super iniquitátem eórum; * & non intrent in justítiam tuam.

Deleántur de Libro vivéntium, * & cum justis non scribántur.

Ego sum pauper & dolens; * salus tua, Deus, suscépit me.

*Altera divisio Psalmi* 68.

LAudábo nomen Dei cum cántico, * & magnificábo eum in laude.

Et placébit Deo super vítulum novéllum, * córnua producéntem & úngulas.

Vídeant páuperes, & læténtur: * quærite Deum, & vivet ánima vestra.

Quóniam exaudívit páuperes Dóminus, * & vinctos suos non despéxit.

Laudent illum cœli & terra, * mare, & ómnia reptília in eis.

Quóniam Deus salvam fáciet Sion; * & ædificabúntur civitátes Juda.

Et inhabitábunt ibi, * &

hereditáte acquírent eam.

Et semen servórum ejus possidébit eam ; * & qui díligunt nomen ejus, habitábunt in ea.

*Ant.* Exáudi me, Dómine, quóniam benígna est misericórdia tua. *v.* 17.

℣. Illúmina óculos meos, Dómine, ℟. Ne unquam obdórmiam in morte. *Psal.* 12. 4.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Cantábo Dómino qui bona tríbuit mihi, ℟. Et psallam nómini Dómini altíssimi. *Ps.* 12. 6.

Deus, in adjutórium meum inténde, &c.

*Per Annum*, *Ant.* 3. c. Egénus.

*Psalmus* 69.

DEus, in adjutórium meum inténde ; * Dómine, ad adjuvándum me festína.

Confundántur & revereántur, * qui quærunt ánimam meam.

Avertántur retrórsùm, & erubéscant, * qui volunt mihi mala.

Avertántur statim erubescéntes, * qui dicunt mihi : Euge, euge.

Exúltent & læténtur in te omnes, qui quærunt te ; * & dicant semper : Magnificétur Dóminus : qui díligunt salutáre tuum.

Ego verò egénus, & pauper sum, * Deus, ádjuva me.

Adjútor meus, & liberátor meus es tu ; * Dómine, ne moréris.

*Ant.* Egénus & pauper sum, Deus, ádjuva me *v.* 6.

*Ant.* 4. f. Deus meus.

*Psalmus* 70.

IN te, Dómine, sperávi, non confúndar in ætérnum : * in justítia tua líbera me, & éripe me.

Inclína ad me aurem tuam, * & salva me.

Esto mihi in Deum protectórem, & in locum munítum, * ut salvum me fácias.

Quóniam firmaméntum meum, * & refúgium meum es tu.

Deus meus, éripe me de manu peccatóris, * & de manu contra legem agéntis, & iníqui ;

Quóniam tu es patiéntia mea, Dómine : * Dómine, spes mea à juventúte mea.

In te confirmátus sum ex útero, de ventre matris meæ tu es protéctor meus ; * in te cantátio mea semper.

Tanquam prodígium factus sum multis, * & tu adjútor fortis.

Repleátur os meum laude, ut cantem glóriam tuam, * totâ die magnitúdinem tuam.

Ne projícias me in témpóre senectútis; * cùm deféćerit virtus mea, ne derelínquas me.

Quia dixérunt inimíci mei mihi; * & qui custodiébant ánimam meam, consílium fecérunt in unum.

Dicéntes: Deus derelíquit eum, persequímini, & comprehéndite eum; * quia non est qui erípiat.

Deus, ne elongéris à me; * Deus meus, in auxílium meum réspice.

Confundántur & defíciant detrahéntes ánimæ meæ; * operiántur confusióne & pudóre, qui quærunt mala mihi.

Ego autem semper sperábo; * & adjíciam super omnem laudem tuam.

*Ant.* Deus meus, in auxílium meum réspice. *v.* 12.

*Ant.* 1. a. Exultábunt.

*Divisio Psalmi* 70.

OS meum annuntiábit justítiam tuam, * totâ die salutáre tuum.

Quóniam non cognóvi litteratúram, introíbo in poténtias Dómini: * Dómine, memorábor justítiæ tuæ solíus.

Deus, docuísti me à juventúte mea; * & usque nunc pronuntiábo mirabília tua;

Et usque in senéctam & sénium, * Deus, ne derelínquas me,

Donec annúntiem brachium tuum, * generatióni omni quæ ventúra est,

Poténtiam tuam, & justítiam tuam, Deus, usque in altíssima, quæ fecísti magnália: * Deus, quis símilis tibi?

Quantas ostendísti mihi tribulatiónes multas & malas: * & convérsus vivificásti me, & de abýssis terræ íterum reduxísti me.

Multiplicásti magnificéntiam tuam, * & convérsus consolátus es me.

Nam & ego confitébor tibi in vasis psalmi veritátem tuam, Deus; * psallam tibi in cíthara, sanctus Israël.

Exultábunt lábia mea cùm cantávero tibi; * & ánima mea, quam redemísti.

Sed & lingua mea totâ die meditábitur justítiam tuam, * cùm confúsi & revériti fúerint qui quærunt mala mihi.

*Ant.* Exultábunt lábia mea cùm cantávero tibi; & ánima mea quam redemísti. *v.* 23.

*Ant.* 7. b. Opéruit.

*Canticum Habacuc.* 3. 2.

DOmine, audívi auditiónem tuam, * & tímui.

Dómine, opus tuum, * in médio annórum vivífica illud.

In médio annórum notum fácies; * cùm irátus fúeris, misericórdiæ recordáberis.

Deus ab Austro véniet, *

& sanctus de monte Pharan.

Opéruit cœlos glória ejus,* & laudis ejus plena est terra.

Splendor ejus ut lux erit; córnua in mánibus ejus; * ibi abscóndita est fortitúdo ejus;

Ante fáciem ejus ibit mors;* & egrediétur diábolus ante pedes ejus.

Stetit, & mensus est terram, * aspéxit, & dissólvit Gentes, & contríti sunt montes séculi;

Incurváti sunt colles mundi, * ab itinéribus æternitátis ejus.

Pro iniquitáte vidi tentória Æthiópiæ, * turbabúntur pelles terræ Mádian.

Nunquid in flumínibus irátus es, Dómine? * aut in flumínibus furor tuus, vel in mari indignátio tua?

Qui ascéndes super equos tuos, * & quadrígæ tuæ salvátio.

Súscitans suscitábis arcum tuum, * juraménta tríbubus quæ locútus es.

Flúvios scindes terræ, vidérunt te, & doluérunt montes; * gurges aquárum tránsiit.

Dedit abyssus vocem suam;* altitúdo manus suas levávit.

Sol & luna steterunt in habitáculo suo, in luce sagittárum tuárum, * ibunt in splendóre fulgurántis hastæ tuæ.

In frémitu conculcábis terram, * & in furóre obstupefácies Gentes.

Egréssus es in salútem pópuli tui, * in salútem cum Christo tuo.

Percussísti caput de domo ímpii, * denudásti fundaméntum ejus usque ad collum.

Maledixísti sceptris ejus, cápiti bellatórum ejus, * veniéntibus ut turbo ad dispergéndum me.

Exultátio eórum, * sicut ejus qui dévorat páuperem in abscóndito.

Viam fecísti in mari equis tuis, * in luto aquárum multárum.

Audívi, & conturbátus est venter meus; * à voce contremuérunt lábia mea.

Ingrediátur putrédo in óssibus meis, * & subter me scáteat;

Ut requiéscam in die tribulatiónis, * ut ascéndam ad pópulum accínctum nostrum.

Ficus enim non florébit, * & non erit germen in víneis.

Mentiétur opus olívæ, * & arva non áfferent cibum.

Abscindétur de ovíli pecus, * & non erit arméntum in præsépibus.

Ego autem in Dómino gaudébo, * & exultábo in Deo Jesu meo.

Deus Dóminus fortitúdo

mea, * & ponet pedes meos quasi cervórum.

Et super excélsa mea dedúcet me victor * in psalmis canéntem.

*Ant.* Opéruit cœlos glória ejus, & laudis ejus plena est terra. *v.* 3.

[ *In Festis, loco superioris Cantici, dicitur sequens Canticum.*

*Sapient.* 10. 17.

RE'ddidit justis sapiéntia mercédem labórum suórum, * & dedúxit illos in via mirábili.

Et fuit illis in velaménto diéi, * & in luce stellárum per noctem.

Tránstulit illos per mare Rubrum, * & transvéxit illos per aquam nímiam.

Inimícos autem illórum demérsit in mare, * & ab altitúdine inferórum edúxit illos.

I'deò justi tulérunt * spólia impiórum,

Et decantavérunt, Dómine, nomen sanctum tuum, * & victrícem manum tuam laudavérunt páriter:

Quóniam sapiéntia apéruit os mutórum, * & linguas infántium fecit disértas. ]

*Ant.* 4. E. Laudábo.

*Psalmus* 145.

LAuda, ánima mea, Dóminum, laudábo Dóminum in vita mea; * psallam Deo meo quándiu fúero.

Nolíte confídere in princípibus, * in fíliis hóminum, in quibus non est salus.

Exíbit spíritus ejus, & revertétur in terram suam; * in illa die períbunt omnes cogitatiónes eórum.

Beátus, cujus Deus Jacob adjútor ejus, spes ejus in Dómino Deo ipsíus, * qui fecit cœlum & terram, mare, & ómnia quæ in eis sunt.

Qui custódit veritátem in séculum, facit judícium injúriam patiéntibus; * dat escam esuriéntibus.

Dóminus solvit compedítos; * Dóminus illúminat cæcos.

Dóminus érigit elísos, * Dóminus díligit justos.

Dóminus custódit ádvenas, pupíllum & víduam suscípiet; * & vias peccatórum dispérdet.

Regnábit Dóminus in sécula, Deus tuus, Sion, * in generatiónem & generatiónem.

*Ant.* Laudábo Dóminum in vita mea. *v.* 2.

*Per Annum, Capitulum* 1. *Petr.* 4. 13.

CHaríssimi, Communicántes Christi passiónibus gaudéte, ut & in revelatióne glóriæ ejus gaudeátis exultántes. Si exprobrámini in nómine Christi, beáti éritis.

*Per Annum.* *Hymnus.*

ÆTÉRNA cœli glória,
Beáta spes mortálium,
Summi tonántis U'nice,
Castǽque proles Vírginis;
DA déxteram surgéntibus,
Exúrgat & mens sóbria,
Flagrans & in laudem Dei
Grates repéndat débitas.
ORTUS refúlget lúcifer,
Præítque Solis núntius;
Cadunt ténebræ nóctium:
Lux sancta nos illúminet;
MANÉNSQUE nostris sénsibus,
Noctem repéllat sǽculi,
Omníque fine témporis
Purgáta servet péctora.
SINCÉRA radíces agat
In corde símplici fides,
Immóta spes congáudeat,
His major adsit cháritas.
QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum.* ℣. Ad te orábo, Dómine, ℟. Manè exáudies vocem meam. *Ps.* 5. 4.

*Per Annum. Ad* Benedíctus. *Ant.* 3. d. Per víscera misericórdiæ Dei nostri visitávit nos O'riens ex alto. *Luc.* 1. 78.

*Preces, quando dicuntur, & Suffragia habentur suprà in Laudibus Feria secunda. pag.* 46. 47.

# AD PRIMAM.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

JAM lucis orto sídere, &c. *ut suprà. pag.* 49.

*Ant.* 8. c. Dómine.

*Psalmus* 34.

JU'dica, Dómine, nocéntes me; * expúgna impugnántes me.

Apprehénde arma & scutum; * & exúrge in adjutórium mihi.

Effúnde frámeam, & conclúde advérsùs eos, qui persequúntur me: * dic ánimæ meæ: Salus tua ego sum.

Confundántur & revereántur, * quærêntes ánimam meam.

Avertántur retrórsùm, & confundántur * cogitántes mihi mala.

Fiant tanquam pulvis ante fáciem venti; * & A'ngelus Dómini coárctans eos.

Fiat via illórum ténebræ & lúbricum; * & A'ngelus Dómini pérsequens eos.

Quóniam gratìs abscondérunt mihi intéritum láquei sui; * supervácuè exprobravérunt ánimam meam.

Véniat illi láqueus, quem ignórat; & cáptio, quam abscóndit, apprehéndat eum; * & in láqueum cadat in ipsum.

A'nima autem mea exultábit in Dómino, * & delectábitur super salutári suo.

O'mnia ossa mea dicent: * Dómine, quis símilis tibi?

Erípiens ínopem de manu fortiórum ejus, * egénum & páuperem à diripiéntibus eum.

*Divisio Psalmi 34.*

SUrgéntes testes iníqui, * quæ ignorábam, interrogábant me.

Retribuébant mihi mala pro bonis, * sterilitátem ánimæ meæ.

Ego autem, cùm mihi molésti essent, * induébar cilício.

Humiliábam in jejúnio ánimam meam; * & orátio mea in sinu meo convertétur.

Quasi próximum, & quasi fratrem nostrum, sic complacébam: * quasi lugens & contristátus sic humiliábar.

Et advérsùm me lætáti sunt, & convenérunt: * congregáta sunt super me flagélla, & ignorávi.

Dissipáti sunt, nec compúncti, tentavérunt me, subsannavérunt me subsannatióne; * frenduérunt super me déntibus suis.

Dómine, quando respícies? * restítue ánimam meam à malignitáte eórum, à leónibus únicam meam.

Confitébor tibi in ecclésia magna, * in pópulo gravi laudábo te.

Non supergáudeant mihi qui adversántur mihi iníquè, * qui odérunt me gratis, & ánnuunt óculis.

Quóniam mihi quidem pacíficè loquebántur; * & in iracúndia terræ loquéntes, dolos cogitábant.

Et dilatavérunt super me os suum; * dixérunt: Euge, euge, vidérunt óculi nostri.

Vidísti, Dómine, ne síleas; * Dómine, ne discédas à me.

*Altera divisio Psalmi 34.*

EXúrge & inténde judício meo; * Deus meus, & Dóminus meus, in causam meam.

Júdica me secùndùm justítiam tuam, Dómine Deus meus; * & non supergáudeant mihi.

Non dicant in córdibus suis: Euge, euge, ánimæ nostræ: * nec dicant: Devorávimus eum.

Erubéscant & revereántur simul, * qui gratulántur malis meis.

Induántur confusióne & reveréntiâ, * qui magna loquúntur super me.

Exúltent & læténtur qui volunt justítiam meam; * & dicant semper: Magnificétur Dóminus, qui volunt pacem servi ejus.

Et lingua mea meditábitur

justitiam tuam, * totâ die laudem tuam.

*Ant.* Dómine, ne discédas à me, exúrge & inténde judício meo. *v.* 22. 23.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Petr.* 2. 20. 21.

SI benefaciéntes patiénter sustinétis: hæc est grátia apud Deum, in hoc enim vocáti estis: quia & Christus passus est pro nobis, vobis relinquens exémplum, ut sequámini vestígia ejus.

℟. *br.* Christe fili Dei vivi, &c.

*Et Preces habentur suprà* *pag.* 51.

## AD TERTIAM.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium meum inténde, &c.

*Hymnus.*

NUNC sancte &c. *pag.* 54.

*Ant.* 2. d. Tu Dómine.

*Psalmus* 25.

JUdica me, Dómine, quóniam ego in innocéntia mea ingréssus sum; * & in Dómino sperans non infirmábor.

Proba me, Dómine, & tenta me: * ure renes meos & cor meum.

Quóniam misericórdia tua ante óculos meos est; * & complácui in veritáte tua.

Non sedi cum concílio vanitátis; * & cum iníqua geréntibus non introíbo.

Odívi ecclésiam malignántium; * & cum ímpiis non sedébo.

Lavábo inter innocéntes manus meas; * & circúndabo altáre tuum, Dómine;

Ut áudiam vocem laudis, * & enárrem univérsa mirabília tua.

Dómine, diléxi decórem domûs tuæ, * & locum habitatiónis glóriæ tuæ.

Ne perdas cum ímpiis, Deus, ánimam meam, * & cum viris sánguinum vitam meam.

In quorum mánibus iniquitátes sunt; * déxtera eórum repléta est munéribus.

Ego autem in innocéntia mea ingréssus sum: * rédime me, & miserére mei.

Pes meus stetit in diécto: * in ecclésiis benedícam te, Dómine.

*Psalmus* 39.

EXpéctans expectávi Dóminum, * & inténdit mihi.

Et exaudívit preces meas, * & edúxit me de lacu misériæ, & de luto fæcis.

Et státuit super petram pedes meos, * & diréxit gressus meos.

Et immísit in os meum cánticum novum, * carmen Deo nostro.

Vidébunt multi, & timé-

bunt, * & sperábunt in Dómino.

Beátus vir cujus est nomen Dómini spes ejus; * & non respéxit in vanitátes & insánias falsas.

Multa fecísti tu, Dómine Deus meus, mirabília tua; * & cogitatiónibus tuis non est qui símilis sit tibi.

Annuntiávi, & locútus sum; * multiplicáti sunt super númerum.

Sacrifícium & oblatiónem noluísti, * aures autem perfecísti mihi.

Holocáustum & pro peccáto non postulásti: * tunc dixi: Ecce vénio.

In cápite libri scriptum est de me, ut fácerem voluntátem tuam: * Deus meus, vólui, & legem tuam in médio cordis mei.

*Divisio Psalmi* 39.

ANnuntiávi justítiam tuam in ecclésia magna, * ecce lábia mea non prohibébo: Dómine, tu scisti.

Justítiam tuam non abscóndi in corde meo, * veritátem tuam & salutáre tuum dixi.

Non abscóndi misericórdiam tuam, & veritátem tuam * à concílio multo.

Tu autem, Dómine, ne longè fácias miseratiónes tuas à me: * misericórdia tua & véritas tua semper suscepérunt me.

Quóniam circumdedérunt me mala, quorum non est númerus: * comprehendérunt me iniquitátes meæ, & non pótui ut vidérem.

Multiplicátæ sunt super capíllos cápitis mei, * & cor meum dereliquit me.

Compláceat tibi, Dómine, ut éruas me: * Dómine, ad adjuvándum me réspice.

Confundántur & revereántur simul, qui quærunt ánimam meam, * ut áuferant eam.

Convertántur retrórsùm, & revereántur * qui volunt mihi mala.

Ferant conféstim confusiónem suam, * qui dicunt mihi: Euge, euge.

Exúltent & læténtur super te omnes quæréntes te; * & dicant semper: Magnificétur Dóminus, qui díligunt salutáre tuum.

Ego autem mendícus sum, & pauper; * Dóminus sollícitus est mei.

Adjútor meus, & protéctor meus tu es, * Deus meus, ne tardáveris.

*Ant.* Tu, Dómine, ne longè fácias miseratiónes tuas à me. *Psal.* 39. 12.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Petr.* 1. 18. 19.

Non corruptibílibus auro, vel argénto redémpti estis de vana vestra conversatióne patérnæ traditiónis: sed pretióso sánguine quasi agni immaculáti Christi, & incontamináti.

℞. *br.* Ego dixi, * Dómine, miserére mei; *Repet.* Ego dixi; * Dómine, miserére mei, ℣. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi. * Dómine, miserére mei. ℣. Glória Patri & Fílio, & Spirítui sancto. *Repetitur*, Ego. *Psal.* 40. 5.

℣. Adjútor meus esto, ne derelínquas me; ℞. Neque despícias me, Deus salutáris meus. *Psal.* 26. 9.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feriâ secundâ ad Tertiam. pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD SEXTAM.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

Rector potens &c. *pag.* 57.

*Ant.* 6. f. Dómine.

*Psalmus* 21.

Deus Deus meus, réspice in me; quare me dereliquísti? * longè à salúte mea verba delictórum meórum.

Deus meus, clamábo per diem, & non exáudies; * & nocte, & non ad insipiéntiam mihi.

Tu autem in sancto hábitas, * Laus Israël.

In te speravérunt patres nostri; * speravérunt, & liberásti eos.

Ad te clamavérunt, & salvi facti sunt: * in te speravérunt, & non sunt confúsi.

Ego autem sum vermis, & non homo, * oppróbrium hóminum, & abjéctio plebis.

Omnes vidéntes me derisérunt me: * locúti sunt lábiis, & movérunt caput.

Sperávit in Dómino, erípiat eum: * salvum fáciat eum, quóniam vult eum.

Quóniam tu es qui extraxísti me de ventre, * spes mea ab ubéribus matris meæ.

In te projéctus sum ex útero, * de ventre matris meæ, Deus meus es tu.

*Divisio Psalmi* 21.

Ne discésseris à me, quóniam tribulátio próxima est, * quóniam non est qui ádjuvet.

Circundedérunt me vítuli multi; * tauri pingues obsedérunt me.

Aperuérunt super me os suum, * sicut leo rápiens & rúgiens.

Sicut aqua effúsus sum; * &

& dispérsa sunt ómnia ossa mea.

Factum est cor meum tanquam cera liquéscens * in médio ventris mei.

A'ruit tanquam testa virtus mea, & lingua mea adhæsit fáucibus meis; * & in púlverem mortis deduxísti me.

Quóniam circundedérunt me canes multi: * concílium malignántium obsédit me.

Fodérunt manus meas & pedes meos; * dinumeravérunt ómnia ossa mea.

Ipsi verò consideravérunt & inspexérunt me; * divisérunt sibi vestiménta mea, & super vestem meam misérunt sortem.

Tu autem, Dómine, ne elongáveris auxílium tuum à me; * ad defensiónem meam cónspice.

E'rue à frámea, Deus, ánimam meam, * & de manu canis únicam meam.

Salva me ex ore leónis, * & à córnibus unicórnium humilitátem meam.

Narrábo nomen tuum frátribus meis; * in médio ecclésiæ laudábo te.

Qui timétis Dóminum, laudáte eum; * univérsum semen Jacob glorificáte eum.

Tímeat eum omne semen I'sraël; * quóniam non sprevit, neque despéxit deprecatiónem páuperis,

Nec avértit fáciem suam à me; * & cùm clamárem ad eum, exaudívit me.

*Altera divisio Psalmi* 21.

APud te laus mea in ecclésia magna; * vota mea reddam in conspéctu timéntium eum.

Edent páuperes, & saturabúntur; & laudábunt Dóminum qui requírunt eum; * vivent corda eórum in séculum séculi.

Reminiscéntur & converténtur ad Dóminum * univérsi fines terræ.

Et adorábunt in conspéctu ejus * univérsæ famíliæ Géntium.

Quóniam Dómini est regnum; * & ipse dominábitur Géntium.

Manducavérunt & adoravérunt omnes, pingues terræ: * in conspéctu ejus cadent omnes, qui descéndunt in terram.

Et ánima mea illi vivet; * & semen meum sérviet ipsi.

Annuntiábitur Dómino generátio ventúra: * & annuntiábunt cœli justítiam ejus pópulo qui nascétur, quem fecit Dóminus.

*Ant.* Dómine, ne elongáveris auxílium tuum à me.

*v.* 20.

*Per Annum, Capitulum.*
*Ephes.* 2. 13.

NUnc in Christo Jesu vos, qui aliquándo erátis longè, facti estis propè in sánguine Christi. Ipse enim est pax nostra.

℟. *br.* Benedícam Dóminum * In omni témpore. *Repetit.* Benedícam Dóminum * In omni témpore. ℣. Semper laus ejus in ore meo.* In omni témpore. ℣. Glória. *Repet.* Benedícam. *Psal.* 33. 2.

℣. Laudábo Dóminum in vita mea, ℟. Psallam Deo meo quándiù fúero. *Psal.* 145. 2.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD NONAM.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

RERUM, Deus, &c. *pag.* 59.

*Ant.* 7. a. Ego autem.

*Psalmus* 30.

IN te, Dómine, sperávi, non confúndar in ætérnum: * in justítia tua líbera me.

Inclína ad me aurem tuam,* accélera ut éruas me.

Esto mihi in Deum protectórem, & in domum refúgii,* ut salvum me fácias.

Quóniam fortitúdo mea, & refúgium meum es tu; * & propter nomen tuum dedúces me, & enútries me.

Edúces me de láqueo hoc, quem abscondérunt mihi; * quóniam tu es protéctor meus.

In manus tuas comméndo spíritum meum: * redemísti me, Dómine Deus veritátis.

Odísti observántes vanitátes, * supervácuè.

Ego autem in Dómino sperávi, * exultábo, & lætábor in misericórdia tua.

Quóniam respexísti humilitátem meam, * salvásti de necessitátibus ánimam meam.

Nec conclusísti me in mánibus inimíci; * statuísti in loco spatióso pedes meos.

*Divisio Psalmi* 30.

MIserére mei, Dómine, quóniam tríbulor; * conturbátus est in ira óculus meus, ánima mea, & venter meus;

Quóniam defécit in dolóre vita mea; * & anni mei in gemítibus.

Infirmáta est in paupertáte virtus mea; * & ossa mea conturbáta sunt.

Super omnes inimícos meos factus sum oppróbrium & vicínis meis valdè, * & timor notis meis.

Qui vidébant me, foras fugérunt à me; * oblivióni

datus sum, tanquam mórtuus à corde.

Factus sum tanquam vas pérditum; * quóniam audívi vituperatiónem multórum commorántium in circúitu;

In eo dùm convenírent simul advérsùm me, * accípere ánimam meam consiliáti sunt.

Ego autem in te sperávi, Dómine; * dixi: Deus meus es tu, in mánibus tuis sortes meæ.

E'ripe me de manu inimicórum meórum, * & à persequéntibus me.

Illústra fáciem tuam super servum tuum, salvum me fac in misericórdia tua: * Dómine, non confúndar, quóniam invocávi te.

Erubéscant ímpii, & deducántur in inférnum: * muta fiant lábia dolósa.

Quæ loquúntur advérsùs justum iniquitátem, * in supérbia; & in abusióne.

*Altera divisio Psal.* 30.

QUàm magna multitúdo dulcédinis tuæ, Dómine, * quam abscondísti timéntibus te!

Perfecísti eis, qui sperant in te, * in conspéctu filiórum hóminum.

Abscóndes eos in abscóndito faciéi tuæ * à conturbatióne hóminum.

Próteges eos in tabernáculo tuo * à contradictióne linguárum.

Benedíctus Dóminus, * quóniam mirificávit misericórdiam suam mihi in civitáte munítá.

Ego autem dixi in excéssu mentis meæ: * Projéctus sum à fácie oculórum tuórum.

I'deò exaudísti vocem oratiónis meæ, * dùm clamárem ad te.

Dilígite Dóminum omnes sancti ejus; * quóniam veritátem requíret Dóminus, & retríbuet abundánter faciéntibus supérbiam.

Viríliter ágite, & confortétur cor vestrum, * omnes qui sperátis in Dómino.

*Ant.* Ego autem in Dómino sperávi. *v.* 7.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Corinth.* 6. 20.

EMpti estis prétio magno. Glorificáte, & portáte Deum in córpore vestro.

℟. *br.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine; *Repet.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine. ℣. Et ab aliénis parce servo tuo. * Munda me, Dómine. ℣. Glória Patri. *Repet.* Ab occúltis. *Psal.* 18. 13. 14.

℣. Pérfice gressus meos in sémitis tuis, ℟. Ut non moveántur vestígia mea. *Ps.* 16. 5.

*Preces, si dicendæ sint,*

*habentur Feria secunda ad Tertiam, pag. 56.*

*Oratio ut in Proprio de tempore.*

## AD VESPERAS.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium meum inténde, &c.

*Ant.* 5. a. Ecce.

*Psalmus* 138.

DOmine, probásti me, & cognovísti me; * tu cognovísti sessiónem meam, & resurrectiónem meam.

Intellexísti cogitatiónes meas de longè, * sémitam meam, & funículum meum investigásti.

Et omnes vias meas prævidísti, * quia non est sermo in lingua mea.

Ecce, Dómine, tu cognovísti ómnia, novíssima & antiqua; * tu formásti me, & posuísti super me manum tuam.

Mirábilis facta est sciéntia tua ex me; * confortáta est, & non pótero ad eam.

Quò ibo à spíritu tuo? * & quò à fácie tua fúgiam?

Si ascéndero in cœlum, tu illic es; * si descéndero in infernum, ades.

Si súmsero pennas meas dilúculò, * & habitávero in extrémis maris.

Etenim illuc manus tua dedúcet me, * & tenébit me déxtera tua.

Et dixi: Fórsitan ténebræ conculcábunt me; * & nox illuminátio mea in delíciis meis.

Quia ténebræ non obscurabúntur à te, & nox sicut dies illuminábitur; * sicut ténebræ ejus, ita & lumen ejus.

Quia tu possedísti renes meos; * suscepísti me de útero matris meæ.

*Ant.* Ecce, Dómine, tu cognovísti ómnia, novíssima & antiqua. *v.* 5.

*Ant.* 3. c. Deduc.

*Divisio Psalmi* 138.

COnfitébor tibi quia terribíliter magnificátus es: * mirabília ópera tua; & ánima mea cognóscit nimis.

Non est occultátum os meum à te, quod fecísti in occúlto; * & substántia mea in inferióribus terræ.

Imperféctum meum vidérunt óculi tui, & in libro tuo omnes scribéntur; * dies formabúntur, & nemo in eis.

Mihi autem nimis honorificáti sunt amíci tui, Deus; * nimis confortátus est principátus eórum.

Dinumerábo eos, & super arénam multiplicabúntur: * exurréxi, & adhuc sum tecum.

Si occíderis, Deus, pecca-

tóres; * viri sánguinum, declináte à me,

Quia dícitis in cogitatióne: * Accípient in vanitáte civitátes tuas.

Nonne qui odérunt te, Dómine, óderam; * & super inimícos tuos tabescébam?

Perfécto ódio óderam illos; * & inimíci facti sunt mihi.

Proba me, Deus, & scito cor meum; * intérroga me, & cognósce sémitas meas.

Et vide si via iniquitátis in me est; * & deduc me in via ætérna.

*Ant.* Deduc me, Dómine, in via ætérna. *v.* 24.

*Ant.* 7. a. Custódi me.

*Psalmus* 139.

ERipe me, Dómine, ab hómine malo: * à viro iníquo éripe me.

Qui cogitavérunt iniquitátes in corde, * totâ die constituébant prælia.

Acuérunt linguas suas sicut serpéntis; * venénum áspidum sub lábiis eórum.

Custódi me, Dómine, de manu peccatóris, * & ab homínibus iníquis éripe me;

Qui cogitavérunt supplantáre gressus meos, * abscondérunt supérbi láqueum mihi.

Et funes extendérunt in láqueum; * juxta iter scándalum posuérunt mihi:

Dixi Dómino: Deus meus es tu; * exáudi, Dómine, vocem deprecatiónis meæ.

*Ant.* Custódi me, Dómine, de manu peccatóris. *v.* 5.

*Ant.* 3. c. Dómine.

*Divisio Psalmi* 139.

DO'mine, Dómine, virtus salútis meæ, * obumbrásti super caput meum in die belli.

Ne tradas me, Dómine, à desidério meo peccatóri: * cogitavérunt contra me, ne derelínquas me, ne fortè exalténtur.

Caput circúitus eórum; * labor labiórum ipsórum opériet eos.

Cadent super eos carbónes, in ignem dejícies eos; * in misériis non subsístent.

Vir linguósus non dirigétur in terra; * virum injustum mala cápient in intéritu.

Cognóvi quia fáciet Dóminus judícium ínopis, * & vindíctam páuperum.

Verúntamen justi confitebúntur nómini tuo; * & habitábunt recti cum vultu tuo.

*Ant.* Dómine, virtus salútis meæ, ne derelínquas me. *v.* 8. 9.

*Ant.* 8. g. Non declínes

*Psalmus* 140.

DO'mine, clamávi ad te, exáudi me; * inténde voci meæ, cùm clamávero ad te.

Dirigátur orátio mea sicut incénsum in conspéctu tuo;* elevátio mánuum meárum sacrifícium vespertínum.

Pone, Dómine, custódiam ori meo, * & óstium circumstántiæ lábiis meis.

Non declínes cor meum in verba malítiæ, * ad excusándas excusatiónes in peccátis;

Cum homínibus operántibus iniquitátem; * & non communicábo cum eléctis eórum.

Corrípiet me justus in misericórdia, & increpábit me;* óleum autem peccatóris non impínguet caput meum:

Quóniam adhuc & orátio mea, * in beneplácitis eórum.

Absórpti sunt juncti petræ júdices eórum, * áudient verba mea quóniam potuérunt.

Sicut crassitúdo terræ erúpta est super terram; * dissipáta sunt ossa nostra secùs inférnum.

Quia ad te, Dómine, Dómine, óculi mei; * in te sperávi, non áuferas ánimam meam.

Custódi me à láqueo, quem statuérunt mihi; * & à scándalis operántium iniquitátem.

Cadent in retiáculo ejus peccatóres:* singuláriter sum ego donec tránseam.

*Ant.* Non declínes cor meum, Dómine, in verba malítiæ. *v.* 4.

*Per Annum, Capitulum. Heb.* 13. 12. 13.

JEsus, ut sanctificáret per suum sánguinem pópulum, extra portam passus est. Exeámus ígitur ad eum extra castra, impropérium ejus portántes.

*Per Annum. Hymnus.*

TEllus abúndat béllüis:
Opus fidélis pérsequi
Manum Creátor ádmovet,
Homóque primus cónditur.

Limus períto dúcitur
Molles in artus póllice:
Inspírat in vultum Deus,
Et vita limum pérmeat.

Imágo nos Dei sumus,
Qui fronte rectâ fíngimur:
Sit cura semper íntegris
Deum reférre móribus.

Qui nos eódem, Cónditor,
Ad te creásti púlvere:
Opus tuæ poténtiæ,
Fac stet tuâ cleméntiâ.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Clamávi ad te, Dómine, totâ die. ℟. Expándi ad te manus meas. *Psal.* 87. 10.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 5. a. Esuriéntes implévit bonis; & dívites dimísit inánes. *Luc.* 1. 53.

*Preces, si dicenda sint, habentur suprà, pag. 46.*

*Suffragia verò pag. 63.*

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD COMPLETORIUM.

℣. Convérte nos, Deus, &c.

Deus, in adjutórium, &c.

*Per Annum, Ant.* 8. g. Dómine.

*Psalmus 37.*

DOmine, ne in furóre tuo árguas me, * neque in ira tua corrípias me.

Quóniam sagittæ tuæ infixæ sunt mihi, * & confirmásti super me manum tuam;

Non est sánitas in carne mea à fácie iræ tuæ; * non est pax óssibus meis à fácie peccatórum meórum;

Quóniam iniquitátes meæ supergréssæ sunt caput meum, * & sicut onus grave gravátæ sunt super me.

Putruérunt & corrúptæ sunt cicatrices meæ, * à fácie insipiéntiæ meæ.

Miser factus sum, & curvátus sum usque in finem; * totâ die contristátus ingrediébar.

Quóniam lumbi mei impléti sunt illusiónibus; * & non est sánitas in carne mea.

Afflíctus sum, & humiliátus sum nimis; * rugiébam à gémitu cordis mei.

Dómine, ante te omne desidérium meum; * & gémitus meus à te non est abscónditus.

*Divisio Psalmi 37.*

COr meum conturbátum est, derelíquit me virtus mea, * & lumen oculórum meórum, & ipsum non est mecum.

Amíci mei & próximi mei * advérsùm me appropinquavérunt & stetérunt;

Et qui juxta me erant, de longè stetérunt; * & vim faciébant qui quærébant ánimam meam.

Et qui inquirébant mala mihi, locúti sunt vanitátes, * & dolos totâ die meditabántur.

Ego autem tanquam surdus non audiébam, * & sicut mutus non apériens os suum.

Et factus sum sicut homo non áudiens, * & non habens in ore suo redargutiónes.

Quóniam in te, Dómine, sperávi, * tu exáudies me, Dómine Deus meus.

Quia dixi: Nequándo supergáudeant mihi inimíci mei; * & dùm commovéntur pedes mei, super me magna locúti sunt.

Quóniam ego in flagélla parátus sum; * & dolor meus in conspéctu meo semper.

Quóniam iniquitátem meam

annuntiábo ; * & cogitábo pro peccáto meo.

Inimíci autem mei vivunt, & confirmáti sunt super me;* & multiplicáti sunt qui odérunt me iníquè.

Qui retríbuunt mala pro bonis, detrahébant mihi ; * quóniam sequébar bonitátem.

Ne derelínquas me, Dómine Deus meus, * ne discésseris à me.

Inténde in adjutórium meum, * Dómine Deus salútis meæ.

*Psalmus* 55.

MIserére mei, Deus, quóniam conculcávit me homo ; * totâ die impúgnans tribulávit me.

Conculcavérunt me inimíci mei totâ die ; * quóniam multi bellántes advérsùm me.

Ab altitúdine diéi timébo;* ego verò in te sperábo.

In Deo laudâbo sermónes meos, in Deo sperávi ; * non timébo quid fáciat mihi caro.

Totâ die verba mea execrabántur ; * advérsùm me omnes cogitatiónes eórum in malum.

Inhabitábunt & abscóndent ; * ipsi calcáneum meum observábunt.

Sicut sustinuérunt ánimam meam, pro níhilo salvos fácies illos ; * in ira pópulos confringes.

Deus, vitam meam annuntiávi tibi ; * posuísti lácrymas meas in conspéctu tuo.

Sicut & in promissióne tua ; * tunc converténtur inimíci mei retrórsùm.

In quacúnque die invocávero te, * ecce cognóvi, quóniam Deus meus es.

In Deo laudábo verbum, in Dómino laudábo sermónem ; * in Deo sperâvi, non timébo quid fáciat mihi homo.

In me sunt, Deus, vota tua, quæ reddam, * laudatiónes tibi.

Quóniam eripuísti ánimam meam de morte, & pedes meos de lapsu, * ut pláceam coram Deo in lúmine vivéntium.

*Ant*. Dómine Deus meus, ne discésseris à me. *Psal.* 37. 22.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Thessal.* 5. 9.

FRatres : Non pósuit nos Deus in iram, sed in acquisitiónem salútis per Dóminum nostrum Jesum Christum, qui mórtuus est pro nobis ; ut sive vigilémus, sive dormiámus, simul cum illo vivámus.

*Per Annum. Hymnus.*

TE lucis ante términum, &c. Nunc dimíttis. *Preces & Oratio ut suprà, pag.* 66.

## SABBATO
### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

Pater. Ave. Credo.

Dómine, lábia mea apéries, *ut suprà, pag.* 1.

Deus, in adjutórium, &c.

*Per Annum, Invitatorium.*

Ipse est Dóminus Deus noster; * Veníte adorémus. *Psal.* 94. 7.

*Psalmus*, Veníte, &c, *ut suprà pag.* 2.

*Per Annum, Hymnus.*

SUMMÆ Parens clementiæ,
Mundi regis qui máchinam,
Unius & substántiæ,
Trinúsque persónis Deus,

NOSTROS pius cum cánticis
Fletus benígnè súscipe;
Ut corde puro sórdium
Te perfruámur lárgiùs.

LUMBOS jecúrque mórbidum
Flammis adúre cóngruis;
Accincti ut artus éxcubent
Luxu remóto péssimo.

QUICÚNQUE ut horas nóctium
Nunc concinéndo rúmpimus,
Ditémur omnes áffatim
Donis beátæ pátriæ.

QUI nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

### IN I. NOCTURNO.

*Per Annum, Ant.* 8. g. Dómine.

*Psalmus* 40.

BEátus qui intélligit super egénum & páuperem; * in die mala liberábit eum Dóminus.

Dóminus consérvet eum, & vivíficet eum, & beátum fáciat eum in terra, * & non tradat eum in ánimam inimicórum ejus.

Dóminus opem ferat illi super lectum dolóris ejus; * univérsum stratum ejus versásti in infirmitáte ejus.

Ego dixi: Dómine, miserére mei; * sana ánimam meam, quia peccávi tibi.

Inimíci mei dixérunt mala mihi: * Quando morietur, & períbit nomen ejus?

Et si ingrediebátur ut vidéret, vana loquebátur, * cor ejus congregávit iniquitátem sibi.

Egrediebátur foras, * & loquebátur in idípsum.

Advérsùm me susurrábant omnes inimíci mei, * advérsùm me cogitábant mala mihi.

Verbum iníquum constituérunt advérsùm me: * Numquid qui dormit, non adjíciet ut resúrgat?

E'tenim homo pacis meæ, in quo sperávi, * qui edébat panes meos, magnificávit

super me supplantatiónem.

Tu autem, Dómine, miserére mei, & resúscita me; * & retríbuam eis.

In hoc cognóvi, quóniam voluísti me: * quóniam non gaudébit inimícus meus super me.

Me autem propter innocéntiam suscepísti, * & confirmásti me in conspéctu tuo in ætérnum.

Benedíctus Dóminus Deus Israël à sǽculo, & usque in sǽculum; * Fiat, fiat.

*Psalmus* 48.

AUdíte hæc, omnes Gentes; * áuribus percípite omnes, qui habitátis orbem.

Quique terrígenæ, & filii hóminum, * simul in unum dives & pauper.

Os meum loquétur sapiéntiam, * & meditátio cordis mei prudéntiam.

Inclinábo in parábolam aurem meam, * apériam in psaltério propositiónem meam.

Cur timébo in die mala? * iníquitas calcánei mei circúndabit me.

Qui confídunt in virtúte sua, * & in multitúdine divitiárum suárum gloriántur.

Frater non rédimit, rédimet homo? * non dabit Deo placatiónem suam.

Et prétium redemptiónis ánimæ suæ; * & laborábit in ætérnum, & vivet adhuc in finem.

Non vidébit intéritum, cùm víderit sapiéntes moriéntes: * simul insípiens & stultus períbunt.

Et relínquent aliénis divítias suas, * & sepúlcra eórum domus illórum in ætérnum.

Tabernácula eórum in progénie, & progénie: * vocavérunt nómina sua in terris suis.

Et homo, cùm in honóre esset, non intelléxit; * comparátus est juméntis insipiéntibus, & símilis factus est illis.

Hæc via illórum scándalum ipsis; * & póstea in ore suo complacébunt.

Sicut oves in inférno pósiti sunt: * mors depáscet eos.

Et dominabúntur eórum justi in matutíno; * & auxílium eórum veteráscet in inférno à glória eórum.

Verúntamen Deus rédimet ánimam meam de manu ínferi, * cùm accéperit me.

*Divisio Psalmi* 48.

NE timúeris cùm dives factus fúerit homo, * & cùm multiplicáta fúerit glória domûs ejus.

Quóniam cùm intérierit, non sumet ómnia; * neque descéndet cum eo glória ejus.

Quia ánima ejus in vita ipsius benedicétur; * confitébitur tibi cùm benefécerit ei.

Introîbit usque in progénies patrum suórum, * & usque in ætérnum non vidébit lumen.

Homo, cùm in honóre esset, non intelléxit; * comparátus est juméntis insipiéntibus, & símilis factus est illis.

*Ant.* Dómine, miserére mei; sana ánimam meam, quia peccávi tibi. *Ps.* 40. 5.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 4. *irreg.* c. Tibi, Deus.

*Psalmus* 61.

NOnne Deo subjécta erit ánima mea? * ab ipso enim salutáre meum.

Nam & ipse Deus meus, & salutáris meus, suscéptor meus, * non movébor ámpliùs.

Quoúsque irrúitis in hóminem? * interfícitis univérsi vos tanquam paríeti inclináto & macériæ depúlsæ?

Verúntamen prétium meum cogitavérunt repéllere, cucúrri in siti: * ore suo benedicébant, & corde suo maledicébant.

Verúntamen Deo subjécta esto, ánima mea; * quóniam ab ipso patiéntia mea.

Quia ipse Deus meus, & salvátor meus, adjútor meus: * non emigrábo.

In Deo salutáre meum, & glória mea: * Deus auxílii mei, & spes mea in Deo est.

Speráte in eo, omnis congregátio pópuli, effúndite coram illo corda vestra: * Deus adjútor noster in ætérnum.

Verúntamen vani fílii hóminum, mendáces fílii hóminum in statéris, * ut decípiant ipsi de vanitáte in idípsum.

Nolíte speráre in iniquitáte, & rapínas nolíte concupíscere: * divítiæ si áffluant, nolíte cor appónere.

Semel locútus est Deus, duo hæc audívi, quia potéstas Dei est, & tibi, Dómine, misericórdia; * quia tu reddes unicuíque juxta ópera sua.

*Psalmus* 63.

EXáudi, Deus, oratiónem meam cùm déprecor: * à timóre inimíci éripe ánimam meam.

Protexísti me à convéntu malignántium, * à multitúdine operántium iniquitátem.

Quia exacuérunt ut gládium linguas suas; * intendérunt arcum rem amáram, ut sagíttent in occúltis immaculátum.

Súbitò sagittábunt eum, & non timébunt: * firmavérunt sibi sermónem nequam.

Narravérunt ut abscónderent láqueos: * dixérunt: Quis vidébit eos?

Scrutáti sunt iniquitátes; * defecérunt scrutántes scrutínio.

Accédet homo ad cor al-

tum; * & exaltábitur Deus.

Sagittæ parvulórum factæ sunt plagæ eórum; * & infirmátæ sunt contra eos linguæ eórum.

Conturbáti sunt omnes qui vidébant eos; * & tímuit omnis homo.

Et annuntiavérunt ópera Dei, * & facta ejus intellexérunt.

Lætábitur justus in Dómino, & sperábit in eo; * & laudabúntur omnes recti corde.

*Psalmus* 74.

CONfitébimur tibi, Deus, * confitébimur, & invocábimus nomen tuum.

Narrábimus mirabília tua: * cùm accépero tempus, ego justítias judicábo.

Liquefácta est terra, & omnes qui hábitant in ea: * ego confirmávi colúmnas ejus.

Dixi iníquis: Nolíte iníquè ágere: * & delinquéntibus: Nolíte exaltáre cornu:

Nolíte extóllere in altum cornu vestrum: * nolíte loqui advérsùs Deum iniquitátem.

Quia neque ab Oriénte, neque ab Occidénte, * neque à desértis móntibus.

Quóniam Deus judex est, * hunc humíliat, & hunc exáltat;

Quia calix in manu Dómini vini meri plenus misto, * & inclinávit ex hoc in hoc;

Verúntamen fæx ejus non est exinaníta: * bibent omnes peccatóres terræ.

Ego autem annuntiábo in sǽculum: * cantábo Deo Jacob.

Et ómnia córnua peccatórum confríngam: * & exaltabúntur córnua justi.

*Ant.* Tibi, Deus, confitébimur, & invocábimus nomen tuum. *Ps.* 74. 8.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 3. g. Deus.

*Psalmus* 81.

DEus stetit in synagóga deórum; * in médio autem deos dijúdicat.

U'squequò judicátis iniquitátem, * & fácies peccatórum súmitis?

Judicáte egéno, & pupíllo; * húmilem & páuperem justificáte.

Erípite páuperem, * & egénum de manu peccatóris liberáte.

Nesciérunt, neque intellexérunt, in ténebris ámbulant: * movebúntur ómnia fundaménta terræ.

Ego dixi: Dii estis, * & fílii Excélsi omnes.

Vos autem sicut hómines moriémini, * & sicut unus de princípibus cadétis.

Surge, Deus, júdica terram: *

quóniam tu hereditábis in ómnibus Géntibus.

*Psalmus* 82.

DEus, quis símilis erit tibi? * ne táceas, neque compescáris, Deus;

Quóniam ecce inimíci tui sonuérunt, * & qui odérunt te, extulérunt caput.

Super pópulum tuum malignavérunt consílium, * & cogitavérunt advérsùs sanctos tuos.

Dixérunt: Veníte, & disperdámus eos de gente, * & non memorétur nomen Israël ultrà.

Quóniam cogitavérunt unanímiter simul; * advérsùm te testaméntum dispofuérunt tabernácula Idumæórum & Ismahëlítæ;

Moab, & Agaréni, Gebal, & Ammon, & A'malec, * alienígenæ cum habitántibus Tyrum.

E'tenim Assur venit cum illis; * facti sunt in adjutórium fíliis Lot.

Fac illis sicut Mádian, & Sísaræ; * sicut Jabin in torrénte Cisson.

Dispeniérunt in Endor; * facti sunt ut stercus terræ.

Pone príncipes eórum sicut Oreb & Zeb, * & Zébee, & Sálmana.

Omnes príncipes eórum, qui dixérunt: * Hereditáte possideámus Sanctuárium Dei.

*Divisio Psalmi* 82.

DEus meus, pone illos ut rotam, * & sicut stípulam ante fáciem venti.

Sicut ignis, qui combúrit silvam, * & sicut flamma combúrens montes,

Ita persequéris illos in tempestáte tua, * & in ira tua turbábis eos.

Imple fácies eórum ignomínia, * & quærent nomen tuum, Dómine.

Erubéscant, & conturbéntur in séculum séculi, * & confundántur, & péreant,

Et cognóscant quia nomen tibi Dóminus, * tu solus Altíssimus in omni terra.

*Ant.* Deus, quis símilis erit tibi? *Psal.* 82. 2.

℣. Confitébor tibi in pópulis, Dómine; ℟. Quia magna est super coelos misericórdia tua. *Ps.* 107. 4. 5.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Repleátur, Dómine, os meum laude. ℟. Ut cantem glóriam tuam, totâ die magnitúdinem tuam. *Psal.* 70. 8.

Deus, in adjutórium, &c.

*Per Annum*, *Ant.* 8. g. Mirífica.

*Psalmus* 16.

EXáudi, Dómine, justítiam meam: * inténde deprecatiónem meam.

Aúribus pércipe oratiónem meam, * non in lábiis dolósis.

De vultu tuo judícium meum pródeat: * óculi tui vídeant æquitátes.

Probásti cor meum, & visitásti nocte: * igne me examinásti, & non est invénta in me iníquitas.

Ut non loquátur os meum ópera hóminum: * propter verba labiórum tuórum ego custodívi vias duras.

Pérfice gressus meos in sémitis tuis; * ut non moveántur vestígia mea.

Ego clamávi, quóniam exaudísti me, Deus: * inclína aurem tuam mihi, & exáudi verba mea.

Mirífica misericórdias tuas, * qui salvos facis sperántes in te.

A resisténtibus déxteræ tuæ custódi me, * ut pupíllam óculi.

Sub umbra alárum tuárum prótege me, * à fácie impiórum qui me afflixérunt.

*Ant.* Mirífica misericórdias tuas, qui salvos facis sperántes in te. *v. 7.*

*Ant.* 2. d. Satiábor.

*Divisio Psalmi* 16.

INimíci mei ánimam meam circundedérunt, ádipem suum conclusérunt, * os eórum locútum est supérbiam.

Projiciéntes me nunc circundedérunt me; * óculos suos statuérunt declináre in terram.

Suscepérunt me sicut leo parátus ad prædam; * & sicut cátulus leónis hábitans in ábditis.

Exúrge, Dómine, prævéni eum, & supplánta eum; * éripe ánimam meam ab ímpio, frámeam tuam ab inimícis manûs tuæ.

Dómine, à paucis de terra dívide eos in vita eórum: * de abscónditis tuis adimplétus est venter eórum.

Saturáti sunt fíliis; * & dimisérunt relíquias suas párvulis suis.

Ego autem in justítia apparébo conspéctui tuo, * satiábor cùm apparúerit glória tua.

*Ant.* Satiábor, Dómine, cùm apparúerit glória tua. *v.* 15.

*Ant.* 1. a. Deus.

*Psalmus* 56.

MIserére mei, Deus, miserére mei; * quóniam in te confídit ánima mea.

Et in umbra alárum tuárum sperábo, * donec tránseat iníquitas.

Clamábo ad Deum Altíssimum, * Deum qui benefécit mihi.

Misit de cœlo, & liberávit me: * dedit in oppró-

brium conculcántes me.

Misit Deus misericórdiam suam, & veritátem suam, & eripuit ánimam meam de médio catulórum leónum: * dormívi conturbátus.

Fílii hóminum, dentes eórum arma & sagíttæ; * & lingua eórum gládius acútus.

Exaltáre super cœlos, Deus; * & in omnem terram glória tua.

Láqueum paravérunt pédibus meis, * & incurvavérunt ánimam meam.

Fodérunt ante fáciem meam fóveam, * & incidérunt in eam.

Parátum cor meum, Deus, parátum cor meum; * cantábo, & psalmum dicam.

Exúrge, glória mea, exúrge, psaltérium & cíthara: * exúrgam dilúculo.

Confitébor tibi in pópulis, Dómine, * & psalmum dicam tibi in Géntibus;

Quóniam magnificáta est usque ad cœlos misericórdia tua, * & usque ad nubes véritas tua.

Exaltáre super cœlos, Deus; * & super omnem terram glória tua.

*Ant.* Deus, miserére mei; quóniam in te confídit ánima mea. *v.* 2.

*Ant.* 3. g. Date.

*Canticum Moysi. Deuter.* 32. 1.

AUdíte, cœli, quæ loquor; * áudiat terra verba oris mei.

Concréscat ut plúvia doctrína mea, * fluat ut ros elóquium meum.

Quasi imber super herbam, & quasi stillæ super grámina; * quia nomen Dómini invocábo.

Date magnificéntiam Deo nostro: * Dei perfécta sunt ópera, & omnes viæ ejus judícia.

Deus fidélis, & absque ulla iniquitáte, * justus & rectus.

Peccavérunt ei, & non fílii ejus in sórdibus; * generátio prava atque pervérsa.

Hæccine reddis Dómino, * pópule stulte & insípiens?

Nunquid non ipse est pater tuus, * qui possédit te, & fecit, & creávit te?

Meménto diérum antiquórum, * cógita generatiónes síngulas.

Intérroga patrem tuum, & annuntiábit tibi; * majóres tuos, & dicent tibi.

Quando dividébat Altíssimus Gentes; * quando separábat fílios Adam,

Constítuit términos populórum * juxta númerum filiórum Israël.

Pars autem Dómini, pó-

pulus ejus; * Jacob funículus hereditátis ejus.

Invénit eum in terra desérta, * in loco horróris, & vastæ solitúdinis.

Circumdúxit eum, & dócuit; * & custodívit quasi pupíllam óculi sui.

Sicut áquila próvocans ad volándum pullos suos, * & super eos vólitans.

Expándit alas suas, & assúmpsit eum, * atque portávit in húmeris suis.

Dóminus solus dux ejus fuit; * & non erat cum eo deus aliénus.

Constítuit eum super excélsam terram, * ut coméderet fructus agrórum.

Ut súgeret mel de petra, * oleúmque de saxo duríssimo.

Bútyrum de arménto, & lac de óvibus, * cum ádipe agnórum, & aríetum filiórum Basan;

Et hircos, cum medúlla trítici; * & sánguinem uvæ bíberet meracíssimum.

Incrassátus est diléctus, & recalcitrávit; * incrassátus, impinguátus, dilatátus.

Derelíquit Deum factórem suum, * & recéssit à Deo salutári suo.

Provocavérunt eum in diis aliénis, * & in abominatiónibus ad iracúndiam concitavérunt.

Immolavérunt dæmóniis & non Deo, * diis, quos ignorábant.

Novi recentésque venérunt, * quos non coluérunt patres eórum.

Deum, qui te génuit, dereliquísti, * & oblítus es Dómini creatóris tui.

Vidit Dóminus, & ad iracúndiam concitátus est; * quia provocavérunt eum fílii sui & fíliæ;

Et ait: Abscóndam fáciem meam ab eis, * & considerábo novíssima eórum;

Generátio enim pervérsa est, * & infidéles fílii.

Ipsi me provocavérunt in eo, qui non erat Deus, * & irritavérunt in vanitátibus suis;

Et ego provocábo eos in eo, qui non est pópulus, * & in gente stulta irritábo illos.

Ignis succénsus est in furóre meo, * & ardébit usque ad inférni novíssima;

Devorábitque terram cum gérmine suo, * & móntium fundaménta combúret.

Congregábo super eos mala, * & sagíttas meas complébo in eis.

Consuméntur fame, * & devorábunt eos aves morsu amaríssimo.

Dentes bestiárum immíttam in eos, * cum furóre trahéntium super terram, atque serpéntium.

Foris vastábit eos gládius, & intùs pavor, * júvenem simul ac vírginem, lacténtem cum hómine sene.

Dixi: U'binam sunt? * cessáre fáciam ex homínibus memóriam eórum.

Sed propter iram inimicórum dístuli; * ne fortè superbírent hostes eórum.

Et dícerent: Manus nostra excélsa, & non Dóminus, * fecit hæc ómnia.

Gens absque consílio est, & sine prudéntia: * U'tinam sáperent, & intellígerent, ac novíssima providérent!

Quómodo persequátur unus mille, * & duo fugent decem míllia?

Nonne ídeò, quia Deus suus véndidit eos, * & Dóminus conclúsit illos?

Non enim est Deus noster ut dii eórum; * & inimíci nostri sunt júdices.

De vínea Sodomórum, vínea eórum, * & de suburbánis Gomórrhæ.

Uva eórum uva fellis, * & botri amaríssimi.

Fel dracónum vinum eórum, * & venénum áspidum insanábile.

Nonne hæc cóndita sunt apud me, * & signáta in thesáuris meis?

Mea est últio, & ego retríbuam in témpore * ut labátur pes eórum.

Juxtà est dies perditiónis, * & adésse festínant témpora.

Judicábit Dóminus pópulum suum, * & in servis suis miserébitur.

Vidébit quòd infirmáta sit manus, * & clausi quoque defecérunt, residuíque consúmti sunt.

Et dicet: Ubi sunt dii eórum, * in quibus habébant fidúciam?

De quorum víctimis comedébant ádipes, * & bibébant vinum libáminum;

Surgant & opituléntur vobis, * & in necessitáte vos prótegant.

Vidéte quòd ego sim solus, * & non sit álius Deus præter me.

Ego occídam, & ego vívere fáciam; percútiam, & ego sanábo; * & non est qui de manu mea possit erúere.

Levábo ad cœlum manum meam, & dicam: * Vivo ego in ætérnum.

Si acúero ut fulgur gládium meum, * & arripúerit judícium manus mea.

Reddam ultiónem hóstibus meis, * & his qui odérunt me retríbuam.

Inebriábo sagíttas meas sánguine, * & gládius meus devorábit carnes,

De cruóre occisórum, * & de captivitáte, nudáti inimicórum cápitis.

Laudáte

Laudáte, Gentes, pópulum ejus, * quia sánguinem servórum suórum ulciscétur.

Et vindíctam retríbuet in hostes eórum, * & propítius erit terræ pópuli sui.

*Ant.* Date magnificéntiam Deo nostro. *v.* 3.

[*In Festis, loco superioris Cantici, dicitur sequens Canticum.*

*Jonæ* 2. 3.

CLamávi de tribulatióne mea ad Dóminum, & exaudívit me: * de ventre ínferi clamávi, & exaudísti vocem meam.

Et projecísti me in profúndum in corde maris, & flumen circúndedit me: * omnes gúrgites tui, & fluctus tui super me transiérunt.

Et ego dixi: Abjéctus sum à conspéctu oculórum tuórum: * verúntamen rursùs vidébo templum sanctum tuum.

Circundedérunt me aquæ usque ad ánimam, abyssus vallávit me, * pélagus opéruit caput meum.

Ad extréma móntium descéndi: terræ vectes conclusérunt me in ætérnum; * & sublevábis de corruptióne vitam meam, Dómine Deus meus.

Cùm angustiarétur in me ánima mea, Dómini recordátus sum; * ut véniat ad te orátio mea ad templum sanctum tuum.

Qui custódiunt vanitátes frustrà, * misericórdiam suam derelínquunt.

Ego autem in voce laudis immolábo tibi; * quæcúnque vovi, reddam pro salúte Dómino.]

*Ant.* 5. a. Omnes.

*Psalmus* 116.

LAudáte Dóminum, omnes Gentes, * laudáte eum, omnes pópuli.

Quóniam confirmáta est super nos misericórdia ejus; * & véritas Dómini manet in ætérnum.

*Ant.* Omnes Gentes, laudáte Dóminum. *v.* 1.

*Per Annum, Capitulum. Rom.* 13. 12. 13.

NOx præcéssit, dies autem appropinquávit. Abjiciámus ergo ópera tenebrárum, & induámur arma lucis. Sicut in die honéstè ambulémus.

*Per Annum. Hymnus.*

AURÓRA jam spargit polum:
Terris dies illábitur:
Lucis resúltat spículum:
Discédat omne lúbricum.

PHANTÁSMA noctis éxulet:
Mentis reátus córruat:
Quidquid tenébris hórridum
Nox áttulit culpæ, cadat.

UT mane quod nos últimum

Hic deprecámur cérnui;
Cum luce nobis éffluat,
Hoc dùm canóre cóncrepat.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Per Annum.* ℣. Exultábunt lábia mea cùm cantávero tibi; ℟. Et lingua mea totâ die meditábitur justítiam tuam. *Ps.* 70. 23. 24.

*Per Annum. Ad* Benedíctus. *Ant.* 3. d. Dírige pedes nostros in viam pacis, Deus Ísraël. *Luc.* 1. 79.

*Preces, quando dicuntur, & Suffragia habentur suprà in Laudibus Feria secunda. pag. 46. 47.*

## AD PRIMAM.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium meum inténde, &c.

*Hymnus.*

Jam lucis orto sídere, &c. *ut suprà. pag.* 49.

*Ant.* 8. g. Notam.

*Psalmus* 87.

Dómine Deus salútis meæ, * in die clamávi, & nocte coram te.

Intret in conspéctu tuo orátio mea, * inclína aurem tuam ad precem meam.

Quia repléta est malis ánima mea, * & vita mea inférno appropinquávit.

Æstimátus sum cum descendéntibus in lacum, * factus sum sicut homo sine adjutório, inter mórtuos liber.

Sicut vulneráti dormiéntes in sepúlcris, quorum non es memor ámpliùs; * & ipsi de manu tua repúlsi sunt.

Posuérunt me in lacu inferióri, * in tenebrósis, & in umbra mortis.

Super me confirmátus est furor tuus; * & omnes fluctus tuos induxísti super me.

Longè fecísti notos meos à me; * posuérunt me abominatiónem sibi.

Tráditus sum, & non egrediébar; * óculi mei languérunt præ inópia.

Clamávi ad te, Dómine, totâ die, * expándi ad te manus meas.

Nunquid mórtuis fácies mirabília, * aut médici suscitábunt, & confitebúntur tibi?

Nunquid narrábit áliquis in sepúlcro misericórdiam tuam, * & veritátem tuam in perditióne.

Nunquid cognoscéntur in ténebris mirabília tua, * & justítia tua in terra obliviónis?

Et ego ad te, Dómine, clamávi, * & manè orátio mea prævéniet te.

Ut quid, Dómine, repéllis oratiónem meam; * avértis fáciem tuam à me?

Pauper sum ego, & in labóribus à juventúte mea; * exaltátus autem, humiliátus sum & conturbátus.

In me transiérunt iræ tuæ, * & terróres tui conturbavérunt me.

Circumdedérunt me sicut aqua totâ die; * circumdedérunt me simul.

Elongásti à me amícum & próximum, * & notos meos à miséria.

*Psalmus* 142.

DOmine, exáudi oratiónem meam; áuribus pércipe obsecratiónem meam in veritáte tua, * exáudi me in tua justítia.

Et non intres in judícium cum servo tuo; * quia non justificábitur in conspéctu tuo omnis vivens.

Quia persecútus est inimícus ánimam meam, * humiliávit in terra vitam meam.

Collocávit me in obscúris sicut mórtuos séculi; * & anxiátus est super me spíritus meus, in me turbátum est cor meum.

Memor fui diérum antiquórum, meditátus sum in ómnibus opéribus tuis; * in factis mánuum tuárum meditábar.

Expándi manus meas ad te, * ánima mea sicut terra sine aqua tibi.

Velóciter exáudi me, Dómine, * defécit spíritus meus.

Non avértas fáciem tuam à me, * & símilis ero descendéntibus in lacum.

Audítam fac mihi manè misericórdiam tuam, * quia in te sperávi.

Notam fac mihi viam, in qua ámbulem; * quia ad te levávi ánimam meam.

*Divisio Psalmi* 142.

ERipe me de inimícis meis, Dómine, ad te confúgi: * doce me fácere voluntátem tuam, quia Deus meus es tu.

Spíritus tuus bonus dedúcet me in terram rectam; * propter nomen tuum, Dómine, vivificábis me in æquitáte tua.

Edúces de tribulatióne ánimam meam, * & in misericórdia tua dispérdes inimícos meos.

Et perdes omnes, qui tríbulant ánimam meam, * quóniam ego servus tuus sum.

*Ant.* Notam fac mihi viam, in qua ámbulem, quia ad te levávi ánimam meam. *Psal.* 142. 8.

*Per Annum, Capitulum. Philipp.* 4. 8.

QUæcúnque sunt vera, quæcúnque pudíca, quæcúnque justa, quæcúnque sancta, quæcúnque ama-

bilia, quæcúmque bonæ famæ, si qua virtus, si qua laus disciplínæ, hæc cogitáte.

℟. *breve.* Christe fili Dei vivi, &c.

*Et Preces habentur suprà pag.* 51.

## AD TERTIAM.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium meum inténde, &c.

*Hymnus.*

Nunc sancte &c. *pag.* 54.

*Ant.* 2. d. Benedíctum.

*Psalmus* 44.

ERuctávit cor meum verbum bonum: * dico ego ópera mea Regi.

Lingua mea cálamus scribæ, * velóciter scribéntis.

Speciósus formâ præ filiis hóminum, diffúsa est grátia in lábiis tuis; * proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

Accíngere gládio tuo super femur tuum, * Potentíssime,

Spécie tuâ & pulchritúdine tuâ * inténde, prósperè procéde,

Et regna propter veritátem, & mansuetúdinem, & justítiam, * & dedúcet te mirabíliter déxtera tua.

Sagíttæ tuæ acútæ, pópuli sub te cadent, * in corda inimicórum regis.

Sedes tua, Deus, in séculum séculi: * virga directiónis, virga regni tui.

Dilexísti justítiam, & odísti iniquitátem; * proptéreà unxit te Deus Deus tuus, óleo lætítiæ præ consórtibus tuis.

Myrrha, & gutta, & cásia à vestiméntis tuis, à dómibus ebúrneis; * ex quibus delectavérunt te fíliæ regum in honóre tuo.

A'stitit regína à dextris tuis in vestítu deauráto; * circúndata varietáte.

Audi fília, & vide, & inclína aurem tuam; * & oblivíscere pópulum tuum, & domum patris tui.

Et concupíscet Rex decórem tuum, * quóniam ipse est Dóminus Deus tuus, & adorábunt eum.

Et fíliæ Tyri in munéribus; * vultum tuum deprecabúntur omnes dívites plebis.

Omnis glória ejus fíliæ Regis ab intus, * in fímbriis áureis circumamícta varietátibus.

Adducéntur Regi vírgines post eam; * próximæ ejus afferéntur tibi.

Afferéntur in lætítia & exultatióne, * adducéntur in templum Regis.

Pro pátribus tuis nati sunt tibi fílii : * constítues eos príncipes super omnem terram.

Mémores erunt nóminis tui * in omni generatióne & generatiónem.

Proptéreà pópuli confitebúntur tibi in ætérnum, * & in séculum séculi.

*Psalmus 71.*

DEus, judícium tuum regi da, * & justítiam tuam fílio regis :

Judicáre pópulum tuum in justítia, * & páuperes tuos in judício.

Suscípiant montes pacem pópulo, * & colles justítiam.

Judicábit páuperes pópuli, & salvos fáciet fílios páuperum, * & humiliábit calumniatórem.

Et permanébit cum sole, & ante lunam, * in generatióne & generatiónem.

Descéndet sicut plúvia in vellus, * & sicut stillicídia stillántia super terram.

Oriétur in diébus ejus justítia, & abundántia pacis, * donec auferátur luna.

Et dominábitur à mari usque ad mare, * & à flúmine usque ad términos orbis terrárum.

Coram illo prócident Æthíopes ; * & inimíci ejus terram lingent.

*Divisio Psalmi 71.*

REges Tharsis & insulæ múnera ófferent : * reges A'rabum & Saba dona addúcent.

Et adorábunt eum omnes reges terræ ; * omnes Gentes sérvient ei ;

Quia liberábit páuperem à poténte, * & páuperem, cui non erat adjútor.

Parcet páuperi & ínopi, * & ánimas páuperum salvas fáciet.

Ex usúris & iniquitáte rédimet ánimas eórum ; * & honorábile nomen eórum coram illo.

Et vivet, & dábitur ei de auro Arábiæ, & adorábunt de ipso semper, * totâ die benedícent ei.

Et erit firmaméntum in terra in summis móntium, superextollétur super Líbanum fructus ejus, * & florébunt de civitáte sicut fœnum terræ.

Sit nomen ejus benedíctum in sécula : * ante solem pérmanet nomen ejus.

Et benedicéntur in ipso omnes tribus terræ : * omnes Gentes magnificábunt eum.

Benedíctus Dóminus Deus I'sraël, * qui facit mirabília solus.

Et benedíctum nomen majestátis ejus in ætérnum ; &

replébitur majestáte ejus omnis terra : * Fiat, fiat.

*Ant.* Benedíctum nomen majestátis ejus in ætérnum. *Psal.* 71. 19.

*Per Annum, Capitulum.* 2. *Pet.* 1. 10.

SAtágite ut per bona ópera certam vestram vocatiónem & electiónem faciátis; hæc enim faciéntes, non peccábitis aliquándo.

℟. *br.* Ego dixi, * Dómine, miserére mei; *Repet.* Ego dixi, * Dómine, miserére mei; ℣. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi. * Dómine, miserére mei. ℣. Glória Patri & Fílio, & Spirítui sancto. *Repetitur*, Ego. *Psal.* 40. 5.

℣. Adjútor meus esto, ne derelínquas me; ℟. Neque despícias me, Deus salutáris meus. *Psal.* 26. 9.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD SEXTAM.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium meum inténde, &c.

*Hymnus.*

Rector potens, &c. pag. 57.

*Per Annum, Ant.* 3. c. Magnus.

*Psalmus* 45.

DEus noster refúgium, & virtus; * adjútor in tribulatiónibus, quæ invenérunt nos nimis.

Proptéreà non timébimus dùm turbábitur terra, * & transferéntur montes in cor maris.

Sonuérunt, & turbátæ sunt aquæ eórum, * conturbáti sunt montes in fortitúdine ejus.

Flúminis ímpetus lætíficat civitátem Dei : * sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus.

Deus in médio ejus, non commovébitur : * adjuvábit eam Deus manè dilúculò.

Conturbátæ sunt Gentes, & inclinàta sunt regna : * dedit vocem suam, mota est terra.

Dóminus virtútum nobíscum; * suscéptor noster Deus Jacob.

Veníte, & vidéte ópera Dómini, quæ pósuit prodígia super terram; * áuferens bella usque ad finem terræ.

Arcum cónteret, & confringet arma, * & scuta combúret igni.

Vacáte, & vidéte quóniam ego sum Deus : * exaltábor in Géntibus, & exaltábor in terra.

Dóminus virtútum nobís-

ctum ; * suscéptor noster Deus Jacob.

*Psalmus* 47.

MAgnus Dóminus, & laudábilis nimis * in civitáte Dei nostri, in monte sancto ejus.

Fundátur exultatióne univérsæ terræ mons Sion, * látera Aquilónis, cívitas Regis magni.

Deus in dómibus ejus cognoscétur, * cùm suscípiet eam.

Quóniam ecce reges terræ congregáti sunt, * convenérunt in unum.

Ipsi vidéntes sic admiráti sunt, conturbáti sunt, commóti sunt; tremor apprehéndit eos : * ibi dolóres ut parturiéntis.

In spíritu veheménti * cónteres naves Tharsis.

Sicut audívimus, sic vídimus in civitáte Dómini virtútum, in civitáte Dei nostri : * Deus fundávit eam in ætérnum.

Suscépimus, Deus, misericórdiam tuam, * in médio templi tui.

Secúndùm nomen tuum, Deus, sic & laus tua in fines terræ : * justítiâ plena est déxtera tua.

Lætétur mons Sion, & exúltent fíliæ Judæ, * propter judícia tua, Dómine.

Circúndate Sion, & complectímini eam ; * narráte in túrribus ejus.

Pónite corda vestra in virtúte ejus, & distribúite domos ejus, * ut enarrétis in progénie áltera.

Quóniam hic est Deus, Deus noster in ætérnum, & in séculum séculi : * ipse reget nos in sécula.

*Psalmus* 86.

FUndaménta ejus in móntibus sanctis : * díligit Dóminus portas Sion super ómnia tabernácula Jacob.

Gloriósa dicta sunt de te, * cívitas Dei.

Memor ero Rahab & Babylónis * sciéntium me.

Ecce alienígenæ, & Tyrus, & pópulus Æthíopum, * hi fuérunt illic.

Nunquid Sion dicet : Homo, & homo natus est in ea, * & ipse fundávit eam Altíssimus ?

Dóminus narrábit in scriptúris populórum, & príncipum ; * horum, qui fuérunt in ea.

Sicut lætántium ómnium * habitátio est in te.

*Ant.* Magnus Dóminus & laudábilis nimis in civitáte Dei nostri. *Psal.* 47. 2.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Corinth.* 10. 31.

SIve manducátis, sive bíbitis, sive áliud quid fácitis ; ómnia in glóriam Dei fácite.

℟. br. Benedícam Dóminum * In omni témpore. *Repetit*, Benedícam Dóminum * In omni témpore. ℣. Semper laus ejus in ore meo * In omni témpore. ℣. Glória. *Repet*. Benedícam. *Ps*. 33. 2.

℣. Laudábo Dóminum in vita mea, ℟. Psallam Deo meo quándiù fúero. *Psal*. 145. 2.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag.* 56.

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD NONAM.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium, &c.

*Hymnus.*

RERUM Deus, &c. *pag.* 59.

*Per Annum, Ant*. 5. a. Da nobis.

*Psalmus* 59.

DEus, repulísti nos, & destruxísti nos: * irátus es, & miséртus es nobis.

Commovísti terram, & conturbásti eam: * sana contritiónes ejus, quia commóta est.

Ostendísti pópulo tuo dura: * potásti nos vino compunctiónis.

Dedísti metuéntibus te significatiónem, ut fúgiant à fácie arcûs: * ut liberéntur dilécti tui.

Salvum fac dexterâ tuâ, * & exáudi me.

Deus locútus est in sancto suo: * Lætábor, & partíbor Síchimam, & convállem tabernaculórum metíbor.

Meus est Gálaad, & meus est Manásses, * & E'phraïm fortitúdo cápitis mei.

Juda rex meus, * Moab olla spei meæ.

In Idumæam exténdam calceaméntum meum; * mihi alienígenæ súbditi sunt.

Quis dedúcet me in civitátem munítam? * quis dedúcet me usque in Idumæam?

Nonne tu, Deus, qui repulísti nos, * & non egrediéris, Deus, in virtútibus nostris?

Da nobis auxílium de tribulatióne, * quia vana salus hóminis.

In Deo faciémus virtútem, * & ipse ad níhilum dedúcet tribulántes nos.

*Psalmus* 73.

UT quid, Deus, repulísti in finem; * irátus est furor tuus super oves páscuæ tuæ?

Memor esto congregatiónis tuæ, * quam possedísti ab inítio.

Redemísti virgam hereditátis tuæ: * mons Sion, in quo habitásti in eo.

Leva manus tuas in supér-

bias eórum in finem; * quanta malignátus est inimícus in sancto!

Et gloriáti sunt qui odérunt te, * in médio solemnitátis tuæ.

Posuérunt signa sua, signa, & non cognovérunt, * sicut in éxitu super summum.

Quasi in silva lignórum secúribus excidérunt jánuas ejus in idípsum: * in secúri & áscia dejecérunt eam.

Incendérunt igni sanctuárium tuum: * in terra polluérunt tabernáculum nóminis tui.

Dixérunt in corde suo cognátio eórum simul: * Quiéscere faciámus omnes dies festos Dei à terra.

Signa nostra non vídimus, jam non est prophéta: * & nos non cognóscet ámpliùs.

Usquequò, Deus, improperábit inimícus, * irrítat adversárius nomen tuum in finem?

Ut quid avértis manum tuam, & déxteram tuam, * de médio sinu tuo in finem?

Deus autem Rex noster ante sécula, * operátus est salútem in médio terræ.

Tu confirmásti in virtúte tua mare; * contribulásti cápita dracónum in aquis.

Tu confregísti cápita dracónis, * dedísti eum escam pópulis Æthiopum.

Tu dirupísti fontes, & torréntes; * tu siccásti flúvios Ethan.

Tuus est dies, & tua est nox; * tu fabricátus es auróram & solem.

Tu fecísti omnes términos terræ; * æstátem & ver tu plasmásti ea.

*Divisio Psalmi 73.*

MEmor esto hujus, inimícus improperávit Dómino; * & pópulus insípiens incitávit nomen tuum.

Ne tradas béstiis ánimas confiténtes tibi, * & ánimas páuperum tuórum ne oblivíscáris in finem.

Réspice in testaméntum tuum; * quia repléti sunt, qui obscuráti sunt, terræ dómibus iniquitátum.

Ne avertátur húmilis factus confúsus, * pauper & inops laudábunt nomen tuum.

Exúrge, Deus, júdica causam tuam; * memor esto improperiórum tuórum, eórum quæ ab insipiénte sunt totâ die.

Ne oblivíscáris voces inimicórum tuórum: * supérbia eórum, qui te odérunt, ascéndit semper.

*Ant.* Da nobis, Dómine, auxílium de tribulatióne, quia vana salus hóminis. *Psal.* 59. 13.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Thessal.* 5. 17. 18.

SIne intermissióne oráte. In ómnibus grátias ágite: hæc est enim volúntas Dei in Christo Jesu in ómnibus vobis.

℟. *br.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine, *Repet.* Ab occúltis meis * Munda me, Dómine. ℣. Et ab aliénis parce servo tuo. * Munda me, Dómine. ℣. Glória Patri. *Repet.* Ab occúltis. *Psal.* 18. 13. 14.

℣. Pérfice gressus meos in sémitis tuis, ℟. Ut non moveántur vestígia mea. *Psal.* 16. 5.

*Preces, si dicendæ sint, habentur Feria secunda ad Tertiam. pag. 56.*

*Oratio ut in Proprio de Tempore.*

## AD VESPERAS.

Pater. Ave.

Deus, in adjutórium, &c.

*Per Annum, Ant.* 6. f. Benedíctus.

*Psalmus* 143.

BEnedíctus Dóminus Deus meus, qui docet manus meas ad prælium, * & dígitos meos ad bellum.

Misericórdia mea, & refúgium meum; * suscéptor meus, & liberátor meus.

Protéctor meus, & in ipso sperávi; * qui subdit pópulum meum sub me.

Dómine, quid est homo, quia innotuísti ei? * aut filius hóminis, quia réputas eum?

Homo vanitáti símilis factus est; * dies ejus sicut umbra prætéreunt.

Dómine, inclína cœlos tuos, & descénde; * tange montes, & fumigábunt.

Fúlgura coruscatiónem, & dissipábis eos; * emítte sagittas tuas, & conturbábis eos.

Emítte manum tuam de alto, éripe me, & líbera me de aquis multis, * de manu filiórum alienórum.

Quorum os locútum est vanitátem; * & déxtera eórum, déxtera iniquitátis.

*Ant.* Benedíctus Dóminus Deus meus. *v.* 1.

*Ant.* 4. d. Beátus.

*Divisio Psalmi* 143.

DEus, cánticum novum cantábo tibi; * in psaltério decachórdo psallam tibi.

Qui das salútem régibus, * qui redemísti David servum tuum de gládio malígno.

E'ripe me & érue me de manu filiórum alienórum; quorum os locútum est vanitátem; * & déxtera eórum, déxtera iniquitátis.

Quorum fílii, sicut novéllæ plantatiónes * in juventúte sua.

Fíliæ eórum compósitæ, * circumornátæ ut similitúdo templi.

Promtuária eórum plena, * eructántia ex hoc in illud.

Oves eórum foetósæ, abundántes in egréssibus suis ; * boves eórum crassæ.

Non est ruína macériæ, neque tránsitus, * neque clamor in platéis eórum.

Beátum dixérunt pópulum, cui hæc sunt : * beátus pópulus cujus Dóminus Deus ejus.

*Ant.* Beátus pópulus cujus Dóminus Deus ejus. *v.* 15.

*Ant.* 8. c. Laudábo.

*Psalmus* 144.

EXaltábo te, Deus meus Rex, * & benedícam nómini tuo in séculum, & in séculum séculi.

Per síngulos dies benedícam tibi ; * & laudábo nomen tuum in séculum, & in séculum séculi.

Magnus Dóminus & laudábilis nimis ; * & magnitúdinis ejus non est finis.

Generátio & generátio laudábit ópera tua, * & poténtiam tuam pronuntiábunt.

Magnificéntiam glóriæ sanctitátis tuæ loquéntur ; * & mirabília tua narrábunt.

Et virtútem terribílium tuórum dicent ; * & magnitúdinem tuam narrábunt.

Memóriam abundántiæ suavitátis tuæ eructábunt ; * & justítiâ tuâ exultábunt.

*Ant.* Laudábo nomen tuum in séculum & in séculum séculi. *v.* 2.

*Ant.* 4. f. Suávis.

*Divisio Psalmi* 144.

MIserátor & miséricors Dóminus ; * pátiens, & multùm miséricors.

Suávis Dóminus univérsis ; * & miseratiónes ejus super ómnia ópera ejus.

Confiteántur tibi, Dómine, ómnia ópera tua ; * & sancti tui benedícant tibi.

Glóriam regni tui dicent ; * & poténtiam tuam loquéntur ;

Ut notam fáciant fíliis hóminum poténtiam tuam ; * & glóriam magnificéntiæ regni tui.

Regnum tuum, regnum ómnium seculórum ; * & dominátio tua in omni generatióne, & generatiónem.

Fidélis Dóminus in ómnibus verbis suis ; * & sanctus in ómnibus opéribus suis.

A'llevat Dóminus omnes qui córruunt, * & érigit omnes elísos.

O'culi ómnium in te sperant, Dómine ; * & tu das escam illórum in témpore opportúno.

A'peris tu manum tuam, * & imples omne ánimal benedictióne.

*Ant.* Suávis Dóminus univérsis, & miseratiónes ejus super ómnia ópera ejus. *v.* 9.

*Ant.* 2. D. Laudatiónem.

*Altera divisio Psalmi* 144.

JUstus Dóminus in ómnibus viis suis; * & sanctus in ómnibus opéribus suis.

Propè est Dóminus ómnibus invocántibus eum, * ómnibus invocántibus eum in veritáte.

Voluntátem timéntium se fáciet, & deprecatiónem eórum exáudiet, * & salvos fáciet eos.

Custódit Dóminus omnes diligéntes se, * & omnes peccatóres dispérdet.

Laudatiónem Dómini loquétur os meum; * & benedícat omnis caro nómini sancto ejus in séculum, & in séculum séculi.

*Ant.* Laudatiónem Dómini loquétur os meum. *v.* 21.

*Per Annum, Capitulum. Hebr.* 4. 9. 10. 11.

REl inquitur Sabbatísmus pópulo Dei; qui enim ingréssus est in réquiem ejus, étiam ipse requiévit ab opéribus suis, sicut à suis Deus; Festinémus ergo ingredi in illam réquiem.

*Per Annum. Hymnus.*

OPus tuum quis réspicit,
Orbis supréme Cónditor,
Nec te poténtem prædicet,
Nec diligéndum séntiat.

Die quiétis místicæ,
Quo vis amári pléniùs,
Da charitátis ígneæ
Fervóre pectus árdeat.

Jussu tuo labóribus
Dùm temperábit déxtera;
Fac, inquiétis líberum
Curis tibi cor mílitet.

In te salútis ánchoram
Spes fundet, ut post férvidos
Vitæ tumúltus, in tuo
Detur sinu quiéscere.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Elevátio mánuum meárum, Dómine.

℟. Sacrifícium vespertínum. *Psal.* 140. 2.

*Antiphona, & Oratio conveniens ut in Proprio de Tempore.*

*Si qua occurrat Commemoratio, hoc loco fit. Deinde Commemoratio de Sancta Maria ut in Vesperis Dominicæ, pag.* 32.

*In Ecclesia Metropolitana non additur alia Commemoratio:*

*In aliis vero Ecclesiis ante vel post prædictam Commemorationem (pro dignitate Patroni) fit ipsius Commemoratio.*

## AD COMPLETORIUM.

℣. Convérte nos, Deus, &c.

Deus, in adjutórium, &c.

*Per Annum, Ant.* 4. E. Inclína.

*Psalmus* 50.

MIserére mei, Deus, * secúndùm magnam misericórdiam tuam.

Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum, * dele iniquitátem meam.

A'mpliùs lava me ab iniquitáte mea, * & à peccáto meo munda me.

Quóniam iniquitátem meam ego cognósco; * & peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, & malum coram te feci: * ut justificéris in sermónibus tuis, & vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus concéptus sum; * & in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexísti; * incérta & occúlta sapiéntiæ tuæ manifestásti mihi.

Aspérges me hyssópo, & mundábor: * lavábis me, & super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium & lætítiam; * & exultábunt ossa humiliáta.

Avérte fáciem tuam à peccátis meis, * & omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus, * & spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua, * & Spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui, * & spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas, * & ímpii ad te converténtur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ; * & exultábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine, lábia mea apéries, * & os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluísses sacrifícium, dedíssem útique, * holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus: * cor contrítum & humiliátum, Deus, non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion, * ut ædificéntur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes, & holocáusta, * tunc impónent super altáre tuum vítulos.

*Psalmus* 85.

INclína, Dómine, aurem tuam, & exáudi me; * quóniam inops & pauper sum ego.

Custódi ánimam meam, quóniam sanctus sum: * salvum fac servum tuum,

Deus meus, ſperántem in te.

Miſerére mei, Dómine, quóniam ad te clamávi totâ die: * lætífica ánimam ſervi tui, quóniam ad te, Dómine, ánimam meam levávi.

Quóniam tu, Dómine, ſuávis & mitis, * & multæ miſericórdiæ ómnibus invocántibus te.

A'uribus pércipe, Dómine, oratiónem meam, * & inténde voci deprecatiónis meæ.

In die tribulatiónis meæ clamávi ad te, * quia exaudíſti me.

Non eſt ſimilis tui in diis, Dómine, * & non eſt secúndùm ópera tua.

Omnes Gentes quaſcúnque fecíſti, vénient, & adorábunt coram te, Dómine, * & glorificábunt nomen tuum.

Quóniam magnus es tu, & fáciens mirabília; * tu es Deus ſolus.

*Diviſio Pſalmi 85.*

DEduc me, Dómine, in via tua, & ingrédiar in veritáte tua; * lætétur cor meum ut tímeat nomen tuum.

Confitébor tibi, Dómine Deus meus, in toto corde meo, * & glorificábo nomen tuum in ætérnum;

Quia miſericórdia tua magna eſt ſuper me, * & eruíſti ánimam meam ex inférno inferióri.

Deus, iníqui inſurrexérunt ſuper me, & ſynagóga poténtium quæſiérunt ánimam meam, * & non propoſuérunt te in conſpéctu ſuo.

Et tu Dómine Deus miſerátor & miſéricors, * pátiens, & multæ miſericórdiæ, & verax.

Réſpice in me, & miſerére mei, * da impérium tuum púero tuo, & ſalvum fac filium ancíllæ tuæ.

Fac mecum ſignum in bonum, ut vídeant qui odérunt me, & confundántur; * quóniam tu, Dómine, adjuvíſti me, & conſolátus es me.

*Ant.* Inclína, Dómine, aurem tuam, & exáudi me. *v.* 1.

*Per Annum, Capitulum.* 1. *Petr.* 4. 7. 8.

FRatres: Vigiláte in oratiónibus. Ante ómnia autem, mútuam in vobiſmetipſis charitátem contínuam habéntes: quia cháritas óperit multitúdinem peccatórum.

*Per Annum. Hymnus.*

Te lucis ante términum, &c. Nunc dimíttis. *pag.* 66.

*Oratio ut ſuprà, pag.* 68.

*Non dicuntur Preces.*

*Poſt Completorium & Laudes matutinas dicitur ex devotione una ex infrà ſcriptis Antiphonis.*

*A Veſperis Sabbati antè Dominicam primam Adventûs incluſivè, uſque ad Purificationem incluſivè.*

*Antiphona.*

ALma Redemptóris mater, quæ pérvia cœli
Porta manes, & stella maris, succúrre cadénti,
Súrgere qui curat, pópulo: tu quæ genuísti,
Natúrâ mirante, tuum sanctum Genitórem,
Virgo priùs ac postériùs, Gabriélis ab ore
Sumens illud Ave, peccatórum miserére,

*Per adventum.* ℣. Dóminus dabit benignitátem; ℟. Et terra nostra dabit fructum suum. *Psal.* 84. 13.

Orémus. *Oratio.*

GRátiam tuam, quæsumus, Dómine, méntibus nostris infúnde: ut, qui A'ngelo nuntiánte, Christi Fílii tui incarnatiónem cognóvimus; per passiónem ejus & crucem ad resurrectiónis glóriam perducámur. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

*A secundis Vesperis Nativitatis ad Purificationem*, ℣. Homo natus est in ea; ℟. Et ipse fundávit eam Altíssimus. *Psal.* 86. 5.

*Oratio.*

DEus, qui salútis ætérnæ, beátæ Maríæ virginitáte fecúndâ, humáno géneri præmia præstitísti: tríbue, quæsumus; ut ipsam pro nobis intercédere sentiámus, per quam merúimus auctórem vitæ suscípere Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

℟. Amen.

*Post Purificationem, id est, à fine Completorii illius diei inclusivè, usque ad Feriam quintam in Cœna Domini exclusivè, Antiphona.*

AVe Regína cœlórum,
Ave Dómina Angelórum:
Salve radix, salve porta,
Ex qua mundo lux est orta.
Gaude Virgo gloriósa.
Super omnes speciósa,
Vale ô valdè decóra,
Et pro nobis Christum exóra.

℣. Sanctificávit tabernáculum suum, Altíssimus, ℟. Deus in médio ejus. *Psal.* 45. 5. 6.

*Oratio.*

COncéde, miséricors Deus, fragilitáti nostræ præsídium: ut, qui sanctæ Dei Genitrícis memóriam ágimus, intercessiónis ejus auxílio à nostris iniquitátibus resurgámus. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

*A Completorio Sabbati sancti inclusivè, usque ad Nonam Sabbati post Pentecosten inclusivè, Antiphona.*

REgína cœli lætáre, allelúia.
Quia quem meruísti portáre, allelúia.

Resurréxit sicut dixit, allelúia.

Ora pro nobis Deum, allelúia.

℣. Convertísti planctum meum in gáudium mihi; allelúia. ℟. Circumdedísti me lætítiâ, allelúia. *Psal.* 29. 12.

*Oratio.*

DEus, qui per resurrectiónem Fílii tui Dómini nostri Jesu Christi mundum lætificáre dignátus es: præsta, quæsumus; ut per ejus genitrícem vírginem Maríam perpétuæ capiámus gáudia vitæ. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

℣. Divínum auxílium máneat semper nobíscum.

℟. Amen.

*Deinde dicitur secretò*, Pater noster. Ave María. *&* Credo.

*Si plures Horæ continenter recitentur, prædictæ Antiphonæ non dicuntur nisi post ultimam Horam, & tunc post* ℣. Fidélium ánimæ. *&* Pater noster, *secretò dicitur* ℣. Dóminus det nobis suam pacem. ℟. Et vitam ætérnam, Amen. *Deinde una ex prædictis Antiphonis: & in fine*, Divínum auxílium máneat semper nobíscum. ℟. Amen.



PROPRIUM

# PROPRIUM DE TEMPORE.

## *Pars Vernalis.*

SABBATO
*Ante Dominicam primam Quadragesimæ.*

AD VESPERAS.

*Antiph. & Psalmi de Psalterio.*

*Capitulum. Ezech. 18. v. 30. 31.*

CONVERTIMINI, & ágite pœniténtiam ab ómnibus iniquitátibus vestris; & non erit vobis in ruínam iníquitas. Projícite à vobis omnes prævaricatiónes vestras, & fácite vobis cor novum & spíritum novum. ℟. Deo grátias.

℟. Qui timent Dóminum, custódiunt mandáta illíus, dicéntes: * Si pœniténtiam non egérimus, incidémus † In manus Dómini, & non in manus hóminum. *Eccli. 2. v. 21. 22.* ℣. Horréndum est incídere in manus Dei vivéntis. *Hebr. 10. 31.* * Si pœniténtiam. ℣. Glória Patri. † In manus.

*Hymnus.*

AUDI, benígne Cónditor,
Nostras preces cum flétibus,
In hoc sacro jejúnio,
Fusas quadragenário.

SCRUTATOR alme córdium,
Infírma tu scis vírium,
Ad te revérsis éxhibe
Remissiónis grátiam.

MULTUM quidem peccávimus;
Sed parce confiténtibus,
Ad laudem tui nóminis,
Confer medélam lánguidis.

SIC corpus extra cónteri
Dona per abstinéntiam,
Jejúnet ut mens sóbria
A' labe prorsùs críminum.

PRÆSTA beáta Trínitas,
Concéde simplex U'nitas,
Ut fructuósa sint tuis
Jejuniórum múnera.
Amen.

℣. Miserátor & miséricors Dóminus. ℟. Pátiens & multùm miséricors. *Psal. 144. 8.*

*Ad* Magníficat, *Ant. 8. g.*

Dixit Moyſes : Prócidi ante Dóminum quadragínta diébus ac nóctibus panem non cómedens ; & aquam non bibens propter ómnia peccáta veſtra. *Deut.* 9. 18.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui Eccléſiam tuam ánnuâ quadrageſimáli obſervatióne puríficas, præſta famíliæ tuæ, ut, quod à te obtinére abſtinéndo nítitur, hoc bonis opéribus exequátur. Per Dóminum noſtrum Jeſum Chriſtum.

*Fit commemoratio de Beata & de Patrono.*

*Ad Completorium, ut infrà ante Feriam ſecundam poſt Domin. I. Quadrag.*

---

## DOMINICA I. QUADRAGESIMÆ.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitat.* Veníte adorémus, & procidámus, & * Plorémus ante Dóminum qui fecit nos. *Pſal.* 94. 6.

*Pſal.* Veníte, *p.* 2.

*Hymnus.*

EX more docti mýſtico
Servémus hoc jejúnium,
Deno diérum círculo
Ducto quater notíſſimo.

LEX & Prophétæ primitùs
Hoc prætulérunt, póſtmodùm
Chriſtus ſacrávit, ómnium
Rex atque factor témporum.

UTA'MUR ergo párciùs
Verbis, cibis & pótibus,
Somno, jocis, & árctiùs
Perſtémus in cuſtódia.

VITE'MUS autem péſſima,
Quæ ſúbruunt mentes vagas:
Nullúmque démus cállidi
Hoſtis locum tyránnidi.

DICA'MUS omnes cérnui,
Clamémus atque ſínguli,
Plorémus ante júdicem,
Flectámus iram víndicem.

NOSTRIS malis offéndimus
Tuam, Deus, clementiam;
Effúnde nobis déſuper
Remíſſor indulgéntiam.

MEME'NTO quòd ſumus tui,
Licet cadúci pláſmatis:
Ne des honórem nóminis
Tui, precámur, álteri.

LAXA malum quod fécimus,
Auge bonum quod póſcimus;
Placére quò tandem tibi
Poſſímus hic & pérpetim.

PRÆSTA beáta Trínitas,
Concéde ſimplex U'nitas,
Ut fructuóſa ſint tuis
Jejuniórum múnera. Amen.

*Antiph. Pſalmi & Verſiculi ut in Pſalterio.*

### IN I. NOCTURNO.

De libro E'xodi.

LECTIO I. *Cap.* 34. 28. *Secunda Moyſis Quadrageſima.*

FUit Moyſes cum Dómino quadragínta dies & quadragínta noctes; tamen

lon comédit, & aquam non bibit, & scripsit in tábulis verba fœ́deris decem. Cúmque descénderet de monte Sinaï, tenébat duas tábulas testimónii, & ignorábat quòd cornúta esset fácies sua ex consórtio sermónis Dómini. Vidéntes autem A'aron, & filii I'sraël cornútam Moýsi fáciem, timuérunt propè accédere. Vocatíque ab eo, revérsi sunt tam A'aron quàm príncipes Synagógæ. Et postquàm locútus est ad eos, venérunt ad eum étiam omnes filii I'sraël: quibus præcépit cuncta quæ audíerat à Dómino in monte Sínaï. Impletísque sermónibus, pósuit velámen super fáciem suam; quod ingréssus ad Dóminum, & loquens cum eo, auferébat donec exíret, & tunc loquebátur ad fílios I'sraël ómnia quæ sibi fúerant imperáta. Qui vidébant fáciem egrediéntis Moýsi esse cornútam, sed operiébat ille rursùs fáciem suam, si quando loquebátur ad eos.

℟. Dies expiatiónum erit celebérrimus, & vocábitur sanctus: affligétisque ánimas vestras in eo: * Omnis ánima, quæ afflícta non fúerit die hâc, peribit de pópulis suis. *Lev.* 23. 27. 29. ℣. Quæ secúndùm Deum tristítia est, pœniténtiam in salútem stábilem operátur. 2. *Cor.* 7. 10. * Omnis.

De libro tértio Regum.

LECTIO II. *Cap.* 19. 4.

*Elias per dies quadraginta ambulans.*

PErréxit Elías in desértum, viam uníus diéi. Cúmque veníssef, & sedéret subter unam juníperum, petívit ánimæ suæ ut morerétur, & ait: Súfficit mihi, Dómine, tolle ánimam meam: neque enim mélior sum, quàm patres mei. Projecítque se, & obdormívit in umbrâ juníperi: & ecce A'ngelus Dómini tétigit eum, & dixit illi: Surge, & cómede; grandis enim tibi restat via. Qui cùm surrexísset, comédit, & bibit, & ambulávit in fortitúdine cibi illíus quadraginta diébus, & quadraginta nóctibus, usque ad montem Dei Horeb. Cúmque venísset illùc, mansit in spelúnca: & ecce sermo Dómini ad eum, dixítque illi: Quid hìc agis, Elía? At ille respóndit: Zelo zelátus sum pro Dómino Deo exercítuum, quia dereliquérunt pactum tuum filii I'sraël.

℟. Plángite, Sacerdótes minístri Dei, sanctificáte jejúnium, vocáte cœtum in domum Dei vestri, & clamáte ad Dóminum, * Quia propè est dies Dómini. *Joel.* 1. v 3. 1 15. ℣. In ómnibus exhibeámus nosmetípsos sicut Dei minis-

tros in labóribus, in vigíliis, in jejúniis. 2. *Cor.* 6. *v.* 4. 5. * Quia.

De Jona Prophéta.

LECTIO III. *Cap.* 3. 1.

*Jejunium quadraginta dierum Ninivitis annuntiatur à Jona, & convertuntur.*

FActum est verbum Dómini ad Jonam, dicens: Surge, & vade in Níniven civitátem magnam: & prædica in ea prædicatiónem, quam ego loquor ad te. Et surréxit Jonas, & ábiit in Níniven juxta verbum Dómini: & Nínive erat cívitas magna itínere trium diérum. Et cœpit Jonas introíre in civitátem itínere diéi uníus; & clamávit, & dixit: Adhuc quadragínta dies, & Nínive subvertétur. Et credidérunt viri Ninivítæ in Deum: & prædicavérunt jejúnium, & vestíti sunt saccis à majóre usque ad minórem. Et pervénit verbum ad Regem Nínive: & surréxit de sólio suo, & abjécit vestiméntum suum à se, & indútus est sacco, & sedit in cínere. Et clamávit, & dixit in Nínive ex ore regis & príncipum ejus, dicens: Hómines, & juménta, & boves, & pécora non gustent quidquam: nec pascántur, & aquam non bibant. Et operiantur saccis hómines, & juménta, & clament ad Dóminum in fortitúdine, & convertátur vir à via sua mala, & ab iniquitáte, quæ est in mánibus eórum. Quis scit si convertátur, & ignóscat Deus: & revertátur à furóre iræ suæ, & non períbimus? Et vidit Deus ópera eórum, quia convérsi sunt de via sua mala: & misértus est.

℞. Eleemósyna ab omni peccáto & à morte líberat, & non patiétur ánimam ire in ténebras * Fidúcia magna erit coram summo Deo eleemósyna ómnibus faciéntibus eam. *Tob.* 4. *v.* 11. 12. ℣. Date eleemósynam, & ecce ómnia munda sunt vobis. *Luc.* 11. 41. * Fidúcia. ℣. Glória Patri * Fidúcia.

IN II. NOCTURNO.

De libro Sapiéntiæ.

LECTIO IV. *Cap.* 14. 27. & 15. 1.

*Dominus solus Deus & misericors.*

INfandórum idolórum cultúra, omnis mali causa est & inítium, & finis. Dùm enim confídunt in idólis, quæ sine ánima sunt, malè jurántes nocéri se non sperant. Utraque ergo illis evénient digne, quóniam malè sensérunt de Deo, attendéntes idólis, & juravérunt injústè, in dolo contemnéntes justítiam. Non enim juratórum virtus, se-

peccántium pœna perámbulat semper injustórum prævaricatiónem. Tu autem Deus noster, suávis & verus es, pátiens, & in misericórdia dispónens ómnia. E'tenim si peccavérimus, tui sumus, sciéntes magnitúdinem tuam: & si non peccavérimus, scimus quóniam apud te sumus computáti. Nosse enim te, consummáta justítia est; & scire justítiam, & virtútem tuam, radix est immortalitátis.

℟. Si confiteámur peccáta nostra: * Fidélis est Deus & justus, ut remíttat nobis peccáta nostra, & emúndet nos ab omni iniquitáte. 1. *Joan.* 1. 9. ℣. Præoccupémus fáciem ejus in confessióne. *Psal.* 91. 2. * Fidélis.

De libro Ecclesiástici.

LECTIO V. *Cap.* 39. 21.

*Bonis omnia in bonum, malis autem in malum cedunt.*

OPera Dómini univérsa bona valdè. Bona bonis creáta sunt ab inítio, sic nequíssimis bona & mala. Inítium necessáriæ rei vitæ hóminum, aqua, ignis, & ferrum, sal, lac, & panis similagíneus, & mel, & botrus uvæ, & óleum, & vestiméntum. Hæc ómnia sanctis in bona, sic & ímpiis & peccatóribus in mala converténtur. Sunt spíritus, qui ad vindíctam creáti sunt, & in furóre suo confirmavérunt torménta sua: in témpore consummatiónis effúndent virtútem; & furórem ejus, qui fecit illos, placábunt. Ignis, grando, fames, & mors, ómnia hæc ad vindíctam creáta sunt: bestiárum dentes, & scórpii, & serpéntes, & romphǽa víndicans in extermínium ímpios. Et nunc in omni corde & ore collaudáte, & benedícite nomen Dómini.

℟. Audi, Dómine, & * Miserére, quia Deus es miséricors, & miserére nostri; quia peccávimus ante te. *Baruch* 3. 2. ℣. Deus dives in misericórdia propter nímiam charitátem. *Ephes.* 2. 4. * Miserére.

De Parábolis Salomónis.

LECTIO VI. *Cap.* 28. 1.

*Collatio impii cum pœnitente.*

FUgit ímpius, némine persequénte: justus autem quasi leo confídens, absque terróre erit. Viri mali non cógitant judícium: qui autem inquírunt Dóminum, animadvértunt ómnia. Qui abscóndit scélera sua, non dirigétur: qui autem conféssus fúerit, & relíquerit ea, misericórdiam consequétur. Beátus homo, qui semper est pávidus: qui verò mentis est duræ, córruet in malum. Qui ámbulat simplíciter, sal-

vus erit : qui pervérsis gráditur viis, concídet semel. Qui córripit hóminem, grátiam pósteà invéniet apud eum magis, quàm ille, qui per linguæ blandiménta décipit. Cùm surréxerint ímpii, abscondéntur hómines : cùm illi períerint, multiplicabúntur justi.

℟. Deus noster, peccávimus, * Iniquitátem fécimus. Dómine, in omnem justítiam tuam : † Avertátur ira tua & furor tuus. *Daniel.* 9. *v.* 15. 16. ℣. Si dixérimus quóniam peccátum non habémus, ipsi nos sedúcimus. 1. *Joan.* 1. 8. * Iniquitátem. ℣. Glória. † Avertátur.

## IN III. NOCTURNO.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli, ad Colossénses.

### LECTIO VII. *Cap.* 3. 5.

*Terrestris hominis vitia expellenda.*

MOrtificáte membra vestra, quæ sunt super terram : fornicatiónem, immundítiam, libídinem, concupiscéntiam malam, & avarítiam, quæ est simulacrórum sérvitus : propter quæ venit ira Dei super fílios incredulitátis, in quibus & vos ambulástis aliquándo, cùm vivepétis in illis. Nunc autem depónite & vos ómnia : iram, indignatiónem, malítiam, blasphémiam, turpem sermónem de ore vestro. Nolíte mentíri ínvicem, expoliántes vos véterem hóminem cum áctibus suis, & induéntes novum, eum qui renovátur in agnitiónem secúndùm imáginem ejus, qui creávit illum. Ubi non est Gentílis, & Judæus, circuncísio, & præpútium, Bárbarus, & Scytha, servus, & liber : sed ómnia, & in ómnibus Christus.

℟. Non tardat Dóminus promissiónem suam, sed patiénter agit, * Nolens áliquos períre, sed omnes ad pœniténtiam revérti. 2. *Petr.* 3. 9. ℣. Júdicans das, Dómine, locum in peccátis pœniténtiæ. *Sap.* 12. 19. * Nolens.

### LECTIO VIII. *v.* 12.

*Spiritalis hominis virtutes amplexandæ.*

INdúite vos ergo sicut elécti Dei, sancti, & dilécti, víscera misericórdiæ, benignitátem, humilitátem, modéstiam, patiéntiam : supportántes ínvicem, & donántes vobisímetipsis si quis advérsùs áliquem habet querélam : sicut & Dóminus donávit vobis, ita & vos. Super ómnia autem hæc, charitátem contínuam habéte, quod est vínculum perfectiónis, & pax Christi exúltet in córdibus vestris, in qua & vocáti estis in uno córpore : &

grati estote. Verbum Christi habitet in vobis abundanter, in omni sapien[tia]
docentes, et commonentes vosmetipsos, psalmis, hymnis, et canticis spi[ri]tualibus, in gratia cantantes in cordibus vestris Deo. Omne quodcu[mque]
facitis in verbo aut in opere, omnia in nomine Domini Jesu

Christi, grátias agéntes Deo & Patri per ipsum.

℟. Benedíctum est nomen tuum, Deus, qui cùm irátus fúeris misericórdiam fácies, & * In témpore tribulatiónis peccáta dimíttis his, qui ínvocant te. *Tob.* 3. 13. Quicúnque invocáverit nomen Dómini, salvus erit. *Rom.* 10. 13. * In témpore.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO IX. *Cap.* 4. 1.

*Christus, post jejunium quadraginta dierum, tentatoris victor.*

IN illo témpore; Jesus ductus est in desértum à Spíritu, ut tentáretur à diábolo: Et cùm jejunásset quadragínta diébus, & quadraginta nóctibus, pósteà esúriit. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.

*Hom.* 16. *in Evang. hab. in Basil. sancti Joan. Lateran. Dom.* 1. *Quadrag.*

DUbitári à quibúsdam solet, à quo spíritu ductus sit Jesus in desértum, propter hoc quod súbditur, [Assúmpsit eum diábolus in sanctam civitátem,] & rursùm, [Assúmpsit eum in montem excélsum valdè.] Sed verè & absque ulla quæstióne conveniénter accípitur, ut à sancto Spíritu in desértum ductus credátur, ut illùc eum suus Spíritus dúceret, ubi hunc ad tentándum malígnus spíritus inveníret. Sed ecce, cùm dícitur Deus homo, vel in excélsum montem, vel in sanctam civitátem à diábolo assúmptus, mens réfugit crédere, humánæ hoc audíre aures expavéscunt. Qui tamen non esse incredibília ista cognóscimus, si in illo & ália facta pensámus. Certè iniquórum ómnium caput diábolus est; & hujus cápitis membra sunt omnes iníqui. An non diáboli membrum fuit Pilátus? An non diáboli membra Judæi persequéntes, & mílites crucifigéntes Christum, fuérunt? Quid ergo mirum, si se ab illo permísit in montem duci, qui se pértulit étiam à membris illíus crucifígi?

℟. Ductus est Jesus in desértum à Spíritu ut tentarétur à diábolo. * Et cùm jejunásset quadragínta diébus, & quadragínta nóctibus, pósteà esúriit. *Matth.* 4. 1. ℣. Fuit ibi cum Dómino quadragínta dies, & quadragínta noctes, panem non manducávit, & aquam non bibit. *Exod.* 34. 28. * Et cùm. ℣. Glória. * Et cùm. *Repet.* ℟. Ductus est *usque ad* ℣.

*Non dicitur*, Te Deum *usque ad Pascha, sed ejus loco repetitur IX. Responsorium usque ad Versiculum.*

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Audítam fac mihi manè misericórdiam tuam, ℟. Quia in te sperávi. *Ps.* 142. 8.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 2. d. Humiliémus Deo ánimas nostras, ut fáciat nobíscum misericórdiam suam. *Judith* 8. *v.* 16. 17.

*Ant.* 1. *irreg.* Deus meus confúndor, & erubésco leváre fáciem meam ad te. 1. *Esdr.* 9. 6.

*Ant.* 7. a. Iniquitátes nostræ multiplicátæ sunt super caput nostrum, & delícta nostra crevérunt usque ad cœlum. *Ibid.*

*Ant.* 6. f. Peccávimus, iniquitátem fécimus, ímpiè égimus, & recéssimus, & declinávimus à mandátis tuis ac judíciis. *Dan.* 9. 5.

*Ant.* 4. a. Dómine, nobis confúsio faciéi; tibi autem Dómino Deo nostro, misericórdia & propitiátio. *Ibid.* *v.* 8. & 9.

*Capitulum.* 2. *Cor.* 6. 1.

FRatres; Exhortámur ne in vácuum grátiam Dei recipiátis. Ait enim: Témpore accépto exaudívi te, & in die salútis adjúvi te.

*Hymnus.*

JAm Christe sol justítiæ,
Mentis recédant ténebræ,
Virtútum ut lux rédeat,
Terris diem cùm réparas.

Dans tempus acceptábile,
Et pœnitens cor tribue,
Convértat ut benígnitas,
Quos longa suffert pietas.

Quiddámque pœniténtiæ
Da ferre, quamvis grávia,
Majóre tuo múnere,
Quo diluúntur crímina.

Dies venit, dies tua,
In qua reflórent ómnia:
Lætémur in hac, ad tuam
Per hanc redúcti grátiam.

Te rerum univérsitas,
Clemens adóret Trínitas:
Et nos novi per véniam
Novum canámus cánticum.
Amen.

℣. Avérte fáciem tuam à peccátis meis, ℟. Et omnes iniquitátes meas dele. *Ps.* 50. 11.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. a. Erat Jesus in desérto quadragínta diébus, & quadragínta nóctibus, & tentabátur à sátana, & Angeli ministrábant ei. *Marc.* 1. 13.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui Ecclésiam tuam ánnuâ quadragesimáli observatióne puríficas, præs-

ta familiæ tuæ, ut, quod à te obtinére abstinéndo nititur, hoc bonis opéribus exequátur. Per Dóminum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 2. *irreg.* d. Nihil manducávit Jesus in diébus illis, & consummátis illis, esúriit. *Luc.* 4. 2.

*CANON.*

Ex Concilio Mediolanénsi. *Anno* 1579. *p.* 1. *Tit.* 1.

QUadragesimáli témpore christiánus homo frequéntiùs ad Ecclésiam convéniat divínis offíciis, omni attentióne & religiósâ meditatióne sacris conciónibus, Missæ sacrifício quotìdiè intérsit.

AD TERTIAM.

*Ant.* 5. a. Non in solo pane vivit homo, sed in omni verbo, quod procédit de ore Dei. *Matth.* 4. 4.

*Capitulum. Eccli.* 2. 1.

FIlli accédens ad servitútem Dei, sta in justítia, & timóre, & præpara ánimam tuam ad tentatiónem.

℟. *br.* In toto corde meo * Exquisívi te, Dómine; *Rep.* In toto. ℣. Ne repéllas me à mandátis tuis. * Exquisívi te, Dómine. ℣. Glória. *Repet.* In toto corde.

℣. In corde meo abscóndi elóquia tua, ℟. Ut non peccem tibi. *Ps.* 118. *v.* 10. 11.

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. g. Ait Jesus; Scriptum est: Non tentábis Dóminum Deum tuum. *Matt.* 4. 7.

*Capitulum. Jac.* 1. 13.

NEmo cùm tentátur dicat quóniam à Deo tentátur; Deus enim intentátor malórum est, ipse autem néminem tentat.

℟. *br.* Miserére mei, Dómine, * Quóniam infirmus sum. *Repet.* Miserére. ℣. Sana me, quóniam conturbáta sunt ossa mea. * Quóniam. ℣. Glória. *Repet.* Miserére.

℣. Convértere, Dómine, & éripe ánimam meam; ℟. Salvum me fac propter misericórdiam tuam. *Ps.* 6. *v.* 3. 5.

AD NONAM.

*Ant.* 8. g. Dicit Jesus: Vade, sátana; Scriptum est enim: Dóminum Deum tuum adorábis, & illi soli sérvies. *Matth.* 4. 10.

*Capitulum.* 1. *Cor.* 10. 13.

FIdélis Deus est, qui non patiétur vos tentári supra id, quod potéstis, sed fáciet étiam cum tentatióne provéntum ut possítis sustinére.

℟. *br.* Juxtà est Dóminus iis, * Qui tribuláto sunt corde: *Repet.* Juxtà. ℣. Et húmiles spíritu salvábit. * Qui. ℣. Glória. *Repet.* * Juxtà. *Ps.* 33. 19.

℣. Sacrifícium Deo spíritus contribulátus. ℟. Cor contrítum & humiliátum, Deus, non despícies. *Ps.* 50. 19.

## AD VESPERAS.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 1. a. Erat Jesus in desérto quadragínta diébus, & quadragínta nóctibus; & tentabátur à sátana, & A'ngeli ministrábant ei. *Marc* 1. 13.

*Ant.* 4. *irreg.* d. Nihil manducávit Jesus in diébus illis, & consummátis illis esúriit. *Luc.* 4. 2.

*Ant.* 5. a. Non in solo pane vivit homo, sed in omni verbo, quod procédit de ore Dei. *Matth.* 4. 4.

*Ant.* 3. g. Ait Jesus: Scriptum est; Non tentábis Dóminum Deum tuum. *Ibid.* 7.

*Ant.* 8. g. Dicit Jesus: Vade sátana; Dóminum Deum tuum adorábis, & illi soli sérvies. *Ibid.* 10.

*Capitulum. Act.* 17. *v.* 30. 31.

FRatres, Deus annúntiat homínibus, ut omnes ubíque pœniténtiam ágant, eò quòd státuit diem, in quo judicatúrus est orbem in æquitáte.

℟. Esto nobis, Dómine, * Turris fortitúdinis. *Repet.* Esto nobis. ℣. A' fácie inimíci. * Turris. ℣. Glória. *Repet.* Esto *Ps.* 60. 4.

*Hymnus.* AUDI, benigne Cónditor, *pag.* 515.

℣. A'ngelis suis Deus mandávit de te, ℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis. *Ps.* 90. 11.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. d. Consummáta omni tentatióne, diábolus recéssit à Jesu; & ecce A'ngeli accessérunt, & ministrábant ei. *Luc.* 4. 13. *Matth.* 4. 11.

*Oratio, ut suprà ad Laudes.*

*Ad Vesperas fit comm. de Beata & de Patrono.*

*Ad Completorium, ut infrà, pag.* 527.

## IN FERIIS

*Quadragesimæ, usque ad Dominicam Passionis.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM

*Invitatorium.* Veníte, & revertámur ad Dóminum * Et sanábit nos. *Osee* 6. *v.* 1. 2.

*Psal.* Veníte, *p.* 2.

*Hymnus.*

EX more docti mýstico
Servémus hoc jejúnium,
Deno diérum círculo
Ducto quater notíssimo.

LEX & Prophétæ prímitùs
Hoc prætulérunt, póstmodùm
Christus sacrávit, ómnium
Rex atque factor témporum.

UTA'MUR ergo párciùs
Verbis, cibis & pótibus,

Somno, jocis, & árctiùs
Perstémus in custódia.
Vitémus autem péssima,
Quæ subruunt mentes vagas:
Nullúmque demus cállidi
Hostis locum tyránnidi.
Dicámus omnes cérnui,
Clamémus atque sínguli,
Plorémus ante Júdicem,
Flectámus iram víndicem.
Nostris malis offéndimus
Tuam, Deus, cleméntiam;
Effúnde nobis désuper
Remíssor indulgéntiam.
Meménto quòd sumus tui,
Licet cadúci plásmatis
Ne des honórem nóminis
Tui, precámur, álteri.
Laxa malum quod fécimus,
Auge bonum quod póscimus,
Placére quò tandem tibi
Possímus hic & pérpetim.
Præsta beáta Trínitas,
Concéde simplex Unitas,
Ut fructuósa sint tuis
Jejuniórum múnera.
Amen.

*Antiphonæ & Psalmi ut in Psalterio.*

℣. Lavábo per síngulas noctes lectum meum, ℞. Lácrymis meis stratum meum rigábo. *Psal.* 6. 7.

*Lectiones ut infrà in quālibet Feria.*

*℞℞. sequentia dicuntur secundum Feriam usque ad Dominicam Passionis.*

FERIA SECUNDA.

*Post j. Lect.* ℞. Pósui fáciem meam ad Dóminum Deum meum * Rogáre, & deprecári in jejúniis, sacco, & cínere. *Dan.* 9. 3. ℣. Bonum est non manducáre carnem, & non bíbere vinum. *Rom.* 14. 21. * Rogáre

*Post ij. Lect.* ℞. Justus es, Dómine, & omnes viæ tuæ, misericórdia, & véritas, & judícium. Nunc ergo, Dómine, memor esto mei; * Et ne vindíctam sumas de peccátis meis. *Tob.* 3. *v.* 2. 3. ℣. Jesu Fili David, miserére mei. *Luc.* 18. 38. * Et ne.

*Tertium Responsorium erit Evangelicum, ut in qualibet Feria notatur.*

FERIA TERTIA.

*Post j. Lectionem.* ℞. Peccávimus, Dómine, cum pátribus nostris; injústè égimus, iniquitátem fécimus. Tu, * Quia pius es, miserére nostri. *Judith* 7. *v.* 19. 20. ℣. Adjuva nos misértus nostri, Dómine. *Marc.* 9. 21. * Quia.

*Post ij. Lect.* ℞. Avertátur ira tua à nobis, * Exáudi preces nostras & oratiónes nostras, & educ nos propter te. *Baruch* 2. *v.* 13. 14. ℣. Potens Deus omnem grátiam abundáre fácere. 2. *Cor.* 9. 8. * Exáudi.

## FERIA QUARTA.

*Post j. Lectionem.* ℟. Ad te, Dómine, fáciem meam convérto, ad te óculos meos dírigo: * Peto, Dómine, ut de vínculo impropérii absólvas me. *Tob. 3. v. 14. 15.* ℣. Si dixérimus quóniam non peccávimus, mendácem fácimus eum. *1. Joan. 1. 10.* * Peto.

*Post ij. Lect.* ℟. Dómine, nunc séquimur te, & quǽrimus fáciem tuam: * Ne confúndas nos; sed fac nobíscum juxtà mansuetúdinem tuam. *Dan. 3. v. 41. 42.* ℣. Adeámus cum fidúcia ad thronum grátiæ, ut misericórdiam consequámur. *Hebr. 4. 16.* * Ne confúndas.

## FERIA QUINTA.

*Post j. Lectionem* ℟. Deus noster, osténde fáciem tuam super Sanctuárium tuum. Inclína, Deus meus, aurem tuam, & audi; * A'peri óculos tuos, & vide desolatiónem nostram. *Dan. 9. v. 17. 18.* ℣. Non misit Deus Fílium suum in mundum, ut júdicet mundum, sed ut salvétur mundus per ipsum. *Joan. 3. 17.* * A'peri.

*Post ij. Lect.* ℟. Non in justificatiónibus nostris prostérnimus preces ante fáciem tuam, Dómine, sed in miseratiónibus tuis multis. * Exáudi, placáre, & ne moréris propter temetipsum, Deus meus. *Dan. 9. v. 18. 19.* ℣. Suscitavérunt Jesum, dicéntes, Dómine, salva nos, perímus. *Matth. 8. 25.* * Exáudi.

## FERIA SEXTA.

*Post j. Lect.* ℟. Quia pátiens Dóminus est, in hoc ipso pœniteámus, * Indulgéntiam ejus fusis lácrymis postulémus. *Judith 8. 14.* ℣. In sanctitáte & justítia coram ipso ómnibus diébus nostris. *Luc. 1. 75.* * Indulgéntiam.

*Post ij. Lect.* ℟. In spíritu constitúti humiliáto, serviéntes illi, * Dicámus flentes Dómino, ut secúndùm voluntátem suam sic fáciat nobíscum misericórdiam. *Judith 8. v. 16. 17.* ℣. Per ómnia placéntes; in omni ópere bono fructificántes. *Colos. 1. 10.* * Dicámus.

## SABBATO.

*Post j. Lect.* ℟. Plorábunt Sacerdótes minístri Dómini, & dicent, * Parce, Dómine, parce pópulo tuo, & ne des hereditátem tuam in oppróbrium. *Joel. 2. 17.* ℣. Próprio Fílio suo non pepércit, sed pro nobis ómnibus trádidit illum. *Rom. 8. 32.* * Parce.

*Post ij. Lect.* ℟. Inclinet Dóminus corda nostra ad se, * Ut ambulémus in univérsis viis ejus, & custodiámus mandáta ejus. 3. *Reg.* 8. 58. ℣. Accedámus cum vero corde in plenitúdine fidei. *Hebr.* 10. 22.* Ut ambulémus.

*Non dicitur*, Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Glorificábo nomen tuum in ætérnum, ℟. Quia misericórdia tua magna est super me. *Psal.* 85. *v.* 12. 13.

*Antiphona & Psalmi de Psalterio.*

*Capitulum. Isa.* 58. 1.

CLama ne cesses, quasi tuba exálta vocem tuam, annúntia pópulo meo scélera eórum, & dómui Jacob peccáta eórum.

*Hymnus.*

JAm Christe sol justítiæ,
Mentis recédant ténebræ,
Virtútum ut lux rédeat,
Terris diem cùm réparas.

DAns tempus acceptábile,
Et pœnitens cor tríbue,
Convértat ut benígnitas,
Quos longa suffert píetas.

QUiddámque pœniténtiæ
Da ferre, quamvis grávia,
Majóre tuo múnere,
Quo diluúntur crímina.

DIes venit, dies tua,
In qua reflórent ómnia:
Lætémur in hac ad tuam
Per hanc redúcti grátiam.

TE rerum univérsitas,
Clemens adóret Trínitas:
Et nos novi per véniam
Novum canámus cánticum.
Amen.

℣. Miserére mei, Deus, miserére mei, ℟. Quóniam in te confídit ánima mea. *Psal.* 56. 2.

*Ad* Benedíctus, *Antiphona, ut in qualibet Feria.*

*Deinde dicuntur Preces flexis genibus, & fiunt Commemorationes ut in Psalterio, p.* 46.

## AD PRIMAM.

*Ant.* 4. a. Bona est orátio cum jejúnio & eleemósyna, magis quàm thesáuros auri recóndere. *Tob.* 12. 8.

*Capitulum. Isa.* 33. 2.

DÓmine, miserére nostri; te enim expectávimus: esto bráchium nostrum in mane, & salus nostra in témpore tribulatiónis.

℟. *br.* Christe Fili Dei vivi, &c. ℣. Qui sedes, &c.

*Deinde dicuntur preces flexis genibus, ut in Psalt. p.* 51.

## AD TERTIAM.

*Ant.* 8. g. Multiplicátæ sunt iniquitátes nostræ coram te, Dómine: peccáta nostra respondérunt nobis, quia scélera nostra nobíscum. *Isaia* 59. 12.

*Capitulum. Judith 4. 12.*

SCitóte quóniam exáudiet Dóminus preces vestras, si manéntes permanséritis in jejúniis & oratiónibus in conspéctu Dómini.

℟. *br*. Génua mea infirmáta sunt * A' jejúnio. *Repetitur*, Génua. *Psal*. 108. 34. ℣. Et caro mea immutáta est. * A jejúnio.

℣. Humiliábam in jejúnio ánimam meam, ℟. Et orátio mea in sinu meo convertétur. *Psal*. 34. 13.

*Deinde dicuntur Preces flexis genibus, ut in Psalterio. p. 56.*

AD SEXTAM.

*Ant*. 2. d. Non delectáris, Dómine, in perditiónibus nostris, quia post tempestátem tranquíllum facis. *Tobiæ* 3. 22.

*Capitulum. Isa. 57. 7.*

DErelínquat ímpius viam suam, & vir iníquus cogitatiónes suas, & revertátur ad Dóminum, & miserébitur ejus, & ad Deum nostrum, quóniam multus est ad ignoscéndum.

℟. *br*. Miserére mei, Dómine, * Quóniam infírmus sum. *Repet*. Miserére. ℣. Sana me, quóniam conturbáta sunt ossa mea. * Quóniam. ℣. Glória. *Repet*. Miserére.

℣. Convértere, Dómine, & éripe ánimam meam. ℟. Salvum me fac propter misericórdiam tuam. *Psal*. 6. *v*. 3. 5.

*Preces, ut in Psalt. p. 56.*

AD NONAM.

*Ant*. 1. a. Eleemósyna resístit peccátis, & Deus prospéctor est ejus qui reddit grátiam. *Eccli*. 3. *v*. 33. 34.

*Capitulum. Isa. 58. 7.*

FRange esuriénti panem tuum, & egénos vagósque induc in domum tuam; cùm víderis nudum, óperi eum, & carnem tuam ne despéxeris.

℟. *br*. Beátus * Qui intélligit super egénum & páuperem. *Repet*. Beátus. ℣. In die mala liberábit eum Dóminus. * Qui intélligit. ℣. Glória. *Repet*. Beátus. *Psal*. 40. 1.

℣. Jucúndus homo qui miserétur & commódat, ℟. Dispónet sermónes in judício. *Psal*. 111. 5.

*Preces, ut in Psalterio, pag. 56.*

AD VESPERAS.

*Antiphonæ & Psalmi de Psalterio.*

*Capitulum. Ezechiel 33. v. 15. 16.*

SI ímpius in mandátis vitæ ambuláverit, nec fécerit quidquam injústum: vitâ vivet, & non moriétur; ómnia peccáta ejus, quæ peccávit, non imputabúntur ei.

℟. Esto nobis Dómine,

* Turris fortitúdinis. *Repet.* Esto, ℣. A fácie inimíci. *Psal.* 60. 4. * Turris. ℣. Glória. *Repet.* Esto.

*Hymnus.*

AUDI, benígne Cónditor,
Nostras preces cum flétibus,
In hoc sacro jejúnio
Fusas quadragenário.

SCRUTA'TOR alme córdium,
Infírma tu scis vírium,
Ad te revérsis éxhibe
Remissiónis grátiam.

MULTU'M quidem peccávimus;
Sed parce confiténtibus,
Ad laudem tui nóminis,
Confer medélam lánguidis.

SIC corpus extrà cónteri
Dona per abstinéntiam,
Jejúnet ut mens sóbria
A' labe prorsùs críminum.

PRÆSTA, beáta Trínitas,
Concéde simplex U'nitas,
Ut fructuósa sint tuis
Jejuniórum múnera.
Amen.

℣. Exáudi oratiónem meam, Dómine, ℟. A'uribus pércipe lácrymas meas. *Ps.* 38. 13.

*Ad* Magníficat, *Antiphona, ut infrà in quàlibet Feria. Deinde dicuntur Preces ut in Psalterio, p. 46. Item Commemorationes communes, p. 47.*

AD COMPLETORIUM.

*Antiphona & Psalmi ut in Psalterio.*

*Pars Verna.*

*Capitulum. Isa.* 58. *v.* 10. 11.

CU'm effúderis esuriénti ánimam tuam, & ánimam afflíctam repléveris, oriétur in ténebris lux tua, & ténebræ tuæ erunt sicut merídies.

*Hymnus.*

CHRISTE, qui lux es, & dies,
Noctis tenébras détegis,
Lucísque lumen créderis,
Lumen beátum prædicans.

PRECA'MUR, sancte Dómine,
Defénde nos in hac nocte:
Sit nobis in te réquies:
Quiétam noctem tríbue.

NE gravis somnus írruat:
Nec hostis nos surrípiat:
Nec caro illi conséntiens
Nos tibi reos státuat.

O'CULI somnum cápiant:
Cor ad te semper vígilet:
Déxtera tua prótegat
Fámulos qui te díligunt.

DEFÉNSOR noster áspice:
Insidiántes réprime:
Gubérna tuos fámulos,
Quos sánguine mercátus es.

MEMÉNTO nostri, Dómine,
In gravi isto córpore,
Qui es defénsor ánimæ
Adésto nobis, Dómine.

NOCTU'RNA per siléntia,
Sit laus Patri, laus Fílio,
Qui nostra pax es, & quies,
Sit par tibi laus, Spíritus
Amen.

℣. Propítius esto, Dómine, peccátis nostris, ℟. Propter nomen tuum. *Ps.* 78. 9.

*Ad* Nunc dimíttis, *Ant.* 3. c. In nocte, in princípio vigiliárum effúnde sicut aquam cor tuum ante conspéctum Dómini. *Thren.* 2. 19.

*Deinde dicuntur Preces ut in Psalterio, pag.* 67.

Orémus. *Oratio.*

CONcéde, quǽsumus, miséricors Deus, ut, quos per diem cibórum abstinéntia castígat: refóveat per noctem tua abundántior benedíctio. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

---

## FERIA SECUNDA.

De libro Génesis.

### LECTIO I. *Cap.* 37. 3.

*Joseph à fratribus venditus.*

I'Sraël diligébat Joseph super omnes fílios suos, eò quòd in senectúte sua genuísset eum: fecítque ei túnicam polymitam. A'ccidit quoque ut visum sómnium reférret frátribus suis: quæ causa majóris ódii seminárium fuit. Dixit ad eum I'sraël. Fratres tui pascunt oves in Síchimis: veni, mittam te ad eos: Qui cùm vidíssent eum procul, ántequàm accéderet ad eos, cogitavérunt illum occídere: & mútuò loquebántur: Ecce somniátor venit: & vidérunt Ismaëlítas viatóres veníre: & vendidérunt eum Ismaëlítis vigínti argénteis. Tulérunt autem túnicam ejus, & in sánguine hœdi, quem occíderant, tinxérunt; mitténtes qui ferrent ad patrem, & dícerent: Hanc invénimus: vide utrùm túnica fílii tui sit, an non. Quam cùm agnovísset pater, ait: Túnica fílii mei est, fera péssima comédit eum, béstia devorávit Joseph. Madianítæ vendidérunt Joseph in Ægypto Putíphari Eunúcho Pharaónis, magístro mílitum.

℟. Pósui fáciem meam, *pag.* 187.

### LECTIO II. *Cap.* 39. 11.

*Joseph missus in lacum.*

A'Ccidit autem quodam die, ut intráret Joseph domum, & óperis quídpiam absque árbitris fáceret: & dómina sua, apprehénsâ laciniâ vestiménti ejus, díceret: Dormi mecum. Qui relícto in manu ejus pállio, fugit, & egréssus est foràs. In arguméntum ergo fídei reténtum pállium osténdit maríto reverténti domum, & ait: Ingréssus est ad me servus Hebræus, quem adduxísti, ut illúderet mihi: His audítis Dóminus, & nimiùm crédulus verbis cónjugis, irá-

[...]tus est valdè; tradidítque Joseph in cárcerem, ubi vincti regis custodiebántur, & erat ibi clausus. His ita gestis, áccidit ut peccárent duo eunuchi, pincérna regis Ægypti, & pistor, dómino suo. Irátusque Pharao, misit eos in cárcerem príncipis mílitum, in quo erat vinctus & Joseph. Viderúntque ambo sómnium nocte unâ juxta interpretatiónem cóngruam sibi. Exinde dies tértius natalítius Pharaónis erat; qui fáciens grande convívium púeris suis, recordátus est inter épulas magístri pincernárum, & pistórum príncipis: Restituítque álterum in locum suum, ut porrígeret ei póculum: álterum suspéndit in patíbulo, ut conjectóris véritas probarétur.

℞. Justus es, Dómine, *pag.* [...]

[Le]ctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO III. *Cap.* 25. 31.

*Ultimum judicium.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Cùm vénerit Fílius hóminis in majestáte sua, & omnes Angeli ejus cum eo, tunc sedébit super sedem majestátis suæ, & congregabúntur ante eum omnes Gentes. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Libr. de fide & oper. cap.* 15.

SI mandátis non servátis, ad vitam veníri potest per solam fidem, quæ sine opéribus mórtua est, illud quómodò verum erit, quod eis, quos ad sinístram positúrus est, dicet: Ite in ignem ætérnum, qui parátus est diábolo & ángelis ejus? Quos non íncrepat, quia in eum non credidérunt, sed quia bona ópera non fecérunt. Nam proféctò ne sibi quisquam de fide, quæ sine opéribus mórtua est, vitam promíttat ætérnam, proptéreà omnes Gentes segregatúrum se dixit, quæ permíxtæ eísdem páscuis utebántur, ut appáreat eos illi dictúros: Dómine, quando te vídimus illa, & illa patiéntem, & non ministrávimus tibi? Qui in eum credíderant, sed bona operári non curáverant, tanquam de ipsa fide mórtua ad vitam perveniréтur ætérnam. Neque illud dici hic póterit, ignem ætérnum dictum, non ipsam pœnam ætérnam; cùm & hoc prævídens Dóminus senténtiam suam ita conclúserit, dicens: Sic ibunt illi in combustiónem ætérnam, justi autem in vitam ætérnam. Erit ergo ætérna combústio, sicut ignis, & eos in illam itúros Véritas dixit, quorum

non fidem, sed bona ópera defuísse declarávit.

℟. Congregabúntur ante Fílium hóminis omnes gentes, & separábit eos ab ínvicem, sicut pastor ségregat oves ab hædis, &* Státuet oves à dextris suis, hœdos autem à sinístris. *Matth.* 25. *v.* 32. 33. ℣. Misericórdia fáciet locum unicuíque secúndùm méritum óperum suórum. *Eccli.* 16. 15. * Státuet. ℣. Gloria. * Státuet.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 2. d. Dicet rex his qui à dextris ejus erunt: Veníte benedícti Patris mei, possidéte parátum vobis regnum à constitutióne mundi. *Matth.* 25. 34.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

CONvérte nos Deus salutáris noster: & ut nobis jejúnium quadragesimále profíciat, mentes nostras cœléstibus ínstrue disciplínis. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex Sýnodo Rotomagénsi. *An.* 1641. *c.* 6.

NUllus Párochus aut álius Verbi divíni prædicátor, absque Archiepíscopi licéntia scripto habénda, Indulgéntias publicáre præsúmat: quòd si quis secùs fécerit, gravíssimè ut in sacrárum legum contemptórem animadvertátur.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. Dicet rex his, qui à sinís ejus erunt: Discédite à me m ledícti in ignem ætérnum; ibunt hi in supplícium æt num, justi autem in vit ætérnam. *Matt.* 25. *v.* 41.

*Preces flexis genibus, p.*

Orémus. *Oratio*

ABsólve, quæsumus, D mine, nostrórum v eula peccatórum: & qu quid pro eis merémur, p pitiátus avérte. Per Dómin

FERIA TERTIA

De libro Génesis.

LECTIO I. *Cap.* 41. 9

*Joseph interpretatur Ph raonis somnia.*

POst duos annos vidit Ph rao sómnium: Tunc d mùm reminíscens pincern rum magíster, ait: Confite peccátum meum. Irátus R servis suis, me, & magístr pistórum retrúdi jussit in c cerem príncipis mílitum. E ibi puer Hebræus, ejús ducis mílitum fámulus: narrántes sómnia, audívi quidquid pósteà rei prob evéntus. Prótinùs ad R impérium edúctum de cá re Joseph totondérunt; veste mutátâ, obtulérunt Narrávit ergo Phárao q víderat. Respóndit Jose Sómnium Regis unum quæ factúrus est Deus o dit Pharaóni. Septem

pulchræ, & septem spicæ plenæ, septem ubertátis anni sunt: eamdémque vim sómnii comprehéndunt. Septem quoque boves ténues atque maciléntæ, quæ ascendérunt post eas, & septem spicæ ténues, & vento uréntе percússæ: septem anni ventúræ sunt famis. Nunc ergo provídeat Rex virum sapiéntem, & indústrium, & præfíciat eum Terræ Ægypti: Qui constítuat præpósitos per cunctas regiónes: & quintam partem frúctuum per septem annos fertilitátis, qui jam nunc futúri sunt, cóngreget in hórrea. Et præparétur futúræ septem annórum fami, quæ oppressúra est Ægyptum, & non consumétur terra inópiâ.

℟. Peccávimus, p. 187.

LECTIO II. v. 37.

*Joseph præficitur terra Ægypti.*

Plácuit Pharaóni consilium, & cunctis minístris ejus: locutúsque est ad eos: Num inveníre potérimus talem virum, qui spíritu Dei plenus sit? Dixit ergo ad Joseph. Tu eris super domum meam, & ad tui oris impérium cunctus pópulus obédiet: uno tantùm regni sólio te præcédam. Dixítque rursùs Phárao ad Joseph. Ecce, constítui te super univérsam terram Ægypti. Venítque fertílitas septem annórum: & in manípulos redáctæ ségetes congregátæ sunt in hórrea Ægypti. Omnis étiam frugum abundántia in síngulis úrbibus cóndita est. Igitur transáctis septem ubertátis annis, qui fúerant in Ægypto, cœpérunt veníre septem anni inópiæ, quos prædíxerat Joseph: & in univérso orbe fames prævâluit, in cuncta autem terra Ægypti panis erat. Quâ esuriénte, clamávit pópulus ad Pharaónem, aliménta petens. Quibus ille respóndit: Ite ad Joseph: & quidquid ipse vobis díxerit, fácite. Crescébat autem quotídiè fames in omni terra: aperuítque Joseph univérsa hórrea, & vendébat Ægyptiis: nam & illos oppresserat fames. Omnésque provínciæ veniébant in Ægyptum, ut émerent escas, & malum inópiæ temperárent.

℟. Avertátur, p. 187.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO III. Cap. 21. 10.

*Ejectio vendentium: Ficus maledicta.*

In illo témpore; Cùm intrásset Jesus Jerosólymam, commóta est univérsa cívitas dicens: Quis est hic? Pópuli autem dicébant: Hic est Jesus prophéta à Názareth

Galilǽæ. Et intrávit Jesus in templum Dei, & ejiciébat omnes vendéntes, & eméntes in templo. Et réliqua.

Homilía venerábilis Bedæ Presbyteri.

*Hom. 7. in Quadrag.*

EJécit Christus commércia rerum humanárum de templo illo, in quo divínas res tantùm agi, hostias & oblatiónes Deo offérri, verbum Dei legi & audíri, & decantári præcéptum erat. Si ergo Dóminus nec ea volébat vænúndari in templo, quæ in templo volébat offérri, quantâ putas animadversióne puníret, si invenísset áliquos ibi, rísui vel vanilóquio vacántes, aut álii cuílibet vítio mancipátos? Si enim ea quæ álibi líberè geri póterant, Dóminus in domo sua temporália negótia geri non pátitur, quantò magis ea quæ nusquam fieri licet, plus cœléstis iræ meréntur, si in ædibus Deo sacrátis agántur.

℟. Ejiciébat Jesus omnes vendéntes & eméntes in templo, * Mensas numulariórum, & cáthedras vendéntium colúmbas evértit; *Matt.* 21. 12. ℣. Ipse visitátor & adjútor est loci illíus. 2. *Machab.* 3. 39. * Mensas. ℣. Glória. * Mensas.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. a. Scriptum est: Domus mea domus oratiónis vocábitur. *Matth.* 21. 13.

*Preces flexis genibus, p. 46.*

Orémus. *Oratio.*

RE'spice, Dómine, famíliam tuam, & præsta: ut apud te mens nostra tuo desidério fúlgeat, quæ se carnis maceratióne castígat. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex Concílio Rotomagénsi.

*Anno* 1189. *tom.* 1. *can.* 1.

ANtiquórum patrum nostrórum vestígiis adhæréntes inprímis decérnimus, ut omnes suffragáneæ Ecclésiæ nostræ, in legéndo & psallendo, usum hujus sacrosánctæ Ecclésiæ Metropolitánæ imiténtur.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 5. a. Accessérunt ad Jesum cœci & claudi in templo, & sanávit eos. *Matth.* 21. 14.

*Preces flexis genibus, p. 46.*

Orémus. *Oratio.*

AScéndant ad te, Dómine, preces nostræ: & ab Ecclésia tua cunctam repélle nequítiam. Per Dóminum nostrum.

FERIA QUARTA

QUATUOR TEMPORUM.

De libro Genesis.

LECTIO I. *Cap.* 42. 1.

*Fratres Joseph descendunt in Ægyptum.*

AUdiens Jacob quòd aliménta venderéntur in

Ægypto, dixit filiis suis: Descéndite, & émite nobis necessária; Et Joseph erat princeps in terra Ægypti, atque ad ejus nutum fruménta pópulis vendebántur. Cúmque adorássent eum fratres sui, & agnovísset eos, quasi ad aliénos dúriùs loquebátur, intérrogans eos: Undè venístis? Qui respondérunt: De terra Chánaan, ut emámus victui necessária. Et tamen fratres ipse cognóscens, non est cógnitus ab eis. At illi: Duódecim, inquiunt, servi tui, fratres sumus, filii viri unius in terra Chánaan: mínimus cum patre nostro est, alter non est super. Hoc est, ait, quod locútus sum: Exploratóres estis. Si pacífici estis, frater vester unus ligétur in cárcere: vos autem abíte, & ferte fruménta quæ emístis, in domos vestras, & fratrem vestrum mínimum ad me addúcite, ut possim vestros probáre sermónes, & non moriámini. Fecérunt ut díxerat; venerúntque ad Jacob patrem suum in terram Chánaan, & narravérunt ei ómnia quæ accidíssent sibi: His dictis, cùm fruménta effúnderent, sínguli reperérunt in ore saccórum ligátas pecúnias: exterritísque simul ómnibus, dixit pater Jacob: Absque líberis me esse fecístis. Joseph non est super, Símeon tenétur in vínculis, & Bénjamin auferétis: in me hæc ómnia mala recidérunt. Cui respóndit Ruben: Duos fílios meos intérfice, si non redúxero illum tibi: trade illum in manu mea, & ego eum tibi restítuam. At ille: Non descéndet, inquit, fílius meus vobíscum: frater ejus mórtuus est, & ipse solus remánsit: Si quid ei advérsi accíderit in terra ad quam pérgitis, deducétis canos meos cum dolóre ad ínferos.

℟. Ad te, Dómine, *pag.* 188.

LECTIO II. *Cap.* 43. 2.

***Benjamin ducitur in Ægyptum.***

CONsúmptis cibis quos ex Ægypto detúlerant, dixit Jacob ad fílios suos. Revertímini, & émite nobis pauxíllum escárum. Judas quoque dixit patri suo. Mitte púerum mecum, ut proficiscámur, & possímus vívere: Ne moriámur nos & párvuli nostri. Israël pater eórum dixit ad eos: Si sic necésse est, fácite quod vultis. Tulérunt ergo viri múnera, & pecúniam dúplicem, & Bénjamin: Descenderúntque in Ægyptum, & stetérunt co-

ram Joseph. Quos cùm ille vidísset, & Bénjamin simul, præcépit dispensatóri domûs suæ, dicens: I'ntroduc viros domum, & occíde víctimas, & ínstrue convívium: Quóniam mecum sunt comestúri merídiè. Fecit ille quod sibi fúerat imperátum, & introdúxit viros domum, eduxítque ad eos Símeon. I'gitur ingréssus est Joseph domum suam, obtuleríntque ei múnera, tenéntes in mánibus suis: & adoravérunt proni in terram. At ille, cleménter resalutátis eis, interrogávit eos, dicens: Salvus ne est pater vester senex, de quo dixerátis mihi? Adhuc vivit? Qui respondérunt: Sospes est servus tuus pater noster, adhuc vivit. Et incurváti adoravérunt eum. Attóllens autem Joseph óculos, vidit Bénjamin fratrem suum uterínum, & ait: Iste est frater vester párvulus, de quo dixerátis mihi? Et rursùm: Deus, inquit, misereátur tui, fili mi. Festinavítque, quia commóta fúerant víscera ejus super fratre suo, & erumpébant lácrymæ: & introiens cubículum, flevit. Rursúmque lotâ fácie egréssus, contínuit se, & ait: Pónite panes.

℟. Dómine imminúti sumus, *p.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum,

**Lectio III.** *Cap.* 12. 38.

*Signum Jonæ.*

IN illo témpore: Respondérunt Jesu quidam de Scribis & Pharisǽis, dicéntes: Magíster, vólumus à te signum vidére. Et réliqua.

Homília S. Joánnis Chrysóstomi.

*Homil. 44. in Matthæum.*

POterítne quidquam non dico ímpium magis, sed étiam stolídius istis inveníri, qui étiam post tot tantáque signa, quasi nullum signum esset factum, dícere audent: Magíster vólumus à te signum vidére? Ubi nunc sunt qui signa & mirácula curiósè inquírunt? Viri Niniνítæ surgent, & condemnábunt generatiónem hanc; nam absque áliquo pénitùs signo, ánimo credidérunt. Et sicut Ninivítæ Judǽos condemnábunt, sic multi qui nunc nobis inferióres vidéntur, nos condemnábunt. Véniat ergo in mentem quanta erit illa condemnátio, ut incipiámus aliquándo ad veram accédere pœniténtiæ jánuam. Mihi hæc ipsi dico, me ipsum primò exhórtor. Capiámus iter angústum. U'squequò deliciábimur? U'squequò degémus otiósè, ridéntes, & oscitán-

tes ? Non sumus adhuc satiáti desidiâ, & procrastinatióne ? Eadémne semper erunt ? E'adem mensa, éadem satúritas, idem sumptus, eædem pecúniæ possessiónes, constructiónes ædium ? Et horum ómnium quis finis ? Mors. Quis inquam términus ? Cinis, sepúlchrum, vermes. Aliam ergo vivámus vitam, faciámus de terra cœlum ; melióra capessámus, ut rectè vivéndo, futúra bona consequámur grátiâ & misericórdiâ Dómini nostri Jesu Christi.

℟. Viri Ninivítæ surgent in judício cum generatióne ista, & condemnábunt eam ; quia pœniténtiam egérunt * In prædicatióne Jonæ ; & † Ecce plusquàm Jonas hîc. *Matth.* 12. 41. ℣. Credidérunt in Deum, vestíti sunt saccis, & convérsi sunt de via sua mala. *Jonæ* 3. *v.* 5. 10. * In prædicatióne Jonæ. ℣. Glória. † Ecce.

*Ad* Benedictus, *Ant.* 4. e. Generátio mala & adúltera signum quærit : & signum non dábitur nisi signum Jonæ Prophétæ. *Matth.* 12. 39.

Orémus. *Oratio.*

PReces nostras, quæsumus, Dómine, cleménter exáudi : & contra cuncta nobis adversántia déxteram tuæ majestatis exténde ; Per Dóminum nostrum Jesum Christum.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

CANON.

Ex Concilio Rotomagénsi. *An.* 1581. *de Curat. & alior. Presb. offic. c.* 17.

DOmínicis & festivis diébus servítium, ac præsértim matutínæ, si dicúntur, missa solémnior, vespertínum offícium, certis & designátis horis in regióne assuétis fiat : ut omnis pópulus intérsit, nec diútiùs à família absit.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. g. Exténdens Jesus manum in discípulos suos dixit. Ecce mater mea, & fratres mei : quicúnque fécerit voluntátem Patris mei qui in cœlis est : ipse meus frater, & soror, & mater est. *Matt.* 12. 50.

Orémus. *Oratio.*

MEntes nostras, quæsumus Dómine, lúmine tuæ claritátis illústra : ut vidére possímus quæ agénda sunt, & quæ recta sunt, ágere valeámus. Per Dóminum.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

FERIA QUINTA.

De libro Génesis.

LECTIO I. *Cap.* 44. 1.

*Benjamin captatus.*

PRæcépit autem Joseph dispensatóri domûs suæ dicens : Imple saccos eórum

frumento, quantùm possunt cápere: & pone pecúniam singulórum in summitáte sacci. Scyphum autem meum argénteum, & prétium quod dedit trítici, pone in ore sacci junióris. Factúmque est ita. Jamque urbem exíerant, & processerant paululùm: Tunc Joseph accersíto dispensatóre domûs, Surge, inquit, & perséquere viros; & apprehénsis dícito; Quare reddidístis malum pro bono? Quos scrutátus, incípiens à majóre usque ad mínimum, invénit scyphum in sacco Bénjamin. At illi scissis véstibus, onerantísque rursùm ásinis, revérsi sunt in óppidum. Quibus ille, ait; Cur sic ágere voluístis? An ignorátis quod non sit símilis mei in augurándi sciéntia? Cui Judas: Quid respondébimus, inquit, dómino meo? vel quid loquémur, aut justè potérimus osténdere? Deus invénit iniquitátem servórum tuórum, en omnes servi sumus dómini mei, & nos, & apud quem invéntus est scyphus. Respóndit Joseph: Absit à me ut sic agam: qui furátus est scyphum, ipse sit servus meus: vos autem abíte líberi ad patrem vestrum. Accédens autem própiùs Judas, confidénter ait, Ego próprie servus tuus sim qui in meam hunc recépi fidem, & spopóndi dicens: Nisi redúxero eum, peccáti reus ero in patrem meum omni témpore. Manébo ítaque servus tuus pro púero in ministério dómini mei, & puer ascéndat cum frátribus suis. Non enim possum redíre ad patrem meum, abscénte púero; ne calamitátis, quæ oppressúra est patrem meum, testis assístam.

℟. Deus noster, *p.* 188.

LECTIO II. *Cap.* 45. 1.

*Joseph se manifestat: patrem accersit.*

NOn se póterat ultrà cohibére Joseph multis coram astántibus; undè præcépit ut egrederéntur cuncti foràs, & nullus interésset aliénus agnitióni mútuæ. Elevavítque vocem cum fletu; quam audiérunt Ægyptii, omnísque domus Pharaónis. Et dixit frátribus suis: Ego sum Joseph: adhuc pater meus vivit? Non póterant respondére fratres nímio terróre pertérriti. Ad quos ille cleménter; Accédite, inquit, ad me. Et cùm accessíssent propè; Ego sum, ait, Joseph, frater vester, quem vendidístis in Ægýptum. Nolíte pavére, neque vobis durum esse videátur, quòd vendidístis me in his

regiónibus : pro salúte enim vestra misit me Deus ante vos in Ægyptum. Festináte, & ascéndite ad patrem meum, & dicétis ei : Hæc mandat filius tuus Joseph : Deus me fecit dóminum univérsæ terræ Ægypti : descénde ad me, ne moréris ; Qui ascendéntes ex Ægypto, venérunt in terram Chánaan ad patrem suum Jacob. Et nuntiavérunt ei dicéntes : Joseph filius tuus vivit : & ipse dominátur in omni terra Ægypti. Quo audíto Jacob, quasi de gravi somno evígilans, tamen non credébat eis. Illi cóntrà referébant omnem órdinem rei. Cúmque vidísset plaustra, & univérsa quæ míserat, revíxit spíritus ejus, & ait : Súfficit mihi, si adhuc Joseph filius meus vivit : Vadam, & vidébo illum ántequàm móriar.

℟. Non in justificatiónibus nostris, *p.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO III. *Cap.* 15. 21.

*Chananæa.*

IN illo témpore ; Egréssus Jesus secéssit in partes Tyri & Sidónis. Et ecce múlier Chananæa à finibus illis egréssa clamávit, dicens ei : Miserére mei, Dómine fili David ; fília mea malè à dæmónio vexátur. Et réliqua.

Homilía sancti Hierónymi Presbyteri.

*Lib. 2. Comm. in Matth.*

MUlier Chananæa egréditur de finibus pristinis, ut clamans filiæ impetret sanitátem. Indè novit vocáre filium David, quia egréssa jam fúerat de finibus suis, & errórem Tyriórum & Sidoniórum, loci ac fidei commutatióne, dimíserat. Mira, sub persóna mulíeris Chananítidis, Ecclésiæ fides, patiéntia, & humílitas prædicátur. Fides, quâ crédidit sanári posse filiam suam. Patiéntia, quâ tóties contémpta in précibus persevérat ; Humílitas, quâ se non cánibus, sed cátulis cómparat. Canes autem Ethnici propter idololátriam dicúntur, qui ésui sánguinis déditi, & cadavéribus mortuórum feruntur in rábiem. Nota quòd ista Chananítis perseveránter primùm filium David, deíndè Dóminum vocet, & ad extrémum adóret ut Deum.

℟. Secéssit Jesus in partes Tyri & Sidónis : & ecce múlier Chananæa * Clamávit, dicens ei : † Miserére mei, Dómine fili David. *Matth.* 15. *v.* 21. 22. ℣. Nullus sperávit in Dómino, & confúsus est. *Eccli.* 2. 11. * Clamávit.

℣. Glória. * Miserére.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. a. Venit illa, & adorávit eum dicens: Dómine, ádjuva me. *Matth.* 15. 25.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

DEvotiónem pópuli tui, quæsumus, Dómine, benígnus inténde: ut, qui per abstinéntiam macerántur in córpore, per fructum boni óperis reficiántur in mente. Per Dóminum.

*C A N O N.*

Ex Concílio Rotomagénsi. *An.* 1581. *de Curat. & alior. Presbyt. offic. c.* 18.

AD servítium paræciále perficiéndum, præsértim Domínicis diébus & festívis, non solùm obligántur Curáti & Vicárii, sed omnes ejúsdem parǽciæ Presbyteri, qui illi adscrípti sunt, sicut omnes paræciáni ad audiéndum.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 4. f. O múlier! magna est fides tua: Fiat tibi sicut vis, & sanáta est fília ejus ex illa hora. *Matth.* 15. 28.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

DA, quæsumus, Dómine, pópulis Christiánis, & quæ profiténtur agnóscere, & cœléste munus dilígere quod frequéntant. Per Dóminum.

FERIA SEXTA QUATUOR TEMPORUM.

De libro Génesis.

LECTIO I. *Cap.* 48. 1. *&* 49. 1.

*Jacob benedixit filiis Joseph & suis, & moritur.*

NUntiátum est Joseph quòd ægrotáret pater suus: qui, assúmptis duóbus fíliis Manásse & E'phraim, ire perréxit. Dictúmque est seni: Ecce fílius tuus Joseph venit ad te. Qui confortátus sedit in léctulo. Videns autem fílios ejus, dixit ad eum: Qui sunt isti? Respóndit: Fílii mei sunt, quos donávit mihi Deus in hoc loco. Adduc, inquit, eos ad me, ut benedícam illis. Benedixítque eis in témpore illo, dicens: In te benedicétur I'sraël, atque dicétur: Fáciat tibi Deus sicut E'phraim, & sicut Manásse. Constituítque E'phraim ante Manássen. Vocávit autem Jacob fílios suos, & ait eis: Congregámini, ut annúntiem quæ ventúra sunt vobis in diébus novíssimis. Congregámini, & audíte fílii Jacob, audíte I'sraël patrem vestrum. Juda, te laudábunt fratres tui: manus tua in cervícibus inimicórum tuórum, adorábunt te fílii patris tui. Non auferétur sceptrum de Juda, &

ducs de fœmore ejus, donec véniat qui mitténdus est: & ipse erit expectátio Géntium. Salutáre tuum expectábo, Dómine. Finitísque mandátis quibus fílios instruébat, collégit pedes suos super léctulum, & óbiit: appositúsque est ad pópulum suum.

℟. Quia pátiens, *p.* 18[illegible].

LECTIO II. *Cap.* 50. 1.

*Jacob sepelitur: Paulò post moritur Joseph.*

QUod cernens Joseph, ruit super fáciem patris flens, & deósculans eum. Præcepítque servis suis médicis, ut aromátibus condírent patrem. Dixítque ei Pharao: Ascénde, & sépeli patrem tuum sicut adjurátus es. Quo ascendénte, iérunt cum eo omnes senes domûs Pharaónis, cunctíque majóres natu Terræ Ægypti. Reversúsque est Joseph in Ægyptum cum frátribus suis, & omni comitátu, sepúlto patre. Venerúntque ad eum fratres sui: & proni adorántes in terram, dixérunt: Servi tui sumus. Quibus ille respóndit: Nolíte timére: num Dei póssumus resístere voluntáti? Nolíte timére: ego pascam vos & párvulos vestros; consolatúsque est eos, & blandè ac léniter est locútus. Et habitávit in Ægypto cum omni domo patris sui: vixítque centum decem annis. Et vidit E'phraim fílios usquè ad tértiam generatiónem. Fílii quoque Machir fílii Manásse nati sunt in génibus Joseph. Quibus transáctis, locútus est frátribus suis: Post mortem meam Deus visitábit vos, & ascéndere vos fáciet de terra ista ad terram quam jurávit A'braham, I'saac, & Jacob. Cúmque adjurásset eos atque dixísset: Deus visitábit vos: asportáte ossa mea vobíscum de loco isto: mórtuus est, explétis centum decem vitæ suæ annis. Et condítus aromátibus, repósitus est in lóculo in Ægypto.

℟. In spíritu, *p.* [illegible].

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 5. 1.

*Probatica piscina.*

IN illo témpore; Erat dies festus Judæórum, & ascéndit Jesus Jerosólymam. Est autem Jerosólymis probática piscína. Et réliqua.

Homilía sancti Joánnis Chrysóstomi.

*In Joan.* 5.

CU'm vellet Deus appropinquántis baptísmatis fidem nos erudíre, non solùm morbos, sed peccáta per aquam éxpulit. Quod signíficans dixit: Ecce sanus fac-

tus es, jam noli peccáre, ne detérius tibi áliquid contíngat. Quid hîc admonémur? primùm quòd ex peccátis morbi generántur. Deindè quod verum est, apud gehénnam máximum & perpétuum esse supplícium. Illud prætéreà considerándum, quòd si gravem priórum scélerum pœnam dédimus, deinde iisdem incidérimus, dábimus longè majórem, & méritò sanè. Qui enim supplício non fit mélior, tanquam stúpidus quidam & contémptor, graviórem sibi pœnam præparat. Quòd si post datas pœnas in eàdem íterum crímina prolápsi, gravióri pœnâ afficimur, quid his sperándum est, qui in ipso supplício in iisdem sceléribus pertináciter persevérant? Quòd si in peccátis persisténdo nullam pœnam dedérimus, illud Apostólicum meminérimus; quòd benígnitas Dei ad pœniténtiam te addúcit. Secúndùm autem durítiam tuam, & impœ́nitens cor thezaurísas tibi iram in die iræ.

℟. Vis sanus fieri? Dómine, hóminem non hábeo: Dicit ei Jesus: Surge, tolle grabátum tuum, & ámbula. * Et statim sanus factus est. *Joan.* 5. *v.* 6. 7. 8. 9. ℣. Dóminus opem tulit illi super lectum dolóris ejus. *Psal.* 40. 4. * Et statim. ℣. Glória Patri. * Et statim.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. d. A'ngelus Dómini descendébat secúndùm tempus in piscínam, & movebátur aqua; & qui prior descendísset, sanus fiébat à quacúnque detinebátur infirmitáte. *Joan.* 5. 4.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

ESto, Dómine, propítius plebi tuæ: & quam tibi facis esse devótam, benígno réfove miserátus auxílio. Per Dóminum.

### *CANON.*

Ex Statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *c.* 22.

DIstríctè præcípitur, ut Sacerdótes divínum officium noctúrnum & diúrnum distínctè & apértè, quantùm Deus déderit, celebrent & devótè, ut álii vidéntes labórem & devotiónem, glorificent Deum Patrem qui in cœlis est.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. a. Qui me sanum fecit, ille mihi dixit: Tolle grabátum tuum, & ámbula. *Joan.* 5. *v.* 11.

Orémus. *Oratio.*

EXáudi nos, miséricors Deus: & méntibus nos-

tis grátiæ tuæ lumen osténde. Per Dóminum.

*Preces flexis genibus, p. 46.*

## SABBATO QUATUOR TEMPORUM.

### I'ncipit liber E'xodi.

### LECTIO I. *Cap. 1. 8.*

*Obstetrices Ægyptiæ.*

SUrréxit intéreà rex novus super Ægyptum, qui ignorábat Joseph: Et ait ad pópulum suum: Ecce, pópulus filiórum I'sraël multus, & fórtior nobis est. Veníte, sapiénter opprimámus eum, ne fortè multiplicétur: & si ingruérit contra nos bellum, addátur inimícis nostris; expugnatísque nobis, egrediátur de terra. Dixit autem rex Ægypti obstetrícibus Hebræórum; quarum una vocabátur Séphora, áltera Phua, præcípiens eis: Quando obstetricábitis Hebræas, & partûs tempus advénerit: Si másculus fúerit, interfícite eum: Si fémina reservâte. Timuérunt autem obstetríces Deum, & non fecérunt juxta præcéptum regis Ægypti, sed conservábant mares. Benè ergo fecit Deus obstetrícibus: & crevit pópulus, confortatúsque est nimis. Et quia timuérunt obstetríces Deum, ædificávit eis domos. Præcépit ergo Phárao omni pópulo suo, dicens: Quidquid masculíni sexûs natum fúerit, in flumen projícite: quidquid feminíni, reservâte.

℟. Plorábunt, *p.* 524. 188.

### LECTIO II. *Cap.* 2. 1.

*Moyses à filia Pharaonis ex aquis liberatus.*

EGréssus est post hæc vir de domo Levi: & accépit uxórem stirpis suæ: Quæ concépit, & péperit fílium: & videns eum elegántem, abscóndit tribus ménsibus. Cúmque jam celáre non posset, sumpsit fiscéllam scírpeam, & linívit eam bitúmine ac pice: Posuítque intùs infántulum, & expósuit eum in carécto ripæ flúminis, stante procul soróre ejus, & consideránte evéntum rei. Ecce autem descendébat fília Pharaónis ut lavarétur in flúmine: & puéllæ ejus gradiebántur per crepídinem álvei. Quæ cùm vidísset fiscéllam in papyrióne, misit unam è famulábus suis: & allátam apériens, cernénsque in ea párvulum vagiéntem, misérta ejus, ait: De infántibus Hebræórum est hic. Cui soror púeri: Vis, inquit, ut vadam, & vocem tibi mulíerem Hebræam, quæ nutríre possit infántulum? Respóndit: Vade. Perréxit



puélla & vocávit matrem suam. Ad quam locúta fília Pharaónis: A'ccipe, ait, púerum istum, & nutri mihi: ego dabo tibi mercédem tuam. Suscépit múlier, & nutrívit púerum; adultúmque trádidit fíliæ Pharaónis. Quem illa adoptávit in locum fílii, vocavítque nomen ejus Moyses, dicens: Quia de aqua tuli eum.

℞. Inclínet, *p.* 525. 189.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 9. 28.

*Transfiguratio.*

IN illo témpore; Assúmpsit Jesus Petrum, & Jacóbum, & Joánnem, & ascéndit in montem ut oráret. Et facta est, dùm oráret, spécies vultûs ejus áltera. Et réliqua.

Homilía sancti Leónis Papæ.

*De Transfiguratione Domini.*

SAlvátor humáni géneris Jesus Christus condens eam fidem, quæ & ímpios ad justítiam, & mórtuos révocat ad vitam, ad hoc discípulos suos doctrínæ mónitis, & óperum miráculis imbuébat, ut idem Christus & unigénitus Dei, & hóminis fílius crederétur. Nam unum horum sine áltero non próderat ad salútem, & æquális erat perículi Dóminum Jesum Christum, aut Deum tantúmmodò sine hómine, aut sine Deo solum hóminem credidísse; cùm utrúmque esset páriter confiténdum: Quia sicut Deo vera humánitas, ita hómini inerat vera divínitas. Ad confirmándam ergo hujúsce fídei salubérrimam cognitiónem, interrogáverat discípulos suos Dóminus, inter divérsas aliórum opiniónes, quid ipsi de eo créderent; quidve sentírent: Ubi Petrus Apóstolus, per revelatiónem summi Patris, corpórea súperans, & humána transcéndens, vidit mentis óculis fídei Fílium Dei vivi, & conféssus est glóriam Deitátis; quia non ad solam respéxit substántiam carnis & sánguinis. Tantúmque in hac fídei sublimitáte complácuit, ut beatitúdinis felicitáte donátus, sacram inviolábilis petræ accíperet firmitátem, super quam fundáta Ecclésia portis ínferi & mortis légibus prævaléret: nec in solvéndis, aut ligándis quorumcúnque causis, áliud ratum esset in cœlis, quàm quod Petri cedísset arbítrio.

℞. Prophétam de Gente tua, & de frátribus tuis, sicut me suscitábit tibi Dóminus Deus tuus, * Ipsum

audies. *Deuteron.* 18. 15. ℣. Quem scripsit Móyses in lege, & Prophétæ, invénimus Jesum filium Joseph à Názareth. *Joan.* 1. 45. * Ipsum áudies. ℣. Glória. * Ipsum.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. d. Assúmit Jesus Petrum, & Jacóbum, & Joánnem fratrem ejus, & duxit illos in montem excélsum seórsùm, & transfigurátus est ante eos. *Matth.* 17. *v.* 1. 2.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

POpulum tuum, quǽsumus, Dómine, propítius réspice: atque ab eo flagélla tuæ iracúndiæ cleménter avérte; Per Dóminum nostrum.

## CANON.

Ex Statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*An.* 1235. *c.* 28.

LIbrum, qui dícitur Manuále, per se hábeant singuli Parochiáles, ubi continétur ordo Baptísmi, Catechísmi, Extremæ-unctiónis, & hujúsmodi; & in Ecclésia libros álios, in quibus possit competénter divínum tam noctúrnum, quàm diúrnum officium celebrári.

*Ad Vesperas, Antiphona & Psalmi de Psalterio.*

*Capitulum. Hebr.* 11. *v.* 24. 25. 26.

FIde Móyses grandis factus, negávit se esse fílium fíliæ Pharaónis; magis éligens affligi cum pópulo Dei, quàm temporális peccáti habére jucunditátem; majóres divítias æstimans thesáuro Ægyptiórum, impropérium Christi: aspiciébat enim in remuneratiónem.

℟. Deo grátias.

℟. Fide Móyses relíquit Ægýptum, non véritus animositátem regis; * Invisíbilem enim tanquàm videns sustínuit. *Hebraeor.* 11. 27. ℣. Phárao quærébat occídere Móysen, qui fúgiens de conspéctu ejus morátus est in Terra Mádian. *Exod.* 2. 15. * Invisíbilem. ℣. Glória Patri. * Invisíbilem.

*Hymnus & Versic. ut pag.* 177.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. a. Erant Móyses & Elías visi in majestáte; & dicébant excéssum ejus, quem completúrus erat in Jerúsalem. *Luc.* 9. *v.* 30. 31.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui cónspicis omni nos virtúte destítui: intériùs exteriúsque custódi; ut ab ómnibus adversitátibus muniámur in córpore, & à pravis cogitatiónibus mundémur in mente; Per Dóminum.

# DOMINICA SECUNDA QUADRAGESIMÆ.

## Ad officium Nocturnum.

*Omnia ut in Dominica prima Quadragesima, præter sequentia.*

## IN I. NOCTURNO.

De libro E'xodi.

### Lectio I. *Cap. 2. 11.*

*Moyses profugus in Madian, uxorem ducit Sephoram.*

IN diébus illis postquàm créverat Moyses, egréssus est ad fratres suos; vidítque afflictiónem eórum, & virum Ægyptium percutiéntem quemdam de Hebræis frátribus suis. Cúmque circunspexísset huc atque illuc, & nullum adésse vidísset, percússum Ægyptium abscóndit sábulo. Et egréssus die áltero conspéxit duos Hebræos rixántes: dixítque ei, qui faciébat injúriam: Quare pércutis próximum tuum? Qui respóndit: Quis te constítuit príncipem & júdicem super nos? num occídere me tu vis, sicut heri occidísti Ægyptium? Tímuit Moyses, & ait: Quómodò palàm factum est verbum istud? Audivítque Phárao sermónem hunc, & quærébat occídere Moysen: qui fúgiens de conspéctu ejus, morátus est in Terra Mádian, & sedit juxta púteum. Erant autem sacerdóti Mádian septem fíliæ, quæ venérunt ad hauriéndam aquam: & implétis canálibus adaquáre cupiébant greges patris sui. Supervenére pastóres, & ejecérunt eas: Surrexítque Moyses, & defénsis puéllis, adaquávit oves eárum. Quæ cùm revertíssent ad Ráguël patrem suum, dixit ad eas: Cur velóciùs venístis sólitò? Respondérunt: Vir Ægyptius liberávit nos de manu pastórum: ínsuper & hausit aquam nobíscum, potúmque dedit óvibus. At ille: Ubi est? inquit, Quare dimisístis hóminem? vocáte eum, ut cómedat panem. Jurávit ergo Moyses quòd habitáret cum eo. Accepítque Séphoram fíliam ejus uxórem. Quæ péperit ei fílium, quem vocávit Gersam, dicens: A'dvena fui in terra aliéna. Alterum verò péperit, quem vocávit Eliézer, dicens: Deus enim patris mei adjútor meus erípuit me de manu Pharaónis. Post multùm verò témporis mórtuus est rex Ægypti: & ingemiscéntes fílii Israël, propter ópera vociferáti sunt: ascendítque clamor eórum ad Deum ab opéribus.

℟. Pœniténtibus dedit Deus viam justítiæ, & destinávit illis

illis fortem veritátis. * Convértere ad Dóminum, & avértere ab injustítia tua. *Eccli.* 17. 20. ℣. Esto vigilans, & confírma cétera, quæ moritúra erant, & pœniténtiam age. *Apoc.* 3. *v.* 2. 3. * Convértere.

LECTIO II. *Cap.* 3. 1.

*Deus Moysi manifestatus.*

MOyses autem pascébat oves Jethro sóceri sui cerdótis Mádian: cúmque ináſſet gregem ad interióra serti, venit ad montem Dei reb. Apparuítque ei Dónus in flamma ignis de mé rubi: & vidébat quòd bus ardéret, & non comrerétur. Dixit ergo Móy: Vadam & vidébo visió hanc magnam, quare comburátur rubus. Cer autem Dóminus quòd geret ad vidéndum, vo eum de médio rubi, & Móyses, Móyses. Qui ndit: Adsum. At ille: Ne ópies, inquit, huc: Solve eaméntum de pédibus : locus enim, in quo stas, sancta est. Et ait: Ego Deus patris tui, Deus braham, Deus Isaac, & us Jacob. Abscóndit Móy fáciem suam: non enim aubat aspícere contrà Deum. ℟. Plángite, Sacerdótes inístri Dei, sanctificáte jejúm, vocáte cœtum in domo Dei vestri, & clamáte ad Dóminum. * Quia propè est dies Dómini. *Joël.* 1. *v.* 13. 14. 15. ℣. In ómnibus exhibeámus nosmetípsos sicut Dei minístros in labóribus, in vigíliis, in jejúniis. 2. *Cor.* 6. *v.* 4. 5. * Quia.

LECTIO III. *v.* 7.

*Deus revelat nomen suum Moysi quem mittit ad Pharaonem.*

CUi ait Dóminus: Vidi afflictiónem pópuli mei in Ægypto, & clamórem ejus audívi propter durítiam eórum, qui præsunt opéribus. Sed veni, & mittam te ad Pharaónem: ut edúcas pópulum meum, fílios Israël de Ægypto. Dixítque Móyses ad Deum: Quis sum ego ut vadam ad Pharaónem, & edúcam fílios Israël de Ægypto? Qui dixit ei: Ego ero tecum: & hoc habébis signum, quòd míserim te: Cùm edúxeris pópulum meum de Ægypto, immolábis Deo super montem istum. Ait Móyses ad Deum: Ecce ego vadam ad fílios Israël, & dicam eis: Deus patrum vestrórum misit me ad vos. Si díxerint mihi: Quod est nomen ejus? quid dicam eis? Dixit Deus ad Móysen: Ego sum qui sum. Ait: Sic dices ad fílios Israël: Qui est, misit me ad

vos. Vade, & cóngrega senióres I'sraël: & áudient vocem tuam. Ingredierísque tu, & senióres I'sraël, ad regem Ægýpti & dices ad eum. Dóminus Deus Hebræórum vocávit nos: íbimus viam trium diérum in solitúdinem, ut immolémus Dómino Deo nostro. Sed ego scio quòd non dimíttet vos rex Ægýpti ut eátis, nisi per manum válidam. Exténdam enim manum meam, & percútiam Ægýptum in ómnibus mirabílibus meis, quæ factúrus sum in médio eórum; post hæc dimíttet vos.

℟. Eleemósyna ab omni peccáto & à morte líberat, & non patiétur ánimam ire in ténebras; * Fidúcia magna erit coram summo Deo eleemósyna, ómnibus faciéntibus eam. *Tob.* 4. *v.* 11, 12. ℣. Date eleemósynam, & ecce ómnia munda sunt vobis. *Luc.* 11. 41. * Fidúcia. ℣. Glória Patri. * Fidúcia.

IN II. NOCTURNO.

De libro Ecclesiástici.

LECTIO IV. *Cap.* 45. 1.

*Moysis Encomium.*

DIléctus Deo & homínibus Móyses: cujus memória in benedictióne est. Símilem illum fecit in glória sanctórum, & magnificávit eum in timóre inimicórum, & in verbis suis monstra placávit. Glorificávit illum in conspéctu regum, & jussit illi coram pópulo suo, & osténdit illi glóriam suam. In fide & lenitáte ipsius sanctum fecit illum, & elégit eum ex omni carne. Audívit enim eum, & vocem ipsíus, & indúxit illum in nubem. Et dedit illi coram præcépta, & legem vitæ & disciplínæ, docére Jacob testaméntum suum, & judícia sua I'sraël.

℟. Si confiteámur, *p.* 18[illegible]

LECTIO V. *v.* 7.

*Aaron frater Moysis Sacerdos electus.*

EXcélsum fecit Aaron f[illegible] trem ejus, & símilem [illegible] de tribu Levi: státuit ei t[illegible] taméntum ætérnum, & d[illegible] illi sacerdótium gentis [illegible] beatificávit illum in gló[illegible] & circuncínxit eum zo[illegible] glóriæ, & índuit eum sto[illegible] glóriæ, & coronávit e[illegible] in vasis virtútis. Circúm[illegible] des & femorália, & hu[illegible] rále pósuit ei, & cinxit illu[illegible] tintinnábulis áureis plúri[illegible] in gyro, dare sónitum in i[illegible] céssu suo, audítum fác[illegible] sónitum in templo, in me[illegible] riam gentis suæ. Stolam san[illegible] tam, auro, & hyacíntho, & púrpurâ, opus téxtile, vi[illegible] sapiéntis, judício & veritát[illegible] prǽditi: torto cocco opu[illegible]

artificis, gemmis pretiósis figurátis in ligatúra auri, & ópere lapidárii sculptis, in memóriam secúndùm númerum tribuum Iſraël. Coróna áurea super mitram ejus expréssa signo sanctitátis, & glóriâ honóris: opus virtútis, & desidéria oculórum ornáta. Sic pulchra ante ipsum non fuérunt tália usque ad originem. Non est indútus illâ alienígena áliquis, sed tantùm fílii ipsíus soli, & nepótes ejus per omne tempus.

℟. Audi, Dómine, *p.* 181.

LECTIO VI. *v.* 17.

*Aaron unctus à Moyse.*

SAcrifícia ipsíus consúmpta sunt igne quotídiè. Complévit Móyses manus ejus, & unxit illum óleo sancto. Factum est illi testaméntum ætérnum, & sémini ejus sicut dies cœli, fungi sacerdótio, & habére laudem, & glorificáre pópulum suum in nómine ejus. Ipsum elégit ab omni vivénte, offérre sacrifícium Deo, incénsum, & bonum odórem, in memóriam placáre pro pópulo suo: & dedit illi in præcéptis suis potestátem, in testaméntis judiciórum, docére Jacob testimónia, & in lege sua lucem dare Iſraël.

℟. Deus noster, *p.* 181.

IN III. NOCTURNO.

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO VII. *Cap.* 7. 18.

*Moyses à Pharaonis filia enutritus.*

SUrréxit rex in Ægypto, qui non sciébat Joseph. Hic circunvéniens genus nostrum, afflíxit patres nostros, ut expónerent infántes suos, ne vivificaréntur. Eódem témpore natus est Móyses, & fuit gratus Deo. Fília Pharaónis nutrívit eum sibi in fílium. Cùm autem implerétur ei quadragínta annórum tempus, ascéndit in cor ejus, ut visitáret fratres suos fílios Iſraël. Appáruit illis litigántibus: & reconciliábat eos in pace. Qui autem injúriam faciébat próximo, répulit eum, dicens: Quis te constítuit príncipem & júdicem super nos? Nunquid interfícere me tu vis, quemádmodùm interfecísti heri Ægyptium? Fugit autem Móyses in verbo isto: & factus est ádvena in terra Mádian, ubi generávit fílios duos.

℟. Non tardat, *pag.* 182.

LECTIO VIII. *v.* 30.

*Moysi se manifestat Deus.*

EXplétis annis quadragínta, appáruit illi in desérto montis Sina A'ngelus in igne flammæ rubi. Móyses autem videns, admirátus est

visum, & accedénte illo ut consideráret, facta est ad eum vox Dómini, dicens: Ego sum Deus patrum tuórum, Deus A'braham, Deus I'saac, & Deus Jacob. Tremefáctus autem Móyses, non audébat consideráre. Dixit autem illi Dóminus: Solve calceaméntum pedum tuórum: locus enim in quo stas, terra sancta est. Videns vidi afflictiónem pópuli mei, qui est in Ægypto, & gémitum eórum audívi, & descéndi liberáre eos. Et nunc veni, & mittam te in Ægyptum.

℞. Benedíctum est, *p.* 183.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO IX. *Cap.* 17. 1.

*Transfiguratio.*

IN illo témpore; Assúmit Jesus Petrum, & Jacóbum, & Joánnem fratrem ejus, & duxit illos in montem excélsum seórsùm, & transfigurátus est ante eos. Et réliqua.

Homilía sancti Leónis Papæ.

*De Transfiguratione Domini.*

DIcénte Patre, [Hic est Fílius meus diléctus, in quo mihi benè complácui, ipsum audíte,] nonne evidénter audítum est: Hic est Fílius meus diléctus, cui ex me & mecum esse, sine témpore est? Quia nec génitor génito prior, nec génitus est genitóre postérior. Hic est Fílius meus, quem à me non séparat Déitas, non dívidit potéstas, non discérnit ætérnitas. Hic est Fílius meus, non adoptívus, sed próprius; non aliúnde creátus, sed ex me génitus: nec de ália natúra mihi factus comparábilis, sed de mea esséntia mihi natus æquális. Hun ergo, in quo mihi benè pe ómnia pláceo, & cujus pr dicatióne maniféstor, cuj humilitáte claríficor, incun tánter audíte; quia ipse e véritas & vita; ipse virtu mea atque sapiéntia.

℞. Ascéndit Jesus in mon tem ut oráret, & * Facta e dùm oráret, spécies vult ejus áltera. *Luc.* 9. *v.* 28. ℣. Confessiónem & decóre induísti, amíctus lúmine sic vestiménto. *Psal.* 103. *v.* 1. * Facta est. ℣. Glória Pa * Facta est. *Repet.* ℞. Asc dit, *usque ad* ℣.

AD LAUDE MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Audít fac mihi manè misericórdia tuam: ℞. Quia in te sperá *Ps.* 142. 8.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 1. d. Dómine, fac prop ter nomen tuum, quónia multæ sunt aversiónes no træ, tibi peccávimus. *Je* 14. 7.

*Ant.* 6. f. Cognóvimus Dómine, impietátes nostras

quia peccávimus tibi. *Ibid.* 20.

*Ant.* 1. *irr.* Ne des nos in oppróbrium propter nomen tuum. *Ibid.* 21.

*Ant.* 4. e. Recordáre, ne irritum fácias fœdus tuum nobíscum, tu es Dóminus Deus noster. *Ibid. v.* 21. 22.

*Ant.* 8. g. Scitóte quóniam exáudiet Dóminus preces vestras, si permansëritis in jejúniis & oratiónibus in conspéctu Dómini. *Judith* 4. 12.

*Capitulum.* 1. *Thess.* 4. 1.

FRatres, Rogámus vos, & obsecrámus in Dómino Jesu, ut quemádmodùm accepístis à nobis quómodò opórteat vos ambuláre, & placére Deo, sic & ambulétis ut abundétis magis.

*Hymnus.* Jam Christe sol. Convérte. *ut suprà in Dom.* I. *Quadrages. pag.* 184.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 2. d. Assúmit Jesus Petrum, & Jacobum, & Joánnem fratrem ejus, & ducit illos in montem excélsum seórsùm, & transfigurátus est ante eos. *Matth.* 17. *v.* 1. 2.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui cónspicis omni nos virtúte destítui, interiùs exteriúsque custódi: ut ab ómnibus adversitátibus muniámur in córpore, & à pravis cogitatiónibus mundémur in mente; Per Dóminum.

Ad Horas ℟℟. *br. ut in Domin. I. Quadrag.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 7. c. Apparuérunt Móyses & Elías cum Jesu loquéntes, & dixit Petrus ad Jesum: Dómine, bonum est nos hìc esse. *Matth.* 17. *v.* 3. 4.

*CANON.*

Ex sancto Cypriáno.

3. *seculo. Tract. de Lapsis.*

QUanto & fide majóres, & timóre melióres sunt, qui quamvis nullo sacrifícii aut libélli facínore constrícti, quóniam tamen de hoc vel cogitavérunt, hoc ipsum apud Sacerdótes Dei doléntes & simplíciter confiténtes, exomológesim consciéntiæ fáciunt, ánimi sui pondus expónunt, salutárem medélam parvis licet & módicis vulnéribus exquírunt.

AD TERTIAM.

*Ant.* 3. c. Adhuc loquénte Petro, ecce nubes lúcida obumbrávit eos. *Matt.* 17. 5.

*Capitulum.* 1. *Thessal.* 4. *v.* 2. 3. 4.

SCitis quæ præcépta dédérim vobis per Dóminum Jesum. Hæc est autem volúntas Dei sanctificátio vestra, ut abstineátis vos à fornicatióne, ut sciat unusquísque vestrûm vas suum possidére in sanctificatióne & honóre.

℟. *br.* In toto corde, *p.* 185.
℣. In corde meo, *ibid.*

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Ecce vox de nube dicens: Hic est Fílius meus, in quo mihi benè complácui; ipsum audíte. *Matth.* 17. 5.

*Capitulum.* 1. *Thess.* 4. 6.

NE quis supergrediátur, neque circunvéniat in negótio fratrem suum: quóniam vindex est Dóminus de his ómnibus, sicut prædíximus vobis.

℟. *br.* Miserére mei, *p.* 185.
℣. Convértere, *ibid.*

AD NONAM.

*Ant.* 4. a. Audiéntes discípuli, cecidérunt in fáciem suam, & timuérunt valdè: & accéssit Jesus, & tétigit eos. *Matth.* 17. *v.* 6. 7.

*Capitulum.* 1. *Thess.* 4. 7.

NOn enim vocávit nos Deus in immundítiam, sed in sanctificatiónem in Christo Jesu Dómino nostro.

℟. *br.* Juxtà est, *p* 185.
℣. Sacrificium, *p.* 186.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 2. d. Assúmit Jesus Petrum, & Jacóbum, & Joánnem fratrem ejus, & ducit illos in montem excélsum seórsùm, & transfigurátus est ante eos. *Matth.* 17. 1.

*Ant.* 7. c. Apparuérunt Móyses & Elías cum Jesu loquéntes, & dixit Petrus ad Jésum: Dómine, bonum est nos hic esse. *Ibid. v.* 3. 4.

*Ant.* 3. c. Adhuc loquénte Petro, ecce nubes lúcida obumbrávit eos. *Ibid.* 5.

*Ant.* 2. D. Ecce vox de nube, dicens: Hic est Fílius meus in quo mihi benè complácui: ipsum audíte. *Ibid.* 5.

*Ant.* 8. c. Audiéntes discípuli, cecidérunt in fáciem suam, & timuérunt valdè: & accéssit Jesus, & tétigit eos. *Ibid.* 6.

*Capitulum. Deut.* 18. 18.

PRophétam suscitábo e[i] de médio fratrum suóru[m], & ponam verba mea in o[re] ejus, loquetúrque ad eos óm[]nia, quæ præcépero illi.

℟. Esto nobis, *p.* 18[6]. *Hymnus.* AUDI, benígne Cóndit[or], *p.* 177. ℣. Angelis suis, *p.* 1[]

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. [] Descendéntibus illis de mo[n]te, præcépit illis Jesus ne c[ui]quam quæ vidíssent, narr[a]rent, & verbum continué[]runt apud se. *Marc.* 9. *v.* 8. []

---

FERIA SECUND[A]

De libro Exodi.

LECTIO I. *Cap.* 4. 10. 5. 1 & 7. 1.

*Moyses & Aaron coram Pharaone.*

AIt Móyses: Obsecro, Dómine, non sum élo[]

quentis ab heri & nudiustértius: & ex quo locútus es ad servum tuum, impeditióris & tardióris linguæ sum. Irátus Dóminus in Móysen, ait: Aaron frater tuus Levítes, scio quòd éloquens sit: ecce ipse egréditur in occúrsum tuum, vidénsque te lætábitur corde. Post hæc ingréssi sunt Móyses & Aaron, & dixérunt Pharaóni: Hæc dicit Dóminus Deus I'sraël: Dimítte pópulum meum, ut sacrificet mihi in desérto. At ille respóndit: Quis est Dóminus, ut áudiam vocem ejus, & dimíttam I'sraël? Néscio Dóminum, & I'sraël non dimíttam. Dixeruntque: Deus Hebræórum vocávit nos, ut eámus viam trium diérum in solitúdinem, & sacrificémus Dómino Deo nostro. Ait ad eos rex Ægýpti: Quare Móyses & Aaron solicitátis pópulum ab opéribus suis? Ite ad ópera vestra. Dixítque Dóminus ad Móysen: Ecce constítui te Deum Pharaónis: & Aaron frater tuus erit prophéta tuus: Dixítque Dóminus ad Móysen & Aaron: Cùm dixerit vobis Phárao: Osténdite signa; dices ad Aaron: Tolle virgam tuam, & projice eam coram Pharaóne, ac vertétur in cólubrum. Ingréssi itaque Móyses & Aaron ad Pharaónem, fecérunt sicut præcéperat Dóminus. Tulítque Aaron virgam coram Pharaóne & servis ejus, quæ versa est in cólubrum Vocávit autem Phárao sapiéntes & maléficos: & fecérunt étiam ipsi per incantatiónes Ægyptíacas, & arcána quædam simíliter. Projeceruntque singuli virgas suas, quæ versæ sunt in dracónes: sed devorávit virga Aaron virgas eórum. Induratúmque est cor Pharaónis, & non audívit eos, sicut præcéperat Dóminus.

℟. Pósui fáciem, *p.* 187.

LECTIO II. *Cap.* 7. 14.

*Aqua Nili in sanguinem versa; prima plaga.*

DIxit autem Dóminus ad Móysen: Ingravátum est cor Pharaónis, non vult dimíttere pópulum. Dic ad Aaron: Tolle virgam tuam, & exténde manum tuam super aquas Ægýpti, & super flúvios eórum, & rivos ac palúdes, & omnes lacus aquárum, ut vertántur in sánguinem: & sit cruor in omni terra Ægýpti, tàm in lígneis vasis, quàm in sáxeis. Fecerúntque Móyses & Aaron sicut præcéperat Dóminus: & élevans virgam percússit aquam flúminis coram Pharaóne & servis ejus, quæ versa est in sánguinem. Et pisces qui erant in flúmi-

ne, mórtui sunt; computruítque flúvius, & non póterant Ægýptii bíbere aquam flúminis, & fuit sanguis in tota terra Ægýpti. Fecerúntque simíliter maléfici Ægyptiórum incantatiónibus suis; & indurátum est cor Pharaónis, nec audívit eos, sicut præcéperat Dóminus. Avertítque se, & ingréssus est domum suam, nec appósuit cor étiam hâc vice. Fodérunt autem omnes Ægýptii per circúitum flúminis aquam ut bíberent: non enim póterant bíbere de aqua flúminis. Impletíque sunt septem dies, postquàm percússit Dóminus flúvium.

℟. Justus es, *p.* 187.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 8. 21.

*Morituri in peccato.*

IN illo témpore; Dixit Jesus turbis Judæórum: Ego vado, & quærétis me, & in peccáto vestro moriémini. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. Evang. tract.* 38.

TOta infelícitas Judæórum ipsa erat, non peccátum habére, sed in peccátis mori. Hoc est quod debet fúgere omnis Christiánus; propter hoc ad Baptísmum cúrritur; propter hoc qui ægritúdine, vel aliúndè periclitántur, sibi desíderant subveníri; propter hoc étiam sugens párvulus, à matre piis mánibus ad Ecclésiam fertur, ne sine Baptísmo éxeat, & in peccáto, quo natus est, moriátur. Infelicíssima condítio, mísera sors istórum, qui de ore verídico audiérunt, In peccátis vestris moriémini. Undè tamen hoc eis contíngat expónit: Si enim non credidéritis quia ego sum, moriémini in peccátis vestris. Ergo si credidéritis quia ego sum, non moriémini in peccátis vestris. Réddita est spes desperántibus, excitátio facta est dormiéntibus, córdibus evigilavérunt: indè plúrimi credidérunt, sicut Evangélii consequéntia testátur.

℟. Ego vado, &, * Quærétis me & in peccáto vestro moriémini. Vos de deórsùm estis, † Et ego de supérnis sum. *Joan.* 8. 21. ℣. Quia vocávi & renuístis, exténdi manum meam, & non fuit qui aspíceret. *Proverb.* 1. 24. * Quærétis me. ℣. Glória Patri. † Et ego.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. g. Dixit Jesus Judæis: Cùm exaltavéritis Fílium hóminis, tunc cognoscétis quia ego sum, & à meipso fácio nihil: sed sicut dócuit me Pater hæc loquor. *Joan.* 8. 28.

Orémus. *Oratio.*

PRæsta quæsumus, omnípotens Deus: ut família tua, quæ se, affligéndo carnem, ab aliméntis ábstinet; sectándo justítiam, à culpa jejúnet. Per Dóminum.

*Preces flexis genibus, p. 46.*

*CANON.*

Ex sancto Cypriáno.

*3. Seculo. Tract. de lapsis.*

COnfiteántur singuli delíctum suum, dùm adhuc qui delíquit in século est, dùm admítti conféssio ejus potest, dùm satisfáctio & remíssio facta per Sacerdótes, apud Dóminum grata est.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 1. d.

Qui me misit mecum est, & non relíquit me solum: quia ego, quæ plácita sunt ei, fácio semper. *Joan.* 8. 29.

Orémus. *Oratio.*

EXáudi, quæsumus, Dómine, gémitum pópuli supplicántis; & qui de meritórum qualitáte diffídimus, non judícium, sed misericórdiam cónsequi mereámur; Per Dóminum.

*Preces flexis genibus, p. 46.*

FERIA TERTIA.

De libro E'xodi.

LECTIO I. *Cap.* 8. 1.

*Secunda plaga, Rana.*

DIxit quoque Dóminus ad Móysen: Ingrédere ad Pharaónem, & dices ad eum: Hæc dicit Dóminus: Dimítte pópulum meum, ut sacrífícet mihi: sin autem nolúeris dimíttere, ecce ego percútiam omnes términos tuos ranis. Et exténdit Aaron manum super aquas Ægypti, & ascendérunt ranæ, operuerúntque terram Ægypti. Fecérunt autem & malèfici per incantatiónes simíliter, eduxerúntque ranas super terram Ægypti. Vocávit autem Phárao Móysen & Aaron, & dixit eis: Oráte Dóminum ut áuferat ranas à me & à pópulo meo: & dimíttam pópulum, ut sacríficet Dómino. Egrefsíque sunt Móyses & Aaron à Pharaóne: & clamávit Móyses ad Dóminum pro sponsióne ranárum, quam condíxerat Pharaóni. Fecítque Dóminus juxta verbum Móysi: & mórtuæ sunt ranæ de dómibus; & de villis, & de agris. Congregaverúntque eas in imménsos ággeres, & compútruit terra. Videns autem Phárao quòd data esset réquies, ingravávit cor suum, & non audívit eos.

℟. Peccávimus, Dómine, *pag.* 187.

LECTIO II. *v.* 16.

*Tertia plaga; sciniphes: quarta; musca.*

DIxítque Dóminus ad Móysen: Lóquere ad Aaron: Exténde virgam

tuam, & pércute púlverem terræ: & sint scíniphes in univérsa terra Ægypti. Fecérunt ita. Et exténdit Aaron manum, virgam tenens: percussítque púlverem terræ, & facti sunt scíniphes in homínibus, & in juméntis: omnis pulvis terræ versus est in scíniphes per totam terram Ægypti. Dixit quoque Dóminus ad Móysen: Consúrge dilúculò, & sta coram Pharaóne: egrediétur enim ad aquas: & dices ad eum: Hæc dicit Dóminus: Dimítte pópulum meum ut sacríficet mihi. Quòd si non dimíseris eum, ecce ego immíttam in te, & in servos tuos, & in pópulum tuum, & in domos tuas, omne genus muscárum: & implebúntur domus Ægyptiórum muscis divérsi géneris, & univérsa terra, in qua fúerint. Fecítque Dóminus ita. Et venit musca gravíssima in domos Pharaónis & servórum ejus, & in omnem terram Ægypti, corruptáque est terra ab hujuscémodi muscis. Vocavítque Phárao Móysen & Aaron, & ait eis: Ite & sacrificáte Deo vestro in terra hac. Et ait Móyses: Non potest ita fieri. Dixítque Phárao: Ego dimíttam vos ut sacrificétis Dómino Deo vestro in desérto: verúntamen lóngiùs ne abeátis, rogáte pro me. Egressúsque Móyses à Pharaóne, orávit Dóminum. Qui fecit juxta verbum illius: & ábstulit muscas à Pharaóne, & à servis suis, & à pópulo ejus. Non supérfuit ne una quidem. Et ingravátum est cor Pharaónis, ita ut ne hâc quidem vice dimítteret pópulum.

℟. Avertátur, *pag.* 187.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO III. *Cap.* 23. 1.

*Scribæ audiendi, non imitandi.*

IN illo témpore; Locútus est Jesus ad turbas, & ad discípulos suos, dicens: Super cáthedram Móysi sedérunt Scribæ & Pharisæi: ómnia ergo quæcúnque dixerint vobis, serváte & fácite; secúndùm ópera verò eórum, nolíte fácere. Et réliqua.

Homilía sancti Hierónymi Presbyteri.

*Lib.* 3. *in cap.* 23. *Matt.*

QUid mansuétius, quid benígnius Dómino? tentátur à Pharisæis, & nihilóminùs propter Sacerdótii & nóminis dignitátem, hortátur pópulos ut subjiciántur eis, non ópera, sed doctrínam considerántes. [A'lligant enim ónera grávia & importabília, & impónunt ea in húmeros hóminum, dígito autem suo

nolunt ea movére.] Hoc generáliter advérsùs omnes magístros dictum est, qui grávia jubent, & minóra non fáciunt. O'mnia verò ópera sua fáciunt, ut videántur ab homínibus. Quicúnque ígitur ita facit quódlibet, ut videátur ab homínibus, Scriba & Pharisǽus est. Dilátant enim philactéria sua, & magníficant fímbrias. Amant quoque primos accúbitus in cœnis, & primas cáthedras in Synagógis, & salutatiónes in foro, & vocári ab homínibus, Rabbi. Væ nobis míseris, ad quos Pharisæórum vítia transiérunt.

℟. Unus est Magíster vester; omnes autem vos fratres estis: & * Patrem nolíte vocáre vobis super terram, † Unus est enim pater vester, qui in cœlis est. *Matth.* 23. *v.* 8. 9. ℣. Si ergo Pater ego sum, ubi est honor meus? *Malach.* 1. 6. * Patrem. ℣. Glória. † Unus.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. a. Non vocémini magístri, quia Magíster vester unus est Christus. *Matt.* 23. 10.

Orémus. *Oratio.*

PE'rfice, quǽsumus, Dómine, benígnus in nobis observántiæ sanctæ subsídium: ut, quæ te autóre faciénda cognóvimus, te operánte impleámus. Per Dóminum.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

CANON.

Ex Orígene.

3. *Seculo. Hom.* 11. *in Leviticum.*

EST dura & laborióſa per pœniténtiam remíssio peccatórum, cùm lavat peccátor in lácrymis stratum suum, & cùm non erubéscit Sacerdóti Dómini indicáre peccátum suum, & quǽrere medicínam.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. d. Qui major est vestrûm, erit vester miníster. *Matth.* 23. *v.* 11.

Orémus. *Oratio.*

PRopitiáre, Dómine, supplicatiónibus nostris, & animárum nostrárum medére languóribus: ut, remissióne percéptâ, in tua semper benedictióne lætémur. Per Dóminum.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

FERIA QUARTA.

De libro E'xodi.

LECTIO I. *Cap.* 9. 1.

*Quinta plaga, pestis pecorum: Sexta, ulcera & vesica.*

DIxit autem Dóminus ad Móysen: Ingrédere ad Pharaónem, & lóquere ad eum: Hæc dicit Dóminus Deus Hebræórum: Dimítte pópulum meum ut sacríficet mihi. Quòd si adhuc rénuis,

& rétines eos ; ecce manus mea erit super agros tuos : & super equos , & ásinos, & camélos , & boves , & oves, pestis valdè gravis : Et fáciet Dóminus mirábile inter possessiónes I'sraël , & possessiónes Ægyptiórum , ut nihil omnínò péreat ex his, quæ pértinent ad filios I'sraël. Constituítque Dóminus tempus, dicens : Cras fáciet Dóminus verbum istud in terra. Fecit ergo Dóminus verbum hoc álterâ die , mortuáque sunt ómnia animántia Ægyptiórum : de animálibus verò filiórum I'sraël, nihil omnínò périit. Et misit Phárao ad vidéndum : nec erat quidquam mórtuum de his, quæ possidébat I'sraël. Ingravatúmque est cor Pharaónis, & non dimísit pópulum. Et dixit Dóminus ad Móysen & Aaron : Tóllite plenas manus cíneris de camíno, & spargat illum Móyses in cœlum coram Pharaóne. Sitque pulvis super omnem terram Ægýpti : erunt enim in homínibus & juméntis úlcera, & vesícæ turgéntes, in univérsa terra Ægýpti. Tulerúntque cinérem de camíno, & stetérunt coram Pharaóne , & sparsit illum Móyses in cœlum : factáque sunt úlcera vesicárum turgéntium in homínibus & juméntis : nec póterant malé-fici stare coram Móyse propter úlcera quæ in illis erant, & in omni terra Ægýpti. Induravítque Dóminus cor Pharaónis , & non audívit eos, sicut locútus est Dóminus ad Móysen.

℟. Ad te, Dómine, *p.* 188.

LECTIO II. *v.* 13.

*Grando, plaga septima.*

DIxítque Dóminus ad Móysen : Manè consúrge, & sta coram Pharaóne, & dices ad eum : Hæc dicit Dóminus Deus Hebræórum : Dimítte pópulum meum ut sacríficet mihi. Adhuc rétines pópulum meum : & non vis dimíttere eum ? En pluam cras hâc ipsâ horâ grándinem multam nimis , qualis non fuit in Ægýpto, à die quâ fundáta est, usque in præsens tempus. Qui tímuit verbum Dómini de servis Pharaónis, fecit confúgere servos suos, & juménta in domos : Qui autem negléxit sermónem Dómini, dimísit servos suos, & juménta in agris. Et dixit Dóminus ad Móysen : Exténde manum tuam in cœlum, ut fiat grando in univérsa terra Ægýpti super hómines, & super juménta, & super omnem herbam agri in terra Ægýpti. Extendítque Móyses virgam in cœlum, & Dóminus dedit toni-

tria, & grándinem, ac discurréntia fúlgura super terram: pluítque Dóminus grándinem super terram Ægýpti. Et grando & ignis mixta páriter ferebántur: tantǽque fuit magnitúdinis, quanta antè nunquam appáruit in univérsa terra Ægýpti, ex quo gens illa cóndita est. Et percússit grando in omni terra Ægýpti cuncta quæ fuérunt in agris, ab hómine usque ad juméntum, cunctámque herbam agri percússit grando, & omne lignum regiónis confrégit; Tantùm in terra Gessen, ubi erant fílii Israël, grando non cécidit.

℟. Dómine, nunc séquimur, *pag.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthǽum.

LECTIO III. *Cap.* 20. 17.

*Mater filiorum Zebedai.*

IN illo témpore; Ascéndens Jesus Jerosólymam, assúmpsit duódecim discípulos secrétò, & ait illis: Ecce ascéndimus Jerosólymam, & Fílius hóminis tradétur princípibus sacerdótum & Scribis, & condemnábunt eum morte. Et réliqua.

Homilía sancti Hierónymi Presbýteri.

*Lib.* 3. *Comm. in Matth.*

UNde opiniónem regni habet mater filiórum Zebedǽi, ut cùm Dóminus díxerit, [Fílius hóminis tradétur princípibus sacerdótum & Scribis, & condemnábunt eum morte, & tradent Géntibus ad illudéndum, & flagellándum, & crucifigéndum,] & ignomíniam passiónis timéntibus discípulis nuntiáret, illa glóriam póstulet triumphántis? hac, ut reor, ex causa; quia post hæc ómnia díxerat Dóminus, [Et tértiâ die resúrget;] putávit eum múlier post resurrectiónem íllicò regnatúrum, & hoc quod in secúndo advéntu promíttitur, in primo esse compléndum, & aviditáte femíneâ præséntia cupit ímmemor futurórum.

℟. Dixit Jesus: Nescítis quid petátis; sedére ad déxteram meam, vel sinístram, * Non est meum, dare vobis, sed quibus parátum est à Patre meo. *Matth.* 20. *v.* 22. 23. ℣. Vidit præsumptiónem cordis eórum, & osténdit eis viam æquitátis. *Eccli.* 18. *v.* 10. 11. * Non est. ℣. Glória. * Non est.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. c. Ecce ascéndimus Jerosólymam, & Fílius hóminis tradétur princípibus sacerdótum & Scribis, & condemnábunt eum morte. *Matth.* 20. 18.

Orémus. *Oratio.*

POpulum tuum, quǽsumus, Dómine, propítius réspice: & quos ab escis carnálibus prǽcipis abstinére, à nóxiis quoque vítiis cessáre concéde. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Filium tuum, Qui tecum vivit.

*Preces flexis genibus, p. 46.*

*CANON.*

Ex Lactántio.

3. *Seculo. lib. 4. Divinar. Institutionum.*

QUia sínguli quique cœtus hæreticórum se potissimùm Christiános, & suam esse Cathólicam Ecclésiam putant, sciéndum est illam esse veram, in qua est Relígio, Conféssio, & Pœniténtia, quæ peccáta & vúlnera, quibus subjécta est infírmitas carnis, salúbriter curat.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. a. Tradent eum Géntibus ad illudéndum, & flagellándum, & crucifigéndum; & tértiâ die resúrget. *Matth.* 20. 19.

Orémus. *Oratio.*

DEus innocéntiæ restitútor & amátor, dírige ad te tuórum corda servórum: ut Spíritûs tui fervóre concépto, & in fide inveniántur stábiles, & in ópere efficáces. Per Dóminum ... in unitáte ejúsdem Spíritûs sancti Deus.

*Preces flexis genibus, p. 46.*

# FERIA QUINTA.

De libro Éxodi.

LECTIO I. *Cap. 10. 12.*

*Plaga octava, locusta; nona, densæ tenebræ.*

DIxit autem Dóminus ad Móysen: Exténde manum tuam super terram Ægýpti ad locústam, ut ascéndat super eam, & dévoret omnem herbam, quæ resídua fúerit grándini. Et exténdit Móyses virgam super terram Ægýpti: & Dóminus indúxit ventum uréntem totâ die illâ & nocte: & mane facto, ventus urens levávit locústas. Operuerúntque univérsam superfíciem terræ, vastántes ómnia. Devoráta est ígitur herba terræ, & quidquid pomórum in arbóribus fuit, quæ grando dimíserat: nihilque omnínò virens relíctum est in lignis & in herbis terræ, in cuncta Ægýpto. Et indurávit Dóminus cor Pharaónis, nec dimísit fílios Ísraël. Dixit autem Dóminus ad Móysen: Exténde manum tuam in cœlum: & sint ténebræ super terram Ægýpti, tàm densæ, ut palpári queant. Extendítque Móyses manum in cœlum: & factæ sunt ténebræ horríbiles in univérsa terra Ægýpti tribus diébus. Nemo vidit fratrem suum, nec movit se de loco in quo erat: ubi-

cúnque autem habitábant filii Israël, lux erat. Vocavítque Phárao Móysen & Aarōn, & dixit eis: Ite sacrificáte Dómino: oves tantùm vestræ & arménta remáneant, párvuli vestri eant vobíscum. Ait Móyses: Cuncti greges pergent nobíscum: non remanébit ex eis úngula. Dixítque Phárao ad Móysen: Recéde à me, & cave ne ultrà vídeas fáciem meam: quocúnque die apparúeris mihi, moriéris. Respóndit Móyses: Ita fiet ut locútus es, non vidébo ultrà fáciem tuam.

℟. Deus noster, *p.* 188.

LECTIO II. *Cap.* 12. 1.

*Agnus Paschalis, & Phase Domini.*

DIxit quoque Dóminus ad Móysen & Aaron in terra Ægypti: Loquímini ad univérsum cœtum filiórum Israël, & dícite eis: Décimâ die mensis hujus tollat unusquísque agnum per famílias & domos suas. Erit autem agnus absque mácula, másculus, annículus: juxta quem ritum tollétis & hœdum. Et servábitis eum usque ad quartamdécimam diem mensis hujus: immolabítque eum univérsa multitúdo filiórum Israël ad vésperam. Et sument de sánguine ejus, ac ponent super utrúmque postem, & in superlimináribus domórum, in quibus cómedent illum. Et edent carnes nocte illâ assas igni, & ázymos panes cum lactúcis agréstibus. Sic autem comedétis illum; Renes vestros accingétis, & calceaménta habébitis in pédibus, tenéntes báculos in mánibus, & comedétis festinánter: est enim Phase (id est tránsitus) Dómini. Et transíbo per terram Ægypti nocte illâ, percutiámque omne primogénitum in terra Ægypti ab hómine usque ad pecus: & in cunctis diis Ægypti fáciam judícia, ego Dóminus. Erit autem sanguis vobis in signum in ædibus, in quibus éritis: & vidébo sánguinem; & transíbo vos: nec erit in vobis plaga dispérdens, quando percússero terram Ægypti.

℟. Non in justificatiónibus nostris, *pag.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 16. 19.

*Dives cruciatus; Lazarus consolatus.*

IN illo témpore; Ait Jesus Pharisæis. Homo quidam erat dives, qui induebátur púrpurâ & bysso, & epulabátur quotídiè spléndidè. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.
*Hom. 40. in Evang. ante med.*

DIves iste non abstulísse aliéna reprehénditur, sed própria non dedísse. Nec dícitur quia vi quémpiam oppréssit, sed in accéptis rebus se éxtulit. Hinc ergo summópere colligéndum est, quâ pœnâ mulctándus sit, qui aliéna dírípit, si inférni damnatióne percútitur qui própria non largítur. Nemo ergo secúrum se æstimet, dicens: Ecce aliéna non rápio, sed concéssis lícitè rebus fruor: quia dives iste non idcircò punítus est, quóniam aliéna abstulit, sed quia accéptis rebus, semetípsum malè derelíquit. Hoc quoque fuit quòd hunc in inférno trádidit; quia in sua felicitáte tímidus non fuit, quia accépta dona ad usum arrogántiæ infléxit, quia víscera pietátis ignorávit, quia peccáta sua redímere, étiam cùm sibi abundáret prétium, nóluit. Et sunt nonnúlli, qui cultum subtílium, pretiosarúmque véstium non putant esse peccátum: quod si vidélicet culpa non esset, nequáquam sermo Dei tam vigilánter exprímeret, quòd dives, qui torquebátur apud ínferos, bysso & púrpurâ indútus fuísset. Nemo quippe vestiménta pretiósa, nisi ad inánem glóriam quærit, vidélicet ut honorabílior céteris esse videátur.

℟. Mórtuus est dives, & * Sepúltus est in inférno: Cùm autem esset in torméntis † Vidit A'braham à longè & Lázarum in sinu ejus. *Luc. 16. v. 22. 23.* ℣. Pro eò quòd non est recordátus fácere misericórdiam. *Psal.* 108. 16. * Sepúltus est. ℣. Glória. † Vidit A'braham.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. *irreg.* d. Factum est ut morerétur mendícus, & portarétur ab A'ngelis in sinum A'brahæ. *Luc.* 16. 22.

Orémus. *Oratio.*

PRæsta nobis, quǽsumus, Dómine, auxílium grátiæ tuæ: ut jejúniis & oratiónibus conveniénter inténti, liberémur ab hóstibus mentis & córporis. Per Dóminum nostrum Jesum Christum.

*Preces flexis genibus, p. 46.*

*CANON.*

Ex sancto Hilário.
*4. seculo. Cap. 18. in Matth.*

AD terrórem metûs máximi, quo in præsens omnes contineréntur, immóbile severitátis Apostólicæ judícium præmísit: ut quos in terris ligáverint, id est, peccatórum nodis innéxos relíquerint, & quos sólverint, confessióne vidélicet véniæ, recé-

ceperint in salútem: hi apostolicæ conditióne senténtiæ in cœlis quoque absolúti sint et ligáti.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Dixit díviti A'braham: Fili, recordáre quia recepísti bona in vita tua, & Lázarus similiter mala: nunc autem hic consolátur, tu verò cruciáris. *Luc.* 16. 25.

Orémus. *Oratio.*

ADésto, Dómine, fámulis tuis, & perpétuam benignitátem largíre poscéntibus: ut iis, qui te autóre & gubernánte gloriántur, & congregáta restáures, & restauráta consérves; Per Dóminum nostrum.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

FERIA SEXTA.

De libro E'xodi.

LECTIO I. *Cap.* 12. 21.

*Mors primogenitorum Ægypti, plaga ultima.*

VOcávit autem Móyses omnes senióres filiórum Israël, & dixit ad eos: Ite tollentes ánimal per famílias vestras, & immoláte Phase. Fasciculúmque hyssópi tíngite in sánguine qui est in límine, & aspérgite ex eo superliminare, & utrúmque postem: nullus vestrûm egrediátur óstium domûs suæ usque mane. Transíbit enim Dóminus percútiens Ægyptios: cúmque víderit sánguinem in superliminari, & in utróque poste, transcéndet óstium domûs, & non sinet percussórem íngredi domos vestras & lædere. Custódi verbum istud legítimum tibi, & fíliis tuis usque in ætérnum. Cúmque introiéritis terram, quam Dóminus datúrus est vobis, ut pollícitus est, observábitis ceremónias istas. Et cùm díxerint vobis fílii vestri: Quæ est ista relígio? dicétis eis: Víctima tránsitûs Dómini est, quando transívit super domos filiórum I'sraël in Ægypto, percútiens Ægyptios, & domos nostras líberans. Incurvatúsque pópulus adorávit. Et egréssi fílii I'sraël fecérunt sicut præcéperat Dóminus Móysi & Aaron. Factum est autem in noctis médio: percússit Dóminus omne primogénitum in terra Ægypti, à primogénito Pharaónis, qui in sólio ejus sedébat, usque ad primogénitum captívæ, quæ erat in cárcere, & omne primogénitum jumentórum. Surrexítque Phárao nocte, & omnes servi ejus, cunctáque Ægyptus: & ortus est clamor magnus in Ægypto: neque enim erat domus, in qua non jacéret mórtuus.

℟. Quia pátiens, *pag.* 188.

LECTIO II. *v. 31.*

*Israelitarum exitus.*

VOcatísque Phárao Móyse & Aaron nocte, ait: Súrgite & egredimini à pópulo meo, vos & filii Isräël: ite, immoláte Dómino sicut dícitis. Oves vestras & arménta assúmite ut petierátis, & abeúntes benedícite mihi. Urgebántque Ægýptii pópulum de terra exíre velóciter, dicéntes: Omnes moriémur. Tulit ígitur pópulus conspérsam farínam ántequàm fermentarétur: & ligans in pálliis, pósuit super húmeros suos. Fecerúntque filii Isräël sicut præcéperat Móyses: & petiérunt ab Ægýptiis vasa argéntea, & áurea, vestémque plúrimam. Dóminus autem dedit grátiam pópulo coram Ægýptiis, ut commodárent eis: & spoliavérunt Ægýptios. Profectíque sunt filii Isräël de Ramésse in Socoth, sexcénta ferè míllia péditum virórum, absque párvulis. Sed & vulgus promíscuum innumerábile ascéndit cum eis, oves & arménta, & animántia divérsi géneris multa nimis. Nox ista est observábilis Dómini, quando edúxit eos de Terra Ægýpti: hanc observáre debent omnes filii Isräël in generatiónibus suis.

℟. In spíritu, *pag.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO III. *Cap.* 21. 33.

*Heres à colonis occisus.*

IN illo témpore; Dixit Jesus principíbus Sacerdótum & senióribus pópuli parábolam hanc. Homo erat paterfamílias qui plantávit víneam, & locávit eam agrícolis. Cùm autem tempus frúctuum appropinquásset, misit ad eos fílium suum, & apprehénsum eum occidérunt. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Serm.* 87. *Edit. Bened.*

PLantáta est vínea, lege datâ in córdibus Judæorum. Missi sunt Prophétæ quæréntes fructum, bonam vitam eórum: Prophétæ ab eis contuméliis affécti, & occísi sunt. Missus est Christus únicus fílius patrisfamílias; & ipsum occidérunt heredem, & ideò perdidérunt hereditátem. Inter Judæos visus est húmilis, contémptus est; occultábat enim majestátem, promptam habébat infirmitátem. Contémptum est in illo quod promptum erat, nec cógnitum quod occúltum erat. Si enim cognovíssent, nunquam Dóminum glóriæ crucifixíssent. Nunquid adhuc contemnén-

dus est sedens in cœlo, si contémptus est cùm pendéret in ligno? Sic procédit ad eos qui sperándo & differéndo volunt períre; & lóquitur ad eos, & íncrepat eos: Ne tardes convérti ad Dóminum, neque dífferas de die in diem; súbitò enim véniet ira ejus, & in témpore vindíctæ dispérdet te.

℟. Agrícolæ vidéntes fílium patrisfamílias, dixérunt intra se: Hic est heres: venite occidámus eum, * Et habébimus hereditátem ejus. Matth. 21. 38. ℣. Fílium Dei se nóminat; morte turpíssimâ condemnémus eum. Sap. 2. v. 13. 20. * Et habébimus. ℣. Glória. * Et habébimus.

Ad Benedíctus. Ant. 1. d. Cùm vénerit Dóminus víneæ, quid fáciet agrícolis illis? Aiunt illi: Malos malè perdet, & víneam suam locábit aliis agrícolis, qui reddant fructum tempóribus suis. Matth. 21. 40.

Orémus. *Oratio.*

DA quǽsumus, omnípotens Deus: ut sacro nos purificánte jejúnio, sincéris méntibus ad Sancta ventura fácias perveníre. Per Dóminum nostrum Jesum Christum.

*Preces flexis genibus*, p. 46.

CANON.

Ex sancto Augustino.

*Hom.* 49. *inter* 50.

NEmo sibi dicat, occúltè ago, apud Deum ago, novit Deus qui mihi ignóscit, quia in corde ago; ergo sine causa dictum est: Quæ solvéritis in terrâ, solúta erunt in cœlo? Ergo sine causa sunt claves datæ Ecclésiæ Dei? Frustrámus Evangélium Dei, frustrámus verba Christi, promíttimus vobis quod ille negat, nonne vos decípimus?

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. c. Quæréntes Príncipes Sacerdótum & Pharisǽi Jesum tenére, timuérunt turbas; quóniam sicut prophétam eum habébant. *Mat.* 21. 46.

Orémus. *Oratio.*

DA quǽsumus, Dómine, pópulo tuo salútem mentis & córporis: ut bonis opéribus inhæréndo, tuæ semper virtútis mereátur protectióne defέndi. Per Dóminum.

*Preces flexis genibus*, p. 46.

SABBATO.

De libro Exodi.

LECTIO I. *Cap.* 13. 1.

*Primogenitorum consecratio.*

LOcutúsque est Dóminus ad Móysen, dicens: Sanc-

tífica mihi omne primogénitum quod áperit vulvam in fíliis Iſraël, tàm de homínibus, quàm de juméntis: mea ſunt enim ómnia. Et ait Móyſes ad pópulum: Mementóte diéi hujus in qua egréſſi eſtis de Ægýpto, & de domo ſervitútis, quóniam in manu forti edúxit vos Dóminus de loco iſto: ut non comedátis fermentátum panem. Cúmque introdúxerit te Dóminus in terram Chananǽi, ſicut jurávit tibi & pátribus tuis, & déderit tibi eam: ſeparábis omne quod áperit vulvam Dómino, & quod primitívum eſt in pecóribus tuis: quidquid habúeris maſculíni ſexûs, conſecrábis Dómino. Primogénitum áſini mutábis ove: quòd ſi non redémeris, interfícies. Omne autem primogénitum hóminis de fíliis tuis, prétio rédimes. Cúmque interrogáverit te fílius tuus cras, dicens: Quid eſt hoc? Reſpondébis ei: In manu forti edúxit nos Dóminus de terra Ægýpti, de domo ſervitútis. Nam cùm indurátus eſſet Phárao, & nollet nos dimíttere, occídit Dóminus omne primogénitum in terra Ægýpti, à primogénito hóminis uſque ad primogénitum jumentórum: idcírco ímmolo Dómino omne quod áperit vulvam maſculíni ſexûs, & ómnia primogénita filiórum meórum rédimo. Erit ígitur quaſi ſignum in manu tua, & quaſi appénſum quid, ob recordatiónem, inter óculos tuos eò quòd in manu forti edúxit nos Dóminus de Ægýpto.

℟. Plorábunt, *p.* 188.

## Lectio II. *v.* 17.

*Iter Iſraëlitarum: columna nubis ac ignis.*

IGitur cùm emiſiſſet Pharao pópulum, non eduxit Deus per viam terræ Philiſtiim, quæ vicína eſt, réputans ne fortè pœnitéret eum, ſi vidíſſet advérsùm ſe bella conſúrgere, & reverterétur in Ægýptum. Sed circundúxit per viam deſerti, quæ eſt juxta mare Rubrum: & armáti aſcendérunt fílii Iſraël de terra Ægýpti. Tulit quoque Móyſes oſſa Joſeph ſecum: eò quòd adjuráſſet fílios Iſraël, dicens: Viſitábit vos Deus, efférte oſſa mea hinc vobíſcum. Profectíque de Socoth, castrametáti ſunt in Etham in extrémis fínibus ſolitúdinis. Dóminus autem præcedébat eos ad oſtendéndam viam per diem in colúmna nubis, & per noctem in colúmna ignis: ut dux eſſet itíneris utróque témpore. Nunquam défuit colúmna nubis

...dem, nec colúmna ignis per nostem coram pópulo.

℟. Inclínet, p. 524.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

Lectio III. *Cap.* 15. 11.

*Filius prodigus.*

In illo témpore; Ait Jesus ad Pharisǽos & Scribas: Homo quidam hábuit duos filios; & adolescéntior postquàm ómnia consummásset, cœpit egére. In se autem reversus, dixit: Surgam, & ibo ad patrem meum, & dicam ei: Pater, peccávi in cœlum, & coram te, jam non sum dignus vocári fílius tuus. Et reliqua.

Homilía sancti Ambrósii Epíscopi.

*Lib. 7. Comment. in Lucam.*

QUi se à Christo séparat, exul est pátriæ, civis est mundi. Benè autem in se revértitur, qui à se recéssit; enim qui ad Dóminum redditur, se sibi reddit, & qui recédit à Christo, se sibi abdicat. Jam redeámus ad patrem, ne nos ei reconciliatiónis faciámus moram, quam non fecit Pater. Fácilè reconciliátur, quando impénsè rogátur. Sed etsi novit Deus ómnia, vocem tamen tuæ confessiónis expéctat. Confitére magis, ut roget pro te Ecclésia, & illácrymet pópulus. Exúrge ergo, curre ad Ecclésiam; hic est Pater, hic est Filius, hic est Spíritus sanctus. Occúrrit tibi qui audit te intra mentis secréta tractántem. Et cùm adhuc longè sis, videt & accúrrit; videt in péctore tuo, accúrrit ne quis impédiat, compléctitur quoque; supra collum cadit, ut jacéntem érigat, & onerátum peccátis, atque in terréna defléxum refléctat ad cœlum, in quo suum quærat autórem. Qui lapsus fúerit, per pœniténtiam revivíscit.

℟. Quanti mercenárii in domo patris mei abúndant pánibus; ego autem hic fame péreo! * Surgam, & ibo ad patrem meum. *Luc.* 15. *v.* 17. 18. ℣. Revértere ad me, dicit Dóminus, & ego suscípiam te. *Jerem.* 3. 1. * Surgam. ℣. Glória Patri. * Surgam.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. d. Pater, peccávi in cœlum, & coram te; jam non sum dignus vocári fílius tuus; fac me sicut unum de mercenáriis tuis. *Luc.* 15. *v.* 18. 19.

Orémus. *Oratio.*

DA, quǽsumus, Dómine, nostris efféctum jejúniis salutárem, ut castigátio carnis assúmpta, ad nostrárum vegetatiónem tránseat

animárum. Per Dóminum nostrum.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

## *CANON.*

Ex Concilio Lateranénsi.

*Canone decimo.*

IN Cathedrálibus & áliis Conventuálibus Ecclésiis viri idónei ordinéntur, quos Epíscopi possint coadjutóres & cooperatóres habére, non solùm in prædicatiónis officio, verùm étiam in audiéndis confessiónibus, & pœniténtiis injungéndis.

## AD VESPERAS.

*Antiphona & Psalmi de Psalterio.*

*Capitulum. Tob.* 13. *v.* 8. 9.

COnvertímini peccatóres, & fácite justítiam coram Deo, credéntes quòd fáciat vobíscum misericórdiam suam. Ego autem, & ánima mea in Dómino lætábimur.

℟. Justus es, Dómine, & omnes viæ tuæ misericórdia, & véritas, & judícium. * Non enim delectáris in perditiónibus nostris, & post lacrymatiónem & fletum, exultatiónem infúndis. *Tob.* 3. *v.* 2. 22. ℣. Qui convérti fécerit peccatórem, salvábit ánimam ejus à morte. *Jac.* 5. 20. * Non enim. ℣. Glória. * Non enim.

*Hymnus & Versic. ut su-prà, p.* 513. 177.

*Ad Magnificat, Ant.* 7. Omnis disciplína, in præsénti vidétur non esse gáudii, sed mœróris: pósteà autem fructum pacatíssimum exercitáti per eam reddet justíti[a]. *Hebr.* 12. 11.

Orémus. *Oratio.*

QUæsumus, omnipot[ens] Deus, vota humíli[um] réspice, atque ad defensi[o]nem nostram déxteram t[uæ] majestátis exténde. Per D[ó]minum.

---

## DOMINICA TERTI[A] QUADRAGESIMÆ.

## AD OFFICIUM NOCTURNU[M]

*Omnia ut in Dominica [I.] Quadragesima, præter [se]quentia.*

## IN I. NOCTURN[O]

De libro E'xodi.

LECTIO I. *Cap.* 14.

*Pharao Israëlitas perse[qui]tur.*

LOcútus est autem Dó[mi]nus ad Móysen, dicen[s]: Lóquere fíliis I'sraël: Revé[rsi] castrametén tur è regióne Ph[i]hahíroth, quæ est inter Mag[]dalum & mare contra Beél[se]phon; in conspéctu ejus c[on]tra ponétis super mare. Dic[tú]rúsque est Phárao super fi[lios] I'sraël; Coarctáti sunt in t[er]ra, conclúsit eos desértu[m].

indurábo cor ejus, ac per-
quétur vos: & glorificábor
Pharaóne, & in omni exér-
u ejus: sciéntque Ægyp-
quia ego sum Dóminus.
ceruntque ita. Et nuntiá-
n est regi Ægyptiórum
d fugísset pópulus: im-
tatúmque est cor Pharaó-
& servórum ejus super
ulo, & dixérunt: Quid
imus fácere ut dimitte-
us I'sraël, ne servíret no-
? Junxit ergo currum, &
nem pópulum suum as-
mpsit secum. Tulítque sex-
os currus eléctos, &
lquid in Ægýpto cúr-
m fuit: & duces totíus
rcitûs. Induravítque Dó-
us cor Pharaónis regis
ýpti, & persecútus est
s I'sraël: at illi egréssi
t in manu excélsa. Cúm-
persequeréntur Ægýptii
igia præcedéntium, repe-
t eos in castris super
: omnis equitátus, &
us Pharaónis, & univér-
exércitus erant in Phi-
roth contra Beélsephon.
Pœniténtibus, p. 544.

LECTIO II. v. 10.

*ransitus maris Rubri.*

U'mque appropinquásset
Phárao, levántes fílii
ël óculos, vidérunt
gýptios post se: & timué-
valdè: clamaverúntque
ad Dóminum, & dixérunt
ad Móysen: Fórsitan non
erant sepúlchra in Ægýpto,
ideò tulísti nos ut moreré-
mur in solitúdine: quid hoc
fácere voluísti, ut edúceres
nos ex Ægýpto? Nonne iste
est sermo, quem loquebámur
ad te in Ægýpto, dicéntes:
Recéde à nobis, ut serviámus
Ægýptiis? multò enim mé-
lius erat servíre eis, quàm
mori in solitúdine. Et ait
Móyses ad pópulum: Nolíte
timére: state & vidéte ma-
gnália Dómini, quæ factúrus
est hódiè: Ægýptios enim
quos nunc vidétis, nequá-
quam ultrà vidébitis usque
in sempitérnum. Dóminus
pugnábit pro vobis, & vos
tacébitis. Dixítque Dóminus
ad Móysen: Quid clamas ad
me? Lóquere fíliis I'sraël ut
proficiscántur. Tu autem
éleva virgam tuam, & ex-
ténde manum tuam super
mare, & dívide illud: ut
gradiántur fílii I'sraël in mé-
dio mari per siccum. Ego
autem indurábo cor Ægyp-
tiórum ut persequántur vos:
& glorificábor in Pharaóne,
& in omni exércitu ejus, &
in cúrribus & in equítibus
illíus. Et scient Ægýptii quia
ego sum Dóminus, cùm glo-
rificátus fúero in Pharaóne,
& in cúrribus atque in equí-
tibus ejus. Tolléns que se A'n-

gelus Dei, qui præcedébat castra I'sraël, ábiit post eos: & cum eo páriter colúmna nubis, prióra dimíttens, post tergum stetit inter castra Ægyptiórum & castra I'sraël, & erat nubes tenebrósa, & illúminans noctem, ita ut ad se ínvicem toto noctis témpore accédere non valérent. Cúmque extendísset Móyses manum super mare, ábstulit illud Dóminus, flante vento veheménti & uténte totâ nocte, & vertit in siccum: divisáque est aqua. Et ingréssi sunt filii I'sraël per médium sicci maris; erat enim aqua quasi murus à dextra eórum & læva.

℟. Plángite, *p.* 515. 209

LECTIO III. *v.* 23.

*Submersio Pharaonis.*

PErsequentésque Ægýptii ingréssi sunt post eos, & omnis equitátus Pharaónis, currus ejus, & équites per médium maris. Jamque advénerat vigília matutína, & ecce respíciens Dóminus super castra Ægyptiórum per colúmnam ignis & nubis, interfécit exércitum eórum: & subvértit rotas cúrruum, ferebantúrque in profúndum. Dixérunt ergo Ægýptii: Fugiámus Israélem: Dóminus enim pugnat pro eis contra nos. Et ait Dóminus ad Móysen: Exténde manum tuam super mare, ut revertántur aquæ ad Ægýptios super currus & équites eórum. Cúmque extendísset Móyses manum contra mare, revérsum est primo dilúculo ad priórem locum: Fugientibúsque Ægýptiis occurrérunt aquæ, & invólvit eos Dóminus in médiis flúctibus. Reversǽque sunt aquæ, & operuérunt currus & équites cuncti exércitûs Pharaónis, qui sequéntes ingréssi fúerant mare: nec unus quidem supérfuit ex eis. Fílii autem I'sraël perrexérunt per médium sicci maris, & aquæ eis erant quasi pro muro à dextris & à sinístris: liberavítque Dóminus in die illa I'sraël de manu Ægyptiórum. Et vidérunt Ægýptios mortuos super littus maris, & manum magnam, quam exercúerat Dóminus contra eos. Timuítque pópulus Dóminum, & credidérunt Dómino & Móysi servo ejus.

℟. Eleemósyna, *p.* 516. 210

IN II. NOCTURNO.

De libro Sapiéntiæ.

LECTIO IV. *Cap.* 10. 15.

*Sapientia populum Israël eduxit ex Ægypto.*

SApiéntia pópulum justum & semen sine queréla liberávit à natiónibus, quæ illum deprimébant. Intrávit

in animam servi Dei, & stetit contra reges horréndos in porténtis & signis. Et réddidit justis mercédem labórum suórum, & dedúxit illos in via mirábili: & fuit illis in velaménto diéi, & in luce stellárum per noctem. Tránstulit illos per mare Rubrum, & transvéxit illos per aquam nímiam. Inimícos autem illórum demérsit in mare, & ab altitúdine inferórum edúxit illos. Idéò justi tulérunt spólia impiórum, & decantavérunt, Domine, nomen sanctum tuum, & victrícem manum tuam laudavérunt páriter: quóniam sapiéntia apéruit os mutórum, & linguas infántium fecit disértas.

℟. Si confiteámur, *p.* 516. 181.

LECTIO V. *Cap.* 17. 1. & 18. 1.

*Impiis tenebræ, justis lux reservata.*

MAgna sunt enim judícia tua, Dómine, & inenarrabília verba tua: propter hoc indisciplinátæ ánimæ erravérunt. Dùm enim persuásum habent iníqui posse dominári natióni sanctæ; vínculis tenebrárum, & longæ noctis compedíti, inclúsi sub tectis, fugitívi perpétuæ providéntiæ jacuérunt. Omnis enim orbis terrárum límpido illuminabátur lúmine, & non impedítis opéribus continebátur. Solis autem illis superpósita erat gravis nox, imágo tenebrárum, quæ superventúra illis erat. Ipsi ergo sibi erant gravióres ténebris. Sanctis autem tuis máxima erat lux, & horum quidem vocem audiébant, sed figúram non vidébant. Et quia non & ipsi éadem passi erant, magnificábant te. Et qui antè læsi erant, quia non lædebántur, grátias agébant: & ut esset differéntia, donum petébant. Propter quod ignis ardéntem colúmnam ducem habuérunt ignótæ viæ, & sólem sine læsúra boni hospítii præstitísti.

℟. Audi, Dómine, *p.* 517. 181.

LECTIO VI. *Cap.* 19. 1.

*Ultio non sinit impios vivere.*

IMpiis autem usque in novíssimum sine misericórdia ira supervénit. Præsciébat enim futúra illórum: quóniam cùm ipsi permisíssent ut se edúcerent, & cùm magnâ solicitúdine præmisíssent illos, consequebántur illos pœniténtiâ acti. Adhuc enim inter manus habéntes luctum, & deplorántes ad monuménta mortuórum, áliam sibi assumpsérunt cogitatiónem insciéntiæ: & quos rogántes projécerant, hos tanquam fugitívos persequebántur: ducébat enim illos ad hunc finem digna necéssitas: & horum, quæ acci-

derant, commemoratiónem amittébant, ut quæ déerant torméntis, repléret punítio: & pópulus quidem tuus mirabíliter transíret, illi autem novam mortem invenírent. Omnis enim creatúra ad suum genus ab inítio refigurabátur, desérviens tuis præcéptis, ut púeri tui custodiréntur illæsi. Nam nubes castra eórum obumbrábat, & ex aqua, quæ antè erat, terra árida appáruit, & in mari Rubro via sine impediménto, & campus gérminans de profúndo nímio: per quem omnis nátio transívit, quæ tegebátur tuâ manu, vidéntes tua mirabília & monstra. Tanquam enim equi depavérunt escam, & tanquam agni exultavérunt, magnificántes te, Dómine, qui liberásti illos.

℟. Deus noster, *p. 517. 182.*

## IN III. NOCTURNO.

De A'ctibus Apostolórum.

### Lectio VII. *Cap. 7. 35.*

*Mirabilia à Deo patrata per Moysen.*

MO'ysen, quem negavérunt, dicéntes: Quis te constítuit príncipem & júdicem? hunc Deus príncipem, & redemptórem misit, cum manu A'ngeli, qui appáruit illi in rubo. Hic edúxit illos fáciens prodígia, & signa in terra Ægypti, & in mari rubro & in desérto annis quadragínta. Hic est Móyses qui dixit fíliis I'sraël: Prophétam suscitábit vobis de frátribus vestris, tanquam me, ipsum audiétis. Hic est, qui fuit in Ecclésia in solitúdine cum A'ngelo, qui loquebátur ei in monte Sina, & cum pátribus nostris: qui accépit verba vitæ dare nobis.

℟. Non tardat, *p. 518. 184.*

### Lectio VIII. *v. 39.*

*Israëlitæ in Moysen rebelles, & idolis servientes.*

CUi noluérunt obedíre patres nostri: sed repulérunt, & avérsi sunt córdibus suis in Ægyptum, dicéntes ad Aaron: Fac nobis deos, qui præcédant nos: Móyses enim hic, qui edúxit nos de terra Ægypti, nescímus quid factum sit ei. Et vítulum fecérunt in diébus illis, & obtulérunt hóstiam simuláchro, & lætabántur in opéribus mánuum suárum. Convértit autem Deus, & trádidit eos servíre milítiæ cœli, sicut scriptum est in Libro Prophetárum: Nunquid víctimas & hóstias obtulístis mihi annis quadragínta in desérto, domus I'sraël? Et suscepístis tabernáculum Moloch, & sidus Dei vestri

Rempham, figúras quas fecístis, adoráre eas. Et tránsferam vos trans Babylónem.

℟. Benedíctum, p. 519. 183.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO IX. *Cap.* 11. 14.

*Dæmoniacus mutus. Fortis armatus.*

IN illo témpore; Erat Jesus ejíciens dæmónium, & illud erat mutum: & cùm ejecísset dæmónium, locútus est mutus, & admirátæ sunt turbæ. Et réliqua.

Homilía venerábilis Bedæ Presbýteri.

*In Luc. lib.* 4. *c.* 48.

DÆmoníacus iste apud Matthǽum non solùm mutus, sed & cæcus fuísse narrátur, curatúsque dícitur à Dómino, ita ut loquerétur, & vidéret. Tria ergo signa simul in uno hómine perpetráta sunt: cæcus videt, mutus lóquitur, possésus à dǽmone liberátur. Quod & tunc quidem carnáliter factum est, sed & quotídiè complétur in conversióne credéntium; ut expúlso primùm dǽmone, fídei lumen aspíciant, deínde ad laudes Dei tacéntia priùs ora laxéntur.

℟. Immúndus spíritus assúmit septem álios spíritus, nequióres se. * Et fiunt novíssima hóminis illíus pejora prióribus. *Luc.* 11. *v.* 24. 26. ℣. Si avérterit se justus à justítia sua, & fécerit iniquitátem, in peccáto suo moriétur. *Ezech.* 18. 24. * Et fiunt. ℣. Glória. * Et fiunt. *Repetitur*, Immúndus spíritus, *usque ad* ℣.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis, Antiph. & Psalmi de Dominica prima Quadragesima.*

*Capitulum. Ephes.* 5. *v.* 1. 2.

FRatres, estóte imitatóres Dei, sicut fílii charíssimi, & ambuláte in dilectióne, sicut & Christus diléxit nos, & trádidit semetípsum pro nobis oblatiónem & hóstiam Deo in odórem suavitátis.

*Hymnus.* JAM Christe sol, *pag.* 526. 184 *Versic. Ibid.*

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. 2. Erat Jesus ejíciens dæmónium, & illud erat mutum; & cùm ejecísset dæmónium, locútus est mutus, & admirátæ sunt turbæ. *Luc.* 11. 14.

Orémus. *Oratio.*

QUǽsumus, omnípotens Deus, vota humílium réspice, atque ad defensiónem nostram déxteram tuæ majestátis exténde. Per Dóminum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 2. d. Quidam dixérunt: In Beélzebub éjicit dæmónia. Dixit eis Jesus: Omne regnum in seipsum divisum desolábitur. *Luc.* 11. *v.* 15. 17.

*CANON.*

Ex sancto Audoéno Archiepíscopo Rotomagénsi.

*7. Seculo. In vita sancti Eligii. Cap. 7.*

CU'm jam Eligius virilem ætátem ágeret, métuens ne áliqua suum delicta pectus frustrárent, ómnia ab adolescéntia sua coram Sacerdóte conféssus est acta; sicque sibi austéram impónens pœniténtiam cœpit fórtiter colluctatióni carnis spíritu fervóris resistere.

AD TERTIAM.

*Ant.* 7. C. Si ego in Beélzebub ejicio dæmónia, filii vestri in quo ejiciunt? Ídeò ipsi júdices vestri erunt. *Luc.* 11. 19.

*Capitulum. Eph.* 5. *v.* 3. 4.

OMnis immundítia aut avarítia nec nominétur in vobis sicut decet sanctos; aut turpitúdo, aut stultilóquium, aut scurrílitas, quæ ad rem non pértinet, sed magis gratiárum áctio.

℟. *br.* In toto corde, *p.* 521. 185.

℣. In corde meo. *Ibid.*

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. A. Si in digito Dei ejicio dæmónia: profectò pervénit in vos regnum Dei. *Luc.* 11. 20.

*Capitulum. Ephes.* 5. 5.

HOc enim scitóte intelligéntes, quòd omnis fornicátor, aut immúndus, aut avárus, quod est idolórum sérvitus, non habet hereditátem in regno Christi & Dei.

℟. *br.* Miserére mei, *p.* 521. 185

℣. Convértere, *Ibid.*

AD NONAM.

*Ant.* 6. F. Qui non est mecum, contra me est; & qui non cólligit mecum, dispérgit, dicit Dóminus. *Luc.* 11. 23.

*Capitulum. Ephes.* 5. *v.* 8. 9.

ERátis enim aliquándo ténebræ: nunc autem lux in Dómino. Ut filii lucis ambuláte: fructus enim lucis est in omni bonitáte, & justitia, & veritáte.

℟. *br.* Juxtà est, *p.* 521. 185

℣. Sacrificium, 522.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 1. a. Erat Jesus ejiciens dæmónium, & illud erat mutum; & cùm ejecisset dæmónium, locútus est mutus, & admirátæ sunt turbæ. *Luc.* 11. 14.

*Ant.* 2. d. Quidam dixérunt: In Beélzebub éjicit dæmónia. Dixit eis Jesus: Omne regnum in seipsum divisum desolábitur. *Ibid. v.* 15. 17.

*Ant.* 7. C. Si ego in Beelzebub ejicio dæmónia, filii vestri in quo ejiciunt? Ideò ipsi & júdices vestri erunt. *Ibid.* 19.

*Ant.* 3. A. Si in dígito Dei ejicio dæmónia: profectò pervénit in vos regnum Dei. *Ibid.* 20.

*Ant.* 6. F. Qui non est mecum, contra me est; & qui non cólligit mecum, dispérgit, dicit Dóminus. *Ibid.* 23.

*Capitulum. Eccli.* 30. 24.

MIserére ánimæ tuæ placens Deo, & cóntine: cóngrega cor tuum in sanctitáte ejus.

℟. Educ de custódia ánimam meam, * Ad confiténdum nómini tuo, Dómine; *Repet.* Educ. ℣. Périit fuga à me, & non est qui requírat ánimam meam. * Ad confiténdum. *Psal.* 141. *v.* 8. 9. Glória Patri. *Repet.* Educ, *usque ad* ℣.

*Dicitur usque ad Sabbatum ante Dom. Passionis.*

*Hymnus.* AUDI benígne, *p.* 177.

℣. Angelis suis, *p.* 186.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Extóllens vocem quædam múlier de turba, dixit Jesu: Beátus venter qui te portávit, & úbera quæ suxísti. At ille dixit: Quin-ímmò, beáti qui áudiunt verbum Dei, & custódiunt illud. *Luc.* 11. *v.* 27. 28.

*Oratio.* Quæsumus, *ut suprà ad Laudes, p.* 235.

## FERIA SECUNDA.

De libro Exodi.

LECTIO I. *Cap.* 15. 22.

*Aquæ amaræ in dulces conversæ.*

TUlit autem Móyses Israël de mari Rubro, & egréssi sunt in desértum Sur: ambulavéruntque tribus diébus per solitúdinem, & non inveniébant aquam. Et venérunt in Mara, nec póterant bíbere aquam de Mara, eò quòd essent amáræ: unde & cóngruum loco nomen impósuit, vocans illum Mara, id est, amaritúdinem. Et murmurávit pópulus contra Móysen, dicens: Quid bibémus? At ille clamávit ad Dóminum, qui osténdit ei lignum, quod cùm misísset in aquas, in dulcédinem versæ sunt. Ibi constítuit ei præcépta, atque judícia, & ibi tentávit eum, dicens: Si audíeris vocem Dómini Dei tui, & quod rectum est coram eo féceris, & obedíeris mandátis ejus, custodierísque ómnia præcépta illíus, cunctum languórem, quem pósui in Ægypto, non indúcam super te: ego enim Dóminus sanátor tuus. Venérunt autem in Elim filii Israël, ubi erant duódecim fontes aquá-

rum, & ſeptuagínta palmæ: & caſtrametáti ſunt juxta aquas. Profectíque ſunt de Elim, & venit omnis multitúdo filiórum I'ſraël in deſértum Sin.

℟. Póſui fáciem meam, *pag.* 187.

Lectio II. *Cap.* 17. 1.

*Aqua ex rupe. Amalec victus.*

I'Gitur profécta omnis multitúdo filiórum I'ſraël de deſérto Sin per manſiónes ſuas, juxta ſermónem Dómini, caſtrametáti ſunt in Raphídim, ubi non erat aqua ad bibéndum pópulo. Clamávit autem Móyſes ad Dóminum, dicens: Quid fáciam pópulo huic? Adhuc páululùm, & lapidábit me. Et ait Dóminus ad Móyſen: Antecéde pópulum, & ſume tecum de ſenióribus I'ſraël: & virgam, quâ percuſſiſti flúvium, tolle in manu tua, & vade. En ego ſtabo ibi coram te ſupra petram Horeb: percutiéſque petram, & exíbit ex ea aqua, ut bibat pópulus. Fecit Móyſes ita coram ſenióribus I'ſraël. Venit autem A'malec, & pugnábat contra I'ſraël in Raphídim. Dixítque Móyſes ad Jóſue: E'lige viros; & egréſſus pugna contra A'malec: cras ego ſtabo in vértice collis, habens virgam Dei in manu mea. Fecit Jóſue ut locutus erat Moyſes, & pugnávit contra A'malec: Móyſes autem, & Aaron, & Hur aſcendérunt ſuper vérticem collis. Cúmque levár[et] Móyſes manus, vincéba[t] I'ſraël: ſin autem paululùm remiſiſſet, ſuperábat A'malec. Manus autem Móyſi era[nt] graves: ſuméntes ígitur lapidem, poſuérunt ſub eum, in quo ſedit: Aaro[n] autem & Hur ſuſtentába[nt] manus ejus ex utráque part[e]. Et factum eſt ut manus ill[æ] non laſſaréntur uſque ad o[c]cáſum Solis. Fugavítque Jóſue A'malec, & pópulum ej[us] in ore gládii.

℟. Juſtus es, Dómine, *p[ag.]* 187.

Léctio ſancti Evangélii ſe[-]cúndùm Lucam.

Lectio III. *Cap.* 4. 2[3.]

*Propheta in patria ſine [ho]nore.*

IN illo témpore; Ait Je[sus] Phariſæis; U'tique dic[étis] mihi hanc ſimilitúdinem: M[e]dice cura teípſum: qua[nta] audívimus facta in Caph[ar]naüm, fac & hîc in pát[ria] tua. Et réliqua.

Homilía ſancti Auguſtíni Epíſcopi.

*Libr.* 4. *Comment. in Luc.*

HOc exémplo páriter [&] miráculo declarátur,

quòd frustra opem misericórdiæ cœléstis expectas, si alienæ frúctibus virtútis invídeas. Aspernátor enim Dóminus [...]idórum est, & ab iis, qui [...]vína benefícia in áliis persequúntur, mirácula suæ po[...]ntiæ avértit. Non otióse [...]que Salvátor excúsat quòd [...]lla in pátria sua mirácula [...]rtútis operátus sit, ne for[...]ssis áliquis viliórem pátriæ [...]bis esse debére putáret af[...]ctum. Neque enim cives [...]terat non amáre, qui [...]áret omnes; sed ipsi se [...]ritáte pátriæ, qui invident, [...]icárunt. Légimus gentí[...] virum Naáman prophé[...]o oráculo lepræ máculis [...]olútum, cùm plúrimos [...]dæórum lepra córporis pá[...]r & mentis absúmeret: [...]óniam in ejus typo salus [...]ra Géntibus declarátur. [...]ulus ille ex alienígenis [...]gregátus, pópulus ille [...]leprósus, pópulus ille [...]maculósus, priúsquàm [...]ico baptisarétur in flú[...], idem post sacraménta [...]smatis, máculis córporis [...]mentis ablútus, jam non [...]a, sed immaculáta virgo [...]pit esse sine ruga.

℟. Ait Jesus: In veritáte [...]co vobis, multæ víduæ [...]ant in diébus Elíæ in I'sraël, [...]m facta esset fames magna [...] omni terra. * Et ad nullam illárum missus est Elías nisi in Sarépta Sidóniæ ad mulíerem víduam. *Luc.* 4. *v.* 24. 25. 26. ℣. Surge, & vade in Sarépta Sidoniórum; præcépi enim ibi mulíeri víduæ ut pascat te. 3. *Reg.* 17. 9. * Et ad nullam. ℣. Glória. * Et ad nullam.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. a. Amen dico vobis, quia nemo prophéta accéptus est in pátria sua. *Luc.* 4. 24.

*Preces flexis genibus, pag.* 46.

Orémus. *Oratio.*

CO'rdibus nostris, quæsumus, Dómine, grátiam tuam benígnus infúnde: ut, sicut ab escis carnálibus abstinémus: ita sensus quoque nostros à nóxiis retrahámus excéssibus. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex Concílio Tridentíno.

*Anno* 1551. *Sess.* 14. *c.* 6.

SI quis negáverit Confessiónem sacramentálem vel institútam, vel ad salútem necessáriam esse jure divíno; aut díxerit, modum secrétè confiténdi soli Sacerdóti, quem Ecclésia Cathólica ab inítio semper observávit, & obsérvat, aliénum esse ab institutióne & mandáto Christi, & invéntum esse humánum; anathéma sit.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 5. a.

Ejecérunt Jesum, & duxérunt illum usque ad supercílium montis, ut præcipitárent eum; ipse autem tránsiens per médium illórum ibat. *Luc.* 4. *v.* 29. 30.

*Preces flexis genibus, pag.* 46.

Orémus. *Oratio.*

SUbvéniat nobis, Dómine, misericórdia tua: ut ab imminéntibus peccatórum nostrórum perículis, te mereámur protegénte éripi, te liberánte salvári. Per Dóminum.

## FERIA TERTIA.

De libro E'xodi.

### LECTIO I. *Cap.* 19. 1.

*Majestas Dei in monte Sinaï.*

MEnse tértio egressiónis I'sraël de terra Ægypti, in die hac venérunt in solitúdinem Sínaï. Nam profécti de Raphídim, & perveniéntes usque in desértum Sínaï, castrametáti sunt in eódem loco, ibíque I'sraël fixit tentória è regióne montis. Móyses autem ascéndit ad Deum, vocavítque eum Dóminus de monte, & ait: Hæc dices dómui Jacob, & annuntiábis fíliis I'sraël: Si audiéritis vocem meam, & custodiéritis pactum meum, éritis mihi in pecúlium in cunctis pópulis: mea est enim *omnis terra*, descendítque Móyses de monte ad pópulum, & sanctificavit eum. Cúmque lavíssent vestiménta sua, ait ad eos: Estóte paráti in diem tértium, & ne appropinquétis uxóribus vestris. Jamque advénerat tértius dies, & manè inclarúerat: & ecce cœpérunt audíri tonítrua, ac micáre fúlgura, & nubes densíssima operíre montem, clangórque búccinæ veheméntiùs perstrepébat: & tímuit pópulus qui erat in castris. Cúmque eduxísset eos Móyses in occúrsum Dei de loco castrórum, stetérunt ad radíces montis. Totus autem mons Sinaï fumábat: eò quòd descendísset Dóminus super eum in igne, & ascénderet fumus ex eo quasi de fornáce: erátque omnis mons terríbilis: & sonitus búccinæ paulátim crescébat in majus, & prolíxius tendebátur. Móyses loquebátur, & Deus respondébat ei. Descendítque Dóminus super montem Sinaï in ipso montis vértice, & vocávit Móysen in cacúmen ejus. Quò cùm ascendísset, dixit ad eum: Descénde & contestáre pópulum: Descendítque Móyses ad pópulum: & ómnia narrávit eis.

℟. Peccávimus, Dómine, *pag.* 187.

LECTIO

LECTIO II. *Cap.* 20. 1.

*Deus profert decem verba legis.*

LOcutúsque est Dóminus cunctos sermónes hos: Ego sum Dóminus Deus tuus, qui edúxi te de terra Ægýpti, de domo servitútis. Non habébis deos aliénos coram me. Non assúmes nomen Dómini Dei tui in vanum: nec enim insóntem habébit Dóminus eum, qui assúmpserit nomen Dómini Dei sui frustrà. Meménto ut diem Sabbati sanctífices. Sex diébus operáberis, & fácies ómnia ópera tua. Séptimo autem die Sábbatum Dómini Dei tui est: non fácies omne opus in eo, tu, & fílius tuus, & fília tua, servus tuus, & ancílla tua, juméntum tuum, & ádvena qui est intra portas tuas. Honóra patrem tuum & matrem tuam, ut sis longævus super terram, quam Dóminus Deus tuus dabit tibi. Non occídes. Non mœcháberis. Non furtum fácies. Non loquéris contra próximum tuum falsum testimónium. Non concupísces domum próximi tui, nec desiderábis uxórem ejus, non servum, non ancillam, non bovem, non ásinum, nec ómnia quæ illius sunt.

℟. Avertátur, *p.* 187.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO III. *Cap.* 18. 15.

*Correptio fraterna.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Si peccáverit in te frater tuus, vade, & córripe eum inter te, & ipsum solum. Et réliqua.

Homilía sancti Augustini Epíscopi.

*Serm.* 82. *Edit. Bened.*

DEbémus amándo corrípere, non nocéndi aviditáte, sed stúdio corrigéndi. Tales si fuérimus, óptimè fácimus quod hódiè admóniti sumus; (si peccáverit in te frater tuus, córripe illum inter te, & ipsum solum.) Quare illum córripis? Quia tu doles quòd peccáverit in te? Absit. Si amóre tui id facis, nihil facis. Si amóre illíus facis, óptimè facis. Dénique in ipsis verbis atténde, cujus amóre id fácere débeas; utrùm tui, an illíus. Si te audíerit, inquit, lucrátus es fratrem tuum. Ergo propter illum fac, ut lucréris illum. Sic faciéndo, lucráris: nisi fecísses, períerat. In secréto debémus corrípere, ne voléntes públicè argúere, prodámus hóminem. Nos vólumus corrípere & corrígere: quid si inimícus quærit audíre quod púniat? Ego prorsùs

nec prodo, nec négligo: corrípio in secréto: pono ante óculos Dei judícium: térreo cruéntam consciéntiam, persuádeo pœniténtiam. Hâc charitáte prǽditi esse debémus.

℟. Si peccáverit in te frater tuus, vade, & * Córripe eum inter te & ipsum solum: † Si te audíerit; lucrátus eris fratrem tuum. *Matth.* 18. 15. ℣. Qui córripit hóminem, grátiam pósteà invéniet apud eum. *Prov.* 28. 23. * Córripe. ℣. Glória. † Si te.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. *irr.* a. Ubi sunt duo vel tres congregáti in nómine meo, ibi sum in médio eórum, dicit Dóminus. *Matth.* 18. 20.

*Preces flexis genibus*, *p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

EXáudi nos, omnípotens, & miséricors Deus: & continéntiæ salutáris propítius nobis dona concéde. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex Concilio Tridentino.

*An.* 155. *Sess.* 14. *can.* 7.

SI quis dixerit, in sacraménto Pœniténtiæ ad remissiónem peccatórum necessárium non esse jure divíno, confitéri ómnia & síngula peccáta mortália, étiam occúlta, & quæ sunt contra duo última Decálogi præcépta, & circunstántias, quæ peccáti spéciem mutant; sed eam confessiónem tantùm esse útilem, ad erudiéndum & consolándum pœniténtem; aut demùm, non licére confitéri peccáta veniália; anathéma sit.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. c. Dómine, quóties dimíttam fratri meo? usque sépties? Non dico tibi usque sépties; sed usque septuágies sépties. *Matth.* 18. *v.* 21. 22.

*Preces flexis genibus*, *p.* 46

Orémus. *Oratio.*

TUâ nos, Dómine, protectióne defénde, & ab omni semper iniquitáte custódi. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit.

FERIA QUARTA

De libro E'xodi.

LECTIO I. *Cap.* 31. 18. *&* 3[2]

*Vitulus aureus.*

DEdit Dóminus Móysi, complétis sermónibus in monte Sinaï, duas tábulas testimónii lapídeas, scriptas dígito Dei. Videns autem pópulus quòd moram fáceret descendéndi de monte Móyses, congregátus advérsùs Aaron, dixit: Surge, fac nobis deos qui nos præcédant: Móysi enim huic viro, qui nos edúxit de terra Ægypti, ignorámus qu

accíderit. Dixítque ad eos Aaron : Tóllite ináures áureas de uxórum , filiorúmque & filiárum veſtrárum áuribus , & afférte ad me. Quas cùm ille accepíſſet , formávit ópere fuſório , & fecit ex eis vítulum conflátilem. Dixerúntque : Hi ſunt dii tui, I'ſraël, qui te eduxérunt de terra Ægypti. Surgentéſque manè, obtulérunt holocáuſta, & hóſtias pacíficas, & ſedit pópulus manducáre & bíbere, & ſurrexérunt lúdere. Locútus eſt autem Dóminus ad Móyſen, dicens : Vade , deſcénde : peccávit pópulus tuus, quem eduxíſti de terra Ægypti : dimítte me, ut iraſcátur furor meus contra eos , & déleam eos , faciámque te in gentem magnam. Móyſes autem orábat Dóminum ſuum, dicens : Cur, Dómine, iráſcitur furor tuus contra pópulum tuum, quem eduxíſti de terra Ægypti in fortitúdine magna, & in manu robúſta? Ne, quæſo, dicant Ægyptii: Callidè edúxit eos, ut interficeret in móntibus, & deléret è terra: quiéſcat ira tua, & eſto placábilis ſuper nequítia pópuli tui. Recordáre Abraham, I'ſaac, & I'ſraël servórum tuórum, quibus juráſti per temetípſum, dicens : Multiplicábo ſemen veſtrum ſicut ſtellas cœli : & univérſam terram hanc, de qua locútus ſum, dabo ſémini veſtro, & poſſidébitis eam ſemper. Placatúſque eſt Dóminus ne fáceret malum quod locútus fúerat advérsùs pópulum ſuum.

℟. Ad te, Dómine, *p.* 188.

Lectio II. *Cap.* 32. 15.

*Tabulæ fractæ : Vitulus contritus.*

REvérſus eſt Móyſes de monte, portans duas tábulas teſtimónii in manu ſua ſcriptas ex utráque parte, & factas ópere Dei : ſcriptúra quoque Dei erat ſculpta in tábulis. Cúmque appropinquáſſet ad caſtra, vidit vítulum, & choros : iratúſque valdè, projécit de manu tábulas, & confrégit eas ad radícem montis. Arripiénſque vítulum quem fécerant, combúſſit, & contrívit uſque ad púlverem, quem ſpárſit in aquam, & dedit ex eo potum fíliis I'ſraël. Videns ergo Móyſes pópulum quòd eſſet nudátus, (ſpoliáverat enim eum Aaron propter ignomíniam ſordis, & inter hoſtes nudum conſtitúerat) & ſtans in porta caſtrórum, ait : Si quis eſt Dómini, jungátur mihi. Congregatíque ſunt ad eum omnes filii Levi, quibus ait: Hæc dicit Dóminus Deus I'ſraël:

Ponat vir gládium super femur suum: ite, & redíte de porta usque ad portam per médium castrórum, & occídat unusquísque fratrem, & amícum, & próximum suum. Fecerúntque fílii Levi juxta sermónem Móysi, ceciderúntque in die illa quasi vìginti tria míllia hóminum. Reversúsque ad Dóminum Móyses ait: O'bsecro, peccávit pópulus iste peccátum máximum, fecerúntque sibi deos áureos: aut dimítte eis hanc noxam, aut si non facis, dele me de Libro tuo quem scripsísti. Cui respóndit Dóminus: Qui peccáverit mihi, delébo eum de Libro meo.

℟. Dómine, nunc, *p.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

Lectio III. *Cap.* 15. 1.

*Quid coinquinet hominem?*

IN illo témpore; Accessérunt ab Jerosólymis Scribæ & Pharisæi, dicéntes: Quare discípuli tui trangrediúntur traditiónem seniórum? Et réliqua.

Homilía sancti Hierónymi Presbyteri.

*Lib.* 2. *Comm. in Matth.*

MIra Pharisæórum Scribarúmque stultítia! Dei Fílium árguunt, quare hóminum traditiónes & præcépta non servet: Ipse autem respóndens ait illis: Quare & vos transgredímini mandátum Dei propter traditiónem vestram? Falsam calúmniam verâ responsióne confútat. Præcéperat enim Dóminus vel imbecillitátes, vel ætátes vel penúrias paréntum considerans, ut fílii honorárent étiam in vitæ necessáriis ministrándis, paréntes suos. Hanc providentíssimam Dei legem voléntes Scribæ & Pharisæi subvértere, ut impietátem sub nómine pietátis indúcerent, docuérunt péssimos fílios, u si quis ea, quæ paréntibu offeréndа sunt, Deo vov volúerit, qui verus est Pate oblátio Dei præponátur p réntum munéribus: vel ce ipsi paréntes quæ Deo co secráta cernébant, ne sac légii crimen incúrrerent, clinántes, egestáte confic bántur. Atque ita fiébat, oblátio liberórum sub oc sióne templi & Dei, in Sac dótum lucra céderet.

℟. Quare transgredími mandátum Dei propter t ditiónem vestram? * N Deus dixit: Honóra patr & matrem. *Matth.* 15. *v.* 3. ℣. Qui timet Dóminum, h nórat paréntes, & quasi d minis sérviet his. *Eccli.* 3. * Nam. ℣. Glória. * Nam.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 2. Cæcus si cæco ducátum pra

tet, ambo in fóveam cadunt, dicit Dóminus. *Matth.* 15. 14.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

PRæsta nobis, quæsumus, Dómine, ut salutáribus jejúniis erudíti, à nóxiis quoque vítiis abstinéntes, propitiatiónem tuam facílius impetrémus. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *c.* 69.

AB infírmis in mortis perículo constitútis pura inquirénda conféssio, non pœniténtia injungénda. Eis tamen est intimándum ut conteantur & dóleant de peccátis univérsis & síngulis, non tantùm terróre pœnæ, quam peccándo meruérunt, sed quia Deum patrem & Creatorem, & Redemptórem suum offéndere præsumpsérunt, acerbitátes ægritúdinis quasi flagélla pii Patris quámdiu ei placúerit, cum gáudio sustinéntes.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 7. a. Quæ procédunt de ore, de corde éxeunt, & hæc sunt quæ coinquinant hóminem. Non lotis autem mánibus manducáre, non coínquinat hóminem. *Matth.* 15. *v.* 18.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

IMplorántes, Dómine, misericórdiam tuam, fidéles propítius intuére; & qui, præter te, álium non novérunt, tuis semper benefíciis gloriéntur. Per Dóminum.

FERIA QUINTA.

De libro E'xodi.

LECTIO I. *Cap.* 34. 1.

*Novæ tabulæ.*

PRæcíde, (ait Dóminus Móysi,) tibi duas tábulas lapídeas instar priórum, & scribam super eas verba quæ habuérunt tábulæ, quas fregísti. Excídit ergo duas tábulas lapídeas, quales ánteà fúerant: & de nocte consúrgens ascéndit in montem Sinaï, sicut præcéperat ei Dóminus, portans secum tábulas. Cúmque descendísset Dóminus per nubem, stetit Móyses cum eo, invocans nomen Dómini. Quo transeúnte coram eo, ait: Dominátor Dómine Deus, misericors & clemens, pátiens & multæ miseratiónis, ac verax, qui custódis misericórdiam in míllia: qui aufers iniquitátem, & scélera, atque peccáta, nullúsque apud te per se ínnocens est. Qui reddis iniquitátem patrum fíliis ac nepótibus in tértiam & quartam progéniem: Festi-

núsque Móyses curvátus est pronus in terram, & adórans ait: Si invéni grátiam in conspéctu tuo, Dómine, óbsecro, ut gradiáris nobíscum (pópulus enim duræ cervícis est) & áuferas iniquitátes nostras atque peccáta, nosque possídeas. Respóndit Dóminus: Ego iníbo pactum vidéntibus cunctis, signa fáciam quæ nunquam visa sunt super terram, nec in ullis Géntibus: ut cernat pópulus iste in cujus es médio, opus Dómini terríbile quod factúrus sum. Obsérva cuncta quæ hódiè mando tibi: ego ipse ejíciam ante fáciem tuam Amorrhæum, & Chananæum, & Hethæum, Pherezæum quoque & Hevæum, & Jebusæum.

℞. Deus noster, *p.* 188.

LECTIO II. *Cap.* 33. 5.
*Tabernaculum fœderis.*

DIxítque Dóminus ad Móysen: Lóquere fíliis Israël: Pópulus duræ cervícis es, semel ascéndam in médio tui, & delébo te. Jam nunc depóne ornátum tuum, ut sciam quid fáciam tibi. Deposuérunt ergo fílii Israël ornátum suum à monte Horeb. Móyses quoque tollens tabernáculum, teténdit extra castra procul, vocavítque nomen ejus, Tabernáculum fœderis. Et omnis pópulus, qui habébat áliquam quæstiónem, egrediebátur ad Tabernáculum fœderis, extra castra. Cúmque egrederétur Móyses ad Tabernáculum, surgébat univérsa plebs, & stabat unusquísque in óstio papiliónis sui, aspiciebántque tergum Móysi, donec ingrederétur tentórium. Ingrésso autem illo Tabernáculum fœderis, descendébat colúmna nubis, & stabat ad óstium, loquebatúrque cum Móyse, cernéntibus univérsis quòd colúmna nubis staret ad óstium Tabernáculi. Stabántque ipsi, & adorábant per fores tabernaculórum suórum. Loquebátur autem Dóminus ad Móysen fácie ad fáciem, sicut solet loqui homo ad amícum suum. Cúmque ille reverterétur in castra, minister ejus Jósue fílius Nun, puer, non recedébat de Tabernáculo.

℞. Non in justificatiónibus nostris, *p.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 4. 38.
*Socrus Simonis & alii infirmi.*

IN illo témpore; Surgens Jesus de Synagóga introívit in domum Simónis: Socrus autem Simónis tenebátur magnis fébribus. Et réliqua.

Homilia sancti Joánnis Chrysóstomi.

*Hom. 28. in Matth.*

TEtigit Jesus manum ejus, nec fébrium tantùm ardóres extínxit, verùm étiam prístinas córporis vires recuperáre illicò fecit. Id certè medéndi artifícium fácere non potest. Nemo quippè ignórat quàm longo témpore, postquàm febres cessavérunt, opus sit ad prístinum robur recuperándum. Cuncta ígitur tunc simul facta sunt. Quod & in mari páriter evenísse perpéndere póssumus: nam & ibi non ventos solùm ac tempestátes sedávit; sed, quod inaudítum omnínò erat, fluctus étiam undásque statim compósuit. Non enim natúrâ duce, aut arte fiunt, quæ à Christo; sed simul ómnia finem suum assequúntur. Quod subostendit Evangelista, dicens: Surréxit & ministrábat illis. Id certè tam virtútem Christi supra hóminem significábat, quàm voluntátem mulíeris atque affectum erga Christum aperiébat.

℟. Omnes qui habébant infírmos váriis languóribus, ducébant illos ad Jesum. At ille * Síngulis manus impónens curábat eos. *Luc.* 4. 40. ℣. Neque herba, neque malágma sanávit eos, sed tuus, Dómine, sermo, qui sanat ómnia. *Sap.* 16. 12. * Síngulis. ℣. Glória. * Síngulis.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 8. g. Exíbant dæmónia à multis clamántia, & dicéntia: Quia tu es Fílius Dei; & íncrepans non sinébat ea loqui, Quia sciébant ipsum esse Christum. *Luc.* 4. 41.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui in remédium animárum jejúnii nobis medicínam indidísti; te súpplices invocámus, ut tibi sit acceptábile jejúnium nostrum, & nos à cibis abstinéntes, à peccátis absólvas. Per.

*CANON.*

Ex Concílio Tridentíno.

*An.* 1551. *Sess.* 14. *can.* 8.

SI quis díxerit, Confessiónem ómnium peccatórum qualem Ecclésia servat, esse impossíbilem, & traditiónem humánam, à piis aboléndam, aut ad eam non tenéri omnes & síngulos utriúsque sexûs Christi fidéles, juxta magni Concílii Lateranénsis constitutiónem, semel in anno, & ob id suadéndum esse Christi fidélibus, ut non confiteántur témpore Quadragésimæ; anathéma sit.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Egréssus Jesus ibat in desértum locum, & turbæ requirébant eum, & venérunt usque ad ipsum, & detinébant illum,

ne discéderet ab eis. *Luc.* 4. 42.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

CONsérva, quǽsumus, Dómine, pópulum tuum, & grátiæ tuæ in eo dona multíplica, ut ab ómnibus liber offénsis, & temporálibus non destituátur auxíliis, & sempitérnis gáudeat institútis. Per.

FERIA SEXTA.

LECTIO I. *Cap.* 25. 1.

De libro E'xodi.

*Arca fœderis. Panes propositionis.*

LOcutúsque est Dóminus ad Móysen, dicens: Lóquere fíliis I'sraël, ut tollant mihi primítias, ab omni hómine qui ófferet ultróneus, accipiétis eas. Arcam de lignis setim compíngite, cujus longitúdo hábeat duos & semis cúbitos: latitúdo, cúbitum & dimídium: altitúdo, cúbitum simíliter ac semíssem. Et deaurábis eam auro mundíssimo intùs & foris: faciésque suprà coronam áuream per circúitum: Ponésque in arca testificatiónem quam dabo tibi. Fácies & propitiatórium de auro mundíssimo: duos cúbitos & dimídium tenébit longitúdo ejus, & cúbitum ac semíssem latitúdo. Duos quoque Chérubim áureos & prodúctiles fácies, ex utráque parte Oráculi. Fácies & mensam de lignis setim, habéntem duos cúbitos longitúdinis, & in latitúdine cúbitum, & in altitúdine cúbitum ac semíssem. Et inaurábis eam auro puríssimo: faciésque illi lábium áureum per circúitum. Parábis & acetábula, ac phíalas, thuríbula, & cyathos, in quibus offerénda sunt libámina, ex auro puríssimo. Et pones super mensam panes propositiónis in conspéctu meo semper.

℟. Quia pátiens, *pag.* 188.

LECTIO III. *Cap.* 25. 31. & 30. 1.

*Candelabrum aureum: Altare thymiamatis.*

FA'cies & candelábrum dúctile de auro mundíssimo, hastíle ejus, & cálamos, scyphos, & sphærulas, ac lília, ex ipso procedéntia. Sex cálami egrediéntur de latéribus, tres ex uno látere, & tres ex áltero. Fácies & lucérnas septem, & pones eas super candelábrum, ut lúceant ex advérso: fácies quoque altáre ad adoléndum thymiáma, de lignis setim, habens cúbitum longitúdinis & álterum latitúdinis, id est quadrángulum, & duos cúbitos in altitúdine. Córnua ex ipso procédent. Vestiésque illud auro puríssimo, tàm craticulam ejus, quàm paríetes per cir-

ctitum, & córnua. Faciésque ei corónam auréolam per gyrum. Et adolébit incénsum super eo Aaron, suáve fragrans, manè. Quando compónet lucérnas, incéndet illud: & quando collocábit eas ad vésperum, uret thymiáma sempitérnum coram Dómino in generatiónes vestras. Non offerétis super eo thymiáma compositiónis altérius, nec oblatiónem, & víctimam, nec libábitis libámina. Et deprecábitur Aaron super córnua ejus semel per annum, in sánguine quod oblátum est pro peccáto, & placábit super eo in generatiónibus vestris. Sanctum sanctórum erit Dómino.

℟. In spíritu, *pag.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 4. 5.

*Christus cum Samaritana.*

In illo témpore; Venit Jesus in civitátem Samaríæ, quæ dícitur Sichar: erat autem ibi fons Jacob. Jesus ergo fatigátus ex itínere, sedébat sic supra fontem: venit múlier de Samaría hauríre aquam. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 15. *in Joan.*

Ille qui bíbere quærébat, fidem ipsíus mulíeris sitiébat. Petit bíbere, & promíttit bíbere. Eget, quasi acceptúrus, & áffluit, tanquam satiatúrus. Jesus dixit ei: Omnis qui bíberit ex aqua hac, sítiet íterùm: qui autem bíberit ex aqua quam ego dabo ei, fiet in eo fons aquæ saliéntis in vitam ætérnam. Quid est, qui bíberit ex aqua hac, sítiet íterùm? Aqua in púteo, volúptas séculi est in profunditáte tenebrósa; hinc eam háuriunt hómines hýdriâ cupiditátum. Cupiditátem quippe proni submíttunt, ut ad voluptátem haustam de profúndo pervéniant. Cùm pervénerit quisque ad voluptátem séculi hujus, cibus est, potus est: nunquid non íterùm sítiet? Ergo de aqua hac qui bíberit, íterùm, inquit, sítiet; si autem accéperit à me aquam, non sítiet in ætérnum. Satiábimur, inquit, in bonis domûs tuæ. De qua ergo aqua datúrus est, nisi de illa de qua dictum est. Apud te est fons vitæ? Nam quómodo sítient, qui inebriabúntur ab ubertáte domûs tuæ.

℟. Venit hora, & nunc est, quando veri adoratóres adorábunt Patrem in spíritu & veritáte, * Nam & Pater tales quærit qui adórent eum. *Joan.* 4. 23. ℣. Mundi estóte, auférte malum cogitatiónum vestrárum. *Isa.* 1. 16.

* Nam. ℣. Glória. * Nam.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. a. Spíritus est Deus, & eos, qui adórant eum, in spíritu & veritáte opórtet adoráre. *Joan.* 4. 24.

*Preces flexis genibus*, *p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

JEjúnia nostra, quæsumus, Dómine, benígno favóre proséquere: ut sicut ab aliméntis abstinémus in córpore, ita à vítiis jejunémus in mente. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex Concílio Rotomagénsi. *Anno* 1581. *de Curat. & aliorum Presb. Officiis*, *c.* 36.

QUóniam natúra & rátio judícii póstulat, nullíus moménti absolutiónem esse debére, quam Sacérdos in eum profert, in quem ordináriam, aut subdelegátam non habet jurisdictiónem: magnóperè verò ad Christiáni pópuli disciplínam pertínere sanctíssimis Pátribus visum est, ut atrocióra quædam & gravióra crímina non à quibúsvis, sed à summis duntáxat Sacerdótibus, absolveréntur: indè manárunt casus reserváti tam sedi Apostólicæ, quàm Epíscopis, quos nosse inferióres Sacerdótes opórtet.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 5. a. Multi credidérunt in Jesum Samaritanórum propter verbum mulíeris testimónium perhibéntis; & multò plures credidérunt in eum propter sermónem ejus. *Joan.* 4. *v.* 39. 41.

*Preces flexis genibus*, *p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus: ut, qui in tua protectióne confídimus, cuncta nobis adversántia, te adjuvánte, vincámus. Per.

*Preces flexis genibus*, *p.* 46.

SABBATO.

De libro Levítici.

LECTIO I. *Cap.* 9. 23. *&* 10. 1.

*Nadab & Abiû.*

INgréssi autem Móyses, & Aaron in Tabernáculum testimónii, & deínceps egréssi benedixérunt pópulo. Apparuítque glória Dómini omni multitúdini: & ecce egréssus ignis à Dómino, devorávit holocáustum, & ádipes qui erant super altáre. Quod cùm vidíssent turbæ, laudavérunt Dóminum, ruéntes in fácies suas. Arreptísque Nadab & Abiû filii Aaron thuríbulis, posuérunt ignem & incénsum désuper, offeréntes coram Dómino ignem aliénum: quod eis præcéptum non erat. Egressúsque ignis à Dómino devorávit eos, & mórtui sunt coram Dómino. Dixítque Móyses ad Aaron: Hoc est quod locútus est Dómi

mus: Sanctificábor in iis, qui appropínquant mihi; & in conspéctu omnis pópuli glorificábor. Quod áudiens tácuit Aaron. Vocátis autem Möyses Misaéle & Elísaphan fíliis O'ziel pátrui Aaron, ait ad eos: Ite & tóllite fratres vestros de conspéctu Sanctuárii, & asportáte extra castra. Conféstimque pergéntes, tulérunt eos, sicut jacébant, vestítos líneis túnicis, & ejecérunt foràs, ut sibi fúerat imperátum. Locutúsque est Móyses ad Aaron, & ad Eleázar & I'thamar fílios ejus: Cápita vestra nolíte nudáre, & vestiménta nolíte scíndere, ne fortè moriámini, & super omnem cœtum oriátur indignátio. Fratres vestri & omnis domus I'sraël plangant incéndium quod Dóminus suscitávit: vos autem non egrediémini fores tabernáculi, alióquin peribítis: óleum quippe sanctæ unctiónis est super vos. Qui fecérunt ómnia juxta præcéptum Móysi.

℟. Plorábunt, *p.* 188.

**Lectio II.** *Cap.* 24. 10.

*Blasphemus lapidatus.*

Ecce autem egréssus fílius mulíeris Israëlítidis, quem pepéreat de viro Ægýptio inter fílios I'sraël, jurgátus est in castris cum viro Israëlíta. Cúmque blasphemásset nomen, & maledixísset ei, addúctus est ad Móysen, (vocabátur autem mater ejus Sálumith, fília Dabri de tribu Dan.) Miserúntque eum in cárcerem, donec nossent quid jubéret Dóminus. Qui locútus est ad Móysen, dicens: Educ blasphémum extra castra, & ponant omnes qui audiérunt, manus suas super caput ejus, & lápidet eum pópulus univérsus. Et ad fílios I'sraël loquéris: Homo qui maledíxerit Deo suo, portábit peccátum suum: & qui blasphemáverit nomen Dómini, morte moriátur: lapídibus ópprimet eum omnis multitúdo, sive ille civis, sive peregrínus fúerit. Qui blasphemáverit nomen Dómini, morte moriátur. Æquum judícium sit inter vos, sive peregrínus, sive civis peccáverit: quia ego sum Dóminus Deus vester. Locutúsque est Móyses ad fílios I'sraël: & eduxérunt eum, qui blasphemáverat, extra castra, ac lapídibus oppressérunt. Fecerúntque fílii I'sraël, sicut præcéperat Dóminus Móysi.

℟. Inclínet *p.* 189.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

**Lectio III.** *Cap.* 8. 3.

*Mulier adultera.*

In illo témpore; Addúcunt ad Jesum Scribæ & Phari-

sæi, mulíerem in adultério deprehénsam, & dixérunt ei: Magíster, hæc múlier modò deprehénsa est in adultério: in lege autem Móyses mandávit nobis hujúsmodi lapidáre. Tu ergo quid dicis? Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract. 33. in Joan.*

INtelligámus, fratres, admirábilem mansuetúdinem in Dómino præeminuísse. Animadvertérunt eum nímiùm esse mitem, nímiùm esse mansuétum; de illo quippe fúerat antè prædíctum; Regna propter veritátem & mansuetúdinem, & justítiam. Ergo áttulit veritátem ut doctor, mansuetúdinem ut liberátor, justítiam ut cógnitor. Cùm loquerétur, véritas agnoscebátur: cùm advérsùs inimícos non moverétur, mansuetúdo laudabátur. Cùm ergo de veritáte & mansuetúdine ejus inimíci livóre & invídiâ torqueréntur, in justítia scándalum posuérunt. Dixérunt ergo apud semetípsos: Verax putátur, mansuétus vidétur; de justítia illi quærénda calúmnia est; offerámus ei mulíerem in adultério deprehénsam, dicámus quid de ista in lege præscríptum sit: si eam jússerit lapidári, mansuetúdinem non habébit; si eam dimítti censúerit, justítiam non tenébit; & hinc reum faciémus tanquam Legis prævaricatórem. Dicat quod dícere debet & mansuétus & justus. [Qui sine peccáto est vestrûm, prior in illam lápidem mittat.] Hæc vox justítiæ est. Puniátur peccátrix, sed non à peccatóribus; impleátur Lex, sed non à prævaricatóribus Legis. Hæc vox omnínò justítiæ est: quâ justítiâ illi tanquam trabáli telo percússi, sese inspiciéntes & reos inveniéntes, unus post unum omnes recessérunt. Relícti sunt duo, mísera, & misericórdia.

℞. Addúcunt ad Jesum Scribæ & Pharisæi mulíerem in adultério deprehénsam & dixérunt ei: Magíster hæc múlier modò deprehénsa est in adultério. Dixit [illegible]s Jesus: Qui sine peccáto est vestrûm, primus in illam lápidem mittat: * Audiéntes autem unus post unum exíbant, incipiéntes à senióribus. *Joan. 8. v. 3. 4. 7. 9.* ℣. Impii vénient in cogitatióne peccatórum tímidi, & tradúcent illos ex advérso iniquitátes ipsórum. *Sap. 4. 20.* * Audiéntes. ℣. Glória. * Audiéntes.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. a. Dixit Jesus mulíeri: Nemo te condemnávit? Nemo, Dómine. Nec ego te condemná-

bo: vade, & jam ámpliùs noli peccáre. *Joan.* 8. *v.* 10. 11.

*Preces flexis genibus, pag.* 46.

Orémus. *Oratio.*

OMnípotens sempitérne Deus, cleméntiam tuam supplíciter exorámus, ut, qui mala nostra semper prævenis miserándo, fácias nos tibi plácitos, & piis actiónibus, & jejúniis salúbribus expiándo. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *cap.* 83.

AD audiéndam conféssiónem, eminéntem locum sibi éligant Sacerdótes, ut commúniter possint vidéri, & in locis ábditis extra Ecclésiam nullus recípiat confessiónem, nisi in necessitáte.

AD VESPERAS.

*Capitulum.* 2. *Paral.* 7. *v.* 13. 14.

SI convérsus pópulus meus super quos invocátum est nomen meum, deprecátus me fúerit, & exquisíerit fáciem meam, & égerit pœniténtiam à viis suis péssimis; & ego exáudiam de cœlo, & propítius ero peccátis eórum.

℟. Qui jejúnat in peccátis suis, * Et iterùm éadem fáciens, quid próficit humiliándo se? † Oratiónem illíus quis exáudiet? *Eccli.* 34. 31. ℣. Mélius erat non cognóscere viam justítiæ, quàm post agnitiónem retrórsum convérti. 2. *Petr.* 2. 21. * Et íterum. ℣. Glória. † Oratiónem.

*Hymnus.* AUDI, benígne Cónditor, *p.* 177.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 6. f. Páuperi pórrige manum tuam, ut perficiátur propitiátio & benedíctio tua. *Eccli.* 7. 36.

Orémus. *Oratio.*

COncéde, quǽsumus, omnípotens Deus, ut, qui ex mérito nostræ actiónis affligimur, tuæ grátiæ consolatióne respirémus. Per Dóminum.

---

DOMINICA QUARTA QUADRAGESIMÆ.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitatorium, Hymnus, ut in Dominica I. Quadragesimæ, Antiphonæ & Psalmi de Psalterio.*

IN I. NOCTURNO.

Incipit liber Numerórum.

LECTIO I. *Cap.* 11. 1.

*Murmur plebeculæ pro Manna.*

INtéreà ortum est murmur pópuli, quasi doléntium pro labóre, contra Dóminum. Quod cùm audísset

Dóminus, irátus est. Et accénsus in eos ignis Dómini devorávit extrémam castrórum partem. Cúmque clamásset pópulus ad Móysen, orávit Móyses ad Dóminum, & absórptus est ignis. Vocavítque nomen loci illíus, Incénsio: eò quòd incénsus fuísset contra eos ignis Dómini. Vulgus quippe promíscuum, quod ascénderat cum eis, flagrávit desidério, sedens & flens, junctis sibi páriter fíliis I'sraël, & ait: Quis dabit nobis ad vescéndum carnes? Recordámur píscium quos comedebámus in Ægypto gratis: in mentem nobis véniunt cucúmeres, & pepónes, porríque & cepe, & állia. A'nima nostra árida est, nihil áliud respíciunt óculi nostri nisi Man.

℞. Pœniténtibus dedit Deus viam justítiæ, & destinávit illis sortem veritátis. * Convértere ad Dóminum & avértere ab injustítia tua. *Eccli.* 17. *v.* 20. 21. ℣. Esto vígilans, & confírma cétera quæ moritúra erant, & pœniténtiam age. *Apoc.* 3. *v.* 2. 3. * Convértere.

LECTIO II. *v.* 7.

*Descriptio Mannæ. Moysis querimonia.*

ERat autem Man quasi semen coriándri, colóris bdéllii. Circuibátque pópulus, & cólligens illud, frangébat molâ, sive terébat in mortário, coquens in olla, & fáciens ex eo tórtulas sapóris quasi panis oleáti. Cúmque descénderet nocte super castra ros, descendébat páriter & Man. Audívit ergo Móyses flentem pópulum per famílias, síngulos per óstia tentórii sui. Iratúsque est furor Dómini valdè: sed & Móysi intoleránda res visa est. Et ait ad Dóminum: Cur afflixísti servum tuum? quare non invénio grátiam coram te? & cur imposuísti pondus univérsi pópuli hujus super me? Nunquid ego concépi omnem hanc multitúdinem, vel génui eam, ut dicas mihi: Porta eos in sinu tuo, sicut portáre solet nutrix infántulum, & defer in terram, pro qua jurásti pátribus eórum? Unde mihi carnes ut dem tantæ multitúdini? Flent contra me, dicéntes: Da nobis carnes ut comedámus. Non possum solus sustinére omnem hunc pópulum, quia gravis est mihi.

℞. Plángite, *p.* 179.

LECTIO III. *v.* 31.

*Sepulchra concupiscentiæ.*

VEntus autem egrédiens à Dómino, arrépta trans mare coturníces détu-

sit, & demisit in castra itinere quantùm uno die cónfici potest, ex omni parte castrórum per circúitum, volabántque in áëre duóbus cúbitis altitúdine super terram. Surgens ergo pópulus toto die illo, & nocte, & die áltero, congregávit coturnicum, qui parùm, decem coros: & siccavérunt eas per gyrum castrórum. Adhuc carnes erant in déntibus eórum, nec defécerat hujuscémodi cibus: & ecce furor Dómini concitátus in pópulum, percússit eum plagâ magnâ nimis. Vocatúsque est ille locus, Sepúlchra concupiscéntiæ: ibi enim sepeliérunt pópulum qui desideráverat.

℟. Eleemósyna, p. 180.

## IN II. NOCTURNO.

De libro Sapiéntiæ.

Lectio IV. *Cap.* 15. 16. & 16. 1.

*Nullum Deum colentibus escam parat.*

NEmo sibi símilem homo póterit Deum fingere: Cùm enim sit mortális, mórtuum fingit mánibus iníquis. Mélior enim est ipse his quos colit, quia ipse quidem vixit, cùm esset mortális, illi autem nunquam, sed & animália misérrima colunt: effugérunt enim Dei laudem & benedictiónem ejus. Propter hæc, & per his símilia passi sunt digne torménta, & per multitúdinem bestiárum extermináti sunt. Pro quibus torméntis benè disposuísti pópulum tuum, quibus dedísti concupiscéntiam delectaménti sui novum sapórem, escam parans eis ortygométram. Ut illi quidem concupiscéntes escam propter ea, quæ illis osténsa & missa sunt, étiam à necessária concupiscéntia averteréntur. Hi autem in brevi inopes facti, novam gustavérunt escam.

℟. Si confiteámur, p. 181.

Lectio V. *Cap.* 19. 17.

*Elementa Deo serviunt ad bonorum solatium, & malorum afflictionem.*

IN se eleménta dùm convertúntur, sicut in órgano qualitátis sonus immutátur, & ómnia suum sonum custódiunt: undè æstimári ex ipso visu certò potest. Agréstia enim in aquática convertebántur: & quæcúnque erant natántia, in terram transíbant. Ignis in aqua valébat supra suam virtútem, & aqua extinguéntis natúræ obliviscebátur. Flammæ econtráriò corruptibílium animálium non vexavérunt carnes coambulántium, nec dissolvébant illam, quæ fácilè dissolvebátur, sicut glácies,

bonam escam. In ómnibus enim magnificásti pópulum tuum, Dómine, & honorásti, & non despexísti in omni témpore & in omni loco assístens eis.

℞. Audi, Dómine, p. 181.

LECTIO VI. Cap. 1. 10.

*A' murmuratione abstinendum.*

AUris zeli audit ómnia, & tumúltus murmuratiónum non abscondétur. Custodíte ergo vos à murmuratióne, quæ nihil prodest, & à detractióne párcite linguæ, quóniam sermo obscúrus in vácuum non ibit: os autem quod mentítur, occídit ánimam. Nolíte zeláre mortem in erróre vitæ vestræ, neque acquirátis perditiónem in opéribus mánuum vestrárum. Quóniam Deus mortem non fecit, nec lætátur in perditióne vivórum. Creávit enim ut essent ómnia: & sanábiles fecit natiónes orbis terrárum: & non est in illis medicaméntum extermínii, nec inferórum regnum in terra. Justítia enim perpétua est & immortális. I'mpii autem mánibus & verbis accersiérunt illam, & æstimántes illam amícam defluxérunt, & sponsiónes posuérunt ad illam: quóniam digni sunt qui sint ex parte illíus.

℞. Deus noster, p. 181.

IN III. NOCTURNO

De Epístola prima beáti Pau-li Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO VII. Cap. 10.

*Post esum Manna ingrati Judæi perierunt.*

NOlo vos ignoráre, fratres, quóniam Patres nostri omnes sub nube fuérunt, & omnes mare transiérunt, & omnes in Móyse baptizáti sunt in nube & in mari, & omnes eámdem escam spiritálem manducavérunt, & omnes eúmdem potum spiritálem bibérunt: [bibébant autem de spiritáli consequénte eos petra: petra autem erat Christus] sed non in plúribus eórum beneplácitum est Deo: nam prostráti sunt in desérto. Hæc autem in figúra facta sunt nostri, ut non simus concupiscéntes malórum, sicut & illi concupiérunt. Neque idolólatræ efficiámini, sicut quidam ex ipsis: quemádmodum scriptum est: Sedit pópulus manducáre & bíbere, & surrexérunt lúdere.

Non tardat, p. 182.

LECTIO VIII. v. 8.

*De tentatione humana & Dei auxilio.*

NEque fornicémur, sicut quidam ex ipsis fornicáti sunt, & cecidérunt u-

die viginti tria míllia. Neque tentémus Christum : sicut quidam eórum tentavérunt, & à serpéntibus periérunt. Neque murmuravéritis, sicut quidam eórum murmuravérunt, & periérunt ab exterminatóre. Hæc autem ómnia in figúra contingébant illis : scripta sunt autem ad correptiónem nostram, in quos fines seculórum devenérunt. Itaque qui se exístimat stare, vídeat ne cadat. Tentátio vos non apprehéndat nisi humána : fidélis autem Deus est, qui non patiétur vos tentári supra id, quod potéstis, sed fáciet étiam cum tentatióne provéntum ut possítis sustinére. Propter quod, charíssimi mihi, fúgite ab idolórum cultúra.

℟. Benedíctum est, *pag.* 183.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO IX. *Cap. 6. 1.*

*Quinque panes.*

IN illo témpore; A'biit Jesus trans mare Galilǽæ, quod est Tiberíadis. Cùm Jesus vidísset, quia multitúdo máxima venit ad eum, dixit ad Philíppum: Unde emémus panes, ut mandúcent hi? Dixit ei Andréas: Est puer unus hic, qui habet quinque panes hordeáceos, & duos pisces. Dixit ergo Jesus: Fácite hómines discúmbere. Discubuérunt ergo viri, número quasi quinque míllia. Accépit ergo Jesus panes: & cùm grátias egísset, distríbuit discumbéntibus: simíliter & ex píscibus quantùm volébant. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract. 24. in Joan.*

MAjus miráculum est gubernátio totíus mundi, quàm saturátio quinque míllium hóminum de quinque pánibus. Et tamen, hoc nemo mirátur: illud mirántur hómines, non quia majus est, sed quia rarum est. Quis enim & nunc pascit univérsum mundum, nisi ille qui de paucis granis ségetes creat? Fecit ergo quo modo Deus. Undè enim multíplicat de paucis granis ségetes, indè in mánibus suis multiplicávit quinque panes. Potéstas enim erat in mánibus Christi; panes autem illi quinque quasi sémina erant, non quidem terræ mandáta, sed ab eo qui terram fecit multiplicáta. Hoc ergo admótum est sénsibus, quo erigerétur mens, & exhíbitum óculis, ubi exercerétur intelléctus; ut invisíbilem Deum per visibília ópera mirarémur, & erécti ad fidem, & purgáti per fidem,

étiam ipsum invisibíliter vidére cuperémus, quem de rebus visibílibus invisíbilem nosçerémus.

℟. Cùm vidísset Jesus, quia multitúdo magna venit ad eum, dixit ad Philíppum: Undè emémus panes ut mandúcent hi. Dicit Andréas: Est puer unus hìc qui habet quinque panes hordeáceos, & duos pisces; * Sed hæc quid sunt inter tantos? *Joan.* 6. *v.* 5. 8. 9. ℣. Respóndit ei miníster: Quantum est hoc ut appónam? 4. *Reg.* 4. 43. * Sed. ℣. Glória. * Sed. *Repetitur* ℟. Cùm vidísset.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis & Antiphonæ de Dominica secunda Quadragesimæ, cum Psalmis de Dominica.*

*Capitulum. Galat.* 4. *v.* 22. 23.

FRatres, scriptum est: Quóniam A'braham duos fílios hábuit, unum de ancílla, & unum de líbera; sed qui de ancílla, secúndùm carnem natus est; qui autem de líbera, per repromissiónem; quæ sunt per allegoríam dicta.

*Hymnus*, JAM Christe sol justítiæ, *p.* 184. *Versic. ibid.*

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. d. A'biit Jesus trans mare Galilǽæ, & sequebátur eum multitúdo magna, quia vidébant signa quæ faciébat super his qui infirmabántur. *Joan.* 6. *v.* 1. 2.

Orémus. *Oratio.*

COncéde, quǽsumus, omnípotens Deus: ut qui ex mérito nostræ actiónis afflígimur, tuæ grátiæ consolatióne respirémus. Per Dóminum.

AD PRIMAM

*Ant.* 5. a. Discubuérunt viri número quasi quinque míllia. Accépit ergo Jesus panes, & cùm grátias egísset, distríbuit discumbéntibus; simíliter & ex píscibus quantùm volébant. *Joan.* 6. *v.* 10. 11.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *cap.* 83.

IN confessióne hábeat Sacérdos vultum húmilem, & óculos in terram, nec indiscrétè fáciem respíciat confiténtis, máximè mulíeris.

AD TERTIAM.

*Ant.* 2. d. Ut impléti sunt, dixit Jesus discípulis suis: Collígite quæ superavérunt fragménta, ne péreant. *Joan.* 6. 12.

*Capitulum. Eccli.* 42. *v.* 23. 24.

QUàm desiderabília ómnia ópera ejus, & tanquam scintílla, quæ est consideráre! O'mnia hæc vivunt, & manent in sǽculum;

& in omni necessitáte ómnia obáudiunt ei.

℟. *br.* In toto corde, *ut in Dominica I. p.* 145

℣. In corde, *ibid.*

### Ad Sextam.

*Ant.* 3. c. Collegérunt, & implevérunt duódecim cóphinos fragmentórum ex quinque pánibus hordeáceis, quæ superfuérunt his, qui manducáverant. *Joan.* 6. 13.

*Capitulum.* 4. *Reg.* 4. *v.* 43. 44.

DA pópulo ut cómedat: hæc enim dicit Dóminus: Cómedent, & supérerit. Pósuit itaque coram eis: qui comedérunt, & supérfuit juxta verbum Dómini.

℟. *br.* Miserére, *p.* 185.

℣. Convértere, *ibid.*

### Ad Nonam.

*Ant.* 1. a. Illi hómines cùm vidíssent quòd Jesus fécerat signum, dicébant: Quia hic est verè Prophéta qui ventúrus est in mundum. *Joan.* 6. 14.

*Capitulum. Dan.* 6. *v.* 26. 27.

IPse est Deus vivens, & ætérnus in sécula: & regnum ejus non dissipábitur, & potéstas ejus usque in ætérnum. Ipse liberátor atque salvátor fáciens signa, & mirabília in cœlo & in terra.

℟. *br.* Juxtà est, *p.* 185.

℣. Sacrifícium, *p.* 186.

### Ad Vesperas.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 1. d. A'biit Jesus trans mare Galilææ, & sequebátur eum multitúdo magna, quia vidébant signa quæ faciébat super his qui infirmabántur. *Joan.* 6. *v.* 1. 2.

*Ant.* 5. a. Discubuérunt viri, número quasi quinque míllia. Accépit ergo Jesus panes, & cùm grátias egísset, distríbuit discumbéntibus, simíliter & ex píscibus quantùm volébant. *Ibid. v.* 10. 11.

*Ant.* 2. d. Ut impléti sunt, dixit Jesus discípulis suis: Collígite quæ superavérunt fragménta, ne péreant. *Ibid.* 12.

*Ant.* 3. c. Collegérunt, & implevérunt duódecim cóphinos fragmentórum ex quinque pánibus hordeáceis, quæ superfuérunt his, qui manducáverant. *Ibid.* 13.

*Ant.* 1. a. Illi hómines cùm vidíssent quòd Jesus fécerat signum, dicébant: Quia hic est verè Prophéta, qui ventúrus est in mundum. *Ibid.* 14.

*Capitulum. Ezech.* 16. *v.* 62. 63.

SUscitábo ego pactum meum tecum: & scies quia ego Dóminus, ut recordéris & confundáris, & non sit tibi ultrà aperíre os

præ confusióne tua, cùm placátus tibi fúero in ómnibus quæ fecísti, ait Dóminus Deus.

℟. Educ, p. 237.

*Hymnus*, Audi, benígne Cónditor, *pag.* 177.

℣. Angelis, p. 186.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 7. a. Jesus cùm cognovísset, quia ventúri essent ut ráperent eum, & fácerent eum regem, fugit íterùm in montem ipse solus. *Joan.* 6. 15.

*Oratio.* Concéde, *ut supra ad Laudes*, p. 258.

---

FERIA SECUNDA.

De libro Numerórum.

LECTIO I. *Cap.* 13. 2.

*Duodecim exploratores.*

IN desérto Pharan locútus est Dóminus ad Móysen, dicens: Mitte viros, qui consíderent terram Chánaan, quam datúrus sum fíliis Israël, síngulos de síngulis tríbubus, ex princípibus. Pergentésque usque ad torréntem Botri, abscidérunt pálmitem cum uva sua, quem portavérunt in vecte duo viri. De malis quoque granátis & de ficis loci illíus tulérunt. Reversíque exploratóres terræ post quadragínta dies, venérunt ad Móysen & Aaron; & ad omnem cœtum filiórum Israël in desértum Pharan, quod est in Cades. Locutíque eis & omni multitúdini, ostendérunt fructus terræ; & narravérunt, dicéntes: Vénimus in terram, ad quam misísti nos, quæ revérà fluit lacte & melle, ut ex his frúctibus cognósci potest: sed cultóres fortíssimos habet, & urbes grandes atque murátas. Stirpem Enac vídimus ibi. Ibi vídimus monstra quædam filiórum Enac de génere gigánteo, quibus comparáti, quasi locústæ videbámur.

℟. Pósui fáciem meam, p. 187.

LECTIO II. *Cap.* 14. 6.

*Josue & Caleb.*

AT verò Jósue fílius Nun & Caleb fílius Jéphone, qui & ipsi lustráverant terram, scidérunt vestiménta sua, & ad omnem multitúdinem filiórum Israël locúti sunt: Terra, quam circuívimus, valdè bona est; si propítius fúerit Dóminus, indúcet nos in eam, & tradet humum lacte & melle manántem. Nolíte rebélles esse contra Dóminum: neque timeátis pópulum terræ hujus, quia sicut panem ita eos póssumus devoráre. Recéssit ab eis omne præsídium: Dóminus nobíscum est, nolíte metúere. Cúmque clamáret omnis multitúdo, & lapídibus eos vellet opprímere, appáruit

glória Dómini super tectum fœderis cunctis filiis Israël. Et dixit Dóminus ad Móysen: Usquequò détrahet mihi pópulus iste? Quoúsquè non credent mihi, in ómnibus signis quæ feci coram eis? Dic ergo eis: Vivo ego, ait Dóminus: sicut locúti estis, audiénte me, sic fáciam vobis. In solitúdine hac jacébunt cadávera vestra. Omnes qui numeráti estis à viginti annis & suprà, & murmurástis contra me, non intrábitis terram, super quam levávi manum meam ut habitáre vos fácerem, præter Caleb filium Jéphone, & Jósue filium Nun. Párvulos autem vestros, de quibus dixístis quòd prædæ hóstibus forent, introdúcam: ut vídeant terram quæ vobis displícuit.

℟. Justus es, Dómine, *pag.* 187.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 2. 13.

*Vendentes è templo ejecti.*

In illo témpore; Propè erat Pascha Judæórum, & ascéndit Jesus Jerosólymam; & invénit in templo vendéntes boves, & oves & colúmbas, & numulários sedéntes. Et cùm fecísset quasi flagéllum de funículis, omnes ejécit de templo, oves quoque & boves; & numulariórum effúdit æs, & mensas subvértit. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 10. *in Joan.*

Quid audívimus, fratres? Ecce templum illud figúra adhuc erat, & ejécit indè Dóminus omnes qui sua quærébant, qui ad núndinas vénerant. Et quæ ibi vendébant illi? Quæ opus habébant hómines in sacrifíciis illíus témporis. Novit enim Cháritas vestra, quòd sacrifícia illi pópulo pro ejus carnalitáte, & corde adhuc lapídeo, tália data sunt, quibus teneretur, ne in idóla deflúeret: & immolábant ibi sacrifícia, boves, oves & colúmbas. Nostis, quia legístis. Non ergo magnum peccátum, si hoc vendébant in templo, quod emebátur ut offerrétur in templo: & tamen ejécit indè illos. Quid si ibi ebriósos invenîret, quid fáceret Dóminus? Si vendéntes ea quæ lícita sunt, & contra justítiam non sunt (quæ enim honéstè emúntur, non illícitè vendúntur) éxpulit tamen, & non est passus domum oratiónis fíeri domum negotiatiónis.

℟. Ascéndit Jesus Jerosólymam & invénit in templo vendéntes boves, & oves, & colúmbas, & numulários se-

déntes, * Et cùm fecísset quasi flagéllum de funículis, omnes ejécit de templo. *Joan.* 2. *v.* 13. 14. 15. ℣. Nunquid ergo spelúnca latrónum facta est domus ista, in qua invocátum est nomen meum in óculis vestris? *Jer.* 7. 11. * Et cùm. ℣. Glória. * Et cùm.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 2. d. His qui colúmbas vendébant, dixit Jesus: Auférte ista hinc, & nolíte fácere domum Patris mei, domum negotiatiónis. *Joan.* 2. 16.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut observatiónes sacras ánnuâ devotióne recoléntes, & córpore tibi placeámus, & mente. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *can.* 84.

IN confessióne sibi cáveant Sacerdótes ne inquírant nómina personárum cum quibus peccáverint confiténtes, sed circunstántias tantùm quæ possunt aggraváre peccátum.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Cùm esset Jesus Jerosólymis in Pascha in die festo, multi credidérunt in nómine ejus, vidéntes signa ejus quæ faciébat. *Joan.* 2. 23.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

DEprecatiónem nostram, quæsumus Dómine, benígnus exáudi: & quibus supplicándi præstas affectum, tríbue defensiónis auxílium. Per Dóminum.

FERIA TERTIA.

De libro Numerórum.

LECTIO I. *Cap.* 16. 1.

*Core, Dathan, & Abiron.*

ECce autem Core fílius I'saar, fílii Caath, fílii Levi, & Dathan atque Abíron fílii E'liab, Hon quoque fílius Pheleth de fíliis Ruben, surrexérunt contra Móysen, aliíque filiórum I'sraël ducénti quinquagínta viri próceres Synagógæ, & qui témpore Concílii per nómina vocabántur. Cúmque stetíssent advérsùm Móysen & Aaron, dixérunt: Sufficiat vobis, quia omnis multitúdo sanctórum est, & in ipsis est Dóminus: cur elevámini super pópulum Dómini? Quod cùm audísset Móyses, cécidit pronus in fáciem. Dixítque ad Core: Tu & omnis congregátio tua state seórsùm coram Dómino, & Aaron die crástino separátim. Tóllite sínguli thuríbula vestra, & pónite super ea incénsum, offeréntes Dómino ducénti

quinquaginta thuribula: Aaron quoque téneat thuribulum suum. Quod cúm fecissent, stántibus Móyse & Aaron, & coacervássent advérsùm eos omnem multitúdinem ad óstium tabernáculi, appáruit cunctis glória Dómini.

℟. Peccávimus, *p.* 187.

LECTIO II. *v.* 20.

*Conjurati absorpti.*

LOcutúsque Dóminus ad Móysen & Aaron, ait: Separámini de médio congregatiónis hujus, ut eos repéntè dispérdam. Surrexítque Móyses, & ábiit ad Dathan & Abíron: & sequéntibus eum senióribus I'sraël, dixit ad turbam: Recédite à tabernáculis hóminum impiórum, & nolíte tángere quæ ad eos pértinent, ne involvámini in peccátis eorum. Conféstim itaque ut cessávit loqui, dirupta est terra sub pédibus eorum, & apériens os suum devorávit illos cum tabernáculis suis, & univérsa substántia eórum. Descenderúntque vivi in inférnum opérti humo, & periérunt de médio multitúdinis. At verò omnis I'sraël, qui stabat per gyrum fugit ad clamórem pereúntium, dicens: Ne fortè & nos terra deglútiat. Sed & ignis egréssus à Dómino, interfécit ducéntos quinquaginta viros, qui offerébant incénsum.

℟. Avertátur, *pag.* 187.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 7. 14.

*Christus palàm docens in templo.*

IN illo témpore; Jam die festo mediánte ascéndit Jesus in templum, & docébat. Et mirabántur Judæi dicéntes: Quómodo hic litteras scit, cùm non didícerit? Respóndit eis Jesus & dixit: Mea doctrina non est mea, sed ejus qui misit me. Si quis volúerit voluntátem ejus fácere: cognóscet de doctrína, utrùm ex Deo sit, an ego à meípso loquar. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 29. *in Joan.*

CU'm docéret Jesus, mirabántur Judæi. Omnes quidem, quantùm árbitror, mirabántur; sed non omnes convertebántur. Et undè admirátio? Quia multi nóverant undè natus, quemádmodùm fúerit educátus. Nunquàm eum víderant discéntem litteras; audiébant autem eum de lege disputántem, legis testimónia proferéntem, quæ nemo posset proférre, nemo légere, nisi litteras di-

dicisset. Et ideò mirabántur. Quid ergo Dóminus respóndit eis admirántibus, quómodò sciret lítteras quas non didícerat? Mea doctrína, inquit, non est mea, sed ejus qui misit me. Si non tua, quómodò tua? Si tua, quómodò non tua? Si ergo diligéntiùs intueámur quod in exórdio dicit sanctus Evangelísta. In princípio erat Verbum, & Verbum erat apud Deum, & Deus erat Verbum; indè pendet hujus solútio quæstiónis. Quæ est doctrína Patris, nisi verbum Patris? Ipse ergo Christus doctrína Patris, si verbum Patris. Si quis volúerit voluntátem ejus fácere, cognóscet de doctrína Patris. Quis néſciat hoc esse, fácere voluntátem Dei, operári opus ejus, id est quod illi placet.

℟. Dixit Jesus Judǽis: Mea doctrína non est mea, sed ejus qui misit me. * Si quis volúerit voluntátem ejus fácere, cognóscet de doctrína, utrùm ex Deo sit, an ego à meipso loquar. *Joan.* 7. *v.* 16. 17. ℣. Omnis sapiéntia à Dómino Deo est, & præbuit illam diligéntibus se. *Eccli.* 1. *v.* 1. 10. * Si quis. ℣. Glória. * Si quis.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. a. Clamábat Jesus in templo docens, & dicens: Et me scitis, & undè sim scitis, & à meipso non veni. *Joan.* 7. 28.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

SAcræ nobis, quǽsumus, Dómine, observatiónis jejúnia, & piæ conversatiónis augméntum, & tuæ propitiatiónis contínuum præstent auxílium. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *can.* 86.

PRæcípimus quòd Sacerdótes stúdeant inquírere diligénter in confessióne, & peccáta usitáta & circumstántias usitátas peccatórum, máximè gulæ, luxúriæ, & cupiditátis quibus genus humánum frequéntiùs corrúmpitur.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. B. Quærébant Judǽi Jesum apprehéndere: & nemo misit in illum manus, quia nondum vénerat hora ejus. De turba autem multi credidérunt in eum. *Joan.* 7. *v.* 30. 31.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

MIserére, Dómine, pópulo tuo: & contínuis tribulatiónibus laborántem, propítius respiráre concéde. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

FERIA QUARTA.

De libro Numerórum.

LECTIO I. *Cap.* 20. 2.

*Aqua contradictionis : mors Aaron.*

CUm indigéret aquâ pópulus, convenérunt advérsùm Móysen & Aaron : ingressíſque Móyses & Aaron, dimíssâ multitúdine, tabernáculum fœ́deris, corruérunt proni in terram, clamaverúntque ad Dóminum, atque dixérunt : Dómine Deus, audi clamórem hujus pópuli, & áperi eis thesáurum tuum fontem aquæ vivæ, ut satiáti, cesset murmurátio eórum. Et appáruit glória Dómini super eos. Locutúsque est Dóminus ad Móysen, dicens : Tolle virgam & cóngrega pópulum, tu & Aaron frater tuus, & loquímini ad petram coram eis, & illa dabit aquas. Cúmque edúxeris aquam de petra, bibet omnis multitúdo & juménta ejus ? Tulit ígitur Móyses virgam, quæ erat in conspéctu Dómini, sicut præcéperat eis. Cúmque elevásset Móyses manum, percútiens virgâ bis sílicem, egréssæ sunt aquæ largíssimæ, ita ut pópulus bíberet & juménta. Hæc est aqua contradictiónis, ubi jurgáti sunt fílii Israël. Locútus est Dóminus ad Móysen : Tolle Aaron & fílium ejus cum eo, & duces eos in montem Hor. Cúmque nudáveris patrem veste suâ, índues eâ Eleázarum fílium ejus : Aaron colligétur & moriétur ibi. Fecit Móyses ut præcéperat Dóminus : & ascendérunt in montem Hor coram omni multitúdine. Cúmque Aaron spoliásset véstibus suis, índuit eis Eleázarum fílium ejus. Illo mórtuo in montis supercílio, descéndit cum Eleázaro. Omnis autem multitúdo videns occubuísse Aaron, flevit super eo trigínta diébus per cunctas famílias suas.

℞. Ad te, Dómine, *p.* 188.

LECTIO II. *Cap.* 21. 4.

*Serpens æneus : cædes Sehon & Og.*

PRofécti sunt autem & de monte Hor, per viam quæ ducit ad mare Rubrum, ut circumírent terram Edom. Et tædére cœpit pópulum itíneris ac labóris : locutúsque contra Deum & Móysen, ait : Cur eduxísti nos de Ægypto, ut morerémur in solitúdine ? Deest panis, non sunt aquæ : ánima nostra jam náuseat super cibo isto levíssimo. Quámobrem misit Dóminus in pópulum ignítos serpéntes, ad quorum plagas & mortes plurimórum, venérunt ad Móysen, atque dixérunt : Peccávimus, quia locúti sumus contra Dómi-

num & te: ora ut tollat à nobis serpéntes. Oravítque Móyses pro pópulo, & locútus est Dóminus ad eum: Fac serpéntem æneum, & pone eum pro signo: qui percússus aspéxerit eum, vivet. Fecit ergo Móyses serpéntem æneum, & pósuit eum pro signo: quem cùm percússi aspícerent, sanabántur. Misit autem Israël núntios ad Sehon regem Amorrhæórum, dicens: Obsecro ut transíre mihi líceat per terram tuam: non declinábimus in agros & víneas, non bibémus aquas ex púteis, viâ régiâ gradiémur, donec transeámus términos tuos. Qui concédere nóluit ut transíret per fines suos, quin pótiùs exércitu congregáto, egréssus est óbviàm in desértum, & venit in Jasa, pugnavítque contra eum. A quo percússus est in ore gládii, & posséssa est terra ejus ab Arnon usque Jeboc, & fílios Ammon: quia forti præsídio tenebántur término Ammonitárum. Verterúntque se & ascendérunt per viam Basan, & occúrrit eis Og rex Basan cum omni pópulo suo pugnatúrus in Edraï. Dixítque Dóminus ad Móysen: Ne tímeas eum, quia in manu tua trádidi illum, & omnem pópulum ac terram ejus: faciésque illi sicut fecísti Sehon regi Amorrhæórum habitatóri Hésebon. Percussérunt ígitur & hunc cum fíliis suis, universúmque pópulum ejus usque ad interneciónem, & possedérunt terram illíus.

℟. Dómine nunc, *p.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 9. 1.

*Cæcus natus.*

IN illo témpore: Prætériens Jesus vidit hóminem cæcum à nativitáte, & interrogavérunt eum discípuli ejus: Rabbi, quis peccávit, hic aut paréntes ejus, ut cæcus nascerétur? Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 44. *in Joan.*

GEnus humánum est ille cæcus. Hæc enim cæcitas cóntigit in primo hómine per peccátum, de quo omnes oríginem dúximus, non solùm mortis sed étiam iniquitátis. Si enim cæcitas est infidélitas, & illuminátio fides; quem fidélem, quando venit Christus, invénit? Quandóquidem Apóstolus natus in gente Prophetárum, dicit: Fúimus & nos aliquándo natúrâ fílii iræ, sicut & céteri. Si fílii iræ, fílii vindíctæ, fílii pœnæ, fílii gehénnæ. Quómodò natúrâ, nisi quia peccánte primo hómine, vítium pro natúra inolévit? Si vítium

pro natúra inolévit, secúndùm mentem omnis homo cæcus natus est. Si enim videt, non opus habet ductóre: si opus habet ductóre & illuminatóre, cæcus ergo est. Dóminus éxpuit in terram, de salíva sua lutum fecit, & inúnxit óculos cæci. Inúnctus erat, & nondum vidébat. Misit illum ad piscínam quæ vocátur Siloë. Hoc catechúmeni áudiunt, sed non eis sufficit ad quod inúncti sunt, festinent ad lavácrum si lumen inquírunt.

℟. E'xpuit Jesus in terram, fecit lutum, linívit super óculos ejus, & dixit ei: * Vade lava. † A'biit, & lavit, & venit videns. *Joan. 9. v. 7.* ℣. Hæc dicit Dóminus Deus: Ducam cæcos in viam quam nésciunt; ponam ténebras coram eis in lucem. *Isa. 42. v. 5. 16.* * Vade. ℣. Glória. † A'biit.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. a. A sæculo non est audítum quia quis apéruit óculos cæci nati. Nisi esset hic à Deo, non póterat fácere quidquam. *Joan. 9. v. 32. 33.*

*Preces flexis genibus, p. 46.*

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui & justis prǽmia meritórum, & peccatóribus per jejúnium véniam præbes: miserére supplícibus tuis: ut reátûs nostri conféssio, indulgéntiam percípere váleat delictórum. Per Dóminum.

CANON.

Ex Concilio Rotomagénsi. *Anno* 1581.

*De Sacramentis. Canone* 1.

PRohibémus Curátis, ac quibuscúnque Presbýteris, ne ullum sacraméntum cónferant, ac néquidem confessiónes áudiant, nisi in superpellíceo, & hábitu Sacerdotáli, sed máximè in consciéntiæ puritáte.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Cùm invenísset Jesus eum qui cæcus fúerat dixit ei: Tu credis in Fílium Dei? Respóndit ille, & dixit: Quis est, Dómine, ut credam in eum? Dixit Jesus: Et qui lóquitur tecum, ipse est. At ille ait: Credo, Dómine. Et prócidens adorávit eum. *Joan. 9. v. 35. 36. 37. 38.*

*Preces flexis genibus, p. 46.*

Orémus. *Oratio.*

BEnedíctio, quǽsumus, Dómine, in tuos fámulos copiósa descéndat, & quam subjéctis córdibus éxpetunt, lárgiter consequántur. Per Dóminum.

FERIA QUINTA.

De libro Numerórum.

LECTIO I. *Cap.* 22. 2.

*Balaam ab asina correptus.*

BAlac fílius Sephor erat eo témpore rex in Moab.

Misit ergo núntios ad Bálaam filium Beor ariolum, qui habitábat super flumen terræ filiórum Ammon, ut vocárent eum & dícerent: Ecce egréssus est pópulus ex Ægypto, qui opéruit superfíciem terræ, sedens contra me. Veni ígitur, & máledic pópulo huic, quia fórtior me est: si quo modo possim percútere & ejícere eum de terra mea. Novi enim quòd benedíctus sit cui benedíxeris, & maledíctus in quem maledícta congésseris. Surréxit Bálaam manè, & stratâ ásinâ suâ proféctus est cum eis. Et irátus est Deus. Stetítque A'ngelus Dómini in via contra Bálaam, qui insidébat ásinæ, & duos púeros habébat secum. Cernens ásina A'ngelum stantem in via, evagináto gládio, cóncidit sub pédibus sedéntis, qui irátus vehementiùs cædébat fuste látera ejus. Aperuítque Dóminus os ásinæ, & locúta est: Quid feci tibi? cur pércutis me? ecce jam tértiò? Prótinùs apéruit Dóminus oculos Bálaam, & vidit A'ngelum stantem in via evagináto gládio, adoravítque eum pronus in terram. Cui A'ngelus: Cur, inquit, tértiò vérberas ásinam tuam? Ego veni ut adversárer tibi, quia pervérsa est via tua, mihíque contrária. Dixit Bálaam: Peccávi, néſciens quòd tu stares contra me: & nunc si displicet tibi ut vadam, revértar. Ait A'ngelus: Vade cum istis, & cave, ne áliud quàm præcépero tibi, loquáris. Ivit ígitur cum princípibus.

℟. Deus noster, *pag.* 188.

LECTIO II. *Cap.* 24. 2.

*Balaam tertiò benedicit pópulo Iſraël.*

BA'laam élevans óculos, vidit I'sraël in tentóriis commorántem per tribus suas, & irruénte in se Spíritu Dei, assúmptâ parábolâ, ait: I'sraël áccubans dormívit ut leo, & quasi leæna quam suscitáre nullus audébit. Qui benedíxerit tibi, erit & ipse benedíctus: qui maledíxerit, in maledictióne reputábitur. Iratúsque Balac contra Bálaam complósis manibus, ait: Ad maledicéndum inimícis meis vocávi te, quibus e contráriò tértiò benedixísti: revértere ad locum tuum. Decréveram quidem magníficè honoráre te, sed Dóminus privávit te honóre dispósito. Surrexítque Bálaam, & revérsus est in locum suum: Balac quoque viâ, quâ vénerat, rédiit.

℟. Non in justificatiónibus, *pag.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap. 7. 11.*

*Filius viduæ suscitatus.*

IN illo témpore; Ibat Jesus in civitátem quæ vocátur Naïm. Cùm autem appropinquáret portæ civitátis, ecce defúnctus efferebátur filius únicus matris suæ. Et réliqua.

Homilía sancti Ambrósii Epíscopi.

*Lib. 5. in Luc.*

QUasi in quodam féretro jacémus exánimes, cùm ignis immódicæ cupiditátis exǽstuat, vel frígidus humor exúndat, vel pigrâ quadam córporis habitúdine vigor hebetátur animórum, ... concrétâ noster spíritus ...e, puræ lucis vácuus men... alit. Hi sunt nostri fú... portitóres. Sed quam... supréma mortis spem vi... omnis aboléverint, & tú... próxima córpora já... defunctórum, verbo ... Dei jam moritura re... cadávera, vox re..., rédditur filius matri, re...cátur à túmulo, erípitur sepúlchro. Quis iste est túmulus tuus, nisi mali mores? Túmulus tuus perfídia est, sepúlchrum tuum guttur est; sepúlchrum enim patens est guttur eórum, unde verba mórtua proferúntur. Ab hoc sepúlchro te líberat Christus: ab hoc túmulo resúrges, si áudias verbum Dei. Et si grave peccátum est, quod pœniténtiæ tuæ lácrymis ipse laváre non possis, fleat pro te mater Ecclésia, quæ pro síngulis tanquam pro únicis fíliis vídua mater intérvenit.

℟. Ecce defúnctus efferebátur fílius únicus matris suæ, & hæc vídua erat: quam cùm vidísset Dóminus, * Misericórdiâ motus super eam, dixit illi: Noli flere. *Luc. 7. v. 12. 13.* ℣. Non despíciet Dóminus víduam, si effúndat loquélam gémitûs. *Eccli. 35. 17.* * Misericórdiâ. ℣. Glória. * Misericórdiâ.

*Ad* Benedíctus, *Ant. 6. f.* Accéssit Jesus, & tétigit lóculum, & resédit qui erat mórtuus, & cœpit loqui, & dedit illum matri suæ. *Luc. 7. v. 14. 15.*

*Preces flexis genibus, pag. 46.*

Orémus. *Oratio.*

PRæsta, quǽsumus, omnípotens Deus: ut quos jejúnia votiva castígant, ipsa quoque devótio sancta lætíficet; ut terrénis afféctibus mitigátis, facíliùs cœléstia capiámus. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum: Qui tecum vivit & re-

gnat in unitate Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum. Amen.

## CANON.

Ex statútis antiquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *can.* 83.

SAcérdos in confessióne patiénter áudiat quæ díxerit cónfitens, in spíritu lenitátis, & ei pro posse suo plúribus modis persuádeat, ut confiteátur íntegrè, undè dicat ei verè áliter non valére.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. a. Accépit autem omnes timor, & magnificábant Deum, dicéntes: quia Prophéta magnus surréxit in nobis, & quia Deus visitávit plebem suam. *Luc.* 7. 16.

*Preces flexis genibus*, *p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

PO'puli tui Deus institútor, & rector, peccáta, quibus impugnátur, expélle: ut semper tibi plácitus, & tuo munímine sit secúrus. Per Dóminum.

## FERIA SEXTA.

De libro Numerórum.

LECTIO I. *Cap.* 25. 1.

*Zelus Phinees.*

MOrabátur autem eo témpore I'sraël in Settim & fornicátus est pópul cum filiábus Moab, quæ vocavérunt eos ad sacrifíci sua. At illi comedérunt, & adoravérunt deos eárum, initiatúsque est I'sraël Beélphegor: & irátus Dóminus ait ad Móysen: Tolle cuntos príncipes pópuli, & suspénde eos contra solem patíbulis: ut avertátur fu meus ab I'sraël. Dixítq Móysès ad Júdices I'sra Occídat unusquísque pró mos suos, qui initiáti su Beélphegor. Et ecce un de filiis I'sraël intrávit co frátribus suis ad scortum M dianítidem, vidénte Móy & omni turbâ filiórum I'sr qui flebant ante fores Tab náculi. Quòd cùm vidi Phínees fílius Eleázari Aaron sacerdótis, surréxi médio multitúdinis, & répto pugióne, ingréssus post virum Israelítem in lu nar, & perfódit ambos si virum scilicet & mulíere in locis genitálibus. Cessa que plaga à filiis I'sraël: occísi sunt vigintiquátu míllia hóminum. Dixítq Dóminus ad Móysen: P nees fílius Eleázari filii Aa sacerdótis avértit iram me à filiis I'sraël: quia zelo m commótus est contra eos, non ipse delérem I'sraël zelo meo. Idcircò lóquere

am: Ecce do ei pacem fœ-
ris mei.

℟. Quia pátiens, *pag.* 188.

LECTIO II. *Cap.* 27. 12.

*Moysi successor datur.*

Dixit quoque Dóminus ad Móysen: Ascénde in ontem istum A'barim, & ontempláre indè terram, am datúrus sum filiis I'sël: cúmque víderis eam, is, & tu ad pópulum tuum, cut ivit frater tuus Aaron: ia offendístis me in desérto in contradictióne multidinis, nec sanctificáre me luístis coram ea super uas: hæ sunt aquæ contractiónis in Cades desérti Sin. i respóndit Móyses: Prodeat Dóminus Deus spirím omnis carnis, hóminem, i sit super multitúdinem nc: & possit exíre & inre ante eos, & edúcere eos ntrodúcere: ne sit pópu Dómini sicut oves absque re. Dixítque Dóminus eum: Tolle Jósue filium , virum in quo est Spíri; & pone manum tuam per eum. Qui stabit coram zaro sacerdóte, & omni itúdine: & dabis ei præpta cunctis vidéntibus, & tem glóriæ tuæ, ut áudiat omnis synagóga filióm I'sraël. Pro hoc, si quid agéndum erit, Eleázar sacérdos consúlet Dóminum. Ad verbum ejus egrediétur & ingrediétur ipse, & omnes filii I'sraël cum eo, & cétera multitúdo.

℟. In spíritu, *p.* 188.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 11. 1.

*Suscitatio Lazari.*

In illo témpore; Erat quidam languens Lázarus à Betbánia de castéllo Maríæ & Marthæ soróris ejus. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Serm.* 98. *Edit. Bened.*

Ad vocem clamántis Dómini rédditus est Lázarus vivus: sed vidéte genus resuscitatiónis. Procéssit de monuménto vivus, & ambuláre non póterat; & Dóminus ad discípulos: Sólvite eum & sínite abíre. Ille suscitávit mórtuum, illi solvérunt ligátum. A'liquid pertinére vidéte ad própriam majestátem Dei suscitántis. Increpátur áliquis in mala consuetúdine pósitus, verbo veritátis. Quàm multi increpántur, & non áudiunt! Quis ergo agit intùs cum illo qui audit? Quis vitam inspírat intrinsécùs? Quis est qui se-

crétam pellit mortem, secrétam dat vitam? Nonne post objurgatiónes, post increpatiónes dimittúntur hómines cogitatiónibus suis, & incípiunt secum vólvere quàm malam vitam gerant, quàm péssimâ consuetúdine premántur? Deíndè displicéntes sibi, mutáre vitam instítuunt; Resurrexérunt isti; revixérunt quibus dísplicet quod fuérunt: sed reviviscéntes ambuláre non possunt. Hæc sunt víncula ipsíus reátûs. Opus est ergo ut qui revíxit, solvátur, & ire permittátur. Hoc offícium discípulis dedit, quibus ait: Quæ solvéritis in terra, solúta sunt & in cœlo.

℟. Dixit Martha ad Jesum: Dómine, si fuísses hic, frater meus non fuísset mórtuus. * Sed & nunc scio quia quæcúnque popósceris à Deo dabit tibi Deus. *Joan.* 11. *v.* 21. 22. ℣. Dóminus mortíficat & vivíficat, dedúcit ad ínferos & redúcit. 1. *Reg.* 2. 6. * Sed. ℣. Glória. * Sed.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 5. a. Voce magnâ clamávit Jesus: Lázare, veni foràs. Et statim pródiit, qui fúerat mórtuus, ligátus pedes & manus ínstitis, & fácies illíus sudário erat ligáta. *Joan.* 11. *v.* 43. 44.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui ineffabílibus mundum rénovas sacraméntis: præsta, quæsumus, ut Ecclésia tua & ætérnis profíciat institútis, & temporálibus non destituátur auxíliis. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex Concílio Rotomagénsi, *An.* 1581. *de Curat. & aliorum Presbyter Offic. c.* 37.

QUamvis Presbyteri in sua ordinatióne, à peccátis absolvéndi potestátem accipiant: nullus tamen, étiam Reguláris, potest confessiónes seculárium, étiam sacerdotum audíre, nec ad id idóneus reputári, nisi aut Parochiále benefícium hábeat, aut ab Epíscopis, per exámen aut áliàs idóneus judicétur, & approbatiónem, atque exercítii potestátem, quæ gratis detur, obtíneat.

*Ad* Magníficat, *Ant* 1. Multi ex Judæis, qui venerant ad Maríam & Martham, & víderant quæ fecit Jesus, credidérunt in eum. *Joan.* 11. 45.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

DA nobis, quæsumus, omnípotens Deus, ut qui infirmitátis nostræ cónscii, de tua virtúte confídimus, sub tua semper pietáte gaudeámus. Per Dóminum.

SABBATO.

SABBATO.

De libro Deuteronómii.

Lectio I. *Cap. 31. 1. & 32. 48.*

*Josue constituitur ductor populi: Moyses ascendit in montem.*

ABiit Móyses, & locútus est ómnia verba hæc ad univérsum I'sraël, & dixit ad eos: Centum viginti annórum sum hódiè, non possum ultrà égredi, & ingredi, præsértim cùm & Dóminus díxerit mihi: Non transíbis Jordánem istum. Dóminus ergo Deus tuus transíbit ante te: ipse delébit omnes Gentes has in conspéctu tuo, & possidébis eas: & Jósue iste transíbit ante te, sicut locútus est Dóminus. Vocavítque Móyses Jósue, & dixit ei coram omni I'sraël: Confortáre, & esto robústus: tu enim introdúces pópulum istum in terram, quam datúrum se pátribus eórum jurávit Dóminus, & tu eam sorte dívides. Et Dóminus qui ductor est vester, ipse erit tecum: non dimíttet, nec derelínquet te: noli timére, nec páveas. Locutúsque est Dóminus ad Móysen in eádem die, dicens: Ascénde in montem istum A'barim, id est, transituum, in montem Nebo, qui est in terra Moab contra Jéricho: & vide terram Chánaan, quam ego tradam fíliis I'sraël obtinéndam, & mórere in monte. Quem conscéndens jungéris pópulis tuis, sicut mórtuus est Aaron frater tuus in monte Hor, & appósitus pópulis suis: quia prævaricáti estis contra me in médio filiórum I'sraël, ad aquas contradictiónis in Cades desérti Sin: & non sanctificástis me inter fílios I'sraël. Ecóntrà vidébis terram, & non ingrediéris in eam, quàm ego dabo fíliis I'sraël.

℟. Plorábunt, *p.* 188.

Lectio II. *Cap. 34. 1.*

*Mors Moysis.*

AScéndit ergo Móyses de campéstribus Moab super montem Nebo, in vérticem Phasga contra Jéricho: ostendítque ei Dóminus omnem terram Gálaad usque Dan, & univérsum Néphtali, terrámque E'phraïm, & Manásse, & omnem terram Juda usque ad mare novíssimum, & Austrálem partem, & latitúdinem campi Jéricho civitátis palmárum usque Segor. Dixítque Dóminus ad eum: Hæc est terra, pro qua jurávi A'braham, I'saac, & Jacob, dicens: Sémini tuo dabo eam. Vidísti eam óculis tuis, & non transíbis ad illam. Mortuúsque est ibi Móyses servus Dómini, in terra Moab, jubénte Dómi-

no : & sepelívit eum in valle terræ Moab contra Phogor : & non cognóvit homo sepúlchrum ejus usque in præséntem diem. Móyses centum & vigínti annórum erat quando mórtuus est : Non caligávit óculus ejus, nec dentes illíus moti sunt. Flevéruntque eum fílii I'sraël in campéstribus trigínta diébus: & compléti sunt dies planctûs lugéntium Móysen. Jósue verò fílius Nun replétus est spíritu sapiéntiæ, quia Móyses pósuit super eum manus suas. Et obediérunt ei fílii I'sraël, fecerúntque sicut præcépit Dóminus Móysi. Et non surréxit ultrà Prophéta in I'sraël sicut Móyses, quem nosset Dóminus fácie ad fáciem, in ómnibus signis atque porténtis, quæ misit per eum, ut fáceret in terra Ægypti Pharaóni, & ómnibus servis ejus, universǽque terræ illíus, & cunctam manum robústam, magnáque mirabília, quæ fecit Móyses coram univérso I'sraël.

℟. Inclínet, *p.* 189.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 8. 12.

*Testimonium Dei de Christo.*

IN illo témpore; Locútus est Jesus Scribis & Pharisǽis, dicens : Ego sum lux mundi; qui séquitur me, non ámbulat in ténebris, sed habébit lumen vitæ. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 34. *in Joan.*

LOquens per nubem carnis Lumen indefíciens, Lumen sapiéntiæ, ait homínibus : Ego sum lux mundi; qui séquitur me non ámbulat in ténebris. Deus tuus ubíque totus est; si non ab illo fácias casum, nunquam à te ipse facit occásum. Séquere ergo; nam qui séquitur, habébit lumen vitæ, Deum de Deo, lumen de lúmine. Lectum est enim nobis, dicénte Dómino : Ego sum lux mundi; qui séquitur me, habébit lumen vitæ. Hanc lucem amémus, hanc intellígere cupiámus, ipsam sitiámus, ut ad ipsam, duce ipsâ, aliquándo veniámus. & in illa ita vivámus, ut nunquam omníno moriámur. Ista enim lux est, de qua Prophetía olim præmíssa ita in Psalmo cécinit : Apud te est fons vitæ; & in lúmine tuo vidébimus lumen.

℟. Locútus est Jesus dicens : Ego sum lux mundi; * Qui séquitur me, non ámbulat in tenébris, sed habébit lumen vitæ. *Joan.* 8. 12. ℣. In quocúnque loco fúeris, Dómine, sive in morte, sive in vita, ibi erit servus tuus. 2. *Reg.* 15. 21. * Qui séquitur. ℣. Glória. * Qui séquitur.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. g. Locútus est Jesus docens in templo: & nemo apprehéndit eum, quia necdum vénerat hora ejus. *Joan.* 8. 20.

*Preces flexis genibus, p. 46.*

Orémus. *Oratio.*

Fiat, Dómine, quæsumus, per grátiam tuam fructuósus nostræ devotiónis affectus: quia tunc nobis próderunt suscépta jejúnia, si tuæ sint plácita pietáti. Per Dóminum.

CANON.

Ex Synodo Rotomagénsi.

*Anno* 1506.

Atténti sint Sacerdótes, quando próferunt verba Sacramentália, ut ea devótè & distinctè próferant, & singula cum bona gravitáte fáciant, nec in ipsis faciéndis se festinent.

AD VESPERAS.

*Antiphona & Psalmi de Psalterio.*

*Capitulum. Num.* 28. *v.* 16. 17. 18.

Mense primo, quartadécimâ die mensis, Phase Dómini erit, & quintadécimâ die solémnitas: septem diébus vescéntur ázymis, quarum dies prima venerábilis & sancta erit.

℟. Circumdedérunt me dolóres mortis, & torréntes iniquitátis conturbavérunt me: * In tribulatióne mea invocávi Dóminum, & ad Deum meum clamávi. *Psal.* 17. *v.* 5. 7. ℣. Nunc ánima mea turbáta est: & quid dicam? Pater, salvífica me ex hac hora. *Joan.* 12. 27. * In tribulatióne.

*Non dicitur,* Glória Patri; *sed repetitur,* ℟. Circumdedérunt *usque ad* ℣.

*Sic deinceps usque ad Pascha in Officio de tempore tàm ad Vesperas quàm ad Officium Nocturnum omittitur* Glória Patri *in Responsoriis ubi dici solet, & ejus loco repetitur* ℟. *ab initio usque ad* ℣.

*Hymnus.*

Vexílla regis pródeunt,
Fulget crucis mystérium,
Quo carne carnis cónditor
Suspénsus est patíbulo.

Hic vulnerátus ínsuper
Mucróne diro lánceæ,
Ut nos laváret crímine,
Aqua fluit cum sánguine.

Impléta sunt quæ cóncinit
David fidéli cármine,
Dicens: In natiónibus
Regnávit à ligno Deus.

Arbor decóra & fúlgida,
Ornáta Regis púrpurâ,
Elécta digno stípite,
Tam sancta membra tángere.

Beáta, cujus bráchiis
Secli pepéndit prétium,
Statéra facta córporis
Prædámque tulit tártari.

O crux ave, spes única,
Hoc passiónis témpore,
Auge piis justítiam,
Reísque dona véniam.
Te summa Deus Trínitas,
Colláudet omnis spíritus:
Quos per crucis mystérium
Salvas, rege per sécula.
Amen.

℣. E'ripe me, Dómine, ab hómine malo. ℞. A' viro iníquo éripe me. *Psal.* 139. 1.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 7. g. Dómine, tu scis omne consílium eórum advérsùm me in mortem: Recordáre quòd stéterim in conspéctu tuo, ut lóquerer pro eis bonum. *Jerem.* 18. *v.* 20. 23.

Orémus. *Oratio.*

QUæsumus, omnípotens Deus, famíliam tuam propítius réspice: ut, te largiénte, regátur in córpore; & te servánte, custodiátur in mente. Per Dóminum.

*Ad Completorium ut in Quadragesima.*

---

DOMINICA
PASSIONIS DOMINI.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Fílium hóminis tradéndum in manus hóminum * Veníte, adorémus. *Matth.* 17. 21.

*Psalmus*, Veníte, *in cujus fine non dicitur*, Glória, *sed ejus loco repetitur Invitatorium.*

*Hymnus.*

PANGE, lingua, gloriósi
Prælium certáminis,
Et super Crucis trophæum
Dic triúmphum nóbilem,
Quáliter Redémptor orbis
Immolátus víncerit.
De paréntis protoplásti
Fraude factor cóndolens,
Quando pomi noxiális
Morsu in mortem córruit;
Ipse lignum tunc notávit,
Damna ligni ut sólveret.
Hoc opus nostræ salútis
Ordo depopóscerat,
Multifórmis proditóris
Ars ut artem fálleret,
Et medélam ferret inde,
Hostis unde lǽserat.
Quando venit ergo sacri
Plenitúdo témporis,
Missus est ab arce Patris
Natus, orbis Cónditor;
Atque ventre virgináli
Caro factus pródiit.
Vagit infans inter arcta
Cónditus præsépia:
Membra pannis involúta
Virgo mater álligat;
Et manus, pedésque, & crura,
Strictâ cingit fásciâ.
Glória & honor Deo
Usquequáque altíssimo
Unà Patri, Filióque
I'nclito Paraclé to;
Cui laus est & potéstas
Per ætérna sécula.
Amen.

*Antiphonæ, & Psalmi, ut in Psalterio.*

IN I. NOCTURNO.

℣. Captábunt in ánimam justi, ℟. Et sánguinem innocéntem condemnábunt. *Ps.* 93. 21.

Incipit Jeremías Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 1. 1.

*Vocatio Jeremiæ.*

VErba Jeremíæ fílii Hélciæ, de Sacerdótibus qui fuérunt in A'nathoth, in terra Bénjamin. Factum est verbum Dómini ad me, dicens: Priúsquàm te formárem in útero, novi te: & antequàm exíres de vulva, sanctificávi te, & prophétam in Géntibus dedi te. Et dixi: A, a, a, Dómine Deus: ecce nésc1o loqui, quia puer ego sum. Et dixit Dóminus ad me: Noli dícere: Puer sum: quóniam ad ómnia, quæ mittam te, ibis: & univérsa quæcúnque mandávero tibi, loquéris. Ego quippe dedi te hódiè in civitátem munítam, & in colúmnam férream, & in murum æreum, super omnem terram, régibus Juda, princípibus ejus, & sacerdótibus, & pópulo terræ. Et bellábunt advérsùm te, & non prævalébunt: quia ego tecum sum, ait Dóminus, ut líberem te.

℟. Hæ sunt fériæ Dómini sanctæ, quas celebráre debétis. Mense primo, quartadécimâ die mensis ad vésperum, Phase Dómini est: & quintadécimâ die * Solémnitas Azymórum Dómini est. *Levit.* 23. *v.* 4. 5. 6. ℣. Appropinquábat dies festus Azymórum, qui dícitur Pascha. *Luc.* 22. 1. * Solémnitas.

LECTIO II. *Cap.* 2. 1.

*Beneficus Deus: Ingrati Judæi.*

FActum est verbum Dómini ad me, dicens: Vade, & clama in áuribus Jerúsalem, dicens: Hæc dicit Dóminus: Recordátus sum tui, míserans adolescéntiam tuam, & charitátem desponsatiónis tuæ, quando secúta es me in desérto, in terra, quæ non seminátur. Sanctus I'sraël Dómino, primítiæ frugum ejus; omnes, qui dévorant eum, delínquunt: mala vénient super eos, dicit Dóminus. Audíte verbum Dómini, domus Jacob, & omnes cognatiónes domûs I'sraël: hæc dicit Dóminus: Quid invenérunt patres vestri in me iniquitátis, quia elongavérunt à me, & ambulavérunt post vanitátem, & vani facti sunt? Et non dixérunt: Ubi est Dóminus, qui ascéndere nos fecit de terra Ægypti: qui tradúxit nos per desértum, per terram inhabitábilem & inviam, per ter-

ram sitis, & imáginem mortis; per terram, in qua non ambulávit vir, neque habitávit homo? Et indúxi vos in terram Carméli, ut comederétis fructum ejus, & óptima illíus: & ingréssi contamináſtis terram meam, & hereditátem meam posuíſtis in abominatiónem. Sacerdótes non dixérunt: Ubi est Dóminus? Et tenéntes legem nesciérunt me, & pastóres prævaricáti sunt in me: & prophétæ prophetavérunt in Baal, & idóla secúti sunt.

℞. Dixérunt ímpii; Circumveniámus justum, quóniam contrárius est opéribus nostris; * Excæcávit enim illos malítia eórum, & nesciérunt Sacraménta Dei. *Sap.* 2. *v.* 12. 21. 22. ℣. Cogitavérunt Pontífices & Pharizæi ut interficerent Jesum. *Joan.* 11. 53. * Excæcávit.

LECTIO III. *v.* 29.

*Excusationes non admissa.*

QUid vultis mecum judício conténdere? omnes dereliquíſtis me, dicit Dóminus. Frustrà percússi filios vestros, disciplínam non recepérunt: devorávit gládius vester prophétas vestros, quasi leo vastátor generátio vestra. Vidéte verbum Dómini; nunquid solitúdo factus sum Israéli; aut terra serótina? quare ergo dixit pópulus meus: Recéssimus, non veniémus ultrà ad te. Nunquid obliviscétur virgo ornaménti sui, aut sponsa fásciæ pectorális suæ? pópulus verò meus oblítus est mei diébus innúmeris. Quid níteris bonam osténdere viam tuam ad quæréndam dilectiónem, quæ insuper & malítias tuas docuíſti vias tuas, & in alis tuis invéntus est sanguis animárum páuperum & innocéntum? non in fossis invéni eos, sed in ómnibus quæ supra: memorávi. Et dixísti: Absque peccáto & innocens ego sum: & proptéreà avertátur furor tuus à me. Ecce ego judício conténdam tecum, eò quòd díxeris: Non peccávi.

℞. Date Dómino Deo vestro glóriam, ántequàm contenebréscat, * Et offéndant pedes vestri ad montes caliginósos: expectábitis lucem, & ponet eam in umbram mortis. *Jerem.* 13. 16. ℣. Ambuláte, dùm lucem habétis, ut non vos ténebræ comprehéndant. *Joan.* 12. 35. * Et offéndant.

*Non dicitur*, Glória Patri, *sed ejus loco repetitur*, ℞. Date Dómino, *usque ad* ℣.

IN II. NOCTURNO.

℣. E'ripe me, Dómine, de

manu inimicórum meórum, ℟. Et à persequéntibus me. *Psal.* 30. 16.

De libro Sapiéntiæ.

LECTIO IV. *Cap.* 2. 1.

*Impiis odio est justus.*

DIxérunt impii cogitántes apud se non rectè: Opprimámus paúperem justum, & non parcámus víduæ, nec veteráni revereámur canos multi témporis. Sit autem fortitúdo nostra lex justítiæ: quod enim infirmum est, inútile invenítur. Circumveniámus ergo justum, quóniam inútilis est nobis, & contrárius est opéribus nostris, & impróperat nobis peccáta legis, & diffámat in nos peccáta disciplínæ nostræ. Promíttit se sciéntiam Dei habére, & fílium Dei se nóminat. Factus est nobis in traductiónem cogitatiónum nostrárum. Gravis est nobis étiam ad vidéndum, quóniam dissímilis est áliis vita illíus, & immutátæ sunt viæ ejus.

℟. Vim faciébant qui quærébant ánimam meam, & qui inquirébant mala mihi, locúti sunt vanitátes, * Et dolos totâ die meditabántur. *Psal.* 37. 13. ℣. Quærébant summi Sacerdótes, & Scribæ quómodò Jesum dolo tenérent, & occíderent. *Marc.* 14. 1. * Et dolos.

LECTIO V. *v.* 16.

*Prophetia de Christo passuro.*

TAnquam nugáces æstimáti sumus ab illo, & ábstinet se à viis nostris tanquam ab immundítiis, & præfert novíssima justórum, & gloriátur patrem se habére Deum. Videámus ergo si sermónes illíus veri sint, & tentémus quæ ventúra sunt illi, & sciémus quæ erunt novíssima illíus. Si enim est verus fílius Dei, suscípiet illum, & liberábit eum de mánibus contrariórum. Contuméliâ & torménto interrogémus eum, ut sciámus reveréntiam ejus, & probémus patiéntiam illíus. Morte turpíssimâ condemnémus eum; erit enim ei respéctus ex sermónibus illíus. Hæc cogitavérunt, & erravérunt: excæcávit enim illos malítia eórum. Et nesciérunt sacraménta Dei, neque mercédem speravérunt justítiæ, nec judicavérunt honórem animárum sanctárum.

℟. Vidérunt, & odérunt & me, & Patrem meum, * Ut adimpleátur sermo, qui in lege eórum scriptus est; Quia ódio habuérunt me gratis. *Joan.* 15. *v.* 24. 25. ℣. Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus; cùm loquébar illis, impugná-

bant me gratis. *Psal.* 119. 7. * Ut adimpleátur.

LECTIO VI. *Cap.* 4. 17.

*Finis justorum & finis impiorum.*

VIdébunt finem sapiéntis, & non intélligent quid cogitáverit de illo Deus, & quare muníerit illum Dóminus. Vidébunt & contémnent eum: illos autem Dóminus irridébit. Et erunt post hæc decidéntes sine hónore, & in contumélia inter mórtuos in perpétuum: quóniam disrúmpet illos inflátos sine voce, & commovébit illos à fundaméntis, & usque ad suprémum desolabúntur: & erunt geméntes, & memória illórum períbit. Vénient in cogitatióne peccatórum suórum tímidi, & tradúcent illos ex advérso iniquitátes ipsórum.

℟. Consílium fecérunt in unum, * Dicéntes: Deus derelíquit eum; persequímini & comprehéndite eum, quia non est qui erípiat. *Psal.* 70. *v.* 10. 11. ℣. Misérunt Príncipes & Pharisæi minístros, ut apprehénderent Jesum. *Joan.* 7. 32. * Dicéntes, *Repetitur*, ℟. Consílium.

IN III. NOCTURNO.

℣. Impropérium expectávit cor meum, ℟. Et misériam. *Psal.* 68. 21.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Hebræos.

LECTIO VII. *Cap.* 2. 5.

*Autor salutis per passionem consummatus.*

NOn Angelis subjécit Deus orbem terræ futúrum, de quo lóquimur. Testátus est autem in quodam loco quis, dicens: Quid est homo, quod memor es ejus; aut fílius hóminis, quóniam vísitas eum? Minuísti eum paulò minùs ab Angelis: glóriâ & honóre coronásti eum; & constituísti eum super ópera mánuum tuárum. Omnia subjecísti sub pédibus ejus. In eo enim quod ómnia ei subjécit, nihil dimísit non subjéctum ei. Nunc autem necdùm vidémus ómnia subjécta ei. Eum autem, qui módico quàm Angeli minorátus est, vidémus Jesum, propter passiónem mortis, glóriâ & honóre coronátum: ut grátiâ Dei, pro ómnibus gustáret mortem. Decébat enim eum, propter quem ómnia, & per quem ómnia, qui multos fílios in glóriam addúxerat, autórem salútis eórum, per passiónem consummáre. Qui enim sanctíficat, & qui sanctificántur, ex uno omnes. Propter quam causam non confúnditur fratres eos vocá-

se, dicens: Nuntiábo nomen tuum frátribus meis: in médio Ecclésiæ laudábo te. Et íterùm: Ego ero fidens in eum. Et íterùm: Ecce ego, & púeri mei, quos dedit mihi Deus.

℟. Inimíci mei dixérunt mala mihi; * Quando moriétur, & períbit nomen ejus? Psal. 40. 6. ℣. Quærébant falsum testimónium contra Jesum, ut eum morti tráderent. *Matt.* 26.59. * Quando.

LECTIO VIII. *v.* 14.

*Christus pro hominibus, non pro Angelis mortuus est.*

QUia ergo púeri communicavérunt carni & sánguini, & ipse simíliter participávit eísdem: ut per mortem destrúeret eum, qui habébat mortis impérium, id est diábolum: Et liberáret eos, qui timóre mortis per totam vitam obnóxii erant servitúti. Nusquàm enim Angelos apprehéndit, sed semen Abrahæ apprehéndit. Unde debuit per ómnia frátribus similári, ut miséricors fíeret, & fidélis póntifex ad Deum, ut repropitiáret delícta pópuli. In eo enim, in quo passus est ipse & tentátus, potens est & eis, qui tentántur, auxiliári.

℟. Sicut Móyses exaltávit serpéntem in desérto, * Ita exaltári opórtet Fílium hóminis, ut omnis qui credit in ipsum, non péreat, sed hábeat vitam ætérnam. *Joan.* 3. *v.* 14. 15. ℣. Fecit Móyses serpéntem æneum, & pósuit eum pro signo, quem cùm percússi aspícerent, sanabántur. *Num.* 21. 9. * Ita.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO IX. *Cap.* 8. 46.

*Christus ante Abraham.*

IN illo témpore; Dixit Jesus turbis Judæórum; Quis ex vobis árguet me de peccáto? Si veritátem dico vobis, quare non créditis mihi? Qui ex Deo est, verba Dei audit. Proptéreà vos non audítis, quia ex Deo non estis. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.

*Hom.* 18. *in Evang. hab. in Bas. S. Petri, Dom. in Passione.*

PEnsáte, fratres charíssimi, mansuetúdinem Dei. Relaxáre peccáta vénerat, & dicébat: Quis ex vobis árguet me de peccáto? Non dedignátur ex ratióne osténdere se peccatórem non esse, qui ex virtúte divinitátis póterat peccatóres justificáre. Sed terríbile est valdè quod súbditur: Qui ex Deo est, verba Dei audit: proptéreà vos non audítis, quia ipsi ex Deo non estis. Si enim ipse verba Dei audit, qui ex Deo est, & audíre verba ejus non potest, quisquis ex illo

non est : intérroget se unusquísque, si verba Dei in aure cordis pércipit ; & intélliget unde sit. Cœléstem pátriam desideráre véritas jubet, carnis desidéria cónteri, mundi glóriam declináre, aliéna non appétere, própria largíri. Penset ergo apud se unusquísque vestrûm, si hæc vox Dei in cordis ejus aure convâluit, & quia jam ex Deo sit, agnóscit.

℟. Dixit Jesus turbis Judæórum : Quis ex vobis árguet me de peccáto. * Si veritátem dico vobis, quare non créditis mihi. *Joan.* 8. 46. ℣. Quare detraxístis sermónibus veritátis, cùm è vobis nullus sit, qui possit argúere me ? *Job.* 6. 25. * Si veritátem. *Repetitur*, Dixit Jesus, *usque ad* ℣.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Deus meus es tu, ne discésseris à me : ℟. Quóniam tribulátio próxima est. *Ps.* 21. *v.* 11. 12.

*Psalmi de Dominica, excepto Cantico.*

*Ant.* 8. g. Vide, Dómine, afflictiónem meam, quóniam eréctus est inimícus. *Thren.* 1. 9.

*Ant.* 2. d. Vide, Dómine, quóniam tríbulor ; conturbátus est venter meus ; subvérsum est cor meum. *Thren.* 1. 20.

*Ant.* 4. a. Ingemísco ego, & non est qui consolétur me. *Thren.* 1. 21.

*Ant.* 1. a. Sicut ovis.

*Canticum.* *Isa.* 53. 5.

IPse vulnerátus est propter iniquitátes nostras, * attrítus est propter scélera nostra.

Disciplína pacis nostræ super eum, * & livóre ejus sanáti sumus.

Omnes nos quasi oves errávimus, unusquísque in viam suam declinávit : * et pósuit Dóminus in eo iniquitátem ómnium nostrûm.

Oblátus est quia ipse voluit : * & non apéruit os suum.

Sicut ovis ad occisiónem ducétur, & quasi agnus coram tondénte se obmutéscet, * & non apériet os suum.

De angústia, & de judício sublátus est : * generatiónem ejus quis enarrábit ?

Quia abscíssus est de terra viventium : * propter scelus pópuli mei percússi eum.

Glória Patri, &c.

*Ant.* Sicut ovis ad occisiónem ducétur, & quasi agnus coram tondénte se obmutéscet. *Isa.* 53. 7.

*Ant.* 4. *irreg.* D. Vidísti, Dómine, iniquitátem illórum

adversum me : júdica judícium meum. *Thren.* 3. 59.

*Capitulum. Hebr.* 9. *v.* 11. 12.

FRatres, Christus assístens Póntifex futurórum bonórum per ámplius & perféctius tabernáculum non manufáctum, id est, non hujus creatiónis : neque per sánguinem hircórum, aut vitulórum, sed per próprium sánguinem introívit semel in Sancta, ætérnâ redemptióne invéntâ.

*Hymnus.*

LUSTRIS sex qui jam peráctis,
Tempus implens córporis,
Se volénte, natus ad hoc,
Passióni déditus,
Agnus in cruce levátur
Immolándus stípite.

Hic acétum, fel, arúndo,
Sputa, clavi, láncea;
Mite corpus perforátur,
Sanguis, unda prófluit,
Terra, pontus, astra, mundus,
Quo lavántur flúmine.

CRUX fidélis inter omnes
Arbor una nóbilis :
Nulla silva talem profert
Fronde, flore, gérmine :
Dulce lignum, dulces clavos,
Dulce pondus sústinet.

FLECTE ramos, arbor alta,
Tensa laxa víscera,
Et rigor lentéscat ille
Quem dedit natívitas;
Ut supérni membra Regis
Miti tendas stípite.

SOLA digna tu fuísti
Ferre secli prétium,
Atque portum præparáre
Nauta mundo náufrago;
Quem sacer cruor perúnxit
Fusus Agni córpore.

GLÓRIA & honor Deo,
Usquequáque altíssimo
Unà Patri, Filióque
I'nclito Paracléto;
Cui laus est & potéstas
Per ætérna sécula.
Amen.

℣. Dixi : Ecce vénio. ℟. In cápite libri scriptum est de me. *Ps.* 39. 8.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. a. Quis ex vobis árguet me de peccáto ? si veritátem dico vobis, quare non créditis mihi ? qui ex Deo est, verba Dei audit. *Joan.* 8. *v.* 46. 47.

Orémus. *Oratio.*

QUǽsumus, omnípotens Deus, famíliam tuam propítius réspice : ut, te largiénte, regátur in córpore ; & te servánte, custodiátur in mente. Per Dóminum.

## AD PRIMAM.

*Ant.* 1. d. Amen, amen dico vobis : si quis sermónem meum serváverit, mortem non vidébit in ætérnum. *Joan.* 8. 51.

*In* ℟. *br.* ℣. Qui passus es pro nobis. 1. *Pet.* 2. 21. *Non*

*dicitur*, Glória Patri; *sed repetitur* ℟. *br. ab initio, & sic deinceps usque ad Feriam quintam in Cæna Domini in* ℟℟. *br. ad omnes Horas in Officio de tempore.*

*CANON.*

Ex Concilio Burdigalénsi.

*Anno* 1583. *num.* 12. *de Pænit.*

NE'minem Párochi absólvant eórum, qui, cùm præcedénte confessióne se abláta restitúros, aut legáta ad pias causas solutúros, essent pollíciti, cùm facúltas adfuisset, negléxerint.

AD TERTIAM.

*Ant.* 6. f. Dixérunt Judæi: Nunquid tu major es patre nostro, A'braham qui mórtuus est? Et Prophétæ mórtui sunt. Quem teípsum facis? *Joan.* 8. *v.* 52. 53.

*Capitulum. Jer.* 6. 10.

CUi loquar? & quem contestábor ut áudiat? Ecce incircumcísæ aures eórum, & audíre non possunt: ecce verbum Dómini factum est eis in oppróbrium: & non suscípient illud.

℟. *br.* E'rue à frámea *Deus ánimam meam. *Repet.* Erue. ℣. Et de manu canis únicam meam. * Deus. *Repet.* E'rue.

℣. Effúnde frámeam, ℟. Et conclúde advérsùs eos qui persequúntur me. *Ps.* 21. 21. & 34. 3.

AD SEXTAM.

*Ant.* 7. C. Respóndit Jesus: Si ego glorífico meípsum, glória mea nihil est; est Pater meus qui gloríficat me. *Joan.* 8. 54.

*Capitulum. Isa.* 50. *v.* 8.

JUxtà est qui justíficat me, quis contradícet mihi? stemus simul, quis est advérsarius meus? accédat ad me. Ecce Dóminus Deus auxiliátor meus: quis est qui condémnet me?

℟. *br.* Posuérunt advérsùm me * Mala pro bonis. *Repetitur*, Posuérunt. ℣. Et ódium pro dilectióne mea. * Mala. *Repet.* Posuérunt.

℣. Totâ die verba mea execrabántur. ℟. Advérsùm me omnes cogitatiónes eórum in malum. *Psal.* 108. & 55. 6.

AD NONAM.

*Ant.* 2. d. A'braham Pater vester exultávit ut vidéret diem meum, vidit, & gavísus est. *Joan.* 8. 56.

*Capitulum. Jer.* 20. 11.

QUi pérsequúntur me, cadent, & infírmi erunt. Confundéntur veheménter, quia non intellexérunt oppróbrium sempitérnum quod nunquam delébitur.

℟. *br.* Ne perdas cum ím-

piis, * Deus ánimam meam. *Repet.* Ne perdas. ℣. Et cum viris sánguinum vitam meam. * Deus. *Repet.* Ne perdas.

℣. E'ripe me de inimícis meis, Deus meus, ℟. Et ab insurgéntibus in me líbera me. *Psal.* 25. 9. & 58. 1.

## AD VESPERAS.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 4. a. Quis ex vobis árguet me de peccáto? si veritátem dico vobis, quare non créditis mihi? qui ex Deo est, verba Dei audit. *Joan.* 8. *v.* 46. 47.

*Ant.* 1. d. Amen, amen dico vobis: Si quis sermónem meum serváverit, mortem non vidébit in ætérnum. *Ibid. v.* 51.

*Ant.* 6. f. Dixérunt Judæi: Numquid tu major es patre nostro A'braham qui mórtuus est? Et Prophétæ mórtui sunt. Quem teípsum facis? *Ibid. v.* 52. 53.

*Ant.* 7. C. Respóndit Jesus: Si ego glorífico meípsum, glória mea nihil est; est Pater meus qui glorificat me. *Ibid. v.* 54.

*Ant.* 2. d. A'braham pater vester exultávit, ut vidéret diem meum, vidit, & gavísus est. *Ibid. v.* 56.

*Capitulum. Jer.* 11. *v.* 18. 19.

O Stendísti mihi, Dómine, stúdia eórum. Et ego quasi agnus mansuétus, qui portátur ad víctimam.

℟. U'squequò exaltábitur inimícus meus super me? * Réspice & exáudi me, Dómine Deus meus. ℣. Qui tríbulant me, exultábunt si motus fúero: ego autem in misericórdia tua sperávi. * Réspice. *Repet.* U'squequò. *Psal.* 12. *v.* 3. 4. 5. 6.

*Hymnus.* Vexílla regis, *pag.* 275.

℣. Miserére mei, Deus, quóniam conculcávit me homo: ℟. Totâ die impúgnans tribulávit me. *Psal.* 55. 2.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. a. Ego dæmónium non hábeo; sed honorífico Patrem meum, & vos inhonorástis me. *Joan.* 8. 49.

*Oratio*, Quǽsumus, omnípotens, *ut suprà ad Laudes.*

## IN FERIIS.

*Per Hebdomadam Passionis, & usque ad Feriam V. in Cœna Domini.*

## Ad Officium Nocturnum.

*Invitatorium.* Fílium hóminis tradéndum in manus hóminum * Veníte adorémus. *Matth.* 17. 21. *Psal.* Veníte, *sine* Glória Patri.

*Hymnus.* Pange, lingua, *pag.* 276.

*Antiph. & Psalmi de Psal-*

*terio*, ℣℣. *Lectiones & ℟℟. ut infrà in qualibet Feria.*

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Deus meus es tu, ne discésseris à me: ℟. Quóniam tribulátio próxima est. *Ps.* 21. *v.* 11. 12.

*Antiphona & Psalmi de Psalterio.*

*Capitulum.* *Jer.* 11. 19.

COgitavérunt super me consília, dicéntes: Mittámus lignum in panem ejus, & eradámus eum de terra vivéntium, & nomen ejus non memorétur ámpliùs.

*Hymnus.* LUSTRIS sex, *pag.* 283.

℣. Dixi: Ecce vénio, ℟. In cápite libri scriptum est de me. *Psal.* 39. 8.

*Antiphona ad* Benedíctus, *propriæ, ut in qualibet Feria sequenti. Deinde dicuntur Preces flexis genibus*, *p.* 46.

*Non dicuntur ampliùs Suffragia nec etiam in Vesperis.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 8. g. Vide, Dómine, afflictiónem meam, quóniam eréctus est inimícus. *Thren.* 1. 9.

*Capitulum.* *Hebr.* 12. 14.

PAcem sequímini cum ómnibus, & sanctimóniam, sine qua nemo vidébit Deum.

℟. *breve.* Christe Fili Dei vivi, * Miserére nobis. *Repetitur*, Christe. ℣. Qui passus es pro nobis, * Miserére nobis. *Matth.* 16. 16. *Tob.* 8. 10. 1. *Petr.* 2. 21.

℣. Exúrge, Christe, &c.

*Preces flexis genibus*, *pag.* 51. 52.

AD TERTIAM.

*Ant.* 4. a. Omnes subsánnant me, Dómine, quia jam olim loquor, vocíferans iniquitátem, & vastitátem clámito. *Jerem.* 20. *v.* 7. 8.

*Capitulum.* *Jerem.* 17. 13.

DO'mine, omnes qui te derelínquunt, confundéntur; recedéntes à te in terra scribéntur: quóniam dereliquérunt venam aquárum vivéntium Dóminum.

℟. *breve.* E'rue à frámea * Deus, ánimam meam. *Repet.* E'rue. ℣. Et de manu canis únicam meam. * Deus. *Repet.* E'rue.

℣. Effúnde frámeam, ℟. Et conclúde advérsùs eos, qui persequúntur me. *Ps.* 21. 21. & 34. 3.

*Preces flexis genibus*, *p.* 56.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. d. Longè factus est à me consolátor; vocávi amícos meos, & ipsi decepérunt me. *Thren.* 1. *v.* 16. 19.

*Capitulum.* *Thren.* 3. *v.* 14. 15. 55.

FActus sum in derísum omni pópulo, cánticum eórum totâ die, replévit me amaritudínibus, inebriávit

ne, absynthio; invocávi nomen tuum, Dómine, de lacu novíssimo.

℟. *br.* Posuérunt advérsum me * Mala pro bonis; *Repetitur*, Posuérunt. ℣. Et odium pro dilectióne mea, Mala. *Repet.* Posuérunt.

℣. Totâ die verba mea execrabántur, ℟. Advérsùm me omnes cogitatiónes eórum in malum. *Psal.* 108. 5. 55. 6.

*Preces flexis genibus, p.* 56.

AD NONAM.

*Ant.* 4. *irreg.* d. Dómine, recordáre mei, & tuére me ab his qui persequúntur me. *Jer.* 15. 15.

*Capitulum. Jerem.* 18. 20.

Recordáre quòd stéterim in conspéctu tuo, ut lóquerer pro eis bonum: & avérterem indignatiónem tuam ab eis. *Jer.* 18. 20.

℟. *br.* Ne perdas cum impiis,* Deus, ánimam meam. *Repet.* Ne perdas. ℣. Et cum viris sánguinum vitam meam. Deus, ánimam meam. *Repet.* Ne perdas.

℣. Eripe me de inimícis meis, Deus meus, ℟. Et ab insurgéntibus in me líbera me. *Psal.* 25. 9. & 58. 1.

*Preces flexis genibus, p.* 56.

AD VESPERAS.

*Antiphonæ & Psalmi de Psalterio.*

*Capitulum. Jerem.* 11. 20.

Tu Dómine Sábaoth, qui júdicas justè, & probas renes & corda, vídeam ultiónem tuam ex eis: tibi enim reveláví causam meam.

℟. U'squequò exaltábitur inimícus meus super me? * Réspice & exáudi me, Dómine Deus meus. ℣. Qui tríbulant me, exultábunt si motus fúero: ego autem in misericórdia tua sperávi. * Réspice. *Repet.* U'squequò. *Ps.* 12. *v.* 3. 4. 5. 6.

*Hymnus.* Vexílla. *p.* 275.

℣. Miserére mei, Deus, quóniam conculcávit me homo: ℟. Totâ die impúgnans tribulávit me. *Psal.* 55. 2.

*Ad* Magníficat, *Antiphonæ, ut in qualibet Feria sequenti: Deinde dicuntur Preces flexis genibus, pag.* 46.

---

FERIA SECUNDA.

℣. Captábunt in ánimam justi, ℟. Et sánguinem innocéntem condemnábunt. *Ps.* 93. 21.

De Jeremía Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 3. 1.

*Deus pænitentibus se offert.*

Vulgò dícitur: Si dimíserit vir uxórem suam, & recédens ab eo, dúxerit virum álterum: nunquid revertétur ad eam ultrà? nunquid non pollúta & contami-

náta erit múlier illa? tu autem fornicáta es cum amatóribus multis: tamen revértere ad me, dicit Dóminus, & ego suscípiam te. Leva óculos tuos in diréctum, & vide ubi non prostráta sis: in viis sedébas expéctans eos, quasi latro in solitúdine: & polluísti terram in fornicatiónibus tuis, & in malítiis tuis. Quámobrem prohíbitæ sunt stillæ pluviárum, & serótinus imber non fuit: frons mulíeris meretrícis facta est tibi, noluísti erubéscere. Ergo saltem ámodò voca me: Pater meus, dux virginitátis meæ tu es. Nunquid irascéris in perpétuum, aut perseverábis in finem? Ecce locúta es, & fecísti mala, & potuísti. Et dixit Dóminus ad me in diébus Josíæ regis: Nunquid vidísti quæ fécerit aversátrix Israël? Abiit sibimet super omnem montem excélsum, & sub omni ligno frondóso, & fornicáta est ibi. Et dixi, cùm fecísset hæc ómnia: Ad me revértere: & non est revérsa.

℟. Dixérunt ímpii, *p. 278.*

LECTIO II. *v. 12.*

*Deus pænitentibus multa bona promittit.*

VAde, & clama sermónes istos contra Aquilónem, & dices: Revértere aversátrix Israël, ait Dóminus, & non avértam faci... meam à vobis: quia sanct... ego sum, dicit Dóminus, ... non iráscar in perpétu... Verúntamen scito iniqui... tem tuam, quia in Dóminu... Deum tuum prævaricáta e... & dispersísti vias tuas alién... sub omni ligno frondóso, ... vocem meam non audi... ait Dóminus. Convertími... fílii reverténtes, dicit D... minus: quia ego vir vest... & assúmam vos unum ... civitáte, & duos de cog... tióne, & introdúcam vo... Sion. Et dabo vobis pa... res juxta cor meum, & p... cent vos sciéntiâ & doct... Cúmque multiplicáti fuéri... & crevéritis in terra in ... bus illis, ait Dóminus; ... dicent ultrà: Arca testam... ti Dómini: neque ascén... super cor, neque reco... búntur illíus: nec visitáb... nec fiet ultrà. In témpore... vocábunt Jerúsalem sól... Dómini: & congregabún... ad eam omnes Gentes in ... mine Dómini in Jerúsale... & non ambulábunt post p... vitátem cordis sui péssimi... diébus illis ibit domus Ju... ad domum Israël, & véni... simul de terra Aquilónis ... terram, quam dedi pátrib... vestris. Ego autem dixi: Qu... modò ponam te in fílios, ... tribuam tibi terram deside... bilem

bilem, hereditátem præclá-tam exercituum Géntium? Et dixi: Patrem vocábis me, & post me ingredi non cessábis.

℟. Date Dómino, p. 278.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap. 7. 32.*

*Missi ministri non misérunt manus in Jesum.*

IN illo témpore; Misérunt Príncipes & Pharisæi ministros, ut apprehénderent eum. Dixit ergo eis Jesus: Adhuc módicum tempus vobíscum sum, & vado ad eum, qui me misit. Quærétis me, & non inveniétis, & ubi ego sum, vos non potéstis veníre. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract. 31. in Joan.*

MIsérunt minístros, ut apprehénderent eum. Quem apprehénderent? Adhuc noléntem? Dixit ergo eis: Adhuc módicum tempus vobíscum sum. Quod modò vultis fácere, factúri estis, sed non modò; quia modò nolo. Implére débeo dispensatiónem meam, & sic perveníre ad passiónem meam. Quærétis me, & non inveniétis. Noluérunt enim eum agnóscere præséntem, & póstea quæsiérunt, cùm vidérunt in eum multitúdinem jam credéntem. Vidérunt se ingénti crímine impietátis astríctos, quando illum occidérunt, quem venerári & adoráre debuérunt; & hoc putábant esse inexpiábile. Magnum enim fácinus erat, cujus considerátio illos fáceret desperáre; sed non debébant desperáre, pro quibus in cruce pendens Dóminus, est dignátus oráre. Vidébat quosdam suos inter multos aliénos: illis jam petébat véniam, à quibus adhuc accipiébat injúriam; Non enim attendébat, quòd ab ipsis moriebátur; sed quia pro ipsis moriebátur.

℟. Vado ad eum qui me misit, * Quærétis me, & non inveniétis. *Joan. 7. v. 33. 34.* ℣. Quia despexístis omne consílium meum. *Prov. 1. 25.* * Quærétis. *Loco* ℣. Glória. *Repet.* Vado.

*Ad* Benedíctus, *Ant. 8. g.* Adhuc módicum tempus vobíscum sum: & vado ad eum, qui me misit. *Joan. 7. 33.*

*Preces flexis genibus, p. 46.*

Orémus. *Oratio.*

SAnctífica, quæsumus, Dómine, nostra jejúnia: & cunctárum nobis indulgéntiam propítius largíre culpárum. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, Qui tecum vivit & regnat.

## CANON.

Ex Concílio Rotomagénsi.

*Anno* 1581. *De Curat. & aliorum Presbyter. Officiis. Can.* 37.

NUllus Sacérdos, atque étiam Reguláris, ne quidem in suo convéntu, áudeat, máximè per omne tempus Quadragésimæ, & Octávas Paschæ, audíre confessiónes quorumcúnque, & áliquem absólvere, nisi de licéntia Epíscopi expréssa, atque étiam in scriptis hábita.

*Ad* Magníficat. *Ant.* 4. a. Si quis sitit, véniat ad me, & bibat. Qui credit in me, flúmina de ventre ejus fluent aquæ vivæ. *Joan.* 7. *v.* 37. 38.

*Preces flexis genibus, pag.* 46.

Orémus. *Oratio.*

CLamántium ad te, quǽsumus, Dómine, preces dignánter exáudi, ut sicut Ninivítis in afflictióne pósitis pepercísti; ita & nobis in præsénti tribulatióne succúrras. Per Dóminum.

## FERIA TERTIA.

℣. E'ripe me, Dómine, de manu inimicórum meórum, ℟. Et à persequéntibus me. *Psal.* 30. 16.

De Jeremía Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 5. 3.

*Prophetæ mendaces.*

DO'mine, óculi tui respíciunt fidem: percussísti eos, & non doluérunt: attrivísti eos, & renuérunt accípere disciplínam: induravérunt fácies suas supra petram, & noluérunt revérti. Ego autem dixi: Fórsitan páuperes sunt & stulti, ignorántes viam Dómini, judícium Dei sui. Ibo ígitur ad optimátes, & loquar eis: ipsi enim cognovérunt viam Dómini, judícium Dei sui; & ecce magis hi simul confregérunt jugum, rupérunt víncula, negavérunt Dóminum, & dixérunt: Non est ipse; neque véniet super nos malum: gládium & famem non vidébimus. Prophétæ fuérunt in ventum locúti, & respónsum non fuit in eis. Hæc dicit Dóminus Deus exercítuum: Peccáta vestra prohibuérunt bonum à vobis: Quia invénti sunt in pópulo meo ímpii insidiántes quasi áucupes, láqueos ponéntes & pedícas ad capiéndos viros. Sicut decípula plena ávibus, sic domus eórum plenæ dolo: ídeò magnificáti sunt & ditáti: incrassáti sunt & impinguáti: & præteriérunt sermónes meos péssimè. Causam víduæ non ju-

dicavérunt, causam pupílli non direxérunt, & judícium páuperum non judicavérunt. Nunquid super his non visitábo, dicit Dóminus? aut super gentem hujúsmodi non ulciscétur ánima mea? Stupor & mirabília facta sunt in terra: Prophétæ prophetábant mendácium, & Sacerdótes applaudébant mánibus suis: & pópulus meus diléxit tália: quid ígitur fiet in novíssimo ejus.

℞. Vim faciébant, *pag.* 279.

LECTIO II. *Cap.* 6. 10.

*Prophetarum & Sacerdotum dolus.*

CUi loquar? & quem contestábor, ut áudiat? ecce incircuncísæ aures eórum, & audíre non possunt: ecce verbum Dómini factum est eis in oppróbrium, & non suscípient illud. Idcircò furóre Dómini plenus sum, laborávi sústinens: effúnde super párvulum foris, & super consílium júvenum simul: vir enim cum mulíere capiétur, senex cum pleno diérum. Et transíbunt domus eórum ad álteros, agri & uxóres páriter: quia exténdam manum meam super habitántes terram, dicit Dóminus. A' minóre quippe usque ad majórem omnes avarítiæ student: & à prophéta usque ad Sacerdótem cuncti fáciunt dolum. Et curábant contritiónem filiæ pópuli mei cum ignomínia, dicéntes: Pax, pax: & non erat pax. Confúsi sunt, quia abominatiónem fecérunt: quin pótiùs confusióne non sunt confúsi, & erubéscere nesciérùnt: quámobrem cadent inter ruéntes, in témpore visitatiónis suæ córruent, dicit Dóminus.

℞. Vidérunt, *pag.* 279.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 7. 1.

*Fratres Jesu non credebant in eum.*

IN illo témpore; Ambulábat Jesus in Galilæam: non enim volébat in Judæam ambuláre, quia quærébant eum Judæi interfícere. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 28. *in Joann.*

CHristus manens Deus accépit hóminem, qui fecit hóminem. Quando ergo látuit ut homo, non poténtiam perdidísse putándus est, sed exémplum infirmitáti præbuísse. Ille enim quando vóluit, deténtus est; quando vóluit occísus est. Sed quóniam futúra erant membra ejus, id est, fidéles ejus qui non habérent illam potestátem, quam habébat ipse Deus

noster: quòd latébat, quòd se tanquam ne occiderétur, occultábat; hoc indicábat factúra esse membra sua, in quibus útique membris suis ipse erat. Non enim Christus in cápite, & non in córpore; sed Christus totus in cápite, & in córpore. Quòd ergo membra ejus, ipse: quòd autem ipse, non contínuò membra ejus. Nam si ipsi non essent membra ejus, non díceret: [Saule, quid me perséqueris?] Non enim Saulus ipsum, sed membra ejus, id est fidéles ejus in terra persequebátur. Nóluit tamen dícere, sanctos meos, servos meos, postrémò honorabíliùs fratres meos; sed me, hoc est, membra mea, quibus ego sum caput.

℟. Mundus me odit, * Quia ego testimónium perhíbeo de illo, quòd ópera ejus mala sunt. *Joan.* 7. *v.* 7. ℣. Os peccatóris & os dolósi super me apértum est. *Psal.* 108. 2. * Quia. *Repetitur*, Mundus.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. a. Ambulábat Jesus in Galilǽam, non enim volébat in Judǽam ambuláre; quia quærébant eum Judǽi interfícere. *Joan.* 7. 1.

*Preces flexis genibus*, *p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

NOstra tibi, Dómine, quǽsumus, sint accépta jejúnia: quæ nos expiándo, grátiâ tuâ dignos effíciant; & ad remédia perdúcant ætérna. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *c.* 82.

DO'ceant Sacerdótes, quod omnis utriúsque sexûs fidélis postquàm ad annos discretiónis vénerit, ómnia sua fidéliter confiteátur peccáta, saltem semel in anno, próprio sacerdóti, & injúnctam sibi pœniténtiam stúdeat própriis víribus adimpléré.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. d. Tempus meum nondùm advénit, tempus autem vestrum semper est parátum. *Joan.* 7. 6.

*Preces flexis genibus*, *p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

DA nobis, quǽsumus, Dómine, perseverántem in tua voluntáte famulátum: ut in diébus nostris, & mérito & número pópulus tibi sérviens augeátur. Per Dóminum.

FERIA QUARTA.

℣. Impropérium expectávit cor meum, ℟. Et misériam. *Psal.* 68. 21.

De Jeremía Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 7. 3.

*Confidere in templo vanum.*

HÆc dicit Dóminus exercítuum Deus Iʹsraël:

Bonas facite vias vestras, & stúdia vestra: & habitábo vobíscum in loco isto. Nolite confídere in verbis mendácii, dicéntes: Templum Dómini, templum Dómini, templum Dómini est. Quóniam si benè direxéritis vias vestras, & stúdia vestra: si fecéritis judícium inter virum & próximum ejus, ádvenæ, & pupíllo, & víduæ non fecéritis calúmniam, nec sánguinem innocéntem effudéritis in loco hoc, & post deos aliénos non ambulavéritis in malum vobísmetípsis: habitábo vobíscum in loco isto; in terra, quam dedi pátribus vestris à século & usque in séculum. Ecce vos confíditis vobis in sermónibus mendácii, qui non prófuerunt vobis; furári, occídere, adulterári, juráre mendáciter, libáre Báalim, & ire post deos aliénos, quos ignorátis. Et venístis, & stetístis coram me in domo hac, in qua invocátum est nomen meum, & dixístis: Liberáti sumus, eò quòd fecérimus omnes abominatiónes istas. Nunquid ergo spelúnca latrónum facta est domus ista, in qua invocátum est nomen meum in óculis vestris? Ego, ego sum, ego vidi, dicit Dóminus. Ite ad locum meum in Silo, ubi habitávit nomen meum à princípio: & vidéte quæ fécerim ei propter malítiam pópuli mei Israël.

℟. Inimíci, pag. 281.

LECTIO II. Cap. 8. 4.

*Sapientes confusi quòd verbum Domini projecerint.*

Dices ad eos: Hæc dicit Dóminus: Nunquid qui cadit, non resúrget? & qui avérsus est, non revertétur? Quómodò dícitis: Sapiéntes nos sumus, & lex Dómini nobíscum est? verè mendácium operátus est stylus mendax scribárum. Confúsi sunt sapiéntes, pertérriti & capti sunt: verbum enim Dómini projecérunt, & sapiéntia nulla est in eis. Proptéreà dabo mulíeres eórum éxteris, agros eórum herédibus: quia à mínimo usque ad máximum omnes avarítiam sequúntur: à prophéta usque ad sacerdótem cuncti fáciunt mendácium. Et sanábant contritiónem fíliæ pópuli mei ad ignomíniam, dicéntes: Pax: pax: cùm non esset pax. Confúsi sunt, quia abominatiónem fecérunt quinímò confusióne non sunt confúsi, & erubéscere nesciérunt: idcircò cadent inter corruéntes, in témpore visitatiónis suæ córruent, dicit Dóminus.

℟. Sicut Móyses, p. 281.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

Lectio III. *Cap.* 10. 22.

*Encaniorum Solemnitas.*

IN illo témpore; Facta sunt Encǽnia in Jerosólymis, & hyems erat, & ambulábat Jesus in templo, in pórticu Salomónis. Circundedérunt ergo eum Judǽi; & dicébant ei: Quoúsque ánimam nostram tollis? Si tu es Christus, dic nobis palàm. Respóndit eis Jesus: Loquor vobis, sed non créditis, quia non estis ex óvibus meis. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract. 48. in Joan.*

ENcǽnia festívitas erat dedicatiónis templi. Græcè enim cænon dícitur novum. Quandocúnque novum áliquid fúerit dedicátum, encǽnia vocántur. Illum enim diem quo templum dedicátum est, Judǽi solémniter celebrábant: ipse dies festus agebátur, cùm ea quæ lecta sunt locútus est Dóminus. Hiems erat, & ambulábat Jesus in templo, in pórticu Salomónis. Circundedérunt ergo eum Judǽi, & dicébant ei: Quoúsque ánimam nostram tollis? Si tu es Christus, dic nobis palàm. Non veritátem desiderábant, sed calúmniam præparábant. Hiems erat & frígidi erant: ad illum enim divínum ignem accédere pigri erant. Si accédere est crédere: qui credit, accédit: qui negat, recédit. Non movétur ánima pédibus, sed affectibus. Frigúerant diligéndi charitáte, & ardébant nocéndi cupiditáte. Longè áberant, & ibi erant: non accedébant credéndo, & premébant persequéndo. Quærébant audíre à Dómino, Ego sum Christus: & fortásse de Christo secúndùm hóminem sapiébant.

℟. O'pera quæ ego fácio in nómine Patris mei, hæc testimónium pérhibent de me. * Sed vos non créditis, quia non estis ex óvibus meis. *Joan.* 10. *v.* 25. 26. ℣. Ecce ego ipse requíram oves meas, & visitábo eas. *Ezech.* 34. 11. * Sed. *Repet.* O'pera.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. Ego vitam ætérnam do óvibus meis, & non períbunt in ætérnum, & non rápiet eas quisquam de manu mea, dicit Dóminus. *Joan.* 10. 28.

*Preces flexis genibus, pag.* 46.

Orémus. *Oratio.*

SAnctificáto hoc jejúnio, Deus, tuórum corda fidélium miserátor illústra: & quibus devotiónis præstas afféctum, præbe supplicántibus pium benígnus audítum. Per Dóminum.

C A N O N.

Ex Synodo Claromontána.

*Anno* 1263.

PRóprium sacerdótem dícimus duóbus modis: ex officio, útpote Papam, Epíscopum, Curátos; vel ex commissióne, sicut quibus Epíscopus commíserit suas vices.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. c. Si mihi non vultis crédere, opéribus crédite, ut cognoscátis & credátis, quia Pater in me est, & ego in Patre, dicit Dóminus. *Joan.* 10. 38.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

EXáudi, Dómine, quǽsumus, gémitum pópuli supplicántis, ut, qui de meritórum qualitáte diffídimus, non judícium, sed misericórdiam consequámur. Per Dóminum nostrum.

FERIA QUINTA.

℣. Captábunt in ánimam justi, ℟. Et sánguinem innocéntem condemnábunt. *Ps.* 93. 21.

De Jeremía Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 9. 1.

*Vix fratri fidendum.*

QUis dabit cápiti meo aquam, & óculis meis fontem lacrymárum? & plorábo die ac nocte interféctos filiæ pópuli mei. Quis dabit me in solitúdine diversórium viatórum, & derelínquam pópulum meum, & recédam ab eis? quia omnes adúlteri sunt, cœtus prævaricatórum. Et extendérunt linguam suam quasi arcum mendácii & non veritátis: confortáti sunt in terra, quia de malo in malum egréssi sunt, & me non cognovérunt, dicit Dóminus. Unusquísque se à próximo suo custódiat, & in omni fratre suo non hábeat fidúciam: quia omnis frater supplántans supplantábit, & omnis amícus fraudulénter incédet. Et vir fratrem suum deridébit, & veritátem non loquéntur: docuérunt enim linguam suam loqui mendácium: ut iníquè ágerent, laboravérunt. Habitátio tua in médio doli: in dolo renuérunt scire me; dicit Dóminus. Sagítta vúlnerans lingua eórum, dolum locúta est: in ore suo pacem cum amíco suo lóquitur, & occúltè ponit ei insídias. Nunquid super his non visitábo, dicit Dóminus? aut in gente hujúsmodi non ulciscétur ánima mea?

℟. Dixérunt ímpii, *p.* 614. 278

LECTIO II. *Cap.* 10. 1.

*A signis cœli non metuendum, sed ab indignatione Dei.*

AUdíte verbum, quod locútus est Dóminus super vos, domus Isráël. Hæc dicit Dóminus: Juxta vias Géntium nolíte díscere: &

à signis cœli nolíte metúere, quia nec malè possunt fácere nec benè. Non est símilis tui, Dómine: magnus es tu, & magnum nomen tuum in fortitúdine. Quis non timébit te, ô Rex Géntium? tuum est enim decus: inter cunctos sapiéntes Géntium, & in univérsis regnis eórum nullus est símilis tui. Páriter insipiéntes & fátui probabúntur: doctrína vanitátis eórum lignum est. Argéntum involútum de Tharsis affértur, & aurum de Ophaz: opus artíficis, & manûs ærárii: hyacínthus & púrpura induméntum eórum; opus artíficum univérsa hæc. Dóminus autem Deus verus est: ipse Deus vivens, & Rex sempitérnus: ab indignatióne ejus commovébitur terra: & non sustinébunt Gentes comminatiónem ejus. Sic ergo dicétis eis: Dii, qui cœlos & terram non fecérunt, péreant de terra, & de his quæ sub cœlo sunt.

℞. Date Dómino, *p.* 614. 678

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 7. 36.

*Peccatrix ungens Christum.*

IN illo témpore; Rogábat Jesum quidam de Pharisǽis, ut manducáret cum illo, & ingréssus domum Pharisǽi discúbuit. Et ecce múlier quæ erat in civitáte peccátrix, ut cognóvit quòd accubuísset in domo Pharisǽi áttulit alabástrum unguénti, & stans retrò secus pedes ejus, lácrymis cœpit rigáre pedes ejus, & capíllis cápitis sui tergébat, & osculabátur pedes ejus, & unguénto ungébat: Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.

*Hom.* 33. *in Evang.*

LIquet, fratres, quòd illicitis áctibus priùs múlier inténta, unguéntum sibi pro odóre suæ carnis adhibuit. Quod ergo sibi túrpiter exhibúerat, hoc jam Deo laudabíliter offerébat. O'culis terréna concupíerat, sed hos jam per pœniténtiam cónterens flebat. Capíllos ad compositiónem vultûs exhibúerat, sed jam capíllis lácrymas tergébat. Ore supérba dixérat, sed pedes Dómini ósculans, hoc in redemptóris sui vestígia figébat. Quot ergo in se hábuit oblectaménta, tot de se invénit holocáusta. Convértit ad virtútum númerum, númerum críminum, ut totum servíret Deo in pœniténtia, quicquid ex se Deum contémpserat in culpa.

℞. Stans múlier retrò secus pedes Jesu, lácrymis cœpit rigáre pedes ejus, & capíllis cápitis sui tergébat, * Et osculabátur pedes ejus, & unguénto ungébat. *Luc.* 7. 38.

℟. Cum lácrymis deprecabátur Deum, ut ab impropério liberáret eam. *Tob.* 3. 11.
* Et osculabátur. *Repetitur* Sum.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. f. Remittúntur ei peccáta multa, quóniam diléxit multùm. *Luc.* 7. 47.

*Preces flexis genibus*, *p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

Præsta, quæsumus, omnípotens Deus; ut dignitas conditiónis humánæ per immoderántiam sauciáta, medicinális parcimóniæ stúdio reformétur. Per Dóminum.

*CANON.*

Ex epístolis encýclicis Cœtûs Cleri Gallicáni.

*Anno* 1655.

PArochi sunt próprii Sacerdótes apud quos Concilium Lateranénse ánnuam confessiónem fieri jubet, sed próprii Sacerdótis offícium próprii Epíscopi dignitáte continétur.

FERIA SEXTA.

*Fit Officium de beata Maria compatiente.*

[*Si in hanc diem inciderit festum Incarnationis Domini, hoc anno nihil fiet de beata Maria compatiente.*]

*Duplex minus.*

AD PRIMAS VESPERAS.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 2. d. Cui comparábo te, Fília Jerúsalem? Cui exæquábo te, Virgo Fília Sion? *Thren.* 2. 13.

*Ant.* 4. a. Magna est velut mare contrítio tua; quis medébitur tui? *Ibid.*

*Ant.* 7. C. Ne vocétis me pulchram, sed amáram; quia amaritúdine valdè replévit me Omnípotens. *Ruth* 1. 20.

*Ant.* 3. c. Fília Sion oppréssa est amaritúdine; Egréssus est ab ea omnis decor ejus. *Thren.* 1. v. 4. 6.

*Ant.* 4. *irreg.* D. Ipsa gemens convérsa est retrórsùm: depósita est veheménter non habens consolatórem. *Ibid.* 8. 9.

*Capitulum. Thren.* 1. 20.

VIde, Dómine, quóniam tríbulor, conturbátus est venter meus: subvérsum est cor meum in memetípsa, quóniam amaritúdine plena sum. Foris intérficit gládius, & domi mors símilis est.

℟. Símeon dixit ad Maríam matrem Jesu: * Tuam ipsíus ánimam pertransíbit gládius. *Luc.* 2. *v.* 34. 35. ℣. Dabit tibi Dóminus ánimam consúmptam mœróre. *Deut.* 28. 65. * Tuam. *Non dicitur*, Glória Patri, *sed repetitur*. Símeon.

*Hymnus. Habert. Ep. Vabr.*

DUM spargit aram sánguine

Jesus salútis hóstia,
Præsens dolóris æmulum
María pectus ímmolat.

Caput cruéntum fílii
Matris corónat vérticem:
Clavis iísdem fígitur
Christus cruci, Christo parens.

O Passiónis mútuæ
Jesu, María cónscii,
Altérna vobis vúlnera
Inférre tandem párcite.

Quem vos dolétis, noster est
Error, furórque críminum:
Totum scelus faténtibus
Partem dolóris réddite.

Qui natus es de Vírgine,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre & almo Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

℣. Tribulatiónem meam ante ipsum pronúntio, ℟. In deficiéndo ex me spíritum meum. *Ps.* 141. *v.* 3. 4.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Plangent eum planctu quasi super unigénitum, & dolébunt super eum, ut doléri solet in morte primogéniti. *Zach.* 12. 10.

Orémus. *Oratio.*

Intervéniat pro nobis, quæsumus, Dómine, apud tuam cleméntiam, nunc & in hora mortis nostræ beáta Virgo María mater tua; cujus ánimam in hora passiónis tuæ dolóris gládius pertransívit. Qui vivis & regnas.

*Pro commemoratione Feriæ.*

*Ant.* Dixit Jesus ad mulíerem: Fides tua te salvam fecit, vade in pace. *Luc.* 7. 50.

℣. Miserére mei, Deus, quóniam conculcávit me homo: ℟. Totâ die impúgans tribulávit me. *Ps.* 55. 2.

Orémus. *Oratio.*

Esto, quæsumus, Dómine, propítius plebi tuæ; ut quæ tibi non placent respuéntes, tuórum pótiùs repleántur delectatiónibus mandatórum; Per Dóminum.

*Ad Completorium, ut in Quadragesima, ad Hymnum Doxologia:* Qui natus es de Vírgine, Jesu tibi sit glória.

Ad Officium Nocturnum.

*Invitatorium*, Jesum crucifixum juxta cujus crucem stabat mater ejus * Venite adorémus. *Joan.* 19. *v.* 25.

*Psalmus*, Venite, *sine* Glória Patri.

*Hymnus*, Dum spargit, *ut suprà in Vesperis, p.* 

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 7. g. Confitébor tibi in séculum, & expectábo nomen tuum, quóniam bonum est in conspéctu sanctórum tuórum. *Psal.* 51. 11.

*Ant.* 2. d. Cor meum conturbátum est in me, & for-

...do mortis cécidit supe: me. Psal. 54. 5.
Ant. 1. a. Jacta super Dó...num curam tuam; non ...bit in ætérnum fluctuatió...m. Ibid. 23.
Ant. 5. a. E'ripe me de ...rántibus iniquitátem, Deus ...us, & de viris sánguinum ...va me. Psal. 58. 3.
Ant. 3. g. Factus es sus...ptor meus, Dómine, & ...gium meum in die tri...atiónis. Ibid. 17.
Ant. 8. g. A' fínibus ter...d te clamávi, dùm an...tur cor meum. Ps. 60. 3.
...4. irr. d. Laborávi cla...s; defecérunt óculi mei, ...spero in Deum vivum. ...l. 68. 4.
Ant. 6. F. Propter te susti... oppróbrium, Deus I'sraël: ...ruit confúsio fáciem ...m. Psal. 68. 8.
...t. 7. C. Tu scis impro...um meum, & confusió... meam, & reveréntiam ...m. Ibid. 20.
... Super me confirmátus furor tuus, ℟. Et omnes ...tus tuos induxísti super ... Psal. 87. 8.

Ex libro Threnórum.

Lectio I. Cap. 2. 1.

Q Uómodò obtéxit calí...gine in furóre suo Dó...nus fíliam Sion: projécit ... cœlo in terram ínclytam ...raël, & non est recordátus scabélli pedum suórum in die furóris sui. Præcipitávit Dóminus, nec pepércit, ómnia speciósa Jacob: destrúxit in furóre suo munitiónes vírginis Juda, & dejécit in terram: pólluit regnum, & príncipes ejus. Confrégit in ira furóris sui omne cornu I'sraël: avértit retrórsùm déxteram suam à fácie inimíci: & succéndit in Jacob quasi ignem flammæ devorántis in gyro. Teténdit arcum suum quasi inimícus, firmávit déxteram suam quasi hostis: & occídit omne quod pulchrum erat in tabernáculo fíliæ Sion.

℟. Supra modum mater mirábilis pereúntem fílium conspíciens, bono ánimo ferébat propter spem quàm in Deum habébat: * Repléta sapiéntiâ, & femíneæ cogitatióni masculínum ánimum ínserens. 2. Machab. 7. v. 20. 21. ℣. Stabat juxta crucem Jesu mater ejus. Joan. 19. 25. * Repléta.

Lectio II. v. 14

Sermo sancti Bernárdi Abbátis.

*De duab. prærogat.*

M Artyrium Vírginis tam in Simeónis prophétia, quàm in ipsa Domínicæ passiónis história commendátur. [ Pósitus est hic, ( ait Sanc-

tus senex de párvulo Jesu,) in signum cui contradicétur & tuam ipsíus ánimam (ad Maríam autem dicébat) pertransíbit gládius. ] Verè tuam, ô beáta Mater, ánimam gládius pertransívit. Alióquin non nisi eam pertrânsiens, carnem filii tui penetráret. Et quidem posteáquàm emísit spíritum tuus ille Jesus, (ómnium quidem, sed speciáliter tuus.) Ipsíus planè non áttigit ánimam crudélis láncea quæ ipsíus (nec mórtuo parcens, cui nocére non posset) apéruit latus, sed tuam útique ánimam pertransívit. An non tibi plusquàm gládius fuit sermo ille revérà pertránsiens ánimam & pertíngens usque ad divisiónem ánimæ & spíritûs; [ Múlier, ecce filius tuus. ] O commutatiónem! Joánnes tibi pro Jesu tráditur, servus pro Dómino, discípulus pro magístro, filius Zebedæi pro filio Dei, homo purus pro Deo vero. Quómodò non tuam affectuosíssimam ánimam pertransíret hæc audítio, quando & nostra, licet sáxea, licet férrea péctora, recordátio scindit!

℞. Dedúcant óculi mei lácrymam per noctem & diem & non táceant: quóniam * Contritióne magnâ contríta est virgo fília pópu-

li mei plagâ péssimâ ve-
ménter. *Jer.* 14. 17. ℣.
cit Jesus discípulo: Ecce
ter tua. *Joan.* 19. 27. * C
tritióne.

Léctio sancti Evangélii
cúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 19.

IN illo témpore; Sta
juxta crucem Jesu m
ejus, & soror matris
María Cléophæ, & M
Magdaléne. Cùm vid
ergo Jesus matrem & d
pulum stantem quem di
bat, dicit matri suæ: Mú
ecce filius tuus. Deínd
cit discípulo: Ecce
tua. Et réliqua.

Homilía sancti Augu
Epíscopi.

*In Joan. Tract.* 119.
*& 2.*

CUm vidísset Jesu
trem & discípulum
tem quem diligébat,
matri suæ: Múlier, ecce
tuus: Deínde dicit discí
Ecce mater tua. Et e
hora accépit eam discí
in sua. Morális insinuátu
cus. Facit quod faciénd
ádmonet, & exémplo
suos instrúxit præcéptor
nus, ut à fíliis piis im
dátur cura paréntibus:
quàm lignum illud, ubi e
fixa membra moriéntis,
cáthedra fúerit magístri

tis. Ex hac sana doctrína
cerat Paulus Apóstolus
d docébat, quando dicé-
[ Si quis autem suis, &
mè doméſticis non pró-
, fidem negávit, & est
éli detérior. ] Quid au-
ám cuíque doméſticum,
paréntes fíliis, aut pa-
us fílii? In cujus itaque
rrimi præcépti ipse
ter sanctórum de se ip-
stituébat exémplum,
o non ut fámulæ Deus
creáverat & regébat,
matri homo, de qua
fúerat, & quam re-
at, álterum pro se
mmodò fílium provi-
.

Cùm vidísset Jesus ma-
& discípulum stantem
diligébat, * Dicit ma-
; Múlier, ecce fílius
*Joan.* 19. 26. ℣. Fili
mi: Quis mihi tríbuat
mórіar pro te, fili mi.
18. 33. * Dicit. *Re-*
Cùm vidísset.
sancti Evangélii se-
cúndùm Joánnem.
tio IV. *Cap.* 11. 47.
*Prophetia Caiphæ.*
llo témpore; Collegé-
Pontífices & Phari-
oncílium, & dicébant:
fácimus, quia hic ho-
ulta signa facit? Si di-
us eum sic, omnes
t in eum, & vénient
Románi, & tollent nostrum
locum, & Gentem. Et réli-
qua.

Homilía sancti Augustíni
Epíscopi.
*Tract. 49. in Joan. n. 26.*

Dicébant Pontífices & Pharisǽi: Quid fácimus? nec tamen dicébant: Credámus. Plùs enim pérditi hómines cogitábant, quómodò nocérent ut pérderent, quàm quómodò sibi consúlerent, ne períret; & tamen timébant; & quasi consulébant. Dicébant enim: Quid fácimus, quia hic homo multa signa facit? [ Si dimíttimus eum sic, omnes credent in eum, & vénient Románi, & tollent nostrum locum, & Gentem.] Temporália pérdere timuérunt, & vitam ætérnam non cogitavérunt, ac sic utrúmque amisérunt. Nam & Románi post Dómini passiónem & glorificatiónem tulérunt eis & locum & Gentem, expugnándo & transferéndo; & illud eos séquitur quod álibi dictum est: [Fílii autem regni hujus ibunt in ténebras exterióres. ]

*Non dicitur*, Te Deum.



AD LAUDES
MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis*, Quándiù ponam consília in ánima mea, ℟. Dolórem in corde meo per diem? *Ps.* 12. 2.

*Psalmi de Feria. Canticum*, Ipse vulnerátus est, *ut in Dom. Pass. p.* (618) 282.

*Ant.* 8. c. O vos omnes qui transítis per viam, atténdite, & vidéte si est dolor sicut dolor meus. *Thren.* 1. 12.

*Ant.* 5. f. Defecérunt præ lácrymis óculi mei, conturbáta sunt víscera mea. *Thren.* 2. 11.

*Ant.* 3. A. Generátio mea abláta est & convolúta est à me, Dómine, vim pátior. *Isa.* 38. *v.* 12. 14.

*Ant.* 7. c. Dedúcant óculi nostri lácrymas; vox lamentatiónis audíta est de Sion. *Jer.* 9. *v.* 18. 19.

*Ant.* 2. d. Vocem quasi parturiéntis audívi, angústias ut puérperæ intermoriéntis, expandentísque manus suas. *Jerem.* 4. 31.

*Capitulum. Thren.* 3. *v.* 48. 49.

DIvisiónes aquárum dedúxit óculus meus, in contritióne fíliæ pópuli mei. O'culus meus afflíctus est, nec tácuit, eò quòd non esset réquies.

*Hymnus.*

ILLÆ'SA, te, puérpera
Non fécerat matrem dolor;
Nascénte quem nescíveras
Orbáta sentis fílio.

DU'M te salútat últimùm
Natóque tradit álteri,
Natúmque tradit álterum,
In morte Christum páitu

NON ejulántem cérnim
Non ungue velléntem co
Silénsque plùs novit pati
Virtus dolóre fórtior.

QUI natus es de Virg
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre & almo Spiri
In sempitérna sécula.
Amen.

℣. Sagíttæ tuæ infixæ in me: ℟. Et confirmásti su me manum tuam. *Ps.* 37

*Ant.* 6. *irr.* Dolor meus per dolórem, in me cor m mœrens: Ecce vox cla fíliæ pópuli mei. *Jer.* 18. 19.

Orémus. *Ora*

INtervéniat pro no quæsumus, Dómine, tuam cleméntiam, nu in hora mortis nostræ Virgo María mater tua jus ánimam, in hora nis tuæ dolóris gládiu transívit; Qui vivis gnas.

*Pro commemoratione*

*Antiph.* Unus ex Caïphas nómine, dixi E'xpedit vobis, ut unus riátur homo pro pópul non tota Gens péreat. 11. *v.* 49. 50.

℣. Dixi: Ecce vénio cápite libri scriptum me. *Psal.* 39. 8.

Orémus. *Oratio.*

COrdibus nostris, quǽsumus, Dómine, grátiam [tu]am benígnus infúnde: ut, [p]eccáta nostra castigatióne [v]oluntáriâ cohibéntes, temporáliter pótiùs macerémur, [q]uàm suppliciis deputémur [æt]érnis; Per Dóminum.

*Ad Horas in fine Hymno[ru]m dicitur Doxologia:* Qui [na]tus est de Vírgine, Jesu, [T]ibi sit glória.

AD PRIMAM.

*Ant.* 8. c. O vos omnes.

[In] ℟. *brevi*, ℣. Qui natus de María Vírgine, *non [dici]tur*, Glória Patri.

*CANON.*

[Ex] Epístolis encyclicis Cœtûs Cleri Gallicáni.

*Anno* 1655.

[F]idéles qui paschális communiónis grátiâ confi[ciu]ntur, non solùm suis Epís[copis], eórum Vicáriis Gene[ral]ibus & Pœnitentiáriis, ve[rùm] étiam quibúslibet Sacer[dot]ibus seculáribus vel Regu[lar]ibus ab Epíscopis ad hanc [fun]ctiónem approbátis, Late[ra]nénsis Concílii præcéptum [de] ánnua confessióne implent.

AD TERTIAM.

*Ant.* 5. f. Defecérunt.

*Capitulum. Thren.* 2. 18.

DEduc quasi torréntem lácrymas per diem & [n]óctem: non des réquiem tibi, neque táceat pupílla óculi tui.

℟. *breve.* Fuérunt mihi lácrymæ meæ panes * Die ac nocte. *Repet.* Fuérunt. ℣. Dùm dícitur mihi quotídiè: Ubi est Deus tuus? * Die. *Repetitur,* Fuérunt.

℣. Defécit in dolóre vita mea: ℟. Et anni mei in gemítibus. *Ps.* 41. 4. *&* 30. 11.

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. A. Generátio mea.

*Capitulum. Job.* 30. *v.* 27. 28.

INterióra mea efferbuérunt absque ulla réquie, prævenérunt me dies afflictiónis: mœrens incedébam.

℟. *br.* Cor meum conturbátum est, * Derelíquit me virtus mea. *Repet.* Cor meum. ℣. Et lumen oculórum meórum. * Derelíquit. *Repetitur,* Cor meum.

℣. Inténde in adjutórium meum, ℟. Dómine Deus salútis meæ. *Psal* 37. *v.* 11. 23.

AD NONAM.

*Ant.* 2. d. Vocem.

*Capitulum. Thren.* 1. 16.

EGo plorans & óculus meus dedúcens aquas, quia longè factus est à me consolátor, convértens ánimam meam.

℟. *br.* O'mnia excélsa tua * Et fluctus tui. *Repetitur,* O'mnia ℣. Super me transié-

runt. * Et fluctus tui. *Repet.* O'mnia.

℣. Repléta est malis ánima mea: ℟. Et vita mea inférno appropinquávit. *Psal.* 41. 8. *&* 87. 4.

## AD VESPERAS.

*Ant.* O vos omnes, *cum ceteris de Laudibus.*

*Psalmi feriales.*

*Capitulum. Thren.* 2. 1.

QUómodò obtéxit calígine in furóre suo Dóminus fíliam Sion: projécit de cœlo in terram ínclytam I'sraël, & non est recordátus scabélli pedum suórum in die furóris sui.

*Hymnus.*

DUM spargit, *ut in primis Vesperis, p.* 297.

℣. Factum est cor meum tanquàm cera liquéscens ℟. In médio ventris mei. *Psal.* 21. 15.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. a. Stabant juxta crucem Jesu mater ejus, & soror matris ejus; María Cléophæ, & María Magdaléne. *Joan.* 19. 25.

*Oratio.* Intervéniat, *ut suprà ad Laudes, p.* 302.

*Pro commemoratione Feriæ,*

*Ant.* Prophetávit Póntifex, quòd Jesus moritúrus erat non tantùm pro Gente, sed ut fílios Dei, qui erant dispérsi, congregáret in unum. *Joan.* 11. *v.* 51. 52.

℣. Miserére mei, Deus, quóniam conculcávit me homo: ℟. Totâ die impúgnans tribulávit me. *Psal.* 55. 2.

Orémus. *Oratio.*

COncéde, quæsumus Omnipótens Deus, ut qui protectiónis tuæ grátiam quærimus, liberáti à mal ómnibus, secúrâ tibi men serviámus; Per Dóminum.

## SABBATO.

℣. Impropérium expect vit cor meum, ℟. Et mi riam. *Psal.* 68. 21.

De Jeremía Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 12.

*Judicium Dei in impi*

JUstus quidem tu es, D mine, si dísputem tec verúntamen justa loquar te: Quare via impiórum p perátur? benè est ómnib qui prævaricántur, & in agunt? Plantásti eos, & r cem misérunt; proficiu & fáciunt fructum: propè tu ori eórum, & longè à nibus eórum. Et tu, Dómi nosti me, vidísti me, & p básti cor meum tecum. P tóres multi demolíti sunt neam meam, conculcavéru partem meam: dedérunt p tiónem meam desiderábi in desértum solitúdinis. P suérunt

posuérunt eam in dissipatiónem, luxítque super me : desolatióne desoláta est omnis terra : quia nullus est qui recógitet corde. Super omnes vias desérti venérunt vastatóres, quia gládius Dómini devorábit ab extrémo terræ usque ad extrémum ejus : non est pax univérsæ carni. Seminavérunt tríticum, & spinas messuérunt : hereditátem accepérunt, & non eis próderit : confundémini à frúctibus vestris, prŏpter iram furóris Dómini.

℟. Inimíci, *p.* 281.

LECTIO II. *Cap.* 14. 11.

*Pseudo-prophetæ cum populis consumendi.*

Dixit Dóminus ad me : Noli oráre pro pópulo isto in bonum. Cùm jejunáverint, non exáudiam preces eórum : & si obtúlerint holocaustómata, & víctimas, non suscípiam ea ; quóniam gládio, & fame, & peste consúmam eos. Et dixi : A, a, a, Dómine Deus : Prophétæ dicunt eis : Non vidébitis gládium, & fames non erit in vobis, sed pacem veram dabit vobis in loco isto. Et dixit Dóminus ad me : Falsò prophétæ vaticinántur in nómine meo : non misi eos, & non præcépi eis, neque locútus sum ad eos : visiónem mendácem & divinatiónem, & frauduléntiam, & seductiónem cordis sui prophétant vobis. Idcírcò hæc dicit Dóminus de prophétis, qui prophétant in nómine meo, quos ego non misi, dicéntes : Gládius & fames non erit in terra hac : In gládio & fame consuméntur prophétæ illi. Et pópuli quibus prophétant, erunt projécti in viis Jerúsalem præ fame & gládio, & non erit qui sepéliat eos ; ipsi & uxóres eórum, fílii & fíliæ eórum, & effúndam super eos malum suum. Et dices ad eos verbum istud : Dedúcant óculi mei lácrymam per noctem & diem, & non táceant : quóniam contritióne magnâ contríta est virgo fília pópuli mei plagâ péssimâ veheménter.

℟. Audívi contumélias, & terrórem in circúitu ab ómnibus viris, qui erant pacífici mei : * Persequímini, & persequámur eum, si consequámur ultiónem ex eo. *Jerem.* 20. 10. ℣. Pharisǽi dixérunt ad semetípsos : Vidétis quia nihil profícimus. *Joan.* 12. 19. * Persequímini.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 12. 10.

*Clarificatio Christi in Jerusalem.*

In illo témpore : Cogitavérunt Príncipes Sacerdó-

tum, ut & Lázarum interfícerent; quia multi propter illum abíbant ex Judæis, & credébant in Jesum. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract. 50. in Joann.*

AUdíte mirábile consílium vanitátis. Viso Lázaro resuscitáto, quia tantum miráculum Dómini tantâ erat evidéntiâ diffamátum, tantâ manifestatióne declarátum, ut non possent vel occultáre quod factum est, vel negáre: quid invenérunt, vidéte. [ Cogitavérunt autem Príncipes Sacerdótum, ut & Lázarum interfícerent. ] O stulta cogitátio, & cæca sævítia! Dóminus Christus, qui suscitáre pótuit mórtuum, non posset occísum? Quando Lázaro inferebátis necem, nunquid auferebátis Dómino potestátem? Si áliud vobis vidétur mórtuus, áliud occísus: ecce Dóminus utrúmque fecit, & Lázarum mórtuum, & seipsum suscitávit occísum.

℟. Adhuc módicum lumen in vóbis est: * Ambuláte dùm lucem habétis, ut non vos ténebræ comprehéndant. *Joan.* 12. 35. ℣. Date Dómino Deo vestro glóriam, ántequàm contenebréscat. *Jerem.* 13. 16. * Ambuláte. *Repet.* Adhuc.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 5. a. Nunc judícium est mundi; nunc princeps hujus mundi ejiciétur forás. *Joan.* 12. 31.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

Orémus. *Oratio.*

PRofíciat, quæsumus, Dómine, plebs tibi dicáta, piæ devotiónis affectu: ut, sacris actiónibus erudíta, quantò majestáti tuæ fit grátior, tantò donis potióribus augeátur. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit & regnat in unitáte Spíritûs sancti Deus, Per.

*CANON.*

Ex Concílio Tridentino *Anno* 1545. *Sess.* 13. *Can.*

SI quis negáverit, omnes & síngulos Christi fidéles utriúsque sexûs, cùm annos discretiónis pervénerint, tenéri síngulis annis, saltem in Páschate, ad communicándum, juxta præcéptum sanctæ matris Ecclésiæ, anáthema sit.

AD VESPERAS.

*Antiphonæ & Psalmi, in Psalterio.*

*Capitulum. Jerem.* 26. 15.

SCitóte, & cognóscite quòd si occidéritis me, sánguinem innocéntem tradétis contra vosmetípsos & contra civitátem istam, &

habitatóres ejus ; in veritáte enim misit me Dóminus ad vos.

℟. Circumdedérunt me, *Hymnus*, Vexílla, *pag.* 275. *Versic.* E'ripe, *p.* 276.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 7. C. Exúlta satis, fília Sion, júbila, fília Jerúsalem : Ecce Rex tuus véniet tibi justus, & Salvátor : ipse pauper, & ascéndens super ásinam, & super pullum fílium ásinæ. *Zach.* 9. 9.

Orémus. *Oratio.*

OMnípotens, sempitérne Deus, qui humáno géneri, ad imitándum humilitátis exémplum, Salvatórem nostrum carnem súmere, & crucem subíre fecísti ; concéde propítius, ut & patiéntiæ ipsíus habére documénta, & resurrectiónis consórtia mereámur. Per eúmdem Dóminum nostrum.

---

DOMINICA
IN RAMIS PALMARUM.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitatorium, Hymnus, ut in Dominica Passionis : Psalmi ut in Psalterio.*

IN I. NOCTURNO.

℣. Captábunt in ánimam justi, ℟. Et sánguinem innocéntem condemnábunt. *Psal.* 93. 21.

De Jeremía Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 17. 5.

*In solo Deo confidendum.*

HÆc dicit Dóminus : Maledíctus homo, qui confídit in hómine, & ponit carnem bráchium suum, & à Dómino recédit cor ejus. Erit enim quasi myricæ in desérto, & non vidébit cùm vénerit bonum : sed habitábit in siccitáte in desérto, in terra salsúginis, & inhabitábili. Benedíctus vir, qui confídit in Dómino, & erit Dóminus fidúcia ejus. Et erit quasi lignum quod transplantátur super aquas, quod ad humórem mittit radíces suas : & non timébit cùm vénerit æstus. Et erit fólium ejus víride, & in témpore siccitátis non erit sollícitum, nec aliquándo désinet fácere fructum. Pravum est cor ómnium, & inscrutábile : quis cognóscet illud ? Ego Dóminus scrutans cor, & probans renes : qui do unicuíque juxta viam suam, & juxta fructum adinventiónum suárum.

℟. Décimâ die mensis hujus, tollat unusquísque agnum per famílias, & domos suas : * Immolabítque eum univérsa multitúdo filiórum I'sraël quartâ-décimâ die ad vésperam. *Exod.* 12. *v.* 3. 6. ℣. Ecce appropinquávit hora, & Fi-

lius hóminis tradétur in manus peccatórum. *Matth.* 26. 45. * Immolabítque.

LECTIO II. *Cap.* 18. 5.

*Opera recta clementiam Dei, prava ejus iram adducunt.*

FActum est verbum Dómini ad me, dicens: Nunquid sicut fígulus iste, non pótero vobis fácere, domus Israël, ait Dóminus? Ecce sicut lutum in manu fíguli, sic vos in manu mea, domus Israël. Repéntè loquar advérsùm Gentem, & advérsùs regnum, ut eradícem, & déstruam, & dispérdam illud. Si pœniténtiam égerit Gens illa à malo suo, quod locútus sum advérsùs eam: agam & ego pœniténtiam super malo, quod cogitávi ut fácerem ei. Et súbitò loquar de Gente & de regno, ut ædíficem & plantem illud. Si fécerit malum in óculis meis, ut non áudiat vocem meam: pœniténtiam agam super bono, quod locútus sum ut fácerem ei. Sicut ventus urens, dispérgam eos coram inimíco: dorsum & non fáciem osténdam eis in die perditiónis eórum.

℟. Dixérunt ímpii: Circunveniámus justum, quóniam contrárius est opéribus nostris: * Excæcávit enim illos malítia eórum, & nesciérunt sacraménta Dei. *Sap.* 2. *v.* 12. 21. 22. ℣. Cogitavérunt Pontífices & Pharisæi, ut interfícerent Jesum. *Joan.* 11. 53. * Excæcávit.

LECTIO III. *Cap.* 20. 7.

*Jeremiæ querela de sua sorte.*

SEduxísti me, Dómine, & sedúctus sum: fórtior me fuísti & invaluísti: factus sum in derísum totâ die, omnes subsánnant me. Quia jam olim loquor, vocíferans iniquitátem, & vastitátem clámito: & factus est mihi sermo Dómini in oppróbrium, & in derísum totâ die. Et dixi: Non recordábor ejus, neque loquar ultrà in nómine illius: & factus est in corde meo quasi ignis exæstuans, clausúsque in óssibus meis: & defécì, ferre non sústinens. Audívi enim contumélias multórum, & terrórem in circúitu: Persequímini, & persequámur eum: ab ómnibus viris, qui erant pacífici mei, & custodiéntes latus meum: si quo modo decipiátur, & prævaleámus advérsùs eum, & consequámur ultiónem ex eo. Dóminus autem mecum est quasi bellátor fortis.

℟. Fratres meos longè fecit à me, & * Noti mei quasi aliéni recessérunt à me, & qui me nóverant oblíti sunt mei.

*Job* 19. *v.* 13. 14. ℣. Ecce venit hora, ut dispergámini unusquísque in própria, & me solum relinquátis. *Joan.* 16. 32. *Noti mei. *Repet.* Fratres.

IN II. NOCTURNO.

℣. E'ripe me, Dómine, de mánibus inimicórum meórum, ℞. Et à persequéntibus me. *Psal.* 30. 16.

De Isaía Prophéta.

LECTIO IV. *Cap.* 53. 1.
*Vir dolorum.*

QUis crédidit audítui nostro? Et bráchium Dómini cui revelátum est? Et ascéndet sicut virgúltum coram eo, & sicut radix de terra sitiénti: non est spécies ei, neque decor: & vídimus eum, & non erat aspéctus, & desiderávimus eum. Despéctum & novíssimum virórum, virum dolórum, & sciéntem infirmitátem: & quasi abscónditus vultus ejus & despéctus, unde nec reputávimus eum. Verè languóres nostros ipse tulit, & dolóres nostros ipse portávit: & nos putávimus eum quasi leprósum, & percússum à Deo & humiliátum.

℞. Audívi contumélias & terrórem in circúitu ab ómnibus viris, qui erant pacífici mei: * Persequímini, & persequámur eum, si consequámur ultiónem ex eo. *Jerem.* 20. 10. ℣. Pharisǽi dixérunt ad semetípsos: Vidétis quia nihil profícimus. *Joan.* 12. 19. * Persequímini.

LECTIO V. *v.* 5.
*Omnium iniquitas in uno posita.*

IPse vulnerátus est propter iniquitátes nostras, attrítus est propter scélera nostra: disciplína pacis nostræ super eum, & livóre ejus sanáti sumus. Omnes nos quasi oves errávimus, unusquísque in viam suam declinávit: & pósuit Dóminus in eo iniquitátem ómnium nostrûm. Oblátus est quia ipse vóluit, & non apéruit os suum: sicut ovis ad occisiónem ducétur, & quasi agnus coram tondénte se obmutéscet, & non apériet os suum. De angústia, & de judício sublátus est: generatiónem ejus quis enarrábit? quia abscíssus est de terra vivéntium: propter scelus pópuli mei percússi eum.

℞. Vim faciébant qui quærébant ánimam meam; & qui inquirébant mala mihi, locúti sunt vanitátes, * Et dolos totâ die meditabántur. *Psal.* 37. 13. ℣. Quærébant summi Sacerdótes & Scribæ quómodò Jesum dolo tenérent, & occíderent. *Marc.* 14. 1. * Et dolos.

LECTIO VI. *v. 9.*

*Passionis fructus, multitudo credentium.*

DAbit ímpios pro sepultúra, & dívitem pro morte sua: eò quòd iniquitátem non fécerit, neque dolus fúerit in ore ejus. Et Dóminus vóluit contérere eum in infirmitáte: si posúerit pro peccáto ánimam suam, vidébit semen longævum, & volúntas Dómini in manu ejus dirigétur. Pro eo quòd laborávit ánima ejus, vidébit & saturábitur; in sciéntia sua justificábit ipse justus servus meus multos, & iniquitátes eórum ipse portábit. Ideò dispértiam ei plúrimos, & fórtium dívidet spólia, pro eo quòd trádidit in mortem ánimam suam, & cum sceleràtis reputátus est: & ipse peccáta multórum tulit, & pro transgressóribus rogávit.

℟. Vidérunt, & odérunt & me, & Patrem meum * Ut adimpleátur sermo qui in lege eórum scriptus est; Quia ódio habuérunt me gratis. *Joan.* 15. *v.* 24. 25. ℣. Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus; cùm loquébar illis, impugnábant me gratis. *Psal.* 119. 7. * Ut adimpleátur. *Repet.* Vidérunt.

IN III. NOCTURNO.

℣. Impropérium expectávit cor meum, ℟. Et misériam. *Psal.* 68. 21.

De Epistola beàti Pauli Apóstoli ad Philippénses.

LECTIO VII. *Cap.* 2. 5.

*Christus exinanitus.*

HOc sentíte in vobis, quod & in Christo Jesu: qui cùm in forma Dei esset, non rapínam arbitrátus est esse se æquálem Deo: sed semetípsum exinanívit formam servi accípiens, in similitúdinem hóminum factus, & hábitu invéntus ut homo. Humiliávit semetípsum factus obédiens usque ad mortem, mortem autem crucis.

℟. Inimíci mei dixérunt mala mihi: * Quando moriétur, & períbit nomen ejus. *Ps.* 40. 6. ℣. Quærébant falsum testimónium contra Jesum, ut eum morti tráderent. *Matth.* 26. 59. * Quando.

LECTIO VIII. *v. 9.*

*Christus exaltatus.*

PRopter quod & Deus exaltávit illum, & donávit illi nomen, quod est super omne nomen; ut in nómine Jesu omne genu flectátur cœléstium, terréstrium & infernórum; & omnis lingua confiteátur, quia Dóminus Jesus Christus in glória est Dei Patris.

℟. Sicut Móyses exaltávit serpéntem in desérto, * Ita exaltári opórtet Fílium hómi-

nis, ut omnis qui credit in ipsum, non péreat, sed hábeat vitam ætérnam. *Joan.* 3. *v.* 14. 15. ℣. Fecit Móyses serpéntem æneum, & pósuit eum pro signo; quem cùm percússi aspícerent, sanabántur. *Num.* 21. 9. * Ita.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO IX. *Cap.* 21. 1.

*Triumphalis ingressus Christi in Jerusalem.*

IN illo témpore; Cùm appropinquássent Jerosólymis & venissent Béthphage ad montem Olivéti; tunc Jesus misit duos discípulos, dicens eis: Ite in Castéllum, quod contra vos est, & statim inveniétis ásinam alligátam, & pullum cum ea; sólvite & addúcite mihi. Et adduxérunt ásinam & pullum, & imposuérunt super eos vestiménta sua, & eum désuper sedére fecérunt. Et réliqua.

Homilía sancti Justini Mártyris.

*Apologia 2. ad Imperat. Antoninum Senatumque Romanum, Anno* 150.

PUllus quidam ásinæ in vici cujúsdam intróitu ad vitem vinctus, & deligátus stetit, quem tùm discípulis, ut ad se addúcerent, Christus imperávit. Qui cùm addúctus fuisset, in eo sedit, introivitque Jerosólyma, qua in Urbe máximum erat templum Judæórum, quod pósteà à vobis evérsum est; idémque pósteà in crucem actus est, ut réliquum prophetíæ implerétur. Atque ut intelligátis prædíctum esse eum planè in ásinæ pullo sessúrum introiturúmque Jerosólyma, Prophétæ vaticinatiónis verba commemorábimus: sunt autem hæc: Gaude veheménter fília Sion, prædica fília Jerúsalem, ecce Rex tuus venit tibi mansuétus, in ásina sedens, pullóque juménti. Cùm autem Prophetárum verba quasi à persóna audítis, nolíte ea ab iis, qui Spíritu affláti sunt, dici existimáre, sed à Verbo divíno quod eos pérmovet.

℟. Turba multa cùm audíssent quia venit Jesus Jerosólymam, accepérunt ramos palmárum, & clamábant: Hosánna, * Benedíctus qui venit in nómine Domini. *Joan.* 12. *v.* 12. 13. ℣. O Dómine, salvum me fac, ô Dómine, benè prosperáre, * Benedíctus qui venit in nómine Dómini. *Ps.* 117. 26. *Repet.* Turba multa.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Deus meus es tu, ne discésseris à me: ℟. Quóniam tribulátio próxima est. *Ps.* 21. *v.* 11. 12.

*Psalmi de Dominica excepto Cantico.*

*Ant.* 4. *irr.* D. Pópuli dicébant: Hic est Jesus Prophéta à Názareth Galilǽæ. *Matth.* 21. 11.

*Ant.* 7. c. Vidéntes príncipes Sacerdótum & Scribæ mirabília, quæ fecit, & púeros clamántes: Hosánna fílio David, indignáti sunt. *Matth.* 21. 15.

*Ant.* 2. d. Dixérunt ei: Audis quid isti dicunt? Jesus autem dixit eis: Quia ex ore infántium & lacténtium perfecísti laudem. *Matt.* 21. 16.

*Ant.* 6. f. Hoc totum factum est.

*Canticum Zach.* 9. 9.

EXúlta satis, fília Sion, * júbila, fília Jerúsalem:

Ecce Rex tuus véniet tibi, * Justus & Salvátor,

Ipse pauper & ascéndens super ásinam, * & super pullum fílium ásinæ.

Et dispérdam quadrígam ex E'phraim, * & equum de Jerúsalem,

Et dissipábitur arcus belli, * & loquétur pacem Géntibus,

Et potéstas ejus à mari, * usque ad mare,

Et à flumínibus, * usque ad fines terræ.

Tu quoque in sánguine testaménti tui emisísti vinctos tuos de lacu, * in quo non est aqua.

Convertímini ad munitiónem, vincti spei, * hódie quoque annúntians duplícia reddam tibi.

*Ant.* Hoc totum factum est, ut adimplerétur quod dictum est per Prophétam dicéntem: Dícite fíliæ Sion: Ecce Rex tuus venit. *Matth.* 21. *v.* 4. 5.

*Ant.* 3. g. Quærébant Jesum pérdere: & non inveniébant, quid fácerent illi. *Luc* 19. *v.* 47. 48.

*Capitulum. Philip.* 2. 5.

FRatres, Hoc sentíte in vobis, quod & in Christo Jesu: qui cùm in forma Dei esset, non rapínam arbitrátus est esse, se æquálem Deo, sed semetípsum exinanívit formam servi accípiens, in similitúdinem hóminum factus, & hábitu invéntus ut homo.

*Hymnus.* LUSTRIS sex, *p.* 2..

℣. Lætétur I'sraël in eo, qui fecit eum; ℟. Et fílii Sion exultent in Rege suo. *Ps.* 149. 2.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. . Turbæ quæ præcedébant, & quæ sequebántur, clamábant dicéntes: Hosánna fílio David: Benedíctus qui venit in nómine Dómini; hosánna in altíssimis. *Matt.* 21. 9.

Orémus. *Oratio.*

OMnípotens sempitérne Deus, qui humáno géneri, ad imitándum humilitátis exémplum, Salvatórem

nostrum carnem súmere, & crucem subíre fecísti, concéde propítius: ut & patiéntiæ ipsíus habére documénta, & resurrectiónis consórtia mereámur. Per eúmdem Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit & regnat in unitáte Spíritûs.

Ad Horas, *Antiphonæ de Laudibus, quartâ prætermissâ, Responsoria br. ex Dominica Passionis, pag. 283.*

*CANON.*

Ex sancto Bernárdo.

*Serm. 2. in Domin. Palmarum.*

CElebratúri sumus hódiè processiónem, & paulò post auditúri passiónem: quid sibi vult mirábilis illa conjúnctio? opportúnè útique processióni pássio conjúncta est, ut discámus in nulla lætítia hujus séculi habére fidúciam: sciéntes quóniam extréma gáudii luctus óccupat.

Ad Tertiam.

*Capitulum. Philip. 2. v. 10. 11.*

IN nómine Jesu omne genu flectátur cœléstium, terréstrium, & infernórum; & omnis lingua confiteátur, quia Dóminus Jesus Christus in glória est Dei Patris.

℟. *br.* E'rue à frámea, *pag.* 284.

℣. Effúnde, *Ibid.*

Ad Sextam.

*Capitulum. Philip. 2. v. 8. 9.*

HUmiliávit semetípsum factus obédiens usque ad mortem, mortem autem crucis. Propter quod & Deus exaltávit illum, & donávit illi nomen, quod est super omne nomen.

℟. *br.* Posuérunt, *p.* 284.

℣. Totâ die, *ibid.*

Ad Nonam.

*Capitulum. Hebr. 2. 14.*

QUia púeri communicavérunt carni & sánguini, & Christus simíliter participávit eísdem, ut per mortem destrúeret eum, qui habébat mortis impérium.

℟. Ne perdas, *pag.* 284.

℣. E'ripe me, 285.

AD VESPERAS.

*Antiphonæ de Laudibus, Psalmi de Dominica.*

*Capitul. 1. Petr. 1. v. 13. 18. 19.*

FRatres, Perféctè speráte in eam, quæ offértur vobis, grátiam, in revelatiónem Jesu Christi, sciéntes quòd non corruptibílibus, auro vel argénto, redémpti estis de vana vestra conversatióne patérnæ traditiónis: sed pretióso sánguine quasi agni immaculáti Christi, & incontamináti.

℟. IX. *De Officio Nocturno.*

℣. Turba multa, *p.* 311.

*Hymnus*, Vexilla, *pag.* 275.

℣. Ex ore infántium & lacténtium perfecísti laudem, ℟. Propter inimícos tuos. *Ps.* 8. 3.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. 2. Cùm appropinquáret Jesus ad descénsum montis Olivéti; cœpérunt omnes turbæ discipulórum gaudéntes laudáre Deum voce magnâ super ómnibus, quas víderant, virtútibus, dicéntes: Benedíctus qui venit Rex in nómine Dómini, Pax in cœlo & glória in excélsis. *Luc.* 19. *v.* 37. 38.

*Oratio.* Omnípotens, *ut suprà ad Laudes*, *p.* 312.

FERIA SECUNDA.

*Hâc Feriâ & duabus sequentibus, omnia ut in Feriis Hebdomadæ præcedentis, exceptis quæ propria hîc habentur.*

℣. Captábunt in ánimam justi, ℟. Et sánguinem innocéntem condemnábunt. *Ps.* 93. 21.

De Jeremía Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 23. 1.

*Disperso gregi justus pastor promittitur.*

VÆ pastóribus, qui dispérdunt & diláccerant gregem páscuæ meæ, dicit Dóminus. I'deò hæc dicit Dóminus Deus I'sraël ad pastóres, qui pascunt pópulum meum: Vos dispersístis gregem meum, & ejecístis eos, & non visitástis eos: ecce ego visitábo super vos malítiam studiórum vestrórum, ait Dóminus. Et ego congregábo relíquias gregis mei de ómnibus terris, ad quas ejécero eos illuc: & convértam eos ad rura sua, & crescent & multiplicabúntur. Et suscitábo super eos pastóres, & pascent eos, non formidábunt ultrà, & non pavébunt, & nullus quærétur ex número, dicit Dóminus. Ecce dies véniunt, dicit Dóminus: & suscitábo David germen justum: & regnábit Rex, & sápiens erit: & fáciet judícium & justítiam in terra. In diébus illis salvábitur Júda, & I'sraël habitábit confidénter: & hoc est nomen, quod vocábunt eum, Dóminus justus noster.

℟. Dixérunt ímpii, *p.* 27

LECTIO II. *Cap.* 30.

*Deus semper sanandi ca*

ERit in die illa, ait Dóminus exercítuum: cónteram jugum ejus de collo tuo, & víncula ejus dirúmpam, & non dominabúntur ei ámpliùs aliéni: sed sérvient Dómino Deo suo, & David regi suo, quem suscitábo ei. Tu ergo ne tímeas, serv meus Jacob, ait Dóminus, neque páveas, I'sraël; quia ecce ego salvábo te de terra longínqua & semen tuum d

terra captivitátis eórum : & revertétur Jacob, & quiéscet, & cunctis áffluet bonis, & non erit quem formídet : quóniam tecum ego sum, ait Dóminus, ut salvem te : fáciam enim consummatiónem in cunctis Géntibus, in quibus dispérsi te : te autem non fáciam in consummatiónem : sed castigábo te in judício, ut non videáris tibi innóxius. Quia hæc dicit Dóminus : Insanábilis fractúra tua, péssima plaga tua. Non est qui júdicet judícium tuum ad alligándum : curatiónum utílitas non est tibi. Obdúcam cicatrícem tibi, & à vulnéribus tuis sanábo te, dicit Dóminus. Quia ejéctam vocavérunt te, Sion : Hæc est, quæ non habébat requiréntem. Hæc dicit Dóminus : Ecce ego convértam conversiónem tabernaculórum Jacob, & tectis ejus miserébor, & ædificábitur cívitas in excélso suo, & templum juxta órdinem suum fundábitur.

℟. Date Dómino, *p. 278.*

Lectio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

Lectio III. *Cap. 12. 1.*

*Profusio nardi pistici.*

Jesus ante sex dies Paschæ venit Bethaníam, ubi Lázarus fúerat mórtuus, quem suscitávit Jesus. Fecérunt autem ei cœnam ibi; & Martha ministrábat; Lázarus verò unus erat ex discumbéntibus cum eo. María ergo accépit libram unguénti nardi pístici, pretiósi, & unxit pedes Jesu. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract. 50. in Joan.*

Factum audívimus, mystérium requirámus. Quæcúnque ánima fidélis vis esse, cum María unge pedes Dómini pretióso unguénto. Unge pedes Jesu benè vivéndo; Domínica sectáre vestígia; capíllis terge : si habes supérflua, da paupéribus, & Dómini pedes tersísti : capílli enim supérflua córporis videntur. Habes quod agas de supérfluis tuis : tibi supérflua sunt, sed Dómini pédibus necessária sunt : fortè in terra Dómini pedes índigent. De quibus enim, nisi de membris suis in fine dictúrus est; Cùm uni ex mínimis meis fecístis, mihi fecístis; supérflua vestra impendístis, sed pédibus meis obsecúti estis. Domus autem impléta est odóre; mundus implétus est bonâ famâ : nam odor bonus, bona fama est. Qui malè vivunt, & Christiáni vocántur, injúriam Christo fáciunt : de quálibus dictum est : Quòd per eos nomen Dómini blas-

phemátur. Si per tales nomen Dómini blasphemátur, per bonos nomen Dómini laudátur. Audi Apóstolum: Christi bonus odor sumus, inquit, in omni loco.

℟. Ante sex dies Paschæ accépit María libram unguénti nardi pístici, pretiósi, & unxit pedes Jesu, & extérsit capíllis suis: * Et domus impléta est ex odóre unguénti. *Joan.* 12. *v.* 1. 3. ℣. Dùm esset rex in accúbitu suo, nardus mea dedit odórem suum. *Cant.* 1. 11. * Et domus. *Repetitur*, Ante sex.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 1. a. Conclúsit vias meas inimícus: ursus insídians factus est mihi. *Thren.* 3. *v.* 9. 10.

*Ant.* 2. d. Collégit hostis furórem suum in me, & cómminans mihi, infrémuit contra me déntibus suis. *Job* 16. 10.

*Ant.* 3. c. Inundavérunt aquæ super caput meum: dixi: Périi. Invocávi nomen tuum, Dómine. *Thren.* 3. *v.* 54. 55.

*Ant.* 4. *irr.* D. Factus sum in derísum omni pópulo meo, cánticum eórum totâ die. *Ibid.* 14.

*Ant.* 5. a. Audísti oppróbrium eórum, Dómine, omnes cogitatiónes eórum ad... vérsùm me. *Ibid.* 61.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4... Dixit Judas qui erat Jesu traditúrus: Quare hoc unguéntum non væníit trecéntis denáriis, & datum est egenis? Dixit Jesus: Páuperes semper habétis vobíscum, me autem non semper habétis. *Joan.* 12. *v.* 4. 5. 7. 8.

*Preces flexis genibus, p.* 4...

Orémus. *Oratio.*

DA, quæsumus omnipotens Deus; ut, qui in tot advérsis ex nostra infirmitáte defícimus; intercedénte unigéniti Fílii tui passióne respirémus. Qui tecum vivit.

AD HORAS, *Antiphonæ ... Laudibus cum Psalmis feri... libus; Capitula verò & Responsoria brevia, ut sup... pag.* 286. *&* 287.

*CANON.*

Ex sancto Ambrósio.

*Lib. de Jacob & vita be...*

*Cap.* 6.

COhéres Christi es, ... compatiáre, si commoriáre, si consepeliáre cum Christo. Súscipe passiónes, ... supra passiónes cum eódem esse mereáris.

AD VESPERAS.

*Antiphonæ de Laudibus. Psalmi ut in Psalterio. Capitulum, Resp. Hymnus, ... Vers. ut suprà pag.* 287.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. *irr.*

...bicúnque prædicátum fúe-
...it hoc Evangélium, dicétur
... quod hæc fecit in memó-
...m ejus. *Matth.* 26. 13.
*Preces flexis genibus, p.* 46.
Orémus. *Oratio.*
A Djuva nos, Deus salu-
...táris noster: & ad be-
...ficia recoléndα, quibus
... instauráre dignátus es,
...ue venire gaudéntes. Per
...minum.
FERIA TERTIA.
℣. E'ripe me, Dómine, de
...u inimicórum meórum,
Et à persequéntibus me.
...o. 16.
De Jeremía Prophéta.
LECTIO I. *Cap.* 31. 1.
*Novi fœderis bona.*
... témpore illo, dicit Dó-
...minus: Ero Deus univér-
...cognatiónibus I'sraël, &
... erunt mihi in pópulum.
...éscat vox tua à plorátu
...culi tui à lácrymis: quia
...merces óperi tuo, & est
... novíssimis tuis, quia
...it Deus novum super
...m. Fémina circúndabit
...m. Adhuc dicent ver-
...a istud in terra Juda: Be-
...cat tibi Dóminus pul-
...itúdo justítiæ, mons sanc-
...: quia inebriávi ánimam
...m, & omnem ánimam
...iéntem saturávi. In diébus
... non dicent ultrà: Patres
...medérunt uvam acérbam,
...dentes filiórum obstupué-
runt; sed unusquísque in ini-
quitáte sua moriétur: omnis
homo, qui coméderit uvam
acérbam, obstupéscent
dentes ejus. Dabo legem
meam in viscéribus eórum,
& in corde eórum scribam
eam: & ero eis in Deum, &
ipsi erunt mihi in pópulum:
omnes cognóscent me, à
mínimo eórum usque ad má-
ximum, ait Dóminus: quia
propitiábor iniquitáti eórum,
& peccáti eórum non me-
morábor ámpliùs.

℟. Vim faciébant, *p.* 279.

LECTIO II. *Cap.* 33. 14.
*Perpetuum fore Messiæ regnum.*

E Cce dies véniunt, dicit Dóminus: & suscitábo verbum bonum, quod locútus sum ad domum I'sraël & ad domum Juda. In diébus illis, & in témpore illo, germináre fáciam David germen justítiæ: & fáciet judícium & justítiam in terra. In diébus illis salvábitur Juda, & Jerúsalem habitábit confidénter: & hoc est nomen quod vocábunt eum, Dóminus justus noster. Quia hæc dicit Dóminus: Non interíbit de David vir à fácie mea, qui ófferat holocautómata, & incéndat sacrifícium, & cædat víctimas ómnibus diébus. Et factum est verbum Dómini ad Jeremíam, dicens:

Hæc dicit Dóminus: si írritum potest fieri pactum meum cum die, & pactum meum cum nocte, ut non sit dies & nox in témpore suo: & pactum meum írritum esse póterit cum David servo meo, ut non sit ex eo fílius, qui regnet in throno ejus, & Levítæ & Sacerdótes minístri mei.

℟. Vidérunt, *pag.* 279.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Marcum.

LECTIO III. *Cap.* 14. 1.

*Sacerdotum consilia adversùs Jesum.*

IN illo témpore; Erat Pascha & A'zyma post bíduum, & quærébant summi Sacerdótes & Scribæ quómodò Jesum dolo tenérent & occíderent. Et réliqua.

Homilía sancti Ignátii Antiochéni Epíscopi & Mártyris.

*Epist. ad Smyrnæos. Seculo* 1.

COgnóvi vos perféctos in fide immóta, ut affixos cruci Dómini nostri Jesu Christi & carne & spíritu, & firmátos in charitáte, in sánguine Christi; plenè persuásos in Dóminum nostrum: verè existéntem de génere Davídis secúndùm carnem; Fílium Dei secúndùm voluntátem & poténtiam Dei: natum verè ex Vírgine: baptizátum à Joánne ut impleréntur omnis justítia: verè sub Póntio Piláto, & Heróde Te-
trárchâ clavis confixum pr
nobis in carne. Ex quo fru
tu nos sumus, per divi
beátam passiónem ejus, óm-
nia hæc passus est propt
nos, ut salútem conseq
mur. Et verè passus est;
cut & verè seípsum resus
távit: non ut quidam infi
les dicunt secúndùm opin
nem ipsum passum esse;
secúndùm opiniónem e
téntes: & quemádmod
sápiunt, sic & contínget
qui phantâstici sunt & d
moníaci. Ego enim & p
resurrectiónem in carne
& credo esse.

℟. Circundedérunt
dolóres mortis, & torré
iniquitátis conturbavé
me; * In tribulatióne
invocávi Dóminum, &
Deum meum clamávi. *Ps*
*v.* 5. 7. ℣. Nunc ánima
turbáta est; & quid dic
Pater, salvífica me ex
hora. *Joan.* 12. 27. * In
bulatióne. *Repetitur*, Cir
dedérunt.

AD LAUDES
MATUTINAS.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 2. d. Dómine, rec
dáre mei, & tuére me ab
qui persequúntur me. *Jer*
15. 15.

*Ant.* 7. a. Corpus me
dedi percutiéntibus, & ge

...is vellentibus. *Isa.* 50. 6.
*Ant.* 4. *irr.* a. Fáciem meam ...on avérti ab increpántibus, ...conspuéntibus in me. *Ibid.*
*Ant.* 8. g. Appendérunt ...rcédem meam triginta ar...nteos, quibus appretiátus ...m ab eis. *Zach.* 11. *v.* 12. 13.
*Ant.* 4. a. Dóminus meus, ...iliátor meus; ideò non ...n confúsus. *Isa.* 50. 7.
*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. F. ...di diléctam ánimam meam ...manu inimicórum ejus. *Jer.* ...7.
*...eces flexis genibus, p.* 46.
Orémus. *Oratio.*

...Mnipotens sempitérne Deus, da nobis ita Do...icæ passiónis sacraménta ...gere: ut indulgéntiam ...cipere mereámur. Per ...dem Dóminum.

...D HORAS, *Antiphona ...Laudibus.*

*CANON.*

...x sancto Ambrósio.
*...lmum quadragesimum.*
...éllige in vulnus Christi: ...t vúlnera tua curet; in...ge in mortem, ut acqui... vitam ætérnam; intéllige ...sepultúram, ut invénias ...surrectiónem.

...D VESPERAS.
*...ntiph. de Laudibus, Psal. ...Psalterio.*
*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. D...disti, Dómine, iniquitátem ...rum advérsùm me: júdica judícium meum. *Thren.* 3. 59.

Orémus. *Oratio.*

TUa nos misericórdia, Deus, & ab omni subreptióne vetustátis expúrget: & capáces sanctæ novitátis effíciat. Per Dóminum.

*Preces flexis genibus, p.* 46.

FERIA QUARTA.

℣. Impropérium expectávit cor meum, ℟. Et misériam. *Psal.* 68. 21.

De Jeremía Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 36. 4.
*Verba Dei non evanescunt.*

VOcávit Jeremías Baruch fílium Neríæ: & scripsit Baruch ex ore Jeremíæ omnes sermónes Dómini, quos locútus est ad eum, in volúmine libri: & præcépit Jeremías Baruch, dicens: Ego clausus sum, nec váleo ingredi domum Dómini. Ingrédere ergo tu, & lege de volúmine in quo scripsísti ex ore meo verba Dómini, audiénte pópulo, in domo Dómini in die jejúnii. Legítque Baruch ex volúmine sermónes Jeremíæ in domo Dómini, in gazophylácio Gamaríæ filii Saphan Scribæ, in vestíbulo superióri, in intróitu portæ novæ domûs Dómini, audiénte omni pópulo. Misérunt itaque omnes príncipes ad Baruch, Judi fílium Nathaníæ, filii Selemíæ, filii Chusi, dicéntes: Volúmen,

ex quo legísti, audiénte pópulo, sume in manu tua, & veni. Tulit ergo Baruch fílius Neríæ volúmen in manu sua, & venit ad eos. Et dixérunt ad eum: Sede, & lege hæc in áuribus nostris. Et legit Baruch in áuribus eórum. I'gitur cùm audíssent ómnia verba, obstupuérunt unusquísque ad próximum suum, & dixérunt ad Baruch: Nuntiáre debémus regi omnes sermónes istos. Misítque Rex Judi ut súmeret volúmen: qui tollens illud de gazophylácio Elízamæ Scribæ, legit audiénte rege, & univérsis princípibus, qui stabant circa regem. Rex autem sedébat in domo hyemáli in mense nono: & pósita erat árula coram eo plena prunis. Cúmque legísset Judi tres pagéllas vel quátuor, scidit illud scalpéllo scribæ, & projécit in ignem, qui erat super árulam donec consumerétur omne volúmen igni, qui erat in árula. Et factum est verbum Dómini ad Jeremíam Prophétam, postquàm combússerat rex volúmen, & sermónes, quos scrípserat Baruch ex ore Jeremíæ, dicens: Rursùm tolle volúmen áliud; & scribe in eo omnes sermónes prióres, qui erant in primo volúmine, quod combússit Jóakim rex Juda. Et ad Jóakim regem Juda dices: Hæc dicit Dóminus: Tu combussísti volúmen illud, dicens: Quare scripsísti in eo annúntians? Festínus véniet rex Babylónis, & vastábit terram hanc: & cessáre fáciet ex illa hóminem, & juméntum? Proptéreà hæc dicit Dóminus contra Jóakim Regem Juda: Non erit ex eo qui sédeat super sólium David: & cadáver ejus projiciétur ad æstum per diem, & ad gelu per noctem.

℟. Intrávit sátanas in Judam, & * Locútus est cum princípibus Sacerdótum, quemadmodùm Jesum tráderet eis. *Luc. 22. v. 3. 4.* ℣. Sedet peccátor in insídiis cum dívitibus in occúltis, ut interficiat innocéntem. *Ps. 9.* * Locútus est.

LECTIO II. *Cap. 38.*
*Jeremias in lacu lutulento.*

DIxérunt príncipes regi: Rogámus ut occidátur homo iste: si quidem homo iste non quærit pacem pópulo huic, sed malum. Et dixit rex Sedécias. Ecce ipse in mánibus vestris est. Nec enim fas est regem vobis quidquam negáre. Tulérunt ergo Jeremíam, & projecérunt eum in lacum, in quo non erat aqua, sed lutum: descéndit ítaque Jeremías in cœnum. Et egréssus est Abdemelech

...lech de domo regis, & locútus est ad regem, dicens: Dómine mi rex, malefecérunt viri isti ómnia quæcúnque perpetrárunt contra Jeremíam Prophétam, mitténtes eum in lacum ut moriátur ibi fame, non sunt enim panes ultrà in civitáte. Præcépit itaque rex Abdémelech Æthiopi, dicens: Tolle tecum hinc triginta viros, & leva Jeremíam Prophétam de lacu ántequàm moriátur. Et misit rex Sedécias, & tulit ad se Jeremíam Prophétam ad óstium tértium, quod erat in domo Dómini; & dixit rex ad Jeremíam: Intérrogo ego te sermónem, ne abscóndas à me áliquid. Et dixit Jeremías ad Sedéciam: Hæc dicit Dóminus exercítuum Deus Israël: Si proféctus exíeris ad príncipes regis Babylónis, vivet ánima tua, & cívitas hæc non succendétur igni: & salvus eris tu, & domus tua. Si autem non exíeris ad príncipes regis Babylónis, tradétur cívitas hæc in manus Chaldæórum, & succéndent eam igni: & tu non effúgies. Mansit verò Jeremías in vestíbulo cárceris usque ad diem, quo capta est Jerúsalem: & factum est ut caperétur Jerúsalem.

℟. Abiit unus de Duódecim, & ait princípibus Sacerdótum: Quid vultis mihi dare, & ego vobis eum tradam? * At illi constituérunt ei triginta argénteos. *Matth.* 26. *v.* 14. 15. ℣. Appendérunt mercédem meam triginta argénteos, decórum prétium, quo appretiátus sum ab eis. *Zach.* 11. *v.* 12. 13. * At illi.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 22. 1.

*Infesta Judæorum contra Jesum concilia.*

IN illo témpore; Appropinquábat dies festus Azymórum, qui dícitur Pascha: & quærébant príncipes Sacerdótum & Scribæ, quómodò Jesum interfícerent. Et réliqua.

Homilía sancti Irenæi Epíscopi & Mártyris.

*Lib.* 4. *contra hæres. c.* 34. *num.* 3. *secul.* 2.

UNde póterant prædícere Prophétæ Regis advéntum, & eam libertátem quæ ab eo dabátur prævangelizáre, & ómnia quæ à Christo facta sunt, & sermónem & operatiónem, & passiónem ejus prænuntiáre, & novum testaméntum prædícere, si ab áltero deo prophéticam inspiratiónem accepérunt? Neque enim casu quodam

hæc evenísse potéstis dícere tanquam à Prophétis quidem de áltero quodam dicta, símiliter autem evenérunt Dómino. Omnes enim Prophétæ hæc éadem prophetavérunt : sed neque alícui ex vetéribus evenérunt. Si enim evenissent alícui ex vetéribus ista ; non útique qui pósteà fuérunt, prophetássent in novíssimis tempóribus futúra hæc. Adhuc étiam nemo est, neque patrum, neque Prophetárum, neque antiquórum regum, circa quem próprié ac speciáliter factum sit áliquid horum. Nam omnes quidem Christi passiónes prophetavérunt ; ipsi autem ad patiéndum simíliter, ut ipsa prædícta sunt, longè erant. Arguménta autem quæ prædícta sunt Domínicæ passiónis in nullo áltero facta sunt. Neque enim sol médiâ die óccidit áliquo de vetéribus mórtuo, neque scissum est velum templi, neque terra mota est, neque petræ disrúptæ sunt, neque mórtui resurrexérunt.

℟. Ipse vulnerátus est propter iniquitátes nostras : omnes nos quasi oves errávimus. * Et pósuit Dóminus in eo iniquitátem ómnium nostrûm. *Isai.* 53. *v.* 5. 6. ℣. Ecce Agnus Dei, ecce qui tollit peccátum mundi. *Joan.* 1. 29. * Et pósuit. *Repetitur* Ipse.

## AD LAUDES MATUTINAS.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 8. g. Dixérunt impii: Opprimámus justum; quóni[am] inútilis est nobis, & imp[ro]perat nobis peccáta le[g]... *Sap.* 2. *v.* 10. 12.

*Ant.* 4. a. Factus est ... bis in traductiónem cog[ita]tiónum nostrárum ; gra[vis] est nobis étiam ad vidén[du]... *Ibid.* *v.* 14. 15.

*Ant.* 2. d. Tanquam ... gáces æstimáti sumus ab ... & ábstinet se à viis no... tanquam ab immundítiis. ... *v.* 16.

*Ant.* 4. irr. D. Contu[mel]ia & torménto interrog[emus] eum, ut sciámus rever[en]... ejus, & probémus patién[tiam] illíus. *Ibid.* *v.* 19.

*Ant.* 7. c. Hæc cogi[tave]runt, & erravérunt : e[xcæ]cávit enim illos malítia e... *Ibid.* *v.* 21.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* ... Dabit percutiénti se ma[xil]lam, saturábitur oppró[briis]. *Thren.* 3. 30.

*Preces flexis genibus*, ...

Orémus. *Oratio.*

PRæsta, quǽsumus, omn[ipo]tens Deus: ut, qui no[stris] excéssibus incessánter af[flígi]mur, per unigéniti Filii ...

pássiónem liberémur ; Qui tecum vivit.

*CANON.*

Ex statútis Synodálibus Ecclésiæ Rotomagénsis. *An.* 1640. *can.* 6.

IN Parascéve Corpus Dómini non in vase osterrio, nec in pixide, sed in [c]álice juxta Diœcesánum ri[tum] servétur.

## AD VESPERAS.

*Antiphonæ de Laudibus, [Ps]almi de Psalterio.*

*[Cap]itulum. Jerem.* II. 20.

TU, Dómine Sábaoth, qui júdicas justè, & pro[bas] renes & corda, vídeam [ulti]ónem tuam ex eis : tibi [enim] revelávi causam meam.

℟. Circundedérunt me, [Hy]mnus, VEXÍLLA, *p.* 275.

[℣.] E'ripe me, *p.* 276.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. d. Dico vobis, quóniam ad[huc] hoc, quod scriptum est, [opor]tet impléri in me; éte[nim] ea, quæ sunt de me, fi[nem] habent. *Luc.* 22. 37.

*Non dicuntur Preces.*

Orémus. *Oratio.*

[R]E'spice, quæsumus, Dómine, super hanc famí[liam] tuam, pro qua Dómi[nu]s noster Jesus Christus non [du]bitávit mánibus tradi no[cen]tium, & crucis subíre [to]rméntum ; Qui tecum vivit.

## FERIA QUINTA
## IN CŒNA DOMINI.

*Tribus his diebus, dictis ex more, secretò* Pater, Ave, Credo, *incipitur absolutè Officium ab Antiphona primi Psalmi; nec dicitur* Glória Patri *in fine Psalmorum & Responsoriorum. Ad Nocturna, Laudes, Horas & Vesperas omittuntur Hymni, & Capitula, nec dicitur* Dóminus vobíscum, *nec post Orationem*, Benedicámus Dómino.

## IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 8. c. Salvum me fac,

*Psalmus* 7.

DO'mine Deus meus, in te sperávi; * salvum me fac ex ómnibus persequéntibus me, & líbera me.

Nequándo rápiat ut leo ánimam meam, * dùm non est qui rédimat, neque qui salvum fáciat.

Dómine Deus meus, si feci istud, * si est iníquitas in mánibus meis:

Si réddidi retribuéntibus mihi mala, * décidam méritò ab inimícis meis inánis.

Persequátur inimícus ánimam meam, & comprehéndat, & concúlcet in terra vitam meam, * & glóriam meam in púlverem dedúcat.

Exúrge, Dómine, in ira

tua, * & exaltáre in fínibus inimicórum meórum.

Et exúrge, Dómine Deus meus, in præcépto quod mandásti, * & synagóga populórum circúndabit te.

Et propter hanc * in altum regrédere:

Dóminus júdicat pópulos.* Júdica me, Dómine, secúndùm justítiam meam, & secúndùm innocéntiam meam super me.

Consumétur nequítia peccatórum, & díriges justum,* scrutans corda & renes Deus.

Justum adjutórium meum à Dómino, * qui salvos facit rectos corde.

Deus judex justus, fortis & pátiens, * nunquid iráscitur per síngulos dies?

Nisi convérsi fuéritis, gládium suum vibrábit:* arcum suum teténdit, & parávit illum.

Et in eo parávit vasa mortis, * sagíttas suas ardéntibus effécit.

Ecce partúriit injustítiam, concépit dolórem, * & péperit iniquitátem.

Lacum apéruit, & effódit eum;* & íncidit in fóveam quam fecit.

Convertétur dolor ejus in caput ejus;* & in vérticem ipsíus iníquitas ejus descéndet.

Confitébor Dómino secúndùm justítiam ejus; * & psallam nómini Dómini altíssimi.

*Ant.* Salvum me fac ex ómnibus persequéntibus me, & líbera me, Dómine. *v.* 2.

*Ant.* 2. d. U'squequò.

*Psalmus* 12.

U'Squequò, Dómine, oblivíscéris me in finem?* U'squequò avértis fáciem tuam à me?

Quándiù ponam consi[lia] in ánima mea, * dolórem [in] corde meo per diem?

U'squequò exaltábitur ini[mícus] meus super me?* re[spíce], & exáudi me, Dó[mi]ne Deus meus.

Illúmina óculos meos, [ne] unquam obdórmiam in m[or]te; * nequándo dicat ini[mí]cus meus: Præválui advér[sus] eum.

Qui tríbulant me, exul[tá]bunt si motus fúero; * [ego] autem in misericórdia [tua] sperávi.

Exultábit cor meum [in] salutári tuo, cantábo Dó[mi]no qui bona tríbuit mihi, & psallam nómini Dó[mini] altíssimi.

*Ant.* U'squequò avértis [fá]ciem tuam à me, Dómin[e]. *v.* 1.

*Ant.* 4. *irreg.* d. Dómin[e]

*Psalmus* 34.

JU'dica, Dómine, nocéntes me; * expúgna i[m]pugnántes me.

Apprehénde arma & scutum;* & exúrge in adjutórium mihi.

Effúnde frámeam, & conclúde advérsùs eos, qui persequúntur me: * dic ánimæ meæ: Salus tua ego sum.

Confundántur, & revereántur * quæréntes ánimam meam.

Avertántur retrórsùm, & confundántur * cogitántes mihi mala.

Fiant tanquam pulvis ante fáciem venti;* & A'ngelus Dómini coárctans eos.

Fiat via illórum ténebræ & lúbricum; * & A'ngelus Dómini pérsequens eos.

Quóniam gratis abscondérunt mihi intéritum láquei sui; * supervácuè exprobravérunt ánimam meam.

Véniat illi láqueus, quem ignórat; & cáptio, quam abscóndit, apprehéndat eum;* & in láqueum cadat in ipsum.

A'nima autem mea exultábit in Dómino, * & delectábitur super salutári suo.

O'mnia ossa mea dicent: * Dómine, quis símilis tibi?

Erípiens ínopem de manu fortiórum ejus, * egénum & páuperem à diripiéntibus eum.

Surgéntes testes iníqui, * quæ ignorábam, interrogábant me.

Retribuébant mihi mala pro bonis, * sterilitátem ánimæ meæ.

Ego autem, cùm mihi molésti essent, * induébar cilício.

Humiliábam in jejúnio ánimam meam; * & orátio mea in sinu meo convertétur.

Quasi próximum, & quasi fratrem nostrum, sic complacébam: * quasi lugens & contristátus sic humiliábar.

Et advérsùm me lætáti sunt, & convenérunt: * congregáta sunt super me flagélla, & ignorávi.

Dissipáti sunt, nec compúncti, tentavérunt me, subsannavérunt me subsannatióne; * frenduérunt super me déntibus suis.

Dómine, quando respícies?* restítue ánimam meam à malignitáte eórum, à leónibus únicam meam.

Confitébor tibi in ecclésia magna, * in pópulo gravi laudábo te.

Non supergáudeant mihi qui adversántur mihi iníquè,* qui odérunt me gratis, & ánnuunt óculis.

Quóniam mihi quidem pacíficè loquebántur; * & in iracúndia terræ loquéntes, dolos cogitábant.

Et dilatavérunt super me os suum; * dixérunt: Euge, euge, vidérunt óculi nostri.

Vidísti, Dómine, ne síleas; * Dómine, ne discédas à me.

Exúrge & inténde judício meo; * Deus meus, & Dóminus meus, in causam meam.

Júdica me secúndùm justítiam tuam, Dómine Deus meus; * & non supergáudeant mihi.

Non dicant in córdibus suis: Euge, euge, ánimæ nostræ: * nec dicant: Devorávimus eum.

Erubéscant & revereántur simul, * qui gratulántur malis meis.

Induántur confusióne & reveréntiâ, * qui magna loquúntur super me.

Exúltent & læténtur qui volunt justítiam meam; * & dicant semper: Magnificétur Dóminus, qui volunt pacem servi ejus.

Et lingua mea meditábitur justítiam tuam, * totâ die laudem tuam.

*Ant.* Dómine, quando respícies, restítue ánimam à malignitáte eórum. *v.* 17.

℣. Vidísti, Dómine, ne síleas; ℟. Dómine, ne discédas à me. *Psal.* 22.

*Hoc triduo post* ℣. *cujusque Nocturni*, Pater *dicitur integrè & secretò. Non datur benedictio ante Lectiones nec in fine earum dicitur*, Tu autem.

Incipit Lamentátio Jere[...]
Prophétæ.

LECTIO I. *Cap.* 1. 1.

*Sion deserta.*

QUómodò sedet sola civitas plena pópulo: fact[...] est quasi vídua, dómina Géntium: princeps provinciárum facta est sub tribúto:

Plorans plorávit in noct[...] & lácrymæ ejus in maxil[...] ejus: non est qui consolét[...] eam ex ómnibus charis ej[...] omnes amíci ejus sprevéru[...] eam, & facti sunt ei inimí[...]

Migrávit Judas prop[...] afflictiónem, & multitúdin[...] servitútis: habitávit in[...] Gentes, nec invénit réqu[...] Omnes persecutóres ejus [...] prehendérunt eam inter [...] gústias.

Viæ Sion lugent, eò q[...] non sint qui véniant ad [...] lemnitátem: omnes portæ [...] destrúctæ: Sacerdótes [...] geméntes: vírgines ejus sq[...] lidæ, & ipsa oppréssa [...] ritúdine.

Facti sunt hostes ejus [...] cápite, inimíci ejus locup[...] táti sunt: quia Dóminus l[...] cútus est super eam prop[...] multitúdinem iniquitát[...] ejus: párvuli ejus ducti s[...] in captivitátem ante fáci[...] tribulántis.

℟. Edéntibus illis, di[...] Jesus: Amen dico vob[...] quia unus vestrûm me tr[...]

tus est: qui intingit mecum manum in parópside, * Hic me tradet. *Matt.* 26. *v.* 21. 23. ℣. Homo pacis meæ, in quo sperávi, qui edébat panes meos. *Psal.* 40. 10. * Hic.

LECTIO II. *v.* 6.

*Sion in ignominia.*

EGréssus est à Fília Sion omnis decor ejus: facti sunt príncipes ejus velut aríetes non inveniéntes páscua: abiérunt absque fortitúdine ante fáciem subsequéntis.

Recordáta est Jerúsalem dierum afflictiónis suæ, & prævaricatiónis ómnium desiderabílium suórum, quæ habúerat à diébus antíquis, cùm cáderet pópulus ejus in manu hostíli, & non esset auxiliátor: vidérunt eam hostes, & derisérunt Sábbata ejus.

Peccátum peccávit Jerúsalem, proptéreà instábilis facta est: omnes qui glorificábant eam sprevérunt illam, quia vidérunt ignomíniam ejus: ipsa autem gemens convérsa est retrórsum.

Sordes ejus in pédibus ejus, nec recordáta est finis sui: depósita est veheménter, non habens consolatórem: vide Dómine, afflictiónem meam, quóniam eréctus est inimícus.

℟. Accépit Jesus panem, & benedíxit ac fregit, dedítque discípulis suis, & ait: Accípite & comédite: hoc est corpus meum: * Et accípiens cálicem grátias egit, & dedit illis. *Matth.* 26. *v.* 26. 27. ℣. Hic est sanguis fœ́deris quod pépigit Dóminus. *Exod.* 24. 8. * Et accípiens.

LECTIO III. *v.* 10.

*Sion calamitatibus oppressa.*

MAnum suam misit hostis ad ómnia desiderabília ejus: quia vidit Gentes ingréssas sanctuárium suum, de quibus præcéperas ne intrárent in ecclésiam tuam.

Omnis pópulus ejus gemens & quærens panem: dedérunt pretiósa quæque pro cibo ad refocillándam ánimam. Vide, Dómine, & considera, quóniam facta sum vilis.

O vos omnes qui transítis per viam, atténdite & vidéte si est dolor sicut dolor meus: quóniam vindemiávit me, ut locútus est, Dóminus in die iræ furóris sui.

De excélso misit ignem in óssibus meis, & erudívit me: expándit rete pédibus meis; convértit me retrórsùm: pósuit me desolátam, totâ die mœróre conféctam.

Vigilávit jugum iniquitátum meárum: in manu ejus convolútæ sunt & impósitæ collo meo: infirmáta est virtus mea: dedit me Dóminus

in manu, de qua non pótero ſúrgere.

℟. Exiérunt in montem Olivéti. Tunc dicit illis Jeſus: Omnes vos ſcándalum patiémini in me in iſta nocte. * Scriptum eſt enim: Percútiam paſtórem, & diſpergéntur oves gregis. *Matth.* 26, *v.* 30. 31. ℣. Dicit Dóminus exercítuum: Pércute paſtórem, & diſpergéntur oves gregis. *Zach.* 12, 8. * Scriptum eſt. *Repet.* Exiérunt.

IN II. NOCTURNO,

*Ant.* 1. a. Holocáuſtum.

*Pſalmus* 39.

EXpéctans expectávi Dóminum, * & inténdit mihi.

Et exaudívit preces meas, * & edúxit me de lacu miſériæ, & de luto fæcis.

Et ſtátuit ſuper petram pedes meos, * & diréxit greſſus meos.

Et immíſit in os meum cánticum novum, * carmen Deo noſtro.

Vidébunt multi, & timébunt, * & ſperábunt in Dómino.

Beátus vir cujus eſt nomen Dómini ſpes ejus; * & non reſpéxit in vanitátes & inſánias falſas.

Multa feciſti tu, Dómine Deus meus, mirabília tua; * & cogitatiónibus tuis non eſt qui ſimilis ſit tibi.

Annuntiávi, & locútus ſum; * multiplicáti ſunt ſuper númerum.

Sacrifícium & oblatiónem noluíſti, * aures autem perfeciſti mihi.

Holocáuſtum & pro peccáto non poſtuláſti; * tunc dixi; Ecce vénio.

In cápite libri ſcriptum [illegible] de me, ut fácerem volun[illegible] tem tuam; * Deus meus, vo[illegible] lui, & legem tuam in méd[illegible] cordis mei.

Annuntiávi juſtítiam tu[illegible] in eccléſia magna, * ecc[illegible] lábia mea non prohibébo[illegible] Dómine, tu ſciſti.

Juſtítiam tuam non [illegible] ſcóndi in corde meo, * [illegible] ritátem tuam & ſalutáre tu[illegible] dixi.

Non abſcóndi miſericó[illegible] diam tuam, & verit[illegible] tuam * à concílio mult[illegible]

Tu autem, Dómine, [illegible] longè fácias miſeratiónes tu[illegible] à me: * miſericórdia tua [illegible] véritas tua ſemper ſuſcep[illegible] runt me.

Quóniam circumdedérun[illegible] me mala, quorum non [illegible] númerus: * comprehendé[illegible] runt me iniquitátes meæ, [illegible] non pótui ut vidérem.

Multiplicátæ ſunt ſuper ca[illegible] pillos cápitis mei, * & co[illegible] meum dereliquit me.

Compláceat tibi, Dómine, ut érues me; * Dómine,

ad adjuvándum me réspice.

Confundántur & revereántur simul, qui quærunt ánimam meam, * ut áuferant eam.

Convertántur retrórsùm, & revereántur, * qui volunt mihi mala.

Ferant conféstim confusiónem suam, * qui dicunt mihi: Euge, euge.

Exúltent & læténtur super te omnes quæréntes te; * & dicant semper: Magnificétur Dóminus, qui díligunt salutáre tuum.

Ego autem mendícus sum, & pauper; * Dóminus sollícitus est mei.

Adjútor meus, & protéctor meus tu es, * Deus meus, ne tardáveris.

*Ant.* Holocáustum & pro peccáto non postulásti: tunc dixi: Ecce vénio. *v.* 7.

*Ant.* 7. c. Dilexísti.

*Psalmus* 51.

QUid gloriáris in malítia,* qui pótens es in iniquitáte?

Totâ die injustítiam cogitávit lingua tua; * sicut novácula acúta fecísti dolum.

Dilexísti malítiam super benignitátem, * iniquitátem magis, quàm loqui æquitátem.

Dilexísti ómnia verba præcipitatiónis, * lingua dolósa.

Proptéreà Deus déstruet te in finem, * evéllet te, & emigrábit te de tabernáculo tuo, & radícem tuam de terra vivéntium.

Vidébunt justi, & timébunt, & super eum ridébunt, & dicent: * Ecce homo, qui non pósuit Deum adjutórem suum.

Sed sperávit in multitúdine divitiárum suárum, * & præváluit in vanitáte sua.

Ego autem, sicut olíva fructífera in domo Dei, * sperávi in misericórdia Dei in ætérnum, & in séculum séculi.

Confitébor tibi in séculum quia fecísti, * & expectábo nomen tuum, quóniam bonum est in conspéctu sanctórum tuórum.

*Ant.* Dilexísti ómnia verba præcipitatiónis, lingua dolósa, proptéreà Deus déstruet te in finem. *v.* 6. 7.

*Ant.* 4. a. Si inimícus.

*Psalmus* 54.

EXáudi, Deus, oratiónem meam, & ne despéxeris deprecatiónem meam, * inténde mihi, & exáudi me.

Contristátus sum in exercitatióne mea, * & conturbátus sum à voce inimíci, & à tribulatióne peccatóris.

Quóniam declinavérunt in me iniquitátes; * & in ira moléesti erant mihi.

Cor meum conturbátum

est in me; * & formído mortis cécidit super me.

Timor & tremor venérunt super me; * & contexérunt me ténebræ;

Et dixi: Quis dabit mihi pennas sicut colúmbæ, * & volábo & requiéscam?

Ecce elongávi fúgiens, * & mansi in solitúdine.

Expectábam eum, qui salvum me fecit * à pusillanimitáte spíritûs, & tempestáte.

Præcípita, Dómine, dívide linguas eórum; * quóniam vidi iniquitátem & contradictiónem in civitáte.

Die ac nocte circúndabit eam super muros ejus iníquitas; * & labor in médio ejus, & injustítia.

Et non defécit de platéis ejus * usúra, & dolus.

Quóniam si inimícus meus maledixísset mihi, * sustinuíssem útique;

Et si is, qui óderat me, super me magna locútus fuísset, * abscondíssem me fórsitan ab eo.

Tu verò homo unánimis, * dux meus, & notus meus,

Qui simul mecum dulces capiébas cibos; * in domo Dei ambulávimus cum consénsu.

Véniat mors super illos, * & descéndant in inférnum vivéntes.

Quóniam nequítiæ in habitáculis eórum, * in médio eórum.

Ego autem ad Deum clamávi; * & Dóminus salvábit me.

Vésperè, & manè, & merídie narrábo & annuntiábo; * & exáudiet vocem meam.

Rédimet in pace ánimam meam ab his, qui appropínquant mihi; * quóniam inter multos erant mecum.

Exáudiet Deus, & humiliábit illos; * qui est ante sécula.

Non enim est illis commutátio, & non timuérunt Deum: * exténdit manum suam in retribuéndo.

Contaminavérunt testaméntum ejus, divísi sunt ab ira vultûs ejus; * & appropinquávit cor illíus.

Mollíti sunt sermónes ejus super óleum, * & ipsi sunt jácula.

Jacta super Dóminum curam tuam, & ipse te enútriet: * non dabit in ætérnum fluctuatiónem justo.

Tu verò, Deus, dedúces eos * in púteum intéritûs.

Viri sánguinum & dolósi non dimidiábunt dies suos: * ego autem sperábo in te, Dómine.

*Ant.* Si inimícus meus maledixísset mihi, sustinuíssem útique. *ỽ.* 13.

℣. Qui edébat panes meos, magnificávit super me supplantatiónem. ℟. Tu autem, Dómine, miserére mei. *Psal.* 40. *v.* 10. 11.

LECTIO IV.

Sermo sancti Leónis Papæ.

*Serm.* 7. *de Pass. Dom.*

DIvíno intellígimus dispósitum fuisse consílio, ut sacrílegi Judæórum príncipes, & ímpii Sacerdótes, qui sæviéndi in Christum occasiónes sæpe quæsíverant, non nisi in solemnitáte Pascháli, exercéndi furóris sui accíperent potestátem. Oportébat enim ut manifésto impleréntur effécto, quæ diù fúerant figuráto promíssa mystério, ut ovem significatívam ovis vera removéret, & ut uno expleretur sacrifício variárum differéntia victimárum. Nam ómnia illa quæ de immolatióne Agni divínitùs per Móysen fúerant præstitúta, Christum prophetáverant, & Christi occisiónem próprié nuntiáverant. Ut ergo umbræ céderent córpori, & cessárent imágines sub præséntia veritátis, antíqua observántia novo exclúditur sacraménto, hóstia in hóstiam transit, sánguine sanguis auffértur, & legális festívitas dùm mutátur, implétur.

℟. Cœpit contristári & mœstus esse. * Tunc ait: Tristis est ánima mea usque ad mortem. *Matth.* 26. *v.* 37. 38. ℣. Laborávit ánima ejus, vidébit & saturábitur. *Is.* 53. 11. * Tunc.

LECTIO V.

DIscumbéntibus discípulis, cum in Cáiphæ átrio tractarétur quómodò Christus posset occídi, ille córporis & sánguinis sui órdinans sacraméntum, docébat qualis Deo hóstia debéret offérri; ne ab hoc quidem mystério traditóre submóto, ut ostenderétur nullâ injúriâ exasperátus, qui in voluntária impietáte erat præscítus. Ipse enim fuit sibi matéria ruínæ, & causa perfídiæ, sequens diábolum ducem, & nolens Christum hábere rectórem. Dicens ítaque Dóminus: Amen dico vobis, quòd unus vestrûm me traditúrus est, notam sibi proditóris sui consciéntiam demonstrávit; non ásperâ nec apértâ ímpium increpatióne confúndens, sed leni ac tácitâ admonitióne convéniens; ut facíliùs corrígeret pœnitúdo, quem nulla deformásset abjéctio.

℟. Pósitis génibus orábat dicens: * Pater, si vis, transfer cálicem istum à me: Verúntamen non mea volúntas, sed tua fiat. *Luc.* 22. *v.* 41. 42. ℣. In cápite libri scriptum est de me, ut fácerem

voluntátem tuam. *Ps.* 39. *v.* 8. 9. * Pater.

LECTIO VI.

POstquàm Judas persuásus à diábolo discéssit à Christo, seque à córpore Apostólicæ unitátis abscídit, nullo Dóminus pavóre turbátus, sed de sola redimendórum salúte sollícitus, omne témporis spátium quod à persequéntium vacábat incúrsu, mysticis sermónibus, sacratǽque doctrínæ, sicut Joánnis Evangélio declarátur, impéndit, élevans ad cœlum óculos, & pro univérsa Ecclésia súpplicans patri, ut omnes quos dedísset, daturúsque esset Fílio Pater, unum fíerent, & in glória Redemptóris indivídui permanérent.

℞. Factus in agónia prolíxiùs orábat: * Et factus est sudor ejus sicut guttæ sánguinis decurréntis in terram. *Luc.* 22. *v.* 43. 44. ℣. Attrítus est propter scélera nostra. *Isa.* 53. 5. * Et factus est. *Repet.* Factus.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 3. c. Molas leónum.

*Psalmus* 57.

SI verè útique justítiam loquímini, * recta judicáte, fílii hóminum.

E'tenim in corde iniquitátes operámini; * in terra injustítias manus vestræ concínnant.

Alienáti sunt peccatóres à vulva, erravérunt ab útero: locúti sunt falsa.

Furor illis secúndùm similitúdinem serpéntis, * sicut áspidis surdæ, & obturántis aures suas,

Quæ non exáudiet vocem incantántium, * & venéfici incantántis sapiénter.

Deus cónteret dentes eórum in ore ipsórum: * molas leónum confringet Dóminus.

Ad níhilum devénient tanquam aqua decúrrens: * inténdit arcum suum donec infirméntur.

Sicut cera, quæ fluit, auferéntur: * supercécidit ignis, & non vidérunt solem.

Priúsquàm intellígerent spinæ vestræ rhamnum, * sicut vivéntes, sic in ira absórbet eos.

Lætábitur justus cùm víderit vindíctam; * manus suas lavábit in sánguine peccatóris.

Et dicet homo: Si útique est fructus justo, * útique est Deus júdicans eos in terra.

*Ant.* Molas leónum confringet Dóminus: ad níhilum devénient tanquam aqua decúrrens. *v.* 7. 8.

*Ant.* 6. f. Velut sómnium.

*Psalmus* 72.

QUàm bonus Isráël Deus, * his qui recto sunt corde!

Mei autem penè moti sunt pedes : * penè effúsi sunt gressus mei.

Quia zelávi super iníquos,* pacem peccatórum videns ;

Quia non est respéctus morti eórum, * & firmaméntum in plaga eórum.

In labóre hóminum non sunt, * & cum homínibus non flagellabúntur.

Ideò ténuit eos supérbia, * operti sunt iniquitáte & impietáte suâ.

Pródiit quasi ex ádipe iníquitas eórum : * transiérunt in afféctum cordis.

Cogitavérunt, & locúti sunt nequítiam : * iniquitátem in excélso locúti sunt.

Posuérunt in cœlum os suum ; * & lingua eórum transivit in terra.

Ideò convertétur pópulus meus hic ; * & dies pleni inveniéntur in eis.

Et dixérunt : Quómodò scit Deus, * & si est sciéntia in Excélso ?

Ecce ipsi peccatóres, & abundántes in século, * obtinuérunt divítias.

Et dixi : Ergo sine causa justificávi cor meum, * & lavi inter innocéntes manus meas ;

Et fui flagellátus totâ die,* & castigátio mea in matutínis.

Si dicébam : Narrábo sic,* ecce natiónem filiórum tuórum reprobávi.

Existimábam ut cognóscerem hoc, * labor est ante me.

Donec intrem in sanctuárium Dei, * & intélligam in novíssimis eórum.

Verúntamen propter dolos posuísti eis ; * dejecísti eos dùm allevaréntur.

Quómodò facti sunt in desolatiónem, súbitò defecérunt ? * periérunt propter iniquitátem suam.

Velut sómnium surgéntium, Dómine, * in civitáte tua imáginem ipsórum ad níhilum rédiges.

Quia inflammátum est cor meum, & renes mei commutáti sunt ; * & ego ad níhilum redáctus sum, & nescivi.

Ut juméntum factus sum apud te ; * & ego semper tecum.

Tenuísti manum déxteram meam, & in voluntáte tua deduxísti me, * & cum glória suscepísti me.

Quid enim mihi est in cœlo ? * & à te quid vólui super terram ?

Defécit caro mea, & cor meum : * Deus cordis mei, & pars mea Deus in ætérnum.

Quia ecce, qui elóngant se à te, períbunt : * perdi-

dísti omnes, qui fornicántur abs te.

Mihi autem adhærére Deo bonum est, * pónere in Dómino Deo spem meam;

Ut annúntiem omnes prædicatiónes tuas, * in portis filiæ Sion.

*Ant.* Velut sómnium surgéntium, Dómine, in civitáte tua imáginem ipsórum ad níhilum rédiges. *v.* 20.

*Ant.* 8. g. Sciant.

*Psalmus* 108.

DEus laudem meam ne tacúeris; * quia os peccatóris, & os dolósi super me apértum est.

Locúti sunt advérsùm me linguâ dolósâ, & sermónibus ódii circumdedérunt me, * & expugnavérunt me gratis.

Pro eo ut me dilígerent, detrahébant mihi; * ego autem orábam.

Et posuérunt advérsùm me mala pro bonis, * & ódium pro dilectióne mea.

Constítue super eum peccatórem; * & diábolus stet à dextris ejus.

Cùm judicátur, éxeat condemnátus; * & orátio ejus fiat in peccátum.

Fiant dies ejus pauci; * & episcopátum ejus accípiat alter.

Fiant filii ejus órphani, * & uxor ejus vídua.

Nutántes transferántur filii ejus, & mendícent, * & ejiciántur de habitatiónibus suis.

Scrutétur fœnerátor omnem substántiam ejus; * & dirípiant aliéni labóres ejus.

Non sit illi adjútor; * nec sit qui misereátur pupillis ejus.

Fiant nati ejus in intéritum; * in generatióne un[a] deleátur nomen ejus.

In memóriam rédeat ini[quitas] quitas patrum ejus in con[spectu] péctu Dómini; * & pecc[a]tum matris ejus non deleátur.

Fiant contra Dómin[um] semper, & dispéreat de ter[ra] memória eórum; * pro [eo] quòd non est recordátus [fa]cere misericórdiam.

Et persecútus est hómin[em] ínopem, & mendícum, * [&] compúnctum corde mort[ifi]cáre.

Et diléxit maledictión[em] & véniet ei, * & nóluit be[ne]dictiónem, & elongábi[tur] ab eo.

Et índuit maledictión[em] sicut vestiméntum, * & in[t]rávit sicut aqua in interió[ra] ejus, & sicut óleum in óssib[us] ejus.

Fiat ei sicut vestiméntum quo operítur, * & sicut zona quâ semper præcíngitur.

Hoc opus eórum, qui detrahunt mihi apud Dóminum, * & qui loquúntur mala advérsùs ánimam meam.

Et tu, Dómine, Dómine, fac mecum propter nomen tuum, * quia suávis est misericórdia tua.

Líbera me, quia egénus & pauper ego sum; * & cor meum conturbátum est intra me.

Sicut umbra cùm declínat ablátus sum, * & excússus sum sicut locústæ.

Génua mea infirmáta sunt jejúnio; * & caro mea immutáta est propter óleum.

Et ego factus sum oppróbrium illis, * vidérunt me, & movérunt cápita sua.

Ádjuva me, Dómine Deus meus; * salvum me fac secúndùm misericórdiam tuam.

Et sciant quia manus tua hæc, * & tu, Dómine, fecísti eam.

Maledícent illi, & tu benedíces; * qui insúrgunt in me, confundántur; servus autem tuus lætábitur.

Induántur, qui détrahunt mihi, pudóre; * & operiántur sicut diploïde confusióne sua.

Confitébor Dómino nimis in ore meo, * & in médio multórum laudábo eum;

Quia ástitit à dextris páuperis, * ut salvam fáceret à persequéntibus ánimam meam.

*Ant.* Sciant quia manus tua hæc, & tu, Dómine, fecísti eam. *v.* 27.

℣. Consumétur nequítia peccatórum, ℟. Et díriges justum. *Psal.* 7. 10.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO VII. *Cap.* 11. 20.

*Institutio Eucharistiæ.*

Conveniéntibus vobis in unum, jam non est Domínicam cœnam manducáre. Unusquísque enim suam cœnam præsúmit ad manducándum. Et álius quidem ésurit, álius autem ébrius est. Nunquid domos non habétis ad manducándum & bibéndum? aut Ecclésiam Dei contémnitis, & confúnditis eos qui non habent? Quid dicam vobis? Laudo vos? in hoc non laudo. Ego enim accépi à Dómino quod & trádidi vobis, quóniam Dóminus Jesus in qua nocte tradebátur, accépit panem, & grátias agens fregit & dixit: Accípite, & manducáte: Hoc est corpus meum, quod pro vobis tradétur: hoc fácite in meam commemoratiónem. Simíliter & cálicem, postquàm cœnávit, dicens: Hic calix novum testaméntum est in meo sánguine: hoc fácite quotiescúnque bibétis, in meam commemoratiónem. Quotiescúnque enim mandu-

cábitis panem hunc, & cálicem bibétis; mortem Dómini annuntiábitis donec véniat.

℟. Venit hora; ecce Fílius hóminis tradétur in manus peccatórum, * Súrgite, eámus: ecce qui me tradet, propè est. *Marc.* 14. *v.* 41. 42. ℣. Ecce peccatóres intendérunt arcum, paravérunt sagíttas suas. *Psal.* 10. 3. * Súrgite.

LECTIO VIII. *v.* 27.

*Dispositiones ad Eucharistiæ Sacramentum.*

ITaque quicúnque manducáverit panem hunc, vel bíberit cálicem Dómini indígnè, reus erit córporis, & sánguinis Dómini: Probet autem seipsum homo: & sic de pane illo edat & de cálice bibat. Qui enim mandúcat & bibit indígnè, judícium sibi mandúcat & bibit, non dijúdicans corpus Dómini. I'deò inter vos multi infírmi & imbecílles, & dórmiunt multi. Quòd si nosmetipsos dijudicarémus, non útique judicarémur. Dùm judicámur autem à Dómino corrípimur, ut non cum hoc mundo damnémur. I'taque fratres mei, cùm convenítis ad manducándum, ínvicem expectáte. Si quis ésurit, domi mandúcet, ut non in judícium conveniátis. Cétera autem, cùm vénero, dispónam.

℟. Venit Judas, & cum eo turba multa cum gládiis, & lignis: déderat autem trádit[illegible] ejus signum eis, * Dicen[illegible] Quemcúnque osculátus fu[illegible]ro, ipse est, tenéte eum. *Ma[illegible]* 14. *v.* 43. 44. ℣. In ore su[illegible] pacem cum amíco suo lóq[illegible]tur, & occúltè ponit ei i[illegible]sídias. *Jerem.* 9. 8. * D[illegible]cens.

Léctio sancti Evangélii [illegible]cúndùm Joánnem.

LECTIO IX. *Cap.* 13.

*Lotio pedum Apostolor[illegible]*

ANte diem festum P[illegible]chæ, sciens Jesus [illegible] venit hora ejus, ut trán[illegible] ex hoc mundo ad Patr[illegible] cùm dilexísset suos qui e[illegible] in mundo, in finem di[illegible] eos: & cœnâ factâ, [illegible] diábolus jam misísset in co[illegible] ut tráderet eum Judas Si[illegible]nis Iscariótæ; sciens q[illegible] ómnia dedit ei Pater in m[illegible]nus, & quia à Deo exiv[illegible] & ad Deum vadit, surgi[illegible] cœna, & ponit vestimén[illegible] sua, & cùm accepísset li[illegible]teum præcínxit se: deind[illegible] mittit aquam in pelvim, & cœpit laváre pedes discípu[illegible]lórum suórum, & extérgere línteo quo erat præcínctus. Et réliqua.

Homilía

Homilia sancti Cypriáni Epíscopi & Mártyris.

*De bono patientiæ. Circa initium.*

DIscípulis non ut servis dominicâ potestáte Christus præfuit; sed benignus & mitis fratérnâ eos charitáte dilexit. Dignátus est étiam pedes Apostolórum laváre, ut, dum circa servos talis est Dominus, exémplo suo docéret, qualis circa cómpares & æquáles débeat esse consérvus. Nec mirándum quòd circa obediéntes talis extíterit, qui Judam pótuit usque ad extrémum longâ patiéntiâ sustinere, cibum cum inimíco sumere, hostem doméstícum scire, nec palàm osténdere, proditóris ósculum non recusare. In Judæis verò toleránda æquanímitas quanta, & quanta patiéntia! humíliter persequéntibus cédere; Prophetárum interfectóres, & adversùm Deum semper rebélles usque ad crucis & passionis horam velle collígere. In ipsa autem passióne & cruce, priúsquàm ad crudelitatem necis & effusiónem sanguinis veniretur, quæ convitiórum probra patiénter audita, quæ contumeliárum toleráta ludíbria!

℟. Quasi ad latrónem exístis cum gládiis & fústibus; tum quotídiè vobíscum fuérim in templo, non extendístis manus in me; sed * Hæc est hora vestra, & potéstas tenebrárum. *Luc.* 22. *v.* 52. 53. ℣. Ecce in mánibus vestris sum: fácite mihi quod bonum est in óculis vestris. *Jerem.* 26. 14. * Hæc est. *Repet.* Quasi.

# AD LAUDES MATUTINAS.

*Psalmi Feriales cum Antiphonis sequentibus.*

*Ant.* 2. d. Postquàm lavit Jesus pedes discipulórum; dixit eis: Exémplum dedi vobis, ut quemádmodùm ego feci vobis, ita & vos faciátis. *Joan.* 13. *v.* 12. 15.

*Ant.* 3. c. Mandátum novum do vobis: Ut diligátis ínvicem, sicut diléxi vos. *Joan.* 13. 34.

*Ant.* 7. c. In hoc cognóscent omnes quia discípuli mei estis, si dilectiónem habuéritis ad ínvicem. *Joan.* 13. 35.

*Ant.* 1. a. Baptísmo.

*Canticum.* 2. *Regum* 22. 2.

DO'minus petra mea & robur meum: * & Salvátor meus.

Deus fortis meus, sperábo in eum, * scutum meum & cornu salútis meæ:

Elevátor meus, & refúgium, * Salvátor meus, de iniquitáte liberábis me.

Laudábilem invocábo Dóminum, * & ab inimícis meis salvus ero.

Quia circumdedérunt me contritiónes mortis,* torréntes Bélial terruérunt me.

Funes inférni circumdedérunt me: * prævenérunt me láquei mortis.

In tribulatióne mea invocábo Dóminum, * & ad Deum meum clamábo.

Et exáudiet de templo suo vocem meam, * & clamor meus véniet ad aures ejus.

*Ant.* Baptísmo hábeo baptizári, & quómodò coárctor úsquedum perficiátur. *Luc.* 12. 50.

*Ant.* 6. f. Cálicem, quem dedit mihi Pater, non bibam illum? Quómodò ergo implebúntur Scriptúræ, quia sic opórtet fieri? *Joan.* 18. 11. *Matth.* 26. 54.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. *irreg.* D. Sublevátis Jesus óculis in cœlum, dixit: Pater venit hora, clarífica Fílium tuum, ut Fílius tuus claríficet te. *Joan.* 17. 1.

*Dum dicitur Canticum*, Benedíctus, *extinguuntur omnia luminaria præter unum, quod accipitur ex summitate candelabri dùm cantatur Antiphona*, Sublevátis, *& absconditur sub altari.*

*Tunc omnibus genuflexis, duo Clerici retro altare, altâ voce dicunt*, Kyrie eléïson, Kyrie eléïson, Kyrie eléïson.

*Duo Presbyteri genuflexi in Choro respondent*, Dómine, Miserére nostri. *Isa.* 33. 2.

*Chorus dicit*, Christus Jesus factus est obédiens usque ad mortem. *Philip.* 2. 8.

*Duo Clerici*, Christe eléïson.

*Duo alii Presbyteri stantes:* Qui venísti quærere & salvum fácere quod períerat. *Luc.* 19. 10.

*Duo Clerici*, Christe eléïson.

*Duo Presbyteri*, Qui exaltátus à terra ómnia traxísti ad teipsum. *Joan.* 12. 32.

*Duo Clerici*, Christe eléïson.

*Duo Presbyteri*, Qui locútus es per os Prophétæ: Ero mors tua, ô mors. *Luc.* 1. 70. *Osee* 13. 14.

*Duo primi Presbyteri*, Dómine, miserére nostri. *Isa.* 33. 2.

*Chorus*, Christus Jesus factus est obédiens usque ad mortem. *Tunc puer unus stans in Choro altâ voce dicit*, Mortem autem crucis.

*Omnes flexis genibus dicunt* Pater noster *totum secretò, posteà Psalmum* Miserére. *Quo finito, dicitur sine* Orémus.

*Oratio.*

Réspice, quǽsumus, Dómine, super hanc fami-

lam tuam, pro qua Dóminus noster Jesus Christus non dubitávit mánibus tradi nocéntium & crucis subíre torméntum. *dicitur secretò*, Qui tecum vivit.

*Finitâ Oratione, mox profertur Candela accensa, & omnes cum silentio discedunt.*

AD HORAS OMNES.

*Dictis secretò*, Pater noster, Ave, *absolutè inchoatur ab Antiph.* 2. d. Christus Jesus factus est; *Deinde dicuntur Psalmi Feriales diei, quibus finitis dicitur*

*Antiph.* Christus Jesus factus est obédiens usque ad mortem, mortem autem crucis. *Deinde flexis genibus, secretò*, Pater noster. *Psalm.* Miserére mei Deus, *& Oratio*, Réspice, *ut suprà.*

AD VESPERAS.

*Ant.* 2. d. Cálicem.

*Psalmus* 115.

CRédidi, propter quod locútus sum: * ego autem humiliátus sum nimis.

Ego dixi in excéssu meo: * omnis homo mendax.

Quid retríbuam Dómino: * pro ómnibus quæ retríbuit mihi?

Cálicem salutáris accípiam: * & nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam coram omni pópulo ejus: * pretiósa in conspéctu Dómini, mors sanctórum ejus.

O Dómine, quia ego servus tuus: * ego servus tuus, & fílius ancíllæ tuæ.

Dirupísti víncula mea: * tibi sacrificábo hóstiam laudis, & nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam in conspéctu omnis pópuli ejus, * in átriis domûs Dómini, in medio tui Jerusálem.

*Ant.* Cálicem salutáris accípiam, & nomen Dómini invocábo. *v.* 4.

*Ant.* 8. g. Cum his.

*Psalmus* 119.

AD Dóminum, cùm tribulárer, clamávi, * & exaudívit me.

Dómine, líbera ánimam meam à lábiis iníquis, * & à lingua dolósa.

Quid detur tibi, aut quid apponátur tibi * ad linguam dolósam?

Sagíttæ poténtis acútæ, * cum carbónibus desolatóriis.

Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est: habitávi cum habitántibus Cedar; * multùm íncola fuit ánima mea.

Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus; * cùm loquébar illis, impugnábant me gratis.

*Ant.* Cum his qui odérunt

pacem, eram pacíficus; cùm loquébar illis, impugnábant me gratis. v. 7.

*Ant.* 3. c. Ab homínibus.

*Psalmus* 139.

ERipe me, Dómine, ab hómine malo: * à viro iníquo éripe me.

Qui cogitavérunt iniquitátes in corde, * totâ die constituébant prælia.

Acuérunt linguas suas sicut serpéntis; * venénum áspidum sub lábiis eórum.

Custódi me, Dómine, de manu peccatóris, * & ab homínibus iníquis éripe me;

Qui cogitavérunt supplantáre gressus meos, * abscondérunt supérbi láqueum mihi.

Et funes extendérunt in láqueum; * juxta iter scándalum posuérunt mihi.

Dixi Dómino: Deus meus es tu; * exáudi, Dómine, vocem deprecatiónis meæ.

Dómine, Dómine, virtus salútis meæ, * obumbrásti super caput meum in die belli.

Ne tradas me, Dómine, à desidério meo peccatóri: * cogitavérunt contra me, ne derelínquas me, ne fortè exalténtur.

Caput circúitus eórum; * labor labiórum ipsórum opériet eos.

Cadent super eos carbónes, in ignem dejícies eos; * in misériis non subsístent.

Vir linguósus non dirigétur in terra; * virum injústum mala cápient in intéritu.

Cognóvi quia fáciet Dóminus judícium ínopis, * & vindíctam páuperum.

Verúntamen justi confitebúntur nómini tuo; * & habitábunt recti cum vultu tuo.

*Ant.* Ab homínibus iníquis éripe me, Dómine. v. 5.

*Ant.* 4. a. Custódi me.

*Psalmus* 140.

DO'mine, clamávi ad te; exáudi me; * inténde voci meæ, cùm clamávero ad te.

Dirigátur orátio mea sicut incénsum in conspéctu tuo; * elevátio mánuum meárum sacrifícium vespertínum.

Pone, Dómine, custódiam ori meo, * & óstium circumstántiæ lábiis meis.

Non declínes cor meum in verba malítiæ, * ad excusándas excusatiónes in peccátis;

Cum homínibus operántibus iniquitátem; * & non communicábo cum eléctis eórum.

Corrípiet me justus in misericórdia, & increpábit me; * óleum autem peccatóris non impínguet caput meum:

Quóniam adhuc & orátio mea, * in beneplácitis eórum.

Absórpti sunt juncti petræ júdices eórum, * áudient verba mea quóniam potuérunt.

Sicut crassitúdo terræ erúpta est super terram; * dissipáta sunt ossa nostra secus inférnum.

Quia ad te, Dómine, Dómine, óculi mei; * in te sperávi, non áuferas ánimam meam.

Custódi me à láqueo, quem statuérunt mihi; * & à scándalis operántium iniquitátem.

Cadent in retiáculo ejus peccatóres: * singuláriter sum ego donec tránseam.

*Ant.* Custódi me à láqueo quem statuérunt mihi, & à scándalis operántium iniquitátem. *v.* 9.

*Ant.* 7. a. Considerábam.

*Psalmus* 141.

VOce meâ ad Dóminum clamávi; * voce meâ ad Dóminum deprecátus sum.

Effúndo in conspéctu ejus oratiónem meam, * & tribulatiónem meam ante ipsum pronúntio.

In deficiéndo ex me spíritum meum, * & tu cognovísti sémitas meas.

In via hac quâ ambulábam, * abscondérunt láqueum mihi.

Considerábam ad déxteram, & vidébam; * & non erat qui cognósceret me.

Périit fuga à me, * & non est qui requírat ánimam meam.

Clamávi ad te, Dómine, * dixi: Tu es spes mea, pórtio mea in terra vivéntium.

Inténde ad deprecatiónem meam, * quia humiliátus sum nimis.

Líbera me à persequéntibus me, * quia confortáti sunt super me.

Educ de custódia ánimam meam ad confiténdum nómini tuo; * me expéctant justi, donec retríbuas mihi.

*Ant.* Considerábam ad déxteram & vidébam, & non erat qui cognósceret me. *v.* 5.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. a. Cœnántibus eis accépit Jesus panem, & benedíxit, ac fregit, dedítque discípulis suis. *Matt.* 26. 26.

*Deinde*, Pater noster *secretò*, *Psalmus* Miserére, *Oratio*, Réspice, *p.* 338.

## AD COMPLETORIUM.

*Dicuntur Psalmi feriales, & Canticum* Nunc dimíttis, *deinde Antiphona* Christus Jesus factus est, *p.* 339.

## FERIA SEXTA
## IN PARASCEVE.
## IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 8. g. Astitérunt.

*Psalmus 2.*

QUare fremuérunt Gentes, * & pópuli meditáti sunt inánia?

Astitérunt reges terræ, & príncipes convenérunt in unum * advérsùs Dóminum, & advérsùs Christum ejus.

Dirumpámus vincula eórum, * & projiciámus à nobis jugum ipsórum.

Qui hábitat in cœlis irridébit eos; * & Dóminus subsannábit eos.

Tunc loquétur ad eos in ira sua, * & in furóre suo conturbábit eos.

Ego autem constitútus sum rex ab eo super Sion montem sanctum ejus, * prǽdicans præcéptum ejus.

Dóminus dixit ad me: * Filius meus es tu, ego hódiè genui te.

Póstula à me, & dabo tibi Gentes hereditátem tuam, * & possessiónem tuam términos terræ.

Reges eos in virga férrea, * & tanquam vas fíguli confrínges eos.

Et nunc, reges, intellígite; * erudímini, qui judicátis terram.

Servíte Dómino in timóre, * & exultáte ei cum tremóre.

Apprehéndite disciplínam, * nequándo irascátur Dóminus, & pereátis de via justa.

Cùm exárserit in brevi ira ejus, * beáti omnes qui confídunt in eo.

*Ant.* Astitérunt reges terræ, & príncipes convenérunt in unum advérsùs Dóminum, & advérsùs Christum ejus. *ꝟ.* 2.

*Ant.* 2. d. Sepúlchrum.

*Psalmus 5.*

VErba mea áuribus pércipe, Dómine, * intéllige clamórem meum.

Inténde voci oratiónis meæ, * Rex meus, & Deus meus.

Quóniam ad te orábo, Dómine, * manè exáudies vocem meam.

Manè astábo tibi, & vidébo, * quóniam non Deus volens iniquitátem tu es.

Neque habitábit juxta te malignus, * neque permanébunt injústi ante óculos tuos.

Odísti omnes, qui operántur iniquitátem; * perdes omnes, qui loquúntur mendácium.

Virum sánguinum & dolósum, * abominábitur Dóminus.

Ego autem in multitúdine misericórdiæ tuæ introíbo in domum tuam; * adorábo ad templum sanctum tuum in timóre tuo.

Dómine, deduc me in justítia tua; * propter inimícos

meos dírige in conspéctu tuo viam meam.

Quóniam non est in ore eórum véritas; * cor eórum vanum est.

Sepúlchrum patens est guttur eórum, linguis suis dolósè agébant, * júdica illos, Deus.

Décidant à cogitatiónibus suis, secúndùm multitúdinem impietátum eórum expélle eos, * quóniam irritavérunt te, Dómine.

Et læténtur omnes, qui sperant in te, * in ætérnum exultábunt, & habitábis in eis.

Et gloriabúntur in te omnes, qui díligunt nomen tuum, * quóniam tu benedíces justo.

Dómine, ut scuto bonæ voluntátis tuæ, * coronásti nos.

*Ant.* Sepúlchrum patens est guttur eórum, linguis suis dolósè agébant, júdica illos, Deus. *v.* II.

*Ant.* 8. c. Insurrexérunt.

*Psalmus* 26.

DO'minus illuminátio mea, & salus mea, * quem timébo?

Dóminus protéctor vitæ meæ, * à quo trepidábo?

Dùm appròpiant super me nocéntes, * ut edant carnes meas.

Qui tríbulant me inimíci mei, * ipsi infirmáti sunt, & cecidérunt.

Si consístant advérsùm me castra, * non timébit cor meum.

Si exúrgat advérsùm me prælium, * in hoc ego sperábo.

Unam pétii à Dómino, hanc requíram, * ut inhábitem in domo Dómini ómnibus diébus vitæ meæ:

Ut vídeam voluptátem Dómini, * & vísitem templum ejus.

Quóniam abscóndit me in tabernáculo suo: * in die malórum protéxit me in abscóndito tabernáculi sui.

In petra exaltávit me, * & nunc exaltávit caput meum super inimícos meos.

Circuívi, & immolávi in tabernáculo ejus hóstiam vociferatiónis: * cantábo, & psalmum dicam Dómino.

Exáudi, Dómine, vocem meam, quâ clamávi ad te: * miserére mei, & exáudi me.

Tibi dixit cor meum, exquisívit te fácies mea: * fáciem tuam, Dómine, requíram.

Ne avértas fáciem tuam à me; * ne declínes in ira à servo tuo.

Adjútor meus esto, ne derelínquas me, * neque despí-

cias me, Deus salutáris meus.

Quóniam pater meus & mater mea dereliquérunt me; * Dóminus autem assúmpsit me.

Legem pone mihi, Dómine, in via tua, * & dírige me in sémitam rectam propter inimícos meos.

Ne tradíderis me in ánimas tribulántium me; * quóniam insurrexérunt in me testes iníqui, & mentíta est iníquitas sibi.

Credo vidére bona Dómini * in terra vivéntium.

Expécta Dóminum, viríliter age, & confortétur cor tuum, * & sústine Dóminum.

*Ant.* Insurrexérunt in me testes iníqui, & mentíta est iníquitas sibi. *v.* 12.

℣. Deus Isráël, propter te sustínui oppróbrium: ℟. Opéruit confúsio fáciem meam. *Ps.* 68. 8.

De Lamentatióne Jeremíæ Prophétæ.

Lectio I. *Cap.* 2. 8.

*Sion destructa.*

Cogitávit Dóminus dissipáre murum fíliæ Sion: teténdit funículum suum, & non avértit manum suam à perditióne: luxítque antemurále, & murus páriter dissipátus est.

Defíxæ sunt in terra portæ ejus; pérdidit & contrívit vectes ejus; regem ejus & príncipes ejus in Géntibus; non est lex, & Prophétæ ejus non invenérunt visiónem à Dómino.

Sedérunt in terra, conticuérunt senes fíliæ Sion: conspersérunt cínere cápita sua, accíncti sunt cilíciis, abjecérunt in terram cápita sua vírgines Jerúsalem.

Defecérunt præ lácrymis óculi mei, conturbáta sunt víscera mea: effúsum est in terra jecur meum super contritióne fíliæ pópuli mei, cùm defíceret párvulus & lactens in platéis óppidi.

℟. Quærébant advérsus Jesum testimónium, ut eum morti tráderent, nec inveniébant; multi enim testimónium falsum dicébant, * Et conveniéntia testimónia non erant. *Marc.* 14. *v.* 55. 56.
℣. Insurrexérunt in me testes iníqui, & mentíta est iníquitas sibi. *Psal.* 26. 12. * Et conveniéntia.

Lectio II. *v.* 12.

*Sion à prophetis decepta.*

Matribus suis dixérunt: Ubi est tríticum & vinum? cùm defícerent quasi vulneráti in platéis civitátis; cùm exhalárent ánimas suas in sinu matrum suárum.

Cui comparábo te? vel cui assimilábo te, fília Jerúsalem? cui exæquábo te, & consolábor te, virgo fília

Sion? magna est enim velut mare contrítio tua; quis medébitur tui?

Prophétæ tui vidérunt tibi falsa, & stulta, nec aperiébant iniquitátem tuam, ut te ad pœniténtiam provocárent: vidérunt autem tibi assumptiónes falsas, & ejectiónes.

Plausérunt super te mánibus omnes transeúntes per viam: sibilavérunt, & movérunt caput suum super fíliam Jerúsalem: Hǽccine est urbs, dicéntes; perfécti decóris, gáudium univérsæ terræ.

℟. Plecténtes corónam de spinis, posuérunt super caput ejus, & arúndinem in dextera ejus, * Et expuéntes in eum percutiébant caput ejus. *Matt.* 27. *v.* 29. ℣. Corpus meum dedi percutiéntibus, & genas meas velléntibus: fáciem meam non avérti ab increpántibus, & conspuéntibus in me. *Isa.* 50. 6. * Et expuéntes.

Lectio III. *Cap.* 3. 1. *Vir dolori suo traditus.*

EGo vir videns paupertátem meam in virga indignatiónis ejus.

Me minávit & addúxit in ténebras, & non in lucem.

Tantùm in me vertit, & convértit manum suam tota die.

Vetústam fecit pellem meam, & carnem meam; contrívit ossa mea.

Ædificávit in gyro meo, & circúmdedit me felle, & labóre.

In tenebrósis collocávit me, quasi mórtuos sempitérnos.

Circumædificávit advérsùm me, ut non egrédiar: aggravávit cómpedem meum.

Sed & cùm clamávero, & rogávero, exclúsit oratiónem.

Conclúsit vias meas lapídibus quadris, sémitas meas subvértit.

℟. Exívit Jesus portans corónam spíneam, & purpúreum vestiméntum: Et * Dixit ad Jesum Pilátus; Unde es tu? Jesus autem respónsum non dedit ei. *Joan.* 19. *v.* 5. 9. ℣. Oblátus est quia ipse vóluit, & non apéruit os suum. *Isa.* 53. 7. * Dixit. *Repet.* Exívit.

## IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 2. a. Aliéni.

*Psalmus* 53.

DEus, in nómine tuo salvum me fac, * & in virtúte tua júdica me.

Deus, exáudi oratiónem meam, * áuribus pércipe verba oris mei;

Quóniam aliéni insurrexérunt advérsùm me, & fortes quæsiérunt ánimam meam, *

& non proposuérunt Deum ante conspéctum suum.

Ecce enim Deus ádjuvat me, * & Dóminus suscéptor est ánimæ meæ.

Avérte mala inimícis meis, * & in veritáte tua dispérde illos.

Voluntárie sacrificábo tibi, * & confitébor nómini tuo, Dómine, quóniam bonum est;

Quóniam ex omni tribulatióne eripuísti me; * & super inimícos meos despéxit óculus meus.

*Ant.* Aliéni insurrexérunt advérsùm me, & fortes quæsiérunt ánimam meam. *v.* 5.

*Ant.* 3. c. Irruérunt.

*Psalmus* 58.

E'Ripe me de inimícis meis, Deus meus, * & ab insurgéntibus in me líbera me.

E'ripe me de operántibus iniquitátem, * & de viris sánguinum salva me.

Quia ecce cepérunt ánimam meam: * irruérunt in me fortes.

Neque iníquitas mea, neque peccátum meum, Dómine, * sine iniquitáte cucúrri, & diréxi.

Exúrge in occúrsum meum, & vide: * & tu Dómine Deus virtútum, Deus I'sraël,

Inténde ad visitándas omnes Gentes, * non miseréaris ómnibus, qui operántur iniquitátem.

Converténtur ad vésperam, & famem patiéntur ut canes, * & circuíbunt civitátem.

Ecce loquéntur in ore suo, & gládius in lábiis eórum; * quóniam quis audívit?

Et tu Dómine, deridébis eos: * ad níhilum dedúces omnes Gentes.

Fortitúdinem meam ad [illegible] custódiam, quia, Deus, suscéptor meus es: * De[illegible] meus, misericórdia ejus p[illegible] véniet me.

Deus osténdet mihi sup[illegible] inimícos meos; * ne occ[illegible] das eos: nequándo obliv[illegible] cántur pópuli mei.

Dispérge illos in virt[illegible] tua, * & depóne eos pro[illegible] tor meus, Dómine.

Delíctum oris eórum, [illegible] mónem labiórum ipsórum[illegible] & comprehendántur in [illegible] pérbia sua.

Et de execratióne & men[illegible] dácio annuntiabúntur, * [illegible] consummatióne, in ira con[illegible] summatiónis, & non erunt.

Et scient quia Deus dom[illegible] nábitur Jacob, * & fínium terræ.

Converténtur ad vésperam, & famem patiéntur ut canes, * & circuíbunt civitátem.

Ipsi dispergéntur ad manducándum; * si verò non fúerint saturáti, & murmurábunt.

Ego autem cantábo fortitúdinem tuam, * & exultábo manè misericórdiam tuam.

Quia factus es suscéptor meus, & refúgium meum, * in die tribulatiónis meæ.

Adjútor meus, tibi psallam, quia Deus, suscéptor meus es; * Deus meus, misericórdia mea.

*Ant.* Irruérunt in me fortes, neque iníquitas mea, neque peccátum meum, Dómine, *v.* 4. 5.

*Ant.* 4. a. Prétium.

*Psalmus* 61.

Nonne Deo subjécta erit ánima mea? * ab ipso enim salutáre meum.

Nam & ipse Deus meus, & salutáris meus, suscéptor meus, * non movébor ámplius.

Quoúsque irrúitis in hóminem? * interfícitis univérsi vos tanquam paríeti inclináto & macériæ depúlsæ?

Verúntamen prétium meum cogitavérunt repéllere, cucúrri in siti: * ore suo benedicébant, & corde suo maledicébant.

Verúntamen Deo subjécta esto, ánima mea; * quóniam ab ipso patiéntia mea.

Quia ipse Deus meus, & salvátor meus, adjútor meus: * non emigrábo.

In Deo salutáre meum, & glória mea: * Deus auxílii mei, & spes mea in Deo est.

Speráte in eo, omnis congregátio pópuli, effúndite coram illo corda vestra: * Deus adjútor noster in ætérnum.

Verúntamen vani fílii hóminum, mendáces fílii hóminum in statéris, * ut decípiant ipsi de vanitáte in idípsum.

Nolíte speráre in iniquitáte, & rapínas nolíte concupíscere: * divítiæ si áffluant, nolíte cor appónere.

Semel locútus est Deus, duo hæc audívi, quia potéstas Dei est, & tibi, Dómine, misericórdia; * quia tu reddes unicuíque juxta ópera sua.

*Ant.* Prétium meum cogitavérunt repéllere, cucúrri in siti; ore suo benedicébant, & corde suo maledicébant, *v.* 5.

℣. Exúrge, & inténde judício meo, Deus meus, ℟. Dóminus meus in causam meam. *Ps.* 34. 23.

Sermo sancti Bernárdi Abbátis.

LECTIO IV.

*De Passione Domini.*

Vigiláte ánimo, fratres, ne infructuósè vos hujus témporis Sacraménta pertránseant; nempe adest Pás-

sio Dómini. Tria speciáliter cónvenit intuéri, opus, modum, causam. In ópere patiéntia, in modo humílitas, in causa cháritas commendátur. Patiéntia singuláris, cùm supra dorsum ejus fabricárent peccatóres; cùm sic extenderétur in ligno, ut dinumeraréntur ómnia ossa ejus; cùm foderéntur manus ejus & pedes, & tanquam ovis coram tondénte, non aperúerit os suum; non advérsùs Patrem múrmurans, à quo missus fúerat; non advérsùs humánum genus, pro quo quæ non rápuit exolvébat: non dénique vel contra pópulum ipsum peculiárem sibi, à quo pro tantis benefíciis tanta mala recipiébat. Plectúntur álíqui pro peccátis suis & humíliter sústinent: hoc ipsum tamen eis ad patiéntiam reputátur. Flagellántur álii, non tàm purgándi quàm probándi, coronandíque; & major in eis patiéntia comprobátur, & commendátur. Quómodò non máxima censeátur in Christo, qui in funículo hereditátis suæ, ab his quibus speciáliter advénerat salvátor, crudelíssimâ morte mulctabátur. Ita ergo habes in ópere patiéntiam.

℟. Suscepérunt Jesum, & eduxérunt; * Et bájulans sibi crucem exívit in eum, qui dícitur Calváriæ locum *Joan. 19. v. 16. 17.* ℣. Tulit A'braham ligna holocáuti, & impósuit super I'saac fílium suum. *Gen. 22. 6.* * Et bájulans.

LECTIO V.

MOdum ipsum si diligénter attendas, non modò mitem, sed & húmilem corde cognósces. Nempe in humilitáte judícium ejus sublátum est, cùm nec ad tantas blasphémias, nec ad fassíssima, quæ sibi objiciebántur crímina, respondéret. Sputis illítus est, oppróbrisaturátus, morte turpíssicondemnátus, cum sceleratis deputátus. Nihílne merebitur, vel ista humílitas, q hunc habet modum, in quæ tàm est ultra mod Sicut est patiéntia singulári sic & humílitas admirábili útraque sine exémplo. Utráque tamen magnífícè cau ipsa commèndat; nímirum cháritas est. Propter nímiam enim charitátem suam, qu diléxit nos Deus, ut servum redímeret, nec Pater Fílio, nec sibi Fílius ipse pepércit. Vix pro justo quis móritur pro injústis passus es, móriens propter delícta nostra, qui venísti justificáre gratis peccatóres, servos, fácere fratres; captívos, coherédes. Nec sanè áliud áliquid pe

...tiam hanc & humilitátem ...què illústrat, quàm quòd ...didit in mortem ánimam ...m, & peccáta multórum ...it, étiam pro transgressóri... ...rogans, ut non períret.

℟. Crucifixérunt eum: & ...trónes, unum à dextris, ...rum à sinístris: Jesus au... ...dicébat: * Pater dimítte ...: non enim sciunt quid ...unt. *Luc.* 23. *v.* 33. 34. ...Cum sceleràtis reputátus ..., & ipse peccáta multó... ...tulit, & pro transgres... ...us rogávit. *Isa.* 53. 12. ...er.

LECTIO VI.

...igna ergo cháritas tàm ... inæstimábilis, humílitas ...dmirábilis, patiéntia tàm ...erábilis. Digna planè tàm ...a, tàm immaculáta hós... ...Flagéllis cæsus est Dómi... ...spinis coronátus, clavis ...ossus, affíxus patíbulo: ...um tamen dolórum ím... ...r: Ignósce, ait, illis. Hinc ... misériæ córporis, hinc ... misericórdiæ cordis; ... dolóres, hinc misera... ...a. Misericórdiæ Dómini ...æ, sed & misériæ Dómini ...æ. Vincéntne misériæ ...icórdias, an misericór... ...misérias superábunt? Vin... ...t misericórdiæ tuæ an... ...æ, Dómine, vincat sa... ...tia malítiam. O Judæi ...des estis, sed lápidem percútitis molliórem, de quo résonat tinnítus pietátis & ebúllit óleum charitátis! Recordábor dolórum ejus, convitiórum, sputórum, colaphórum, subsannatiónum, exprobratiónum, clavórum, horúmque simílium, quæ per eum & super eum abundántiùs transiérunt. Alióquin étiam exquirétur à me sanguis justus, qui effúsus est super terram, nec immúnis ero ab illo tàm singulári scélere Judæórum: quòd vidélicet tantæ charitáti ingrátus fúerim, quòd Spirítui grátiæ contuméliam fécerim, quòd sánguinem testaménti pollútum dúxerim, quòd conculcáverim Fílium Dei.

℟. Fodérunt manus meas & pedes meos; dinumeravérunt ómnia ossa mea, considerávérunt & inspexérunt me: * Divisérunt sibi vestiménta mea, & super vestem meam misérunt sortem. *Psal.* 21. *v.* 17. 18. 19. ℣. Postquàm crucifixérunt eum, divisérunt vestiménta ejus, sortem mitténtes, ut implerétur quod dictum est per Prophétam, dicéntem. *Matt.* 27. 35. * Divisérunt. *Repet.* Fodérunt.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 8. c. Zelus.

*Psalmus* 68.

SAlvum me fac, Deus, * quóniam intravérunt a-

quæ usque ad ánimam meam.

Infixus sum in limo profúndi, * & non est substántia.

Veni in altitúdinem maris, * & tempéstas demérsit me.

Laborávi clamans, raucæ factæ sunt fauces meæ: * defecérunt óculi mei, dùm spero in Deum meum.

Multiplicáti sunt super capillos cápitis mei, * qui odérunt me gratis.

Confortáti sunt qui persecúti sunt me inimíci mei injústè: * quæ non rápui, tunc exolvébam.

Deus, tu scis insipiéntiam meam; * & delícta mea à te non sunt abscóndita.

Non erubéscant in me, qui expéctant te, Dómine, * Dómine virtútum.

Non confundántur super me * qui quærunt te, Deus I'sraël.

Quóniam propter te sustínui oppróbrium; * opéruit confúsio fáciem meam.

Extráneus factus sum frátribus meis, * & peregrínus fíliis matris meæ.

Quóniam zelus domûs tuæ comédit me; * & oppróbria exprobrántium tibi cecidérunt super me.

Et opérui in jejúnio ánimam meam; * & factum est in oppróbrium mihi.

Et pósui vestiméntum meum cilícium; * & factu[s] sum illis in parábolam.

Advérsùm me loquebántu[r] qui sedébant in porta: * &[...] me psallébant qui bibéba[nt] vinum.

Ego verò oratiónem me[am] ad te, Dómine: * tempus b[e]neplácitì, Deus.

In multitúdine miseric[or]diæ tuæ exáudi me, * [in] veritáte salútis tuæ.

E'ripe me de luto, ut [non] infígar: * líbera me ab iis, [qui] odérunt me, & de profún[dis] aquárum.

Non me demérgat tem[pes]tas aquæ, neque absór[beat] me profúndum, * neque [ur]geat super me púteus os[suum].

*Ant.* Zelus domûs tuæ [co]médit me, & oppróbria [ex]probrántium tibi cecidé[runt] super me. *v.* 10.

*Ant.* 5. a. Sustínui.

*Divisio Psalmi 68.*

EXáudi me, Dómi[ne,] quóniam benígna est [mi]sericórdia tua: * secún[dùm] multitúdinem miseratió[num] tuárum réspice in me.

Et ne avértas fáciem tu[am] à púero tuo, * quóniam [tri]bulor, velóciter exáudi [me.]

Inténde ánimæ meæ, [&] líbera eam: * propter in[imí]cos meos éripe me.

Tu scis impropérium meu[m,] & confusiónem meam, * [&] reveréntiam meam.

In conspéctu tuo sunt omnes, qui tribulant me, * impropérium expectávit cor meum, & misériam.

Et sustínui qui simul contristarétur, & non fuit: * & qui consolarétur, & non invéni.

Et dedérunt in escam meam fel, * & in siti mea potavérunt me acéto.

Fiat mensa eórum coram ipsis in láqueum, * & in retributiónes, & in scándalum.

Obscuréntur óculi eórum ne vídeant, * & dorsum eórum semper incúrva.

Effúnde super eos iram tuam, * & furor iræ tuæ comprehéndat eos.

Fiat habitátio eórum desérta, * & in tabernáculis eórum non sit qui inhábitet.

Quóniam quem tu percussísti, persecúti sunt; * & super dolórem vúlnerum meórum addidérunt.

Appóne iniquitátem super iniquitátem eórum; * & non intrent in justítiam tuam.

Deleántur de Libro vivéntium, * & cum justis non scribántur.

Ego sum pauper & dolens; * salus tua, Deus, suscépit me.

*Ant.* Sustínui qui simul constristarétur, & non fuit; & qui consolarétur, & non invéni. *v.* 21.

*Ant.* 1. a. Salus tua.

*Altera divisio Psalmi* 68.

LAudábo nomen Dei cum cántico, * & magnificábo eum in laude.

Et placébit Deo super vítulum novéllum, * córnua producéntem & úngulas.

Vídeant páuperes, & læténtur: * quærite Deum, & vivet ánima vestra.

Quóniam exaudívit páuperes Dóminus, * & vinctos suos non despéxit.

Laudent illum cœli & terra, * mare, & ómnia reptília in eis.

Quóniam Deus salvam fáciet Sion; * & ædificabúntur civitátes Juda.

Et inhabitábunt ibi, * & hereditáte acquírent eam.

Et semen servórum ejus possidébit eam; * & qui díligunt nomen ejus, habitábunt in ea.

*Ant.* Salus tua, Deus, suscépit me. *v.* 30.

℣. Omnes vidéntes me, derisérunt me, ℟. Locúti sunt lábiis, & movérunt caput. *Ps.* 21. 8.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Romános.

LECTIO VII. *Cap.* 5. 1.

*Christus & pro impiis mortuus est.*

JUstificáti ex fide, pacem habeámus ad Deum per Dóminum nostrum Jesum

Christum : per quem & habémus accéssum per fidem in grátiam istam, in qua stamus, & gloriámur in spe glóriæ filiórum Dei. Nón solùm autem, sed & gloriámur in tribulatiónibus : sciéntes quòd tribulátio patiéntiam operátur : patiéntia autem probatiónem, probátio verò spem. Spes autem non confúndit : quia cháritas Dei diffúsa est in córdibus nostris per Spíritum sanctum, qui datus est nobis. Ut quid enim Christus, cùm adhuc infirmi essémus, secúndùm tempus pro ímpiis mórtuus est ? Vix enim pro justo quis móritur : nam pro bono fórsitan quis áudeat mori. Commméndat autem charitátem suam Deus in nobis : quóniam cùm adhuc peccatóres essémus, secúndùm tempus, Christus pro nobis mórtuus est : multò ígitur magis nunc justificáti in sánguine ipsíus ; salvi érimus ab ira per ipsum. Si enim cùm inimíci essémus, reconciliáti sumus Deo per mortem Fílii ejus : multò magis reconciliáti, salvi érimus in vita ipsíus. Non solùm autem, sed & gloriámur in Deo per Dóminum nostrum Jesum Christum ; per quem nunc reconciliatiónem accépimus.

℟. Sciens Jesus quia ómnia consummáta sunt, * Ut consummarétur Scriptúra, dix[it:] Sítio : illi autem spóngi[am] plenam acéto obtulérunt o[ri] ejus. *Joan.* 19. *v.* 28. 29. [℣.] Dedérunt in escam meam f[el,] & in siti mea potavérunt [me] acéto. *Psal.* 68. 22. * Ut co[n]summarétur.

LECTIO VIII. *v.* 1[2.]

*Mors per peccatum ; Vita [per] gratiam.*

PRoptéreà, sicut per un[um] hóminem peccátum [in] hunc mundum intrávit, [&] per peccátum mors, & [ita] in omnes hómines mors [per]transívit, in quo omnes pe[ccá]vérunt. Usque ad legem [enim] peccátum erat in mun[do :] peccátum autem non im[pu]tabátur, cùm lex non e[sset.] Sed regnávit mors ab A[dam] usque ad Móysen étia[m in] eos, qui non peccavér[unt in] similitúdinem prævaricá[tionis] Adæ, qui est forma fu[turi.] Sed non sicut delíctum, [ita] & donum : si enim uníus [de]líсto multi mórtui sunt : [mul]tò magis grátia Dei, & [do]num in grátia uníus hóm[inis] Jesu Christi in plures ab[un]dávit. Et non sicut per un[um] peccátum, ita & don[um.] Nam judícium quidem [ex] uno in condemnatióne[m :] grátia autem ex multis [de]líctis in justificatiónem. [Si] enim uníus delícto mors [re]gnávit per unum : mul[tò] mag[is]

...gis abundántiam grátiæ, ...donatiónis, & justítiæ accipiéntes, in vita regnábunt per unum Jesum Christum. ...itur sicut per uníus delíctum in omnes hómines in condemnatiónem: sic & per ...ius justítiam in omnes hómines, in justificatiónem vitæ. ...ut enim per inobediéntiam uníus hóminis, peccatores constitúti sunt multi: ... per uníus obeditiónem, ... constituéntur multi. Lex ...m subintrávit ut abundáret delíctum. Ubi autem ...dávit delíctum, superabundávit grátia. Ut sicut ...ávit peccátum in mortem, ita & grátia regnet per ...iam in vitam ætérnam, ... Jesum Christum Dóminum nostrum.

... Cùm esset Fílius Dei, ...it ex iis, quæ passus est, ...diéntiam, * Et consummatus, factus est ómnibus ...perántibus sibi, causa ... ætérnæ. *Hebr.* 5. *v.* 8. ... Justus perit & non est ... recógitet in corde suo. *Is.* ... * Et consummátus.

... Dómini nostri Jesu ...isti secúndùm Joánnem.

...ctio IX. *Cap.* 19. 14. *...isti ultima verba & mors.*

...Rat Parascéve Paschæ, ... hora quasi sexta. Suscepérunt autem Jesum & eduxérunt; & bájulans sibi crucem exívit in eum, qui dícitur Calváriæ, locum, ubi crucifixérunt eum. Pósteà sciens Jesus, quia ómnia consummáta sunt, cùm accepísset acétum, dixit: Consummátum est; & inclináto cápite trádidit spíritum. Et réliqua.

Homilía sancti Justíni Mártyris.

*Apologia* 1. *ad Imper. Antoninum Senatumque Romanum scripta an.* 150.

IPsi pedes meos fodérunt & manus, sortésque de veste mea jecérunt. David quidem Rex & Prophéta qui hæc dixit, nihil horum pertulit: Jesus autem Christus manus expándit & teténdit, cùm cruci suffixus est à Judæis ei contradicéntibus, eúmque Christum esse negántibus; nam, quemádmodùm vates ait, eum rapiéntes ad tribúnal, dixérunt: (Júdica nobis.) Illud porrò (fodérunt manus meas & pedes) significátio erat eórum clavórum, qui in ejus mánibus & pédibus defixi sunt. Et posteáquàm eum in crucem egérunt, sortes in illíus vestes jecérunt, diviserúntque inter se ii, qui eum in crucem sustulérunt. Hæc autem gesta esse, ex iis actis, quæ Póntio Piláto prætóre facta sunt, perspícere potéstis.

℟. A' sexta hora ténebræ factæ sunt super univérsam terram usque ad horam nonam; & circa horam nonam exclamávit Jesus voce magnâ, dicens: * Deus meus, Deus meus, ut quid dereliquísti me? Jesus autem iterùm clamans voce magnâ, emísit spíritum. *Matth.* 27. *v.* 45. 46. 50. ℣. U'squequò, Dómine, oblivísceris me in finem? U'squequò avértis fáciem tuam à me. *Psal.* 12. ℟. * Deus meus. *Repet.* A' sexta.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Psalmi feriales excepto Cantico.*

*Ant.* 7. c. Próprio fílio suo non pepércit, sed pro nobis ómnibus trádidit illum. *Rom.* 8. 32.

*Ant.* 6. f. Vídimus eum, & non erat aspéctus, & desiderávimus eum, despéctum & novíssimum virórum, virum dolórum, & sciéntem infirmitátem. *Isa.* 53. *v.* 2. 3.

*Ant.* 2. d. Pro ómnibus mórtuus est Christus, ut qui vivunt, jam non sibi vivant, sed ei qui pro ipsis mórtuus est. 2. *Corinth.* 5. 15.

*Ant.* 4. a. Cùm vidéritis.

*Canticum Daniel.* 9. 25.

AB éxitu sermónis, ut iterùm ædificétur Jerúsalem,* usque ad Christum ducem,

Hebdómades septem, * & hebdómades sexagínta duæ erunt,

Et rursùm ædificábitur platéa, * & muri in angústia témporum.

Et post hebdómades sexagínta duas * occidétur Christus:

Et non erit ejus pópulus, * qui eum negatúrus est.

Et civitátem & sanctuárium dissipábit pópulus * cum duce ventúro:

Et finis ejus vástitas, * & post finem belli statúta desolátio.

Confirmábit autem pactum multis * hebdómadâ u[na]:

Et in dimídio hebdómad[æ] * defíciet hóstia & sacrifíci[um]:

Et erit in templo * abominátio desolátionis:

Et usque ad consummatiónem & finem, * per[seve]rábit desolátio:

*Antiphona.* Cùm vidéritis abominatiónem desolatiónis, quæ dicta est à Daniéle Prophéta, qui legit, intélligat. *Matth.* 24. 15.

*Ant.* 8. g. Tanquàm ovis ad occisiónem ductus est; & sicut agnus coram tondente se, sine voce, sic non apéruit os suum. *Act.* 8. 32.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. D. Omnis turba eórum, qui simul áderant ad spectáculum istud, & vidébant quæ fi[ebant]

[...]bant, percutiéntes péctora sua revertebántur. *Luc.* 23. 48.

Kyrie eléïson, *cum reliquis ut in die præcedenti, p.* 338.

Ad Horas, *Psalmi Feriales; cetera ut Feriâ quintâ in cœna Domini, pag.* 339.

AD VESPERAS.

*Antiphona & Psalmi ut in die praeced. p.* 339.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 1. a. [D]eus, quæ prænuntiávit per [o]s ómnium Prophetárum, [p]ati Christum suum, sic implévit. *Act.* 3. 18.

---

SABBATO SANCTO

[A]D OFFICIUM NOCTURNUM.

[I]N I. NOCTURNO.

*Ant.* 8. g. In pace.

*Psalmus* 4.

CUm invocárem, exaudívit me Deus justítiæ [m]eæ: * in tribulatióne dila[t]ásti mihi.

Miserére mei, * & exáudi [or]atiónem meam.

Filii hóminum úsquequò [gr]avi corde? * ut quid dilí[gi]tis vanitátem, & quǽritis [m]endácium?

Et scitóte quóniam mirificávit Dóminus sanctum [s]uum: * Dóminus exáudiet me, cùm clamávero ad eum.

Irascímini, & nolíte peccáre: * quæ dícitis in córdibus vestris, in cubílibus vestris compungímini.

Sacrificáte sacrifícium justítiæ, & speráte in Dómino; * multi dicunt: Quis osténdit nobis bona?

Signátum est super nos lumen vultûs tui, Dómine: * dedísti lætítiam in corde meo.

A fructu fruménti, vini, & ólei sui, * multiplicáti sunt.

In pace in idípsum * dórmiam & requiéscam;

Quóniam tu, Dómine, singuláriter in spe * constituísti me.

*Ant.* In pace in idípsum dórmiam & requiéscam. *v.* 9.

*Ant.* 4. a. Habitábit.

*Psalmus* 14.

DO'mine, quis habitábit in tabernáculo tuo? * aut quis requiéscet in monte sancto tuo?

Qui ingréditur sine mácula, * & operátur justítiam;

Qui lóquitur veritátem in corde suo, * qui non egit dolum in lingua sua;

Nec fecit próximo suo malum, * & oppróbrium non accépit advérsùs próximos suos.

Ad níhilum dedúctus est in conspéctu ejus malígnus; * timéntes autem Dóminum gloríficat;

Qui jurat próximo suo, & non décipit; * qui pecúniam suam non dedit ad usúram, & múnera super innocéntem non accépit.

Qui facit hæc, * non movébitur in ætérnum.

*Ant.* Habitábit in tabernáculo tuo, requiéscet in monte sancto tuo. *v.* 1.

*Ant.* 7. c. Caro mea.

*Psalmus* 15.

CONsérva me, Dómine, quóniam sperávi in te:* dixi Dómino: Deus meus es tu, quóniam bonórum meórum non eges.

Sanctis, qui sunt in terra ejus, * mirificávit omnes voluntátes meas in eis.

Multiplicátæ sunt infirmitátes eórum; * pósteà acceleravérunt.

Non congregábo conventícula eórum de sanguínibus;* nec memor ero nóminum eórum per lábia mea.

Dóminus pars hereditátis meæ, & cálicis mei: * tu es qui restítues hereditátem meam mihi.

Funes cecidérunt mihi in præcláris; * étenim heréditas mea præclára est mihi.

Benedícam Dóminum, qui tríbuit mihi intelléctum; * ínsuper & usque ad noctem increpuérunt me renes mei.

Providébam Dóminum in conspéctu meo semper; * quóniam à dextris est mihi, ne commóvear.

Propter hoc lætátum est cor meum, & exultávit lingua mea; * ínsuper & caro mea requiéscet in spe.

Quóniam non derelínques ánimam meam in inférno;* nec dabis Sanctum tuum vidére corruptiónem.

Notas mihi fecísti vias vitæ, adimplébis me lætitiâ cum vultu tuo; * delectatiónes in déxtera tua usque in finem.

*Ant.* Caro mea requiéscet in spe. *v.* 9.

℣. Posuérunt me in lacu inferióri, ℟. In tenebrósis & in umbra mortis. *Ps.* 87. 7.

De Lamentatióne Jeremíæ Prophétæ.

LECTIO I. *Cap.* 3. 22.

*Deus misericors est: sit bonus patiens.*

MIsericórdiæ Dómini, quia non sumus consúmpti: quia non defecérunt miseratiónes ejus.

Novi dilúculò, multa est fides tua.

Pars mea Dóminus, dixit ánima mea: proptéreà expectábo eum.

Bonus est Dóminus sperántibus in eum, ánimæ quærénti illum.

Bonum est præstolári cum siléntio salutáre Dei.

Bonum est viro cùm portáverit jugum ab adolescéntia sua.

Sedébit solitárius, & tacé-

sit: quia levávit super se.

Ponet in púlvere os suum, si fortè sit spes.

Dabit percutiénti se maxillam; saturábitur oppróbriis.

℟. In diébus carnis suæ * Preces, supplicationésque cum clamóre válido, & lácrymis ófferens, exaudítus est pro sua reveréntia. *Heb.* 5. 7. ℣. Vídimus eum novíssimum virórum, virum dolórum, & sciéntem infirmitátem. *Isa.* 53. 3. * Preces.

Lectio II. *Cap.* 4. 1.

*Sion devastata.*

QUómodò obscurátum est aurum, mutátus est color óptimus, dispérsi sunt lápides sanctuárii in cápite ómnium plateárum?

Fílii Sion ínclyti, & amícti auro primo, quómodò reputáti sunt in vasa téstea, opus mánuum fíguli.

Sed & lámiæ nudavérunt mammam, lactavérunt cátulos suos: fília pópuli mei crudélis quasi strúthio in desérto.

Adhǽsit lingua lacténtis ad palátum ejus in siti: párvuli petiérunt panem, & non erat qui frángeret eis.

Qui vescebántur voluptuósè interiérunt in viis: qui nutriebántur in cróceis, amplexáti sunt stércora.

Et major effécta est iníquitas fíliæ pópuli mei peccáto Sodomórum, quæ subvérsa est in moménto, & non cepérunt in ea manus.

℟. Quorum animálium infértur sanguis pro peccáto in Sancta, horum córpora cremántur extra castra. * Propter quod & Jesus, ut sanctificáret per suum sánguinem pópulum, extra portam passus est. Exeámus ígitur ad eum extra castra, impropérium ejus portántes. *Hebr.* 13. *v.* 11. 12. 13. ℣. Quorum sanguis illátus est in Sanctuárium, ut expiátio compleiétur, asportábunt foras castra, & combúrent igni. *Levit.* 16. 27. * Propter quod.

Orátio Jeremíæ Prophétæ.

Lectio III. *Cap.* 5. 1.

*Oratio Jeremiæ Prophetæ pro renovatione Jerusalem.*

REcordáre, Dómine, quid accíderit nobis: intuére, & réspice oppróbrium nostrum. Heréditas nostra versa est ad aliénos, domus nostræ ad extráneos. Pupílli facti sumus absque patre, matres nostræ quasi víduæ. Aquam nostram pecúniâ bíbimus: ligna nostra prétio comparávimus. Cervícibus nostris minabámur, lassis non dabátur réquies. Ægýpto dédimus manum, & Assýriis, ut saturarémur pane. Patres nostri peccavérunt, & non

sunt, & nos iniquitátes eórum portávimus. Servi domináti sunt nostri: non fuit qui redímeret de manu eórum. In animábus nostris afferebámus panem nobis, à fácie gládii in desérto. Pellis nostra, quasi clíbanus exústa est à fácie tempestátum famis. Mulíeres in Sion humiliavérunt, & vírgines in civitatíbus Juda.

℟. Ad Jesum cùm veníssent, ut vidérunt eum jam mórtuum, * Non fregérunt ejus crura; sed unus mílitum lánceâ latus ejus apéruit; & contínuò exívit sanguis & aqua: facta sunt enim hæc, ut Scriptúra impleretúr. *Joan.* 19. *v.* 33. 34. 35. ℣. Os non comminuétis ex eo: & vidébunt in quem transfixérunt. *Exod.* 12. 46. *Num.* 9. 11. *Zach.* 12. 10. * Non fregérunt. *Repet.* Ad Jesum.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 6. f. Ego in innocéntia.

*Psalmus* 25.

JU'dica me, Dómine, quóniam ego in innocéntia mea ingréssus sum; * & in Dómino sperans non infirmábor.

Proba me, Dómine: & tenta me: * ure renes meos & cor meum.

Quóniam misericórdia tua ante óculos meos est; * & complácui in veritáte tua.

Non sedi cum concílio vanitátis; * & cum iniqua geréntibus non introíbo.

Odívi ecclésiam malignántium; * & cum ímpiis non sedébo.

Lavábo inter innocéntes manus meas; * & circúndabo altáre tuum, Dómine;

Ut áudiam vocem laudis, * & enárrem univérsa mirabília tua.

Dómine, diléxi decórem domûs tuæ, * & locum habitatiónis glóriæ tuæ.

Ne perdas cum ímpiis, Deus, ánimam meam, * & cum viris sánguinum vitam meam.

In quorum mánibus iniquitátes sunt; * déxtera eórum repléta est munéribus.

Ego autem in innocéntia mea ingréssus sum: * rédime me, & miserére mei.

Pes meus stetit in dirécto: in ecclésiis benedícam te, Dómine.

*Ant.* Ego in innocéntia mea ingréssus sum: rédime me, Dómine. *v.* 11.

*Ant.* 3. c. Tu autem.

*Psalmus* 40.

BEátus qui intélligit super egénum & páuperem: in die mala liberábit eum Dóminus.

Dóminus consérvet eum,

& vivíficet eum, & beátum fáciat eum in terra, * & non tradat eum in ánimam inimicórum ejus.

Dóminus opem ferat illi super lectum dolóris ejus: * univérsum stratum ejus versásti in infirmitáte ejus.

Ego dixi: Dómine, miserére mei: * sana ánimam meam, quia peccávi tibi.

Inimíci mei dixérunt mala mihi: * Quandò moriétur, & períbit nomen ejus?

Et si ingrediebátur ut vidéret, vana loquebátur, * cor ejus congregávit iniquitátem sibi.

Egrediebátur foràs, * & loquebátur in idípsum.

Advérsùm me susurrábant omnes inimíci mei, * advérsùm me cogitábant mala mihi.

Verbum iníquum constituérunt advérsùm me:* Nunquid qui dormit, non adjíciet ut resúrgat?

E'tenim homo pacis meæ, in quo sperávi, * qui edébat panes meos, magnificávit super me supplantatiónem.

Tu autem, Dómine, miserére mei, & resúscita me; * & retríbuam eis.

In hoc cognóvi, quóniam voluísti me: * quóniam non gaudébit inimícus meus super me.

Me autem propter innocéntiam suscepísti, * & confirmásti me in conspéctu tuo in ætérnum.

Benedíctus Dóminus Deus I'sraël à sæculo, & usque in sæculum: * Fiat, fiat.

*Ant.* Tu autem, Dómine, resúscita me, non gaudébit inimícus meus super me. ℣. 11. 12.

*Ant.* 2. d. Scrutáti sunt.

*Psalmus 63.*

EXáudi, Deus, oratiónem meam cùm déprecor: * à timóre inimíci éripe ánimam meam.

Protexísti me à convéntu malignántium, * à multitúdine operántium iniquitátem.

Quia exacuérunt ut gládium linguas suas; * intendérunt arcum rem amaram, ut sagíttent in occúltis immaculátum.

Súbitò sagittábunt eum, & non timébunt: * firmavérunt sibi sermónem nequàm.

Narravérunt ut abscónderent láqueos; * dixérunt: Quis vidébit eos?

Scrutáti sunt iniquitátes; * defecérunt scrutántes scrutínio.

Accédet homo ad cor altum; * & exaltábitur Deus.

Sagíttæ parvulórum factæ sunt plagæ eórum; * & infirmátæ sunt contra eos linguæ eórum.

Conturbáti sunt omnes qui

vidébant eos; * & tímuit omnis homo.

Et annuntiavérunt ópera Dei, * & facta ejus intellexérunt.

Lætábitur justus in Dómino, & sperábit in eo; * & laudabúntur omnes recti corde.

*Ant.* Scrutáti sunt iniquitátes, defecérunt scrutántes scrutínio. *v. 7.*

℣. Æstimátus sum cum descendéntibus in lacum: ℟. Factus sum sicut homo sine adjutório inter mórtuos liber. *Ps. 87. v. 5. 6.*

Ex Commentário sancti Hilárii Epíscopi in Matthæum.

LECTIO IV. *Cap. 33.*

VElum templi scinditur; quia exindè pópulus est divísus in partes, & veli honor cum custódia Angeli protegéntis aufértur. Movétur terra, capax enim hujus mórtui esse non póterat. Petræ scissæ sunt; ómnia enim tùm válida & fórtia pénetrans Dei verbum & potéstas ætérnæ virtútis irrúperat. Et monuménta apérta sunt: erant enim mortis claustra reseráta. Et multa córpora sanctórum dormiéntium surrexérunt: illúminans enim mortis ténebras, & infernórum obscúra collústrans, in Sanctórum resurrectióne mortis ipsíus spólia detrahébat. Ut autem infidelitátis fácinus Israëli accumularétur; centúrio & custódes hanc totíus natúræ perturbatiónem contuéntes, Dei Fílium confiténtur. Joseph Apostolórum habet spéciem; hic mundâ síndone corpus invólvit. Dómini ígitur corpus tanquam per Apostolórum doctrínam insértur in vácuam & in novam réquiem lápidis excísi: scílicet in pectus durítiæ gentílis quodam doctrínæ ópere excísum, Christus insértur.

℟. Velum templi scissum est: terra mota est, petræ scissæ sunt: * Monuménta apérta sunt, & multa córpora sanctórum surrexérunt. *Matt. 27. v. 51. 52.* ℣. Edúxit eos de ténebris, & umbra mortis, & víncula eórum disrúpit. *Psal. 106. 14.* * Monuménta.

De Expositióne sancti Ambrósii in Evangélium secúndùm Lucam.

LECTIO V. *Lib. 10.*

JOseph & Nicodémus Christum sepéliunt; unus justus & constans, alter in quo dolus non erat. Justus Christi corpus óperit síndone, innocens ungit unguénto. Hic non otiósè distíncta repérimus; quia justítia vestit Ecclésiam, innocéntia grátiam subminístrat. Ligavérunt corpus Jesu, & posuérunt in

horto, cui frequénter Ecclésia comparátur, quæ diversórum hábeat poma meritórum floréſque virtútum. Nec otióſè álius monuméntum novum dixit, álius monuméntum Joſeph. Non habébat igitur Chriſtus túmulum ſuum; victor mortis túmulum ſuum non habet. Quæ enim commúnio túmulo & Deo? ſpeciális ígitur præter commúnem ómnium mortem mors Chriſti eſt; & ídeò non cum áliis ſepelítur, ſed ſolus túmulo inclúditur. Benè autem novo, ne álius ſuſcitátus à pérfidis diceretur. Cui pulchérrimè lapis admótus eſt, ne patéret. Quicúnque enim in ſe benè humáverit Chriſtum, diligénter cuſtódiat, ne eum perdat, neve perfídiæ ſit ingréſſus. Et benè in petra excíſum dícitur, hoc eſt, in fídei firmaménto, de qua veri Iſraëlítæ dulcédinem mellis, & óleum ſpiritále ſuxérunt.

℟. Videns Centúrio quod factum fúerat, glorificávit Deum, dicens: Verè hic homo juſtus erat; & * Omnis turba eórum, qui ſimul ádestant, percutiéntes péctora ſua revertebántur. *Luc.* 23. v. 47. 48. ℣. Aſpícient ad me quem confixérunt: & plangent eum planctu quaſi ſuper unigénitum. *Zach.* 12. 10. * Omnis turba.

Ex Commentário ſancti Hierónymi Prèsbyteri in Evangélia.

LECTIO VI.

*In Matth. cap.* 27.

EX símplici ſepultúra Dómini ambítio dívitum condemnátur, qui nec in túmulis quidem poſſunt carére divítiis. Póſſumus autem juxta intelligéntiam ſpirituálem & hoc ſentíre, quòd corpus Dómini non auro, gemmis & sérico, ſed linteámine puro obvolvéndum ſit, quanquam & hoc ſignificet, quod ille in síndone munda invólvit Jeſum, qui purâ mente eum ſuſcéperit. In novo pónitur monuménto, ne poſt reſurrectiónem céteris corpóribus remanéntibus, reſurrexíſſe álius fingerétur. Poteſt autem & novum ſepúlchrum, Maríæ virginálem úterum demonſtráre, ſaxúmque óſtio appóſitum, & ſaxum magnum oſténdere abſque auxílio plurimórum ſepúlchrum non potuíſſe reſerári. Non ſuffécerat princípibus Sacerdótum & Scribis, ac Phariſǽis crucifixíſſe Dóminum Salvatórem, niſi ſepúlchrum cuſtodírent, cohórtem accíperent, ſignárent lápidem, & quantùm in illis eſt, manum oppónerent reſurgénti, ut diligéntia eórum noſ-

træ fidei profíceret. Quantò enim ámpliùs reservátur, tantò magis resurrectiónis virtus osténditur. Unde & in monuménto novo, quod excísum fúerat in petra, cónditus est; ne si ex multis lapídibus ædificátum esset, suffóssis túmuli lapídibus, ablátus furto dicerétur.

℞. Advólvit Joseph saxum magnum ad óstium monuménti, & post parascéven príncipes Sacerdótum abeúntes muniérunt sepúlchrum; * Signántes lápidem, cum custódibus. *Matth.* 27. *v.* 60. 62. 66. ℣. Lapsa est in lacum vita mea, & posuérunt lápidem super me. *Thren.* 3. 53. * Signántes. *Repetitur*, Advólvit.

## IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 4. *irreg.* d. In justítia.

*Psalmus* 70.

IN te, Dómine, sperávi, non confúndar in ætérnum: * in justítia tua líbera me, & éripe me.

Inclína ad me aurem tuam, * & salva me.

Esto mihi in Deum protectórem, & in locum munítum, * ut salvum me fácias.

Quóniam firmaméntum meum, * & refúgium meum es tu.

Deus meus, éripe me de manu peccatóris, * & de manu contra legem agéntis, & iníqui;

Quóniam tu es patiéntia mea, Dómine: * Dómine, spes mea à juventúte mea.

In te confirmátus sum ex útero, de ventre matris meæ tu es protéctor meus; * in te cantátio mea semper.

Tanquam prodígium factus sum multis, * & tu adjútor fortis.

Repleátur os meum laude, ut cantem glóriam tuam, * totâ die magnitúdinem tuam.

Ne projícias me in témpore senectútis; * cùm defécerit virtus mea, ne derelínquas me.

Quia dixérunt inimíci mei mihi; * & qui custodiébant ánimam meam, consílium fecérunt in unum,

Dicéntes: Deus derelíquit eum, persequímini, & comprehéndite eum; * quia non est qui erípiat.

Deus, ne elongéris à me; * Deus meus, in auxílium meum réspice.

Confundántur & defíciant detrahéntes ánimæ meæ; * operiántur confusióne & pudóre, qui quærunt mala mihi.

Ego autem semper sperábo; * & adjíciam super omnem laudem tuam.

Os meum annuntiábit justítiam tuam, * totâ die salutáre tuum.

Quóniam non cognóvi litteratúram, introíbo in poténtias Dómini: * Dómine, memorábor justítiæ tuæ solíus.

Deus, docuísti me à juventúte mea; * & usque nunc pronuntiábo mirabília tua;

Et usque in senéctam & senium, * Deus, ne derelínquas me,

Donec annúntiem bráchium tuum * generatióni omni quæ ventúra est,

Poténtiam tuam, & justítiam tuam, Deus, usque in altíssima, quæ fecísti magnália: * Deus, quis símilis tibi?

Quantas ostendísti mihi tribulatiónes multas & malas: * & convérsus vivificásti me, & de abyssis terræ íterùm reduxísti me.

Multiplicásti magnificéntiam tuam, * & convérsus consolátus es me.

Nam & ego confitébor tibi in vasis psalmi veritátem tuam, Deus; * psallam tibi in cíthara, sanctus Israël.

Exultábunt lábia mea cùm cantávero tibi; * & ánima mea, quam redemísti.

Sed & lingua mea totâ die meditábitur justítiam tuam, * cùm confúsi & revériti fúerint qui quærunt mala mihi.

*Ant.* In justítia tua líbera me, Dómine, & éripe me: inclína ad me aurem tuam.

℣. 2.

*Ant.* 7. C. Factus est.

*Psalmus* 75.

NOtus in Judæa Deus; * in Israël magnum nomen ejus.

Et factus est in pace locus ejus, * & habitátio ejus in Sion.

Ibi confrégit poténtias árcuum, * scutum, gládium, & bellum.

Illúminans tu mirabíliter à móntibus ætérnis: * turbáti sunt omnes insipiéntes corde.

Dormiérunt somnum suum, * & nihil invenérunt omnes viri divitiárum in mánibus suis.

Ab increpatióne tua, Deus Jacob, * dormitavérunt qui ascendérunt equos.

Tu terríbilis es, & quis resíistet tibi? * ex tunc ira tua.

De cœlo audítum fecísti judícium; * terra trémuit & quiévit.

Cum exúrgeret in judícium Deus, * ut salvos fáceret omnes mansuétos terræ.

Quóniam cogitátio hóminis confitébitur tibi; * & relíquiæ cogitatiónis diem festum agent tibi.

Vovéte, & réddite Dómino Deo vestro, * omnes qui in circúitu ejus affértis múnera.

Terríbili & ei qui aufert spíritum príncipum, * terríbili apud reges terræ.

*Ant.* Factus est in pace locus ejus, & habitátio ejus in Sion. *v.* 3.

*Ant.* 1. a. Glorificábo.

*Psalmus* 85.

INclína, Dómine, aurem tuam, & exáudi me : * quóniam inops & pauper sum ego.

Custódi ánimam meam, quóniam sanctus sum : * salvum fac servum tuum, Deus meus, sperántem in te.

Miserére mei, Dómine, quóniam ad te clamávi totâ die : * lætífica ánimam servi tui, quóniam ad te, Dómine, ánimam meam levávi.

Quóniam tu, Dómine, suávis & mitis, * & multæ misericórdiæ ómnibus invocántibus te.

A'uribus pércipe, Dómine, oratiónem meam, * & inténde voci deprecatiónis meæ.

In die tribulatiónis meæ clamávi ad te, * quia exaudísti me.

Non est símilis tui in diis, Dómine, * & non est secúndùm ópera tua.

Omnes Gentes quascúnque fecísti, vénient, & adorábunt coram te, Dómine, * & glorificábunt nomen tuum.

Quóniam magnus es tu, & fáciens mirabília ; * tu es Deus solus.

Deduc me, Dómine, in via tua, & ingrédiar in veritáte tua ; * lætétur cor meum, ut tímeat nomen tuum.

Confitébor tibi, Dómin[e] Deus meus, in toto cord[e] meo, * & glorificábo nome[n] tuum in ætérnum ;

Quia misericórdia tua m[a]gna est super me, * & eruíst[i] ánimam meam ex inférno in[-]terióri.

Deus, iníqui insurrexéru[nt] super me, & synagóga po[-]téntium quæsiérunt ániman meam, * & non proposúe[-]runt te in conspéctu suo.

Et tu Dómine Deus mi[se]rátor & miséricors, * pátien[s] & multæ misericórdiæ, & ve[-]rax.

Réspice in me, & mi[se]rére mei, * da impériu[m] tuum púero tuo, & salvu[m] fac fílium ancíllæ tuæ.

Fac mecum signum in b[o]num, ut vídeant qui odéru[nt] me, & confundántur, * qu[ó]niam tu, Dómine, adjuv[isti] me, & consolátus es me.

*Ant.* Glorificábo nom[en] tuum, quia eruísti ánim[am] meam ex inférno inferió[ri]. *v.* 12. 13.

℣. Non derelínques án[i]mam meam in inférno: ℟. Ne[c] dabis Sanctum tuum vidé[re]

corruptiónem. *Ps.* 15. 10.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Hebræos.

Lectio VII. *Cap.* 9. 11.

*Christi sanguis emundat conscientiam.*

Christus assístens Póntifex futurórum bonórum, ... ámplius & perféctius ta... ... náculum, non manufác... ..., id est, non hujus crea... ...is: neque per sánguinem ... córum aut vitulórum, sed ... próprium sánguinem, in... ...vit semel in sancta, ætér... redemptióne invéntâ. Si ... sanguis hircórum & tau... ...um, & cinis vítulæ aspér... ..., inquinátos sanctíficat ad ... undatiónem carnis: quan... magis sanguis Christi, qui ... Spíritum sanctum semet... ...um óbtulit immaculátum ..., emundábit conscién... ... nostram ab opéribus ...uis, ad serviéndum Deo ...nti? Et ídeò novi testa... ...i mediátor est, ut mor... ...ercedénte, in redemp... ...m eárum prævaricatió... ..., quæ erant sub prióri ...ménto, repromissiónem ...iant, qui vocáti sunt ...æ hereditátis: ubi enim ...méntum est, mors ne... ...e est intercédat testatóris. ...staméntum enim in mór... ... confirmátum est: alió... ... nondum valet, dùm vivit qui testátus est. Unde nec primum quidem sine sánguine dedicátum est.

℟. Penetrábo omnes inferióres partes terræ, & inspíciam omnes dormiéntes, & * Illuminábo omnes sperántes in Dómino. *Eccli.* 24. 45. ℣. Expólians principátus & potestátes, palàm triúmphans illos. *Coloss.* 2. 15. * Illuminábo.

Lectio VIII. *v.* 19.

*Christus semel oblatus.*

Lecto omni mandáto legis à Móyse univérso pópulo, accípiens sánguinem vitulórum, & hircórum cum aqua & lana coccínea, & hyssópo; ipsum quoque Librum & omnem pópulum aspérsit, dicens: Hic sanguis testaménti, quod mandávit ad vos Deus. E'tiam Tabernáculum & ómnia vasa ministérii sánguine simíliter aspérsit. Et ómnia penè in sánguine secúndùm legem mundántur: & sine sánguinis effusióne non fit remíssio. Necésse est ergo exemplária quidem cœléstium his mundári: ipsa autem cœléstia melióribus hóstiis quàm istis. Non enim in manufácta sancta Jesus introívit, exemplária verórum: sed in ipsum cœlum, ut appáreat nunc vúltui Dei pro nobis: neque ut sæpe ófferat semetípsum, quemád-

modùm Póntifex intrat in Sancta per síngulos annos in sánguine aliéno : alióquin oportébat eum frequénter pati ab orígine mundi : nunc autem semel in consummatióne seculórum, ad destitutiónem peccáti, per hóstiam suam appáruit. Et quemádmodùm statútum est homínibus semel mori ; post hoc autem judícium : sic & Christus semel oblátus est ad multórum exhauriénda peccáta ; secúndò sine peccáto apparébit expectántibus se, in salútem.

℟. Stat in signum populórum : ipsum Gentes deprecabúntur : * Et erit sepúlchrum ejus gloriósum. *Isa.* 11. 10. ℣. Christus mórtuus est pro peccátis nostris secúndùm Scriptúras, & sepúltus est. 1. *Corint.* 15. *v.* 3. 4. * Et erit.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

Lectio IX. *Cap.* 27. 62.

*Sepulchrum à Pharisæis obsignatum.*

ALterâ die, quæ est post parascéven, convenérunt príncipes Sacerdótum, & Pharisæi, & muniérunt sepúlchrum, signántes lápidem, cum custódibus. Et réliqua.

Homilia sancti Augustini Episcopi.

*In Psalm.* 63.

POsuérunt Judæi custódes mílites ad sepúlchrum : Concússâ terrâ Dóminus resurréxit. Mirácula facta sunt tália circa sepúlchrum, ut ipsi mílites, qui custódes adv[…] nerant, testes fíerent, si v[…] lent vera nuntiáre: sed avar[…] illa, quæ captivávit discípul[…] cómitem Christi, captivá[…] & mílitem custódem sep[…] chri. Damus, inquiunt, vo[…] pecúniam, & dícite, qu[…] vobis dormiéntibus venér[…] discípuli ejus, & abstulér[…] eum. Verè defecérunt sc[…] tántes scrutatiónes. Quid […] quod dixísti, ô infélix ast[…] Tantúmne déseris lucem c[…] sílii pietátis, & in prof[…] versútia demérgeris, u[…] dicas : Dícite, quia […] dormiéntibus venérunt d[…] puli ejus & abstulérunt e[…] dormiéntes testes ádhib[…] verè tu ipse obdormísti, […] scrutándo tália defecísti. […]

℟. Christus novi T[…] ménti mediátor * In[…] vobis viam novam, […] véntem per velámen, […] carnem suam, in intr[…] Sanctórum nondum pr[…] látam, adhuc prióre taber[…] culo habénte statum. *Heb[…]* *v.* 15. 8. & 10. 20. ℣. V[…] nerátus propter iniquit[…]

nostras, attritus propter scélera nostra. *Isa.* 53. 5. * Initiávit. *Repet.* Christus.

## AD LAUDES MATUTINAS.

*Psalmi feriales, excepto Cantico.*

*Ant.* 4. a. Joseph qui erat decúrio, vir bonus, & justus, non consénserat consílio & actibus eórum. *Luc.* 23. *v.* 50. 51.

*Ant.* 8. g. Ipse audácter introívit ad Pilátum, & pétiit corpus Jesu. *Marc.* 15. 43.

*Ant.* 1. a. Depónens eum involvit síndone, & pósuit eum in monuménto. *Marc.* 15. 46.

*Ant.* 2. d. Sicut fuit Jonas.

*Canticum Jonæ.* 2. 3.

CLamávi de tribulatióne mea ad Dóminum, & exaudívit me: * de ventre inferi clamávi, & exaudísti vocem meam.

Et projecísti me in profúndum in corde maris, & flumen circúndedit me: * omnes gúrgites tui, & fluctus tui super me transiérunt.

Et ego dixi: Abjéctus sum a conspéctu oculórum tuórum: * verúntamen rursùs vidébo templum sanctum tuum.

Circumdedérunt me aquæ usque ad ánimam: * abýssus vallávit me, pélagus opéruit caput meum.

Ad extréma móntium descéndi; terræ vectes conclusérunt me in ætérnum: * & sublevábis de corruptióne vitam meam, Dómine Deus meus.

Cùm angustiarétur in me ánima mea, Dómini recordátus sum: * ut véniat ad te orátio mea, ad templum sanctum tuum.

Qui custódiunt vanitátes frustra; * misericórdiam suam derelínquunt.

Ego autem in voce laudis immolábo tibi: * quæcúnque vovi, reddam pro salúte Dómino.

*Ant.* Sicut fuit Jonas in ventre ceti tribus diébus, & tribus nóctibus; sic erit Fílius hóminis in corde terræ tribus diébus & tribus nóctibus. *Matth.* 12. 40.

*Ant.* 7. c. María Magdaléne, & María Joseph aspiciébant ubi ponerétur. *Marc.* 15. 47.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. *irreg.* D. Reverténtes mulíeres paravérunt arómata & unguénta; & Sábbato quidem siluérunt secúndùm mandátum. *Luc.* 23. 56.

Kýrie, *cum reliquis, ut suprà, p.* 338.

AD HORAS, *Psalmi Feriales; cetera, ut Feriâ quintâ in cœna Domini, p.* 339.

## AD VESPERAS.

*Factâ communione in Missa, absolutè inchoatur ab Antiphona*, 1. D. Allelúia.

*Psalmus.* Laudáte Dóminum omnes Gentes, *&c.* Glória Patri.

*Ant.* Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Véspere Sábbati, quæ lucéscit in prima Sábbati, venit María Magdaléne, & áltera María vidére sepúlchrum, allelúia. *Matth.* 28.1.

*Et repetitur ut in Festis solemn. Deinde Sacerdos ad Altare, dicit:*

℣. Dóminus vobíscum.

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

QUos in hac Paschális noctis celebritáte córpore ac sánguine suo Christus réficit vita nostra, fac, Deus, ut peccáto mórtui cum illo consúrgant & vivant. Per eúmdem Dóminum.

*Deinde*, Dóminus vobíscum, *&c. Postea Diaconus dicit*: Ite Missa est, allelúia, allelúia. ℟. Deo grátias, allelúia, allelúia.

*Extra Chorum dicto* Pater noster *&* Ave María. *Vespera dicuntur ut suprà; & loco* Ite Missa est, *dicitur*: Benedicámus Dómino, allelúia, allelúia. ℟. Deo grátias, allelúia, allelúia.

*Deinde additur*, Pater noster, *& nihil aliud.*

## AD COMPLETORIUM.

*Omisso*, ℣. Convérte nos, *incipitur à* ℣. Deus, in adjutórium, *& ampliùs non dicitur*, Laus tibi, Dómine. *Sed ejus loco dicitur*, Allelúia.

*Deinde Ant.* 6. f. Allelúia.

*Sub qua sola dicuntur Psalmi*, Cùm invocárem. Qui hábitat. Ecce nunc benedícite, *& uno tenore, sed lentissimo cantu, Canticum* Nunc dimíttis.

*Ant.* Allelúia, Ad vésperum demorábitur fletus, allelúia; & ad matutínum lætítia, allelúia, allelúia. *Ps.* 29. 6.

Orémus. *Oratio.*

ILlúmina vitam nostram, Deus, in hac nocte sanctíssima quâ recólimus exórdia Resurrectiónis Fílii tui Dómini nostri Jesu Christi; Qui tecum vivit & regnat.

*In fine ex devotione, Antiphona* Regína cœli, *ut in Psalterio: toto tempore Paschali non flectuntur genua.*







# IN DIE
# SANCTO PASCH.
## SOLEMNE.

D OFFICIUM NOCTURNUM.

ater noster, Ave María, do.

ómine, lábia mea apéries.
us, in adjutórium.
ria Patri, &c. Allelúja.

*Invitatorium.*

ALlelúja, surréxit Dóminus verè: Veníte adorémus, allelúja. *Luc.* 24. 34.

*lmus*, Veníte, *p.* 2.
*dicuntur Hymni etiam s usque ad Vésperas in Albis.*
6. £ Ego sum.

*Psalmus* 1.

us vir, qui non ábiit consílio impiórum, via peccatórum non & in cáthedra pesti- edit:
lege Dómini volún- & in lege ejus me- die ac nocte.
tanquam lignum, ntátum est secus de- aquárum, * quod fructum suum dabit in pore suo:
Et fólium ejus no fluet: * & ómnia qu que fáciet prosperabú
Non sic ímpii, non sed tanquam pulvis, projícit ventus à fácie t
Ídeò non resúrgent in judício, * neque pe res in concílio justóru
Quóniam novit Dó viam justórum, * & it piórum períbit.

*Ant.* Ego sum qui érui vos de servitúte, démi in bráchio excélsi lúja. *Exod.* 3. 14. & 6

*Ant.* 7. d. Dóminus

*Psalmus* 2.

QUare fremuérunt tes, * & pópuli táti sunt inánia?
Astitérunt reges ter príncipes convenérunt num * advérsus Dóm & advérsus Christum
Dirumpámus vincu rum, * & projiciámus bis jugum ipsórum.
Qui hábitat in cœl

débit eos; * & Dóminus subsannábit eos.

Tunc loquétur ad eos in ira sua, * & in furóre suo conturbábit eos.

Ego autem constitútus sum rex ab eo super Sion montem sanctum ejus, * prǽdicans præcéptum ejus.

Dóminus dixit ad me: * Fílius meus es tu, ego hódiè génui te.

Póstula à me, & dabo tibi Gentes hereditátem tuam, * & possessiónem tuam términos terræ.

Reges eos in virga férrea, * & tanquam vas fíguli confrínges eos.

Et nunc reges intellígite; * erudímini qui judicátis terram.

Servíte Dómino in timóre, * & exultáte ei cum tremóre.

Apprehéndite disciplínam, * nequándo irascátur Dóminus, & pereátis de via justa.

Cùm exárserit in brevi ira ejus, * beáti omnes qui confídunt in eo.

*Ant.* Dóminus dixit ad me: Póstula à me, & dabo tibi Gentes, hereditátem tuam, allelúia. *v.* 7. 8.

*Ant.* 8. C. Ego dormívi.

*Psalmus* 3.

DOmine, quid multiplicáti sunt qui tríbulant me? * multi insúrgunt advérsùm me.

Multi dicunt ánimæ meæ: * non est salus ipsi in De[o] ejus.

Tu autem, Dómine, susc[e]ptor meus es, * glória me[a] & exáltans caput meum.

Voce meâ ad Dóminum clamávi, * & exaudívit me de monte sancto suo.

Ego dormívi, & soporát[us] sum; * & exurréxi, quia Dóminus suscépit me.

Non timébo míllia pópu[li] circundántis me: * exúrge, Dómine, salvum me fac, Deu[s] meus;

Quóniam tu percussísti o[m]nes adversántes mihi sine ca[u]sa; * dentes peccatórum c[on]trivísti.

Dómini est salus; * & [su]per pópulum tuum benedíc[tio] tua.

*Ant.* Ego dormívi, & [so]porátus sum, & exurr[éxi] quia Dóminus suscépit [me,] allelúia. *v.* 6.

℣. Salvávit sibi dex[tera] ejus, allelúia. ℟. Et bráchi[um] sanctum ejus, allelúia. P[s.] 97. 1.

Pater noster, *secretò.*

℣. Et ne nos indúcas [in] tentatiónem.

℟. Sed líbera nos à ma[lo.]

*Tempore Paschali tàm [in] Festis, quàm in Domini[cis] & Feriis dicuntur Absol[utiones] & Benedictiones sequent[es.]

*Absolutio.*

PEr resurrectiónem Jesu Christi, qui est in déxtera Dei, vitæ ætérnæ herédes efficiámur. 1. *Petr.* 3. *v.* 21. 22. ℟. Amen.

Jube, Domne, benè dícere.

*Benedictio.* Det nos Deus spectáre Fílium suum de cælis, quem suscitávit ex mórtuis. 1. *Thess.* 1. 9.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Románoś.

LECTIO I. *Cap.* 6. 3.

*Baptismus mortem & resurrectionem designat.*

QUicúnque baptizáti sumus in Christo Jesu, in morte ipsius baptizáti sumus. Consepúlti enim sumus cum illo per baptísmum in mortem: ut quómodò Christus surréxit à mórtuis per glóriam Patris, ita & nos in novitate vitæ ambulémus. Si enim complantáti facti sumus similitúdini mortis ejus, simul & resurrectiónis érimus. Hoc sciéntes quia vetus homo noster crucifixus est, ut destruátur corpus peccáti, & ultrà non serviámus peccáto. Qui enim mórtuus est, justificátus est à peccáto. Si autem mórtui sumus cum Christo, crédimus quia simul etiam vivémus cum Christo; sciéntes quòd Christus resúrgens ex mórtuis jam non móritur, mors illi ultrà non dominábitur. Quòd enim mórtuus est peccáto, mórtuus est semel; quòd autem vivit, vivit Deo, ita & vos existimáte, vos mórtuos quidem esse peccáto; vivéntes autem Deo, in Christo Jesu Dómino nostro. Non ergo regnet peccátum in vestro mortáli córpore, ut obediátis concupiscéntiis ejus.

℟. Cùm transísset sábbatum, María Magdaléne, & María Jacóbi & Salóme * Emérunt arómata, ut veniéntes úngerent Jesum, allelúia, allelúia. *Marc.* 16. 1. ℣. Aquæ multæ non potuérunt extínguere charitátem. *Cant.* 8. 7. * Emérunt.

Jube, Domne, benè dícere.

*Benedictio.* Interpéllet pro nobis, qui mórtuus est & resurréxit. *Rom.* 8. 34. ℟. Amen.

Sermo sancti Leónis Papæ.

LECTIO II.

*Serm.* 1. *de resurr. Domini.*

CUm quadragintâ diérum observántiâ hoc voluérimus operári, ut áliquid sentirémus crucis in témpore Domínicæ passiónis: adniténdum nobis est, ut étiam resurrectiónis Christi inveniámur esse consórtes, & de morte ad vitam, dùm in isto sumus córpore, transeámus. Moriéndum ergo est diábolo,

& vivéndum Deo: deficiéndum iniquitáti, ut justítiæ resurgátur. Occúmbant vétera, ut oriántur nova. Resurréctio Dómini non finis carnis, sed commutátio fuit, nec virtútis augménto consúmpta substántia est. Quálitas tránsiit, non natúra defécit: & factum est corpus impassíbile, quod pótuit crucifígi, factum est immortále, quod pótuit occídi; factum est incorruptíbile, quod pótuit vulnerári. Agnóscat igitur pópulus Dei, novam se esse in Christo creatúram. Nemo in id récidat, unde surréxit; sed etiámsi pro infirmitáte corpórea in aliquibus adhuc languóribus jacet, sanári instánter desíderet ac levári. Hæc est enim salútis via & cœptæ in Christo resurrectiónis imitátio. Hæc meditátio, dilectíssimi, non pro sola solemnitáte Pascháli, sed pro totíus vitæ sanctificatióne retinénda est.

℟. Angelus Dómini descéndit de cœlo: & accédens revólvit lápidem, & sedébat super eum: & dixit muliéribus: Nolíte timére vos, scio enim quòd Jesum, qui crucifíxus est, quǽritis: * Surréxit sicut dixit, veníte, & vidéte locum, ubi pósitus erat Dóminus, allelúia. *Matth.* 28. 2. 2. 5. 6. ℣. Salvávit sibi bráchium suum, & justítia ejus ipsa confirmávit eum. *Isa.* 59. 16. * Surréxit.

Jube, Domne, benedícere.

*Benedictio.* Evangélium non sit tantùm in sermóne, sed & in virtúte. 1. *Thess.* 1. 5. ℟. Amen.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Marcum.

LECTIO III. *Cap.* 16. 1.

In illo témpore; María Magdaléne, & María Jacóbi & Sálome emérunt arómata, ut veniéntes úngerent Jesum, & valdè manè una Sabbatórum véniunt ad monuméntum orto jam sole. Et réliqua.

Homilía sancti Justíni Mártyris.

*Apologia* II. *ad Antoninum Senatumque Rom. ann.* 150.

Die, qui Solis dícitur, omnes qui in óppidis, vel agris moràntur unum in locum convéniunt, commentariáque Apostolórum, vel Prophetárum Scripta legúntur quàndiù hora pátitur. Deinde ubi is, qui legit, déstitit, is qui præest ádmonet & hortatur, ut ea quæ lecta sunt, bona imitémur. Tum súrgimus omnes, ac comprecámur, conclusísque nostris précibus pa-

nis vinúmque & aqua offerúntur, túmque is qui primum locum tenet, eódem modo preces gratiarúmque actiónem pro virili mittit, populúsque benedícit, dicens, Amen; & iis, quæ cum gratiárum actióne consecráta sunt, unusquísque partícipat, eadémque ad eos qui absunt, Diáconis dantur perferénda. Quibus cópiæ súppetunt, ii, si volunt, suo quisque arbitrátu quod vult largítur: quodque colligitur & cógitur apud eum, qui præest repónitur, isque pupillis & víduis, iisque quos morbus aliáve causa inopes facit, & iis qui in vinculis sunt, & hospítibus, omninóque ómnibus, qui áliquâ indigéntiâ premúntur, súbvenit. Die autem Solis omnes públicè convénimus, quòd is primus est dies, in quo Deus ténebras & matériam cùm mutásset, mundum fecit: & quòd eódem die Jesus Christus conservátor noster à mórtuis excitátus est. Prídiè enim Satúrni eum in crucem sustulérunt, & postrídiè Satúrni, qui Solis dies est, cùm Apóstolis discipulísque apparuísset, hæc illis trádidit, quæ vobis quoque considerànda permíttimus.

℟. Exultáte Deo adjutóri nostro, jubiláte Deo Jacob. * Súmite psalmum, & date tympanum, † In insígni die solemnitátis vestræ: quia præcéptum in Ísraël est, allelúia. *Ps.* 80. *v.* 2. 3. 4. 5. ℣. Christus qui tráditus est propter delícta nostra, resurréxit propter justificatiónem nostram. *Rom.* 4. 25. * Súmite. ℣. Glória. † In insígni.

Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Cantábo fortitúdinem tuam, Dómine, allelúia. ℟. Et exultábo manè misericórdiam tuam, allelúia. *Psal.* 58. 17.

*Psalmi de Dominica, excepto Cantico.*

*Ant.* 8. g. Valdè manè una Sabbatórum véniunt mulíeres ad monuméntum orto jam sole, allelúia. *Marc.* 16. 2.

*Ant.* 5. a. Dicébant ad ínvicem: Quis revólvet nobis lápidem? & respiciéntes vidérunt revolútum lápidem, allelúia. *Ibid. v.* 3. 4.

*Ant.* 1. F. Introeúntes in monuméntum vidérunt júvenem sedéntem in dextris coopértum stolâ cándidâ qui dicit illis: Surréxit non est hic, allelúia. *Ibid.* 5. 6.

*Ant.* 3. c. In hoc Christus.

*Canticum Apocalyps.* 1. 12.

Convérsus vidi septem candelábra áurea, * & in médio septem candelabró-

rum aureórum símilem Fílio hóminis,

Vestítum podére & præcinctum ad mamíllas * zonâ áureâ;

Caput autem ejus & capílli erant cándidi * tanquam luna alba & tanquam nix,

Et óculi ejus tanquam flamma ignis, * & pedes ejus símiles aurichálco, sicut in camíno ardénti:

Et habébat in déxtera sua stellas septem,* & de ore ejus gládius utráque parte acútus exíbat:

Et fácies ejus sicut sol * lucet in virtúte sua.

Et cùm vidíssem eum, * cécidi ad pedes ejus tanquam mórtuus.

Et pósuit déxteram suam super me, * dicens: Noli timére;

Ego sum primus & novíssimus, * & vivus, & fui mórtuus.

Et ecce sum vivens in sécula seculórum, * & hábeo claves mortis & inférni.

Glória Patri.

*Ant.* In hoc Christus mórtuus est & resurréxit: ut & mortuórum & vivórum dominétur, allelúia. *Rom.* 14. 9.

*Ant.* 2. D. Absórpta est mors in victória. Ubi est, mors, victória tua? Ubi est mors stímulus tuus, allelúia. 1. *Cor.* 15. v. 54. 55.

*Capitulum. Coloss.* 3. 1.

SI consurrexístis cum Christo, quæ sursùm sunt quǽrite ubi Christus est in déxtera Dei sedens, quæ sursùm sunt sápite, non quæ super terram.

℣. Excitátus est Dóminus, allelúia. ℟. Tanquàm dórmiens, allelúia. *Ps.* 77. 65.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. C. Pascha nostrum immolátu[s] est Christus, epulémur in [az]ymis sinceritátis & veritátis, allelúia. 1. *Corint.* 5. v. 7. 8.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui hodiérnâ di[e] per Unigénitum tuum æternitátis nobis áditum [de]víctâ morte reserásti: vo[ta] nostra, quæ præveniénd[o] aspíras, étiam adjuvánd[o] proséquere. Per eúmdem.

℣. Benedicámus Dómin[o], allelúia, allelúia.

℟. Deo grátias, allelúi[a], allelúia.

*Sic dicitur in Laudib[us] & Vesperis tantùm usque [ad] Vesperas Sabbati in Al[bis] exclusivè.*

*Deinde in Ecclesiis fit Pr[o]cessio ante Crucifixum.*

℟. Christus resúrgens [ex] mórtuis, jam non móritur: * Mors illi ultrà non dom[i]nábitur: quod enim mórtuu[s] est peccáto, mórtuus est semel: quod autem vivit, vivit Deo, allelúia, allelúia.

Rom. 6. v. 9. 10. ℣. Præcipitábit mortem in sempitérnum, & oppróbrium pópuli sui áuferet de univérsa terra: exultábimus, & lætábimur in salutári ejus. *Isa.* 25. *v.* 8. 9. * Mors illi.

℣. Dícite in Géntibus, allelúia. ℟. Quia Dóminus regnávit, allelúia. *Psal.* 95. 10.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui nobis Fílium tuum crucis patíbulum subíre voluísti, ut inimíci à nobis expélleres potestátem: concéde nobis fámulis tuis ut resurrectiónis grátiam consequámur. Per eúmdem Christum Dóminum nostrum.

*In ingressu ad Chorum, Commemoratio de sancta Maria.*

*Ant.* Fílius tuus vivit, allelúia, & ipse dominátur in omni terra, allelúia, allelúia. *Gen.* 45. 26.

℣. Tu Dómine, adjuvísti me, allelúia. ℟. Et consolátus es me, allelúia. *Ps.* 85. 17.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui per resurrectiónem Fílii tui Dómini nostri Jesu Christi mundum lætificáre dignátus es: præsta quæsumus: ut per ejus genitrícem vírginem Maríam, perpétuæ capiámus gáudia vitæ. Per eúmdem Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit & regnat.

℣. Dóminus vobíscum.

℟. Et cum spíritu tuo.

℣. Benedicámus Dómino, allelúia, allelúia.

℟. Deo grátias, allelúia, allelúia.

AD PRIMAM.

*Dicto secretò*, Pater noster, Ave María, *incipitur ab Ant.* 7. D. Allelúia.

*Deinde dicuntur Psalmi de Dominica, omisso Symbolo.*

*Finitis Psalmis dicitur*

*Antiph.* Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia. Hæc est dies quam fecit Dóminus: exultémus & lætémur in ea, allelúia. *Ps.* 117. 24.

*Postea* ℣. Dóminus vobíscum. *Oratio*, Dómine Deus omnípotens. ℣. Pretiósa *&* Sancta María, *tantùm.*

AD ALIAS HORAS.

*Antiph.* Allelúia, *&* Hæc est dies, *ut suprà.*

*Dicuntur Psalmi de Dominica. Oratio*, Deus, qui hodiérnâ, *ut suprà, in Laudibus.*

AD VESPERAS.

*Ant.* 7. D. Allelúia.

*Psal.* Dixit Dóminus. Confitébor. Beátus vir.

*Ant.* Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia. Hæc est dies quam fecit Dóminus: exultémus, & lætémur in ea.

℣. Confitémini Dómino, quóniam bonus; quóniam in sǽculum misericórdia ejus. *Psal.* 117. *v.* 1. 24.

Allelúia, allelúia. ℣. Suscitávit Deus Jesum à mórtuis, ampliùs jam non reversúrum in corruptiónem. *Act.* 13. 34.

*Sequentia.*

VIctimæ Paschâli laudes ímmolent christiáni.

Agnus redémit oves; Christus ínnocens Patri reconciliávit peccatóres.

Mors & vita duéllo conflixére mirándo: dux vitæ mórtuus, regnat vivus.

Dic nobis, María, quid vidísti in via?

Sepúlchrum Christi vivéntis & glóriam vidi resurgéntis;

Angélicos testes, sudárium, & vestes.

Surréxit Christus spes mea: præcédet vos in Galilæam.

Scimus Christum surrexísse à mórtuis verè: tu nobis victor Rex miserére, Amen. Allelúia.

℣. Redémit nos ab inimícis nostris, allelúia. ℟. Quóniam in ætérnum misericórdia ejus, allelúia. *Ps.* 135. 24.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Cùm serò esset in die illo, & fores essent clausæ, ubi erant discípuli congregáti; venit Jesus & stetit in médio, & dixit eis: Pax vobis, allelúia. *Joan.* 20. 19.

*Oratio*, Deus qui hodiérnâ die, *p.* 110.

℣. Benedicámus Dómino, allelúia, allelúia.

℟. Deo grátias, allelúia, allelúia.

*Deinde in Ecclesiis Parochialibus fit Processio ad Baptisterium hoc ordine.*

*Ant.* 2. D. Allelúia.

*Psalmus* 112.

LAudáte púeri Dóminum,* laudáte nomen Dómini.

Sit nomen Dómini benedíctum, * ex hoc nunc, & usque in séculum.

A solis ortu usque ad occásum, * laudábile nomen Dómini.

Excélsus super omnes gentes Dóminus, * & super cœlos glória ejus.

Quis sicut Dóminus Deus noster, qui in altis hábitat, * & humília réspicit in cœlo & in terra?

Suscitans à terra ínopem,* & de stércore érigens páuperem;

Ut cólloçet eum cum princípibus, * cum princípibus pópuli sui.

Qui habitáre facit stérilem in domo, * matrem filiórum lætántem.

Glória Patri, *&c.*

*Antiph.* Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia.

*Et statim ad Baptisterium cantatur* ℟. Quicúnque baptizáti sumus in Christo Jesu, in morte ipsius baptizáti sumus; * Ut quómodò Christus surréxit à mórtuis per

glóriam Patris, ita & nos in novitáte vitæ ambulémus, allelúia. *Rom.* 6. 3.

*A tribus pueris cantatur sequens*

℣. Déxtera tua, Dómine, magnificáta est in fortitúdine, flavit Spíritus tuus & opéruit eos mare. Dux fuísti in misericórdia tua pópulo quem redemísti. *Exod.* 15. *v.* 6. 10. 13. * Ut quómodo.

*Deinde sine*, Dóminus vobíscum.

Orémus. *Oratio.*

DEus qui Ecclésiam tuam semper Géntium vocatióne multíplicas, concéde propítius: ut, quos aquâ baptísmatis ábluis, continuâ protectióne tueáris. Per Christum Dóminum nostrum. Amen.

*Redeundo lento gradu.*

*Ant.* 6. *irreg.* Allelúia.

*Psalmus* 113.

IN éxitu Isráël de Ægýpto, * domus Jacob de pópulo bárbaro.

Facta est Judǽa sanctificátio ejus, * Isráël potéstas ejus.

Mare vidit, & fugit: * Jordánis convérsus est retrórsum.

Montes exultavérunt ut aríetes: * & colles sicut agni óvium.

Quid est tibi mare, quòd fugísti: * & tu Jordánis, quia convérsus es retrórsum?

Montes exultástis sicut aríetes: * & colles sicut agni óvium.

A fácie Dómini mota est terra, * à fácie Dei Jacob,

Qui convértit petram in stagna aquárum, * & rupem in fontes aquárum.

Non nobis, Dómine, non nobis, * sed nómini tuo da glóriam super misericórdia tua, & veritáte tua.

Nequándo dicant Gentes:* Ubi est Deus eórum?

Deus autem noster in cœlo: * ómnia quæcúnque vóluit, fecit.

Simulácra Géntium, argéntum & aurum, * ópera mánuum hóminum.

Os habent, & non loquéntur: * óculos habent, & non vidébunt.

Aures habent, & non áudient: * nares habent, & non odorábunt.

Manus habent, & non palpábunt: pedes habent, & non ambulábunt: * non clamábunt in gútture suo.

Símiles illis fiant qui fáciunt ea: * & omnes qui confídunt in eis.

Domus Isráël sperávit in Dómino: * adjútor eórum & protéctor eórum est.

Domus Aaron sperávit in Dómino: * adjútor eórum,

& protéctor eórum est.

Qui timent Dóminum, speravérunt in Dómino: * adjútor eórum & protéctor eórum est.

Dóminus memor fuit nostri: * & benedíxit nobis.

Benedíxit dómui I'sraël: * benedíxit dómui Aaron.

Benedíxit ómnibus qui timent Dóminum, * pusíllis cum majóribus.

Adjíciat Dóminus super vos; * super vos, & super fílios vestros.

Benedícti vos à Dómino, * qui fecit cœlum & terram.

Cœlum cœli Dómino: * terram autem dedit fíliis hóminum.

Non mórtui laudábunt te, Dómine: * neque omnes qui descéndunt in inférnum,

Sed nos qui vívimus, benedícimus Dómino, * ex hoc nunc & usque in séculum,

Glória Patri, & Fílio, & Spirítui sancto,

Sicut erat in princípio, & nunc, & semper, * & in sécula seculórum, Amen.

*Ant.* Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia.

*In Statione ad Crucifixum.*

℣. Allelúia, *Repet.* allelúia.

℣. Delévit Christus quod advérsùs nos erat, chirógraphum decréti, quod erat contrárium nobis & ipsum tulit de médio, affigens cruci. *Col. 2. 14.*

℣ Dícite in Géntibus, &c.

*Oratio*, Deus qui pro nobis, *&c. ut in Laudibus.*

*In ingressu ad Chorum, Commemoratio de sancta Maria, ibidem.*

*Prædictus modus Horarum & Processionis ad Laudes & Vesperas servatur usque ad Vesperas Sabbati in Albis exclusivè.*

## Ad Completorium.

*Incipitur ab Ant. 7.* D. Allelúia. *Psalmi*, Cùm invocárem. Qui hábitat in adjutório. Ecce nunc benedícite. *Canticum* Nunc dimíttis, *cantu gravissimo. Antiph.* Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia. Hæc est dies, *ut suprà ad Primam pag. 711. Deinde*,

Orémus. *Oratio.*

Deus, quo absórpta [illegible] mors in victória, fac, [illegible] resurrectiónis tuæ partícipes [illegible] sive vigilémus, sive dormiámus, non vivámus nobis, [illegible] tibi qui pro nobis mórtuus es, & resurrexísti, qui vivis & regnas cum Deo Patre.

℟. Amen.

---

## Diebus intra Octavam Paschæ,

*Usque ad Vesperas Sabbati in Albis exclusivè.*

## Ad Officium Nocturnum.

*Invitatorium*, Allelúia,

Surrexit Dominus verè, * Venite, adorémus, allelúia. *Luc.* 24. 34.

*Psalmus.* Venite.

*Tres Psalmi pro unaquaque Feria notati sub sola Ant.* 6. f. Salvátor noster Jesus Christus destrúxit mortem, illuminávit autem vitam & incorruptiónem, allelúia. 2. *Timoth.* 1. 10.

℣. Dómine, eduxísti ab inférno ánimam meam, allelúia. ℟. Salvásti me à descendéntibus in lacum, allelúia. *Ps.* 29. 4.

*Lectiones &* ℟℟. *ut notantur in qualibet Feria.*

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Cantábo fortitúdinem tuam, Dómine, allelúia. ℟. Et exaltábo manè misericórdiam tuam, allelúia. *Ps.* 58. 17.

*Psalmi de Dominica & Canticum de die Pascha sub sola Ant.* 5. a. Verbum misit Deus annúntians pacem per Jesum Christum: hunc Deus suscitávit tértiâ die, allelúia. *Act.* 10. *v.* 36. 40.

*Capitulum.* ℣. *Antiph.* Ad Benedíctus, *& Oratio, ut notatur pro qualibet Feria.*

Ad Horas, *omnia ut in die Pascha. Oratio de Laudibus notata pro quolibet die.*

## AD VESPERAS.

*Omnia ut in die Pascha exceptis quæ notantur propria pro quolibet die.*

*Ad Completorium, omnia ut in die Pascha.*

---

## FERIA SECUNDA.

*Duplex majus.*

### Ad Officium Nocturnum.

*Psalm.* Diligam te .... Erípuit .... Deus meus, *p.* 4. *& seqq.*

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corinthios.

### Lectio I. *Cap.* 15. 20.

*In Christo omnes vivificantur.*

NUnc autem Christus resurréxit à mórtuis primítiæ dormiéntium: quóniam quidem per hóminem mors, & per hóminem resurréctio mortuórum. Et sicut in Adam omnes moriúntur, ita & in Christo omnes vivificabúntur. Unusquísque autem in suo órdine: primítiæ Christus; deindè ii, qui sunt Christi, qui in advéntu ejus credidérunt. Deindè finis; cùm tradíderit regnum Deo & Patri, cûm evacuáverit omnem principátum, & potestátem, & virtútem. Opórtet autem illum regnáre, donec ponat omnes inimícos sub pédibus ejus. Novíssima autem inimíca destruétur

mors: ómnia enim subjécit sub pédibus ejus. Cùm autem dicat: O'mnia subjécta sunt ei; sine dúbio præter eum, qui subjécit ei ómnia. Cùm autem subjécta fúerint illi ómnia: tunc & ipse Fílius subjéctus erit ei, qui subjécit ei ómnia, ut sit Deus ómnia in ómnibus.

℟. Christus resurréxit à mórtuis primítiæ dormiéntium, * Quóniam per hóminem mors & per hóminem resurréctio mortuórum, allelúia. 1. *Cor.* 15. *v.* 20. 21. ℣. Ipse est Deus vivens in sécula; ipse liberátor atque Salvátor. *Dan.* 6. *v.* 26. 27. * Quóniam.

LECTIO II. *v.* 29.

*Resurrectionis confirmata fides.*

ALióquin quid fácient qui baptisántur pro mórtuis, si omnínò mórtui non resúrgunt? ut quid & baptisántur pro illis? ut quid & nos periclitámur omni horâ? Quotídiè mórior per vestram glóriam, fratres, quam hábeo in Christo Jesu Dómino nostro. Si (secúndùm hóminem) ad béstias pugnávi E'phesi, quid mihi prodest, si mórtui non resúrgunt? manducémus & bibámus, cras enim moriémur. Nolíte sedúci: corrúmpunt mores bonos collóquia mala. Evigiláte justi, & nolíte peccáre: ignorántiam enim Dei quidam habent, ad reveréntiam vobis loquor. Sed dicet áliquis: Quómodò resúrgunt mórtui? qualíve córpore vénient? Insípiens, tu quod séminas, non vivificátur, nisi priùs moriátur. Et quod séminas, non corpus quod futúrum est, séminas, sed nudum granum, ut putà trítici aut alicújus ceterórum. Deus autem dat illi corpus sicut vult: & unicuíque séminum próprium corpus. Non omnis caro éadem caro; sed ália quidem hóminum, ália verò pécorum, ália vólucrum, ália autem píscium. Et córpora cœléstia, & córpora terréstria; sed ália quidem cœléstium glória, ália autem terréstrium. A'lia cláritas solis, ália cláritas lunæ, & ália cláritas stellárum. Stella enim à stella differt in claritáte. Sic & resurréctio mortuórum.

℟. Christus mórtuus est pro peccátis nostris, resurréxit tértiâ die secúndùm Scriptúras, * Visus est Cephæ & post hoc U'ndecim, allelúia, allelúia. 1. *Cor.* 15. *v.* 3. 4. 5. ℣. Præóccupat qui se concupíscunt, ut illis se prior osténdat. *Sap.* 6. 14. * Visus est.

Léctio sancti Evangélii secúndum Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 24. 13.

*Apparitio in Emmaüs.*

IN illo témpore; Duo ex discípulis Jesu, ibant ipsâ die in castéllum, quod erat in spátio stadiórum sexaginta ab Jerúsalem, nómine Emmaüs. Et factum est dùm fabularéntur, & secum quæreerent; & ipse Jesus appropínquans ibat cum illis; óculi autem illórum tenebántur ne eum agnóscerent. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.

*Hom. 23. in Evang. habita in basil. S. Petri in crastino Pascha.*

AUdístis, fratres charíssimi, quia duóbus discípulis ambulántibus in via, non quidem credéntibus, sed tamen de se loquéntibus, Dóminus appáruit; sed eis spéciem, quam recognóscerent, non osténdit. Hoc ergo egit foris Dóminus in óculis córporis, quod apud ipsos agebátur intùs in óculis cordis. Ipsi namque apud semetípsos intùs & amábant, & dubitábant: eis autem Dóminus foris & præsens áderat, & quis esset non ostendébat. De se ergo loquéntibus præséntiam exhíbuit: sed de se dubitántibus cognitiónis suæ spéciem abscóndit. Verba quidem cóntulit, durítiam intelléctûs increpávit, sacræ Scriptúræ mystéria, quæ de seipso erant, apéruit: & tamen quia adhuc in eórum córdibus peregrínus erat à fide, se ire lóngiùs finxit. Fíngere namque compónere dícimus: unde & compositóres luti, fígulos vocámus. Nihil ergo simplex véritas per duplicitátem fecit: sed talem se eis exhíbuit in córpore, qualis apud illos erat in mente. Probándi autem erant, si hi, qui eum etsi necdum ut Deum dilígerent, saltem ut peregrínum amáre potuíssent.

℟. O stulti & tardi corde ad credéndum in ómnibus quæ locúti sunt Prophétæ! nonne hæc opórtuit pati Christum, * Et ita intráre in glóriam suam? † Allelúia, allelúia. *Luc.* 24. *v.* 25. 26. ℣. Dóminus vóluit contérere eum in infirmitáte. *Isa.* 53. 10. * Et ita. ℣. Glória. † Allelúia.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitulum.* 1. *Petr.* 1. 18.

FRatres, non corruptibílibus auro vel argénto redémpti estis de vana conversatióne patérnæ traditiónis, sed pretióso sánguine quasi agni immaculáti Christi & incontaminati.

℣. Excitátus est Dóminus, allelúia. ℟. Tanquàm dórmiens, allelúia. *Ps.* 77. 65.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. a. Incípiens Jesus à Móyse & ómnibus Prophétis interpræ-tabátur discípulis in ómnibus Scriptúris, quæ de ipso erant, allelúia. *Luc.* 24. 27.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui solemnitáte Pascháli mundo remédia contulísti: pópulum tuum, quǽsumus, cœlésti dono proséquere: ut & perféctam libertátem cónsequi mereátur, & ad vitam profíciat sempitérnam. Per Dóminum nostrum.

*Deinde in Ecclesiis fit Processio ad Crucifixum, ut suprà, pag. 374.*

## AD VESPERAS.

*Antiph.* Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia. Hæc est dies quam fecit Dóminus: exultémus, & lætémur in ea. ℣. Dicat nunc Israël, quóniam bonus, quóniam in séculum misericórdia ejus. *Ps.* 117. 2.

Allelúia, allelúia. ℣. Nonne cor nostrum ardens erat in nobis, dùm loquerétur in via, & aperíret nobis Scriptúras? *Luc.* 24. 32.

*Sequentia.* Víctimæ, *p.* 376.

℣. Redémit nos ab inimícis nostris, allelúia. ℟. Quóniam in ætérnum misericórdia ejus, allelúia. *Ps.* 135. 24.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. A. Mane nobíscum, Dómine, quóniam advesperáscit, & inclináta est jam dies, allelúia. *Luc.* 24. 29.

*Oratio, ut suprà ad Laudes: deinde in Ecclesiis fit Processio, ut suprà, p.* 376.

*Ad Fontes.* *Oratio.*

DEus, qui omnes in Christo renátos genus régale, sacerdotaléque fecísti: da nobis & velle & posse quæ præcipis, ut pópulo ad æternitátem vocáto, una sit fides méntium, & píetas actiónum. Per eúmdem Christum.

## FERIA TERTIA.

*Duplex majus.*

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Ad te, Dómine, clamábo... Exaltábo... Jubiláte Deo, *p.* 7. *& seqq.*

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO I. *Cap.* 15. 42.

*Primus homo terrenus, secundus homo cœlestis.*

SEminátur in corruptióne, surget in incorruptióne. Seminátur in ignobilitáte, surget in glória: seminátur in infirmitáte, surget in virtúte. Seminátur corpus animále, surget corpus spiritále. Si est corpus animále, est & spiritále, sicut scriptum est: Factus est primus homo Adam

in animam vivéntem, novíssimus Adam in spíritum vivificántem. Sed non priùs quod spiritále est, sed quod animále: deíndè quod spiritále. Primus homo de terra, terrénus: secúndus homo de cœlo, cœléstis. Qualis terrénus, tales & terréni: & qualis cœléstis, tales & cœléstes. Igitur sicut portávimus imáginem terréni, portémus & imáginem cœléstis.

℟. Deus, qui dives est in misericórdia propter nímiam caritátem suam, quâ diléxit nos, * Cùm essémus mórtui peccátis, convivificávit nos & conresuscitávit in Christo Jesu, allelúia. *Eph.* 2. *v.* 4.5.6. ℣. Cantáte Dómino cánticum novum, quia mirabília fecit. *Ps.* 97. 1. * Cùm essémus.

LECTIO II. *v.* 50.

*Absorpta est mors in victoria.*

HOc autem dico, fratres; quia caro & sanguis regnum Dei possidére non possunt: neque corrúptio incorruptélam possidébit. Ecce mystérium vobis dico: Omnes quidem resurgémus, sed non omnes immutábimur: in moménto, in ictu óculi, in novíssima tuba: canet enim tuba, & mórtui resúrgent incorrúpti: & nos immutábimur. Opórtet enim corruptíbile hoc indúere incorruptiónem: & mortále hoc indúere immortalitátem. Cùm autém mortále hoc indúerit immortalitátem, tunc fiet sermo qui scriptus est: Absórpta est mors in victória. Ubi est mors victória tua? ubi est mors stímulus tuus? stímulus autem mortis peccátum est: virtus veró peccáti, lex. Deo autem grátias, qui dedit nobis victóriam per Dóminum nostrum Jesum Christum.

℟. Crucifixus est Christus ex infirmitáte allelúia: sed vivit * Ex virtúte Dei, allelúia, allelúia. 2. *Corint.* 13. 4. ℣. Infírmus dicat, quia fortis ego sum. *Joel.* 3. 10. * Ex virtúte.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *v.* 24. 36.

*Jesus post resurrectionem apparet decem Discipulis.*

IN illo témpore; Stetit Jesus in médio discipulórum suórum, & dicit eis: Pax vobis, ego sum nolíte timére. Et réliqua.

Homilía sancti Ambrósii Epíscopi.

*Expos. Evang. secundùm Lucam. Lib.* 10.

MIrum quómodò se natúra corpórea per impenetrábile corpus infúderit invisíbili áditu, visíbili conspéctu; tangi fácilis, diffícilis

æstimári. Dénique conturbáti discípuli æstimábant se spíritum vidére. Et ídeò Dóminus, ut spéciem nobis resurrectiónis osténderet: Palpáte, inquit, & vidéte, quia spíritus carnem & ossa non habet, sicut me vidétis habére. Non ergo per incorpóream natúram, sed per resurrectiónis qualitátem, impérvia usu clausa penetrávit. Nam quod tángitur, corpus est: quod palpátur corpus est. In córpore autem resurgémus. Seminátur enim corpus animále, surgit corpus spiritále: sed illud subtílius, hoc crássius, útpote adhuc terrénæ labis qualitáte concrétum. Nam quómodò non corpus, in quo manébant insígnia vúlnerum, vestígia cicatrícum, quæ Dóminus palpánda óbtulit? In quo non solùm fidem firmat, sed étiam devotiónem ácuit, quòd vúlnera suscépta pro nobis cœlo inférre máluit, abolére nóluit; ut Deo Patri nostræ prétia libertátis osténderet. Talem sibi Pater ad déxteram locat, trophæum nostræ salútis ampléctens: tales illic mártyres nobis cicatrícis suæ coróna monstrávit.

℟. Stetit Jesus in médio discipulórum suórum, & dicit eis: * Pax vobis, ego sum, nolíte timére, † Allelúia, allelúia. *Luc.* 24. 36. ℣. Ego sum frater vester, nolíte pavére, pro salúte enim vestra misit me Deus. *Gen.* 45. *v.* 4. 5. * Pax vobis. ℣. Glória † Allelúia.

Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitulum. Act.* 2. *v.* 22. 2[...] *&* 3. 15.

VIri Israëlítæ, audíte ve[...] ba hæc: Jesum Naz[...] rénum, virum approbátum [...] Deo in vobis, virtútibus [...] prodígiis & signis, quæ fec[...] Deus per illum in médio ve[...] tri, quem per manus iniqu[...] rum affigéntes interemísti[...] Deus suscitávit à mórtui[...] cujus nos testes sumus.

℣. Excitátus est, *p.* 374.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4[...] Cùm manducásset coram [...] sumens relíquias dedit eis, [...] lelúia. *Luc.* 24. 43.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui Ecclésiam tu[...] novo semper fœtu mu[...] típlicas: concéde famu[...] tuis, ut sacraméntum vive[...] do téneant, quod fide pe[...] cepérunt. Per Dóminum.

## AD VESPERA[S]

*Ant.* Allelúia, allelúia, al[...] lelúia, allelúia. Hæc est di[...] quàm fecit Dóminus, exul[...] témus, & lætémur in e[...] ℣. Dicant qui redémpti su[...] à Dómino: miserátor & mise[...] ricors

icors Dóminus; miseratiónes
ejus super ómnia ópera ejus.
Ps. 117. 24. 106. 2. & 144.
v. 8. 9.

Allelúia, allelúia. ℣. Dómine, eduxísti ab inférno ánimam meam; salvásti me à descendéntibus in lacum. Ps. 26. 4.

Sequentia. Víctimæ, p. 376.
℣. Redémit nos, ibid.

Ad Magníficat, Ant. 3. c. Oportébat Christum pati, & súrgere à mórtuis tértiâ die, & prædicári in nómine ejus pœniténtiam, allelúia. Luc. v. 46. 47.

Oratio, ut suprà ad Laud.
Deinde Processio.
Ad Fontes, Oratio.

Deus, qui credéntes in te pópulos, fonte baptísmatis innovásti: hanc renátis in Christo concéde custódiam, ut nullo erróris incursu, grátiam tuæ benedictiónis amíttant. Per eúmdem.

FERIA QUARTA.
Duplex minus.
OFFICIUM NOCTURNUM.

Psal. Bénedic, ánima mea... Fundaméntum ejus in móntibus sanctis... Quàm magníficáta sunt, p. 36. & seqq.

Incipit Liber Apocalypsis beáti Joánnis Apóstoli.

LECTIO I. Cap. 1. 1.
Christus primogenitus mortuorum.

Apocalypsis Jesu Christi, quam dedit illi Deus palàm fácere servis suis, quæ opórtet fieri citò: & significávit, mittens per A'ngelum suum servo suo Joánni; qui testimónium perhíbuit verbo Dei, & testimónium Jesu Christi, quæcúnque vidit. Beátus, qui legit & audit verba prophetíæ hujus: & servat ea, quæ in ea scripta sunt; tempus enim propè est. Joánnes septem Ecclésiis, quæ sunt in A'sia. Grátia vobis, & pax ab eo, qui est, & qui erat, & qui ventúrus est: & à septem spirítibus, qui in conspéctu throni ejus sunt; & à Jesu Christo, qui est testis fidélis, primogénitus mortuórum, & princeps regum terræ: qui diléxit nos, & lavit nos à peccátis nostris, in sánguine suo, & fecit nos regnum & sacerdótes Deo & Patri suo: ipsi glória, & impérium in sécula seculórum: Amen. Ecce venit cum núbibus, & vidébit eum omnis óculus, & qui eum pupugérunt. Et plangent se super eum omnes tribus terræ: E'tiam: Amen. Ego sum Alpha & Oméga, princípium & finis, dicit Dóminus Deus, qui est, & qui erat, & qui ventúrus est, omnípotens.

℟. Benedíctus Deus, qui secúndùm misericórdiam suam magnam * Regenerávit nos in spem vivam, per resurrectiónem Jesu Christi ex mór-

tuis, in hereditátem incorruptíbilem, & incontaminátam, allelúia. 1. *Petr.* 1. *v.* 3. 4. ℣. Omnes Gentes, pláudite mánibus: jubiláte Deo in voce exultatiónis. *Ps.* 46. 2. * Regenerávit.

LECTIO II. *v.* 9.

*Majestas Filii hominis.*

EGo Joánnes frater vester, & párticeps in tribulatióne, & regno, & patiéntia in Christo Jesu, fui in ínsula, quæ appellátur Patmos, propter verbum Dei, & testimónium Jesu. Fui in spíritu in Domínica die, & audívi post me vocem magnam tanquàm tubæ. Et convérsus sum, ut vidérem vocem, quæ loquebátur mecum: & convérsus vidi septem candelábra áurea. Et in médio septem candelabrórum aureórum símilem Fílio hóminis, vestítum podére, & præcínctum ad mamíllas zonâ áureâ; caput autem ejus & capílli erant cándidi tanquàm lana alba, & tanquàm nix, & óculi ejus tanquàm flamma ignis; & pedes ejus símiles aurichálco, sicut in camíno ardénti, & vox illíus tanquàm vox aquárum multárum. Et habébat in déxtera sua stellas septem: & de ore ejus gládius utrâque parte acútus exíbat: & fácies ejus sicut sol lucet in virtúte sua. Et cùm vidíssem eum, cécidi ad pedes eju[s] tanquàm mórtuus. Et pósui[t] déxteram suam super me, di[-] cens: Noli timére: Ego sum primus & novíssimus; & vi[-] vus, & fui mórtuus; & ecce sum vivens in sécula sæcu[-] lórum, & hábeo claves mo[r-] tis & inférni.

℟. Quæ ad patres nost[ros] repromíssio facta est, h[anc] Deus adimplévit, * Re[sus-] citans Jesum, allelúia. *Act.* [13.] *v.* 32. 33. ℣. Notam fec[isti] in pópulis virtútem tuam. [Ps.] 76. 15. * Resúscitans.

Léctio sancti Evangélii [se-] cúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 21. [...]

*Apparitio Christi ad* [...] *Tiberiadis.*

IN illo témpore; Manif[es-] vit se íterùm Jesus disc[ípu-] lis ad mare Tiberíadis; [ma-] nifestávit autem sic. E[rant] simul Simon Petrus, & T[ho-] mas, qui dícitur Dídym[us] & fílii Zebedǽi. Manè au[tem] facto stetit Jesus in líttore. [Et] réliqua.

Homilía sancti Gregórii P[apæ.]

*Hom.* 24. *in Evang. hab.* [...] *Basil. S. Laurentii. Feri[a]* *4. Pasch.*

LEctio sancti Evangél[ii] quæ modò in áurib[us] vestris lecta est, fratres mei, quæstióne ánimum pulsat. Sed pulsatióne suâ vim discretiónis índicat. Quæri étenim po-

test, cur Petrus, qui piscátor ante conversiónem fuit, post conversiónem ad piscatiónem rédiit? & cùm Véritas dicat: Nemo mittens manum suam ad arátrum, & aspíciens retrò, aptus est regno Dei: cur repétiit quod derelíquit? Sed si virtus discretiónis inspícitur, cítiùs vidétur; quia nimírum negótium, quod ante conversiónem sine peccáto éxtitit, hoc etiam post conversiónem repétere culpa non fuit. Nam piscatórem Petrum, Matthæum verò teloneárium scímus: & post conversiónem suam ad piscatiónem Petrus rédiit; Matthæus verò ad telónei negótium non resédit: quia áliud est victum per piscatiónem quærere, áliud autem telónei lucris pecúnias augére. Sunt enim pléraque negótia, quæ sine peccátis exhibéri aut vix aut nullátenus possunt. Quæ ergo ad peccátum ímplicant, ad hæc necésse est, ut post conversiónem ánimus non recúrrat.

℟. Ut descendérunt in terram vidérunt prunas pósitas & piscem superpósitum, & panem, * Dicit eis Jesus: Afférte de píscibus. Ascéndit Simon Petrus, & traxit rete in terram, plenum magnis píscibus, allelúia. *Joan.* 21. *v.* 9. 10. 11. ℣. O'mnia quæcúmque vóluit, Dóminus fecit in cœlo, in terra, in mari. *Ps.* 134. 6. * Dicit eis. ℣. Glória. * Dicit eis.

Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitulum. Act.* 3. *v.* 14. 15.

VIri Israëlítæ, vos sanctum, & justum negástis, & petístis virum homicídam donári vobis; autórem verò vitæ interfecístis, quem Deus suscitávit à mórtuis.

℣. Excitátus est, *p.* 374.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 8. g. Nemo audébat discumbéntium interrogáre eum: Tu qui es? sciéntes quia Dóminus est, allelúia. *Joan.* 21. 12.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui nos resurrectiónis Domínicæ ánnuâ solemnitáte lætíficas: concéde propítius: ut, per temporália festa quæ ágimus, pervenire ad gáudia ætérna mereámur. Per eúmdem Dóminum.

## AD VESPERAS.

*Ant.* Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia. Hæc est dies, qaum fecit Dóminus, exultémus, & lætémur in ea. ℣. Déxtera Dómini fecit virtútem, déxtera Dómini exaltávit me. *Ps.* 117. *v.* 16. 24.

Allelúia, allelúia. ℣. Christus resúrgens ex mórtuis, jam non móritur; mors illi ultrà

non dominábitur. *Rom.* 6. 9.

*Sequentia.* Víctimæ, *p.* 376.

℣. Redémit nos, *ibid.*

*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. d. Hoc jam tértiò manifestátus est Jesus discípulis suis, cùm resurrexísset à mórtuis, allelúia. *Joan.* 21. 14.

*Oratio, ut suprà ad Laudes.*

*Deinde Processio.*

*Ad Fontes, Oratio.*

DEus, per quem nobis Redémptio venit, & præstátur adóptio: réspice in ópera misericórdiæ tuæ, ut in Christo renátis, & ætérna tribuátur heréditas, & vera libértas. Per eúmdem.

## FERIA QUINTA.

*Duplex minus.*

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Confitémini Dómino .....Intrávit Israël... Lætáta est. *p.* 37. *& seqq.*

De libro Apocalýpsis beáti Joánnis Apóstoli.

LECTIO I. *Cap.* 2. 1.

*Perseverandum in charitate.*

ANgelo Ephesi Ecclésiæ scribe: Hæc dicit, qui tenet septem stellas in déxtera sua, qui ámbulat in médio septem candelabrórum aureórum: Scio ópera tua, & labórem, & patiéntiam tuam, & quia non potes sustinére malos: & tentásti eos, qui se dicunt Apóstolos esse; & non sunt: & invenísti eos mendáces: & patiéntiam habes, & sustinuísti propter nomen meum, & non defecísti. Sed hábeo advérsùm te, quòd charitátem tuam primam reliquísti. Memor esto itaque unde excíderis: & age pœniténtiam, & prima ópera fac. Sin autem, vénio tibi & movébo candelábrum tuum de loco suo, nisi pœniténtiam égeris. Sed hoc habes, quia odísti facta Nicolaïtárum, quæ & ego odi. Qui habet aurem, áudiat quid Spíritus dicat Ecclésiis: Vincénti dabo édere de ligno vitæ, quod est in paradíso Dei mei.

℟. Qui diléxit nos, & lavit nos à peccátis nostris in sánguine suo, * Ipsi glória & impérium in sécula seculórum, allelúia. *Apoc.* 1. *v.* 5. 6.

℣. Pro eo quòd trádidit in mortem ánimam suam. *Isa.* 53. 12. * Ipsi glória.

LECTIO II. *Cap.* 3. 14.

*Tepidus rejicitur.*

ANgelo Laodíciæ Ecclésiæ scribe: Hæc dicit: Amen, testis fidélis, & verus, qui est princípium creatúræ Dei: Scio ópera tua, quia neque frígidus es, neque cálidus: útinam frígidus esses, aut cálidus: sed quia tépidus es, & nec frígidus, nec cálidus, incípiam te evómere ex ore meo. Quia dicis: Quòd dives sum, & lo-

cupletátus, & nullíus égeo: & nescis quia tu es miser, & miserábilis, & pauper, & cæcus, & nudus. Suádeo tibi émere à me aurum ignítum, probátum, ut lócuples fias, & vestiméntis albis induáris, & non appáreat confúsio nuditátis tuæ, & collýrio inúnge óculos tuos, ut vídeas. Ego quos amo, árguo, & castígo. Æmuláre ergo, & pœniténtiam age. Ecce sto ad óstium, & pulso: si quis audíerit vocem meam, & aperúerit mihi jánuam, intrábo ad illum, & cœnábo cum illo, & ipse mecum. Qui vícerit, dabo ei sedére mecum in throno meo: sicut & ego vici, & sedi cum Patre meo in throno ejus.

℟. Notum sit ómnibus, quia quem Deus suscitávit à mórtuis, * Hic est lapis, qui reprobátus est à vobis ædificántibus, qui factus est in caput ánguli, allelúia. *Act.* 4. *v.* 10. 11. ℣. Lápidem quem reprobavérunt ædificántes, hic factus est in caput ánguli. *Ps.* 117. 22. * Hic est.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 20. 11.

*Apparitio Christi Mariæ Magdalenæ.*

IN illo témpore; María stabat ad monuméntum foris, plorans. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.

*Hom.* 25. *in Evang. hab. in Basil. S. Joan. Later. Feriâ* 5. *Pasch.*

MUlier, quid ploras? Quem quæris? Interrogátur dolóris causa, ut augeátur desidérium; quàtenùs cùm nomináret quem quæreret, in amóre ejus ardéntiùs æstuáret. Illa exístimans quia hortulánus esset, dicit ei: Dómine, si tu sustulísti eum, dícito mihi? Quid est quòd viso eo, quem hortulánum crédidit, cui necdum díxerat quem quærébat, ait: Dómine, si tu sustulísti eum? quasi enim jam dixísset ex cujus desidério plángeret, eum dicit quem non díxerat. Sed vis amóris hoc ágere solet in ánimo, ut quem ipse semper cógitat, nullum álium ignoráre credat. Rectè, & hæc múlier quem quærit non dicit, & tamen dicit: Si tu sustulísti eum: quia álteri non putat incógnitum, quem sic ipsa contínuo plangit desidério. Dicit ei Jesus: María. María ergo, quia vocátur ex nómine, recognóscit autórem: neque eum prótinùs Rabbóni, id est, Magístrum vocat; quia & ipse erat qui quærebátur extériùs, & ipse qui eam intériùs, ut quæreret, docébat. Jam verò ab Evangelísta non súbditur,

quid múlier fecit, sed ex eo innúitur quod audívit: cui dícitur: Noli me tángere; nondum enim ascéndi ad Patrem meum. In his namque verbis osténditur, quod María amplécti vóluit ejus vestígia, quem recognóvit; sed ei Magíster dicit: Noli me tángere. Cur tangi non débeat, rátio quoque ádditur, cùm subinfértur: Nondum enim ascéndi ad Patrem meum. In corde enim nostro tunc Jesus ad Patrem ascéndit, cùm æquális créditur Patri. Nam quisquis æquálem eum Patri non credit, adhuc in ejus péctore ad Patrem Dóminus non ascéndit.

℟. María stabat ad monuméntum foris plorans. Dicit ei Jesus: Múlier quid ploras? Quem quæris? illa exístimans quia hortulánus esset, dicit ei: * Dómine, si tu sustulísti eum, dícito mihi ubi posuísti eum, † Allelúia, allelúia. *Joan.* 20. *v.* 11. 15. ℣. Índica mihi quem díligit ánima mea. *Cant.* 1. 6. * Dómine. ℣. Glória. † Allelúia.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitul. Act.* 13. *v.* 29. 30. 31.

CUm consummássent ómnia quæ de Jesu scripta erant, deponéntes eum de ligno, posuérunt eum in monuménto. Deus verò suscitávit eum à mórtuis tértiâ die: qui visus est per dies multos his, qui simul ascénderant cum eo de Galilæa in Jerúsalem.

℣. Excitátus est, *p.* 374.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. a. Surgens Jesus manè prima Sábbati, appáruit primò Maríæ Magdalénæ, de qua ejécerat septem dæmónia, allelúia. *Marc.* 16. 9.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui diversitátem Géntium in confessióne tui nóminis adunásti: da, ut renátis fonte baptísmatis, una sit fides méntium & píetas actiónum. Per Dóminum.

AD VESPERAS.

*Ant.* Allelúia, allelúia, allelúia, allel. Hæc est dies quam fecit Dóminus, exultémus & lætémur in ea. ℣. Lápidem quem reprobavérunt ædificántes, hic factus est in caput ánguli: à Dómino factum est istud, & est mirábile in óculis nostris. *Ps.* 117. *v.* 22. 23. 24.

Allelúia, allelúia. ℣. Jesum Deus suscitávit à mórtuis: hic est lapis, qui reprobátus est ab ædificántibus, qui factus est in caput ánguli. *Act.* 4. *v.* 10. 11.

*Sequentia.* Víctimæ, *p.* 376.

℣. Redémit nos, *ibid.*

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Venit María Magdaléne, an-

[nuntians] discípulis, Quia vidi Dóminum, allel. *Joan. 20. 18.*

*Oratio, ut suprà ad Laudes.*

*Deinde Processio.*

*Ad Fontes, Oratio.*

DEus totíus cónditor creatúræ, fámulos tuos, quos fonte renovásti baptísmatis, quósque grátiæ tuæ plenitúdine solidásti, in adoptiónis sorte fácias dignánter adscríbi. Per Christum.

## FERIA SEXTA.

*Duplex minus.*

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Confitémini Dómino . . . . Irritavérunt Móysen . . . . Irritavérunt eum, *p. 39. & seqq.*

De libro Apocalýpsis beáti Joánnis Apóstoli.

LECTIO I. *Cap. 20. 1.*

*Satanas ligatus.*

VIdi Angelum descendéntem de cœlo, habéntem clavem abýssi, & caténam magnam in manu sua. Et apprehéndit dracónem, serpéntem antíquum, qui est diábolus & sátanas, & ligávit eum per annos mille: & misit eum in abýssum, & clausit, & signávit super illum, ut non sedúcat ámpliùs Gentes, donec consumméntur mille anni: & post hæc opórtet illum solvi módico témpore. Et vidi sedes, & sedérunt super eas, & judícium datum est illis: & ánimas decollat[ór]um propter testimónium Jesu, & propter verbum Dei, & qui non adoravérunt béstiam, neque imáginem ejus, nec accepérunt charactérem ejus in fróntibus aut in mánibus suis, & vixérunt, & regnavérunt cum Christo mille annis. Céteri mortuórum non vixérunt, donec consumméntur mille anni. Hæc est resurréctio prima. Beátus, & sanctus, qui habet partem in resurrectióne prima: in his secúnda mors non habet potestátem, sed erunt Sacerdótes Dei & Christi, & regnábunt cum illo mille annis.

℟. Jesum à Názareth suscitávit Deus tértiâ die, * Constitútus est à Deo Judex vivórum & mortuórum, allelúia, allelúia. *Act. 10. v. 38. 40. 42.* ℣. Antíquus diérum dedit ei potestátem & honórem. *Dan. 7. 14.* * Constitútus.

LECTIO II. *Cap. 21. 1.*

*Jerusalem nova.*

VIdi cœlum novum, & terram novam. Primum enim cœlum & prima terra ábiit, & mare jam non est. Et ego Joánnes vidi sanctam civitátem Jerúsalem novam descendéntem de cœlo à Deo, parátam sicut sponsam ornátam viro suo. Et audívi vocem magnam de throno dicéntem: Ecce tabernáculum

Dei cum homínibus, & habitábit cum eis. Et ipsi pópulus ejus erunt, & ipse Deus cum eis erit eórum Deus. Et abstérget Deus omnem lácrymam ab óculis eórum; & mors ultrà non erit, neque luctus, neque clamor, neque dolor erit ultrà, quia prima abiérunt. Et dixit qui sedébat in throno: Ecce nova fácio ómnia. Et dixit mihi: Scribe, quia hæc verba fidelíssima sunt, & vera. Et dixit mihi: Factum est. Ego sum Alpha, & Oméga: inítium & finis. Ego sitiénti dabo de fonte aquæ vitæ, gratis.

℟. Crédimus sciéntes, quóniam qui suscitávit Jesum, * Nos cum Jesu suscitábit, allelúia, allel. 2. *Cor.* 4. *v.* 13. 14. ℣. Vivificábit nos post duos dies; in die tértia suscitábit nos. *Osee* 6. 3. * Nos cum.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO III. *Cap.* 28. 16.

*Institutio Baptismi.*

IN illo témpore; Undecim discípuli abiérunt in Galilǽam in montem, ubi constitúerat illis Jesus, & vidéntes eum adoravérunt. Et réliqua.

Homilía sancti Hierónymi Presbyteri.

*Lib* 4. *Comment.*

POst resurrectiónem Jesus in monte Galilǽæ conspícitur, ibíque adorátur: licet quidam dúbitent, & dubitátio eórum nostram áugeat fidem. Tunc manifèstiùs osténdit Thomæ & latus lánceâ vulnerátum, & manus fixas demónstrat clavis. Accédens Jesus locútus est eis, dicens: [Data est mihi omnis potéstas in cœlo & in terra.] Illi potéstas data est, qui paulò antè crucifixus, qui sepúltus in túmulo, qui mórtuus jacúerat, qui pòsteà resurréxit. In cœlo autem & in terra potéstas data est: ut qui antè regnábat in cœlo, per fidem credéntium regnet & in terris.

℟. Vidéntes Jesum discípuli adoravérunt, & accédens Jesus locútus est eis, dicens: * Data est mihi omnis potéstas in cœlo & in terra, allelúia, allelúia. *Matth.* 28. *v.* 17. 18. ℣. Ego constitútus sum Rex à Dómino super Sion. *Ps.* 2. 6. * Data est. ℣. Glória. * Data est.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitul.* 2. *Timoth.* 2. *v.* 8. 9.

MEmor esto Dóminum Jesum Christum resurrexísse à mórtuis secúndùm Evangélium meum, in quo labóro usque ad víncula.

℣. Excitátus est, *p.* 374.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. *ff.*

Undecim discípuli abiérunt in Galilǽam in montem ubi constitúerat illis Jesus, allelúia. *Mat.* 28. 16.

Orémus. *Oratio.*

OMnípotens, sempitérne Deus, qui Paschále sacraméntum in reconciliatiónis humánæ fœdere contulísti: da méntibus nostris, ut, quod professióne celebrámus, imitémur effectu. Per.

AD VESPERAS.

*Ant.* Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia. Hæc est dies, quam fecit Dóminus; exultémus, & lætémur in ea. ℣. Benedíctus qui venit in nómine Dómini; Deus Dóminus & illúxit nobis. *Ps.* 117. *v.* 24. 26. 27.

Allelúia, allelúia. ℣. Postquàm resurréxero, præcédam vos in Galilǽam. *Marc.* 14. 28.

*Sequentia.* Victimæ, *p.* 376.

℣. Redémit nos, *ibid.*

*Ad* Magníficat, *Ant.* 4. *irr.* d. Ecce ego vobíscum sum ómnibus diébus usque ad consummatiónem séculi, allelúia. *Matth.* 28. 20.

*Oratio, ut suprà ad Laudes.*

*Deinde fit Processio.*

*Ad Fontes,* *Oratio.*

DEus, qui multíplicas Ecclésiam tuam in sóbole renascéntium: fac eam gaudére propítius de suórum profectibus filiórum. Per.

SABBATO

IN ALBIS.

*Duplex minus.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Verba mea .... Ad te, Domine ..... Quis est homo, *pag.* 49. *& seqq.*

De libro Apocalýpsis beáti Joánnis Apóstoli.

LECTIO I. *Cap.* 21. 7.

*Nova Jerusalem Agni sponsa.*

QUi vícerit, ero illi Deus, & ille erit mihi fílius. Tímidis autem, & incrédulis, & execrátis, & homicídis & fornicatóribus, & venéficis, & idololátris, & ómnibus mendácibus, pars illórum erit in stagno ardénti igne & súlphure quod est mors secúnda. Et venit unus de septem A'ngelis habéntibus phíalas plenas septem plagis novíssimis, & locútus est mecum, dicens: Veni, & osténdam tibi sponsam uxórem Agni. Et sústulit me in spíritu in montem magnum & altum, & osténdit mihi civitátem sanctam Jerúsalem descendéntem de cœlo à Deo, habéntem claritátem Dei: & lumen ejus símile lápidi pretióso tanquàm lápidi jáspidis, sicut crystállum. Et habébat murum magnum & altum, habéntem portas duódecim: & in portis A'ngelos duódecim, & nómina inscripta, quæ sunt nómina duódecim

tribuum filiórum Isráël.

℟. Salvos facit baptísma, non carnis depositio sórdium, sed consciéntiæ bonæ interrogátio in Deum, * Per resurrectiónem Jesu Christi, allelúia, allelúia. 1. *Petr.* 3. 21

℣. Effúndam super vos aquam mundam, & mundabímini. *Ezech.* 36. 25. * Per.

LECTIO II. *v.* 22.

*Non intrabit in novam Jerusalem aliquid coinquinatum.*

TEmplum non vidi in ea. Dóminus enim Deus omnípotens templum illíus est, & Agnus. Et cívitas non eget sole, neque lunâ, ut lúceant in ea: nam cláritas Dei illuminávit eam, & lucérna ejus est Agnus. Et ambulábunt Gentes in lúmine ejus: & reges terræ áfferent glóriam suam & honórem in illam. Et portæ ejus non claudéntur per diem: nox enim non erit illic. Et áfferent glóriam & honórem Géntium in illam. Non intrábit in eam áliquod coinquinátum, aut abominatiónem fáciens, & mendácium, nisi qui scripti sunt in libro vitæ Agni.

℟. Pópulus acquisitiónis, qui aliquándo non pópulus, nunc autem pópulus Dei, * Qui non consecúti misericórdiam, nunc autem misericórdiam consecúti, allelúia. 1. *Petr.* 2. *v.* 9. 10. ℣. Tanquam igni exultavérunt magnificántes te, Dómine, qui liberásti illos. *Sap.* 19. 9. * Qui non.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 20. 1.

*Duo discipuli currunt ad monumentum.*

IN illo témpore; Una Sábbati María Magdaléne venit manè, cùm adhuc ténebræ essent, ad monuméntum. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.

*Hom.* 22. *in Evang. habit. in Basil. S. Joan. Later. Sabbato post Pasc.*

LE'ctio sancti Evangélii, quam modò, fratres, audístis, valdè in superfície históricà est apérta: sed ejus nobis sunt mystéria sub bi[...]táte requirénda. [María Magdaléne, cùm adhuc ténebræ essent, venit ad monuméntum.] Juxta históriam notátur hora: juxta intelléctum verò mysticum, requiréntis signátur intelligéntia. María enim autórem ómnium, quem in carne víderat mórtuum, quærébat in monuménto: & quia hunc mínimè invénit, furátum crédidit. Adhuc ergo erant ténebræ, cùm venit ad monuméntum. Cucúrrit cítiùs, discípulis nuntiávit: sed illi præ céteris cucurrérunt, qui præ cæ-

tetis amavérunt, vidélicet Petrus & Joánnes.

℟. Una Sábbati María Magdaléne * Venit manè, cùm adhuc ténebræ essent, ad monuméntum, † Allelúia, allelúia. *Joan.* 20. 1. ℣. Fortis est ut mors diléctio, dura sicut inférnus æmulátio. *Cant.* 8. 6. * Venit. ℣. Glória. † Allelúia.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitulum. Rom.* 8. 11.

SI Spíritus ejus, qui suscitávit Jesum à mórtuis, hábitat in vobis: qui suscitávit Jesum Christum à mórtuis, vivificábit & mortália córpora vestra propter inhabitántem Spíritum ejus in vobis.

℣. Excitátus est, *pag.* 374.

*Ad Benedictus, Ant.* 4. f. Exiit Petrus & ille álius discípulus, & venérunt ad monuméntum, allelúia. *Joan.* 20. 3.

Orémus. *Oratio.*

COncéde, quǽsumus, omnípotens Deus; ut qui festa Pascchália venerándo égimus, per hæc contíngere ad gáudia ætérna mereámur. Per Dóminum.

AD VESPERAS.

*Duplex majus.*

*Psalmi de Sabbato sub Antiphona sequente.*

*Ant.* 5. a. Príncipem & Salvatórem Jesum Deus exaltávit déxterâ suâ, ad dandam pœniténtiam & remissiónem peccatórum, allelúia. *Act.* 5. 31.

*Capitulum.* 1. *Joan.* 5. 4.

CHaríssimi, omne quod natum est ex Deo, vincit mundum: & hæc est victória, quæ vincit mundum, fides nostra.

℟. Audítam fácite vocem laudis ejus, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Audítam. ℣. Qui pósuit ánimam meam ad vitam, * Allelúia, allelúia. *Ps.* 65. *v.* 8. 9. ℣. Glória Patri. *Repet.* Audítam fácite.

*Hymnus.*

CHorus novæ Jerúsalem
Novis resúltet cánticis,
Vitæ suprémus árbiter
Mortis resólvit víncula.

Cruci volens affígitur
Orbis piándi víctima,
Virtúte nunc se própriâ
Occísus Agnus súscitat.

De Vírginis puérperæ
Qui natus illǽso sinu,
Saxi sigíllis íntegris
Mortis sinu renáscitur.

Da, Christe, tecum nos mori,
Simúlque tecum súrgere,
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

Quem suscitátum crédimus,
Jesu, tibi sit glória
Cum Patre cumque Spíritu
In sempitérna sécula. Amen.

*Hymni ejusdem metri ter-*

*minantur per has duas ultimas strophes usque ad Ascens.*

℣. Salvávit sibi déxtera ejus, allelúia, ℟. Et bráchium sanctum ejus, allelúia. *Ps.* 97. 1.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 6. F. Salvos nos fecit per lavácrum regeneratiónis & renovatiónis Spíritûs sancti, quem effúdit in nos abúndè per Jesum Christum Salvatórem nostrum, allelúia. *Tit.* 3. *v.* 5. 6.

Orémus, *Oratio.*

Præsta, quæsumus, omnípotens Deus: ut, qui Paschália festa perégimus; hæc, te largiénte, móribus & vitâ teneámus. Per Dóminum.

*In Ecclesiis fit Processio ad Crucifixum, ut in Procession.*

AD COMPLETORIUM.

*Psalmi de Sabbato, cetera ut in Feriis pro tempore Paschali, infrà p.* 406.

---

# DOMINICA.
## IN OCTAVA PASCHÆ, seu IN ALBIS DEPOSITIS.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Allelúia, surréxit Dóminus verè, * Veníte, adorémus, allelúia.

*Psal.* Veníte *pag.* 2.

*Hymnus.* PASCHALIS Agni, *infrà, pag.* 400.

*Ant.* 1. a. Crédimus.

*Psal.* Exáudiat te... Júdica me... Cantáte, *p.* 55. *& seqq.*

*Ant.* Crédimus secúndùm operatiónem poténtiæ virtútis Dei quam operátus est in Christo súscitans illum à mórtuis, allelúia. *Ephes.* 1. *v.* 19. 20.

℣. Illuxérunt coruscatiónes tuæ orbi terræ, allelúia. ℟. Commóta est & contrémuit terra, allelúia. *Ps.* 76. 19.

De Epístola prima beáti Petri Apóstoli.

LECTIO I. *Cap.* 3. 18. *&* 4. 1.

*Per Baptisma salvamur.*

Christus semel pro peccátis nostris mórtuus est, justus pro injústis, ut nos offérret Deo, mortificátus quidem carne, vivificátus autem Spíritu. In quo & his, qui in cárcere erant, spirítibus véniens prædicávit, qui incréduli fúerant aliquándò, quandò expectábant Dei patiéntiam in diébus Noë, cùm fabricarétur arca: in qua pauci, id est octo ánimæ salvæ factæ sunt per aquam. Quod & vos nunc símilis formæ salvos facit Baptísma: non carnis deposítio sórdium, sed consciéntiæ bonæ interrogátio in Deum per resurrectiónem Jesu Christi, qui est in déxtera Dei, deglútiens mortem, ut vitæ ætérnæ he-

...des efficerémur: proféctus in cœlum, subjéctis sibi Angelis, & Potestátibus & Virtútibus. Christo ígitur passo in carne, & vos eádem cogitatióne armámini: quia qui passus est in carne, désiit à peccátis: ut jam non desidériis hóminum, sed voluntáti Dei, quod réliquum est in carne vivat témporis.

℞. Christus resúrgens ex mórtuis, jam non móritur: Mors illi ultrà non dominábitur; quòd enim mórtuus est peccáto, mórtuus est semel; quòd autem vivit, vivit Deo, allelúia, allelúia. *Rom. 6. v. 9.* ℣. Præcipitábit mortem in sempitérnum, & oppróbrium pópuli sui áuferet de univérsa terra: exultábimus, & lætábimur in salutári ejus. *Isa. 25. v. 8. 9.* * Mors illi.

Apológia sancti Justíni Mártyris pro Christiánis.

LECTIO II.

*Apologia II. ad Anton. Senatumque Romanum. an. 150.*

QUómodò nos per Christum novi effécti, Deo consecravérimus, narrábimus, ne hoc prætermísso, áliqua in parte expositiónis ímprobè ágere videámur. Qui sibi persuádent & credunt vera esse hæc, quæ à nobisdicéntur, ac dicúntur, seque ita vívere posse promíttunt: ii primùm ... precári & pétere à Deo præteritórum superiorúmque peccatórum remissiónem jejunántes docéntur, nobis unà cum eis & precántibus & jejunántibus. Deinde ducúntur à nobis ubi est aqua. Eóque, ut ita dicam, regeneratiónis renovationísque génere, quo étiam nos ipsi renováti sumus, renascúntur. Patris enim ómnium, Dominíque Dei, & conservatóris nostri Jesu Christi, ac Spíritûs sancti nómine aquâ abluúntur & expiántur. Christus enim ait: Nisi renáti fuéritis, in regnum cœlórum mínimè vobis áditus patébit... Nos autem posteáquàm ita ablúimus expiavimúsque, eum qui crédidit & assénsus est; ad eos, qui fratres dicúntur, dúcimus eum in locum, quo convenérunt comprecándi causâ, conténtis ánimis & pro se& pro eo, qui illustrátus est omnibúsque áliis, qui ubíque sunt, ut & veritátis discípuli & præceptórum custódes possímus inveníri.

℞. Quicúnque baptizáti sumus in Christo Jesu, in morte ipsíus baptizáti sumus, * Ut quómodò Christus surréxit à mórtuis per glóriam Patris, ita & nos in novitáte vitæ ambulémus, allélulia. *Rom. 6. v. 3. 4.* ℣. Déxtera tua, Dómine, magnificáta est in fortitúdine, flavit spíritus tuus, & opéruit eos mare. Dux fuísti in mise-

ricórdia tua pópulo quem redemísti. *Exod.* 15. *v.* 6. 10. 13. * Ut quómodò.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 20. 19.

*Thomas confitetur Jesum esse Deum.*

IN illo témpore; Cùm esset serò die illo, una Sabbatórum, & fores essent clausæ, ubi erant discípuli congregáti propter metum Judæórum: venit Jesus, & stetit in médio. Et réliqua.

Homilía sancti Ignátii Antiochéni Epíscopi & Mártyris.

*Epist. ad Smyrn. c.* 34. *sec.* 1.

QUandò ad eos qui cum Petro erant venit Jesus, inquit ipsis: Apprehéndite, pálpate, & vidéte quòd non sum dæmónium incorporále. Et conféstim ipsum tetigérunt atque credidérunt, convícti carne ipsius & spíritu, propter hoc étiam mortem contempsérunt; supra mortem verò invénti sunt. Post resurrectiónem autem cum illis comédit & bibit, ut carnális quamvis spirituáliter unítus Patri, si enim opinióne solâ hæc à Dómino nostro sunt peráćta; & ego opinióne solùm vinctus sum, quid verò & meípsum morti trádidi, ad ignem, ad gládium, ad béstias. Tantùm in nómine Jesu Christi, ut simul cum illo pátiar, ómnia sustíneo; ipso roboránte me, qui perféctus homo factus est.

℟. Post dies octo íterùm erant discípuli Jesu intùs, & Thomas cum eis. * Venit Jesus jánuis clausis, & stetit in médio, & dixit: Pax vobis, allelúia, allelúia. *Joan.* 20. 26. ℣. Bonus est Dóminus sperántibus in eum, ánimæ quærénti illum. *Thren.* 3. 25. * Venit Jesus. ℣. Glória. * Venit.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Repléti, *p.* 40[illegible]

*Psalmi de Dominica cum Antiphona sequente.*

*Ant.* 3. a. Vos nunc salvos facit baptísma per resurrectiónem Jesu Christi, allelúia. [illegible] *Pet.* 3. 21.

*Capitulum.* 1. *Joan.* 5. [illegible]

QUis est qui vincit mundum, nisi qui credit quóniam Jesus est Fílius Dei? hic est qui venit per aquam & sánguinem, Jesus Christus: non in aqua solùm, sed in aqua & sánguine.

*Hymnus*, AURÓRA lucis, *infrà p.* 736. [illegible]

℣. Excitátus est Dóminus, allelúia. ℟. Tanquam dormiens, allelúia. *Ps.* 77. 65.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. f. Dicit Jesus Thomæ: Infer dígitum tuum huc, & vide manus meas, & noli esse in-

incrédulus, sed fidélis, allelúia. *Joan.* 20. 27.

Orémus. *Oratio.*

PRæsta, quæsumus, omnipotens Deus, ut qui Paschália festa perégimus, hæc, te largiénte, móribus & vitâ teneámus. Per Dóminum.

AD PRIMAM.

*Hymnus.* JAM lucis orto sidere, *p.* 15.

*Ant.* 7. D. Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia. *Eadem Antiph. ad omnes Horas.*

*Psalmi de Dominica, ut in Psalterio: omisso Symbolo.*

*Capitulum,* ℟. *br. &* ℣. *ut infrà, p.* 404.

*CANON.*

Ex Concilio Rotomagénsi. *An.* 1581. *Tit. de Sac. Can.* 3.

EX antiquórum Christianórum more & traditióne præcípimus, quamprímùm fieri póterit, natos púeros ad baptísmum deférri, propter ejus necessitátem: ac nisi ad eórum salútem spectántia, & quæ pietátem christiánam, fidémque de sacraméntis sápiant, adhibéri.

AD TERTIAM.

*Capitulum. Rom.* 6. *v.* 3. 4.

QUicúnque baptizáti sumus in Christo Jesu, in morte ipsius baptizáti sumus. Consepúlti enim sumus cum illo per baptísma in mortem: ut quómodò Christus resurréxit à mórtuis per glóriam Patris, ita & nos in novitáte vitæ ambulémus.

℟. *br.* Confitébor, *p.* 404.

℣. Jucúndum, *ibid.*

AD SEXTAM.

*Capitulum. Galat.* 3. *v.* 26. 27.

OMnes filii Dei estis per fidem, quæ est in Christo Jesu: quicúnque enim in Christo baptizáti estis, Christum induístis.

℟. *br.* Reflóruit, *p.* 405.

℣. Non móriar, *ibid.*

AD NONAM.

*Capitulum. Coloss.* 2. 11.

FRatres, Circuncisi estis circuncisióne non manufáctâ in expoliatióne córporis carnis, sed in circuncisióne Christi, consepúlti ei in baptismo, in quo & resurrexístis per fidem operatiónis Dei, qui suscitávit illum à mórtuis.

℟. *br.* Vivit Dóminus, *pag.* 405.

℣. Vivet ánima, *ibid.*

AD VESPERAS.

*Psalmi de Dominica, sub una Antiphona sequente.*

*Ant.* 3. A. Per Christum fidéles estis in Deo, qui suscitávit eum à mórtuis, allelúia. 1. *Pet.* 1. 21.

*Capitulum. Rom.* 6. *v.* 5. 6.

SI complantáti facti sumus similitúdini mortis Christi; simul & resurrectiónis érimus. Hoc sciéntes, quia vetus homo noster simul crucifixus est, ut destruátur cor-

pus peccáti, & ultrà non serviámus peccáto.

*Hymnus.* NUNC novis, *ut infrà pag.* 405.

℣. Circundedísti. 406.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 4. e. Quia vidísti me, Thoma, credidísti: beáti qui non vidérunt, & crediderunt, allelúia. *Joan.* 20. 29.

*Oratio*, Præsta, quæsumus, *ut suprà ad Laudes, p.* 399.

AD COMPLETORIUM.

*Psalmi de Dominica: cetera ut infrà in Feriis temporis Paschalis, p.* 406.

---

IN FERIIS

TEMPORIS PASCHALIS,

*Usque ad Ascensionem Domini.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitatorium*, Surréxit Dóminus verè, * Allelúia. *Luc.* 24. 34.

*Psalmus.* Venite. *pag.* 2.

*Hymnus.*

PASCHÁLIS Agni núptiis,
Agni redémpti sánguine,
Tutíque, mersis hóstibus,
Adéste Christi mílites.

DIVÍNA cujus cháritas
Sacrum propínat sánguinem,
Almíque membra córporis
Amor Sacérdos ímmolat.

JAM Pascha nostrum Christus est,
Paschális idem víctima;
Et pura puris méntibus
Sinceritátis ázyma.

O vera cœli víctima,
Subjécta cui sunt tártara,
Solúta mortis víncula,
Recépta vitæ præmia.

DA, Christe, tecum no[n] mori
Simúlque tecum súrgere
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

QUEM suscitátum créd[i]mus,
Jésu, tibi sit glória,
Cum Patre cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

*Hymni hujus metri ad La[u]dès, Horas & Vesperas, te[r]minantur per has duas Str[o]phes, usque ad Ascension[em].*

*Psalmi tres, ut infrà [in] unaquaque Feria, sub [una] Antiphona sequente.*

*Ant.* 4. *irreg.* d. Christ[us] præbuit seípsum vivum Ap[o]tolis post passiónem suam [in] multis arguméntis, per di[es] quadragínta appárens eis, [&] loquens de regno Dei, alle[]lúia. *Act.* 1. 3.

*Versic. & Responsoria si[n]gulis hebdomadis dicuntur [ut] hîc assignantur pro qualib[et] Feria, nisi aliter notetur.*

*Benedictiones ut ante Psalterium pro tempore Paschali. Lectiones infrà in qualibet Feria.*

FERIA

## FERIA SECUNDA.

℣. Salvávit sibi déxtera ejus, allelúia. ℟. Et bráchium sanctum ejus, allelúia. *Psal.* 97. 1.

℟. Si mórtui sumus cum Christo: crédimus quia * Simul étiam vivémus cum Christo, allelúia, allelúia. *Rom.* 6. 8. ℣. Expécta me, dicit Dóminus, in die resurrectiónis meæ in futúrum. *Soph.* 3. 8. * Simul étiam.

℟. Grátias Deo Patri, Qui erípuit nos de potestate tenebrárum, & tránstulit in regnum fílii dilectiónis suæ, allelúia. *Coloss.* 1. *v.* 12. 13. ℣. Benedíctus Dóminus Deus Israël, qui facit mirabília solus. *Psal.* 71. 18. * Qui erípuit.

℟. Benedíctus Deus & Pater Dómini nostri Jesu Christi, * Qui secúndum misericórdiam suam magnam regenerávit nos in spem vivam, † Per resurrectiónem Jesu Christi ex mórtuis, allelúia. 1. *Petr.* 1. 3. ℣. In Ecclésiis benedícite Deo Dómino, de fóntibus Israël. *Psal.* 67. 27. * Qui. ℣. Glória. † Per resurrectiónem.

*Dicitur*, Te Deum, *toto tempore Paschali.*

## FERIA TERTIA.

℣. Dómine, eduxísti ab inférno ánimam meam: allelúia. ℟. Salvásti me à descendéntibus in lacum, allelúia. *Psal.* 29. 4.

℟. Deus, qui dives est in misericórdia, * Cùm essémus mórtui peccátis, convivificávit nos in Christo, & conresuscitávit, allelúia. *Eph.* 2. *v.* 4. 5. 6. ℣. Quia benígnus & miséricors est, pátiens & multæ misericórdiæ. *Joel.* 2. 13 * Cùm essémus.

℟. Dóminus regnávit, decórem indútus est: * Indútus est Dóminus fortitúdinem, allelúia, allelúia. *Psal.* 92. 1. ℣. Vicit Leo de tribu Juda radix David. *Apoc.* 5. 5 * Indútus est.

℟. Christus mórtuus est, & resurréxit: * Ut & † Mortuórum & vivórum dominétur, allelúia. *Rom.* 14. 9 ℣. Fílii hóminum, scitóte quóniam mirificávit Dóminus sanctum suum. *Psal.* 4. *v.* 3. 4. * Ut &. ℣. Glória. † Mortuórum.

## FERIA QUARTA

℣. Dóminus regnávit, exúltet terra: allelúia. ℟. Læténtur ínsulæ multæ, allelúia. *Psal.* 96. 1.

℟. Sive vívimus, Dómino vívimus: sive mórimur, Dómino mórimur. * Sive vívimus, sive mórimur Dómini sumus, allelúia. *Rom.* 14. 8.

℣. Dicant qui redémpti sunt à Dómino, quos redémit de manu inimíci. *Psal.* 106. 2. * Sive vívimus.

℟. Quæ ad Patres nostros repromíssio facta est: hanc Deus adimplévit, * Resúscitans Jesum, allelúia. *Act.* 13. *v.* 32. 33. ℣. Notam fecísti in pópulis virtútem tuam. *Ps.* 76. 15. * Resúscitans.

℟. Deus meus es tu, & confitébor tibi: * Deus meus es tu, & exaltábo te, allelúia. *Psal.* 117. 28. ℣. Occísus es, & redemísti nos Deo in sánguine tuo. *Apoc.* 5. 9. * Deus meus. ℣. Glória. * Deus.

FERIA QUINTA.

℣. Salvávit sibi déxtera ejus, allelúia. ℟. Et bráchium sanctum ejus, allelúia. *Psal.* 97. 1.

℟. Qui diléxit nos, & lavit nos à peccátis nostris in sánguine suo:* Ipsi glória, & impérium in sǽcula seculórum, allelúia. *Apoc.* 1. *v.* 5. 6. ℣. Pro eo quòd trádidit in mortem ánimam suam. *Isa.* 53. 12. * Ipsi glória.

℟. Notum sit ómnibus, quia quem Deus suscitávit à mórtuis: * Hic est lapis, qui reprobátus est à vobis ædificántibus, qui factus est in caput ánguli, allelúia. *Act.* 4. *v.* 10. 11. ℣. Lápidem, quem reprobavérunt ædificántes: hic factus est in caput ánguli. *Psal.* 117. ... * Hic est.

℟. Déxtera Dómini feci[t] virtútem: * Non móriar, sed vivam: & narrábo ópera Dómini, allelúia. *Psal.* 117. *v* 16. 17. ℣. Dignus est Agnus qui occísus est, accípere vir-tútem, & honórem, & glóri[am] *Apoc.* 5. 12. * Non mór[iar] ℣. Glória. * Non móriar.

FERIA SEXTA.

℣. Dómine, eduxísti ab [in]férno ánimam meam: allelú[ia] ℟. Salvásti me à descend[en]tibus in lacum, allelúia. *P[sal.]* 29. 4.

℟. Jesum à Názareth su[sci]távit Deus tértiâ die, * Co[ns]titútus est à Deo Judex viv[o]rum & mortuórum, alle[lúia,] allelúia. *Act.* 10. *v.* 38. 40. ℣. Antíquus diérum d[edit] ei potestátem, & hon[órem] *Daniel.* 7. 14. * Consti[tútus]

℟. Crédimus sciéntes, q[uo]niam qui suscitávit Jesu[m] * Nos cum Jesu suscit[ábit] allelúia, allelúia. 2. *Corint.* [4.] 13. 14. ℣. Vivificábit nos p[ost] duos dies; in die tértia [sus]citábit nos. *Osee.* 6. 3. * N[os] cum.

℟. Díligam te, Dómine, [for]titúdo mea:* Dóminus fir[ma]méntum meum & refúgi[um] meum, allelúia. *Psal.* 17. ℣. Christus nos redémit [de] maledícto, factus pro no[bis] maledíctum. *Galat.* 3. 1[3.]

* Dóminus. ℣. Glória, * Dóminus.

SABBATO.

*Fit Officium de B. Maria.*

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Repléti sumus mané misericórdiâ tuâ: allelúia. ℟. Et exultávimus & delectáti sumus, allelúia. *Ps.* 89. 14.

*Psalmi de Feria cum sola Antiphona sequente.*

*Ant.* 3. c. Hunc príncipem, & salvatórem Deus exaltávit déxterâ suâ ad dandam pœniténtiam, & remissiónem peccatórum, allelúia. *Act.* 5. 31.

*Capitulum. Coloss.* 3. 1.

Si consurrexístis cum Christo: quæ sursùm sunt quærite, ubi Christus est in déxtera Dei sedens: quæ sursùm sunt sápite, non quæ super terram.

*Hymnus.*

AURÓRA dùm lucem novam,
Novúmque solem núntiat,
Christus resúrgens spléndidos
Orbi triúmphos íntonat.

Stolis amíctus lácteo
Agni cruóre cándidis,
Culpísque liber vínculis
Dei novus grex júbilet.

Qui se sepúlchro súscitat,
Nos suscitábit mórtuos,
Non destruúntur fúnere,
Sed seminántur córpora.

Da, Christe, tecum nos mori,
Simúlque tecum súrgere,
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

Quem suscitátum crédimus,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

℣. Circundedísti me lætítiâ: allelúia. ℟. Ut cantet tibi glória mea, allelúia. *Psal.* 29. *v.* 12. 13.

*Ad* Benedíctus, *Dicuntur sequentes Antiphonæ, usque ad Dominicam ante Ascensionem.*

Feria II. *Ant.* 5. a. Crédimus secúndùm operatiónem potentíæ virtútis Dei, quam operátus est in Christo, suscitans illum à mórtuis, allelúia. *Eph.* 1. *v.* 19. 20.

Feria III. *Ant.* 4. e. Stipéndia peccáti, mors. Grátia autem Dei, vita ætérna, in Christo Jesu Dómino nostro, allelúia. *Rom.* 6. 23.

Feria IV. *Ant.* 1. D. Spe salvi facti sumus, adoptiónem filiórum Dei expectántes, redemptiónem córporis nostri, allelúia. *Rom.* 8. *v.* 24. 23.

Feria V. *Ant.* 4. d. Suscitávit Deus Jesum à mórtuis, ámpliùs jam non reversúrum in corruptiónem, allelúia. *Act.* 13. 34.

Feria VI. *Ant.* 6. f. Cùm mórtui eſſétis in delíctis, convivificávit cum Chriſto Deus, donans vobis ómnia delícta, allelúia. *Coloſſ.* 2. 13.

*Oratio Dominicæ præcedentis.*

*Toto tempore Paſchali, tàm in Laudibus quàm in Veſperis fit commemoratio de Cruce tantùm; niſi ſit Feſtum triplex.*

*Commemoratio de Cruce.*

*Antiphona.* Propóſito ſibi gáudio ſuſtínuit crucem, confuſióne contémptâ, atque in déxtera ſedis Dei ſedet, allelúia. *Hebr.* 12. 2.

℣. Dícite in Géntibus, allel.

℟. Quia Dóminus regnávit, allelúia. *Pſal.* 95. 10.

Orémus. *Oratio.*

Deus, qui pro nobis Fílium tuum crucis patíbulum ſubíre voluíſti, ut inimíci à nobis expélleres poteſtátem: concéde nobis fámulis tuis; ut reſurrectiónis grátiam conſequámur. Per eúmdem Dóminum noſtrum.

A D  P R I M A M.

*Hymnus.* Jam lucis orto ſídere, *p.* 15.

*Pſalmi de Dominica, omiſſo Symbolo.*

*Ant.* 2. d. Conreſuſcitávit nos Deus in Chriſto, ut oſténderet abundántes divítias grátiæ ſuæ in bonitáte ſuper nos, allelúia. *Eph.* 2. *v.* 6. 7.

*Capitulum.* 1. *Pet.* 1. 21.

Deus ſuſcitávit Chriſtum à mórtuis, & dédit ei glóriam, ut fides veſtra, & ſpes eſſet in Deo.

℟. *br.* Chriſte Fili Dei vivi, miſerére nobis, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Chriſte. ℣. Qui reſurrexíſti à mórtuis, * Allelúia, allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Chriſte.

℣. Exúrge, Dómine, ádjuva nos, allelúia: ℟. Et rédime nos propter nomen tuum, allelúia. *Matth.* 16. 16. *To*[illegible] 8. 10. *Joan.* 21. 14. *Pſa*[illegible] 43. 27.

*Preces, ut in Pſalterio.*

A D  T E R T I A M.

*Pſalmi de Dominica* [illegible]

*Ant.* 4. *irr.* a. Si commórtu[illegible] ſumus, & convivémus; ſi ſu[illegible] tinébimus, & conregná[illegible] mus, allelúia. 2. *Tim.* 2. 11. 12.

*Capitulum. Rom.* 10. 9.

Si confiteáris in ore t[illegible] Dóminum Jeſum, & in co[illegible] de tuo credíderis, quòd De[illegible] illum ſuſcitávit à mórtuis, ſalvus eris.

℟. *br.* Confitébor Dómin[illegible] nimis in ore meo: * Allelúia, allelúia. *Repet.* Confitébo[illegible] ℣. Et in médio multórum laudábo eum. * Allelúia ℣. Glória. *Repet.* Confitébor.

℣. Jucúndum ſit ei elóquium meum, allelúia. ℟. Ego

verò delectábor in Dómino, allelúia. *Ps.* 108. 30. & 103. 34.

AD SEXTAM.

*Psalmi de Dominica.*

*Antiph.* 8. c. Pro ómnibus mórtuus est Christus: ut, & qui vivunt, jam non sibi vivant, allelúia. 2. *Cor.* 5. 15.

*Capitulum.* *Rom.* 7. 4.

FRatres mei, & vos mortificáti estis legi per corpus Christi: ut sitis altérius, qui ex mórtuis resurréxit, ut fructificémus Deo.

℟. *br.* Reflóruit caro mea: * Allelúia, allelúia. *Repet.* Reflóruit. ℣. Et ex voluntáte mea confitébor ei. * Allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Reflóruit.

℣. Non móriar, sed vivam, allelúia. ℟. Et narrábo ópera Dómini, allelúia. *Psal.* 27. 7. & 117. 17.

AD NONAM.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 1. a. Primogénitus mortuórum diléxit nos, & lavit nos à peccátis nostris in sánguine suo, allelúia. *Apoc.* 1. 5.

*Capitulum.* 1. *Pet.* 3. 18.

CHristus semel pro peccátis nostris mórtuus est. justus pro injústis, ut nos offérret Deo, mortificátus quidem carne, vivificátus autem spíritu.

℟. *br.* Vivit Dóminus, & benedíctus Deus meus, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Vivit. ℣. Et exaltétur Deus salútis meæ. * Allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Vivit.

℣. Vivet ánima mea, allelúia. ℟. Et laudábit te, allelúia. *Psal.* 17. 47 & 118. 175.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Feria cum sola Antiphona sequente.*

*Ant.* 3. A. Si complantáti facti sumus similitúdini mortis Christi, simul & resurrectiónis érimus, allelúia. *Rom.* 6. 5.

*Capitulum.* *Rom.* 6. 6.

VEtus homo noster simul crucifíxus est, ut destruátur corpus peccáti & ultrà non serviámus peccáto.

*Hymnus.*

NUnc novis Christus celebrétur hymnis,
Victor insígnes ágitat triúmphos,
Qui suo letum, dominúmque leti
Fúnere vincit.

VINCIT obstántem lápidem sepúlchri:
Vincit armátas vígilum cohórtes;
Vincla perrúmpit, quibus obligátus
I'ngemit Orbis.

QUEM timor clausum látebris coércet,

Se gregi præbet fácilem vidéri:
Et sui certum dat adhuc amóris
Vúlnera pignus.
Ergo jam nunquam moritúre vivis,
Christe, quos fuso rédimis cruóre,
Fac in ætérnum tua vita nobis
Vívere præstet.
Summa laus Patri, Genitóque summa,
Morte qui victâ sibi dat renásci,
Quem Patri consors Amor & perénnis
Glória jungit. Amen.

℣. Redémit nos Deus ab inimícis nostris, allelúia. ℟. Quóniam in ætérnum misericórdia ejus, allelúia. *Psal.* 135. 24.

*Ad* Magníficat, *Dicuntur sequentes Antiphonæ usque ad Dominicam ante Ascensionem.*

Feria II. *Ant.* 1. F. Existimáte vos mórtuos esse peccáto; vivéntes autem Deo in Christo, allelúia. *Rom.* 6. 11.

Feria III. *Ant.* 6. f. Lex spíritus vitæ in Christo Jesu liberávit me à lege peccáti & mortis, allelúia. *Rom.* 8. 2.

Feria IV. *Ant.* 8. g. Sumus fílii Dei; si autem fílii, & herédes, coherédes autem Christi, si tamen compátimur, ut & conglorificémur, allelúia. *Rom.* 8. *v.* 16. 17.

Feria V. *Ant.* 5. f. Regenerávit nos Deus in spem vivam, per resurrectiónem Jesu Christi ex mórtuis, allelúia. 1. *Pet.* 1. 3.

*Oratio Domin. præcedentis.*

*Deinde commem. de Cruce.*

*Antiph.* Ipse est pax nostra per Crucem interfíciens inimicítias in semetípso, allelúia. *Eph.* 2. *v.* 14. 16.

℣. Apud Dóminum misericórdia, allelúia. ℟. Et copiósa apud eum redémptio, allelúia. *Psal.* 129. 7.

*Oratio, ut suprà ad Laudes.*

## Ad Completorium.

*Psalmi de Feria.*

*Cum Ant.* 7. C. Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia.

*Capitulum.* 1. *Cor.* 15. 20.

Christus resurréxit à mórtuis primítiæ dormiéntium; quóniam quidem per hóminem mors, & per hóminem resurréctio mortuórum: & sicut in Adam omnes moriúntur, ita in Christo omnes vivificabúntur.

*Hymnus.*

Jesu redémptor séculi,
Verbum Patris altíssimi,
Lux lucis invisíbilis,
Custos tuórum pérvigil:
Tu fabricátor ómnium
Discrétor atque témporum,

Fessa labóre córpora
Noctis quiéte récrea.
Te deprecámur súpplices,
Ut nos ab hoste líberes:
Ne váleat sedúcere
Tuo redémptos sánguine.
Ut dùm gravi in córpore
Brevi manémus témpore,
Sic caro nostra dórmiat,
Ut mens in Christo vígilet.
Da, Christe, tecum nos mori,
Simúlque tecum súrgere,
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.
Quem suscitátum crédimus,
Jesu, tibi sit glória.
Cum Patre cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

℣. In die mandávit Dóminus misericórdiam suam, allelúia. ℟. Et nocte cánticum ejus, allelúia. *Psal.* 41. 9.

*Ad* Nunc dimíttis.

*Ant.* 5. a. Allelúia, peccátis mórtui, allelúia, justítiæ vivámus, allelúia, allelúia. 1. *Pet.* 2. 24.

*Deinde dicuntur Preces, ut in Psalterio, nisi sit Dominica, Festum semiduplex, aut suprà.*

Dóminus vobíscum, *&c.*
Orémus. *Oratio*

Deus qui ómnia vitæ nostræ témpora moderáris & sanctíficas, fac ut per hanc noctem mórtui peccátis, vivámus Deo in Christo Jesu Dómino nostro; Qui tecum vivit & regnat in unitáte.

---

## FERIA SECUNDA.

### Ad Officium Nocturnum.

*Psal.* Dómine, in virtúte.....
Dóminus illuminátio......
Exáudi, Dómine.... *p.* 57. *& seqq.*

Incipit liber Jósue.

### Lectio I. *Cap.* 1. 1.

*Deus hortatur Josue.*

Factum est post mortem Móysi servi Dómini, ut loquerétur Dóminus ad Jósue fílium Nun minístrum Móysi, & díceret ei: Móyses servus meus mórtuus est: Surge, & transi Jordánem istum tu, & omnis pópulus tecum, in Terram, quam ego dabo fíliis I'sraël. Omnem locum quem calcáverit vestígium pedis vestri, vobis tradam, sicut locútus sum Móysi. A' desérto & Líbano usque ad flúvium magnum Euphráten, omnis terra Hebræórum usque ad mare magnum contra solis occásum erit términus vester. Nullus póterit vobis resístere cunctis diébus vitæ tuæ: sicut fui cum Móyse, ita ero tecum: non dimíttam nec derelínquam te. Confortáre & esto robústus: tu enim sorte dívides pópulo huic terram, pro qua jurávi pátribus suis, ut tráderem eam

illis. Confortáre igitur, & esto robústus valdè; ut custódias, & fácias omnem legem, quam præcépit tibi Móyses servus meus: ne declínes ab ea ad déxteram vel ad sinístram, ut intélligas cuncta quæ agis. Non recédat volúmen legis hujus ab ore tuo: sed meditáberis in eo diébus ac nóctibus, ut custódias & fácias ómnia quæ scripta sunt in eo: tunc díriges viam tuam, & intélliges eam. Ecce præcípio tibi: Confortáre, & esto robústus. Noli metúere, & noli timére: quóniam tecum est Dóminus Deus tuus in ómnibus ad quæcúnque perréxeris.

℟. Si mórtui, *p.* 401.

LECTIO II. *v.* 10.

*Josue parat omnia ad Jordanem transeundum.*

PRæcepítque Jósue princípibus pópuli, dicens: Transíte per médium castrórum, & imperáte pópulo, ac dícite: Præparáte vobis cibária: quóniam post diem tértium transíbitis Jordánem, & intrábitis ad possidéndam Terram, quam Dóminus Deus vester datúrus est vobis. Rubenítis quoque & Gadítis, & dimídiæ tríbui Manásse ait: Mementóte sermónis, quem præcépit vobis Móyses fámulus Dómini, dicens: Dóminus Deus vester dedit vobis réquiem, & omnem terram. Uxóres vestræ, & fílii, ac juménta manébunt in terra, quam trádidit vobis Móyses trans Jordánem: vos autem transíte armáti ante fratres vestros, omnes forti manu, & pugnáte pro eis, donec det Dóminus réquiem frátribus vestris, sicut & vobis dedit, & possídeant ipsi quoque Terram, quam Dóminus Deus vester datúrus est eis: & sic revertémini in Terram possessiónis vestræ & habitábitis in ea, quam vobis dedit Móyses fámulus Dómini trans Jordánem contra solis ortum. Respondertúntque ad Jósue atque dixérunt: Omnia quæ præcepísti nobis, faciémus: & quocúnque míseris, íbimus. Sicut obedívimus in cunctis Móysi, ita obediémus & tibi: tantùm sit Dóminus Deus tuus tecum, sicut fuit cum Móyse. Qui contradíxerit ori tuo, & non obedíerit cunctis sermónibus quos præcéperis ei, moriátur: tu tantùm confortáre, & viríliter age.

℟. Grátias Deo, *pag.* 401.

Incipit Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Philémonem.

LECTIO III. *v.* 1.

*Charitas autoritate fortior.*

PAulus vinctus Christi Jesu, Timótheus frater: Phi-

[Phil]émoni diléĉto, & adjutóri nostro, & A'ppiæ sorori charissimæ, & Archíppo commilitóni nostro, & Ecclésiæ, quæ in domo tua est. Grátia vobis, & pax à Deo Patre nostro, & Dómino Jesu Christo. Grátias ago Deo meo, semper memóriam tui fáciens in oratiónibus meis, áudiens charitátem tuam, & fidem, quam habes in Dómino Jesu, & in omnes sanĉtos: ut communicátio fidei tuæ évidens fiat in agnitióne omnis óperis boni, quod est in vobis in Christo Jesu. Gáudium enim magnum hábui, & consolatiónem in charitáte tua: quia víscera sanĉtórum requievérunt per te, frater. Propter quod multam fidúciam habens in Christo Jesu imperándi tibi quod ad rem pértinet: propter charitátem magis óbsecro, cùm sis talis, ut Paulus senex, nunc autem & vinĉtus Jesu Christi.

℟. Benedíĉtus Deus, *p.* 401.

*CANON.*

Ex Concílio Rotomagénsi. *Anno* 1581. *Tit. de Sacramentis. can.* 5.

Nómina paréntum atque baptizáti, necnon suscipiéntium, cum die & anno, Parœcus descríbat, ac dóceat eos quam cognatiónem contraxérint, ne ignorántiâ ullâ excusári váleant.

FERIA TERTIA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Dixit insípiens .... Quàm bonus I'sraël.... Tenuísti manum, *p.* 59. *& seqq.*

... De libro Jósue.

LECTIO I. *Cap.* 2. 1.

*Exploratores apud Rahab.*

Misit ígitur Jósue fílius Nun de Setim duos viros exploratóres in abscóndito: & dixit eis: Ite, & consideráte Terram, urbémque Jéricho. Qui pergéntes ingréssi sunt domum mulíeris meretrícis, nómine Rahab, & quievérunt apud eam. Nuntiatúmque est regi Jéricho, & diĉtum: Ecce viri ingréssi sunt huc per noctem de fíliis I'sraël, ut explorárent Terram. Misítque rex Jéricho ad Rahab, dicens: Educ viros, qui venérunt ad te, & ingréssi sunt domum tuam: exploratóres quippe sunt, & omnem Terram consideráre venérunt. Tollénsque múlier viros abscóndit, & ait: Fáteor; venérunt ad me, sed nesciébam unde essent: cúmque porta clauderétur in ténebris, & illi páriter exiérunt; néscio quò abiérunt: persequímini citò, & comprehendétis eos. Ipsa autem fecit ascéndere viros in solárium domûs suæ, operuítque eos stípulâ lini, quæ ibi erat. Hi autem qui missi fúerant,

secúti sunt eos per viam, quæ ducit ad vadum Jordánis: illísque egréssis, statim porta clausa est. Necdum obdormíerant qui latébant, & ecce múlier ascéndit ad eos, & ait: Novi quòd Dóminus tradíderit vobis Terram: étenim írruit in nos terror vester, & elanguérunt omnes habitatóres Terræ. Audívimus quòd siccáverit Dóminus aquas maris Rubri ad vestrum intróitum, quandò egréssi estis ex Ægýpto: & quæ fecéritis duóbus Amorrhæórum régibus, qui erant trans Jordánem, Sehon & Og, quos interfecístis. Et hæc audiéntes pertimúimus, & elánguit cor nostrum, nec remánsit in nobis spíritus ad intróitum vestrum: Dóminus enim Deus vester, ipse est Deus in cœlo sursùm, & in terra deórsùm. Nunc ergo juráte mihi per Dóminum, ut quómodò ego misericórdiam feci vobíscum, ita & vos faciátis cum domo patris mei: detísque mihi verum signum, ut salvétis patrem meum & matrem, fratres ac soróres meas, & ómnia quæ illórum sunt, & eruátis ánimas nostras à morte.

℟. Deus, qui dives, *p.* 401.

LECTIO II. *v.* 14.

*Juramentum exploratorum.*

Qui respondérunt ei: Anima nostra sit pro vobis in mortem, si tamen non prodíderis nos: cûmque tradíderit nobis Dóminus Terram, faciémus in te misericórdiam & veritátem. Demísit ergo eos per funem de fenéstra: domus enim ejus hærébat muro. Dixítque ad eos: Ad montána conscéndite, ne fortè occúrrant vobis reverténtes: ibíque latitáte tribus diébus, donec rédeant, & sic ibitis per viam vestram. Qui dixérunt ad eam: Innóxii érimus à juraménto hoc, quo adjurásti nos: si ingrediéntibus nobis Terram, signum fúerit funículus iste coccíneus, & ligáveris eum in fenéstra, per quam demisísti nos: & patrem tuum ac matrem, fratrésque & omnem cognatiónem tuam congregáveris in domum tuam. Qui óstium domûs tuæ egréssus fúerit, sanguis ipsíus erit in caput ejus, & nos érimus alieni. Cunctórum autem sanguis, qui tecum in domo fúerint, redundábit in caput nostrum, si eos áliquis tetígerit. Quod si nos pródere volúeris, & sermónem istum proférre in médium, érimus mundi ab hoc juraménto, quo adjurásti nos. Et illa respóndit: Sicut locúti estis, ita fiat. Dimitténsque eos ut pérgerent, appéndit funículum coccíneum in fenéstra. Illi verò

ambulántes pervenérunt ad montána, & mansérunt ibi tres dies, donec reverteréntur qui fúerant persecúti: quæréntes enim per omnem viam, non reperérunt eos. Quibus urbem ingréssis, revérsi sunt, & descendérunt exploratóres de monte: & transmísso Jordáne, venérunt ad Jósue filium Nun, narraverúntque ei ómnia quæ accíderant sibi, atque dixérunt: Trádidit Dóminus omnem terram hanc in manus nostras, & timóre prostráti sunt cuncti habitatóres ejus.

℞. Dóminus regnávit, *p.* 401.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Philémonem.

LECTIO III. *v.* 10.

*Quò quis Deo fidelior, eò servis ejus est utilior.*

OBsecro te pro meo fílio, quem génui in vínculis, Onésimo, qui tibi aliquándò inútilis fuit, nunc autem & mihi & tibi útilis. Quem remísi tibi. Tu autem illum, ut mea víscera, súscipe: quem ego volúeram mecum detinére, ut pro te mihi ministráret in vínculis Evangélii. Sine consílio autem tuo nihil vólui fácere, uti ne velut ex necessitáte bonum tuum esset, sed voluntárium: fórsitan enim ídeò discéssit ad horam à te, ut ætérnum illum recíperes: jam non ut servum, sed pro servo charíssimum fratrem, máximè mihi: quantò autem magis tibi, & in carne, & in Dómino? Si ergo habes me sócium, súscipe illum sicut me: si autem áliquid nócuit tibi, aut debet; hoc mihi ímputa.

℞. Christus mórtuus, *p.* 401.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *Tit. de Bapt. c.* 4.

BAptísmus cum honóre, & reveréntia celebrétur, & cum magna cautéla, máximè in distinctióne verbórum, & prolatióne, in quibus tota virtus Sacraménti consístit. Forma autem verbórum ab eo qui baptízat íntegrè, ordinátè, continuè, sine interpositióne áliqua proferátur.

FERIA QUARTA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Dómine, Dóminus noster.... Cœli enárrant.... Lex Dómini, *p.* 68. *& seqq.*

De libro Jósue.

LECTIO I. *Cap.* 3. 1.

*Arca Dei præcedit populum in Jordanem.*

IGitur Jósue de nocte consúrgens movit castra: egredientésque de Setim, venérunt ad Jordánem ipse & omnes fílii Israël, & moráti sunt

ibi tres dies. Quibus evolútis, transiérunt præcónes per castrórum médium, & clamáre cœpérunt: Quandò vidéritis Arcam fœderis Dómini Dei vestri, & Sacerdótes stirpis Levíticæ portántes eam, vos quoque consúrgite, & sequímini præcedéntes: sitque inter vos & Arcam spátium cubitórum duûm míllium: ut procul vidére possítis, & nosse per quam viam ingrediámini: quia priùs non ambulástis per eam: & cavéte ne appropinquétis ad Arcam. Dixítque Jósue ad pópulum: Sanctificámini: cras enim fáciet Dóminus inter vos mirabília. Et ait ad Sacerdótes: Tóllite Arcam fœderis & præcédite pópulum. Qui jussa compléntes, tulérunt, & ambulavérunt ante eos. Dixítque Dóminus ad Jósue: Hódiè incípiant exaltáre te coram omni Ísraël: ut sciant quòd sicut cum Móyse fui, ita & tecum sim. Tu autem præcipe Sacerdótibus qui portant Arcam fœderis, & dic eis: Cùm ingréssi fuéritis partem aquæ Jordánis, state in ea. Dixítque Jósue ad fílios Ísraël: Accédite huc, & audíte verbum Dómini Dei vestri. Et rursum: In hoc, inquit, sciétis quòd Dóminus Deus vivens in médio vestri est, & dispérdet in conspéctu vestro Chananæum & Hethæum, Hevæum & Pherezæum, Gergesæum quoque & Jebusæum & Amorrhæum. Ecce, Arca fœderis Dómini omnis terræ antecédet vos per Jordánem.

℟. Sive vívimus, p. 401.

LECTIO II. v. 12.

*Miraculum in transitu Jordanis.*

PArate duódecim viros de tríbubus Ísraël síngulos per síngulas tribus. Et cùm posúerint vestígia pedum suórum, Sacerdótes qui portant Arcam Dómini Dei universæ terræ, in aquis Jordánis, aquæ quæ inferióres sunt, decúrrent atque defícient: quæ autem désuper véniunt, in una mole consístent. Ígitur egréssus est pópulus de tabernáculis suis ut transíret Jordánem: & Sacerdótes, qui portábant Arcam fœderis, pergébant ante eum. Ingressísque eis Jordánem, & pédibus eórum in parte aquæ tinctis (Jordánis autem ripas álvei sui témpore messis impléverat) stetérunt aquæ descendéntes in loco uno, & adinstar montis intumescéntes apparébant procul ab urbe, quæ vocátur Adom usque ad locum Sarthan: quæ autem inferióres erant, in mare solitúdinis (quod nunc

vocátur mórtuum ) descendérunt, úsquequò omnínò deficerent. Pópulus autem incedébat contra Jéricho: & Sacerdótes, qui portábant Arcam fœderis Dómini, stabant super siccam humum in médio Jordánis accíncti, omnísque pópulus per arénem álveum transíbat.

℟. Quæ ad Patres, *p.* 402.

Incipit Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Romános.

LECTIO III. *Cap.* 1. 1.

*Consolatio in fratribus per eamdem fidem.*

PAulus, servus Jesu Christi, vocátus Apóstolus, segregátus in Evangélium Dei, ómnibus qui sunt Romæ, diléctis Dei, vocátis sanctis. Grátia vobis, & pax à Deo Patre nostro, & Dómino Jesu Christo. Primùm quidem grátias ago Deo meo per Jesum Christum pro ómnibus vobis: quia fides vestra annuntiátur in univérso mundo. Testis enim est mihi Deus, cui sérvio in spíritu meo in Evangélio Filii ejus, quòd sine intermissióne memóriam vestri fácio, semper in orationibus meis óbsecrans, si quómodò tandem aliquándò prósperum iter hábeam in voluntáte Dei veniéndi ad vos. Desídero enim vidére vos: ut áliquid impértiar vobis grátiæ spirituális ad confirmándos vos: id est, simul consolári in vobis per eam, quæ ínvicem est, fidem vestram, atque meam.

℟. Deus meus es tu, *p.* 402.

*C A N O N.*

Ex statútis Synodálibus Ecclésiæ Rotomagénsis.

*Anno* 1506. *Tit. de Sacram. Baptismi.*

HA'beant Curáti semper aquam in Fóntibus, & unctiónes necessárias mundè custodítas, & manuále. Et cáveant quòd non fiant risus neque clamóres quandò datur Baptísmi sacraméntum.

FERIA QUINTA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Notus in Judæa.... Voce meâ.... Deus in sancto, *p.* 70. *& seqq.*

De libro Jósue.

LECTIO I. *Cap.* 5. 1.

*Circuncisio generalis.*

POstquàm ergo audiérunt omnes reges Amorrhæórum, qui habitábant trans Jordánem ad Occidentálem plagam, & cuncti reges Chánaan, qui propínqua possidébant magni maris loca, quòd siccásset Dóminus fluénta Jordánis coram filiis I'sraël donec transírent, dissolútum est cor eórum, & non remánsit in eis spíritus, timéntium intróitum filiórum I'sraël.

Eo témpore ait Dóminus ad Jósue: Fac tibi cultros lapídeos, & circuncíde secúndò filios I'sraël. Fecit quod jússerat Dóminus, & circuncídit filios I'sraël in colle præputiórum. Postquàm autem circuncísi sunt, mansérunt in eódem castrórum loco, donec sanaréntur. Dixítque Dóminus ad Jósue: Hódiè ábstuli oppróbrium Ægypti à vobis. Vocatúmque est nomen loci illíus Gálgala, usque in præséntem diem. Mansérúntque filii I'sraël in Gálgalis, & fecérunt Phase, quartadécimâ die mensis ad vésperum in campéstribus Jéricho: & comedérunt de frúgibus Terræ die áltero, ázymos panes, & poléntam ejúsdem anni. Defecítque manna postquàm comedérunt de frúgibus Terræ, nec usi sunt ultrà cibo illo filii I'sraël, sed comedérunt de frúgibus præséntis anni Terræ Chánaan. Cùm autem esset Jósue in agro urbis Jéricho, levávit óculos & vidit virum stantem contra se, evaginátum tenéntem gládium, perrexítque ad eum, & ait: Noster es, an adversariórum? Qui respóndit: Nequáquàm, sed sum princeps exércitûs Dómini, & nunc vénio. Cécidit Jósue pronus in terram. Et adórans ait: Quid Dóminus meus lóquitur ad servum suum? Solve, inquit, calceaméntum tuum de pédibus tuis: locus enim, in quo stas, sanctus est. Fecítque Jósue ut sibi fúerat imperátum.

℟. Qui diléxit, *p.* 402.

LECTIO II. *Cap.* 6. 12.

*Obsessa Jericho & capta.*

IGitur Jósue de nocte consurgénte, tulérunt Sacerdótes Arcam Dómini, & septem ex eis septem búccinas, quarum in jubilæo usus est, præcedebántque Arcam Dómini ambulántes atque clangéntes: & armátus pópulus ibat ante eos: vulgus autem réliquum sequebátur Arcam, & búccinis personábat. Circuieruntque civitátem secundo die semel, & revérsi sunt in castra. Sic fecérunt sex diébus. Die autem séptimo dilúculò consurgéntes circuiérunt urbem, sicut dispositum erat, sépties. Cúmque séptimo circúitu clángerent búccinis Sacerdótes, dixit Jósue ad omnem I'sraël: Vociferámini: trádidit enim vobis Dóminus civitátem: sitque cívitas hæc anáthema: & ómnia quæ in ea sunt, Dómino: sola Rahab méretrix vivat cum univérsis qui cum ea in domo sunt: abscóndit enim núntios quos diréximus. Vos autem cavéte, ne de his, quæ præcépta sunt, quíppiam contingátis, & sitis prævari-

...tiónis rei, & ómnia castra I'sraël sub peccáto sint atque turbéntur. Quidquid autem auri & argénti fúerit, & vasórum æneórum ac ferri, Dómino consecrétur, repósitum in thesáuris ejus. I'gitur omni pópulo vociferánte, & clangéntibus tubis, postquàm in aures multitúdinis vox sonitúsque increpuit, muri illicò corruérunt: & ascéndit unusquísque per locum, qui contra se erat: ceperúntque civitátem, & interfecérunt ómnia quæ erant in ea, à viro usque ad mulíerem, ab infante usque ad senem. Boves quoque & oves & ásinos in ore gládii percussérunt. Duóbus autem viris, qui exploratóres missi fúerant, dixit Jósue: Ingredímini domum mulíeris meretrícis, & prodúcite eam, & ómnia quæ illíus sunt, sicut illi juraménto firmástis. Ingressíque júvenes, eduxérunt Rahab, & paréntes ejus, fratres quoque, & cunctam supellécτilem ac cognatiónem illíus, & extra castra I'sraël manére fecérunt. Urbem autem, & ómnia quæ erant in ea, succendérunt; absque auro & argénto, & vasis æneis, ac ferro quæ in ærárium Dómini consecrárunt. Rahab verò meretrícem, & domum patris ejus, & ómnia quæ habébat, fecit Jósue vivere, & habitavérunt in médio I'sraël usque in præséntem diem, eò quòd abscónderit núntios, quos míserat ut explorárent Jéricho.

℞. Notum sit, *p.* 402.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Romános.

LECTIO III. *Cap.* 12. 3.

*Fideles unius corporis membra.*

DIco per grátiam quæ data est mihi, ómnibus qui sunt inter vos: Non plus sápere quàm opórtet sápere, sed sápere ad sobrietátem: & unicuíque sicut divísit Deus mensúram fídei. Sicut enim in uno córpore multa membra habémus, ómnia autem membra non eúmdem actum habent: ita multi unum corpus sumus in Christo, sínguli autem alter altérius membra. Charitáte fraternitátis ínvicem diligéntes: Honóre ínvicem præveniéntes: Solicitúdine non pigri: Spíritu fervéntes: Dómino serviéntes: Spe gaudéntes: In tribulatióne patiéntes: Oratióni instántes: Necessitátibus Sanctórum communicántes: Hospitalitátem sectántes: Benedícite persequéntibus vos: benedícite, & nolíte maledícere. Gaudére cum gaudéntibus, flere cum fléntibus: Idípsum ínvicem sentiéntes: si fieri potest, quod ex vobis est, cum ómnibus

homínibus pacem habéntes.

℞. Déxtera Dómini, *p.* 402.

*CANON.*

Ex statútis Synodálibus Ecclésiæ Rotomagénsis.

*Anno* 1506. *Tit. de Sacram. Baptismi.*

EVitent Sacerdótes convívia puerperárum, quantùm póterunt; quóniam in illis multa fiunt & dicúntur státui Ecclesiástico diffórmia.

FERIA SEXTA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Confitémini Dómino... Confiteántur Dómino..... Confiteántur Dómino, *p.* 71. *& seqq.*

De libro Jósue.

LECTIO I. *Cap.* 7. 4.

*Achan furatus de anathemate.*

ASCendérunt tria míllia pugnatórum; qui statim terga verténtes, percússi sunt à viris urbis Haï. Jósue verò scidit vestiménta sua & pronus cécidit in terram coram Arca Dómini usque ad vésperam, tam ipse quàm omnes senes Israël: miserúntque púlverem super cápita sua. Dixítque Dóminus ad Jósue: Surge, cur jaces pronus in terra? Peccávit Israël nec póterit stare ante hostes suos, eósque fúgiet: quia pollútus est anathémate. Surgens ítaque Jósue manè, applícuit Israël per tribus suas, & invénta est tribus Juda. Quæ cùm juxta famílias suas esset oblata, invénta est família Zare. Illam quoque per domos ófferens, réperit Zabdi: cujus domum in singulos divid[ens] viros, invénit Achan fíliu[m] Charmi, fílii Zabdi, fílii Za[re] de tribu Juda. Et ait Jósu[e] ad Achan: Fili mi, da gló[r]iam Dómino Deo Israël, & confitére, atque índica mi[hi] quid féceris, ne abscónd[as]. Respondítque Achan Jósu[e] & dixit ei: Verè ego pecc[ávi] Dómino Deo Israël, & sic [&] sic feci: vidi enim inter spó[lia] pállium coccíneum valdè bo[num], & ducéntos siclos ar[gén]ti, regulámque áuream quinquagínta siclórum: & concupíscens ábstuli, & ab[scóndi] in terra contra médiu[m] tabernáculi mei, argentúm[que] fossâ humo opérui. Tol[lens] ítaque Jósue Achan fílium Zare, argentúmque & pállium, & áuream régulam, fílios quoque & fílias ejus, boves & ásinos, & oves, ipsúmque tabernáculum, & cunctam supelléctilem: (& omnis Israël cum eo) duxérunt eos ad vallem Achor: ubi dixit Jósue: Quia turbásti nos, extúrbet te Dóminus in die hac. Lapidavítque eum omnis Israël: & cuncta

quæ

quæ illius erant, igne consumpta sunt.

℟. Jesum à Nazareth, *pag.* 402.

LECTIO II. *Cap.* 8. 1.
*Urbs Haï capta & incensa.*

DIxit autem Dóminus ad Jósue: Ne tímeas, neque formídes: tolle tecum omnem multitúdinem pugnatórum, & consúrgens ascénde in óppidum Haï: ecce trádidi in manu tua regem ejus, & pópulum, urbémque & terram. Quinque autem míllia viros elégerat (Jósue) & posúerat in insídiis inter Bethel & Haï, ex Occidentáli parte ejúsdem civitátis: omnis verò réliquus exércitus ad Aquilónem áciem dirigébat, ita ut novíssimi illíus multitúdinis, Occidentálem plagam urbis attíngerent. Abiit ergo Jósue nocte illâ, & stetit in vallis médio. Quod cùm vidísset rex Haï, festinávit manè, & egréssus est cum omni exércitu civitátis, direxítque áciem contra desértum, ignórans quòd post tergum laterent insídiæ. Jósue verò & omnis Israël cessérunt loco, simulántes metum, & fugiéntes per solitúdinis viam. At illi vociferántes páriter, & se mútuò cohortántes, persecúti sunt eos. Cúmque recessíssent à civitáte, & ne unus quidem in urbe Haï & Bethel remansísset qui non persequerétur Israël (sicut erúperant apérta óppida relinquéntes,) dixit Dóminus ad Jósue: Leva clypeum, qui in manu tua est, contra urbem Haï, quóniam tibi tradam eam. Cúmque elevásset clypeum ex advérso civitátis, insídiæ, quæ latébant, surrexérunt conféstim; & pergéntes ad civitátem, cepérunt, & succendérunt eam.

℟. Crédimus sciéntes, *p.* 402.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Romános.

LECTIO III. *Cap.* 15. 5.
*Unanimitas commendatur.*

DEus patiéntiæ, & solátii det vobis idípsum sápere in altérutrum secúndum Jesum Christum: Ut unánimes, uno ore honorificétis Deum, & Patrem Dómini nostri Jesu Christi. Propter quod suscípite ínvicem, sicut & Christus suscépit vos in honórem Dei. Dico enim Christum Jesum minístrum fuísse circumcisiónis propter veritátem Dei, ad confirmándas promissiónes patrum. Gentes autem super misericórdia honoráre Deum, sicut scriptum est: Proptéreà confitébor tibi in Géntibus, Dómine, & nómini tuo cantábo.

℟. Díligam te, *p.* 402.

## *CANON.*

### Ex Sýnodo Lexoviénsi

*Sub Joanne le Veneur, circa annum* 1520.

INstruant Curáti parochiános suos ut quamprímùm fieri potest, párvulos baptizándos ad Ecclésiam déferant; nec propter patrínos congregándos aut álios expectándos, vel áliis de causis differátur baptísmus.

*Feria sexta ad Vesperas & Sabbato ad Officium nocturnum, & alias Horas, fit Officium de Beata, nisi sit Festum semiduplex, Duplex, aut suprà.*

## SABBATO.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Confitébor tibi, Dómine ... Miserére mei ... Ut quid, Dómine, *pag.* 77. *& seqq.*

De libro Jósue.

### LECTIO I. *Cap.* 9. 3.

*Gabaonitarum astutia.*

AT hi qui habitábant in Gábaon, audiéntes cuncta quæ fécerat Jósue Jéricho & Haï: & cállidè cogitántes, tulérunt sibi cibária, saccos véteres ásinis imponéntes, & utres vinários scissos atque consútos, calceamentáque perantíqua quæ ad indícium vetustátis pittaci[...] consúta erant, indúti vete[...]bus vestiméntis: panes quo[...]que, quos portábant ob vi[...]ticum, duri erant, & in fru[...] comminúti: perrexerúntq[...] ad Jósue, & dixérunt e[...] Servi tui sumus. De te[...] longínqua valdè venéru[...] servi tui in nómine Dómi[...] Dei tui. Audívimus enim [...]mam poténtiæ ejus, cun[...] quæ fecit in Ægypto. Susc[...]pérunt ígitur de cibáriis e[...]rum, & os Dómini non inte[...]rogavérunt. Fecítque Jós[...] cum eis pacem, & ínito f[...]dere pollícitus est quòd n[...] occideréntur: príncipes qu[...]que multitúdinis juravéru[...] eis.

### LECTIO II. *v.* 16.

*Cum Gabaonitis quom[...] actum fuerit.*

POst dies autem tres [...] fœderis, audiérunt q[...] in vicíno habitárent, & [...] eos futúri essent. Vocávit [...]baonítas Jósue, & dixit [...] Cur nos decípere fraude [...]luistis, ut dicerétis: Pro[...] valdè habitámus à vob[...] cùm in médio nostri sitis? I[...]que sub maledictióne érit[...] & non defíciet de stirpe ve[...]tra ligna cædens, aquásq[...] compórtans in domum D[...] mei. Qui respondérunt: Nu[...]tiátum est nobis servis tuis,

quod promisisset Dóminus Deus tuus Móysi servo suo, ut tráderet vobis omnem terram, & dispérderet cunctos habitatóres ejus. Timúimus igitur valdè, & provídimus animábus nostris, vestro terróre compúlsi, & hoc consílium inívimus. Nunc autem in manu tua sumus: quod tibi bonum & rectum vidétur, fac nobis. Fecit ergo Jósue ut díxerat: & liberávit eos de manu filiórum Israël, ut non occideréntur. Decrevítque in illo die eos esse in ministério cuncti pópuli, & altáris Dómini, cædéntes ligna & aquas comportántes, usque in præsens tempus, in loco, quem Dóminus elegísset.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Romános.

LECTIO III. *Cap.* 16. 17.

*A susurronibus declinandum.*

ROgo vos fratres, ut observétis eos, qui dissensiónes & offendícula præter doctrínam quam vos didicístis, fáciunt, & declináte ab illis. Hujuscémodi enim Christo Dómino nostro non sérviunt, sed suo ventri: & per dulces sermónes, & benedictiónes, sedúcunt corda innocéntium. Vestra enim obediéntia in omnem locum divulgáta est. Gáudeo ígitur in vobis. Sed volo vos sapiéntes esse in bono, & símplices in malo. Deus autem pacis cónterat sátanam sub pédibus vestris velóciter. Grátia Dómini nostri Jesu Christi vobíscum.

*CANON.*

Ex statutis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *De Extrema-unctione. Can.* 74.

AD Sacraméntum Extremæ-unctiónis móneant sæpe Sacerdótes pópulum, non tantùm dívites, sed étiam páuperes; & omnes máximè à quatuórdecim annis & suprà, ut ad id commúniter, cùm fúerit necésse exhíbeant se parátos; sanctum óleum ad eos cum omni reveréntia deferéntes & honóre.

## AD VESPERAS.

*Omnia ut in Sabbato ante Dominicam in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum. Jer.* 31. *v.* 10. 11.

QUi dispérsit Israël, congregábit eum, & custódiet eum sicut pastor gregem suum. Redémit enim Dóminus Jacob, & liberávit eum de manu potentióris.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. c. Ego veni ut oves vitam hábeant, & abundántiùs hábeant, allelúia. *Joan.* 10. 10.

*Oratio, ut infra ad Laudes.*

# DOMINICA SECUNDA POST PASCHA.

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Omnia, ut in Dom. in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Psal.* Afférte Dómino.... Benedixísti, Dómine... Cantáte Dómino, *p. 79. & seqq.*

De libro Jósue.

LECTIO I. *Cap. 10. 5.*

*Josue imperat Soli.*

Congregáti ascendérunt quinque reges Amorrhæórum, rex Jerúsalem, rex Hebron, rex Jérimoth, rex Lachis, rex Eglon simul cum exercítibus suis, & castrametáti sunt circa Gábaon, oppugnántes eam. Habitatóres autem Gábaon urbis obséssæ misérunt ad Jósue, qui tunc morabátur in castris apud Gálgalam, & dixérunt ei: Ne rétrahas manus tuas ab auxílio servórum tuórum: ascénde citò, & líbera nos, ferque præsídium: convenérunt enim advérsùm nos omnes reges Amorrhæórum qui hábitant in montánis. Ascendítque Jósue de Gálgalis, & omnis exércitus bellatórum cum eo, viri fortíssimi. Dixítque Dóminus ad Jósue: Ne tímeas eos: in manus enim tuas trádidi illos: nullus ex eis tibi resístere póterit. Irruit ítaque Jósue super eos repentè, totâ nocte ascéndens de Gálgalis: & conturbávit eos Dóminus à fácie Isráël: contrivítque plagâ magnâ in Gábaon, ac persecútus est eos per viam ascénsûs Béth-horon, & percússit usque Azéca & Máceda. Cúmque fúgerent fílios Isráël, & essent in descénsu Béth-horon, Dóminus misit super eos lápides magnos de cœlo usque ad Azéca: & mórtui sunt multo plures lapídibus grándinis, quàm quos gládio percússerant fílii Isráël. Tunc locútus est Jósue Dómino, in die qua trádidit Amorrhæum in conspéctu filiórum Isráël, dixítque coram eis: Sol contra Gábaon ne moveáris, & Luna contra vallem Aïalon. Steterúntque Sol & Luna, donec ulcisceréntur se gens de inimícis suis. Nonne scriptum est hoc in libro justórum? Stetit ítaque Sol in médio cœli, & non festinávit occúmbere spátio uníus diei. Non fuit ántea nec póstea tam longa dies, obediénte Dómino voci hóminis, & pugnánte pro Isráël.

℟. Christus resurréxit a mórtuis primítiæ dormiéntium, * Quóniam per hóminem mors & per hóminem resurréctio mortuórum, allelúia. 1. *Cor.* 15. *v.* 20. 21.

℣. Ipse est Deus vivens in

sæcula; ipse liberátor atque Salvátor. *Dan.* 6. *v.* 26. 27. * Quóniam.

De libro Ecclesiástici.

Lectio II. *Cap.* 46. 1.

*Encomium Josue.*

FOrtis in bello Jesus Nave succéssor Móysi in Prophétis, qui fuit magnus secúndùm nomen suum, máximus in salútem electórum Dei, expugnáre insurgéntes hostes, ut consequerétur hereditátem I'sraël. Quam glóriam adéptus est in tolléndo manus suas, & jactándo contra civitátes rhomphæas? Quis ante illum sic réstitit? Nam hostes ipse Dóminus perdúxit. An non in iracúndia ejus impedítus est sol, & una dies facta est quasi duo? Invocávit Altíssimum poténtem in oppugnándo inimícos úndique, & audívit illum magnus & sanctus Deus in lapídis grándinis virtútis valdè fortis. I'mpetum fecit contra gentem hostílem; & in descénsu pérdidit contrários, ut cognóscant Gentes poténtiam ejus, quia contra Deum pugnáre non est fácile. Et secútus est à tergo poténtis.

℟. Christus mórtuus est pro peccátis nostris, resurréxit tértiâ die secúndùm Scriptúras, * Vísus est Cephæ & post hoc U'ndecim, allelúia, allelúia. 1. *Cor.* 15. *v.* 3. 4. 5.

℣. Præóccupat qui se concupíscunt, ut illis se prior osténdat. *Sap.* 6. 14. * Vísus.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

Lectio III. *Cap.* 10. 11.

*Bonus Pastor.*

IN illo témpore; Dixit Jesus Pharisǽis: Ego sum Pastor bonus. Bonus Pastor ánimam suam dat pro óvibus suis. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ. *Hom.* 14. *in Evang. hab. in Basilic. S. Petri Domin.* 2. *post Pascha.*

BOnus Pastor ánimam suam ponit pro óvibus suis. Fecit quod mónuit, osténdit quod jussit; Bonus Pastor pro óvibus suis ánimam suam pósuit, ut in sacraménto nostro corpus suum & sánguinem vérteret, & oves quas redémerat, carnis suæ aliménto satiáret. Osténsa nobis est ígitur de contémptu mortis via, quam sequámur: appósita est forma, cui imprimámur. Primum nobis est exterióra nostra misericórditer óvibus ejus impéndere: postrémum verò, si necésse sit, étiam mortem nostram pro eísdem óvibus ministráre. A' primo autem hoc mínimo pervenítur ad postrémum majus. Sed cùm incomparabíliter longè sit mélior ánima quâ vívimus, quàm terréna

substántia quam extériùs possidémus; qui non dat pro óvibus substántiam suam, quando pro his datúrus est ánimam suam? Et sunt nonnúlli, qui dùm plus terrénam substántiam, quàm oves díligunt, méritò nomen Pastóris perdunt: de quibus prótinùs súbditur; Mercenárius autem, & qui non est Pastor, cujus non sunt oves própriæ, videt lupum veniéntem, & dimíttit oves, & fugit. Non Pastor, sed mercenárius vocátur, qui non pro amóre íntimo oves Domínicas, sed ad temporáles mercédes pascit. Mercenárius quippe est, qui locum quidem pastóris tenet, sed lucra animárum non quærit: terrénis cómmodis ínhiat, honóre prælatiónis gaudet, temporálibus lucris páscitur, impénsâ sibi ab homínibus reveréntiâ lætátur.

℟. Dixit Jesus Pharisæis: Ego sum Pastor bonus & * Cognósco oves meas & cognóscunt me meæ, † Allelúia, allelúia. *Joan.* 10. 14.
℣. Ecce ego ipse requíram oves meas, & visitábo eas. *Ezech.* 34. 11. * Cognósco.
℣. Glória. † Allelúia.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Omnia, ut in Dominica in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum.* 1. *Pet.* 2. *v.* 21. 22

CHaríssimi, Christus passus est pro nobis, vobi[s] relínquens exémplum, ut se[quámini] quámini vestígia ejus, q[ui] peccátum non fecit, nec in[ventus] véntus est dolus in ore ejus.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 5. Bonus Pastor ánimam su[am] dat pro óvibus suis; merce[nárius] nárius autem fugit, q[uia] mercenárius est, & non p[er]tinet ad eum de óvibus, al[le]lúia. *Joan.* 10. *v.* 11. 13.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui in Fílii tui h[u]militáte, jacéntem mu[n]dum erexísti; fidélibus t[uis] perpétuam concéde lætíti[am]: ut quos perpétuæ mortis [eri]puísti cásibus, gáudiis [fa]cias pérfrui sempitérnis. [Per] eúmdem Dóminum.

*Ad Primam & alias H[oras]* *Antiphona.* 7. D. Allelúia, [al]lelúia, allelúia, allelúia.

*Psalmi de Dominica [cum] Symbolo, Respons. brevi[a &] Versic. ut in Feriis tem[poris] Paschalis, pag.* 404.

CANON.

Ex statútis Synodálibus [Ec]clésiæ Rotomagénsis. *An* 1506. *Tit. de Sacr[amento] Extremæ-Unctionis.*

INjúngitur ómnibus & sin[]gulis Curátis, & éti[am] Vicáriis quòd hábeant óm[nia] paráta ad sacraméntum Ex[]tremæ-unctiónis, ne quand[o]

perquirerent, decédat ægrótus sine hujúsmodi Sacraménto.

AD TERTIAM,

*Capitulum.* 1. *Petr.* 2. 23.

FRatres, cùm maledicerétur Christus, non maledicébat, cùm paterétur, non comminabátur; tradébat autem judicánti se injústè.

AD SEXTAM.

*Capitulum.* 1. *Petr.* 2. 24.

PEccáta nostra ipse pértulit in córpore suo super lignum, ut peccátis mórtui justítiæ vivámus, cujus livóre sanáti sumus.

AD NONAM.

*Capitulum.* 1. *Petr.* 2. 25.

ERátis sicut oves errántes; sed convérsi estis nunc ad Pastórem & Epíscopum animárum vestrárum.

AD VESPERAS.

*Omnia ut in Domin. in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum.* *Ezech.* 34. 11.

HÆc dicit Dóminus Deus: Ecce ego ipse requíram oves meas, & visitábo eas. Sicut vísitat Pastor gregem suum in die, quando fuerit in médio óvium suárum, sic visitábo oves meas, & liberábo eas de ómnibus locis in quibus dispérsæ fúerant.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 6. f. Alias oves hábeo quæ non sunt ex hoc ovíli, & illas opórtet me addúcere, & vocem meam áudient, & fiet unum ovíle & unus Pastor, allelúia. *Joan.* 10. 16.

---

FERIA SECUNDA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Noli æmulári .... Novit Dóminus .... Os justi, *pag.* 81. *& seqq.*

De libro Jósue.

LECTIO I. *Cap.* 10. 15.

*Quinque reges fugitivi in spelunca.*

REvérsus est Jósue cum omni Isráël in castra Gálgalæ. Fúgerant enim quinque reges, & se abscónderant in spelúnca urbis Máceda. Nuntiatúmque est Jósue, quòd invénti essent quinque reges laténtes in spelúnca urbis Máceda. Qui præcépit sóciis, & ait: Vólvite saxa ingéntia ad os spelúncæ, & pónite viros indústrios, qui clausos custódiant: vos autem nolíte stare, sed persequímini hostes, & extrémos quosque fugiéntium cǽdite: nec dimittátis eos úrbium suárum intráre præsídia, quos trádidit Dóminus Deus in manus vestras. Cæsis ergo adversáriis plagâ magnâ, & usque ad interneciónem penè consúmptis, hi qui Isráël effúgere potuérunt, ingréssi sunt civitátes munítas. Reversúsque est omnis exércitus ad Jósue in Máceda,

ubi tunc erant castra, sani & íntegro número: nullúsque contra fílios Israël mutíre ausus est. Præcepítque Jósue, dicens: Aperíte os spelúncæ, & prodúcite ad me quinque reges, qui in ea látitant. Fecerúntque minístri ut sibi fúerat imperátum: & eduxérunt ad eum quinque reges de spelúnca, regem Jerúsalem, regem Hebron, regem Jérimoth, regem Lachis, regem Eglon. Cúmque edúcti essent ad eum, vocávit omnes viros Israël, & ait ad príncipes exércitûs qui secum erant: Ite & pónite pedes super colla regum istórum. Qui cùm perrexíssent, & subjectórum colla pédibus calcárent, rursùm ait ad eos: Nolíte timére nec paveátis, confortámini & estóte robústi: sic enim fáciet Dóminus cunctis hóstibus vestris, advérsùm quos dimicátis.

℟. Si mórtui sumus, *p.* 401.

LECTIO II. *Cap.* II. I.

*Cædes Jabin regis Azor.*

Quæ cùm audísset Jabin rex Azor, misit ad Jobab regem Madon, & ad regem Sémeron, atque ad regem Achsaph: ad reges quoque Aquilónis, qui habitábant in montánis, & in planítie contra merídiem Céneroth, in campéstribus quoque, & in regiónibus Dor juxta mare: Chananæum quoque ab Oriénte & Occidénte, & Amorrhæum atque Hethæum ac Pherezæum & Jebusæum in montánis: Hevæum quoque qui habitábat ad radíces Hermon in terra Maspha. Egressíque sunt omnes cum turmis suis, pópulus multus nimis, sicut aréna quæ est in líttore maris, equi quoque & currus imménsæ multitúdinis. Convenerúntque omnes reges isti in unum ad Aquas Merom, ut pugnárent contra Israël. Dixítque Dóminus ad Jósue: Ne tímeas eos: cras enim hâc eádem horâ ego tradam omnes istos vulnerándos in conspéctu Israël: equos eórum subnervábis, & currus igne combúres. Venítque Jósue, & omnis exércitus cum eo, advérsus illos ad Aquas Merom súbitò, & irruérunt super eos, tradidítque illos Dóminus in manus Israël. Qui percussérunt eos, & persecúti sunt usque ad Sidónem magnam, & Aquas Maseréphoth, campúmque Masphe, quæ est ad Orientálem illius partem. Ita percússit omnes, ut nullas dimítteret ex eis relíquias: fecítque sicut præcéperat ei Dóminus, equos eórum subnervávit, currúsque combússit igni. Reversúsque statim

cepit Asor : & regem ejus percússit gládio. Asor enim antiquitùs inter ómnia regna hæc principátum tenébat. Percussítque omnes ánimas, quæ ibidem morabántur : Non dimísit in ea ullas relíquias, sed usque ad interneciónem univérsa vastávit, ipsámque urbem perémit incéndio.

℟. Grátias Deo, p. 401.

Incipit Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. Cap. 1. 1.

*Gratias agit Deo ob datam Corinthiis gratiam.*

PAulus vocátus Apóstolus Jesu Christi per voluntátem Dei, & Sósthenes frater, Ecclésiæ Dei, quæ est Corínthi, sanctificátis in Christo Jesu, vocátis sanctis, cùm ómnibus qui ínvocant nomen Dómini Jesu Christi, in omni loco ipsórum, & nostro. Grátia vobis, & pax à Deo Patre nostro, & Dómino Jesu Christo. Grátias ago Deo meo semper pro vobis in grátia Dei, quæ data est vobis in Christo Jesu, quòd in ómnibus divítes facti estis in illo, in omni verbo, & in omni sciéntia : Sicut testimónium Christi confirmátum est in vobis : ita ut nihil vobis desit in ulla grátia, expectántibus revelatiónem Dómini nostri Jesu Christi, qui confirmábit vos usque in finem sine crímine in die advéntûs Dómini nostri Jesu Christi.

℟. Benedíctus Deus, p. 401.

CANON.

Ex Concilio Tridentino.

*Sess. 14. de Extr. Unct. c. 2.*

SAcra Unctio delícta, si quæ sint adhuc expiánda, ac peccáti relíquias abstérgit, & ægróti ánimam allévíat & confírmat.

## FERIA TERTIA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Si verè útique...... Deus ultiónum... Beátus homo, *p. 83. & seqq.*

De libro Jósue.

LECTIO I. Cap. 11, 12.

*Gigantes exterminati.*

OMnes per circúitum civitátes, regésque eárum cépit Jósue, percússit atque delévit, sicut præcéperat ei Móyses fámulus Dómini. Absque úrbibus, quæ erant in cóllibus & in túmulis sitæ, céteras succéndit Isráël : unam tantùm Asor munitíssimam flamma consúmpsit. Omnémque prædam istárum úrbium, ac juménta divisérunt sibi fílii Isráël, cunctis homínibus interféctis. Sicut præcéperat Dóminus Móysi servo suo, ita præcépit Móyses Jósue, & ille univérsa complévit :

non prætériit de univérsis mandátis, nec unum quidem verbum quod jússerat Dóminus Móysi. Cepit itaque Jósue omnem Terram montánam & meridiánam, terrámque Gosen, & planítiem, & Occidentálem plagam, montémque Israël, & campéstria ejus: & partem montis quæ ascéndit Seir usque Baálgad, per planítiem Líbani subter montem Hermon: omnes reges eórum cepit, percússit & occídit. Multo témpore pugnávit Jósue contra reges istos. Non fuit cívitas quæ se tráderet fíliis Israël, præter Hevǽum, qui habitábat in Gábaon: omnes enim bellándo cepit. Dómini enim senténtia fúerat, ut induraréntur corda eórum, & pugnárent contra Israël, & cáderent, & non mereréntur ullam cleméntiam, ac períment, sicut præcéperat Dóminus Móysi. In illo témpore venit Jósue, & interfécit Enacim de montánis, Hebron & Dabir, & Anab, & de omni monte Juda & Israël, urbésque eórum delévit. Cepit ergo Jósue omnem terram, sicut locútus est Dóminus ad Móysen, & trádidit eam in possessiónem fíliis Israël, secúndum partes & tribus suas: quievítque Terra à prǽliis.

℞. Deus, qui dives, *p.* 401.

LECTIO II. *Cap.* 13. b

*Partitiones terræ promissæ.*

JOsue senex, provectǽque ætátis erat, & dixit Dóminus ad eum: Senuísti, & longǽvus es, terráque latíssima derelícta est, quæ necdum sorte divísa est: & nunc dívide terram in possessiónem novem tríbubus, & dimídiæ tribui Manásse, cum qua Ruben, & Gad possedérunt terram, quam trádidit eis Móyses fámulus Dómini, trans fluénta Jordánis, ad Orientálem plagam. Hanc possessiónem divísit Móyses in campéstribus Moab trans Jordánem contra Jéricho, ad Orientálem plagam. Tribui autem Levi non dedit possessiónem: quóniam Dóminus Deus Israël, ipse est posséssio ejus, ut locútus est illi.

℞. Dóminus regnávit, *p.* 40[illegible]

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap.* 1. 10.

*Paulus dolet inter Christianos esse schismata.*

OBsecro vos, fratres, per nomen Dómini nostri Jesu Christi: ut idípsum dicátis omnes, & non sint in vobis schísmata: sitis autem perfécti in eódem sensu, & in eádem senténtia. Significátum est enim mihi de vobis

fratres mei, ab iis qui sunt Chloës, quia contentiónes sunt inter vos. Hoc autem dico, quòd unusquisque vestrûm dicit: Ego quidem sum Pauli: ego autem Apóllo: ego vero Cephæ: ego autem Christi. Divisus est Christus? Nunquid Paulus crucifixus est pro vobis? aut in nómine Pauli baptizáti estis? Grátias ago Deo, quòd néminem vestrûm baptizávi, nisi Crispum & Caïum: ne quis dicat quòd in nómine meo baptizáti estis. Baptizávi autem & Stéphanæ domum: céterùm néscio si quem álium baptizáverim.

℟. Christus mórtuus. *p.* 401.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio.

*Anno* 1235. *Tit. de Extrema-unctione. can.* 133.

DE Extrema-unctióne docéndum est, sicut beátus Jacóbus dixit, quòd per eam peccáta veniália dimittúntur, & quandóque allevíatur infirmus; quandóque verò ad veram contritiónem, & ætérni gáudii consideratiónem per eam incitátur.

FERIA QUARTA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Dómini est terra... Exultáte justi... Beáta gens, *p.* 89. *& seqq.*

De libro Jósue.

LECTIO I. *Cap.* 14. 1.

*Habitatio tribus Levi.*

HOc est quod possedérunt filii Israël in terra Chánaan, quam dedérunt eis Eleázar Sacérdos, & Jósue filius Nun, & príncipes familiárum per tribus Israël: sorte ómnia dividéntes, sicut præcéperat Dóminus in manu Móysi, novem tribubus, & dimídiæ tribui. Duábus enim tribubus & dimídiæ déderat Móyses trans Jordánem possessiónem: absque Levítis, qui nihil terræ accepérunt inter fratres suos: sed in eórum succesérunt locum filii Joseph in duas divísi tribus, Manásse & Ephraïm: nec accepérunt Levítæ áliam in Terra partem, nisi urbes ad habitándum, & suburbána eárum ad aléndа juménta & pécora sua. Sicut præcéperat Dóminus Móysi; ita fecérunt filii Israël, & divisérunt Terram.

℟. Sive vívimus, *p.* 401.

LECTIO II. *Cap.* 21. 39.

*Divisâ terrâ Chanaan pax datur Israëlitis.*

ITaque civitátes univérsæ Levitárum in médio possessiónis filiórum Israël fuérunt quadragínta octo cum suburbánis suis, singulæ per famílias distribútæ. Dedítque Dóminus Deus Israéli omnem Terram, quam traditúrum se

pátribus eórum juráverat: & possedérunt illam, atque habitavérunt in ea. Datáque est ab eo pax in omnes per circúitum natiónes: nullúsque eis hóstium resístere ausus est, sed cuncti in eórum ditiónem redácti sunt. Ne unum quidem verbum, quod illis præstitúrum se esse promíserat, irritum fuit, sed rebus expléta sunt ómnia.

℟. Quæ ad Patres, p. 402.

De Epístola secúnda beáti Pauli Apóstoli ad Timótheum.

LECTIO III. Cap. 2. 8.

*Christus resurrexit à mortuis.*

MEmor esto Dóminum Jesum Christum resurrexísse à mórtuis ex sémine David, secúndùm Evangélium meum, in quo labóro usque ad víncula, quasi malè óperans: sed verbum Dei non est alligátum. Ideò ómnia sustíneo propter eléctos, ut & ipsi salútem consequántur, quæ est in Christo Jesu, cum glória cœlésti. Fidélis sermo: nam si commórtui sumus, & convivémus: si substinébimus, & conregnábimus: si negavérimus, & ille negábit nos: si non crédimus, ille fidélis pérmanet, negáre seípsum non potest.

℟. Deus meus es tu, p. 402.

*CANON.*

Ex Synodo Ebroïcénsi.

*Anno* 1644. *can.* 2.

REctóres Extremam-unctiónem ægrotántibus administrábunt, dùm adhuc sui sunt cómpotes, ut uberiórem fructum percípiant.

FERIA QUINTA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Exúrgat Deus..... Dóminus dabit.... In Ecclésiis, *p.* 91. *& seqq.*

De libro Jósue.

LECTIO I. *Cap.* 20. 1.

*Urbes refugii.*

LOcútus est Dóminus ad Jósue, dicens: Lóquere fíliis Israël, & dic eis: Separáte urbes fugitivórum, de quibus locútus sum ad vos per manum Móysi; ut confúgiat ad eas quicúmque ánimam percússerit néscius; & possit evádere iram próximi, qui ultor est sánguinis. Cum ad unam harum confúgerit civitátum, stabit ante portam civitátis, & loquétur sénioribus urbis illíus, ea quæ cómprobent innocéntem se; sicque suscípient eum, & dabunt ei locum ad habitándum. Cúmque ultor sánguinis eum fúerit persecútus, non tradent in manus ejus: quia ignórans percússit próximum ejus, nec ante bíduum, vel triduúmve ejus probátur inimícus. Et habitábit in civitáte illa, donec stet ante judícium causam reddens facti sui, & moriátur Sacérdos ma-

...ris, qui fúerit in illo témpore: tunc revertétur homicída, & ingrediétur civitátem & domum suam de qua fúgerat.

℟. Qui diléxit, *p.* 402.

LECTIO II. *Cap.* 22. 1.

*Ruben, Gad & media tribus Manasse revertuntur ad sua.*

EO'dem témpore vocávit Jósue Rubenítas, & Gadítas, & dimídiam tribum Manásse, dixítque ad eos: Fecístis ómnia quæ præcépit vobis Móyses fámulus Dómini: mihi quoque in ómnibus obedístis, nec reliquístis fratres vestros longo témpore, usque in præséntem diem, custodiéntes impérium Dómini Dei vestri. Quia ígitur dedit Dóminus Deus vester frátribus vestris quiétem & pacem, sicut pollícitus est: revertímini, & ite in tabernácula vestra, & in terram possessiónis, quam trádidit vobis Móyses fámulus Dómini trans Jordánem: ita duntáxat, ut custodiátis atténtè, & ópere compleátis mandátum & legem quam præcépit vobis Móyses fámulus Dómini, ut diligátis Dóminum Deum vestrum, & ambulétis in ómnibus viis ejus, & observétis mandáta illíus, adhæreatísque ei, ac serviátis in omni corde, & in omni ánima vestra. Benedixítque eis Jósue, & dimísit eos. Qui revérsi sunt in tabernácula sua. Dimídiæ autem tribui Manásse possessiónem Móyses déderat in Basan: & idcircò médiæ, quæ supérfuit, dedit Jósue sortem inter céteros fratres suos trans Jordánem ad Occidentálem plagam. Cúmque dimítteret eos in tabernácula sua, & benedixísset eis, dixit ad eos: In multa substántia atque divítiis revertímini ad sedes vestras, cum argénto & auro, ære ac ferro, & veste multíplici: divídite prædam hóstium cum frátribus vestris.

℟. Notum sit, *p.* 402.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap.* 3. 1.

*Plantatio à ministris, incrementum à Deo.*

EGo, fratres, non pótui vobis loqui quasi spirituálibus, sed quasi carnálibus. Tanquàm párvulis in Christo, lac vobis potum dedi, non escam: nondum enim poterátis: sed nec nunc quidem potéstis: adhuc enim carnáles estis. Cùm enim sit inter vos zelus, & conténtio, nonne carnáles estis, & secúndùm hóminem ambulátis? Cùm enim quis dicat: Ego quidem sum Pauli, álius autem: Ego Apóllo: nonne hómines estis? Quid ígitur est

Apóllo ? quid verò Paulus ? Minístri ejus cui credidístis, & unicuíque, sicut Dóminus dedit. Ego plantávi, Apóllo rigávit : sed Deus increméntum dedit. I'taque neque qui plantat est áliquid, neque qui rigat : sed qui increméntum dat, Deus. Qui autem plantat, & qui rigat, unum sunt. Unusquísque autem própriam mercédem accípiet secúndùm suum labórem.

℟. Déxtera Dómini, *p.* 402.

### *CANON.*

Ex Sýnodo Lexoviénsi.

*Sub Joan. le Veneur Episc. circa ann.* 1510.

MOneant Sacerdótes suos parochiános omnes, ut Extremæ-unctiónis sacraméntum dignè, reveréntèr & devótè petant & suscípiant, quandò ex áliqua gravi infirmitáte se in perículo mortis exístimant constitútos.

## FERIA SEXTA.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Dóminus regnávit, exúltet... Cantáte Dómino.... Dóminus regnávit, irascántur, *p.* 92. & *seqq.*

De libro Jósue.

### LECTIO I. *Cap.* 22. 9.

*Legatio aliarum Tribuum ad Ruben, Gad, & mediam Manasse extruentes altare.*

REvérsi sunt & abiérunt filii Ruben, & filii Gad, & dimídia tribus Ma- násse à filiis I'sraël de Silo, quæ sita est in Chánaan, ut intrárent Gálaad Terram possessiónis suæ, quam obtinúe- rant juxta impérium Dómini in manu Móysi. Cúmque venissent ad túmulos Jordánis in Terram Chánaan, ædifica- vérunt juxta Jordánem altáre infinítæ magnitúdinis. Quod cùm audíssent filii I'sraël, mi- sérunt ad illos in terram Gá- laad Phinees & decem prin- cipes cum eo, síngulos de síngulis tríbubus. Qui vene- runt ad filios Ruben, & Gad, & dimídiæ tribus Manásse, in Terram Gálaad : dixerúntque ad eos : Vos hódiè reliquístis Dóminum, & cras in univér- sum I'sraël ira ejus desǽvi- Quòd si putátis immúnda esse Terram possessiónis v- træ, transíte ad terram, qua Tabernáculum Dómi- est, & habitáte inter no- tantùm ut à Dómino, & nostro consórtio non reced- tis, ædificáto altári præter al- táre Dómini Dei nostri.

℟. Jesum à Názareth, *pag.* 402.

### LECTIO II. *v.* 21.

*Responsio ad legatos.*

REspondeRúntque filii Ruben & Gad, & dimídiæ tribus Manásse princípibus legatiónis I'sraël : Fortíssimus

Deus Dóminus, Fortíssimus Deus Dóminus, ipse novit, & Israël simul intélliget: si prævaricatiónis ánimo hoc altáre constrúximus, non custódiat nos, sed púniat nos in præsénti: & non eâ magis cogitatióne atque tractátu, ut fecerémus: Gras dicent fílii vestri fíliis nostris: Quid vobis & Dómino Deo Israël? Términum pósuit Dóminus inter nos & vos, ô fílii Ruben et fílii Gad, Jordánem flúvium: & idcircò partem non habétis in Dómino. Et per hanc occasiónem avértent fílii vestri fílios nostros à timóre Dómini. Putávimus itaque mélius. Quòd si volúerint dícere, respondébunt eis: Ecce altáre Dómini quod fecérunt patres nostri: non in holocausta, neque in sacrifícium, sed in testimónium nostrum & vestrum. Quibus audítis, Phinees Sacérdos, & príncipes legatiónis Israël, qui erant cum eo, placáti sunt: & turba filiórum Ruben, & Gad, & dimídiæ tribus Manasse libentíssimè suscepérunt. Dixitque Phinees fílius Eleázari Sacérdos ad eos. Nunc scimus quòd nobíscum sit Dóminus, quóniam alieni estis à prævaricatióne hac, & liberástis fílios Israël de manu Dómini.

℟. Crédimus sciéntes, p. 402.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap. 4. 1.*

*De ministris non temerè judicandum.*

SIc nos exístimet homo ut minístros Christi, & dispensatóres mysteriórum Dei. Hic jam quǽritur inter dispensatóres, ut fidélis quis inveniátur. Mihi autem pro mínimo est ut à vobis júdicer, aut ab humáno die: sed neque meípsum júdico. Nihil enim mihi cónscius sum; sed non in hoc justificátus sum: qui autem júdicat me, Dóminus est. Itaque nolíte ante tempus judicáre, quoadúsque véniat Dóminus: qui & illuminábit abscóndita tenebrárum, & manifestábit consília córdium: & tunc laus erit unicuíque à Deo.

℟. Díligam te, p. 402.

*CANON.*

Ex libro Synodáli Sagiénsi. *Anno* 1524.

CIrca Sacraméntum Extremæ-unctiónis & álias sacras unctiónes; statúimus, ut quælibet sacra únctio hábeat vas suum ab álio distínctum & separátum, figúrâ & composítióne divérsum & in loco eminénti scriptum.

SABBATO.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Dómine, exáudi...

Tu exúrgens ... Initio ; tu Dómine ; *pag.* 97. *& seqq.*

De libro Jósue.

LECTIO I. *Cap.* 24. 1.

*Josue hortatur Israëlitas ut Domino serviant.*

COngregavítque Jósue omnes tribus I'sraël in Sichem, & vocávit majóres natu, ac príncipes, & júdices, & magístros : steterúntque in conspéctu Dómini : & ad pópulum sic locútus est : Hæc dicit Dóminus Deus I'sraël : Dedi vobis Terram, in qua non laborástis, & urbes quas non ædificástis, ut habitarétis in eis : víneas & olivéta, quæ non plantástis. Nunc ergò timéte Dóminum, & servíte ei perfécto corde atque veríssimo : & auférte deos, quibus serviérunt patres vestri in Mesopotámia, & in Ægypto, & servíte Dómino. Sin autem malum vobis vidétur ut Dómino serviátis, óptio vobis datur : elígite hódiè quod placet, cui servíre potíssimùm debeátis, utrùm diis, quibus serviérunt patres vestri in Mesopotámia, an diis Amorrhæórum in quorum terra habitátis : ego autem & domus mea serviémus Dómino. Dixítque pópulus ad Jósue : Dómino Deo nostro serviémus & obediéntes érimus præcéptis ejus.

LECTIO II. *v.* 29.

*Mors Josue. Sepultura ossium Joseph. Mors Eleazari.*

POst hæc mórtuus est Jósue fílius Nun servus Dómini, centum & decem annórum : sepeliérúntque eum in fínibus possessiónis suæ in Thamnáthsare, quæ est sita in monte E'phraim à Septentrionáli parte montis Gaas. Servivítque I'sraël Dómino cunctis diébus Jósue, & seniórum qui longo vixérunt témpore post Jósue, & qui novérunt ómnia ópera Dómini quæ fécerat in I'sraël. Ossa quoque Joseph quæ tulerant fílii I'sraël de Ægypto, sepeliérunt in Sichem, in parte agri, quem émerat Jacob à fíliis Hemor patris Sichem centum novéllis óvibus, & fuit in possessiónem filiórum Joseph. Eleázar quoque fílius Aaron mórtuus est : & sepeliérunt eum in Gábaa Phínees fílii ejus, quæ data est ei in monte E'phraim.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap.* 4. 9.

*Discrimen inter Apostolos & alios doctores.*

PUto quòd Deus nos Apóstolos novíssimos osténdit, tanquàm morti destinátos : quia spectáculum facti sumus mundo & Angelis,

is, & homínibus. Nos
ulti propter Christum, vos
autem prudéntes in Christo:
nos infirmi, vos autem for-
tes: vos nóbiles, nos autem
ignóbiles. Usque in hanc ho-
ram & esurímus, & sitímus,
& nudi sumus, & cólaphis
cædimur, & instábiles su-
mus; & laborámus operán-
tes mánibus nostris: maledí-
cimur, & benedícimus: per-
secutiónem pátimur, & sus-
tinémus: blasphemámur, &
obsecrámus: tanquam pur-
gaménta hujus mundi facti
sumus, ómnium peripséma
usque adhuc. Non ut con-
fúndam vos, hæc scribo, sed
ut fílios meos charíssimos
móneo. Nam si decem míl-
lia pædagogórum habeátis
in Christo, sed non multos
patres. Nam in Christo Jesu
per Evangélium ego vos gé-
nui. Rogo ergo vos, imitató-
res mei estóte, sicut & ego
Christi.

*C A N O N.*

Ex statútis antíquis Petri de
Collemédio Archiepíscopi
Rotomagénsis.

An. 1235. *de Ordinibus,*
*Can.* 134.

De Ordínibus debent cré-
dere láïci, quód nullus
Eucharístiam cónficit, nisi
sacérdos; nec confert O'r-
dines, nisi Epíscopus: &
quod eam habent virtútem
O'rdines sacri, quam Ecclé-
sia profitétur.

AD VESPERAS.

*Omnia ut in Sabbato ante Dominicam in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum. Act.* 17. *v.* 2. 3.

SEcúndùm consuetúdinem Paulus introívit ad Judǽos & per Sábbata tria disserébat eis de Scriptúris, adapériens & insínuans quia Christum opórtuit pati, & resúrgere à mórtuis.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Magna & mirabília sunt ópera tua, Dómine Deus omnípotens: justæ & veræ sunt viæ tuæ, Rex seculórum. Quis non timébit te, Dómine, & magnificábit nomen tuum, allelúia? *Apoc.* 15. *v.* 3. 4.

*Oratio, ut infrà ad Laudes.*

---

## DOMINICA TERTIA POST PASCHA.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Omnia ut in Dominica in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Psal.* Deus deórum.... Peccatóri autem.... Deus in nómine, *pag.* 99. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 2. 6.

*De Judicibus Israël post Josue.*

DImísit Jósue pópulum, & abiérunt fílii Israël

unusquísque in possessiónem suam, ut obtinérent eam: servierúntque Dómino cunctis diébus ejus & Seniórum qui longo post eum vixérunt témpore, & nóverant ómnia ópera Dómini, quæ fécerat cum Israël. Fecerúntque fílii Israël malum in conspéctu Dómini, & serviérunt Báalim. Cúmque Dóminus Júdices suscitáret, in diébus eórum flectebátur misericórdiâ, & audiébat afflictórum gémitus, & liberábat eos de cæde vastántium. Postquàm autem mórtuus esset Judex, revertebántur, & multò faciébant pejóra quàm fécerant patres eórum, sequéntes deos aliénos, serviéntes eis, & adorántes illos.

℟. Deus, qui dives est in misericórdia propter nímiam charitátem suam quâ diléxit nos, * Cùm essémus mórtui peccátis, convivificávit nos & conresuscitávit in Christo Jesu, allelúia. *Ephes.* 2. 5. ℣. Cantáte Dómino cánticum novum, quia mirabília fecit. *Ps.* 97. 1. * Cùm essémus.

De libro Ecclesiástici.

LECTIO II. *Cap.* 46. 9.

*Laus judicum post Josue.*

In diébus Móysi misericórdiam fecit Jósue, & Caleb fílius Jéphone, stare contra hostem, & prohibére Gentem à peccátis, & perstringe murmur malítiæ. Et ipsi duo constitúti, à perículo liberati sunt à número sexcentórum míllium péditum, indúcere illos in hereditátem, in ter ram quæ manat lac & m Et dedit Dóminus ipsi Ca fortitúdinem, & usque in nectútem permánsit illi v tus, ut ascénderet in exc sum terræ locum, & sem ipsíus obtínuit hereditáte ut vidérent omnes fílii Ísr quia bonum est óbsequi sa to Deo. Et Júdices sing suo nómine, quorum non corrúptum cor: qui n avérsi sunt à Dómino, ut memória illórum in bene tióne, & ossa eórum pullu de loco suo, & nomen eó permáneat in ætérnum manens ad fílios illó sanctórum virórum glóri

℟. Crucifíxus est Chr ex infirmitáte, allelúia: vivit * Ex virtúte Dei, lelúia, allelúia. 2. *Corint.* 4. ℣. Infírmus dicat, q fortis ego sum. *Joël* 3. * Ex virtúte.

Léctio sancti Evangélii cúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 16.

*Promissio gaudii inamissib*

In illo témpore; Dixit Je discípulis suis: Módic & jam non vidébitis me,

...um módicum & vidébitis me : quia vado ad Patrem. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 101. *in Joan.*

MO'dicum est hoc totum spátium quo præsens ...volat séculum. Ideò nam... áddidit : [ Quia vado ad ...trem ,] quod ad prióream ...téntiam referéndum est, ... ait: [Módicum,& jam non ...ébitis me : ] non ad poste... ...m, ubi ait : [ Et íterùm ...dicum , & vidébitis me.] ...ado quippe ad Patrem, ...itúrus erat, ut eum non vi... ...ent. Ac per hoc non ideò ...tum est, quia fúerat mo... ...rus ; & donec resúrge... ab eórum aspéctibus re... ...itúrus, sed quòd esset itú... ad Patrem. Illis ergo ait: ...ódicum , & jam non vidé... me,] qui eum corporáli... ...unc vidébant, quia itúrus ad Patrem , & eum deín... ...s mortálem visúri non ...nt, qualem, cum ista lo... ...erétur , vidébant. Quòd ...ò áddidit : [Et íterùm mó... ...cum , & vidébitis me,] uni... ...rsæ promísit Ecclésiæ, si... ...t univérsæ promísit : Ecce ...o vobíscum sum usque ad ...nsummatiónem séculi. Non ...dat Dóminus promíssum : ...ódicum, & vidébimus eum, ubi jam nihil rogémus , nihil interrogémus ; quia nihil desiderándum remanébit, nihil quæréndum latébit. Hoc módicum longum nobis vidétur, quóniam adhuc ágitur ; cùm finítum fúerit , tunc sentiémus, quàm módicum fúerit.

℟. Contristabímini , sed * Tristítia vestra vertétur in gáudium , † Allelúia , allelúia. *Joan.* 16. 20. ℣. Consolábor vos , & consolabímini , & gaudébit cor vestrum. *Isa.* 66. *v.* 13. 14. * Tristítia. ℣. Glória. † Allelúia.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Omnia ut in Dominica in Albis , exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum.* 1. *Pet.* 2. 11.

CHaríssimi óbsecro vos tanquam ádvenas & peregrínos abstinére vos à carnálibus desidériis, quæ mílitant advérsus ánimam.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. *f.* Módicum , & jam non vidébitis me., & íterum módicum, & vidébitis me : quia vado ad Patrem , allelúia. *Joan.* 16. 16.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui errántibus , ut in viam possint redíre justítiæ, veritátis tuæ lumen osténdis : da cunctis, qui Christiánâ professióne censéntur, & illa respúere quæ huic

inimica sunt nómini; & ea quæ sunt apta, sectári. Per Dóminum.

AD PRIMAM, & alias Horas.

*Ant.* 7. D. Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia.

*Psalmi de Dominica, Responsoria brevia, Versiculi, ut in Feriis temporis Paschalis, pag. 404.*

*CANON.*

Ex Concilio Rheménsi. *An.* 1583. *Tit. de Baptismo.*

CUm ómnium Sacramentórum primum locum sibi vindicet Baptísma, præcípimus hoc Sacraméntum administratúris, ut in ejus administratióne decénter & honéstè se gerant.

AD TERTIAM.

*Capitulum.* 1. Pet. 2. 13.

SUbjécti estóte omni humánæ creatúræ propter Deum: sive regi quasi præcellénti, sive dúcibus, tanquam ab eo missis ad vindíctam malefactórum, laudem verò bonórum.

AD SEXTAM.

*Capitulum.* 1. Pet. 2. 15.

SIc est volúntas Dei, ut benefaciéntes obmutéscere faciátis imprudéntium hóminum ignorántiam.

AD NONAM.

*Capitulum.* 1. Petr. 2. 17.

OMnes honoráte: fraternitátem dilígite: Deum timéte: regem honorificáte.

AD VESPERAS.

*Omnia ut in Dominica in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum.* 1. Petr. 2. 18.

SErvi, súbditi estóte in omni timóre dóminis, non tantùm bonis & modéstis, sed étiam dýscolis. Hæc est enim grátia in Christo Jesu Dómino nostro.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 1. Vos nunc quidem tristítiam habétis, íterùm vidébo vos, & gaudébit cor vestrum, & gáudium vestrum nemo tollet à vobis. *Joan.* 16. 22.

*Oratio, ut suprà ad Laudes.*

FERIA SECUNDA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Misericórdiam & judícium... Bénedic, ánima mea... Quómodò miserétur... *pag.* 101. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 3.

*Othoniel secundus Judex.*

FIlii Israël habitavérunt in médio Chananæi, & Hethæi, & Amorrhæi, & Pherezæi, & Hevæi, & Jebusæi: & duxérunt uxóres fílias eórum, ipsíque fílias suas filiis eórum tradidérunt, & serviérunt diis eórum. Fecerúntque malum in conspéctu Dómini, & oblíti sunt Dei sui, serviéntes Báalim & Astaroth

...: Iratúsque contra Iſraël
Dóminus, trádidit eos in ma-
... Chuſan Raſáthaïm regis
...ſopotámiæ, ſervierúntque
... octo annis. Et clamavérunt
... Dóminum: qui ſuſcitávit
... Salvatórem, & liberávit
..., Othóniel vidélicet fílium
...nez, fratrem Caleb minó-
...: Fuítque in eo Spíritus
...ómini, & judicávit Iſraël.
...greſſúſque eſt ad pugnam,
... trádidit Dóminus in ma-
... ejus Chuſan Raſáthaïm
...gem Sýriæ, & oppréſſit
... Quievítque terra qua-
...gínta annis, & mórtuus
... Othóniel fílius Cenez.
... Si mórtui, *p.* 401.

LECTIO II. *v.* 12.

*...lon rex Moab: Aod tertius Judex; Samgar quartus.*

... Ddidérunt fílii Iſraël
... fácere malum in conſ-
...ctu Dómini: qui confor-
...it advérsùm eos Eglon
...em Moab: quia fecérunt
...um in conſpéctu ejus. Et
...ulávit ei fílios Ammon &
...malec: abiítque & percúſ-
... Iſraël, atque poſſédit ur-
... palmárum. Servierúnt-
... fílii Iſraël Eglon regi
...oab decem & octo annis:
... póſteà clamavérunt ad
...óminum: qui ſuſcitávit eis
...lvatórem vocábulo Aod,
...um Gera, fílii Jémini, qui
...tráque manu pro déxtera
utebátur. Miſerúntque fílii Iſrael per illum múnera Eglon regi Moab. Qui fecit ſibi gládium ancípitem, habéntem in médio cápulum longitúdinis palmæ manûs, & accinctus eſt eo ſubter ſagum in dextro fémore. Obtuliſtque múnera Eglon regi Moab. Erat autem Eglon craſſus nimis. Cúmque obtuliſſet ei múnera, proſecútus eſt ſócios, qui cum eo vénerant. Et reverſus de Gálgalis, ubi erant idóla, dixit ad regem: Verbum ſecrétum hábeo ad te, ô Rex. Et ille imperávit ſiléntium: egreſſiſque ómnibus, qui circa eum erant, ingréſſus eſt Aod ad eum: ſedébat autem in æſtivo cœnáculo ſolus, dixítque: Verbum Dei hábeo ad te. Qui ſtatim ſurréxit de throno. Extendítque Aod ſiniſtram manum, & tulit ſicam de déxtero fémore ſuo, infixítque eam in ventre ejus tam válidè, ut cápulus ſequerétur ferrum in vúlnere; ac pinguiſſimo ádipe ſtringerétur. Nec edúxit gládium, ſed ita ut percúſſerat, relíquit in córpore: ſtatímque per ſecréta natúræ alvi ſtércora prorupérunt. Aod autem clauſis diligentiſſimè óſtiis cœnáculi, & obfirmátis ſerâ, per póſticum egréſſus eſt. Poſt hunc fuit Samgar

filius Anath, qui percússit de Philísthiim sexcéntos viros vómere: & ipse quoque deféndit Israël.

℟. Grátias Deo, p. 401.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. Cap. 6. 2.

*Non litigandum.*

AN nescítis quóniam sancti de hoc mundo judicábunt? Et si in vobis judicábitur mundus, indígni estis qui de mínimis judicétis? Nescítis quóniam ángelos judicábimus? quantò magis seculária? seculária igitur judícia si habuéritis: contemptíbiles, qui sunt in Ecclesia, illos constitúite ad judicándum. Ad verecúndiam vestram dico. Sic non est inter vos sápiens quisquam, qui possit judicáre inter fratrem suum? Sed frater cum fratre judício conténdit: & hoc apud infidéles. Jam quidem omninò delíctum est in vobis, quòd judícia habétis inter vos. Quare non magis injúriam accípitis? quare non magis fraudem patímini? Sed vos injúriam fácitis, & fraudátis: & hoc frátribus.

℟. Benedíctus Deus, p. 401.

*CANON.*

Ex Synodo Rotomagénsi.

*Anno* 1640. *Can.* 9.

ALtero conjugatórum quantocúnque témpore absénte, alter, nisi de morte abséntis factâ fide ab Ordinário sibi permittátur contrahere cum álio non præsúmat: nec Párochus, nisi hábita ab eo ejúsmodi matrimónii celebrándi licéntiâ, ullum ad contrahéndum admíttat: qui autem secus fácere præsúmpserit suspensiónem ipso facto incúrrat.

FERIA TERTIA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Deus, laudem... Fiant nati ejus.... Líbera me, *pag.* 103. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 4. 1.

*Debbora.*

ADdidérunt filii Israël fácere malum in conspéctu Dómini post mortem Aod, & trádidit illos Dóminus in manus Jabin regis Chánaan, qui regnávit in Asor: habuítque ducem exercitûs sui nómine Sísaram, ipse autem habitábat in Hároseth géntium. Erat autem Debbora prophétis uxor Lapidoth, quæ judicábat pópulum in illo témpore. Quæ misit & vocávit Barac fílium Abinoëm de Cedes Néphthali: dixítque ad eum: Præcépit tibi Dóminus Deus Israël: vade, & duc exércitum in

montem Thabor, tolléſque ſecum decem míllia pugnatórum de fíliis Néphthali, & de fíliis Zábulon. Dixítque ad eam Barac: Si venis mecum, vadam: ſi nolúeris veníre mecum, non pergam. Quæ dixit ad eum: Ibo quidem tecum, ſed in hac vice victória non reputábitur tibi, quia in manu mulíeris tradétur Síſara. Surréxit ítaque Débbora, & perréxit cum Barac in Cedes. Nuntiatúmque eſt Síſaræ, quòd aſcendiſſet Barac fílius Abínoëm in montem Thabor: & congregávit nongéntos falcátos currus, & omnem exércitum de Hároſeth géntium ad torréntem Ciſon. Dixítque Débbora ad Barac: Surge, hæc eſt enim dies, in qua trádidit Dóminus Síſaram in manus tuas: en ipſe ductor eſt tuus.

℟. Deus, qui dives, *pag.* 401.

Lectio II. *Cap.* 4.14. *&* 5.32.

*Mors Siſaræ.*

Deſcéndit ítaque Barac de monte Thabor, & decem míllia pugnatórum cum eo. Perterruítque Dóminus Síſaram, & omnes currus ejus, univerſámque multitúdinem in ore gládii ad conſpéctum Barac: in tantum, ut Síſara de curru deſíliens, pédibus fúgeret. Síſara autem fúgiens pervénit ad tentórium Jahel uxóris Haber Cinæi. Erat enim pax inter Jabin regem Aſor, & domum Haber Cinæi. Egréſſa ígitur Jahel in occúrſum Síſaræ, dixit ad eum: Intra ad me, Dómine mi: intra, ne tímeas. Qui ingréſſus tabernáculum ejus, & opértus ab ea pállio, dixit ad illam: Da mihi, óbſecro, páululùm aquæ, quia ſítio valdè. Quæ apéruit utrem lactis, & dedit ei bíbere, & opéruit illum. Tulit ítaque Jahel uxor Haber clavum tabernáculi, aſſúmens páriter & málleum: & ingréſſa abſcónditè & cum siléntio, póſuit ſupra tempus cápitis ejus clavum, percuſſúmque málleo defíxit in cérebrum uſque ad terram: qui ſopórem morti conſócians deféc it, & mórtuus eſt. Et ecce Barac ſequens Síſaram veniébat: egreſſáque Jahel in occúrſum ejus, dixit ei: Veni, & oſténdam tibi virum, quem quæris. Qui cùm intráſſet ad eam, vidit Síſaram jacéntem mórtuum, & clavum infíxum in témpore ejus. Humiliávit ergo Deus in die illo Jabin regem Chánaan coram fíliis Iſraël. Quievítque Terra per quadragínta annos.

℟. Dóminus regnávit, *pag.* 401.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap. 6. 9.*

*Impii non possidebunt regnum Dei.*

AN nescítis quia iníqui regnum Dei non possidébunt? Nolíte erráre: neque fornicárii, neque idólis serviéntes, neque adúlteri, neque fures, neque avári, neque ebriósi, neque malédici, neque rapáces, regnum Dei possidébunt. Et hæc quidam fuístis, sed ablúti estis, sed sanctificáti estis, sed justificáti estis, in nómine Dómini nostri Jesu Christi, & in Spíritu Dei nostri.

℞. Christus mórtuus, *p.* 401.

*CANON.*

Ex Synodo Rotomagénsi.

*Anno* 1640. *Can.* 10.

NE Matrimónia celebréntur noctu, étiam metu præstigiórum, nec ante Solis exórtum, sed intérdiu, públicè, nec áliter quàm utróque sponso jejúno.

FERIA QUARTA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Atténdite.... Interrúpit... Tránstulit, *p.* 199. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap. 6. 1.*

*Sacrificium Gedeonis.*

FEcérunt autem fílii I'sraël malum in conspéctu Dómini: qui trádidit illos in manu Mádian septem annis. Et clamávit I'sraël ad Dóminum póstulans auxílium contra Madianítas. Cúmque Gédeon excúteret atque purgáret fruménta in torculári, ut fúgeret Mádian; appáruit ei A'ngelus Dómini, & ait: Dóminus tecum, virórum fortíssime. Vade in hac fortitúdine tua, & liberábis I'sraël de manu Mádian: scito quòd míserim te. Et ille, Si invéni, inquit, grátiam coram te, da mihi signum quòd tu sis qui lóqueris ad me. Nec recédas hinc, donec revértar ad te portans sacrifícium, & offerens tibi. Qui respóndit: Ego præstolábor advéntum tuum. Ingréssus est itaque Gédeon & coxit hœdum, & de farínæ módio ázymos panes; carnésque ponens in canístro, & jus cárnium mittens in ollam, tulit ómnia sub quercu, & óbtulit ei. Cui dixit A'ngelus Dómini: Tolle carnes & ázymos panes, & pone supra petram illam, & jus désuper funde. Cúmque fecísset ita, exténdit A'ngelus Dómini summitátem virgæ, quam tenébat in manu, & tétigit carnes & ázymos panes: ascendítque ignis de petra, & carnes, ázymósque panes consúmpsit: A'ngelus autem Dómini evánuit ex óculis ejus.

℟. Sive vivimus, *p.* 401.

LECTIO II. *v.* 25.

*Eversio altaris Baal.*

NOcte illâ dixit Dóminus ad eum: Tolle taurum patris tui, & álterum taurum annórum septem, destruésque aram Baal, quæ est patris tui: & nemus, quod circa aram est, succíde: & ædificábis altáre Dómino Deo tuo in summitáte petræ hujus, super quam antè sacrifícium posuísti: tollésque taurum secúndum, & ófferes holocáustum super struem lignórum, quæ de némore succíderis. Assúmptis ergo Gédeon decem viris de servis suis, fecit sicut præcéperat ei Dóminus. Timens autem domum patris sui, & hómines illíus civitátis, per diem nóluit id fácere, sed omnia nocte complévit. Cúmque surrexíssent viri óppidi ejus manè, vidérunt destrúctam aram Baal, lucúmque succísum, & taurum álterum impósitum super altáre, quod tunc ædificátum erat. Dixerúntque ad invicem: Quis hoc fecit? Cúmque perquírerent autórem facti, dictum est: Gédeon fílius Joas fecit hæc ómnia. Et dixérunt ad Joas: Produc fílium tuum huc, ut moriátur: quia destrúxit aram Baal, & succídit nemus. Quibus ille respóndit: Nunquid ultóres estis Baal, ut pugnétis pro eo? qui adversárius est ejus, moriátur ántequàm lux crástina véniat: si deus est, víndicet se de eo, qui suffódit aram ejus. Ex illo die vocátus est Gédeon; Jeróbaal, eò quòd dixísset Joas: Ulciscátur se de eo Baal, qui suffódit aram ejus.

℟. Quæ ad patres, *p.* 402.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap.* 7. 25.

*Cælibatus commendatus.*

DE virgínibus præcéptum Dómini non hábeo: consílium autem do, tanquam misericórdiam consecútus à Dómino, ut sim fidélis. Exístimo ergo hoc bonum esse propter instántem necessitátem, quóniam bonum est hómini sic esse. Alligátus es uxóri? noli quǽrere solutiónem. Solútus es ab uxóre? noli quǽrere uxórem. Si autem accéperis uxórem: non peccásti. Et si núpserit virgo, non peccávit: tribulatiónem tamen carnis habébunt hujúsmodi. Ego autem vobis parco. Hoc itaque dico, fratres: Tempus breve est: réliquum est, ut & qui habent uxóres, tanquam non habéntes sint: & qui flent, tanquam non flentes: & qui gaudent, tanquam non gaudéntes: & qui emunt, tanquam

non possidéntes: & qui utúntur hoc mundo, tanquam non utántur; præterit enim figúra hujus mundi. Volo autem vos sine solicitúdine esse. Qui sine uxóre est, solícitus est quæ Dómini sunt, quómodò pláceat Deo.

℟. Deus meus es tu, *pag.* 402.

*CANON.*

Ex Concilio Tridentino. *An.* 1554. *Sess.* 24. *Cap.* 1.

QUi áliter, quàm præsénte Párocho, vel álio sacerdóte, de ipsius Párochi seu Ordinárii licéntia, & duóbus vel tribus téstibus Matrimónium contráhere attentábunt; eos sancta Sýnodus, ad sic contrahéndum omninò inhábiles reddit, & hujúsmodi contráctus írritos & nullos esse decérnit.

FERIA QUINTA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Quóties exacerbavérunt... Indúxit... Ædificávit, *pag.* 110. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 6. 36.

*Vellus Gedeonis.*

DIxit Gédeon ad Deum: Si salvum facis per manum meam I'sraël, sicut locútus es, ponam hoc vellus lanæ in área: si ros in solo véllere fúerit, & in omni terra siccitas, sciam quòd per manum meam, sicut locútus es, liberábis I'sraël. Factúmque est ita. Et de nocte consúrgens, expréſſo véllere, concham rore implévit. Dixitque rursùs ad Deum: Ne irascátur furor tuus contra me, si adhuc tentávero, signum quærens in véllere. O[ro], ut solum vellus siccum sit, & omnis terra rore mad[ens]. Fecítque Deus nocte illâ [ut] postuláverat: & fuit sicci[tas] in solo véllere, & ros in o[m]ni terra.

℟. Qui diléxit nos, *p.* 40[...]

LECTIO II. *Cap.* 7. [...]

*Milites Gedeonis.*

I'Gitur Jeróbaal qui & G[é]deon, de nocte cons[ur]gens, & omnis pópulus c[um] eo, venit ad fontem qui v[o]cátur Harad: erant au[tem] castra Mádian in valle ad S[ep]tentrionálem plagam c[olli]s excélsi. Dixítque Dóm[inus] ad Gédeon: Multus te[cum] est pópulus, nec trad[etur] Mádian in manus ejus: [ne] gloriétur contra me I'sr[aël], & dicat: Meis víribus libe[ra]tus sum. Lóquere ad pópu[lum], & cunctis audiénti[bus] prǽdica: qui formidolósus [et] tímidus est, revertátur. Re[ces]serúntque de monte G[a]laad, & revérsi sunt de pópulo vigintíduo míllia virórum, & tantùm decem míllia remansérunt. Dixítque Dó[minus]

...itus ad Gédeon: Adhuc pópulus multus est, duc eos ad aquas, & ibi probábo illos: & de quo díxero tibi ut tecum vadat, ipse pergat: quem ire prohibúero, revertatur. Cúmque descendísset pópulus ad aquas; dixit Dóminus ad Gédeon: Qui linguâ lambúerint aquas, sicut solent canes lámbere, separábis eos seórsùm: qui autem curvátis génibus bíberint, in altera parte erunt. Fuit ítaque númerus eórum qui manu ad os projiciénte lambúerant aquas, trecénti viri. Et ait Dóminus ad Gédeon: In trecéntis viris qui lambuérunt aquas liberábo vos, & tradam in manu tua Mádian: omnis autem réliqua multitúdo revertátur in locum suum. Sumptis itaque pro número cibariis & tubis, omnem réliquam multitúdinem abíre præcépit ad tabernácula sua: & ipse cum trecéntis viris se certámini dedit. Castra autem Mádian erant subter in valle.

℟. Notum fit, p. 402.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. Cap. 8. 1.

*Scientia usus.*

DE iis autem, quæ idólis sacrificántur, scimus quia omnes sciéntiam habémus. Sciéntia inflat, cháritas verò ædíficat. Si quis autem se exístimat scire áliquid, nondum cognóvit quemádmodùm opórteat eum scire. Si quis autem díligit Deum, hic cógnitus est ab eo. De escis autem, quæ idólis immolántur, scimus quia nihil est idólum in mundo, & quòd nullus est Deus, nisi unus. Nam etsi sunt qui dicántur dii, sive in cœlo, sive in terra (síquidem sunt dii multi & dómini multi:) nobis tamen unus Deus, Pater, ex quo ómnia, & nos in illum; & unus Dóminus Jesus Christus, per quem ómnia, & nos per ipsum. Sed non in ómnibus est sciéntia. Quidam autem cum consciéntia usque nunc idóli, quasi idolothytum mandúcant: & consciéntia ipsórum cùm sit infirma, pollúitur. Esca autem nos non commèndat Deo. Neque enim si manducavérimus, abundábimus: neque si non manducavérimus, deficiémus. Vidéte autem ne fortè hæc licéntia vestra offendículum fiat infirmis.

℟. Déxtera Dómini, pag. 402.

*CANON.*

Ex Concílio quarto Mediolanénsi.

*An.* 1565. *Parte* 2.

PA'rochus cùm ad ungéndum infirmum accésserit,

diligénter eum consolétur, & hortétur ut bono ánimo sit, & à curis ac desidériis hujus vitæ ad cœléstis beatitúdinis cogitatiónem érigat, ut abjécto mortis metu, se à Deo in ætérnam réquiem vocári gáudeat.

## FERIA SEXTA.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Misericórdias ....... Beátus pópulus ...., Semel jurávi, *p.* 112. *& seqq.*

De libro Júdicum.

### LECTIO I. *Cap.* 7. 16.

*Madianitæ percussi: Oreb & Zeb occisi.*

DIvísit Gédeon trecéntos viros in tres partes, & dedit tubas in mánibus eórum, lagenásque vácuas, ac lámpades in médio lagenárum. Et dixit ad eos: Quod me fácere vidéritis, hoc fácite: ingrédiar partem castrórum, & quod fécero sectámini. Quando personúerit tuba in manu mea, vos quoque per castrórum circúitum clángite & conclamáte, Dómino & Gedeóni. Ingressúsque est Gédeon, & trecénti viri qui erant cum eo, in partem castrórum, incipiéntibus vigíliis noctis médiæ; & custódibus suscitátis, cœpérunt búccinis clángere, & complódere inter se lagénas. Cúmque per gyrum castrórum in tribus personárent locis, & hydrias confregíssent, tenuérunt sinístris mánibus lámpades, & dextris sonántes tubas, clamaverúntque: Gládius Dómini & Gedeónis, stantes singuli in loco suo per circúitum castrórum hostilium. O'mnia ítaque castra turbáta sunt, & vociferántes ululantésque fugérunt: & nihilóminùs insistébant trecénti viri búccinis personántes. Immisítque Dóminus gládium in ómnibus castris, & mútua se cæde truncábant, fugiéntes usque ad Bethsétta, & crepidinem Abelmehúla in Tebbath. Conclamántes autem viri I'sraël de Néphthali, & Aser, & omni Manásse, persequebántur Mádian. Misítque Gédeon núntios in omnem montem E'phraïm, dicens: Descéndite in occursum Mádian, & occupáte aquas usque Béthbera atque Jordánem. Clamavítque omnis E'phraïm, & præoccupávit aquas atque Jordánem usque Béthbera. Apprehensósque duos viros Mádian Oreb & Zeb, interfécit Oreb in Petra Oreb, Zeb verò in Torculári Zeb. Et persecúti sunt Mádian, cápita Oreb & Zeb portántes ad Gédeon trans fluénta Jordánis.

℟. Jesum à Názareth, pag. 402.

LECTIO II. Cap. 8. 1.
*Zebee & Salmana capti.*

Dixerúntque ad eum viri E'phraïm : Quid est hoc quod fácere voluísti, ut nos non vocáres, cùm ad pugnam pérgeres contra Mádian? jurgántes fórtiter, & propè vim inferéntes. Quibus ille respóndit : Quid enim tale fácere pótui, quale vos fecístis? nonne mélior est racémus E'phraïm, vindémiis Abiézer? In manus vestras Dóminus trádidit príncipes Mádian, Oreb & Zeb : quid tale fácere pótui, quale vos fecístis? Quod cùm locútus fuísset, requiévit spíritus eórum, quo tumébant contra eum. Cúmque venísset Gédeon ad Jordánem, transívit eum cum trecéntis viris qui secum erant : & præ lassitúdine, fugiéntes pérsequi non póterant. Zébee autem & Sálmana requiescébant cum omni exércitu suo. Quíndecim enim míllia viri remánserant ex ómnibus turmis Orientálium populórum, cæsis centum vigínti míllibus bellatórum educéntium gládium. Ascendénsque Gédeon per viam eórum, qui in tabernáculis morabántur ad Orientálem partem Nobe & Jégbaa, percússit castra hóstium, qui secúri erant, & nihil advérsi suspicabántur. Fugerúntque Zébee & Sálmana. quos pérsequens Gédeon comprehéndit, turbáto omni exércitu eórum.

℟. Crédimus sciéntes, *pag.* 402.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap.* 12. 12.
*Ecclesia unum corpus: Singulis membris suum officium.*

Sicut corpus unum est, & membra habet multa, ómnia autem membra córporis, cùm sint multa, unum tamen corpus sunt : ita & Christus. E'tenim in uno Spíritu omnes nos in unum corpus baptizáti sumus, sive Judæi, sive Gentíles, sive servi, sive líberi : & omnes in uno spíritu potáti sumus. Nam & corpus non est unum membrum, sed multa. Si díxerit pes : Quóniam non sum manus, non sum de córpore, num ideò non est de córpore? Et si díxerit auris : Quóniam non sum óculus, non sum de córpore : num ideò non est de córpore? Si totum corpus óculus, ubi audítus? Si totum audítus, ubi odorátus? Nunc autem pósuit Deus membra, unumquódque eórum in córpore sicut vóluit. Quòd si essent ómnia unum membrum, ubi corpus? Non potest autem óculus dícere mánui : O'perâ tuâ non in-

dígeo ; aut iterùm caput pédibus : Non estis mihi necessárii. Sed multò magis quæ vidéntur membra córporis infirmióra esse, necessarióra sunt.

℟. Diligam te, *p.* 402.

*CANON.*

Ex Synodo Abrincénsi.

*Circa Ann.* 1550. *Stat.* 26.

PRæcípimus ómnibus Ecclesiárum rectóribus, ut sæpiùs móneant Parochiános suos, si contingat eos infirmári, priùs spirituálem, scilicet confessórem, quàm corporálem quærere médicum : & quia, adhíbitâ spirituáli ánimæ medicína, méliùs próficit corporális ; ideò ipsis médicis, ad infirmos vocátis, præcéptum est : ut ante ómnia infirmum ad confessiónem indúcant.

SABBATO.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Deus misereátur ... Dómine, refúgium ... Quis novit, *pag.* 118. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 9. 5.

*Abimelech septimus Judex.*

VEnit Abímelech in domum patris sui in Ephra & occídit fratres suos fílios Jeróbaal septuagínta viros, super lápidem unum : remansítque Jóatham fílius Jeróbaal mínimus, & abscónditus est. Congregáti sunt autem omnes viri Sichem, & univérsæ míliæ urbis Mello : abierúnt-que & constituérunt reg Abímelech juxta querc quæ stabat in Sichem. Reg vit itaque Abímelech sup I'sraël tribus annis. Misitq Dóminus spíritum péssim inter Abímelech & habi tóres Sichem : qui cœpérun eum detestári. Porrò Abím lech oppugnábat urbem quam cepit, interféctis h bitatóribus ejus, ipsáq destrúctâ, ita ut sal in e dispérgeret. Abímelech a tem indè profíciscens ve ad óppidum Thebes, qu circúndans obsidébat ex citu. Erat autem turris exc sa in média civitáte, ad qu confúgerant simul viri ac m líeres, & omnes princi civitátis, clausâ firmíssi jánuâ, & super turris tect stantes per propugnác Accedénsque Abímelech ju ta turrim, pugnábat fórtite & appropínquans óstio, ign suppónere nitebátur : & ecc una múlier fragmen molæ d super jáciens, illísit cáp Abímelech, & confrégit c rebrum ejus. Qui vocávit ci armígerum suum, & ait a eum : Evagína gládium tuum, & pércute me : ne fortè dicátur quòd à fémina interféctus sim. Qui jussa perficiens, interfécit eum.

LECTIO II. *Cap.* 10. 1.
*Thola & Jaïr Judices.*

POst Abímelech surréxit dux in I'sraël Thola fílius Phua pátrui Abímelech, vir de Issáchar, qui habitávit in Samir montis E'phraim: & judicávit Israélem vigínti & tribus annis, mortuúsque est, ac sepúltus in Samir. Huic succéssit Jaïr Galaadítes, qui judicávit Israélem per vigínti & duos annos, habens trigínta fílios sedéntes super trigínta pullos asinárum, & príncipes trigínta civitátum, quæ ex nómine ejus sunt appellátæ Havoth Jaïr, id est, óppida Jaïr, usque in præséntem diem, in Terra Gálaad. Mortuúsque est Jaïr, ac sepúltus in loco cui est vocábulum Camon. Fílii autem I'sraël peccátis vetéribus jungéntes nova, fecérunt malum in conspéctu Dómini, & serviérunt idólis, Báalim & A'staroth, & diis Sýriæ ac Sidónis & Moab & filiórum Ammon & Philisthiim: dimiserúntque Dóminum, & non coluérunt eum. Contra quos Dóminus irátus, trádidit eos in manus Philisthiim & filiórum Ammon. Afflictúsque est I'sraël nimis. Et clamántes ad Dóminum, dixérunt: Peccávimus, redde tu nobis quidquid tibi placet: tantùm nunc líbera nos. Quæ dicéntes, ómnia de fínibus suis alienórum deórum idóla projecérunt, & serviérunt Dómino Deo: qui dóluit super misériis eórum. I'taque fílii Ammon conclamántes in Gálaad fixére tentória: contra quos congregáti fílii I'sraël, in Maspha castrametáti sunt. Dixerúntque príncipes Gálaad singuli ad próximos suos: Qui primus ex nobis contra fílios Ammon cœperit dimicáre, erit dux pópuli Gálaad.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Coríntios.

LECTIO III. *Cap.* 12. 23.
*Corporis membra invicem se adjuvant.*

QUæ putámus ignobilióra membra esse córporis, his honórem abundantiórem circúndamus: & quæ inhonésta sunt nostra, abundantiórem honestátem habent. Honésta autem nostra nullíus egent: sed Deus temperávit corpus, ei, cui déerat, abundantiórem tribuéndo honórem, ut non sit schisma in córpore, sed idípsum pro ínvicem sollícita sint membra. Et si quid pátitur unum membrum, compatiúntur ómnia membra: sive gloriátur unum membrum, congáudent ómnia membra. Vos autem estis corpus Christi & membra de membro. Et quosdam quidem

pósuit Deus in Ecclésia primùm Apóstolos, secúndò Prophétas, tértiò Doctóres, deínde virtútes, exínde grátias curatiónum, opitulatiónes, gubernatiónes, génera linguárum, interpretatiónes sermónum. Nunquid omnes Apóstoli? Nunquid omnes Prophétæ? Nunquid omnes Doctóres? Nunquid omnes virtútes? Nunquid omnes grátiam habent curatiónum? Nunquid omnes linguis loquúntur? Nunquid omnes interpretántur. Æmulámini autem charísmata melióra. Et adhuc excellentiórem viam vobis demónstro.

*CANON.*

Ex Concílio Rheménsi.

*An.* 1583. *de Extremâ-Unctione.*

NOn putet suo satisfáctum officio Sacérdos, si semel tantùm ægrótum invíserit, dùm únctio fuit adhibénda: sed, quàm diutíssimè póterit, eum consolétur, & incúlcet quæ spectant ad salútem; eíque, quoúsque è vivis excésserit, assístat, & óperam impéndat.

AD VESPERAS.

*Omnia ut in Sabbato ante Dominicam in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum. Act.* 2. 31.

PRophéta próvidens locútus est de resurrectióne Christi, quia neque derelictus est in inférno, neque caro ejus vidit corruptiónem.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. d. Veritátem faciéntes in charitáte, crescámus in illo per ómnia, qui est caput Christus, allelúia. *Ephes.* 4. 15.

*Oratio, ut infrà ad Laudes.*

---

DOMINICA QUARTA POST PASCHA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Omnia ut in Dominica in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Psal.* Quemádmodum desíderat.... Ad meípsum ánima mea.... Quàm dilécta, *p.* 119. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 11. 29.

*Jephte votum & victoria.*

FActus est super Jephte Spíritus Dómini, & circúiens Gálaad, & Manásse, Maspha quoque Gálaad, & inde tránsiens ad fílios Ammon votum vovit Dómino, dicens: Si tradíderis fílios Ammon in manus meas, quicúnque primus fúerit egréssus de fóribus domûs meæ, mihíque occúrrerit reverténti cum pace à fíliis Ammon, eum holocáustum ófferam Dómino. Transivítque Jephte ad fílios Ammon, ut pugnáret contra eos: quos trádidit

lit Dóminus in manus ejus.
ercussítque ab A'roër usque
ùm vénias in Mennith, vi-
nti civitátes, & usque ad
bel, quæ est víneis cónsita,
agâ magnâ nimis: humilia-
que sunt filii Ammon à
is Israël. Reverténte autem
phte in Maspha domum
am, occúrrit ei unigénita
a sua cùm týmpanis &
oris: non enim habébat
os líberos. Quâ visâ, scidit
timénta sua, & ait: Heu
, fília mea, decepísti me,
ipsa decépta es: apérui
m os meum ad Dóminum,
áliud fácere non pótero.
i illa respóndit: Pater mi,
peruísti os tuum ad Dómi-
n, fac mihi quodcúnque
lícitus es, concéssâ tibi
óne atque victóriâ de
ibus tuis. Dixítque ad
tem: Hoc solum mihi
sta quod déprecor: Di-
e me ut duóbus ménsi-
circúmeam montes, &
gam virginitátem meam
i sodálibus meis. Cui ille
óndit: Vade. Et dimísit
duóbus ménsibus. Cúm-
abiísset cum sóciis ac so-
bus suis, flebat virginitá-
suam in móntibus. Exple-
ie duóbus ménsibus, re-
sa est ad patrem suum,
ecit ei sicut vóverat, quæ
orábat virum.
. Benedíctus Deus, qui se-
cúndùm misericórdiam suam
magnam * Regenerávit nos
in spem vivam, per resurrec-
tiónem Jesu Christi ex mór-
tuis, in hereditátem incor-
ruptíbilem, & incontaminá-
tam, allelúia, 1. *Petr.* 1. *v.* 3.
4. ℣. Omnes Gentes, pláudi-
te mánibus: jubiláte Deo in
voce exultatiónis. *Ps.* 46. 2.
* Regenerávit.

De libro Ecclesiástæ.

LECTIO II. *Cap.* 5. 1.

*Votum citò reddendum.*

NE témerè quid loquáris, neque cor tuum sit velox ad proferéndum sermónem coram Deo. Deus enim in cœlo, & tu super terram: idcircò sint pauci sermónes tui. Multas curas sequúntur sómnia, & in multis sermónibus inveniétur stultítia. Si quid vovísti Deo, ne moréris réddere: dísplicet enim ei infidélis & stulta promíssio, sed quodcúnque vóveris, redde: multóque mélius est non vovére, quàm post votum promíssa non réddere. Ne déderis os tuum ut peccáre fácias carnem tuam: neque dicas coram A'ngelo: Non est providéntia: ne fortè irátus Deus contra sermónes tuos, díssipet cuncta ópera mánuum tuárum.

℟. Quæ ad patres nostros repromíssio facta est, hanc Deus adimplévit, * Resúſ-

citans Jesum, allelúia. *Act.* 13. *v.* 32. 33. ℣. Notam fecísti in pópulis virtútem tuam. *Ps.* 76. 15. * Resúscitans.

Léctió sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 16. 5.

*Effectus Paracleti à Christo promissi.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Vado ad eum, qui misit me; & nemo ex vobis intérrogat me, quò vadis? Sed quia hæc locútus sum vobis, tristítia implévit cor vestrum; sed ego veritátem dico vobis: éxpedit vobis ut ego vadam. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. Evang. Tract.* 94.

EXpedit vobis ut hæc forma servi auferátur à vobis: caro quidem factum Verbum hábito in vobis, sed nolo me carnáliter adhuc diligátis, & isto lacte conténti semper infántes esse cupiátis. [Expedit vobis ut ego vadam; si enim non abíero, Paraclétus non véniet ad vos.] Si aliménta ténera, quibus vos álui, non subtráxero, sólidum cibum non esuriétis; si carni carnáliter hæséritis, capáces Spíritûs non éritis.

℟. Cùm vénerit Paraclétus, * Arguet mundum de peccáto, & de justítia, & de judício, † Allelúia, allelúia. *Joan.* 16. 8. ℣. Judicábit Dóminus Gentes, & árguet pópulos multos. *Isa.* 2. 4. * Arguet. ℣. Glória. † Allelúia.

AD LAUDES ET MATUTINAS.

*Omnia ut in Dominica in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum Jac.* 1. *v.* 16. 17.

FRatres mei dilectíssimi, omne datum óptimum, & omne donum perféctum desúrsùm est, descéndens à Patre lúminum, apud quem non est transmutátio, nec vicissitúdinis obumbrátio.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. *reg.* d. Si non abíero, Paraclétus non véniet ad vos; si autem abíero, mittam eum ad vos, allelúia. *Joan.* 16.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui fidélium mentes unius éfficis voluntátis: da pópulis tuis id amáre quod præcipis, id desideráre quod promíttis: ut inter mundánas varietátes ibi nostra fixa sint corda, ubi vera sunt gáudia. Per Dóminum.

*Ad Primam & alias Horas Antiph.* 7. D. Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia. *Psalmi de Dominica, Resp. brevia & Versiculi, ut in Feriis temporis Paschalis, pag.* 740.

CANON.
Ex Synodo Rotomagénsi.
*Anno* 1642. *c.* 2.

OFficium Ecclesiásticum in ómnibus Ecclésiis Pa-rochiálibus non álio quàm diœcesáno ritu deínceps peragátur. Singuli verò Clérici sacras ceremónias, & minis-teriórum suórum praxim assíduis lectiónibus, collatióni-bus, exercítiis diligénter edis-cant.

AD TERTIAM.

*Capitulum Jac.* 1. 18.

VOluntárie génuit nos Deus verbo veritátis, ut simus inítium áliquod creaturæ ejus.

AD SEXTAM.

*Capitulum. Jac.* 1. *v.* 19. 20.

SIt omnis homo velox ad audiéndum, tardus autem ad loquéndum, & tardus ad iram. Ira enim viri justítiam Dei non operátur.

AD NONAM.

*Capitulum. Jac.* 1. 21.

ABjiciéntes omnem immundítiam & abundántiam malítiæ suscípite insitum verbum, quod potest salváre ánimas vestras.

AD VESPERAS.

*Omnia ut in Dominica in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum. Colóss.* 3. *v.* 3. 4.

MO'rtui estis, & vita vestra abscóndita est cum Christo in Deo. Cùm Christus apparúerit vita vestra, tunc & vos apparébitis cum ipso in glória.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 7. c. Cùm vénerit Spíritus veritátis, docébit vos omnem veritátem; non enim loquétur à semetipso, sed quæcúnque áudiet, loquétur, allelúia. *Joan.* 16. 13.

*Oratio*, Deus qui, *ut suprà ad Laudes.*

---

FERIA SECUNDA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* Dóminus regit me . . Benedícam . . . . Veníte, fílii, *p.* 121. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 12. 1.

*Vox Scibboleth.*

ECce autem in E'phraím orta est sedítio; nam transeúntes Aquilónem, dixérunt ad Jephte: Quare vadens ad pugnam contra fílios Ammon vocáre nos noluísti, ut pergerémus tecum? I'gitur incendémus domum tuam. Quibus ille respóndit: Disceptátio erat mihi & pópulo meo contra fílios Ammon véhemens: vocavíque vos, ut præberétis mihi auxílium, & fácere noluístis. Quod cernens

pósui ánimam meam in mánibus meis, transivíque ad fílios Ammon, & trádidit eos Dóminus in manus meas. Quid comméruí, ut advérsùm me consurgátis in prælium? Vocátis ítaque ad se cunctis viris Gálaad, pugnábat contra E'phraïm: percusserúntque viri Gálaad E'phraïm, quia díxerat: Fugitívus est Gálaad de E'phraïm, & hábitat in médio E'phraïm & Manásse. Occupaverúntque Galaadítæ vada Jordánis, per quæ E'phraïm reversúrus erat. Cúmque veníſſet ad ea de E'phraïm número, fúgiens, atque dixíſſet: O'bsecro ut me transíre permittátis: dicébant ei Galaadítæ: Nunquid Ephrathæus es? quo dicénte: Non sum; interrogábant eum: Dic ergo Scíbboleth, quod interpretátur Spica. Qui respondébat, Síbboleth: eâdem litterâ spicam exprímere non valens. Statímque apprehénsum jugulábant in ipso Jordánis tránsitu. Et cecidérunt in illo témpore de E'phraïm quadragínta duo míllia.

℟. Si mórtui sumus, *p.* 401.

LECTIO II. *v.* 7.

*Mors Jephte: Tres ejus successores.*

JUdicávit ítaque Jephte Galaadítes I'sraël sex annis: & mórtuus est, ac sepúltus in civitáte sua Gálaad. Post hunc judicávit I'sraël Abésan de Béthleem: qui hábuit trigínta fílios, & tótidem fílias, quas emíttens forás, marítis dedit, & ejúsdem númeri fíliis suis accépit uxóres, introdúcens in domum suam. Qui septem annis judicávit I'sraël. Mortuúsque est, ac sepúltus in Béthleem. Cui successit Ahíalon Zabulonítes: & judicávit I'sraël decem annis: mortuúsque est, ac sepúltus in Zábulon. Post hunc judicávit I'sraël Abdon fílius Illel Pharathonítes: qui hábuit quadragínta fílios, & trigínta ex eis nepótes, ascendéntes super septuagínta pullos asinárum, & judicávit I'sraël octo annis; mortuúsque est, ac sepúltus in Pharathon terræ E'phraïm, in monte A'malec.

℟. Grátias Deo, *p.* 401.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap.* 13.

*Charitatis dotes.*

SI linguis hóminum loquar & Angelórum; charitátem autem non hábeam, factus sum velut æs sonans, aut cýmbalum tínniens. Et si habúero Prophetíam, & nóverim mystéria ómnia, & omnem sciéntiam; & si habúero omnem fidem ita ut montes

transferam, charitátem autem non habúero, nihil sum. Et si distribúero in cibos páuperum omnes facultátes meas, & si tradídero corpus meum, ita ut árdeam, charitátem autem non habúero, nihil mihi prodest. Cháritas pátiens est, benígna est: Cháritas non æmulátur, non agit pérperàm, non inflátur, non est ambitiósa, non quærit quæ sua sunt, non irritátur, non cógitat malum; non gaudet super iniquitáte, congáudet autem veritáti. O'mnia suffert, ómnia credit, ómnia sperat, ómnia sústinet.

℟. Benedíctus Deus, *pag.* 501.

*CANON.*

Ex Sýnodo Rotomagénsi.

*Anno* 1640. *can.* 3.

OMnes Parochiáles Ecclésiæ in Cursu ecclesiástico peragéndo sanctæ Metropolitánæ Ecclésiæ ritum téneant, nec áliis quàm Diœcesánis libris utántur.

FERIA TERTIA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Deus, venérunt Gentes... Qui regis I'sraël.... Víneam de Ægypto, *pag.* 123. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 13. 1.

*Apparitio Angeli ad Manue.*

RUrsùm filii I'sraël fecérunt malum in conspéctu Dómini: qui trádidit eos in manus Philisthinórum quadragínta annis. Erat autem quidam vir de Sáraa & de stirpe Dan, nómine Mánue, habens uxórem stérilem. Cui appáruit A'ngelus Dómini, & dixit ad eam: Stérilis es & absque líberis: sed concípies & páries filium: cave ergo ne bibas vinum ac síceram, nec immúndum quidquam cómedas: quia concípies, & páries filium, cujus non tanget caput novácula: erit enim Nazaræus Dei ab infántia sua, & ex matris útero, & ipse incípiet liberáre I'sraël de manu Philisthinórum. Quæ cùm venísset ad marítum suum, dixit ei: Vir Dei venit ad me, habens vultum Angélicum, terríbilis nimis. Quem cùm interrogássem, quis esset, & unde venísset, & quo nómine vocarétur, nóluit mihi dícere. Dixítque Mánue ad A'ngelum Dómini: O'bsecro te ut acquiéscas précibus meis, & faciámus tibi hœdum de capris. Cui respóndit A'ngelus: Si me cogis, non cómedam panes tuos: si autem vis holocáustum fácere, offer illud Dómino. Et nesciébat Mánue quòd A'ngelus Dómini esset. Dixítque ad eum: Quod est tibi nomen, ut, si sermo tuus

fúerit explétus, honorémus te? Cui ille respóndit; Cur quæris nomen meum, quod est mirábile?

℟. Deus, qui dives, *p.* 401.

LECTIO II. *v.* 19.

*Sacrificium Manue: Nativitas Samson.*

TUlit itaque Mánue hœdum de capris, & libaménta, & pósuit super petram, ófferens Dómino, qui facit mirabília; ipse autem & uxor ejus intuebántur. Cúmque ascénderet flamma altáris in cœlum, A'ngelus Dómini páriter in flamma ascéndit. Quod cùm vidíssent Mánue & uxor ejus, proni cecidérunt in terram, & ultrà eis non appáruit A'ngelus Dómini. Statímque intelléxit Mánue A'ngelum Dómini esse, & dixit ad uxórem suam: Morte moriémur, quia vídimus Deum. Cui respóndit múlier: Si Dóminus nos vellet occídere, de mánibus nostris holocáustum & libaménta non suscepísset, nec ostendísset nobis hæc ómnia, neque ea quæ sunt ventúra dixísset. Péperit itaque fílium, & vocávit nomen ejus Samson, crevítque puer, & benedíxit ei Dóminus. Cœpítque Spíritus Dómini esse cum eo in castris Dan, inter Sáraa & E'sthaol.

℟. Dóminus regnávit, *p.* 401.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap.* 13. 8.

*Deum perfectè non cognoscimus in hac vita.*

CHáritas nunquam éxcidit; sive Prophetiæ evacuabúntur, sive linguæ cessábunt, sive sciéntia destruétur. Ex parte enim cognóscimus, & ex parte prophetámus. Cùm autem vénerit quod perféctum est, evacuábitur quòd ex parte est. Cùm essem párvulus, loquébar ut párvulus, sapiébam ut párvulus, cogitábam ut párvulus. Quando autem factus sum vir, evacuávi quæ erant párvuli. Vidémus nunc per spéculum in ænígmate: tunc autem fácie ad fáciem. Nunc cognósco ex parte: tunc autem cognóscam sicut & cógnitus sum. Nunc autem manent fides, spes, cháritas, tria hæc: major autem horum est cháritas.

℟. Christus mórtuus est, *p.* 401.

*CANON.*

Ex Synodo Rotomagénsi, *Anno* 1640. *c.* 4. & 5.

ORdo ad divína Officia celebránda in Manuali præscríptus ab ómnibus servétur; & Decanórum stúdio per opportunióra Civitátis &

Diœcesis loca scholæ cantûs & ceremoniárum Ecclesiasticárum instituántur, ad quas Clérici certis diébus è vicínia discéndi causâ convéniant.

## FERIA QUARTA.

### Ad Officium Nocturnum.

*Psal.* Quid gloriáris ..... Exáudi, Deus.... Vésperè & manè, *p.* 130. *& seqq.*

De libro Júdicum.

Lectio I. *Cap.* 14. 1. *&* 15. 5.

*Samson uxorem ducit Philisthinam.*

DEscéndit Samson in Thámnatha, vidénsque ibi mulíerem de filiábus Philísthiim, ascéndit, & nuntiávit patri suo, & matri suæ, dicens: Vidi mulíerem in Thámnatha de filiábus Philisthinórum: quam quæso ut mihi accipiátis uxórem. Descéndit itaque pater ejus ad mulíerem, & fecit fílio suo Samson convívium. Sic enim juvenes fácere consuéverant. Cùm ergo cives loci illíus vidíssent eum, dedérunt ei sodáles trigínta ut essent cum eo. Uxor autem ejus accépit marítum unum de amícis ejus et prónubis. Perrexítque Samson & cepit trecéntas vulpes, caudásque eárum junxit ad caudas, & faces ligávit in médio: quas igne succéndens, dimísit, ut huc illúcque discúrrerent. Quæ statim perrexérunt in ségetes Philisthinórum. Quibus succénsis, & comportátæ jam fruges, & adhuc stantes in stipula, concremátæ sunt, in tantùm, ut víneas quoque & olivéta flamma consúmeret. Dixerúntque Philísthiim: Quis fecit hanc rem? Quibus dictum est: Samson gener Thamnathæi: quia tulit uxórem ejus, & álteri trádidit, hæc operátus est. Ascenderúntque Philísthiim: & combussérunt tam mulíerem quàm patrem ejus. Quibus ait Samson: Licèt hæc fecéritis, tamen adhuc ex vobis éxpetam ultiónem, & tunc quiéscam. Percussítque eos ingénti plagâ, ita ut stupéntes suram fémori impónerent. Et descéndens habitávit in spelúnca petræ Etam.

℞. Sive vívimus, *p.* 737.

Lectio II. *Cap.* 15. 11.

*Samson solvit vincula sua.*

DEscendérunt tria míllia virórum de Juda ad specum sílicis Etam, dixerúntque ad Samson: Nescis quòd Philísthiim ímperent nobis? Ligaverúntque eum duóbus novis fúnibus, & tulérunt eum de petra Etam. Qui cùm venísset ad locum maxíllæ, & Philísthiim vociferántes occurríssent ei, irruit Spíritus Dómini in eum: & sicut solent ad odórem ignis

lina consúmi, ita víncula quibus ligátus erat, dissipáta sunt & solúta. Judicavítque Isráël in diébus Philísthiim vigínti annis.

℟. Quæ ad patres, *p.* 402.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Colossénses.

LECTIO III. *Cap.* 2. 9.

*Christus per crucem delevit chirographum nobis contrarium.*

IN Christo inhábitat omnis plenitúdo divinitátis corporáliter: & estis in illo repléti, qui est caput omnis principátûs, & potestátis: in quo & circuncísi estis circuncisióne non manu factâ in expoliatióne córporis carnis, sed in circuncisióne Christi: consepúlti ei in baptísmo, in quo & resurrexístis per fidem operatiónis Dei, qui suscitávit illum à mórtuis. Et vos cùm mórtui essétis in delíctis, & præpútio carnis vestræ, convivificávit cum illo, donans vobis ómnia delícta: delens quod advérsùs nos erat chirógraphum decréti, quod erat contrárium nobis, & ipsum tulit de médio, affigens illud cruci: & expólians principátus & potestátes, tradúxit confidénter, palàm triúmphans illos in semetípso.

℟. Deus meus es tu, *pag.* 402.

CANON.

Ex Synodo Bajocénsi.

*Anno* 1518. *Can.* 9.

VAsa & ornaménta Ecclesiástica cúltui & servítio divíno deserviéntia & deputáta, munda & nítida conservéntur, nullis máculis aut sórdibus pollúta.

FERIA QUINTA

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalm.* E'ripe me.... Deus osténdet.... Exáudi, Deus, *p.* 131. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 16. 1.

*Proditus Samson à Dalila.*

ABiit Samson in Gazam, & vidit ibi mulierem meretrícem, ingressúsque est ad eam. Quod cùm audíssent Philísthiim, & percrebruísset apud eos, intrásse urbem Samson, circundedérunt eum, pósitis in porta civitátis custódibus: & ibi tota nocte cum siléntio præstolántes, ut facto manè exeúntem occíderent. Dormívit autem Samson usque ad médium noctis: & inde consúrgens, apprehéndit ambas portæ fores cum póstibus suis & sera, impositásque húmeris suis portávit ad vérticem montis, qui réspicit Hebron. Post hæc amávit mulierem quæ habitábat in valle Sorec, & vocabátur Dálila. Venerúntque

ad eam príncipes Philisthinórum, atque dixérunt: Décipe eum, & disce ab illo, in quo hábeat tantam fortitúdinem, & quómodò eum superáre valeámus, & vinctum affligere. Quod si féceris, dábimus tibi singuli mille & centum argénteos. Cúmque moléfta esset ei, & per multos dies júgiter adhæréret, spátium ad quiétem non tribuens, defécit ánima ejus, & ad mortem usque lassáta est. Tunc apériens veritátem rei, dixit ad eam: Ferrum nunquam ascéndit super caput meum, quia Nazaræus, id est, consecrátus Deo sum de útero matris meæ: si rasum fúerit caput meum, recédet à me fortitúdo mea, & defíciam, erόque sicut céteri hómines. Vidénsque illa; quòd conféssus ei esset omnem ánimum suum, misit ad príncipes Philisthinórum, ac mandávit: Ascéndite adhuc semel, quia nunc mihi apéruit cor suum. Qui ascendérunt, assúmpta pecúnia, quam promíserant. At illa dormíre eum fecit super génua sua, & in sinu suo reclináre caput. Vocavítque tonsórem, & rasit septem crines ejus, & cœpit abígere eum, & à se repéllere: statim enim ab eo fortitúdo discéssit. Quem cùm apprehendíssent Philisthiim, statim eruérunt óculos ejus, & duxérunt Gazam vinctum caténis, & clausum in cárcere mólere fecérunt.

℟. Qui diléxit, *p.* 402.

LECTIO II. *v.* 22.

*Mors Samson.*

JAm capílli ejus renásci cœperant, & príncipes Philisthinórum convenérunt in unum ut immolárent hóstias magníficas Dagon deo suo, & epularéntur, dicéntes; Trádidit deus noster inimícum nostrum Samson in manus nostras. Quod étiam pópulus videns, laudábat deum suum, eadémque dicébat: Trádidit deus noster adversárium nostrum in manus nostras, qui delévit terram nostram, & occídit plúrimos. Lætantésque per convívia, sumptis jam épulis, præcepérunt ut vocarétur Samson, & ante eos lúderet. Qui addúctus de cárcere ludébat ante eos, fecerúntque eum stare inter duas colúmnas. Qui dixit púero regénti gressus suos: Dimítte me, ut tangam colúmnas, quibus omnis ímminet domus, & reclíner super eas, & páululùm requiéscam. Domus autem erat plena virórum ac mulíerum, & erant ibi omnes príncipes Philisthinórum, ac de tecto & solário círciter tria míllia utriúsque

que sexûs spectántes ludéntem Samson. At ille invocáto Dómino, ait: Dómine Deus, meménto mei, & redde mihi nunc fortitúdinem prístinam, Deus meus, ut ulcíscar me de hóstibus meis, & pro amissióne duórum lúminum, unam ultiónem recípiam. Et apprehéndens ambas colúmnas, quibus innitebátur domus, alterámque eárum déxterâ & álteram lævâ tenens, ait: Moriátur ánima mea cum Philísthiim. Concussísque fórtiter colúmnis, cécidit domus super omnes príncipes, & céteram multitúdinem, quæ ibi erat: multóque plures interfécit móriens, quàm antè vivus occíderat. Descendéntes autem fratres ejus & univérsa cognátio, tulérunt corpus ejus, & sepeliérunt inter Sáraa & E'sthaol in sepúlchro patris sui Mánue: judicavítque I'sraël vigínti annis.

℟. Notum sit, p. 402.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. Cap. 3. 9.

*Fideles ædificium Dei; Christus fundamentum.*

DEi sumus adjutóres: Dei agricultúra estis, Dei ædificátio estis. Secúndùm grátiam Dei, quæ data est mihi, ut sápiens architéctus fundaméntum pósui; álius autem superædíficat. Unusquísque autem vídeat quómodò superædíficet. Fundaméntum enim áliud nemo potest pónere, præter id quod pósitum est, quod est Christus Jesus. Si quis autem superædíficat super fundaméntum hoc, aurum, argéntum, lápides pretiósos, ligna, fœnum, stípulam, uniuscujúsque opus maniféstum erit: Dies enim Dómini declarábit, quia in igne revelábitur: & uniuscujúsque opus, quale sit, ignis probábit. Si cujus opus mánserit quod superædificávit, mercédem accípiet. Si cujus opus árserit, detriméntum patiétur: ipse autem salvus erit; sic tamen quasi per ignem.

℟. Déxtera Dómini, p. 402.

CANON.

Ex Sýnodo Constantiénsi Anno 1294. can. 29.

IMágines vetustáte deformátæ, & linteámina sacra vetustáte attríta, sacris úsibus inutília, comburántur, & mundo loco intra parietem Ecclésiæ pulvis in sacrário reponátur.

FERIA SEXTA.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Salvum me fac.... Exáudi me.... Laudábo, *pag.* 133. *& seqq.*

De libro Júdicum.

LECTIO I. *Cap.* 19. 17.

*Uxor Levitæ injuriosè tractata.*

ELevátis óculis vidit senex sedéntem hóminem cum sarcínulis suis in platéa civitátis Gábaa. Introduxítque eum in domum suam, & pábulum ásinis præbuit, ac postquàm lavérunt pedes suos, recépit eos in convívium. Illis epulántibus, & post labórem itíneris, cibo & potu reficiéntibus córpora, venérunt viri civitátis illíus, filii Bélial, (id est absque jugo) & circundántes domum senis, fores pulsáre cœpérunt, clamántes ad dóminum domûs, atque dicéntes: Educ virum, qui ingréssus est domum tuam. Egréssus est ad eos senex, & ait: Nolíte fratres, nolíte fácere malum hoc. Nolébant acquiéscere sermónibus illíus. Quod cernens homo, edúxit ad eos concubínam suam, quâ cùm totâ nocte abúsi essent, dimisérunt eam manè. At múlier, recedéntibus ténebris, venit ad óstium domûs, ubi manébat dóminus suus, & ibi córruit. Manè facto surréxit homo, & apéruit óstium, ut cœptam expléret viam: & ecce concubína ejus jacébat ante óstium, sparsis in límine mánibus. Cui ille, putans eam quiéscere, loquebátur: Surge, & ambulémus. Quâ nihil respondénte, intélligens quòd erat mórtua, tulit eam, & impósuit ásino, reversúsque est in domum suam. Quam cùm esset ingréssus, arrípuit gládium, & cadáver uxóris cum óssibus suis in duódecim partes ac frusta concídens, misit in omnes términos I'sraël. Quod cùm vidíssent sínguli, conclamábant: Nunquàm res talis facta est in I'sraël, ex eo die quo ascendérunt patres nostri de Ægýpto, usque in præsens tempus: ferte senténtiam, & in commúne decérnite quid facto opus sit.

℟. Jesum à Názareth, *p.* 402.

LECTIO II. *Cap.* 20. 11.

*Benjamitæ puniti.*

COnvenítque univérsus I'sraël ad civitátem, quasi homo unus, eâdem mente, unóque consílio: & misérunt núntios ad omnem tribum Bénjamin, qui dícerent: Cur tantum nefas in vobis repértum est? Trádite hómines de Gábaa, qui hoc flagítium perpetrárunt, ut moriántur, & auferátur malum de I'sraël. Qui noluérunt fratrum suórum filiórum I'sraël audíre mandátum. Posuerúntque fílii I'sraël insídias per circúitum urbis Gábaa.

Atque ita factum est, ut ex utráque parte (filii Bénjamin) ab hóstibus cæderéntur, nec erat ulla réquies moriéntium. Cecidérunt, atque prostráti sunt ad Orientálem plagam urbis Gábaa. Fuérunt autem qui in eódem loco interfécti sunt, decem & octo míllia virórum, omnes robustíssimi pugnatóres. Quod cùm vidíssent qui remánserant de Bénjamin, fugérunt in solitúdinem: & pergébant ad Petram, cujus vocábulum est Remmon. In illa quoque fuga palántes, & in divérsa tendéntes, occidérunt quinque míllia virórum. Et cùm ultrà ténderent, persecúti sunt eos, & interfecérunt étiam ália duo míllia. Et sic factum est, ut omnes qui cecíderant de Bénjamin in divérsis locis, essent vigínti quinque míllia, pugnatóres ad bella promptíssimi. Remansérunt ítaque de omni número Bénjamin, qui evádere, & fúgere in solitúdinem potuérunt, sexcénti viri; sederúntque in Petra Remmon, ménsibus quátuor. Regréssi autem filii Isráël, omnes relíquias civitátis à viris usque ad juménta, gládio percussérunt, cunctásque urbes & vículos Bénjamin vorax flamma consúmpsit.

℟. Crédimus sciéntes, *p.* 402.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap.* 6. 15.

*Corpus Christiani templum est Spiritûs sancti.*

NEscítis quóniam córpora vestra membra sunt Christi? Tollens ergo membra Christi, fáciam membra meretrícis? Absit. An nescítis quóniam qui adhǽret meretríci, unum corpus effícitur? Erunt enim, inquit, duo in carne una. Qui autem adhǽret Dómino, unus spíritus est. Fúgite fornicatiónem. Omne peccátum, quodcúmque fécerit homo, extra corpus est: qui autem fornicátur, in corpus suum peccat. An nescítis quóniam membra vestra templum sunt Spíritûs sancti, qui in vobis est, quem habétis à Deo, & non estis vestri? Empti enim estis prétio magno. Glorificáte & portáte Deum in córpore vestro.

℟. Díligam te, *p.* 402.

*CANON.*

Ex Sýnodo Constantiénsi, *Ann.* 1294. *can.* 9.

COrporália munda custodiántur, & ablúat ea sæpe Sacérdos, sive Diáconus superlício indútus, & in vase speciáliter ad hoc deputáto, & ablutiónes in piscínam ponántur.

SABBATO.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Júdica, Dómine.... Surgéntes testes... Exúrge & inténde, *pag.* 139. *& seqq.*

Incipit liber Ruth.

LECTIO I. *Cap.* 1. 1.

*Noëmi vidua & filiis suis orbata.*

IN diébus unius Júdicis, quando Júdices præérant, ...ta est fames in terra: abiít...e homo de Béthleem Juda, ...t peregrinarétur in regióne ...oabítide, cum uxóre sua ...c duóbus líberis. Ipse voca...itur Elímelech, & uxor ...us Noémi: & duo fílii, alter ...ahalon, & alter Chélion, ...phratæi de Béthleem Juda. ...gressíque regiónem Moabí...dem, morabántur ibi. Et ...órtuus est Elímelech marí... Noémi: remansítque ipsa ...m fíliis. Qui accepérunt ...óres Moabítidas, quarum ...a vocabátur Orpha, áltera ...ò Ruth. Mansérúntque ibi ...cem annis, & ambo mór...i sunt, Máhalon vidélicet ...Chélion: remansítque mú...r orbáta duóbus líberis ac ...aríto.

LECTIO II. *v.* 6.

*...ëmi rediens in terram Juda nurus suas vult dimittere.*

SUrréxit ut in pátriam pérgeret, cum utráque nuru ...a de regióne Moabítide: audíerat enim quòd respexísset Dóminus pópulum suum, & dedísset eis escas. Egréssa est ítaque de loco peregrinatiónis suæ cum utráque nuru: & jam in via reverténdi pósita in Terram Juda, dixit ad eas: Ite in domum matris vestræ, fáciat vobíscum Dóminus misericórdiam, sicut fecístis cum mórtuis & mecum. Det vobis invenire réquiem in dómibus virórum, quos sortitúræ estis. Et osculáta est eas. Quæ elevátâ voce flere cœpérunt, & dícere: Tecum pergémus ad pópulum tuum. Quibus illa respóndit: Revertímini, fíliæ meæ, cur venítis mecum? num ultrà hábeo fílios in útero meo, ut viros ex me speráre possítis. Revertímini, fíliæ meæ, & abíte: jam enim senectúte conféеcta sum, nec apta vínculo conjugáli: etiámsi possem hac nocte concípere, & párere fílios, si eos expectáre velítis, donec créscant, & annos pubertátis ímpleant, antè éritis vétulæ quàm nubátis. Nolíte, quæso, fíliæ meæ: quia vestra angústia magis me premit, & egréssa est manus Dómini contra me. Elevátâ ígitur voce, rursùm flere cœpérunt: Orpha osculáta est socrum, ac revérsa est.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap. 9. 13.*

*Paulus gratuitò Evangelium annuntiat.*

NEscítis quóniam qui in sacrário operántur, quæ de sacrário sunt, edunt: & qui altári desérviunt, cum altári partícipant? Ita & Dóminus ordinávit iis, qui Evangélium annúntiant, de Evangélio vívere. Ego autem nullo horum usus sum. Non autem scripsi hæc ut ita fiant in me: bonum est enim mihi magis mori, quàm ut glóriam meam quis evácuet. Nam si evangelizávero, non est mihi glória: necéssitas enim mihi incúmbit: væ enim mihi est, si non evangelizávero. Si enim volens hoc ago, mercédem hábeo, si autem invítus, dispensátio mihi crédita est: quæ est ergo merces mea? Ut Evangélium prædicans, sine sumptu ponam Evangélium, ut non abútar potestáte meâ in Evangélio.

*CANON.*

Ex Sýnodo Abrincénsi.

*Anno* 1647. *Can.* 8.

PRohibémus cuicúnque Presbýtero, ne inter celebrándum álios adhíbeat ritus, præter approbátos ab Ecclésia.

AD VESPERAS.

*Omnia ut in Sabbato ante Dominicam in Albis, except[is] quæ sequuntur.*

*Capitulum. Zach.* 12. 10.

EFfúndam super dom[um] David & super habitató[res] Jerúsalem Spíritum grátiæ & precum, & aspícient a[d] me quem confixérunt.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. C[onfiguratus] Configurátus sum morti Je[su] Christi Dómini mei, si quo[] modò occúrram ad resurre[c]tiónem quæ est ex mórtu[is] allelúia. *Philipp.* 3. *v.* 10. 1[1]

*Oratio, ut infrà ad Laud[es].*

DOMINICA QUINTA POST PASCHA.

AD OFFICIUM NOCTURN[UM].

*Omnia ut in Dominica [in] Albis, exceptis quæ seq[uun]tur.*

*Psal.* Júdica me, Dómin[e] Expéctans expectávi... A[n]nuntiávi justítiam, *pag.* 1[] *& seqq.*

De libro Ruth.

LECTIO I. *Cap.* 1. 14.

*Ruth adhæret socrui suæ.*

RUth adhæsit sócrui su[æ]. Cui dixit Noémi: E[n] revérsa est cognáta tua [ad] pópulum suum, & ad d[eos] suos, vade cum ea. Quæ respóndit: Ne adverséris mi[hi] ut relínquam te, & ábeam: quocúnque enim perréxeris, pergam: & ubi moráta fúeris, & ego páriter morábor. Pópulus tuus pópulus meus,

Deus tuus, Deus meus. Quæ te terra moriéntem suscéperit, in ea móriar: ibíque locum accípiam sepultúræ. Hæc mihi fáciat Dóminus, & hæc addat, si non sola mors me & te separáverit. Videns ergo Noémi quòd obstináto ánimo Ruth decrevísset secum pérgere, adversári nóluit, nec ad suos ultrà réditum persuadére. Profectǽque sunt simul, & venérunt in Béthleem. Quibus urbem ingréssis, velox apud cunctos fama percrébruit: dicebántque mulíeres: Hæc est illa Noémi. Quibus ait: Ne vocétis me Noémi, (id est pulchram) sed vocáte me Mara (id est, amaram) quia amaritúdine valdè replévit me Omnípotens. Egréssa sum plena, & vácuam redúxit me Dóminus. Cur ergo vocátis me Noémi, quam Dóminus humiliávit, & afflíxit Omnípotens? Venit ergo Noémi cum Ruth Moabítide nuru sua, de terra peregrinatiónis suæ: ac revérsa est in Béthlehem, quando primùm hórdea metebántur.

℟. Vésperè & manè & merídiè * Narrábo & annuntiábo; & exáudiet Dóminus vocem meam, allelúia, allelúia. *Psal.* 54. 18. ℣. Orábo spíritu, orábo & mente: psallam spíritu, psallam & mente. 1. *Corinth.* 14. 15. * Narrábo.

De libro Ecclesiástici.

LECTIO II. *Cap.* 26. 1.

*Mulier bona, pars bona.*

MUlíeris bonæ beátus vir: númerus enim annórum illíus duplex. Múlier fortis obléctat virum suum, & annos vitæ illíus in pace implébit. Pars bona, múlier bona, in parte timéntium Deum dábitur viro pro factis bonis: dívitis autem & páuperis cor bonum, in omni témpore vultus illórum hílaris. Grátia mulíeris sédulæ delectábit virum suum, & ossa illíus impinguábit. Disciplína illíus datum Dei est. Múlier sensáta & tácita, non est immutátio erudítæ ánimæ. Grátia super grátiam, múlier sancta & pudoráta. Colúmnæ áureæ super bases argénteas, & pedes firmi super plantas stábilis mulíeris. Fundaménta ætérna super petram sólidam, & mandáta Dei in corde mulíeris sanctæ.

℟. Quid orémus, sicut opórtet, nescímus: sed * Ipse Spíritus póstulat pro nobis gemítibus inenarrabílibus, allelúia. *Rom.* 8. 26. ℣. Speráte in eo, omnis congregátio pópuli, effúndite coram illo corda vestra: Deus adjútor noster in ætérnum. *Psal.* 61. 9. * Ipse Spíritus.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 16. 23.

*Petendum in nomine Domini.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Amen, amen dico vobis, si quid petiéritis Patrem in nómine meo, dabit vobis. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. Evang. Tract.* 102.

JAm dictum est in superióribus hujus Domínici sermónis pártibus, propter eos qui nonnúlla petunt à Patre in Christi nómine, nec accípiunt, non peti in nómine Salvatóris, quidquid pétitur contra ratiónem salútis. Non enim sonum litterárum, ac syllabárum, sed quod sonus ipse signíficat, & quod eo sono rectè ac veráciter intellígitur, hoc accipiéndus est dícere, cùm dicit: [In nómine meo.] Unde qui hoc sentit de Christo, quod non est de único Dei Fílio sentiéndum, non petit in ejus nómine, etiámsi non táceat litteris ac syllabis Christum: quóniam in ejus nómine petit, quem cógitat, cùm petit. Qui verò, quod est de illo sentiéndum, sentit, ipse in ejus nómine petit: & áccipit quod petit, si non contra suam salútem sempitérnam petit. A'ccipit autem quando debet accípere. Quædam enim non negántur: sed ut cóngruo dentur témpore differúntur. Ita sanè intelligéndum est quod ait: [Dabit vobis:] ut ea beneficia significáta sciántur his verbis, quæ ad eos qui petunt, própriè pértinent. Exaudiúntur quippe omnes Sancti pro seípsis, non autem pro ómnibus exaudiúntur vel amícis, vel inimícis suis, vel quibúslibet áliis: quia non utcúnque dictum est, [Dabit;] sed [Dabit vobis.]

℟. Usque modò non petístis quidquam in nómine meo: * Pétite & accipiétis, ut gáudium vestrum sit plenum, † Allelúia, allelúia. *Joan.* 16. 24. ℣. Voluntátem timéntium se fáciet Dóminus, & deprecatiónem eórum exáudiet. *Ps.* 144. 19. * Pétite. ℣. Glória. † Allelúia.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Omnia ut in Dominica in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitul. Jac.* 1. *v.* 22. 23. 24.

ESTóte factóres verbi, & non auditóres tantùm, falléntes vosmetipsos. Quia si quis audítor est verbi, & non factor, hic comparábitur viro consideránti vultum nativitátis suæ in spéculo; consíderávit enim se, & ábiit, & statim oblítus est qualis fúerit.

*Ad*

*Ad* Benedictus, *Ant.* 6. F. Venit hora cùm jam non in provérbiis loquar vobis; sed palàm de Patre annuntiábo vobis, allelúia. *Joan.* 16. 25.

Orémus. *Oratio.*

DEus, à quo bona cuncta procédunt: largíre supplícibus tuis, ut cogitémus, te inspiránte, quæ recta sunt; & te gubernánte éadem faciámus. Per Dóminum nostrum.

AD PRIMAM *& alias Horas.*

*Ant.* 7. D. Allelúia, allelúia, allelúia, allelúia.

*Psalmi de Dominica, RR. brevia & Versiculi ut in Feriis temporis Paschalis, pag.* 404.

*C A N O N.*

Ex Concílio Aurelianénsi primo.

*An.* 511. *can.* 27.

ROgatiónes, id est, Litanías, ante Ascensiónem Dómini ab ómnibus Ecclésiis plácuit celebrári; ita ut præmissum triduánum jejúnium, in Domínicæ Ascensiónis festivitáte solvátur. Quo tríduo omnes abstíneant, & Quadragesimálibus cibis utántur.

AD TERTIAM.

*Capitulum. Jac.* 1. 25.

QUi perspéxerit in legem perféctam libertátis, & permánserit in ea, non audítor obliviósus factus, sed factor óperis: hic beátus in facto suo erit.

AD SEXTAM.

*Capitulum. Jac.* 1. 26.

SI quis putat se religiósum esse, non refrænans linguam suam, sed sedúcens cor suum, hujus vana est religio.

AD NONAM.

*Capitulum. Jac.* 1. 27.

REligio munda & immaculáta apud Deum & Patrem, hæc est; Visitáre pupíllos & víduas in tribulatióne eórum, & immaculátum se custodíre ab hoc século.

AD VESPERAS.

*Omnia ut in Dominica in Albis, exceptis quæ sequuntur.*

*Capitulum. Coloss.* 1. *v.* 21. 22.

CU'm essétis aliquándo alienáti, & inimíci sensu in opéribus malis: nunc reconciliávit in córpore carnis ejus per mortem, exhibére vos sanctos & immaculátos, & irreprehensíbiles coram ipso.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 3. A. Ipse Pater amat vos, quia vos me amástis, & credidístis quia à Deo exívi, allelúia. *Joan.* 16. 27.

---

FERIA SECUNDA

IN ROGATIONIBUS.

*Hâc & duabus sequentibus Feriis, si occurrat Festum semiduplex vel suprà,*

*de eo fiet Officium cum commemoratione Feriæ ad Laudes & Vesperas.*

*In Duplicibus minoribus & suprà, ad Officium Nocturnum post ultimum ℟. legetur Evangelium cum Homilia Feriæ & sine ℟. dicetur* Te Deum.

*In Semiduplicibus verò ad Officium Nocturnum. I. Lectio erit de Scriptura occurrente. II. de Sancto, tertia denique de Evangelio, & Homilia Feriæ.*

*De Festo simplici fiet tantùm commemoratio.*

*In hoc Triduo Officium fit ut in Feriis temporis Paschalis, exceptis quæ sequuntur.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Deus Deus meus.... Ne discésseris.... Apud te laus mea, *pag.* 143. *& seqq.*

De libro Ruth.

LECTIO I. *Cap.* 2.

*Ruth in agro Booz.*

DIxit Ruth Moabítis ad socrum suam: Si jubes, vadam in agrum, & cólligam spicas, quæ fúgerint manus meténtium. Cui illa respóndit: Vade, fília mea. A'biit ítaque, & colligébat spicas post terga meténtium. A'ccidit autem ut ager ille habéret dóminum nómine Booz, qui erat de cognatióne Elímelech. Dixítque Booz júveni, qui messóribus præerat: Cujus est hæc puélla? Cui respóndit: Hæc est Moabítis, quæ venit cum Noémi, de regióne Moabítide. Et ait Booz ad Ruth. Audi fília; ne vadas ad álterum agrum ad colligéndum; nec recédas ab hoc loco, sed júngere puéllis meis. Nuntiáta sunt mihi ómnia, quæ féceris sócrui tuæ post mortem viri tui: & quod relíqueris paréntes tuos & terram in qua nata es, & véneris ad pópulum, quem ánteà nesciébas. Collégit ergo in agro usque ad vésperam: & quæ collégerat virga cædens & excútiens, invénit hórdei quasi ephi mensúram, id est, tres módios. Quos portans revérsa est in civitátem, & osténdit sócrui suæ: insuper prótulit, & dedit ei de relíquiis cibi sui, quo saturáta fúerat. Dixítque ei socrus sua: Ubi hódiè collegísti & ubi fecísti opus? sit benedíctus qui misértus est tui. Indicavítque ei apud quem fuísset operáta: & nomen dixit viri, quòd Booz vocarétur. Cui respóndit Noémi: Benedíctus sit à Dómino; quóniam eámdem grátiam quam præbúerat vivis, servávit & mórtuis. Rursúmque ait: Propínquus noster est homo. Mélius est, fília mea, ut cum puéllis ejus éxeas ad meténdum, ne in

alieno agro quispiam resistat tibi.

℞. Véspere, *pag.* 463.

Sermo sancti Cæsárii Arelaténsis Epíscopi.

LECTIO II.

*Hom. 37. de Litania* I.

Ecce, fratres dilectíssimi, dies sancti & spiritáles advéniunt. In istis tribus diébus quos reguláriter in toto mundo célebrat Ecclésia, nullus se à sancto convéntu subdúcat. Quia per totum annum nobis peccatórum vulnera subrépunt; in istis tribus diébus fidéliter ad Ecclésiam currámus, & contríto corde, vel humiliáto córpore Dei misericórdiam deprecémur, ut ómnium peccatórum nostrórum vúlnera per triduáno compunctiónis medicaménto ad sanitátem pristinam revocémus. Consola nobis étiam quadragesimáli órdine præparémus, lectiónibus sacris legéndo, psalléndo & orándo animábus nostris spiritáles épulas, quàm corporis delícias requirámus. Audíte ergo me, fratres, rogánti, audíte patérnâ pietáte monéntem: ut vobis Deus in hoc sǽculo sanitátem córporum, ubertátem frúctuum & peccatórum indulgéntiam tríbuat; & in futúro ætérna prǽmia felíciter venire concédat.

℞. Quid orémus, *pag.* 463.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 11. 1.

*Sine tædio in oratione perseverandum.*

In illo témpore; Cùm esset Jesus in quodam loco orans; ut cessávit, dixit unus ex discípulis ejus ad eum: Dómine, doce nos oráre. Et réliqua.

Homilía sancti Aviti Viennénsis Epíscopi.

*Hom. de Rogat. apud Sirmundum.*

Currit quidem trámite vitáli non per Gállias tantúmmodò, sed penè per Orbem totum Rogationális observántiæ flumen irríguum, & inféctam vítiis terram úberi fluxu ánnuæ satisfactiónis expúrgat. Peculiárior tamen nobis in hac ipsa institutióne servítii & gáudii causa est, quia quod hinc modò ad cunctórum utilitátem défluit, ex nostro prímitùs fonte manávit. Séntiens Ecclésia nostra causam ægritúdinis suæ, non sibi quasi máximè præ ómnibus, sed quasi soli ex ómnibus exístimans opus esse instituéndâ observatióne præsénti, solicítiùs captávit remédium quàm primátum. Secútæ sunt succíduo témpore quædam Ecclésiæ Galliárum rem tam probábilis

exémpli : sic tamen, quòd hoc ipsum non apud omnes iísdem diébus, quibus penès nos institútum fúerat, celebrarétur. Tamen cum dilectióne Rogatiónum, étiam Sacerdótum crescénte concórdiâ, ad unum tempus, id est ad præséntes dies, universális observántiæ cura concéssit.

℟. Pétite, & dábitur vobis: quǽrite, & inveniétis: * Pulsáte, & aperiétur vobis, † Allelúia, allelúia. *Luc.* 11. 9. ℣. Invocábitis, & orábitis me, & ego exáudiam vos. *Jer.* 29. 12. * Pulsáte. ℣. Glória. † Allelúia. *Non dicitur* Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Introíbo in domum tuam, allelúia. ℟. Adorábo ad templum sanctum tuum, allelúia. *Ps.* 5. 8.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 2. d. Multùm valet orátio justi assídua, allelúia, allelúia. *Jac.* 5. 16.

*Capitulum. Jac.* 1. 5.

SI quis vestrûm índiget sapiéntiâ, póstulet à Deo, qui dat ómnibus affluénter, & non impróperat, & dábitur ei : póstulet autem in fide nihil hǽsitans.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. e. Laudem Dómini celebrábo super multitúdinem bonórum quæ largítus est secúndùm indulgéntiam suam, allelúia. *Is.* 63. 7.

Orémus. *Oratio.*

PRæsta, quǽsumus, omnipotens Deus, ut, qui in afflictióne nostra de tua pietáte confídimus, contra advérsa ómnia tuâ semper protectióne muniámur. Per Dóminum.

*Hæc Oratio dicitur hodiè & cras ad Laudes & Horas, in Vesperis verò dicitur Oratio Dominicæ præcedentis.*

## AD PRIMAM.

*Ant.* 1. a. Si cor nostrum non reprehénderit nos, fidúciam habémus ad Deum, & quidquid petiérimus, accipiémus ab eo, allelúia. 1. *Joan.* 3. *v.* 21. 22.

## CANON.

Ex Concílio Coloniénsi *An.* 1536. *Can.* 7.

LItanías, seu rogatiónes indícto triduáno jejúnio ante Dómini Ascensiónem pátribus plácuit celebrári: quibus omnes interésse jubéntur, ut quemádmodum omnes peccavérunt, sic omnes pro vénia súpplicent, omnésque ad Deum cor cum mánibus élevent.

## AD TERTIAM.

*Ant.* 3. c. Hæc est fidúcia

quam habémus ad Deum: quia quodcúnque petiérimus secúndùm voluntátem ejus, audit nos, allelúia. I. *Joan.* 5. 14.

*Capitulum. Philip.* 4. *v.* 6. 7.

FRatres, in omni oratióne & obsecratióne cum gratiárum actióne petitiónes vestræ innotéscant apud Deum, & pax Dei, quæ exúperat omnem sensum custódiat corda vestra.

AD SEXTAM.

*Ant.* 4. *irr.* d. Exáudi, Deus, orationes servórum tuórum; & dírige nos in viam justítiæ, allelúia. *Eccli.* 36. *v.* 18. 19.

*Capitulum. Coloss.* 4. *v.* 2. 3.

FRatres, oratióni instáte vigilántes in ea, in gratiárum actióne orántes simul.

AD NONAM.

*Ant.* 8. g. Inclína aurem tuam, & exáudi nos: pétimus misericórdiam ante conspéctum tuum, Dómine Deus noster, allelúia. *Bar.* 2. *v.* 16.

*Capitulum.* 1. *Petr.* 3. 12.

OCuli Dómini super justos, & aures ejus in preces eórum: vultus autem Dómini super faciéntes mala.

AD VESPERAS.

*Psalmi Feriales.*

*Ant.* 5. a. Réspice, Dómine, de domo sancta tua in nos, allelúia. *Baruch* 2. 16.

*Capitulum.* 1. *Thess.* 5. *v.* 17. 18.

FRatres, sine intermissióne oráte, in ómnibus grátias ágite: hæc est enim volúntas Dei in Christo Jesu, in ómnibus vobis.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 7. c. Ubi sunt duo vel tres congregáti in nómine meo, ibi sum in médio eórum, dicit Dóminus: allelúia. *Matth.* 18. 20.

FERIA TERTIA

IN ROGATIONIBUS.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Omnia ut in Feria præcedenti, exceptis quæ sequuntur.*

*Psal.* In te, Dómine, sperávi... Miserére mei... Quàm magna, *pag.* 145. *& seqq.*

De libro Ruth.

LECTIO I. *Cap.* 3. 1.

*Ruth cognata Booz.*

POstquàm autem revérsa est (Ruth) ad socrum suam, audívit ab ea: Fília mea, quæram tibi réquiem, & providébo ut benè sit tibi. Booz iste, cujus puéllis in agro juncta es, propínquus noster est, & hâc nocte áream hórdei véntilat. Laváre ígitur, & úngere, & indúere cultióribus vestiméntis, & descénde in áream. Descendítque in áream. Et ait Booz illi: Quæ

es? Illaque respóndit: Ego sum Ruth ancilla tua, quia propínquus es. Et ille: Nec ábnuo me propínquum, sed est álius me propínquior: si te volúerit propinquitátis jure retinére, benè res acta est: sin autem ille nolúerit, ego te absque ulla dubitatióne suscípiam. Et venit ad socrum suam. Quæ dixit ei: Quid egísti, filia? Narravítque ei ómnia quæ sibi fecísset homo. Dixítque Noémi: Expécta filia, donec videámus quem res éxitum hábeat. Neque enim cessábit homo, donec implé-verit ómnia quæ locútus est.

℟. Véspere, *p.* 463.

Ex Epístolâ sancti Sidónii Apollináris Arvernénsis Epíscopi.

LECTIO II.

*Lib. 7. Epist. 1. ad sanctum Mamertum Viennensem Episcopum.*

INvectárum, te auctóre, Rogatiónum palpámur auxílio, quibus inchoándis instituendísque pópulus Arvérnus, etsi non efféctu pari, affêctu certè non ímpari, cœpit initiári. Non enim latet nostram sciscitatiónem, quòd primis tempóribus harúmce supplicatiónum institutárum, cívitas tibi crédita, per cujuscémodi prodigiórum terriculaménta vacuabátur; nam modò scenæ mœnium publicórum crebris terræ mótibus concutiebántur; nunc ignes sæpè flammáti cadúcas cúlminum cristas superjécto favillárum monte tumulábant; cùm tu ad nova celer véterum Ninivitárum exémpla decurrísti. Nam cùm vice quâdam cívitas conflagráre cœpísset, fides tua in illo ardóre plùs cáluit; indícis jejúnia, interdícis flagítia; expónis ómnibus nec pœnam longínquam esse, nec véniam: monstrans minácem terræ mótuum conflictatiónem fídei stabilitáte firmándam: devotióne placátus inspéctor péctorum Deus fecit esse obsecratiónem vestram vobis salúti, céteris imitatióni, utrísque præsídio. Quæ ómnia sciens pópulus iste Viennénsibus tuis & addísse priùs & non accessísse postériùs, vestígia tam faciles sanctæ informatiónis amplectitur, sédulò petens ut conscíentiæ tuæ beatitúdo mittat oratiónum suárum suffrágia, quibus exémpla transmísit.

℟. Quid orémus, *p.* 799.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO III. *Cap. 7.*

*Assiduè orandum.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Pétite & dábitur vobis: quærite, &

inveniétis: pulsáte, & aperiétur vobis. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Epistola* 130. *aliàs* 121. *ad Probam. Cap.* 9.

SIne intermissióne oráte,] quid est áliud quàm beátam vitam, quæ nulla nisi ætérna est, ab eo qui eam solus dare potest, sine intermissióne desideráte? Semper ergo hanc à Dómino Deo desiderémus; & orámus semper. Sed ídeò ab áliis curis atque negótiis, quibus ipsum desidérium quodámmodò tepéscit, certis horis ad negótium orándi mentem revocámus; verbis oratiónis nosípsos admonéntes, in id, quod desiderámus inténdere, ne quod tepéscere cœperat, omninò frigéscat, & pénitùs extinguátur, nisi crébriùs inflammétur. Absit enim ab oratióne multa locútio, sed non desit multa precátio, si fervens persevérat inténtio. Nam multum loqui in orándo, est rem necessáriam supérfluis ágere verbis. Multùm autem precári, est ad eum quem precámur, diutúrnâ & piâ cordis excitatióne pulsáre. Nam plerúmque hoc negótium plus gemítibus, quàm sermónibus ágitur, plus fletu quàm afflatu.

℟. Omnis qui petit áccipit; & * Qui quærit invenit; & pulsánti aperiétur. † Allelúia, allelúia. *Matth.* 7. 8. ℣. Cùm quæsiéritis me in toto corde vestro, invéniar à vobis. *Jer.* 29. *v.* 13. 14. * Qui quærit. ℣. Glória. † Allelúia. [Non Dicitur Te Deum.]

AD LAUDES MATUTINAS, HORAS ET VESPERAS.

*Omnia, ut in Feria præcedenti, Psalmis exceptis, qui dicuntur de Feria tertia, ut in Psalterio.*

*CANON,*

Ex Concílio Augustáno. *An.* 1548. *can.* 23.

POpulum sédulò móneant Párochi ne cæremónias religiosíssimè institútas in abúsum vertant, sed ipsis ad pietátem exercéndam utántur, atque ut Processiónes sint graves, ordinátæ, honéstæ, & Christiánâ religióne dignæ.

FERIA QUARTA

*In Rogationibus & Vigilia Ascensionis.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Beátus qui intélligit... Audíte hæc... Ne timúeris, *pag.* 152. *& seqq.*

De libro Ruth.

LECTIO I. *Cap.* 4. 1.

*Booz accepit Ruth uxorem.*

AScéndit ergo Booz ad portam, & sedit ibi.

Cúmque vidísset propínquum prætiríre de quo priùs sermo hábitus est, dixit ad eum: Declína paulísper, & sede hic: vocans eum nómine suo. Qui divértit & sedit. Tollens autem Booz decem viros de senióribus civitátis, dixit ad eos: Sedéte hic. Quibus sedéntibus, locútus est ad propínquum: Partem agri fratris nostri Elímelech vendet Noémi, quæ revérsa est de regióne Moabítide. At ille respóndit: Ego agrum emam. Cui dixit Booz: Quando émeris agrum de manu mulíeris, Ruth quoque Moabítidem, quæ uxor defúncti fuit, debes accípere: ut súscites nomen propínqui tui in hereditáte sua. Qui respóndit; Cedo juri propinquitátis; tu meo útere privilégio. Dixit ergo propínquo suo Booz: Tolle calceaméntum tuum. Quod statim solvit de pede suo. At ille majóribus natu, & univérso pópulo: Testes vos, inquit, estis hódiè, quòd possséderim ómnia quæ fuérunt Elímelech, & Chélion, & Máhalon, tradénte Noémi.

℟. Véspere, *p. 463.*

Sermo sancti Gregórii Turonénsis Epíscopi.

LECTIO II. *Lib. 2. Hist. Francor. Cap. 34.*

BEátus Avítus refert in quadam homilía, quam de Rogatiónibus scripsit, has ipsas Rogatiónes quas ante Ascensiónis Domínicæ triúmphum celebrámus, à Mamérto ipsíus Viennénsis Epíscopo, cui & hic eo témpore præerat, institútas fuísse, dùm urbs illa multis terrerétur prodígiis. Nam & terræ motu frequénter quatiebátur, sed & cervórum atque lupórum féritas portas ingréssa, per totam, ut scripsit, urbem nihil métuens oberrábat. Cúmque hæc per anni círculum gereréntur adveniéntibus Paschális solemnitátis diébus expectábat misericórdiam Dei plebs tota devótè. Sed in ipsa gloriósæ noctis vigília, dùm Missárum celebraréntur solémnia, súbitò Palátium Regále divíno igne succénditur, pavóre ómnibus perterrítis. Sanctus Sacérdos prostrátus ante altáre cum gémitu & lácrymis, Dómini misericórdiam imprecátur. Penetrávit excélsa poli orátio Pontíficis, restinxítque domûs incéndium flumen profluéntium lacrymárum. Cúmque hæc ageréntur, appropinquánte Ascensióne Majestátis Domínicæ, indíxit pópulis jejúnium, instítuit orándi modum. Cessántibus quoque exinde terróribus per cunctas Províncias dispérsâ facti famâ, cunctos Sacerdótes imitári

commonuit, quod Sacérdos fecit ex fide: quæ usque nunc in Christi nómine per omnes Ecclésias in compunctióne cordis & contritióne spíritûs celebrátur.

℟. Quid orémus, p. 463.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap. 17. 1.*

*Oratio Christi pro clarificatione sua, & pro Apostolis.*

IN illo témpore; Sublevátis Jesus óculis in cœlum; dixit: Pater, venit hora, clarífica Fílium tuum. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*In Joan. Evang. Tract. 104.*

PO'terat Dóminus noster unigénitus, & coætérnus Patri, in forma servi, & ex forma servi, si hoc opus esset, oráre siléntio: sed ita se Patri exhibére vóluit precatórem, ut meminísset nostrum se esse doctórem. Proínde eam, quam fecit oratiónem pro nobis, notam fecit & nobis: quóniam tanti magistri non solùm ad ipsos sermocinátio, sed étiam pro ipsis ad Patrem orátio, discipulórum est ædificátio: & si illórum, qui hæc dicta áderant auditúri, profécto & nostra, qui fuerámus conscripta lectúri. Quaprópter hoc quod ait: [Pater venit hora, clarífica Fílium tuum:] osténdit omne tempus, & quid, quando fáceret, vel fieri síneret, ab illo esse dispósitum, qui témpori súbditus non est; quóniam quæ futúra erant per síngula témpora, in Dei sapiéntia causas efficiéntes habent, in qua nulla sunt témpora. Non ergo credátur hæc hora fato urgénte venísse; sed Deo pótiùs ordinánte; nec sidérea necéssitas Christi connéxuit passiónem: absit enim ut sídera mori cógerent síderum conditórem.

℟. Nunc clarífica me, tu Pater, apud temetípsum * Claritáte, quam hábui priúsquàm mundus esset apud te, † Allelúia, allelúia. *Joan. 17. 5.* ℣. Osténde hódie, quia tu es Deus Ifraël. *3. Reg. 18. 36.* * Claritáte. ℣. Glória. † Allelúia. [Non dicitur Te Deum.]

AD LAUDES

MATUTINAS ET HORAS.

*Omnia ut in Feria secunda præcedenti, exceptis quæ sequuntur.*

*Psalmi de Feria quarta ut in Psalterio.*

*Capitulum. Daniel. 7. v. 13. 14.*

ECce cum núbibus cœli quasi Fílius hóminis ve-

niébat & uſque ad antíquum diérum pervénit; & in conſpéctu ejus obtulérunt eum. Et dedit ei poteſtátem & honórem & regnum.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 5. a. A'modò vidébitis Fílium hóminis ſedéntem à dextris virtútis Dei, allelúia. *Matth.* 26. 64.

Orémus. *Oratio.*

PRæſta, quæſumus, omnípotens Deus, ut noſtræ mentis inténtio, quò ventúræ ſolemnitátis glorióſus autor ingréſſus eſt ſemper inténdat, & quò fide pergit, converſatióne pervéniat. Per eúmdem Dóminum.

*Hæc oratio dicitur ad omnes horas.*

*CANON.*

Ex Synodo Lexoviénſi.

*Circa annum* 1447.

CLerum populúmque in Dómino hortámur, quàtenùs in Proceſſiónibus cum devotióne intérſint, Deum omnipoténtem devótè precatúri pro pace, fructuúmque ſuper terram exiſténtium conſervatióne, ac ſanctæ univerſális matris Eccléſiæ unióne conſequénda.



# IN ASCENSIONE DOMINI.

## *SOLEMNE.*

IN PRIMIS VESPERIS.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 2. D. Qui ædíficat in cœlo Ascensiónem suam, Dóminus nomen ejus, allelúia. *Amos* 9. 6.

*Ant.* 6. f. Stabunt pedes ejus in die illa super montem Olivárum, qui est contra Jerúsalem ad Oriéntem, allelúia. *Zach.* 14. 4.

*Ant.* 7. C. Qui redémpti sunt à Dómino, reverténtur, & vénient in Sion laudántes, allelúia. *Is.* 51. 11.

*Ant.* 8. g. Póntifex ultra velum intrábit in Sancta, ut roget pro univérso cœtu Isráël, allelúia. *Levit.* 16. *v.* 12. 17.

*Ant.* 3. a. Ipse portábit glóriam, & sedébit, & dominábitur super sólio suo, allelúia. *Zach.* 6. 13.

*Capitulum.* *Mich.* 2. 13.

ASCéndet pandens iter ante eos: dívident, & transíbunt portam, & ingrediéntur per eam, & transíbit rex eórum coram eis, & Dóminus in cápite eórum.

℞. Attóllite portas príncipes vestras, & * Elevámini portæ æternáles, & introíbit Rex glóriæ; † Allelúia, allelúia. *Ps.* 23. 7. ℣. Dùm benedíceret Jesus discípulis, recéssit ab eis, & ferebátur in cœlum. *Luc.* 24. 51. * Elevámini. ℣. Glória. † Allelúia.

*Hymnus*, CHRISTE, quem sedes, *infrà in II. Vesperis Festi*, *pag.* 485.

℣. Regnábit Deus super Gentes, allelúia. ℞. Deus sedet super sedem sanctam suam, allelúia. *Ps.* 46. 9.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 5. a. Præcédet vos Dóminus, & congregábit vos Deus Isráël. Exaltábitur, & elevábitur, & sublímis erit valdè, allelúia. *Isa.* 52. *v.* 12. 13.

Orémus. *Oratio.*

COncéde, quǽsumus, omnípotens Deus, ut, qui hodiérnâ die Unigénitum tuum Redemptórem nostrum ad cœlos ascendísse crédimus, ipsi quoque mente in

cœléstibus habitémus. Per eúmdem Dóminum nostrum.

*Ad Completorium, Psalmi de Feria, reliqua ut in die Festi, pag.* 486.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Jesum eúntem in cœlum, veníte, adorémus, allelúia. *Act.* I. II.

*Psalmus.* Veníte, *p.* 2.

*Hymnus.*

FOELIX dies mortálibus
Quâ per profúsum sánguinem
Homo Deus clausas diù
Intrávit ætérnas domos.

Nos membra quò nostrum caput,
Quò dux præívit, íbimus,
Si jungat una mens simul,
Nos una junget glória.

NOSTRAS Olímpo rédditus
Qui, Christe, sedes præparas
Hìc éxules ad pátriam
Trahas amóris néxibus.

TUNC ore nudo qualis es
Perénniter vidébimus,
Amábimus perénniter,
Perénniter laudábimus.

SI quos amas non déseris,
Nostræ salútis óbsidem,
Mittas ab altis sédibus,
Qui nos adóptet Spíritum.

* QUI victor in cœlum redis,
Jesu, tibi sit glória
Cum Patre cumque, Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

* *Sic terminantur Hymni ejusdem metri usque ad Vigiliam Pentecostes exclusivè, iis exceptis quorum Doxologia est propria.*

*Ant.* 4. *irr.* c. Eleváta est.

*Psalmus* 8.

DO'mine Dóminus noster, * quám admirábile est nomen tuum in univérsa terra!

Quóniam eleváta est magnificéntia tua * super cœlos.

Ex ore infántium & lactentium perfecísti laudem propter inimícos tuos, * ut déstruas inimícum & ultórem.

Quóniam vidébo cœlos tuos, ópera digitórum tuórum; * lunam & stellas, quæ tu fundásti.

Quid est homo, quòd memor es ejus? * aut filius hóminis, quóniam vísitas eum?

Minuísti eum paulò minùs ab A'ngelis, glóriâ & honóre coronásti eum: * & constituísti eum super ópera mánuum tuárum.

O'mnia subjecísti sub pédibus ejus, * oves & boves univérsas, ínsuper & pécora campi;

Vólucres cœli, & pisces maris, * qui perámbulant sémitas maris.

Dómine Dóminus noster, * quàm admirábile est nomen tuum in univérsa terra!

*Ant.* Eleváta est magnifi-

...entia tua super cœlos, Deus, alleluia, *v.* 2.

*Ant.* 8. c. Dóminus.

*Psalmus* 10.

IN Dómino confido: quómodò dícitis ánimæ meæ:* Tránsmigra in montem sicut passer?

Quóniam ecce peccatóres intendérunt arcum, paravérunt sagittas suas in pháretra, * ut sagittent in obscúro rectos corde.

Quóniam quæ perfecísti, destruxérunt: * justus autem quid fecit?

Dóminus in templo sancto suo, * Dóminus in cœlo sedes ejus:

O'culi ejus in páuperem respíciunt: * pálpebræ ejus intérrogant fílios hóminum.

Dóminus intérrogat justum & ímpium: * qui autem díligit iniquitátem, odit ánimam suam.

Pluet super peccatóres láqueos: * ignis, & sulphur, & spíritus procellárum, pars cálicis eórum.

Quóniam justus Dóminus, & justítias diléxit: * æquitátem vidit vultus ejus.

*Ant.* Dóminus in templo sancto suo, Dóminus in cœlo, allelúia, *v.* 4.

*Ant.* 1. a. In sole.

*Psalmus* 18.

COeli enárrant glóriam Dei, * & ópera mánuum ejus annúntiat firmaméntum.

Dies diéi erúctat verbum, * & nox nocti índicat sciéntiam.

Non sunt loquélæ, neque sermónes, * quórum non audiántur voces eórum.

In omnem terram exivit sonus eórum, * & in fines orbis terræ verba eórum.

In sole pósuit tabernáculum suum; * & ipse tanquam sponsus procédens de thálamo suo.

Exultávit ut gigas ad curréndam viam; * à summo cœlo egréssio ejus.

Et occúrsus ejus usque ad summum ejus; * nec est qui se abscóndat à calóre ejus.

Lex Dómini immaculáta, convértens ánimas: * testimónium Dómini fidéle, sapiéntiam præstans párvulis.

Justítiæ Dómini rectæ, lætificántes corda: * præcéptum Dómini lúcidum, illúminans óculos.

Timor Dómini sanctus, pérmanens in séculum séculi: * judícia Dómini vera, justificáta in semetipsa.

Desiderabília super aurum & lápidem pretiósum multùm: * & dulcióra super mel & favum.

E'tenim servus tuus custódit ea; * in custodiéndis illis retribútio multa.

Delícta quis intélligit? ab occúltis meis munda me; * & ab aliénis parce servo tuo.

Si mei non fúerint domináti, tunc immaculátus ero, * & emundábor à delícto máximo.

Et erunt ut compláceant elóquia oris mei; * & meditátio cordis mei in conspéctu tuo semper.

Dómine adjútor meus, * & redémptor meus.

*Ant.* In sole pósuit tabernáculum suum, allelúia, *v.* 5.

℣. Psállite Dómino qui ascéndit super cœlum cœli, allelúia. ℟. Ad Oriéntem, allelúia. *Ps.* 67. 34.

Incipit Liber Actuum Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 1. 1.

*Christus Apostolis promittit Spiritum & ascendit ad cœlos.*

PRimum quidem sermónem feci de ómnibus, ô Theóphile, quæ cœpit Jesus fácere, & docére, usque in diem, quâ præcípiens Apóstolis per Spíritum sanctum, quos elégit, assúmptus est: quibus & præbuit seipsum vivum post passiónem suam in multis arguméntis, per dies quadragínta appárens eis, & loquens de regno Dei. Et convéscens, præcépit eis ab Jerosólymis ne discéderent, sed expectárent promissiónem Patris, quam audístis, (inquit) per os meum: quia Joánnes quidem baptizávit aquâ, vos autem baptizabímini Spíritu sancto, non post multos hos dies. Igitur qui convénerant, interrogábant eum, dicéntes: Dómine, si in témpore hoc restítues regnum Isráël? Dixit autem eis: Non est vestrûm nosse témpora vel moménta, quæ Pater pósuit in sua potestáte: sed accipiétis virtútem superveniéntis Spíritûs sancti in vos, & éritis mihi testes in Jerúsalem, & in omni Judǽa, & Samaría, & usque ad últimum terræ. Et cùm hæc dixísset, vidéntibus illis, elevátus est: & nubes suscépit eum ab óculis eórum. Cúmque intueréntur in cœlum eúntem illum, ecce duo viri astitérunt juxta illos in véstibus albis, qui & dixérunt: Viri Galilǽi, quid statis aspiciéntes in cœlum? hic Jesus, qui assúmptus est à vobis in cœlum, sic véniet, quemádmodùm vidístis eum eúntem in cœlum. Tunc revérsi sunt Jerosólymam à monte qui vocátur Olivéti, qui est juxta Jerúsalem, sábbati habens iter. Et cùm introíssent in cœnáculum, ascendérunt ubi manébant Petrus & Joánnes, Jacóbus & Andréas, Philíppus & Thomas, Bartholomǽus & Matthǽus, Jacóbus

Alphæi, & Simon Zelótes, & Judas Jacóbi. Hi omnes erant perseverántes unanímiter in oratióne cum muliéribus, & María matre Jesu, & frátribus ejus.

℟. Præbuit seípsum vivum Jesus post passiónem suam in multis arguméntis, per dies quadragínta appárens eis, & loquens de regno Dei, & vidéntibus illis, elevátus est, * Et nubes suscépit eum ab óculis eórum, allelúia. *Act.* 1. *v.* 3. 9. ℣. Cùm sermocinaréntur, ascéndit in cœlum. 4. *Reg.* 2. 11. * Et nubes.

Sermo sancti Leónis Papæ.

*Serm.* 2. *de Ascens. c.* 1. *v.* 2. 5.

LECTIO II.

SIcut in solemnitáte Pascháli resurréctio Dómini fuit nobis causa lætándi: ita Ascénsio ejus in cœlos præséntium nobis est matéria gaudiórum. Explétis ómnibus quæ Evangélicæ prædicatióni & novi Testaménti mystériis congruébant, Dóminus noster Jesus Christus, quadragésimo post resurrectiónem die, coram discípulis elevátus in cœlum, corporális præséntiæ modum fecit, mansúrus in Patris déxtera, donec témpora multiplicándis Ecclésiæ fíliis divínitùs præstitúta peragántur, & ad judicándos vivos & mórtuos in eádem carne, in qua ascéndit, advéniat. Exultémus ítaque, dilectíssimi, gáudio spiritáli, & dignâ apud Deum gratiárum actióne lætántes, líberos cordis óculos ad illam altitúdinem in qua Christus est, erigámus. Sursùm vocátos ánimos desidéria terréna non déprimant: ad ætérna præeléctos peritúra non óccupent; viam veritátis ingréssos falláces illécebræ non retárdent: & ita à fidélibus hæc temporália decurrántur, ut peregrinári se in hac mundi valle cognóscant.

℟. Exultávit ut gigas ad curréndam viam, * A summo cœlo egréssio ejus, & occúrsus ejus usque ad summum ejus, allelúia, allelúia. *Ps.* 18. *v.* 6. 7. ℣. Nemo ascéndit in cœlum, nisi qui descéndit de cœlo, Fílius hóminis, qui est in cœlo. *Joan.* 3. 13. * A summo.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Marcum.

LECTIO III. *Cap.* 16. 14.

*Jesus mittit Apostolos in universum Orbem, & assumitur in cœlum.*

IN illo témpore; Recumbéntibus Undecim appáruit Jesus, & exprobrávit incredulitátem eórum, & durítiam cordis, quia iis qui víderant

eum resurrexisse non crediderunt. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.

*Hom. 29. in Ev. hab. in Bas. S. Petri, in Ascens. Domini.*

QUòd resurrectiónem Domínicam discípuli tardè credidérunt, non tam illórum infírmitas, quàm nostra, ut ita dicam, futúra fírmitas fuit. Ipsa namque resurréctio, illis dubitántibus, per multa arguménta monstráta est: quæ dùm nos legéntes agnóscimus; quid áliud quàm de illórum dubitatióne solidámur? minùs enim mihi María Magdaléne præstitit, quæ cítiùs crédidit, quàm Thomas qui diù dubitávit. Ille étenim dubitándo, vúlnerum cicatríces tétigit, & de nostro péctore dubitatiónis vulnus amputávit. Dóminus tunc discípulos increpávit, cùm eos corporáliter relíquit, ut verba quæ recédens díceret, in corde audiéntium árctiùs impréssa remanérent. Et Dóminus quidem Jesus, postquàm locútus est, assúmptus est in cœlum. Non curru, non A'ngelis sublevátus, quia is qui fécerat ómnia, nimírùm super ómnia suâ virtúte ferebátur. Exultávit ut gigas ad curréndam viam suam, ut nos ei dicerémus ex corde: Trahe nos post te, currémus in odórem unguentórum tuórum. Unde, fratres charíssimi, opórtet ut illuc sequámur corde, ubi eum córpore ascendísse crédimus. Desidéria terréna fugiámus, nihil nos jam deléctet in ínfimis, quia Patrem habémus in cœlis.

℞. Ascéndit Deus in júbilo, allelúia: * Psállite Deo nostro, psállite Regi nostro; quóniam Rex omnis terræ Deus, † Allelúia, allelúia. *Ps. 46. v. 6. 7. 8.* ℣. Dóminus Jesus assúmptus est in cœlum & sedet à dextris Dei. *Marc. 16. 19.* * Psállite. ℣. Glória † Allelúia.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Iter fácite ei qui ascéndit super occásum, allelúia. ℞. Dóminus nomen illi, allelúia. *Psal. 67. 7.*

*Psalmi de Dominica præter Canticum.*

*Ant.* 3. a. Eum, qui módicò quàm A'ngeli minorátus est, vidémus Jesum propter passiónem mortis, glóriâ & honóre coronátum, allelúia. *Hebr. 2. 9.*

*Ant.* 2. d. Sedet ad dexteram majestátis in excélsis, tantò mélior A'ngelis efféctus, quantò differéntiùs præ illis nomen hereditávit, allelúia. *Hebr. 1. v. 3. 4.*

Ant.

*Ant.* 8. g. Talis decébat, ut nobis esset Póntifex, sanctus, innocens, impollútus, segregátus à peccatóribus, & excélsior cœlis factus, allelúia. *Hebr.* 7. 26.

*Ant.* 7. a. Ascéndens.

*Canticum Danielis.* 3. 52.

BEnedíctus es, Dómine Deus patrum nostrórum, & laudábilis & gloriósus & superexaltátus in sécula.

Et benedíctum nomen glóriæ tuæ sanctum, * & laudábile & superexaltátum in ómnibus séculis.

Benedíctus es in templo sancto glóriæ tuæ, * & superlaudábilis & supergloriósus in sécula.

Benedíctus es in throno regni tui, * & superlaudábilis & superexaltátus in sécula.

Benedíctus es, qui intuéris abyssos, & sedes super Chérubim, * & laudábilis, & superexaltátus in sécula.

Benedíctus es in firmaménto cœli, * & laudábilis & gloriósus in sécula.

*Et dicitur per totam Octavam cùm fit de Octava. Nec dicitur* Glória Patri.

*Ant.* Ascéndens in altum captivam duxit captivitátem, dedit dona homínibus, allelúia. *Eph.* 4. 8.

*Ant.* 1. F. Unam pro peccátis ófferens hóstiam, in sempitérnum sedet in déxtera Dei, allelúia. *Hebr.* 10. 12.

*Capitulum. Hebr.* 12. *v.* 1. 2.

PEr patiéntiam currámus, fratres, ad propósitum nobis certámen: aspiciéntes in autórem fídei, & consummatórem Jesum, qui propósito sibi gáudio sustínuit crucem, confusióne contémptâ, atque sedis in déxtera Dei sedet.

*Hymnus.*

PArta tuis labóribus
Qui jam potíris glóriâ,
Quos hic relínquis órphanos
Nos, Christe, semper réspicis.

Alto benígnus è throno
E' Patris almi déxterâ
Nos állicis, nos cónfoves,
Et ad volándum próvocas.

Terréna quæ mens non capit,
Quæ sola pérspicit fides,
Ad sancta fac nos gáudia
Amóre casto cúrrere.

Si quos amas non déseris,
Nostræ salútis óbsidem
Mittas ab altis sédibus,
Qui nos adóptet, Spíritum.

Qui victor in cœlum redis,
Jesu, tibi sit glória
Cum Patre cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

℣. Dóminus in cœlo, allelúia. ℟. Parávit sedem suam, allelúia. *Psal.* 102. 19.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. f. Christus splendor glóriæ portans ómnia verbo virtútis

suæ, purgatiónem peccatórum fáciens, sedet ad déxteram majestátis in excélsis, allelúia. *Hebr.* 1. 3.

Orémus. *Oratio.*

CONcéde, quæsumus, omnípotens Deus; ut, qui hodiérnâ die Unigénitum tuum Redemptórem nostrum ad cœlos ascendísse crédimus, ipsi quoque mente in cœléstibus habitémus. Per eúmdem Dóminum nostrum.

*Ad Horas, Antiphona de Laudibus, Psalmi de Dominica.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 3. a. Eum. Capit.. Regi Seculorum ... Brevi.. per.. Octavam.

*In* ℟. *brevi.* ℣. Qui ascendísti super omnes cœlos. *Eph.* 4. 10.

*CANON.*

Ex Constitutiónibus Apostolórum.

*Lib.* 5. *Cap.* 18. *in fine.*

NUmerátis quadragínta diébus à primo Domínico die, celebráte diem festum Assumptiónis Dómini, quo die ascéndit ad Deum, eumdémque Patrem suum, à quo missus fúerat, ad cujus déxteram virtútis sedet, quique in consummatióne sǽculi véniet cum potestáte & glóriâ multâ ad judicándum vivos & mórtuos.

AD TERTIAM.

*Ant.* 2. d. Sedet.

*Capitulum.* 1. *Petr.* 3. 22.

CHristus est in déxtera Dei, deglútiens mortem ut vitæ ætérnæ herédes efficerémur: proféctus in cœlum, subjéctis sibi A'ngelis, & Potestátibus, & Virtútibus.

℟. *br.* Ascéndit Deus super Chérubim, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Ascéndit. ℣. Et volávit super pennas ventórum * Allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Ascéndit. *Ps.* 17. 11.

℣. Ponis nubem ascénsum tuum, allelúia. ℟. Qui ámbulas super pennas ventórum, allelúia. *Ps.* 103. 3.

AD SEXTAM.

*Ant.* 8. g. Talis.

*Capitulum.* *Heb.* 9. 24.

NOn in manufácta sancta Jesus introívit, exemplária verórum, sed in ipsum cœlum, ut appáreat nunc vúltui Dei pro nobis.

℟. *br.* Dóminus in cœlo sedes ejus, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Dóminus. ℣. O'culi ejus in páuperem respíciunt. * Allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Dóminus. *Ps.* 10. 5.

℣. Factus est Dóminus refúgium páuperi, allelúia. ℟. Adjútor in opportunitátibus in tribulatióne, allelúia. *Ps.* 9. 10.

AD NONAM.

*Ant.* 6. f. Unam.

*Capitulum. Eph.* 4. *v.* 9. 10.

QUòd ascéndit Christus quid est, nisi quia & descéndit primùm in inferióres partes terræ? Qui descéndit, ipse est, & qui ascéndit super omnes cœlos, ut impléret ómnia.

℟. *br.* Ascendísti in altum, cepísti captivitátem, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Ascendísti.

℣. Accepísti dona in homínibus. * Allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Ascendísti.

℣. Currus Dei decem míllibus múltiplex, allelúia. ℟. Míllia lætántium, allelúia. *Ps.* 67. *v.* 19. 18.

AD VESPERAS.

*Ant.* 2. D. In splendóribus.

*Psalmus* 109.

DIxit Dóminus Dómino meo: * Sede à dextris meis.

Donec ponam inimícos tuos, * scabéllum pedum tuórum.

Virgam virtútis tuæ emíttet Dóminus ex Sion, * domináre in médio inimicórum tuórum.

Tecum princípium in die virtútis tuæ in splendóribus sanctórum, * ex útero ante lucíferum génui te.

Jurávit Dóminus, & non pœnitébit eum; * Tu es sacérdos in ætérnum, secúndùm órdinem Melchísedech.

Dóminus à dextris tuis, * confrégit in die iræ suæ reges.

Judicábit in natiónibus, implébit ruínas, * conquassábit cápita in terra multórum.

De torrénte in via bibet; * proptéreà exaltábit caput.

*Ant.* In splendóribus sanctórum, Dóminus à dextris tuis; allelúia. *v.* 3. 5.

*Ant.* 1. a. Super cœlos.

*Psalmus* 112.

LAudáte púeri Dóminum, * laudáte nomen Dómini.

Sit nomen Dómini benedíctum; * ex hoc nunc, & usque in séculum.

A' solis ortu usque ad occásum, * laudábile nomen Dómini.

Excélsus super omnes Gentes Dóminus, * & super cœlos glória ejus.

Quis sicut Dóminus Deus noster, qui in altis hábitat, * & humília réspicit in cœlo & in terra?

Súscitans à terra ínopem, * & de stércore érigens páuperem;

Ut cóllocet eum cum princípibus, * cum princípibus pópuli sui.

Qui habitáre facit stérilem in domo, * matrem filiórum lætántem.

*Ant.* Super cœlos glória ejus; quis sicut Dóminus Deus, qui in altis hábitat, allelúia. *v.* 4. 5.

*Ant.* 7. D. Qui hábitas.

*Psalmus* 122.

AD te levávi óculos meos,* qui hábitas in cœlis.

Ecce ſicut óculi ſervórum * in mánibus dominórum ſuórum;

Sicut óculi ancíllæ * in mánibus dóminæ ſuæ;

Ita óculi noſtri ad Dóminum Deum noſtrum,* donec miſereátur noſtri.

Miſerére noſtri, Dómine, miſerére noſtri;*quia multùm repléti ſumus deſpectióne.

Quia multùm repléta eſt ánima noſtra;* oppróbrium abundántibus, & deſpéctio ſupérbis.

*Ant.* Qui hábitas in cœlis, miſerére noſtri, Dómine: miſerére noſtri, allelúia. *v.* 1.3.

*Ant.* 5. f. Magna eſt.

*Pſalmus* 137.

COnfitébor tibi, Dómine, in toto corde meo,* quóniam audíſti verba oris mei.

In conſpéctu Angelórum pſallam tibi;* adorábo ad templum ſanctum tuum,

Et confitébor nómini tuo ſuper miſericórdia tua, & veritáte tua;* quóniam magnificáſti ſuper omne, nomen ſanctum tuum.

In quacúnque die invocávero te, exáudi me;* multiplicábis in ánima mea virtútem.

Confiteántur tibi, Dómine, omnes reges terræ,* quia audiérunt ómnia verba oris tui.

Et cantent in viis Dómini,* quóniam magna eſt glória Dómini.

Quóniam excélſus Dóminus, & humília réſpicit,* & alta à longè cognóſcit.

Si ambulávero in médio tribulatiónis, vivificábis me;* & ſuper iram inimicórum meórum extendíſti manum tuam, & ſalvum me fecit déxtera tua.

Dóminus retríbuet pro me; Dómine, miſericórdia tua in ſéculum,* ópera mánuum tuárum ne deſpícias.

*Ant.* Magna eſt glória Dómini, quóniam excélſus Dóminus, & humília réſpicit, allelúia. *v.* 5. 6.

*Ant.* 6. *irr.* Dómine.

*Pſalmus* 143.

BEnedíctus Dóminus Deus meus, qui docet manus meas ad prælium,* & dígitos meos ad bellum.

Miſericórdia mea, & refúgium meum:* ſuſcéptor meus, & liberátor meus:

Protéctor meus, & in ipſo ſperávi:* qui ſubdit pópulum meum ſub me.

Dómine, quid eſt homo, quia innotuíſti ei?* aut fílius hóminis, quia réputas eum?

Homo vanitáti símilis factus est: * dies ejus sicut umbra prætéreunt.

Dómine, inclína cœlos tuos, & descénde: * tange montes, & fumigábunt.

Fúlgura coruscatiónem, & dissipábis eos: * emítte sagíttas tuas, & conturbábis eos:

Emítte manum tuam de alto, éripe me, & líbera me de aquis multis, * de manu filiórum alienórum.

Quorum os locútum est vanitátem: * & déxtera eórum, déxtera iniquitátis.

Deus cánticum novum cantábo tibi: * in psaltério decachórdo psallam tibi.

Qui das salútem régibus: * qui redemísti David servum tuum de gládio malígno:

E'ripe me, & érue me de manu filiórum alienórum, quorum os locútum est vanitátem: * & déxtera eórum, déxtera iniquitátis:

Quorum fílii, sicut novéllæ plantatiónes * in juventúte sua.

Fíliæ eórum compósitæ: * circumornátæ ut similitúdo templi.

Promptuária eórum plena, * eructántia ex hoc in illud.

Oves eórum fœtósæ, abundántes in egréssibus suis: * boves eórum crassæ.

Non est ruína macériæ, * neque tránsitus, neque clamor in platéis eórum.

Beátum dixérunt pópulum, cui hæc sunt: * beátus pópulus, cujus Dóminus Deus ejus.

*Ant.* Dómine, inclína cœlos tuos. Emítte manum tuam de alto, éripe me, & líbera me, allelúia. *v.* 5. 7.

*Capitulum. Ephes.* 1. *v.* 20. 21.

DEus constítuit Christum ad déxteram suam in cœléstibus supra omnem principátum & potestátem & virtútem & dominatiónem & omne nomen, quod nominátur non solùm in hoc século, sed étiam in futúro.

℞. Ascéndit Deus in júbilo, *pag.* 480.

*Hymnus.*

CHRISTE, quem sedes répvocant patérnæ;
Spléndidos Orbi rénovas triúmphos,
Cùm viâ tentas hómini negátâ
Scándere cœlum.

INTIMOS, æther, áperi recéssus;
Rex venit claros jaculátus ignes:
Non eget curru: jubet, & recédunt
Sídera nutu.

RÉDDITUR cœlo: Pater, ecce natus
In tuo victor grémio repónit

Plúrimo partas, & adhuc rubéntes
Sánguine lauros.
Tu caput surgis! tua sed jacémus
Membra: quam præfers, Mediátor, audi
Quanta pro membris tibi crux poténte
Voce loquátur.
Summa laus Natum, tibi qui corónas;
Qui coronáris tibi, Nate, summa,
Spíritus, nostris bona septifórmis
Córdibus affla. Amen.

℣. Constituísti eum super ópera mánuum tuárum, allelúia. ℟. Omnia subjecísti sub pédibus ejus, allelúia. *Ps.* 8. *v.* 7. 8.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. e. Ad interióra velάminis præcúrsor pro nobis introívit Jesus, secúndùm órdinem Melchísedech Póntifex factus in ætérnum, allelúia. *Hebr.* 6. 19.

*Oratio*, Concéde, *ut suprà ad Laudes*, *p.* 482.

## Ad Completorium.

*Ant.* 8. g. Omnis lingua confiteátur, quia Dóminus Jesus Christus in glória est Dei Patris, allel. *Philip.* 2. 11.

*Psalmi de Feria.*

*Capitulum. Eph.* 2. *v.* 6. 7.

Deus consedére nos fecit in cœléstibus in Christo Jesu, ut osténderet in sǽculis superveniéntibus abundántes divítias grátiæ suæ.

*Hymnus.*

Jesu nostra redémptio,
Amor & desidérium,
Deus creátor ómnium,
Homo in fine témporum.
Quæ te vicit cleméntia,
Ut ferres nostra crímina
Crudélem mortem pátiens
Ut nos à morte tólleres.
Inferni claustra pénetrans,
Tuos captívos rédimens,
Victor triúmpho nóbili,
Ad dextram Patris résidens.
Ipsa te cogat píetas,
Ut mala nostra súperes
Parcéndo, & voti cómpotes
Nos tuo vultu sáties.
Sis ipse nostrum gáudium,
Qui es futúrus præmium,
Sit nostra in te glória,
Per cuncta semper sǽcula.
Amen.

℣. In cœlo parávit sedem suam, allelúia. ℟. Et regnum ipsíus dominábitur, allelúia. *Psal.* 102. 19.

*Ad* Nunc dimíttis, *Ant.* 5. a. Allelúia, in sempitérnum sedet, allelúia: in déxtera Dei, allelúia, allelúia. *Hebr.* 10. 12.

Orémus. *Oratio.*

Da, quǽsumus, omnípotens Deus, mentes nostras & corda nostra in eo requiéscere, quem ad déxteram tuam sedéntem adorámus mediatórem nostrum Je-

sum Christum Filium tuum, qui tecum vivit.

*Et sic per Octavam.*

---

## INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

*Si Festum duplex occurrat, fit Officium de Festo cum commemoratione Octavæ.*

*De Semiduplici & Simplici fit tantùm commemoratio.*

*Omnia ut in die Ascens. exceptis quæ sequuntur.*

*Ad Officium Nocturnum, Psalmi tres infrà notati in qualibet Feria.*

*Antiph. sola.* 1.a. Jesus ferebátur in cœlum, & Apóstoli adorántes regréssi sunt in Jerúsalem cum gáudio magno, allelúia. *Luc.* 24. *v.* 51. 52.

℣. Psállite Dómino qui ascéndit super cœlum cœli, allelúia. ℟. Ad Oriéntem, allelúia. *Ps.* 67. 34.

*Ad Laudes Matut. Psal. de Feria & Canticum de Festo.*

*Antiph. sola.* 8. c. Cùm introíssent in Cœnáculum, omnes erant perseverántes unanímiter in oratióne cum muliéribus & María matre Jesu, allelúia. *Act.* 1. *v.* 13. 14.

*Ad Vesperas, Psalmi de Feria.*

*Ant. sola.* 4. *irr.* d. Erant semper in templo, laudántes & benedicéntes Deum, allelúia. *Luc.* 24. 53.

---

## FERIA SEXTA.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Nonne Deo subjécta... Exáudi Deus.... Confitébimur, *pag.* 154. *& seqq.*

De Áctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 1. 15.

*De uno in locum Judæ proditoris sufficiendo.*

IN diébus illis exúrgens Petrus in médio fratrum dixit (erat autem turba hóminum simul, ferè centum vigínti:) Viri fratres, opórtet impléri Scriptúram, quam prædíxit Spíritus sanctus per os David de Juda, qui fuit dux eórum, qui comprehendérunt Jesum: qui connumerátus erat in nobis, & sortítus est sortem ministérii hujus. Et hic quidem possédit agrum de mercéde iniquitátis, & suspénsus crépuit médius: & diffúsa sunt ómnia víscera ejus. Et notum factum est ómnibus habitántibus Jerúsalem, ita ut appellarétur ager ille linguâ eórum, Hacéldama, hoc est, Ager sánguinis. Scriptum est enim in libro Psalmórum: Fiat commorátio eórum desérta, & non sit qui inhábitet in ea: & Episcopátum ejus accípiat alter. Opórtet ergo ex his viris, qui nobíscum sunt congregáti in omni témpore, quo intrávit, & exívit inter nos

Dóminus Jesus, incípiens à baptísmate Joánnis usque in diem, quâ assúmptus est à nobis, testem resurrectiónis ejus nobíscum fieri unum ex istis.

℟. Præbuit, *pag.* 479.

LECTIO II. *v.* 23.

*Sorte eligitur Matthias.*

STatuérunt duos, Joseph, qui vocabátur Bársabas, qui cognominátus est Justus, & Matthíam. Et orántes dixérunt: Tu, Dómine, qui corda nosti ómnium, osténde, quem elégeris ex his duóbus unum, accípere locum ministérii hujus & apostolátûs, de quo prævaricátus est Judas ut abíret in locum suum. Et dedérunt sortes eis, & cécidit sors super Matthíam, & annumerátus est cum úndecim Apóstolis.

℟. Exultávit, *pag.* 479.

Sermo sancti Leónis Papæ.

LECTIO III.

*Serm.* I. *de Ascens. Domini.*

POst beátam & gloriósam resurrectiónem Dómini nostri Jesu Christi, quâ verum Dei templum Judáïcâ impietáte resolútum divína in tríduo poténtia suscitávit, quadragenárius hódiè, dilectíssimi, sanctórum diérum explétus est númerus, sacratíssimâ ordinatióne dispósitus, & ad utilitátem nostræ eruditiónis impénsus: ut dùm à Dómino in hoc spátio mora præséntiæ corporális exténditur, fides resurrectiónis documéntis necessáriis muniréṭur. Unde beatíssimi Apóstoli, omnésque discípuli, qui, & de éxitu crucis fúerant trépidi, & de fide resurrectiónis ambígui, ita sunt veritáte perspícuâ roboráti, ut Dómino in cœlórum eúnte sublímia, non solùm nullâ afficeréntur tristítiâ, sed étiam magno gáudio repleréntur.

℟. Ascéndit, *pag.* 480.

*CANON.*

Ex Innocéntio tértio.

*In Concil. General. Decretal. lib.* 3. *tit.* 44. *Cap.* 2.

PRæcépimus ut oratória, vasa, corporália & vestiménta munda & nítida conservéntur; nimis enim vidétur absúrdum in sacris sordes neglígere, quæ dedecérent étiam in profánis.

SABBATO

INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Deus stetit... Deus, quis símilis.... Deus meus, pone illos, *pag.* 155. *& seqq.*

De Áctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 3. 2.

*Claudi planta consolidata.*

QUidam vir, qui erat claudus ex útero matris suæ, bajulabátur: quem ponébant quotídiè ad portam

templi, quæ dícitur Speciósa, ut péteret eleemósynam ab introeúntibus in templum. Petrus autem dixit: Argéntum & aurum non est mihi: quod autem hábeo, hoc tibi do: In nómine Jesu Christi Nazaréni surge, & ámbula. Et apprehénsâ manu ejus déxterâ, allevávit eum, & prótinùs consolidátæ sunt bases ejus & plantæ. Et exsiliens stetit, & ambulábat: & intrávit cum illis in templum ámbulans, & exíliens, & laudans Deum. Videns autem Petrus, respóndit ad pópulum: Viri Israëlítæ, quid mirámini in hoc, aut nos quid intuémini, quasi nostrâ virtúte aut potestáte fecérimus hunc ambuláre? Deus Abraham, & Deus Isaac, & Deus Jacob, Deus patrum nostrórum glorificávit Fílium suum Jesum, quem vos quidem tradidístis, & negástis ante fáciem Piláti, judicánte illo dimítti. Et nunc, fratres, scio quia per ignorántiam fecístis, sicut & príncipes vestri. Deus autem, quæ prænuntiávit per os ómnium Prophetárum, pati Christum suum, sic implévit: vobis primùm suscitáns Fílium suum, misit eum benedicéntem vobis: ut convértat se unusquísque à nequítia sua.

℟. Præbuit, *pag.* 479.

LECTIO II. *Cap.* 4. 1.

*In cujus nomine claudus fuerit sanatus.*

LOquéntibus autem illis ad pópulum, supervenérunt Sacerdótes, & magistrátus templi & Sadducæi, doléntes quòd docérent pópulum, & annuntiárent in Jesu resurrectiónem ex mórtuis. Et statuéntes eos in médio, interrogábant. In qua virtúte, aut in quo nómine fecístis hoc vos? Tunc replétus Spíritu sancto Petrus, dixit ad eos; Notum sit ómnibus vobis, & omni plebi Israël: quia in nómine Dómini nostri Jesu Christi Nazaréni, quem vos crucifixístis, quem Deus suscitávit à mórtuis, in hoc iste astat coram vobis sanus. Et non est in álio áliquo salus. Nec enim áliud nomen est sub cœlo datum homínibus, in quo opórteat nos salvos fieri. Vidéntes autem Petri constántiam & Joánnis, admirabántur. Hóminem quoque vidéntes stantem cum eis, qui curátus fúerat, nihil póterant contradícere. Jussérunt autem eos foras extra concílium secédere; & conferébant ad ínvicem, & vocántes eos, denuntiavérunt ne omnínò loqueréntur, neque docérent in nómine Jesu. Petrus verò & Joánnes respondéntes, dixérunt ad eos

Si justum est in conspéctu Dei, vos pótiùs audíre quàm Deum, judicáte.

℞. Exultávit, *pag.* 479.

Sermo sancti Cleméntis Papæ & Mártyris.

LECTIO III. *Cap.* 36.

*Epist.* 1. *ad Corint.c.* 36. *sec.* 1.

INvénimus Jesum Christum, Pontíficem oblatiónum nostrárum infirmitátis nostræ patrónum & auxiliatórem. Per hunc in cœlórum altitúdines óculos defigámus; per hunc immaculátum & suprémum illíus vultum speculábimur: per hunc óculi cordis nostri apérti sunt: per hunc insípiens & obscuráta mens nostra in admirábilem ejus lucem repúllulat: per hunc vóluit Dóminus, ut immortálem cognitiónem gustarémus: qui cùm sit splendor majestátis ejus, tantò major est A'ngelis, quantò excelléntius nomen sortítus est. Ita quippe scriptum est: Qui facit A'ngelos suos spíritus, & minístros suos flammam ignis. De Fílio autem suo sic dixit Dóminus: Fílius meus es tu, ego hódiè génui te. Et íterùm dicit ad eum: Sede à dextris meis, donec ponam inimícos tuos scabéllum pedum tuórum. Quinam sunt inimíci ejus? qui pravi sunt, quique divínæ voluntáti suam voluntátem oppónunt.

℞. Ascéndit, *pag.* 480.

*CANON.*

Ex Concílio Aquisgranénsi, *An.* 809. *can.* 10.

NOn debétur ad Ecclésiam ob áliam causam convenire, nisi ad laudem Dei & ejus servítium faciéndum.

AD VESPERAS

*Psalmi de Sabbato sub Antiphona*, Erant, *ut suprà p.* 48[illegible]

*Capitulum. Deuteronomii* 33. *v.* 26. 27.

NOn est Deus álius, [illegible] Deus rectíssimi: ascénso[illegible] cœli auxiliátor tuus: magni[illegible] ficéntiâ ejus discúrrunt n[illegible] bes: habitáculum ejus sursùm[illegible]

*Hymn.* CHRISTE, *p.* 485.

℣. Dóminus in cœlo, alle[illegible] lúia. ℞. Parávit sedem suam allelúia, *Ps.* 102. 19.

*Ad* Magníficat, 6. *Ant.* [illegible] Christus Jesus qui mórtuus est, & resurréxit, est ad dexteram Dei, & interpéllat pro nobis, allelúia. *Rom.* 8. 34.

*Oratio*, Omnípotens, *p.* 495.

*Pro commem. Ascensionis.*

*Ant.* Ad interióra, *p.* 48[illegible]

℣. Constituísti, *ibid.*

*Oratio*, Concéde, *p.* 482.

---

DOMINICA

INTRA OCTAVAM

ASCENSIONIS.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit. & Hymnus ut in die Ascensionis.*

*Ant.* 3. a. Exaltáre.

*Psalmus* 20.

DO'mine, in virtúte tua lætábitur rex; * & su- r salutáre tuum exultábit heménter.

Desidérium cordis ejus tri- isti ei, * & voluntáte labió- m ejus non fraudásti eum.

Quóniam prævenísti eum in nedictiónibus dulcédinis; * suísti in cápite ejus coró- m de lápide pretióso.

Vitam pétiit à te; * & tri- isti ei longitúdinem diérum séculum, & in séculum uli.

Magna est glória ejus in lutári tuo; * glóriam & agnum decórem impónes per eum.

Quóniam dabis eum in be- dictiónem in séculum sé- li; * lætificábis eum in udio cum vultu tuo.

Quóniam rex sperat in Dó- no, * & in misericórdia tíssimi non commovébitur.

Inveniátur manus tua óm- bus inimícis tuis: * déxtera a invéniat omnes, qui te érunt.

Pones eos ut clíbanum nis in témpore vultûs tui: * óminus in ira sua contur- ábit eos, & devorábit eos nis.

Fructum eórum de terra erdes, * & semen eórum à liis hóminum.

Quóniam declinavérunt in te mala; * cogitavérunt consília, quæ non potuérunt stabilíre.

Quóniam pones eos dorsum: * in relíquiis tuis præparábis vultum eórum.

Exaltáre, Dómine, in virtúte tua: * cantábimus & psallémus virtútes tuas.

*Ant.* Exaltáre, Dómine, in virtúte tua, cantábimus & psallémus virtútes tuas, allelúia. *v.* 14.

*Ant.* 4. e. Psállite.

*Psalmus* 29.

EXaltábo te, Dómine, quóniam suscepísti me; * nec delectásti inimícos meos super me.

Dómine Deus meus, clamávi ad te; * & sanásti me.

Dómine, eduxísti ab inférno ánimam meam: * salvásti me à descendéntibus in lacum.

Psállite Dómino, sancti ejus; * & confitémini memóriæ sanctitátis ejus.

Quóniam ira in indignatióne ejus; * & vita in voluntáte ejus.

Ad vésperum demorábitur fletus, * & ad matutínum lætítia.

Ego autem dixi in abundántia mea; * Non movébor in ætérnum.

Dómine, in voluntáte tua *

præstitísti decóri meo virtútem.

Avertísti fáciem tuam à me, * & factus sum conturbátus.

Ad te, Dómine, clamábo; * & ad Deum meum deprecábor.

Quæ utílitas in sánguine meo, * dùm descéndo in corruptiónem?

Nunquid confitébitur tibi pulvis, * aut annuntiábit veritátem tuam.

Audívit Dóminus, & misértus est mei; * Dóminus factus est adjútor meus.

Convertísti planctum meum in gáudium mihi; * conscidísti saccum meum, & circundedísti me lætítiâ,

Ut cantet tibi glória mea, & non compúngar: * Dómine Deus meus, in ætérnum confitébor tibi.

*Ant.* Psállite Dómino sancti ejus, & confitémini memóriæ sanctitátis ejus, allelúia. *v.* 5.

*Ant.* 1. a. Rex omnis terræ.

*Psalmus* 46.

OMnes Gentes, pláudite mánibus, * jubiláte Deo in voce exultatiónis.

Quóniam Dóminus excélsus, terríbilis; * Rex magnus super omnem terram.

Subjécit pópulos nobis, * & Gentes sub pédibus nostris.

Elégit nobis hereditátem suam: * spéciem Jacob, quam diléxit.

Ascéndit Deus in júbilo, * & Dóminus in voce tubæ.

Psállite Deo nostro, psállite: * psállite Regi nostro, psállite.

Quóniam Rex omnis terræ Deus; * psállite sapiénter.

Regnábit Deus super Gentes: * Deus sedet super sedem sanctam suam.

Príncipes populórum congregáti sunt cum Deo Abraham; * quóniam dii fortes terræ veheménter eleváti sunt.

*Ant.* Rex omnis terræ Deus sedet super sedem sanctam suam, allelúia. *v.* 8. 9.

℣. Date glóriam Deo super Israël, allelúia. ℟. Magnificéntia ejus & virtus ejus in núbibus, allelúia. *Ps.* 67.

De Actibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 4.

*Credentium cor unum.*

MUltitúdinis autem credéntium erat cor unum, & ánima una: nec quisquam eórum, quæ possidébat, áliquid suum esse dicébat; sed erant illis ómnia commúnia. Et virtúte magna reddébant Apóstoli testimónium resurrectiónis Jesu Christi Dómini nostri: & grátia magna erat in ómnibus illis. Neque enim quisquam egens

it inter illos. Quotquot
im possessóres agrórum aut
mórum erant, vendéntes
rébant prétia eórum quæ
ndébant. Et ponébant ante
des Apostolórum. Divide-
tur autem síngulis prout
que opus erat. Joseph au-
qui cognominátus est
nabas ab Apóstolis (quod
interpretátum Fílius con-
tiónis) Levítes, Cýprius
ere, cùm habéret agrum,
didit eum, & áttulit pré-
n, & pósuit ante pedes
stolórum.

℟. Regna terræ cantáte
o, psállite Dómino, * Qui
endit super cœlum cœli, ad
éntem, allelúia. *Ps. 67. v: 34.* ℣. Sedénti in throno &
o benedíctio & honor &
ia. *Apoc. 5. 13.* * Qui as-
dit.

ECTIO II. *Cap. 5. 1.*
*Ananias & Saphira.*

Vir autem quidam nómine Anánias, cum Sá-
ra uxóre sua, véndidit
rum, & fraudávit de pré-
agri, cónsciâ uxóre suâ:
fferens partem quamdam,
pedes Apostolórum pósuit.
xit autem Petrus: Anánia,
r tentávit sátanas cor
um, mentíri te Spirítui
ncto, & fraudáre de prétio
ri? Nonne manens tibi ma-
bat, & venúndatum in tua
at potestáte? Quare posuís-
ti in corde tuo hanc rem?
Non es mentítus homínibus,
sed Deo. A'udiens autem
Anánias hæc verba, cécidit,
& expirávit. Et factus est timor magnus super omnes qui
audiérunt. Surgéntes autem
júvenes amovérunt eum, &
efferéntes sepeliérunt. Factum est autem quasi horárum trium spátium, & uxor
ipsíus, nésciens quod factum fúerat, introívit. Dixit
autem ei Petrus: Dic mihi,
múlier, si tanti agrum vendidístis? At illa dixit: E'tiam
tanti. Petrus autem ad eam:
Quid útique cónvenit vobis
tentáre Spíritum Dómini?
Ecce pedes eórum, qui sepeliérunt virum tuum, ad óstium, & éfferent te. Conféstim cécidit ante pedes ejus,
& expirávit. Intrántes autem
júvenes invenérunt illam mórtuam, & extulérunt, & sepeliérunt ad virum suum.
Et factus est timor magnus
in univérsa Ecclésia, & in
omnes qui audiérunt hæc.
Per manus autem Apostolórum fiébant signa & prodígia multa in plebe. Et erant
unanímiter omnes in pórticu
Salomónis. Ceterórum autem
nemo audébat se conjúngere
illis, sed magnificábat eos
pópulus.

℟. In sempitérnum sedet
in déxtera Dei, expéctans

* Donec ponántur inimíci ejus scabéllum pedum ejus, allelúia. *Hebr.* 10. *v.* 12. 13.
℣. Omnia, Dómine, subjecísti sub pédibus ejus. *Ps.* 8. 8.
* Donec.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 15. 26.

*Persecutiones Apostolis prædicta.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Cùm vénerit Paraclétus, quem ego mittam vobis à Patre, Spíritum veritátis, qui à Patre procédit, ille testimónium perhibébit de me. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 92. *in Joan.*

DO'minus Jesus in sermóne, quem locútus est discípulis suis post cœnam, próximus passióni, tanquàm itúrus, & relictúrus eos præséntiâ corporáli; cum ómnibus autem suis usque in consummatiónem séculi futúrus præséntiâ spiritáli, exhortátus est eos ad perferéndas persecutiónes impiórum quos mundi nómine nuncupávit: ex quo tamen mundo étiam ipsos discípulos se elegísse dixit: ut scirent se grátiâ Dei esse quod sunt; suis autem vítiis fuísse, quod fuérunt. Deínde persecutóres & suos & ipsórum, Judǽos evidénter expréssit: ut omninò [illegible] paréret, étiam ipsos mun[di] damnábilis appellatióne co[n]clúsos, qui persequún[tur] sanctos. Cúmque de illis d[i]ceret, quòd ignorárent e[um] à quo missus est; & ta[men] odíssent & Fílium & [Pa]trem, hoc est, & eum [qui] missus est, & eum à quo [mis]sus est, (de quibus ómn[ibus] in áliis sermónibus jam di[xi]rúimus) ad hoc pervé[nit] ubi ait: Ut adimpleátur [ser]mo qui in lege eórum scr[ip]tus est: Quia ódio habué[runt] me gratis.

℟. Cùm vénerit Paraclé[tus] qui à Patre procédit, ille [tes]timónium perhibébit de [me.] * Et vos testimónium pe[rhi]bébitis quia ab inítio me[cum] estis, † Allelúia, allelúia. *J[oan.]* 15. *v.* 26. 27. ℣. Ego sum [Dó]minus, non est absque [me] salvátor: vos testes mei, [et] ego Deus. *Isa.* 43. *v.* 11. * Et vos. ℣. Glória. † Alle[lúia.]

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis, Antip[ho]næ, Psalmi & Canticum, in die Ascensionis.*

*Capitulum.* 1. *Petr.* 4. *v.* 7.

ESTóte prudéntes, & vi[gi]láte in oratiónibus. An[te] ómnia autem mútuam in vo[bis]metípsis charitátem continuam habéntes, quia chári-

tas óperit multitúdinem peccatórum.

*Hymnus.* PARTA tuis labóribus, *pag.* 481.

℣. Regnábit Deus super Gentes, allelúia. ℟. Deus sedet super sedem sanctam suam, allelúia. *Ps.* 46. 9.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. c. Ego mittam vobis à Patre Spíritum veritátis, allelúia. *Joan.* 15. 26.

Orémus. *Oratio.*

OMnípotens sempitérne Deus, fac nos tibi semper & devótam gérere voluntátem, & majestáti tuæ sincéro corde servíre. Per Dóminum.

*Pro Commem. Ascensionis.*

*Antiph.* Christus splendor glóriæ, portans ómnia verbo virtútis suæ, purgatiónem peccatórum fáciens, sedet ad déxteram majestátis in excélsis, allelúia. *Hebr.* 1. 3.

℣. Dóminus in cœlo, allelúia. ℟. Parávit sedem suam, allelúia. *Psal.* 102. 19.

Orémus. *Oratio.*

COncéde, quǽsumus, omnípotens Deus; ut, qui hodiérnâ die Unigénitum tuum Redemptórem nostrum ad cœlos ascendísse crédimus, ipsi quoque mente in cœléstibus habitémus. Per eúmdem.

AD HORAS, *Psal. de Domin.* *Antiph. de Laudibus diei Festi.* *Pars Verna.*

CANON.

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio.

*Anno* 1235.

DIe Domínicâ Synodum præcedénte, Sacerdótes qui Capellános non habent suis Paróchiis, diligénter inquírant públicè in Ecclésia si qui sint infírmi in Paróchia; & ántequàm iter arrípiant, eos vísitent, étiam non requisíti, & fáciant quidquid necésse fúerit ad salútem animárum.

AD TERTIAM.

*Capitulum.* 1. *Pet.* 4. 9.

HOspitáles ínvicem sine murmuratióne: unusquísque, sicut accépit grátiam, in altérutrum illam administrántes, sicut boni dispensatóres multifórmis grátiæ Dei.

AD SEXTAM.

*Capitulum.* 1. *Pet.* 4. 11.

SI quis lóquitur, quasi sermónes Dei: si quis minístrat, tanquàm ex virtúte quam adminístrat Deus; ut in ómnibus honorificétur Deus per Jesum Christum Dóminum nostrum.

AD NONAM.

*Capitulum.* *Juda v.* 20. 21.

CHaríssimi, in Spíritu sancto orántes, vosmetípsos in dilectióne Dei serváte, expectántes misericórdiam Dómini nostri Jesu Christi.

## AD VESPERAS.

*Antiphonæ, Psalmi, & Hymnus, ut in secundis Vesperis de die Ascensionis.*

*Capitulum. Coloss. 3. v. 1. 2.*

QUæ sursùm sunt quærite ubi Christus est in déxtera Dei sedens, quæ sursùm sunt sápite, non quæ super terram.

℣. Tu Dóminus Altíssimus super omnem terram, allelúia. ℟. Nimis exaltátus es super omnes deos, allelúia. *Psal.* 96. 9.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Hæc locútus sum vobis, ut cùm vénerit hora, eórum reminiscámini, quia ego dixi vobis, allelúia. *Joan.* 16. 4.

*Oratio*, Omnípotens, *ut suprà in Laudibus, p.* 495.

*Commem. de Ascensione.*

*Ant.* Ad interióra, *p.* 486.

℣. Constituísti, *ibid.*

*Oratio*, Concéde, *p.* 482.

## FERIA SECUNDA INTRA OCTAVAM ASCENSIONIS.

### AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Dómine Deus... Dómine, exáudi... E'ripe me, *pag.* 162. *& seqq.*

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 5. 14.

*Umbra Petri.*

MAgis autem augebátur credéntium in Dómino multitúdo virórum, ac mulíerum, ita ut in platéas ejícerent infírmos, & pónerent in léctulis ac grabátis, ut, veniénte Petro, saltem umbra illíus obumbráret quemquam illórum, & liberaréntur ab infirmitátibus suis. Concurrébat autem & multitúdo vicinárum civitátum Jerúsalem, afferéntes ægros, & vexátos à spirítibus immúndis: qui curabántur omnes. Exúrgens autem princeps Sacerdótum, & omnes qui cum illo erant, (quæ est hǽresis Sadducæórum) repléti sunt zelo: & injecérunt manus in Apóstolos, & posuérunt eos in custódia pública. A'ngelus autem Dómini per noctem apériens jánuas cárceris, & edúcens eos, dixit: Ite, & stantes loquímini in templo plebi ómnia verba vitæ hujus. Qui cùm audíssent, intravérunt dilúculò in templum, & docébant. Tunc ábiit magistrátus cum minístris, & addúxit illos sine vi: timébant enim pópulum ne lapidaréntur. Et cúm adduxíssent illos, statuérunt in concílio. Et interrogávit eos princeps Sacerdótum, dicens: Præcipiéndo præcépimus vobis ne docerétis in nómine isto: & ecce replêstis Jerúsalem doctrínâ vestrâ: & vultis indúcere super nos sánguinem hóminis istius.

illus. Respóndens autem Petrus, & Apóstoli, dixérunt: Obedíre opórtet Deo magis quàm homínibus. Hæc cùm audíssent, dissecabántur, & cogitábant interfícere illos.

℟. Regna terræ, *pag.* 493.

LECTIO II. *Cap.* 8. 5.

*Simon magus.*

PHilíppus autem descéndens in civitátem Samaríæ, prædicábat illis Christum. Multi autem paralýtici & claudi curáti sunt. Factum est ergo gáudium magnum in illa civitáte. Vir autem nómine Simon, qui antè fúerat in civitáte magus, sedúcens gentem Samaríæ, dicens se esse áliquem magnum. Cùm verò credidíssent Philíppo evangelizánti de regno Dei, in nómine Jesu Christi baptizabántur viri ac mulíeres. Tunc Simon & ipse crédidit: & cùm baptizátus esset, adhærébat Philíppo. Videns etiam signa & virtútes máximas fieri, stupens admirabátur. Cùm autem audíssent Apóstoli, qui erant Jerosólymis, quòd recepísset Samaría verbum Dei, misérunt ad eos Petrum & Joánnem. Tunc imponébant manus super illos, & accipiébant Spíritum sanctum. Cùm vidísset autem Simon, quia per impositiónem manûs Apostolórum darétur Spíritus sanctus, óbtulit eis pecúniam. Petrus autem dixit ad eum: Pecúnia tua tecum sit in perditiónem: quóniam donum Dei existimásti pecúniâ possidéri. Pœniténtiam ítaque age ab hac nequítia tua, & roga Deum, si fortè remittátur tibi hæc cogitátio cordis tui.

℟. In sempitérnum, *p.* 493.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi.

LECTIO III.

*Serm.* 261. *de Ascens. Dómini.*

REsurréctio Dómini, spes nostra: Ascénsio Dómini, glorificátio nostra. Ascensiónis enim hódiè solémnia celebrámus. Si ergo rectè, si fidéliter, si devótè, si sanctè, si piè Ascensiónem Dómini celebrámus, ascendámus cum illo, & sursùm cor habeámus. Ascendéntes autem non extollámur, nec de nostris quasi de própriis méritis præsumámus. Sursùm enim cor habére debémus, sed ad Dóminum. Sursùm enim cor non ad Dóminum, supérbia vocátur; sursùm autem cor ad Dóminum, refúgium vocátur. Illi enim dícimus qui ascéndit: [ Dómine, refúgium factus es nobis. ] Resurréxit enim, ut spem nobis daret, quia resúrgit quod móritur, ne moriéndo desperarémus; & totam vitam nostram morte

finítam putarémus. Solíciti enim erámus de ipsa ánima, & ille nobis resurgéndo, & de carne securitátem dedit.

℟. Regnum tuum, Deus, regnum ómnium seculórum: & * Dominátio tua in omni generatióne & generatiónem, allelúia. *Psal.* 144. 13. ℣. Dignus es, Dómine Deus noster, accípere glóriam, & honórem, & virtútem. *Apoc.* 4. 11. * Dominátio. ℣. Glória. * Dominátio.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Ann.* 1235. *Can.* 2.

PRæcípitur ut omnes curam animárum habéntes véniant ad Sýnodum; & in eúndo & redeúndo honéstè ámbulent, & honésta quærant hospítia, & in eis circunspéctè se hábeant, ne status Clericórum vertátur pópulo in oppróbrium & contémptum.

FERIA TERTIA

*Intra Octavam Ascensionis.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Eructávit ... Deus, judícium tuum ..... Reges Tharsis, *p.* 164. *& seqq.*

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 8. 26.

*Eunuchus Candacis Reginæ.*

A'Ngelus Dómini locútus est ad Philíppum; dicens; Surge, & vade contra meridiánum, ad viam quæ descéndit ab Jerúsalem in Gazam: hæc est desérta. Et surgens ábiit. Et ecce vir Æ'thiops, Eunúchus, potens Candácis regínæ Æthíopum, qui erat super omnes Gazas ejus, vénerat adoráre in Jerúsalem: & revertebátur sedens super currum suum: legénsque Isaíam Prophétam. Dixit autem Spíritus Philíppo: Accéde, & adjúnge te ad currum istum. Accúrrens autem Philíppus, audívit eum legéntem Isaíam Prophétam, & dixit: Putásne intélligis quæ legis? Qui ait: Et quómodo possum, si non áliquis osténderit mihi? Rogavítque Philíppum, ut ascénderet, & sedéret secum. Locus autem Scriptúræ, quam legébat, erat hic: Tanquàm ovis ad occisiónem ductus est: & sicut agnus coram tondénte se, sine voce, sic non apéruit os suum. In humilitáte judícium ejus sublátum est. Generatiónem ejus quis enarrábit, quóniam tollétur de terra vita ejus? Respóndens autem Eunúchus Philíppo, dixit: O'bsecro te, de quo Prophéta dicit hoc? de se, an de álio áliquo? Apériens autem Philíppus os suum, & incípiens à Scriptúra ista, evangelizávit illi Jesum. Et dùm irent per viam, venérunt ad quam-

dam aquam : & ait Eunúchus : Ecce aqua, quid próhibet me baptizári ? Dixit autem Philíppus : Si credis ex toto corde, licet. Et respóndens ait : Credo Fílium Dei esse Jesum Christum. Et jussit stare currum : & descendérunt utérque in aquam, Philíppus, & Eunúchus, & baptizávit eum. Cùm autem ascendíssent de aqua, Spíritus Dómini rápuit Philíppum, & ámpliùs non vidit eum Eunúchus. Ibat autem per viam suam gaudens.

℟. Regna terræ, *p.* 493.

LECTIO II. *Cap.* 9. 32.

*Sanatio Æneæ. Resurrectio Tabithæ.*

FActum est autem, ut Petrus, dùm pertransíret univérsos, deveníret ad sanctos, qui habitábant Lyddæ. Invénit autem ibi hóminem quemdam, nómine Ænéam, ab annis octo jacéntem in grabáto, qui erat Paralyticus. Et ait illi Petrus : Ænéa, sanat te Dóminus Jesus Christus : Surge, & sterne tibi. Et continuò surréxit. Et vidérunt eum omnes, qui habitábant Lyddæ & Sarónæ : qui convérsi sunt ad Dóminum. In Joppe autem fuit quædam discípula, nómine Tabítha, quæ interpretáta dícitur Dorcas. Hæc erat plena opéribus bonis, & eleemósynis quas faciébat. Factum est autem in diébus illis, ut infirmáta morerétur. Quam cùm lavíssent, posuérunt eam in cœnáculo. Cùm autem propè esset Lydda ad Joppen, discípuli audiéntes, quia Petrus esset in ea, misérunt duos viros ad eum, rogántes : Ne pigritéris veníre usque ad nos. Exúrgens autem Petrus venit cum illis. Et cùm advenísset, duxérunt illum in cœnáculum : & circumstetérunt illum omnes víduæ flentes, & osténdentes ei túnicas & vestes, quas faciébat illis Dorcas. Ejéctis autem ómnibus foras, Petrus ponens génua, orávit ; & convérsus ad corpus dixit : Tabítha, surge. At illa apéruit óculos suos : & viso Petro, resédit. Dans autem illi manum, eréxit eam. Et cùm vocásset sanctos, & víduas, assignávit eam vivam. Notum autem factum est per univérsam Joppen : & credidérunt multi in Dómino. Factum est autem, ut dies multos morarétur in Joppe, apud Simónem quemdam coriárium.

℟. In sempitérnum, *p.* 493.

Sermo sancti Leónis Papæ.

LECTIO III.

*Serm.* 2. *de Ascens. Domini.*

QUód Redemptóris nostri conspícuum fuit, in sacraménta transívit : & ut

fides excelléntior esset & fírmior, visióni doctrína succéssit, cujus autoritátem, supérnis illumináta rádiis credéntium corda sequeréntur. Hanc fidem Ascensióne Dómini auctam, & Spíritûs sancti múnere roborátam, non víncula, non cárceres, non exília, non fames, non ignis, non laniátus ferárum, nec exquisíta persequéntium crudelitátibus supplícia terruérunt. Pro hac fide per univérsum mundum non solùm viri, sed étiam féminæ; nec tantùm ímpubes púeri, sed étiam ténerræ vírgines usque ad effusiónem sui sánguinis decertárunt. Hæc fides dæmónia ejécit, ægritúdines dépulit, mórtuos suscitávit. Undè & ipsi beáti Apóstoli tantùm de Ascensióne Dómini profecérunt, ut quidquid illis priùs intúlerat metum verterétur in gáudium. Totam enim contemplatiónem ánimi in divinitátem ad Patris déxteram consedéntis eréxerant.

℟. Regnum tuum, *p. 498.*

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*An. 1235. can. 25.*

Summa reveréntia & honor máximus sacris altáribus adhibeátur, & máximè ubi sacrosánctum corpus Dómini reservátur.

FERIA QUARTA

*Intra Octavam Ascensionis.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psal.* Deus noster refúgium... Magnus Dóminus.. Fundaménta, *p. 166. & seqq.*

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap. 10. 1.*

*Orationes & eleemosynæ Cornelii.*

Vir quidam erat in Cæsaréa, nómine Cornélius, Centúrio cohórtis quæ dícitur Itálica, religiósus, ac timens Deum cum omni domo sua, fáciens eleemósynas multas plebi, & déprecans Deum semper. Is vidit in visu maniféstè, quasi horâ diéi nonâ, A'ngelum Dei introeúntem ad se, & dicéntem sibi: Cornéli, oratiónes tuæ & eleemósynæ tuæ ascendérunt in memóriam in conspéctu Dei. Et nunc mitte viros in Joppen, & accérsi Simónem quemdam, qui cognominátur Petrus. Hic hospitátur apud Simónem quemdam coriárium, cujus est domus juxta mare: hic dicet tibi quid te opórteat fácere: Et cùm discessísset A'ngelus, qui loquebátur illi, vocávit duos domésticos suos, & mílitem metuéntem Dóminum, ex his qui illi parébant. Quibus cùm narrásset ómnia, misit illos

in Joppen. Pósterâ autem die iter illis faciéntibus, & appropinquántibus civitáti, ascéndit Petrus in superióra, ut oráret circa horam sextam. Ecce viri, qui missi erant à Cornélio, inquiréntes domum Simónis, astitérunt ad jánuam. Petro autem dixit Spíritus: Ecce viri tres quærunt te: Surge itaque, descénde, & vade cum eis nihil dúbitans: quia ego misi illos. Introdúcens ergo eos, recépit hospítio. Seqüénti autem die surgens proféctus est cum illis: & quidam ex frátribus ab Joppe comitáti sunt eum.

℟. Præbuit seipsum, *p.* 479.

LECTIO II. *v.* 24.

*Cornelius baptizatus.*

ALterâ autem die introívit Cæsaréam. Cornélius verò expectábat illos, convocátis cognátis suis, & necessáriis amícis. Et factum est cùm introísset Petrus, óbvius venit ei Cornélius: & prócidens ad pedes ejus adorávit. Petrus verò elevávit eum, dicens: Surge, & ego ipse homo sum. Et Cornélius ait: Nunc omnes nos in conspéctu tuo ádsumus audíre ómnia quæcúnque tibi præcépta sunt à Dómino. Apériens autem Petrus os suum, dixit: Vos scitis quod factum est verbum per univérsam Judæam: incípiens enim à Galilæa, post baptísmum quod prædicávit Joánnes, Jesum à Názareth: quómodò unxit eum Deus Spíritu sancto, & virtúte, qui pertránsiit benefaciéndo & sanándo omnes oppréssos à diábolo, quóniam Deus erat cum illo. Et præcépit nobis prædicáre pópulo, & testificári, quia ipse est, qui constitútus est à Deo judex vivórum & mortuórum. Adhuc loquénte Petro verba hæc, cécidit Spíritus sanctus super omnes, qui audiébant verbum. Et obstupuérunt ex circuncisióne fidéles, qui vénerant cum Petro: quia & in Natiónes grátia Spíritûs sancti effúsa est. Audiébant enim illos loquéntes linguis, & magnificántes Deum. Tunc respóndit Petrus: Nunquid aquam quis prohibére potest, ut non baptizéntur hi, qui Spíritum sanctum accepérunt, sicut & nos? Et jussit eos baptizári in nómine Dómini Jesu Christi. Tunc rogavérunt eum ut manéret apud eos áliquot diébus.

℟. Exultávit, *p.* 479.

Sermo sancti Joánnis Chrysóstomi.

LECTIO III.

*Serm. de Ascens. Domini.*

CHristus ascéndens in cœlum, nostræ natúræ primítias óbtulit Patri; & oblátum donum mirátus est Pa-

ter; quòd & tanta dignitas offerébat, & quod offerebátur, nulla mácula fœdabátur. Nam & suis mánibus suscépit oblátum, & suæ sedis fecit esse partícipem; & quod plus est, ad partem suæ déxteræ collocávit. Cognoscámus quis est ille qui audívit, Sede ad déxteram meam? quæ natúra est, cui Deus dixit: Esto meæ párticeps sedis? Illa natúra est, quæ audívit: Terra es, & in terram ibis. Non enim ad omnem glóriam cœlos transiisse sufficerat, non cum A'ngelis stare, sed cœlos transívit, supra Chérubim ascéndit, ultra Séraphim elevátur, nec antè stetit, nisi sedem Domínicam meruísset.

℟. Ascéndit, *p.* 480.

*CANON.*

Ex statútis antíquis Petri de Collemédio Archiepíscopi Rotomagénsis.

*Anno* 1235. *can.* 25.

Linteámina altáris & induménta sæpiùs abluántur ad reveréntiam & præséntiam Salvatóris nostri & totíus cúriæ cœléstis, quæ cum eo præsens adest, quóties Missa celebrátur.

---

FERIA QUINTA.

IN DIE OCTAVÆ ASCENSIONIS.

*Duplex majus.*

*Ad primas Vesperas, omnia ut in primis Vesperis Festi exceptis quæ sequuntur.*

℟. Viri Galilæi, *ut infrà, p.* 507.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. c. Fílius hóminis ventúrus est in glória Patris sui cum A'ngelis suis; & tunc reddet unicuíque secúndùm ópera ejus, allelúia. *Matth.* 16. 27.

Orémus. *Oratio.*

DA, quæsumus, omnípotens Deus, illuc súbsequi tuórum membra fidélium, quò caput nostrum principiúmque præcéssit Dóminus noster Jesus Christus Fílius tuus; Qui tecum.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Júdicem vivórum & mortuórum * Veníte, adorémus, allelúia. *Act.* 10. 42.

*Psalmus*, Veníte.

*Hymnus.* *Santol. Vict.*

QUID obstupéndum cérnimus!
Cœlum profúndum sólvitur,
Christum sedéntem núbibus
Quàm densa stipant ágmina!

FERA'LIS ad sonum tubæ
Mors jussa reddet mórtuos,
Quos ad suprémum júdicis
Cogent tribúnal A'ngeli.

PIOS locans ad déxteram
Repéllet ad lævam reos,
Novit suum pastor gregem,
Oves ab hœdis dívidet.

HIc assidébunt júdici
Quicúnque, spretis ómnibus
Fugére mundum páuperes,

Deum secúti páuperem.

Ventu're Judex séculi,
Jesu, tibi sit glória
Cum Patre cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

*Ant.* 4. *irr.* d. Parávit.

*Psalmus* 9.

CONfitébor tibi, Dómine, in toto corde meo; * narrábo ómnia mirabília tua.

Lætábor & exultábo in te; * psallam nómini tuo, Altíssime.

In converténdo inimícum meum retrórsùm: * infirmabúntur & períbunt à fácie tua.

Quóniam fecísti judícium meum & causam meam: * sedísti super thronum qui júdicas justítiam.

Increpásti Gentes, & périit ímpius: * nomen eórum delésti in ætérnum & in séculum séculi.

Inimíci defecérunt frámeæ in finem; * & civitátes eórum destruxísti.

Périit memória eórum cum sónitu; * & Dóminus in ætérnum pérmanet.

Parávit in judício thronum suum; * & ipse judicábit orbem terræ in æquitáte, judicábit pópulos in justítia.

Et factus est Dóminus refúgium páuperi; * adjútor in opportunitátibus, in tribulatióne.

Et sperent in te qui novérunt nomen tuum; * quóniam non dereliquísti quæréntes te, Dómine.

Psállite Dómino, qui hábitat in Sion; * annuntiáte inter Gentes stúdia ejus:

Quóniam requírens sánguinem eórum recordátus est: * non est oblítus clamórem páuperum.

Miserére mei, Dómine; * vide humilitátem meam de inimícis meis.

Qui exáltas me de portis mortis, * ut annúntiem omnes laudatiónes tuas in portis fíliæ Sion.

Exultábo in salutári tuo: * infíxæ sunt Gentes in intéritu quem fecérunt.

In láqueo isto quem abscondérunt, * comprehénsus est pes eórum.

Cognoscétur Dóminus judícia fáciens: * in opéribus mánuum suarum comprehénsus est peccátor.

Convertántur peccatóres in inférnum, * omnes Gentes quæ obliviscúntur Deum.

Quóniam non in finem oblívio erit páuperis: * patiéntia páuperum non períbit in finem.

Exúrge, Dómine, non confortétur homo: * judicéntur Gentes in conspéctu tuo.

Constítue, Dómine, legislatórem super eos: * ut sciant

Gentes quóniam hómines sunt.

Ut quid, Dómine, recessísti longè, * déspicis in opportunitátibus, in tribulatióne?

Dùm supérbit ímpius, incénditur pauper: * comprehendúntur in consíliis quibus cógitant.

Quóniam laudátur peccátor in desidériis ánimæ suæ; * & iníquus benedícitur.

Exacerbávit Dóminum peccátor, * secúndùm multitúdinem iræ suæ non quæret.

Non est Deus in conspéctu ejus; * inquinátæ sunt viæ illíus in omni témpore.

Auferúntur judícia tua à fácie ejus: * ómnium inimicórum suórum dominábitur.

Dixit enim in corde suo: * Non movébor à generatióne in generatiónem sine malo.

Cujus maledictióne os plenum est, & amaritúdine, & dolo: * sub lingua ejus labor & dolor.

Sedet in insídiis cum divítibus in occúltis, * ut interfíciat innocéntem.

O'culi ejus in páuperem respíciunt: * insidiátur in abscóndito, quasi leo in spelúnca sua.

Insidiátur ut rápiat páuperem; * rápere páuperem, dùm áttrahit eum.

In láqueo suo humiliábit eum, * inclinábit se, & cadet cùm dominátus fúerit páuperum.

Dixit enim in corde suo: Oblítus est Deus, * avértit fáciem suam, ne vídeat in finem.

Exúrge, Dómine Deus, exaltétur manus tua; * ne obliviscáris páuperum.

Propter quid irritávit ímpius Deum? * dixit enim in corde suo: Non requíret.

Vides, quóniam tu labórem & dolórem consíderas, * ut tradas eos in manus tuas.

Tibi derelíctus est pauper: * órphano tu eris adjútor.

Cóntere bráchium peccatóris & maligni: * quærétur peccátum illíus, & non inveniétur.

Dóminus regnábit in ætérnum, & in séculum séculi: * períbitis, Gentes, de terra illíus.

Desidérium páuperum exaudívit Dóminus: * præparatiónem cordis eórum audívit auris tua.

Judicáre pupíllo & húmili, * ut non appónat ultrà magnificáre se homo super terram.

*Ant.* Parávit in judício thronum suum, & ipse judicábit orbem terræ in æquitáte, allelúja. *v.* 9.

*Ant.* 7. c. Dixi iníquis,

*Psalmus 74.*

Confitébimur tibi, Deus,* confitébimur, & invocábimus nomen tuum.

Narrábimus mirabília tua:* cùm accépero tempus, ego justítias judicábo.

Liquefácta est terra, & omnes qui hábitant in ea: * ego confirmávi colúmnas ejus.

Dixi iníquis: Nolíte iníquè ágere: * & delinquéntibus: Nolíte exaltáre cornu:

Nolíte extóllere in altum cornu vestrum: * nolíte loqui advérsus Deum iniquitátem.

Quia neque ab Oriénte, neque ab Occidénte, * neque à desértis móntibus:

Quóniam Deus judex est, * hunc humíliat, & hunc exáltat:

Quia calix in manu Dómini vini meri plenus misto, * & inclinávit ex hoc in hoc:

Verùmtamen fæx ejus non est exinaníta; * bibent omnes peccatóres terræ.

Ego autem annuntiábo in sæculum: * cantábo Deo Jacob.

Et ómnia córnua peccatórum confríngam: * & exaltabúntur córnua justi.

*Ant.* Dixi iníquis: Nolíte iníquè ágere, quóniam Deus judex est, allelúia. *v.* 5. 8.

*Ant.* 8. c. Terra trémuit.

*Psalmus 75.*

Notus in Judæa Deus: * in Israël magnum nomen ejus.

Et factus est in pace locus ejus, * & habitátio ejus in Sion.

Ibi confrégit poténtias árcuum, * scutum, gládium, & bellum.

Illúminans tu mirabíliter à móntibus ætérnis: * turbáti sunt omnes insipiéntes corde.

Dormiérunt somnum suum,* & nihil invenérunt omnes viri divitiárum in mánibus suis.

Ab increpatióne tua, Deus Jacob, * dormitavérunt qui ascendérunt equos.

Tu terríbilis es, & quis resístet tibi? * ex tunc ira tua.

De cœlo audítum fecísti judícium: * terra trémuit & quiévit.

Cùm exúrgeret in judícium Deus, * ut salvos fáceret omnes mansuétos terræ.

Quóniam cogitátio hóminis confitébitur tibi: * & relíquiæ cogitatiónis diem festum agent tibi.

Vovéte, & réddite Dómino Deo vestro, * omnes qui in circúitu ejus affértis múnera.

Terríbili & ei qui aufert spíritum príncipum, * terríbili apud reges terræ.

*Ant.* Terra trémuit, &

quiévit ; cùm exúrgeret in judícium Deus, allelúia. *v.* 9. 10.

℣. Judicábit Dóminus orbem terrárum in justítia, allelúia. ℞. Et pópulos in æquitáte, allelúia. *Ps.* 97. 9.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Thessalonicénses.

LECTIO I. *Cap.* 5. 1.

*Dies Domini repentè superveniet.*

DE tempóribus & moméntis, fratres, non indigétis ut scribámus vobis. Ipsi enim diligénter scitis, quia dies Dómini sicut fur in nocte, ita véniet. Cùm enim díxerint pax, & secúritas : tunc repentínus eis supervéniet intéritus, sicut dolor in útero habéntis ; & non effúgient. Vos autem, fratres, non estis in ténebris, ut vos dies illa tanquàm fur comprehéndat : omnes enim vos filii lucis estis, & filii diéi : non sumus noctis neque tenebrárum. Igitur non dormiámus sicut & céteri, sed vigilémus & sóbrii simus : indúti lorícam fidei & charitátis, & gáleam spem salútis : quóniam non pósuit nos Deus in iram, sed in acquisitiónem salútis per Dóminum nostrum Jesum Christum, qui mórtuus est pro nobis.

℞. Ipse est qui constitútus est à Deo * Judex vivórum & mortuórum, allelúia. *Act.* 10. 42. ℣. Sedísti super thronum, qui júdicas justítiam. *Ps.* 9. 5. * Judex.

Sermo sancti Leónis Papæ.

LECTIO II.

*Ser. 4. de collectis & eleemosyn.*

VEniet in majestátis suæ glória Dóminus, sicut ipse prædíxit, aderítque cum eo rádians in splendóribus suis, innumerábilis Angelicórum multitúdo Legiónum. Congregabúntur ante thronum poténtiæ ejus ómnium Géntium pópuli : & quidquid hóminum univérsis sécul[is] toto orbe terrárum progénitum est, in conspéctu judicántis adstábit. Separabúntur ab injústis justi, à nocéntibus innocéntes : & cùm præparátum sibi regnum, recensitis misericórdiæ opéribus, filii pietátis accéperint, exprobrábitur durítia sterilitátis injústis : & nihil habéntes sinistri commúne cum dextris, in ignem ad diáboli & angelórum ejus torménta dispósitum omnipoténtis Júdicis damnatióne mitténtur, cum illo habitúri pœnæ communiónem, cujus elegérunt facere voluntátem. Quis igitur istam sortem æternórum cruciátuum non pavéscat ? quis mala nunquam finiénda non timéat ? Sed cùm ideò denun-

tiáta sit sevéritas, ut misericórdia quæreréțur, in diébus præséntibus cum misericórdiæ est largitáte vivéndum, ut hómini post periculósam negligéntiam, ad pietátis ópera reverténti, possíbile sit ab hac senténtia liberári. Hoc enim agit poténtia júdicis, hoc grátia Servatóris, ut relínquat ímpius vias suas, & ab iniquitátis suæ consuetúdine peccátor abscédat.

℟. Ecce venit cum núbibus, & vidébit eum omnis óculus, & qui eum pupugérunt, * Et plangent se super eum omnes tribus terræ, allelúia. *Apoc.* 1. 7. ℣. Introíbunt in spelúncas petrárum & dicent móntibus: Operíte nos. *Isa.* 2. 19. *& Osee* 10. 8. * Et plangent.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 24. 49.

*Promissum Spiritûs sancti mittendi.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Ego mitto promíssum Patris mei in vos; vos autem sedéte in civitáte, quoadúsque induámini virtúte ex alto. Et réliqua.

Homilía sancti Justíni Mártyris.

*Apol.* 1. *ad Anton. Senatumque Rom. Anno* 150.

CHristum in cœlum étiam reversúrum esse quemádmodùm prædíctum erat, ex his cognóscite. Tóllite portas cœlórum, aperíte, ut Rex glóriæ intróeat: quis est hic rex glóriæ? Dóminus fortis & potens. Eúmdem étiam cum glória ex cœlis ventúrum esse cognóscite ex his, quæ à Jeremía Prophéta ad hoc ipsum dicta sunt. Ecce ut Fílius hóminis ex cœli núbibus venit, & cum eo sui A'ngeli. Quóniam ígitur ea, quæ jam facta sunt ómnia, fore, prædíctum esse à Prophétis docémus, ea étiam quæ simíliter prædícta sunt à Prophétis, & futúra sunt, ut omninò futúra necessáriò crédere debémus. Duos enim ejus advéntus Prophétæ prædixérunt: unum qui jam evénit quasi inglórii, patibilísque hóminis. A'lterum cùm ex cœlis in majestáte, unà cum suo Angelórum exércitu, ut prædíctum est, véniet, cùm étiam hóminum córpora excitábit: túmque bonórum córpora immortalitáte donábit, improbórum verò in ætérno sensu cum malis géniis in ignem ætérnum conjíciet.

℟. Viri Galilǽi, quid statis aspiciéntes in cœlum? hic Jesus, qui assúmptus est à vobis in cœlum, * Sic véniet quemádmodùm vidístis eum eúntem in cœlum, † Allelúia, allelúia. *Act.* 1. 11.



℣. Ad judícium véniet cum sénibus pópuli sui & princípibus ejus. *Isa.* 3. 14. * Sic véniet. ℣. Glória. † Allelúia.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Jubiláte in conspéctu Regis Dómini, allelúia. ℟. Quóniam venit judicáre terram, allelúia. *Psal.* 97. *v.* 6. 9.

*Psalmi & Canticum ut in die Ascensionis.*

*Ant.* 5. a. Ecce venit Dóminus in sanctis míllibus fácere judícium, allelúia. *Juda* 14. 15.

*Ant.* 2. d. Sedébit super sedem majestátis suæ, & congregabúntur ante eum omnes Gentes, allelúia. *Matt.* 25. *v.* 31. 32.

*Ant.* 1. a. Potestátem dedit ei Pater judícium fácere quia Fílius hóminis est, allelúia. *Joan.* 5. 27.

*Ant.* 6. f. Beáti servi illi, quos cùm vénerit Dóminus, invénerit vigilántes, allelúia. *Luc.* 12. 37.

*Ant.* 1. *irreg.* Tunc reddet unicuíque secúndùm ópera ejus, allelúia. *Matth.* 16. 27.

*Capitulum.* 2. *Cor.* 5. 10.

OMnes nos manifestári opórtet ante tribúnal Christi, ut réferat unusquísque própria córporis, prout gessit, sive bonum, sive malum.

*Hymn. & ℣. ut in die Ascens.*

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. C. Véniet Dóminus, qui & illuminábit abscóndita tenebrárum, & manifestábit consília córdium, & tunc laus erit unicuíque à Deo, allelúia. 1. *Cor.* 4. 5.

*Oratio*, Da quǽsumus, *pag.* 502.

*CANON.*

Ex Concílio Ephesíno.

*Ann.* 431. *parte* 1.

CHristus córpore, quo crucifígi póterat, as[...] súmpto, crucem sustínuit, crucísque supplícium per[...] péssus, Deo & Patri dexter[...] assédit. Unus proínde est Dó[...] minus Jesus Christus, cruci[...] fíxus quidem ut homo, cum Patre verò regnans ut Deus.

AD HORAS *& ad secund[...] Vesperas omnia ut die, e[...] ceptis Responsorio, Oratio[...] & Antiphonâ sequente.*

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. [...] Christus semel oblátus est a[...] multórum exhauriénda peccáta; secúndò sine peccáto apparébit expectántibus se in salútem, allelúia. *Hebr.* 9. 28.

FERIA SEXTA

*Post Octavam Ascensionis.*

*Hodiè si occurrat Festum semiduplex aut suprà, de eo fit Officium, & commemoratio de Feria; si simplex, fit de eo commemoratio & Officium ut infrà.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Omnia ut intra Octavam Ascensionis exceptis quæ sequuntur.*

*Psal.* Deus, repulisti nos.... Ut quid, Deus.... Memor esto, *pag.* 168. *& seqq.*

De Actibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 14. 1.

*Iconii seditio facta adversùs Paulum & Barnabam.*

Factum est autem Icónii, ut simul introírent in Synagógam Judæórum, & loquieréntur, ita ut créderet Judæórum & Græcórum copiósa multitúdo. Qui verò incréduli fuérunt Judǽi, suscitavérunt, & ad iracúndiam concitavérunt ánimas Géntium advérsùs fratres. Multo igitur témpore demoráti sunt, fiduciáliter agéntes in Dómino, testimónium perhibénte verbo grátiæ suæ, dante signa, & prodígia fieri per manus eórum. Divísa est autem multitúdo civitátis: & quidam quidem erant cum Judǽis, quidam verò cum Apóstolis. Cùm autem factus esset ímpetus Géntilium & Judæórum cum princípibus suis, ut contuméliis afficerent, & lapidárent eos; intelligéntes confugérunt ad civitátes Lycaóniæ, Lystram & Derben, & univérsam in circuítu regiónem, & ibi evangelizántes erant.

℟. Præbuit, *pag.* 479.

LECTIO II. *v.* 7.

*Vir claudus ab utero matris.*

Quidam vir Lystris infirmus pédibus sedébat, claudus ex útero matris suæ, qui nunquàm ambuláverat. Hic audívit Paulum loquéntem. Qui intúitus eum, & videns quia fidem habéret ut salvus fieret, dixit magnâ voce: Surge super pedes tuos rectus. Et exilívit & ambulábat. Turbæ autem cùm vidíssent quod fécerat Paulus, levavérunt vocem suam, Lycaónicè dicéntes: Dii símiles facti homínibus, descendérunt ad nos. Et vocábant Bárnabam Jovem, Paulum verò Mercúrium: quóniam ipse erat dux verbi. Sacérdos quoque Jovis, qui erat ante civitátem, tauros & corónas ante jánuas ǽfferens, cum pópulis volébat sacrificáre. Quod ùbi audiérunt Apóstoli, Bárnabas & Paulus, conscíssis túnicis suis exiliérunt in turbas, clamántes, & dicéntes: Viri, quid hæc fácitis? & nos mortáles sumus, símiles vobis hómines, annuntiántes vobis ab his vanis convérti ad Deum vivum, qui fecit cœlum & terram, & mare, & ómnia quæ in eis sunt. Qui in prætéritis gene-

ratiónibus dimísit omnes Gentes íngredi vias suas. Et quidem non sine testimónio semetípsum relíquit, benefáciens de cœlo, dans plúvias & témpora fructífera, implens cibo & lætítiâ corda nostra. Et hæc dicéntes, vix sedavérunt turbas ne sibi immolárent.

℟. Exultávit, *pag.* 479.

LECTIO III. *v.* 18.

*Paulus lapidatus.*

SUpervenérunt autem quidam ab Antiochía & Icónio Judæi: & persuásis turbis, lapidantésque Paulum, traxérunt extra civitátem, existimántes eum mórtuum esse. Circundántibus autem eum discípulis, surgens intrávit civitátem, & pósterâ die profectus est cum Bárnaba in Derben. Cúmque evangelizássent civitáti illi, & docuíssent multos, revérsi sunt Lystram, & Icónium, & Antiochíam, confirmántes ánimas discipulórum, exhortantésque ut permanérent in fide: & quóniam per multas tribulatiónes opórtet nos intráre in regnum Dei. Et cùm constituíssent illis per síngulas Ecclésias Presbyteros, & orássent cum jejunatiónibus, commendavérunt eos Dómino, in quem credidérunt.

℟. Ascéndit, *pag.* 480.

CANON.

Ex Concílio Rotomagénsi. *An.* 1581. *de sacrificio Missæ Can.* 1.

QUàm illótâ consciéntiâ ac pollútâ accédant ad sacrificándum Sacerdótes, aut quàm parùm studiósè ac piè dijúdicent corpus Dómini, satis árguunt sordes Cálicum, Corporálium, Mappárum atque ómnium ornamentórum, quibus decet venerári tantum religiónis Christiánæ sacraméntum ac sacrifícium.

SABBATO

IN VIGILIA PENTECOSTES.

*Ab hac die usque ad festum sanctissimæ Trinitatis inclusivè, si occurrat Festum triplex vel duplex, transfertur post prædictum Festum SS. Trinitatis.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM

*Invit.* Deum, qui effúndit Spíritum suum super omnem carnem, * Veníte adorémus, allelúia. *Joel.* 2. 28.

*Psalm.* Veníte.

*Hymnus.* FELIX dies mortálibus, *pag.* 476.

*Ant.* 4. 2. Verbo Dómini.

*Psalmus* 32.

EXultáte justi in Dómino: * rectos decet collaudátio. Confitémini Dómino in cíthara: * in psaltério decem chordárum psállite illi.

Cantáte ei cánticum novum: * benè psállite ei in vociferatióne.

Quia rectum est verbum Dómini, * & ómnia ópera ejus in fide.

Díligit misericórdiam & judícium: * misericórdiâ Dómini plena est terra;

Verbo Dómini cœli firmáti sunt; * & spíritu oris ejus omnis virtus eórum.

Cóngregans sicut in utre aquas maris; * ponens in thesauris abyssos.

Tímeat Dóminum omnis terra: * ab eo autem commoveántur omnes inhabitántes orbem.

Quóniam ipse dixit, & facta sunt: * ipse mandávit, & creáta sunt.

Dóminus díssipat consília Géntium; * réprobat autem cogitatiónes populórum, & réprobat consília príncipum.

Consílium autem Dómini in ætérnum manet: * cogitatiónes cordis ejus in generatióne & generatiónem.

Beáta gens, cujus est Dóminus Deus ejus; * pópulus, quem elégit in hereditátem sibi.

De cœlo respéxit Dóminus, * vidit omnes fílios hóminum.

De præparáto habitáculo suo * respéxit super omnes, qui hábitant terram.

Qui finxit singillátim corda eórum: * qui intélligit ómnia ópera eórum.

Non salvátur rex per multam virtútem; * & gigas non salvábitur in multitúdine virtútis suæ.

Fallax equus ad salútem, * in abundántia autem virtútis suæ non salvábitur.

Ecce óculi Dómini super metuéntes eum; * & in eis qui sperant super misericórdia ejus.

Ut éruat à morte ánimas eórum, * & alat eos in fame.

A'nima nostra sústinet Dóminum; * quóniam adjútor & protéctor noster est.

Quia in eo lætábitur cor nostrum; * & in nómine sancto ejus sperávimus.

Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos; * quemádmodùm sperávimus in te.

*Ant.* Verbo Dómini cœli firmáti sunt, & Spíritu oris ejus omnis virtus eórum, allelúia. *v.* 6.

*Ant.* 3. c. Vox Dómini.

*Psalmus* 28.

AFférte Dómino, fílii Dei, * afférte Dómino fílios aríetum.

Afférte Dómino glóriam & honórem, afférte Dómino glóriam nómini ejus; * adoráte Dóminum in átrio sancto ejus.

Vox Dómini super aquas,

Deus majestátis intónuit; * Dóminus super aquas multas.

Vox Dómini in virtúte: * vox Dómini in magnificéntia.

Vox Dómini confringéntis cedros; * & confringet Dóminus cedros Líbani.

Et comminuet eas tanquam vítulum Líbani: * & diléctus quemádmodùm fílius unicórnium.

Vox Dómini intercidéntis flammam ignis: vox Dómini concutiéntis desértum, * & commovébit Dóminus desértum Cades.

Vox Dómini præparántis cervos, & revelábit condénsa; * & in templo ejus omnes dicent glóriam.

Dóminus dilúvium inhabitáre facit; * & sedébit Dóminus Rex in ætérnum.

Dóminus virtútem pópulo suo dabit; * Dóminus benedícet pópulo suo in pace.

*Ant.* Vox Dómini præparántis cervos, & revelábit condénsa, & in templo ejus omnes dicent glóriam, allelúia. *v.* 8.

*Ant.* 2. d. Cor mundum.

*Psalmus* 50.

MIserére mei, Deus, * secúndùm magnam misericórdiam tuam.

Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum, * dele iniquitátem meam.

A'mpliùs lava me ab iniquitáte mea, * & à peccáto meo munda me.

Quóniam iniquitátem meam ego cognósco; * & peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, & malum coram te feci: * ut justificéris in sermónibus tuis, & vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus concéptus sum; * & in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexísti; * incérta & occúlta sapiéntiæ tuæ manifestásti mihi.

Aspérges me hyssópo, & mundábor: * lavábis me, & super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium & lætítiam; * & exultábunt ossa humiliáta.

Avérte fáciem tuam à peccátis meis, * & omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus, * & spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua, * & Spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui, * & spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas, * & ímpii ad te converténtur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ; * & exultábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine,

Dómine, lábia mea apéries,* & os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluísses sacrifícium, dedíssem útique, * holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus : * cor contrítum & humiliátum, Deus, non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion, * ut ædificéntur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes, & holocáusta, * tunc impónent super altáre tuum vítulos.

*Ant.* Cor mundum crea in me, Deus, & Spíritum rectum ínnova in viscéribus meis, allelúia. *v.* 12.

℣. Redde mihi lætítiam salutáris tui, allelúia. ℟. Et Spíritu principáli confírma me, allelúia. *Psal.* 50. 14.

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 27. 27.

*Paulus naufragus.*

POsteáquàm quartadécima nox supervénit, navigántibus nobis in A'dria circa médiam noctem, suspicabántur nautæ apparére sibi áliquam regiónem. Timéntes autem ne in áspera loca incidérémus, de puppi mitténtes ánchoras quátuor, optábant diem fíeri. Cùm autem dies factus esset, terram non agnoscébant : sinum verò quemdam considerábant, habéntem littus, in quem cogitábant, si possent, ejícere navem. Et cùm ánchoras sustulíssent, committébant se mari, simul laxántes junctúras gubernaculórum : & leváto artémone secúndùm auræ flatum tendébant ad littus. Et cùm incidissémus in locum dithalássum impegérunt navem : & prora quidem fixa manébat immóbilis, puppis verò solvebátur à vi maris. Mílitum autem consílium fuit ut custódias occíderent : ne quis, cùm enatásset, effúgeret. Centúrio autem volens serváre Paulum, prohíbuit fíeri : jussítque eos, qui possent natáre, emíttere se primos, & evádere, & ad terram exíre : Et céteros álios in tábulis ferébant : quosdam super ea, quæ de navi erant. Et sic factum est, ut omnes ánimæ eváderent ad terram.

℟. Regna terræ, *ut suprà, pag.* 493.

Sermo sancti Augustini Epíscopi.

LECTIO II.

*Serm.* 270.

OPportébat ut post Resurrectiónem & Ascensiónem Dómini, ejus de Spíritu sancto promíssio compleréturur. Sic enim & ipse Joánnes Evangelísta ex persóna sua díxerat, quando Jesus eum

dèm significans Spíritum sánctum clamáverat dicens: [Si quis sitit, véniat ad me, & bibat, & flúmina aquæ vivæ fluent de ventre ejus,] secútus enim Evangelísta ait: Hoc autem dicébat de Spíritu sancto, quem acceptúri erant ii, qui in eum creditúri erant; nondum enim erat Spíritus datus, quia Jesus nondum fúerat glorificátus. Glorificátus est ergo Dóminus Resurrectióne & Ascensióne. Sicut autem didícimus ex libris sanctis, quadraginta dies complévit cum discípulis suis post Resurrectiónem. Quadragésimo autem die in eórum conspéctu ascéndit in cœlum. Implétis post quadraginta dies áliis decem diébus, venit Spíritus sanctus, ut lex impleátur per grátiam.

℟. Spíritus tuus bonus, Dómine, dedúcet me in terram rectam, * Propter nomen tuum vivificábis me in æquitáte tua, allelúia. *Ps.* 142. 10. ℣. Docébit omnem veritátem, & quæ ventúra sunt annuntiábit. *Joan.* 16. 13. * Propter.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

Lectio III. *Cap.* 14. 15.

*Christus promittit Consolatorem.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Si dilígitis me, mandáta mea serváte; & ego rogábo Patrem, & álium Paraclétum dabit vobis. Et réliqua.

Homilia sancti Augustini Episcopi.

*In Joan. Evang. Tract. 74. ante finem.*

QUod ait, Rogábo Patrem, & álium Paraclétum dabit vobis: osténdit & seípsum esse Paraclétum. Paraclétus enim latínè dícitur Advocátus: & dictum est de Christo: [Advocátum habémus ad Patrem, Jesum Christúm justum.] Sic autem mundum dixit non posse accípere Spíritum sanctum, sicut étiam dictum est: Prudéntia carnis inimíca est Deo: legi enim Dei non est subjécta, nec enim potest: velut si dicámus: Injustítia justítia esse non potest. Mundum quippe ait hoc loco, mundi significans dilectóres: quæ diléctio non est à Patre. Et ídeò dilectióni hujus mundi, de qua satágimus ut minuátur & consumátur in nobis, contrária est diléctio Dei, quæ diffúnditur in córdibus nostris per Spíritum sanctum, qui datus est nobis. Mundus ergo eum accípere non potest, quia non videt eum, neque scit eum. Non enim habet invisíbiles óculos mundána diléctio, per quos vidéri

Spiritus sanctus potest, qui vidéri nisi invisibiliter non potest. Vos autem, inquit, cognoscétis eum: quia apud vos manébit, & in vobis erit. Erit in eis, ut máneat; non manébit, ut sit: priùs est enim esse alicubi, quàm manére. Sed ne putárent quod dictum est: Apud vos manébit; ita dictum, quemádmodùm apud hóminem hospes visibíliter manére consuévit, expósuit quid díxerit; Apud vos manébit, cùm adjúnxit & dixit: In vobis erit.

℟. Ego rogábo Patrem meum, & álium Paraclétum dabit vobis, * Ut máneat vobíscum in ætérnum, † Allelúia, allelúia. *Joannis* 14. 16. ℣. Spíritum meum ponam in médio vestri. *Ezech.* 36. 27. * Ut máneat. ℣. Glória. † Allelúia.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Dabit Dóminus voci suæ vocem virtútis, allelúia. ℟. Date glóriam Deo, allelúia. *Ps.* 67. *v.* 34. 35.

*Psalmi de Feria.*

*Ant.* 1. a. Creábit Dóminus super omnem locum montis Sion nubem per diem, & splendórem ignis flammántis in nocte, allelúia. *Is.* 4. 5.

*Ant.* 5. a. Dabo vobis cor novum, & Spíritum novum ponam in médio vestri, allelúia. *Ezech.* 36. 26.

*Ant.* 8. g. Germinábunt quasi sálices juxta præterfluéntes aquas, allelúia. *Is.* 44. 4.

*Ant.* 4. e. Ténebræ & palpátio in ætérnum, donec effundátur Spíritus de excélso, allelúia. *Isa.* 32. *v.* 14. 15.

*Ant.* 6. f. In malévolam ánimam non introíbit sapiéntia, nec habitábit in córpore súbdito peccátis, allelúia. *Sap.* 1. 4.

*Capitulum. Joel,* 2. 28.

EFfúndam Spíritum meum super omnem carnem, & prophetábunt fílii vestri, & fíliæ vestræ.

*Hymnus, ut in Laudibus Ascens. pag.* 581.

℣. Díriget mansuétos in judício, allelúia. ℟. Docébit mites vias suas, allelúia. *Ps.* 24. 9.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. A. Spíritum veritátis quem mundus non potest accípere, quia non videt eum, nec scit eum, vos autem cognoscétis eum, allelúia. *Joan.* 14. 17.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui nos Resurrectiónis & Ascensiónis Dómini dedísti solémnia celebráre, mentes nostras & corda nostra purífica, ut adveniéntem Spíritum sanctum suscípere mereámur; Per Dóminum... in unitáte ejúsdem.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. a. Creábit.

℟. *br.* ℣. Qui ascendísti super omnes cœlos. *Ephes.* 4. 10.

*CANON.*

Ex Concílio Rotomagénsi.

*Anno* 1072. *Can.* 23.

JUxta sanctórum Patrum Decréta statútum est ne generále Baptísma nisi Sábbato Paschæ & Pentecóstes fiat. Hoc quidem serváto quòd párvulis quocúnque témpore, quocúnque die petíerint, regeneratiónis lavácrum non negétur.

AD TERTIAM.

*Ant.* 5. a. Dabo vobis.

*Capitulum. Jer.* 31. *v.* 31. 33.

ECce dies vénient, dicit Dóminus; & fériam dómui Juda fœdus novum: dabo legem meam in viscéribus eórum, & in corde eórum scribam eam.

℟. *br.* Dulcis & rectus Dóminus, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Dulcis. ℣. Propter hoc legem dabit delinquéntibus in via. * Allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Dulcis.

℣. Univérsæ viæ Dómini, misericórdia & véritas, allelúia. ℟. Requiréntibus testaméntum ejus, allelúia. *Ps.* 24. *v.* 8. 10.

AD SEXTAM.

*Ant.* 8. g. Germinábunt.

*Capitulum. Isa.* 44. *v.* 2. 3.

NOli timére, serve meus Jacob, & rectíssime, quem elégi; effúndam enim aquas super sitiéntem, & fluénta super áridam: effúndam Spíritum meum super semen tuum, & benedictiónem meam super stirpem tuam, dicit Dóminus.

℟. *br.* Plúviam voluntáriam segregábis, Deus, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Plúviam. ℣. Hereditáti tuæ, * Allelúia. *Ps.* 67. 10. ℣. Glória. *Repet.* Plúviam.

℣. Flabit Spíritus ejus, allelúia. ℟. Et fluent aquæ, allelúia. *Ps.* 147. 7.

AD NONAM.

*Ant.* 6. f. In malévolam.

*Capitulum. Sap.* 1. *v.* 5. 6.

SPíritus sanctus áuferet se à cogitatiónibus, quæ sunt sine intelléctu, & corripiétur à superveniénte iniquitáte: benígnus est enim Spíritus sapiéntiæ.

℟. *br.* Ne projícias me à fácie tua, Dómine, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Ne projícias me. ℣. Et Spíritum sanctum tuum ne áuferas à me, * Allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Ne projícias. *Ps.* 50. 13.

℣. Deduc me, Dómine, in via tua, allelúia. ℟. Et ingrédiar in veritáte tua, allelúia. *Ps.* 85. 11.



*Apparuerunt illis, dispertitæ linguæ tanquā ignis, seditq; suprà singulos eorum*
Act. c. 2.

# IN DIE SANCTO PENTECOSTES.

## SOLEMNE.

IN PRIMIS VESPERIS.

*Psalmi de Sabbato.*

*Ant.* 1. a. De Sion exibit lex, & verbum Dómini de Jerúsalem, allelúia. *Isa.* 2. 3.

*Ant.* 3. a. In monte Sion, & in Jerúsalem erit salvátio, allelúia. *Joel.* 2. 32.

*Ant.* 5. a. Effundátur super nos Spíritus de excélso, & erit secúritas usque in sempitérnum, allelúia. *Is.* 32. *v.* 15. 17.

*Ant.* 6. f. Sensum tuum, Dómine, quis sciet, nisi tu míseris Spíritum sanctum de altíssimis? allelúia. *Sap.* 9. 17.

*Ant.* 4. e. Spíritus meus erit in médio vestrûm: nolíte timére, allelúia. *Agg.* 2. 6.

*Capitulum.* *Ezech.* 11. *v.* 19. 20.

SPíritum novum tríbuam in viscéribus eórum, & áuferam cor lapídeum de carne eórum, & dabo eis cor cárneum, ut in præcéptis meis ámbulent.

℟. Dóminus de Sínaï venit, & de Seïr ortus est nobis: appáruit de monte Pharan, * In déxtera ejus ígnea lex, allelúia, allelúia. *Deut.* 33. 2. ℣. Cùm vénerit Spíritus veritátis, docébit omnem veritátem. *Joan.* 16. 13. * In déxtera. ℣. Glória. * In déxtera.

*Hymnus.* VENI, supérne Spíritus, *ut infra p.* 528.

℣. Deus Israël, ipse dabit virtútem, allelúia. ℟. Et fortitúdinem plebi suæ, allelúia. *Ps.* 67. 36.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Spíritus Dómini, Spíritus sapiéntiæ & intelléctûs, Spíritus consílii & fortitúdinis, Spíritus sciéntiæ & pietátis, allelúia. *Isa.* 11. 2.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui Sacraménto inchoátæ Festivitátis univérsam Ecclésiam tuam in omni gente & natióne sanctíficas, in totam mundi latitúdinem Spíritûs tui sancti dona diffúnde; Per Dóminum... in unitáte ejúsdem Spíritûs.

AD COMPLETORIUM.

*Omnia ut in die, p.* 528.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Allelúia, Spíritus Dómini replévit orbem terrárum, veníte adorémus, allelúia. *Sap.* 1. 7.

*Psalmus.* Veníte.

*Hymnus.*

JAM Christus astra ascénderat,
Revérsus unde vénerat,
A' Patre promíssum suis
Sanctum datúrus Spíritum.

SOLÉMNIS urgébat dies,
Quo mystico septémplici
Orbis volútus sépties
Signat beáta témpora.

HORA diéi tértia
Repéntè mundus pérsonans,
Apóstolis orántibus,
Deum veníre núntiat.

DE Patris ergo lúmine,
Decórus ignis almus est,
Qui fida Christi péctora,
Calóre verbi cómpleat.

IMPLÉTA gaudent víscera,
Affláta sancto Spíritu;
Voces novas mox íntonant,
Fantur Dei magnália.

GENS omnis illos áudiit,
Græci, Latíni, Bárbari,
Rudésque mirántur viros,
Linguis loquéntes ómnium.

JUDÆ'A tunc incrédula,
Cæco furóre pércita,
Musti calóre férvidos,
Christi sodáles íncrepat.

SIGNIS sed & virtútibus
Occúrrit & docet Petrus;
Falsum profári pérfidos
Joële teste cómprobans.

SIT laus Patri, laus Fílio,
Sit & tibi laus, Spíritus,
Quo flante, puris péctora
Lucent & ardent ígnibus.
Amen.

*Ant.* 6. *irreg.* Lætétur.

*Psalmus* 47.

MAgnus Dóminus, & laudábilis nimis: * in civitáte Dei nostri, in monte sancto ejus.

Fundátur exultatióne univérsæ terræ mons Sion, * látera Aquilónis, cívitas Regis magni.

Deus in dómibus ejus cognoscétur, * cùm suscípiet eam.

Quóniam ecce reges terræ congregáti sunt: * convenérunt in unum.

Ipsi vidéntes sic admiráti sunt, conturbáti sunt, commóti sunt; tremor apprehéndit eos: * ibi dolóres ut parturiéntis.

In spíritu veheménti * cónteres naves Tharsis.

Sicut audívimus, sic vídimus in civitáte Dómini virtútum, in civitáte Dei nostri: * Deus fundávit eam in ætérnum.

Suscépimus, Deus, misericórdiam tuam * in médio templi tui.

Secúndum nomen tuum Deus, sic & laus tua in fines terræ; * justítiâ plena est déxtera tua.

Lætétur mons Sion, & exúltent fíliæ Judæ, * propter judícia tua, Dómine.

Circúndate Sion, & complectímini eam: * narráte in túrribus ejus.

Pónite corda vestra in virtúte ejus & distribúite domos ejus, * ut enarrétis in progénie áltera.

Quóniam hic est Deus, Deus noster in ætérnum, & in séculum séculi: * ipse reget nos in sécula.

*Ant.* Lætétur mons Sion, & exúltent fíliæ Judæ; quóniam hic est Deus, Deus noster in ætérnum; ipse reget nos in sécula, allelúia. *v.* 12. 15.

*Ant.* 7. d. Manda, Deus.

## *Psalmus* 67.

EXúrgat, Deus, & dissipéntur inimíci ejus; * & fúgiant qui odérunt eum, à fácie ejus.

Sicut déficit fumus, defíciant: * sicut fluit cera à fácie ignis, sic péreant peccatóres à fácie Dei.

Et justi epuléntur, & exúltent in conspéctu Dei, * & delecténtur in lætítia.

Cantáte Deo, psalmum dícite nómini ejus: * iter fácite ei, qui ascéndit super occásum, Dóminus nomen illi.

Exultáte in conspéctu ejus; * turbabúntur à fácie ejus, patris orphanórum, & júdicis viduárum.

Deus in loco sancto suo; * Deus, qui inhabitáre facit uníus moris in domo;

Qui edúcit vinctos in fortitúdine, * simíliter eos, qui exásperant, qui hábitant in sepúlcris.

Deus, cùm egrederéris in conspéctu pópuli tui, * cùm pertransíres in desérto:

Terra mota est, étenim cœli distillavérunt à fácie Dei Sinaï, * à fácie Dei Israël.

Plúviam voluntáriam segregábis, Deus, hereditáti tuæ; * & infirmáta est, tu verò perfecísti eam.

Animália tua habitábunt in ea; * parásti in dulcédine tua páuperi, Deus.

Dóminus dabit verbum evangelizántibus * virtúte multâ.

Rex virtútum dilécti, dilécti, * & speciéi domûs divídere spólia.

Si dormiátis inter médios cleros, pennæ colúmbæ deargentátæ, * & posterióra dorsi ejus in pallóre auri.

Dùm discérnit cœléstis reges super eam, * nive dealbabúntur in Selmon.

Mons Dei, mons pinguis; * mons coagulátus, mons pinguis.

Ut quid suspicámini montes coagulátos? * mons in

quo beneplácitum est Deo habitáre in eo: étenim Dóminus habitábit in finem.

Currus Dei decem míllibus múltiplex, míllia lætántium:* Dóminus in eis in Sina, in sancto.

Ascendísti in altum, cepísti captivitátem; * accepísti dona in homínibus.

Etenim non credéntes * inhabitáre Dóminum Deum.

Benedíctus Dóminus die quotídiè; * prósperum iter fáciet nobis Deus salutárium nostrórum.

Deus noster, Deus salvos faciéndi; * & Dómini Dómini éxitus mortis.

Verúntamen Deus confrínget cápita inimicórum suórum; * vérticem capílli perambulántium in delíctis suis.

Dixit Dóminus: Ex Basan convértam, * convértam in profúndum maris;

Ut intingátur pes tuus in sánguine, * lingua canum tuórum ex inimícis, ab ipso.

Vidérunt ingréssus tuos, Deus, * ingréssus Dei mei, Regis mei qui est in sancto.

Prævenérunt príncipes conjúncti psalléntibus, * in médio juvenculárum tympanistriárum.

In ecclésiis benedícite Deo Dómino, * de fóntibus Israël.

Ibi Bénjamin adolescéntulus, * in méntis excéssu.

Príncipes Juda, duces eórum; * príncipes Zábulon, príncipes Néphthali.

Manda, Deus, virtúti tuæ;* confírma hoc, Deus, quod operátus es in nobis.

A templo tuo in Jerúsalem, * tibi ófferent reges múnera.

Increpa feras arúndinis; congregátio taurórum in vaccis populórum, * ut exclúdant eos, qui probáti sunt argénto.

Díssipa Gentes quæ bella volunt; vénient legáti ex Ægypto; * Æthiópia prævéniet manus ejus Deo.

Regna terræ, cantáte Deo:* psállite Dómino.

Psállite Deo, qui ascéndit super cœlum cœli,* ad Oriéntem.

Ecce dabit voci suæ vocem virtútis, * date glóriam Deo.

Super Israël magnificéntia ejus, * & virtus ejus in núbibus.

Mirábilis Deus in sanctis suis, Deus Israël ipse dabit virtútem & fortitúdinem plebi suæ: * benedíctus Deus.

*Ant.* Manda, Deus, virtúti tuæ; confírma hoc, Deus, quod operátus es in nobis, allelúia. *v.* 29.

*Ant.* 8. c. Emíttes Spíritum tuum.

*Psalmus* 103.

BEnedic, ánima mea, Dómino; * Dómine Deus meus, magnificátus es veheménter.

Confessiónem & decórem induísti, * amíctus lúmine sicut vestiménto.

Exténdens cœlum sicut pellem; * qui tegis aquis superióra ejus.

Qui ponis nubem ascénsum tuum; * qui ámbulas super pennas ventórum.

Qui facis A'ngelos tuos, spíritus, * & minístros tuos, ignem uréntem;

Qui fundásti terram super stabilitátem suam; * non inclinábitur in séculum séculi.

Abyssus, sicut vestiméntum, amíctus ejus: * super montes stábunt aquæ.

Ab increpatióne tua fúgient; * à voce tonítrui tui formidábunt.

Ascéndunt montes, & descéndunt campi, * in locum quem fundásti eis.

Términum posuísti, quem non transgrediéntur, * neque converténtur operíre terram.

Qui emíttis fontes in convállibus, * inter médium móntium pertransíbunt aquæ.

Potábunt omnes béstiæ agri; * expectábunt ónagri in siti sua.

Super ea vólucres cœli habitábunt, * de médio petrárum dabunt voces.

Rigans montes de superióribus suis: * de fructu óperum tuórum satiábitur terra;

Prodúcens fœnum juméntis, * & herbam servitúti hóminum;

Ut edúcas panem de terra; * & vinum lætíficet cor hóminis;

Ut exhilaret fáciem in óleo; * & panis cor hóminis confirmet.

Saturabúntur ligna campi, * & cedri Líbani, quas plantávit.

Illic pásseres nidificábunt: * Heródii domus dux est eórum.

Montes excélsi cervis; * petra refúgium herináciis.

Fecit lunam in témpora; * sol cognóvit occásum suum.

Posuísti ténebras, & facta est nox; * in ipsa pertransíbunt omnes béstiæ silvæ:

Cátuli leónum rugiéntes ut rápiant, * & quærant à Deo escam sibi.

Ortus est sol, & congregáti sunt, * & in cubílibus suis collocabúntur.

Exíbit homo ad opus suum, * & ad operatiónem suam usque ad vésperam.

Quàm magnificáta sunt ópera tua, Dómine! ómnia in sapiéntia fecísti; * impléta est terra possessióne tuâ.

Hoc mare magnum, & spatiósum mánibus: * illic reptília, quorum non est númerus, animália pusílla cum magnis.

Illic naves pertransíbunt, * draco iste, quem formásti ad illudéndum ei.

O'mnia à te expéctant, * ut des illis escam in témpore.

Dante te illis, cólligent; * aperiénte te manum tuam, ómnia implebúntur bonitáte.

Averténte autem te fáciem, turbabúntur; * áuferes spíritum eórum, & defícient, & in púlverem suum reverténtur.

Emíttes Spíritum tuum, & creabúntur; * & renovábis fáciem terræ.

Sit glória Dómini in séculum: * lætábitur Dóminus in opéribus suis:

Qui réspicit terram, & facit eam trémere, * qui tangit montes, & fúmigant.

Cantábo Dómino in vita mea, * psallam Deo meo quándiu sum.

Jucúndum sit ei elóquium meum; * ego verò delectábor in Dómino.

Defíciant peccatóres à terra, & iníqui ita ut non sint: * bénedic, ánima mea, Dómino.

*Ant.* Emíttes Spíritum tuum, & creabúntur, & renovábis fáciem terræ, allelúia, allelúia. *v.* 30.

℣. Ignis à fácie ejus exársit, allelúia. ℟. Carbónes succénsi sunt ab eo, allelúia. *Psal.* 17. 9.

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 2. I.

*Spiritus descendit in discipulos.*

CUm compleréntur dies Pentecóstes, erant omnes páriter in eódem loco: & factus est repéntè de cœlo sonus, tanquàm adveniéntis spíritûs veheméntis, & replévit totam domum ubi erant sedéntes. Et apparuérunt illis dispertítæ linguæ tanquam ignis, sedítque supra síngulos eórum: & repléti sunt omnes Spíritu sancto, & cœpérunt loqui váriis linguis, prout Spíritus sanctus dabat éloqui illis. Erant autem in Jerúsalem habitántes Judæi, viri religiósi ex omni natióne quæ sub cœlo est. Facta autem hac voce, convénit multitúdo, & mente confúsa est, quóniam audiébat unusquisque linguâ suâ illos loquéntes. Stupébant autem omnes, & mirabántur, dicéntes: Nonne ecce omnes isti, qui loquúntur, Galilæi sunt? & quómodò nos audívimus unusquísque linguam nostram, in qua nati sumus? Parthi, & Medi, & Ælamítæ, & qui hábitant Mesopotámiam, Judæam, & Cappadóciam

dóciam, Pontum, & A'siam, Phrygiam, & Pamphyliam, Ægyptum, & partes Lybiæ, quæ est circa Cyrénen, & advenæ Románi, Judæi quoque, & Prosélyti, Cretes, & A'rabes: audívimus eos loquéntes nostris linguis magnália Dei. Stupébant autem omnes, & mirabántur, ad invicem dicéntes: Quidnam vult hoc esse? A'lii autem irridéntes dicébant: Quia musto pleni sunt isti.

℟. Factus est repéntè de cœlo sonus, * Tanquàm adveniéntis spíritûs veheméntis, & replévit totam domum, allelúia, allelúia. *Act.* 2. 2. ℣. Intónuit de cœlo Dóminus, & Altíssimus dedit vocem suam. *Ps.* 17. 14. * Tanquàm.

Sermo sancti Leónis Papæ.

LECTIO II.

*Sermo* 1. *de Pentecoste.*

HOdiérnam solemnitátem, dilectíssimi, in præcípuis festis esse venerándam, ómnium Catholicórum corda cognóscunt. Nec dúbium est, quanta huic diéi reveréntia debeátur, quem Spíritus sanctus excellentíssimo sui múneris miráculo consecrávit. Nam & ab illo die, quo Dóminus super omnem cœlórum altitúdinem ad dérteram Dei Patris consessúrus ascéndit, décimus iste est, qui ab ejúsdem Resurrectióne quinquagésimus nobis in eo, à quo cœpit, illúxit, magna mystéria in se & véterum sacramentórum cóntinens, & novórum: quibus manifestíssimè declarátur & grátiam prænuntiátam fuisse per legem, & legem implétam esse per grátiam. Sicut enim Hebræo quondam pópulo ab Ægýptiis liberáto, quinquagésimo die post immolatiónem agni, lex data est in monte Sínaï; ita post Passiónem Dómini, quâ verus Dei Agnus occísus est, quinquagésimo à Resurrectióne ipsius die, in Apóstolos plebémque credéntium Spíritus sanctus illápsus est: ut fácilè díligens Christiánus agnóscat inítia véteris testaménti Evangélicis ministrásse princípiis, & ab eódem Spíritu cónditum fuisse fœdus secúndum, à quo primum fúerat institútum. Nam sicut Apostólica testátur história, ab hoc die tuba Evangélicæ prædicatiónis intónuit; ab hoc die imbres charísmatum, flúmina benedictiónum omne desértum & univérsam áridam rigavérunt.

℟. Repléti sunt omnes Spíritu sancto, & cœpérunt loqui * Váriis linguis, prout Spíritus sanctus dabat éloqui illis, allelúia. *Act.* 2. 4. ℣. Factus est Spíritus Dómini in

illis, & prophetáre cœpérunt. 1. *Reg.* 19. 20. * Váriis.
Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

Lectio III. *Cap.* 14. 23.
*Amans servat mandata.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Si quis díligit me, sermónem meum servábit, & Pater meus díliget eum, & ad eum veniémus, & mansiónem apud eum faciémus. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.
*Hom.* 30. *in Evang. hab. in Bas. S. Petri die S. Pentec.*

LIbet, fratres charíssimi, Evangélicæ verba lectiónis sub brevitáte transcúrrere, ut pòst, diútiùs líceat in contemplatióne tantæ solemnitátis immorári. Hódiè namque Spíritus sanctus repentíno sónitu super discípulos venit, mentésque carnálium in sui amórem permutávit, & foris apparéntibus linguis ígneis, intùs facta sunt corda flammántia: quia dùm Deum in ignis visióne suscepérunt, per amórem suáviter arsérunt. Ipse namque Spíritus sanctus amor est: unde & Joánnes dicit: Deus cháritas est. Qui ergo mente íntegrâ Deum desíderat, profécto jam habet, quem amat. Neque enim quisquam posset Deum dilígere, si eum quem díligit, non habéret. Sed ecce, si unusquísque vestrùm requirátur, an díligat Deum: totâ fidúciâ & secúrâ mente respóndet: Díligo. In ipso autem lectiónis exórdio audístis quid Véritas dicit: Si quis díligit me, sermónem meum servábit. Probátio ergo dilectiónis, exhibítio est óperis. Hinc in Epístola sua idem Joánnes dicit: Qui dicit: Díligo Deum, & mandáta ejus non custódit, mendax est. Verè étenim Deum dilígimus, & mandáta ejus custodímus, si nos à nostris voluptátibus coarctámus. Nam qui adhuc per illícita desidéria dífluit, profectò Deum non amat: quia ei in sua voluntáte contradícit.

℟. Cháritas Dei diffúsa est in córdibus nostris * Per Spíritum sanctum, † Qui datus est nobis, allelúia, allelúia. *Rom.* 5. 15. ℣. Numerábitis septem hebdómadas plenas, & vocábitis hunc diem celebérrimum atque sanctíssimum. *Levit.* 23. *v.* 15. 21. * Per Spíritum. ℣. Glória. † Qui.

Te Deum.

AD LAUDES
MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Spíritus tuus bonus dedúcet me, allelúia. ℟. In terram rectam, allelúia. *Ps.* 142. 10.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 3. a. Cùm complerentur dies Pentecóstes, erant omnes páriter in eódem loco, allelúia. *Act.* 2. 1.

*Ant.* 7. C. Apparuérunt dispertítæ linguæ tanquàm ignis, allelúia. *Act.* 2. 3.

*Ant.* 5. f. Convénit multitudo, & mente confúsa est, quoniam audiébat unusquísque linguâ suâ illos loquéntes, allelúia. *Act.* 2. 6.

*Ant.* 2. d. Hoc est, quod dictum est.

*Canticum Joël.* 2. 23.

Filii Sion, exultáte & lætámini in Dómino Deo vestro,* quia dedit vobis doctorem justítiæ.

Et descéndere fáciet ad vos imbrem matutínum & serotinum, * sicut in principio.

Et implebúntur áreæ frumento, * & redundábunt torculária vino & óleo.

Et reddam vobis annos, * quos comédit locústa, bruchus, & rubígo, & erúca.

Fortitúdo mea magna, * quam misi in vos.

Et comedétis vescéntes, * & saturabímini.

Et laudábitis nomen Dómini Dei vestri, * qui fecit mirabília vobíscum.

Et non confundétur pópulus meus * in sempitérnum.

Et sciétis, quia in médio Isræël ego sum, * & ego Dóminus Deus vester, & non est ámpliùs.

Et non confundétur pópulus meus * in ætérnum.

Et erit post hæc: * Effúndam Spíritum meum super omnem carnem.

Et prophetábunt fílii vestri * & fíliæ vestræ.

Senes vestri sómnia somniábunt, * & júvenes vestri visiónes vidébunt.

Sed & super servos meos & ancillas in diébus illis * effúndam Spíritum meum.

Glória Patri.

*Ant.* Hoc est, quod dictum est per Prophétam Joël: Effúndam de Spíritu meo super omnem carnem, allelúia. *Act.* 2. v. 16. 17.

*Ant.* 1. F. Stupébant autem omnes, & mirabántur ad invicem, allelúia. *Act.* 2. 12.

*Capitulum. Act.* 2. v. 7. 8.

Mirabántur, dicéntes: Nonne ecce omnes isti qui loquúntur, Galilæi sunt, & quómodò nos audívimus unusquísque linguam nostram in qua nati sumus?

*Hymnus.*

BEA'TA nobis gáudia
Anni redúxit órbita,
Almus Dei cùm Spíritus
Illápsus est Apóstolis.

IGNIS vibránte lúmine
Linguæ figúram détulit:
Verbis ut essent prófluì,

Et charitáte férvidi.
LINGUIS loquúntur ómnium:
Turbæ pavent Gentílium:
Musto madére députant,
Quos Spíritus repléverat.
PATRATA sunt hæc mysticè,
Paschæ peráɛto témpore,
Sacro diérum número,
Quo lege fit remíssio.
TE nunc Deus píissime,
Vultu precámur cérnuo,
Illápsa nobis cœlitùs
Largíre dona Spíritûs.
DUDÙM sacráta péctora
Tuâ replésti grátiâ:
Dimítte nostra crímina;
Et da quiéta témpora.
SIT laus Patri, laus Fílio,
Sit & tibi laus, Spíritus,
Quo flante, puris péctora
Lucent, & ardent ígnibus.
Amen.

℣. Cœli distillavérunt, allelúia, ℟. A' fácie Dei Sínaï, allelúia. *Psal.* 67. 9.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. e. Déxterâ Dei exaltátus Jesus, & promissióne Spíritûs sancti accéptâ à Patre, effúdit hunc, allelúia. *Act.* 2. 33.

*Oratio*, Deus, qui sacraménto, *ut suprà*, *p.* 517.

AD HORAS, *Psalmi de Dominica, Antiphona de Laudibus.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 3. a. Cùm compleréntur.

*In* ℟. *br.* ℣. Qui de Spí[ritu] tuo dedísti nobis. 1. *Jo[an.]* 4. 13.

*CANON.*

Ex Concílio Toletáno [...]
*Anno* 589. *c.* 3.

QUicúmque Spíritum [...] tum non credit, aut [...] crediderit à Patre & F[ilio] procédere, eúmque non [di]xerit coætérnum esse P[atri &] Fílio, & coæquálem, [ana]ma sit.

AD TERTIA[M]

*Loco Hymni*, NUNC [...] te, *hodiè & per Oct[avam] dicitur*

*Hymnus.*

VENI, creátor Spí[ritus,]
Mentes tuórum vi[sita,]
Imple supérnâ grátiâ,
Quæ tu creásti péctora.
QUI Paraclétus díce[ris,]
Donum Dei altíssimi,
Fons vivus, ignis, chá[ritas,]
Et spiritális únctio.
TU septifórmis múnere,
Dextræ Dei tu dígitus,
Tu ritè promíssum Pat[ris,]
Sermóne ditans gúttura.
ACCÉNDE lumen sén[sibus,]
Infúnde amórem córdibus,
Infírma nostri córporis,
Virtúte firmans perpeti.
HOSTEM repéllas lóngi[ùs,]
Pacémque dones prótinus;
Ductóre sic te prævio,
Vitémus omne nóxium.
PER te sciámus da Patre[m]

Noscámus atque Filium,
Te utriúsque Spíritum,
Credámus omni témpore.
Sit laus Patri, laus Filio,
Sit & tibi laus, Spíritus,
Quo flante, puris péctora
Lucent, & ardent ígnibus.
Amen.

*Ant.* 7. a. Accípite Spíritum sanctum: quorum remiséritis peccáta, remittúntur eis, allelúia. *Joan.* 20. *v.* 22. 24.

*Antiphona prædicta dicitur integra, juxta ritum Ecclesiæ Metropolitanæ ante & post Psalmos hodiè tantùm. Intra Octavam verò ejus loco dicitur Ant.* 7. C. Apparuérunt illis, *ut suprà ad Laudes.*

*Capitulum. Tit.* 3. *v.* 5. 6.

Deus secúndùm suam misericórdiam salvos nos fecit per lavácrum regeneratiónis, & renovatiónis Spíritûs sancti, quem effúdit in nos abúndè per Jesum Christum Salvatórem nostrum.

℟. *br.* Magnificávit Dóminus fácere nobíscum, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Magnificávit. ℣. Facti sumus lætántes. * Allelúia. *Psal.* 125. 5. ℣. Glória. *Repet.* Magnificávit.

℣. Benedíctus Dóminus ex Sion, allelúia. ℟. Qui hábitat in Jerúsalem, allelúia. *Ps.* 134. 21.

Orémus. *Oratio.*

Deus, qui hodiérnâ die corda fidélium sancti Spíritûs illustratióne docuísti: da nobis in eódem Spíritu recta sápere, & de ejus semper consolatióne gaudére. Per Dóminum .... in unitáte ejúsdem.

*Dicitur hæc Oratio ad alias Horas.*

## Ad Sextam.

*Ant.* 5. f. Convénit.

*Capitulum. Act.* 2. *v.* 46. 47.

Sumébant cibum cum exultatióne & simplicitáte cordis, collaudántes Deum, & habéntes grátiam ad omnem plebem. Dóminus autem augébat, qui salvi fierent quotídiè in idípsum.

℟. *br.* Auxit pópulum suum veheménter, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Auxit. ℣. Et firmávit eum super inimícos ejus. *Psal.* 104. 24. * Allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Auxit.

℣. Benedíxit eis, allelúia. ℟. Et multiplicáti sunt nimis, allelúia. *Psal.* 106. 38.

## Ad Nonam.

*Ant.* 1. F. Stupébant.

*Capitulum. Act.* 4. *v.* 31. 32.

Repléti sunt omnes Spíritu sancto, & loquebántur verbum Dei cum fidúcia. Multitúdinis autem credéntium erat cor unum & ánima una.

℣. *br.* Ecce quàm bonum, & quàm jucúndum, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Ecce.

℣. Habitáre fratres in unum, * Allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Ecce.

℣. Illic mandávit Dóminus benedictiónem, allelúia. ℟. Et vitam usque in séculum, allelúia *Psal.* 132. *v.* 1. 3.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Dominica cum Antiphonis de Laudibus.*

*Capitulum. Eph.* 3. *v.* 16. 17.

DEt vobis Deus secúndùm divítias glóriæ suæ corroborári per Spíritum ejus in interiórem hóminem, Christum habitáre per fidem in córdibus vestris.

℟. Nunc solúti sumus à lege mortis, ita * Ut serviámus in novitáte Spíritûs, & non in vetustáte litteræ, † Allelúia, allelúia. *Rom.* 7. 7. ℣. In misericórdiis tuis multis, Deus, Spíritum bonum dedísti nobis, qui docéret nos. 2. *Esdr.* 9. *v.* 13. 20. * Ut. ℣. Glória. † Allelúia.

*Hymnus.*

VEni, supérne Spíritus,
Pater benígne páuperum,
Donum datórque múnerum,
Sis cordis hospes íntimus.

O veritátis Spíritus,
Et increáta sánctitas;
Sis nostra lux, ut véritas
Ætérna nobis lúceas.

Te postuláre néscios,
Ut deprecémur, ádjuva:
Si nostra tangis péctora,
Fundent preces quas áudias.

Quid absque te vel ággredi,
Vel cogitáre póssumus?
Imple tuo nos númine,
Merébimur te præmium.

A' te remóti víximus,
Ad te reduc nos dévios:
Quâ dirigámur, sis via,
Unus viæ sis términus.

Sit laus Patri, laus Fílio,
Sit & tibi laus, Spíritus,
Quo flante, puris péctora
Lucent, & ardent ígnibus.
Amen.

℣. Confirma hoc, Deus, quod operátus es in nobis, allelúia. ℟. A' templo tuo in Jerúsalem, allelúia. *Psal.* 67. *v.* 29. 30.

*Ad Magnificat, Ant.* 2. D. Non Spíritum hujus mundi accépimus, sed Spíritum qui ex Deo est, ut sciámus quæ à Deo donáta sunt nobis, allelúia. 1. *Cor.* 2. 12.

AD COMPLETORIUM.

*Psalmi de Dominica & sic per Octavam, cum Ant.* 5. f. Spíritus ádjuvat infirmitátem nostram, quia secúndùm Deum póstulat pro sanctis, allelúia. *Rom.* 8. 26.

*Capitulum. Isa.* 26. *v.* 8. 9.

NOmen tuum & memoriále tuum in desidério ánimæ. A'nima mea desiderávit te in nocte, & spíritu meo in præcórdiis meis de manè vigilábo ad te.

*Hymnus.*

*Hymnus.*

ADsis, supréme Spíritus,
In nocte sis lux méntium,
Fons sanctitátis, córdium
Optáta sis pax & quies.

Qui flétibus quos élicis,
Divína mísces gáudia,
Da defleámus crímina,
Cum vénia da gáudium.

Adésto te vocántibus,
Donis tuis nos récrea,
Nostræ quiétis máximum
Sis & labóris præmium.

Sit laus Patri, laus Fílio,
Sit & tibi laus, Spíritus,
Quo flante, puris péctora
Lucent, & ardent ígnibus.
Amen.

℣. Custódi me, Dómine, ut pupíllam óculi, allelúia. ℟. Sub umbra alárum tuárum prótege me, allelúia. *Ps.* 16. 8.

*Ad* Nunc dimíttis, *Ant.* 2. D. Allelúia, Spíritum sanctum dedit Deus, allelúia, ómnibus obediéntibus sibi, allelúia, allelúia. *Act.* 5. 32.

Orémus. *Oratio.*

PRæsta, quǽsumus, omnípotens Deus, ut mentes nostras per hanc noctem illústret spléndor tui Spíritûs, & in tuo amóre corda confírmet. Per Dóminum.... in unitáte ejúsdem.

---

Diebus intra Octavam PENTECOSTES,

*Usque ad Vesperas Sabbati ante Festum SS. Trinitatis.*

*Pars Verna.*

Ad Officium Nocturnum.

*Invitatorium.* Allelúia, Spíritus Dómini replévit orbem terrárum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Sap.* 1. 7.

*Psalmus*, Veníte.

*Tres Psalmi pro unaquaque Feria notati sub sola Ant.* 6. f. Recordátus est Dóminus pópuli sui: pósuit in médio ejus Spíritum sancti sui, allelúia. *Isa.* 63. 11.

℣. Ignis à fácie ejus exársit, allelúia. ℟. Carbónes succénsi sunt ab eo, allelúia. *Ps.* 17. 9.

*Lectiones & ℟℟. ut notantur in qualibet Feria.*

AD LAUDES

MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Spíritus tuus bonus dedúcet me, allelúia. ℟. In terram rectam, allelúia. *Ps.* 142. 10.

*Psalmi de Dominica & Canticum de die Pentecostes sub sola Ant.* 1. a. Exultáte & lætámini in Dómino Deo vestro, quia dedit vobis doctórem justítiæ, allelúia. *Joel.* 2. 23.

*Antiph. Ad* Benedíctus, *& Oratio, ut notatur pro qualibet Feria.*

Ad Horas, *omnia ut in die Pentecostes. Oratio de Laudibus, notata pro qualibet die.*

## AD VESPERAS.

*Omnia ut in die Pentecostes exceptis quæ notantur propria pro quolibet die.*

## AD COMPLETORIUM.

*Omnia ut in die Pentecostes.*

---

## FERIA SECUNDA.

*Duplex-majus.*

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalmi* Bonum est... Confitémini Dómino... Qui tradùxit, *pag.* 41. *& seqq.*

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 2. 14.

*Petrus docet virtutem Spiritûs sancti.*

STans Petrus cum U'ndecim, levávit vocem suam, & locútus est eis: Viri Judæi, & qui habitátis Jerúsalem univérsi, hoc vobis notum sit, & áuribus percípite verba mea. Non enim, sicut vos æstimástis, hi ébrii sunt, cùm sit hora diéi tértia: sed hoc est, quod dictum est per Prophétam Joël: Et erit in novíssimis diébus, dicit Dóminus, effúndam de Spíritu meo super omnem carnem, & prophetábunt fílii vestri, & fíliæ vestræ: & júvenes vestri visiónes vidébunt, & senióres vestri sómnia somniábunt. Et quidem super servos meos, & super ancíllas meas, in diébus illis effúndam de Spíritu meo, & prophetábunt: & dabo prodígia in cœlo sursùm, & signa in terra deórsùm, sánguinem, & ignem, & vapórem fumi. Sol convertétur in ténebras, & luna in sánguinem, ántequàm véniat dies Dómini magnus & maniféstus. Et erit: Omnis quicúnque invocáverit nomen Dómini, salvus erit.

℟. Cécidit Spíritus sanctus super omnes, qui audiébant verbum: & obstupuérunt ex circuncisióne fidéles; * Quia & in Natiónes grátia Spíritûs sancti effúsa est, allelúia. *Act.* 10. *v.* 44. 45. ℣. Non est apud Dóminum Deum nostrum personárum accéptio. 2. *Paralip.* 19. 7. * Quia.

LECTIO II. *v.* 22.

*Petrus confirmat resurrectionem Christi.*

VIri Israëlítæ, audíte verba hæc: Jesum Nazarénum, virum approbátum à Deo in vobis, virtútibus, & prodígiis, & signis, quæ fecit Deus per illum in médio vestri, sicut & vos scitis: hunc definíto consílio & præsciéntiâ Dei tráditum per manus iniquórum affigéntes, interemístis: quem Deus

suscitávit, solútis dolóribus inférni, juxta quod impossíbile erat tenéri illum ab eo. David enim dicit in eum: Providébam Dóminum in conspéctu meo semper: quóniam à dextris est mihi ne commóvear: Propter hoc lætátum est cor meum, & exultávit lingua mea; insuper & caro mea requiéscet in spe: Quóniam non derelínques ánimam meam in inférno, nec dabis Sanctum tuum vidére corruptiónem. Notas mihi fecísti vias vitæ: & replébis me jucunditáte cum fácie tua.

℟. Spíritus in quo clamámus, Abba, Pater, * Testimónium reddit spirítui nostro, quòd sumus fílii Dei, allelúia, allelúia. *Rom.* 8. *v.* 15. 16. ℣. O quàm bonus & suávis est, Dómine, Spíritus tuus in ómnibus. *Sap.* 12. 1. * Testimónium.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 3. 16.

*Filius Dei missus ad salvandum mundum.*

IN illo témpore; Dixit Jesus Nicodémo: Sic Deus diléxit mundum, ut Fílium suum unigénitum daret: ut omnis qui credit in eum, non péreat, sed hábeat vitam ætérnam. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 12. *in Joan.*

QUantùm in médico est, sanáre venit ægrótum. Ipse se intérimit, qui præcépta médici observáre non vult. Venit Salvátor in mundum. Quare Salvátor dictus est mundi, nisi ut salvet mundum, non ut júdicet mundum? Salvári non vis ab ipso? ex te judicáberis. Et quid dicam, judicáberis? vide quid ait: Qui credit in eum, non judicátur: qui autem non credit: quid dictúrum speras, nisi, judicátur? Quod addit: Jam, inquit, judicátus est. Nondum appáruit judícium, & jam factum est judícium. Novit enim, Dóminus qui sunt ejus: novit qui permáneant ad corónam, qui permáneant ad flammam: novit in área sua tríticum, novit & páleam: novit ségetem, novit & zizánia. Jam judicátus est, qui non credit. Quare judicátus? Quia non crédidit in nómine unigéniti Fílii Dei. Hoc est autem judícium: quia lux venit in mundum, & dilexérunt hómines magis ténebras, quàm lucem; erant enim mala ópera eórum.

℟. Quod natum est ex carne, caro est; & quod na-

tum est ex spíritu, spíritus est. * Spíritus ubi vult spirat, allelúia, allelúia. *Joan.* 3. *v.* 6. 8. ℣. Quis adjúvit Spíritum Dómini? aut quis consiliárius ejus fuit? *Is.* 40. 13. * Spíritus. ℣. Glória. * Spíritus.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 8. g. Sic Deus diléxit mundum, ut Fílium suum unigénitum daret, ut omnis qui credit in eum, non péreat, sed hábeat vitam ætérnam, allelúia. *Joan.* 3. 16.

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui Apóstolis tuis sanctum dedísti Spíritum: concéde plebi tuæ piæ petitiónis efféctum: ut quibus dedísti fidem, largiáris & pacem. Per Dóminum . . . in unitáte ejúsdem.

*CANON.*

Ex Concílio Rotomagénsi. *Anno* 1581. *Tit. de Sacram. Confirm. can.* 1.

IMperféctum, nec ómnibus suis armis instrúctum militatúrum Christiánum majóres nostri judicárunt eum, quem non corroboráſſet Confirmatiónis Sacraméntum. Qua de causa monémus omnes Parœcos, Vicários & Concionatóres, ut quóties se occásio obtúlerit, de ejus virtúte & utilitáte dóceant pópulum.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 7. a. Omnis qui malè agit, odit lucem, qui autem facit veritátem venit ad lucem: ut manifesténtur ópera ejus, quia in Deo sunt facta, allelúia. *Joan.* 3. *v.* 20. 21.

## FERIA TERTIA

*Duplex majus.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalmi* Dixit injústus... Omnes Gentes... Te decet hymnus, *p.* 73. *& seqq.*

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 2. 31.

*Christus à mortuis suscitatus effudit Spiritum.*

IN diébus illis Petrus locútus est Judæis: David próvidens locútus est de resurrectióne Christi: quia neque derelíctus est in inférno, neque caro ejus vidit corruptiónem. Hunc Jesum resuscitávit Deus, cujus omnes nos testes sumus. Déxterâ igitur Dei exaltátus, & promissióne Spíritûs sancti accéptâ à Patre, effúdit hunc, quem vos vidétis, & audítis. Non enim David ascéndit in cœlum. Dixit autem ipse: Dixit Dóminus Dómino meo: Sede à dextris meis; donec ponam inimícos tuos scabéllum pedum tuórum. Certíssimè sciat ergo omnis domus I'sraël, quia & Dóminum eum, & Christum fecit Deus, hunc Jesum quem vos crucifixístis.

℟. Confirmat nos Deus in

Christo, * Et signávit nos, & dedit pignus Spíritûs in córdibus nostris, allelúia, allelúia. 2. *Corint.* 1. *v.* 21. 22. ℣. Dóminus Deus noster pépigit nobíscum fœdus. *Deuter.* 5. 2. * Et signávit nos.

LECTIO II. *v.* 37.

*Tria millia hominum convertuntur ad Christum.*

HIs autem audítis, compúncti sunt corde, & dixérunt ad Petrum, & ad réliquos Apóstolos: Quid faciémus, viri fratres? Petrus verò ad illos: Pœniténtiam, inquit, ágite, & baptizétur unusquísque vestrûm in nómine Jesu Christi, in remissiónem peccatórum vestrórum: & accipiétis donum Spíritûs sancti. Vobis enim repromíssio, & filiis vestris, & ómnibus qui longè sunt, quoscúnque advocáverit Dóminus Deus noster. A'liis étiam verbis plúrimis testificátus est, & exhortabátur eos, dicens: Salvámini à generatióne ista prava. Qui ergo recepérunt sermónem ejus baptizáti sunt: & appósitæ sunt in die illa animæ circiter tria míllia.

℟. Si diligámus ínvicem, Deus in nobis manet: * In hoc cognóscimus, quóniam in eo manémus, & ipse in nobis: quóniam de Spíritu suo dedit nobis. 1. *Joan.* 4. *v.* 12. 13. ℣. In misericórdiis tuis multis, Deus, Spíritum tuum bonum dedísti. 2. *Esd.* 9. *v.* 19. 20. * In hoc.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 10. 1.

*Christus ostium.*

IN illo témpore; Dixit Jesus Pharisǽis: Amen, amen dico vobis: Qui non intrat per óstium in ovíle óvium, sed ascéndit aliúndè, ille fur est & latro. Qui autem intrat per óstium, pastor est óvium. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 45. *in Joan.*

DO'minus de grege suo, & de óstio quo intrátur ad ovíle, similitúdinem propósuit in hodiérna lectióne. Dicant ergo Pagáni: Benè vívimus. Si per óstium non intrant, quid prodest eis? unde gloriántur? Ad hoc enim debet unicuíque prodésse benè vívere, ut detur illi semper vívere: nam cui non datur semper vívere, quid prodest benè vívere? Quia nec benè vívere dicéndi sunt, qui finem benè vivéndi vel cœcitáte nésciunt, vel inflatióne contémnunt. Non est autem cuíquam spes vera & certa semper vivéndi,

nimi agnóscat vitam, quod est Christus, & per jánuam intret in ovile: Ecce ipsi Pharisǽi legébant, & in eo quod legébant, Christum sonábant; ventúrum sperábant, & præséntem non agnoscébant. Jactábant se étiam ipsi inter vidéntes, hoc est, inter sapiéntes, & negábant Christum, & non intrábant per óstium. Ergo & ipsi, si quos fortè sedúcerent, mactándos & occidéndos, non liberándos sedúcerent. Et hos dimittámus: videámus illos, si fortè ipsi intrant per óstium, qui ipsius Christi nómine gloriántur. Innumerábiles enim sunt, qui se vidéntes non solùm jactant, sed à Christo illuminátos vidéri volunt; sunt autem hærétici.

℟. Qui intrat per óstium, pastor est óvium: * Huic ostiárius áperit, & oves vocem ejus áudiunt † Allelúia, allelúia. *Joan.* 10. *v.* 2. 3. Quemcúnque elégerit Dóminus, ipse erit sanctus. *Num.* 16. 7. * Huic. ℣. Glória. † Allelúia.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. A. Amen, amen dico vobis, quia ego sum óstium óvium, allelúia. *Joan.* 10. 7.

Orémus. *Oratio.*

ADsit nobis, quǽsumus, Dómine, virtus Spíritûs sancti: quæ & corda nostra cleménter expúrget, & ab ómnibus tueátur advérsis. Per Dóminum ... in unitáte ejusdem Spíritûs sancti.

*CANON.*

Ex Synodo Rotomagénsi, *Anno* 1640. *Can.* 7.

JUxta antiquum statútum Ecclésiæ Rotomagénsis Párochi parochiános confirmándos ad Ecclésiam parochiálem horâ competénti cónvocent, & órdine in processiónibus consuéto ad Ecclésiam Chrísmatis administratióni præparátam dedúcant, moneántque non discédere, nisi benedictióne accéptâ.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. c. Per me si quis introíerit, salvábitur; & ingrediétur, & egrediétur, & páscua invéniet, allelúia. *Joan.* 10. 9.

FERIA QUARTA QUATUOR TEMPORUM.

*Duplex minus.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalmi* Deus, áuribus nostris... In Deo laudábimur... Si oblíti sumus, *p.* 94 *& seqq.*

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 19. 1.

*Paulus discipulos quosdam interrogat de Spiritu sancto.*

FActum est autem, cùm A'pollo esset Corinthi, ut Paulus peragrátis superióribus

partibus veníret E'phesum, & inveníret quosdam discípulos: dixítque ad eos: Si Spíritum sanctum accepístis credéntes? At illi dixérunt ad eum: Sed neque si Spíritus sanctus est, audívimus. Ille verò ait: In quo ergo baptizáti estis? Qui dixérunt: In Joánnis baptísmate. Dixit autem Paulus: Joánnes baptizávit baptísmo pœniténtiæ pópulum, dicens: In eum, qui ventúrus esset post ipsum, ut créderent, hoc est, in Jesum. His audítis, baptizáti sunt in nómine Dómini Jesu. Et cùm imposuísset illis manus Paulus, venit Spíritus sanctus super eos, & loquebántur linguis, & prophetábant. Erant autem omnes viri ferè duódecim.

℟. Quid orémus sicut opórtet, nescímus; sed * Ipse Spíritus póstulat pro nobis gemítibus inenarrabílibus, allelúia. *Rom.* 8. 26. ℣. Spíritus omnipoténtis Dei magnam fecit suæ ostensiónis evidéntiam. 2. *Mach.* 3. 24. * Ipse.

Sermo sancti Leónis Papæ.

LECTIO II.

*Sermo 1. de jejunio Pentecostes.*

HOdiérnam, dilectíssimi, festivitátem descensióne sancti Spíritûs consecrátam séquitur, ut nostis, solémne jejúnium, quod ánimis corporibúsque curándis salúbriter institútum, devótâ nobis est observántiâ celebrándum. Replétis namque Apóstolis virtúte promíssâ, & in corda eórum Spíritu veritátis ingrésso, non ambígimus inter cétera cœléstis sacraménta doctrínæ, hanc spiritális continéntiæ disciplínam de Paracléti magistério prímitùs fuísse concéptam: ut sanctificátæ jejúnio mentes conferéndis sibi charismátibus fíerent aptióres. I'gitur post sanctæ dies lætítiæ, quos in honórem Dómini à mórtuis resurgéntis, ac deinde in cœlos ascendéntis exégimus, postque percéptum sancti Spíritûs donum, salúbriter & necessáriè consuetúdo est ordináta jejúnii: ut si quid fortè inter ipsa festivitátum gáudia négligens libértas & licéntia inordináta præsúmpsit; hoc religiósæ abstinéntiæ censúra castíget: quæ ob hoc quoque studiósiùs exequénda est; ut illa in nobis, quæ hac die Ecclésiæ divínitùs sunt collάta, permáneant. Templum enim facti Spíritûs sancti & majóre quàm unquam cópiâ divíni flúminis irrigáti, nullis debémus concupiscéntiis vinci, nullis vítiis possidéri, ut virtútis habitáculum nullâ sit contaminatióne pollútum.

℟. Non dedit nobis Deus spíritum timóris, sed virtútis, & dilectiónis, & sobrietátis; * Spíritum adoptiónis filiórum, allelúia, 2. *Timoth.* 1. 7. *Rom.* 8. 15. ℣. Non abscóndam ultrà fáciem meam ab eis, eò quòd effúderim Spíritum meum super domum I'sraël. *Ezech.* 39. 29. * Spíritum.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 6. 44. *Tracti & docti à Patre.*

IN illo témpore; Dixit Jesus Judæis: Nemo potest veníre ad me, nisi Pater qui misit me, tráxerit eum. Et réliqua.

Homilía sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract.* 26. *in Joan.*

NOli cogitáre te invítum trahi: tráhitur ánimus & amóre. Nec timére debémus, ne ab homínibus, qui verba perpéndunt, & à rebus máximè divínis intelligéndis longè remóti sunt, in hoc Scripturárum sanctárum Evangélico verbo fórsitan reprehendámur, & dicátur nobis: Quómodò voluntáte credo, si trahor? Ego dico: Parùm est voluntáte, étiam voluptáte tráheris. Quid est, trahi voluptáte? Delectáre in Dómino, & dabit tibi petitiónes cordis tui. Est quædam volúptas cordis, cui panis dulcis est ille cœléstis. Porrò si Poétæ dícere lícuit: Trahit sua quemque volúptas; non necéssitas, sed volúptas; non obligátio, sed delectátio: quantò fórtiùs nos dícere debémus trahi hóminem ad Christum, qui delectátur veritáte, delectátur beatitúdine, delectátur justítiâ, delectátur sempitérnâ vitâ, quod totum Christus est? An verò habent córporis sensus voluptátes suas, & ánimus deséritur à voluptátibus suis? si ánimus non habet voluptátes suas, unde dícitur: Fílii autem hóminum sub tégmine alárum tuárum sperábunt; Inebriabúntur ab ubertáte domûs tuæ, & torrénte voluptátis tuæ potábis eos: quóniam apud te est fons vitæ, & in lúmine tuo vidébimus lumen? Da amántem, & sentit quod dico; da desiderántem, da esuriéntem, da in ista solitúdine peregrinántem, atque sitiéntem, & fontem ætérnæ pátriæ suspirántem; da talem: & scit quid dicam.

℟. Est scriptum in Prophétis: * Erunt omnes docíbiles Dei. Omnis qui audívit à Patre, & dídicit, venit ad me; † Allelúia, allelúia. *Joan.* 6. 45. ℣. Dicit Dóminus: Ponam univérsos fílios tuos doctos à Dómino. *Isa.* 54.

v. 12. 13. * Erunt. ℣. Glória. † Allelúia.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. f. Nemo potest veníre ad me, nisi Pater meus qui misit me, tráxerit eum, allelúia. *Joan.* 6. 44.

Orémus. *Oratio.*

MEntes nostras, quǽsumus, Dómine, Paraclétus qui à te procédit, illúminet: & indúcat in omnem, sicut tuus promísit Fílius, veritátem. Qui tecum vivit & regnat in unitáte ejúsdem Spíritûs.

*CANON.*

Ex Concílio Rotomagénsi, *Anno* 1072. *can.* 8.

QUátuor Témporum observátio competénti témpore secúndùm divínam institutiónem commúni observántiâ à nobis servétur.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. d. Amen amen dico vobis, qui credit in me, habet vitam ætérnam, allelúia. *Joan.* 6. 47.

FERIA QUINTA.

*Duplex minus.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalmi* Exultáte Deo.... Parátum cor meum.... Deus locútus est, *p.* 114. *& seqq.*

De A'ctibus Apostolórum.

LECTIO I. *Cap.* 15. 1.

*Contentio de Circuncisione.*

QUidam descendéntes de Judǽa, docébant fratres: Quia nisi circuncidámini secúndùm morem Móysi, non potéstis salvári. Convenerúntque Apóstoli & Senióres, vidére de verbo hoc. Cùm autem magna conquisítio fíeret, surgens Petrus dixit ad eos: Viri fratres, vos scitis quóniam ab antíquis diébus Deus in nobis elégit, per os meum audíre Gentes verbum Evangélii, & crédere. Et qui novit corda Deus, testimónium perhíbuit, dans illis Spíritum sanctum, sicut & nobis. Et nihil discrévit inter nos & illos, fide puríficans corda eórum. Nunc ergo quid tentátis Deum, impónere jugum super cervíces discipulórum, quod neque patres nostri, neque nos portáre potúimus? sed per grátiam Dómini Jesu Christi crédimus salvári, quemádmodùm & illi. Respóndit Jacóbus, dicens: Viri fratres, ego júdico non inquietári eos qui ex Géntibus convertúntur ad Deum; sed scríbere ad eos ut abstíneant se à contaminatiónibus simulachrórum, & fornicatióne, & suffocátis, & sánguine.

℟. Cécidit Spíritus sanctus, p(866) 530.

LECTIO II. *v.* 22.

*Spiritus sanctus non imponit onera nisi necessaria.*

TUnc plácuit Apóstolis, & Senióribus cum omni Ecclésia, elígere viros ex eis,

& mittere Antiochiam cum Paulo & Bárnaba, Judam, qui cognominabátur Bársabas, & Silam, viros primos in frátribus: scribéntes per manus eórum: Apóstoli & Senióres fratres, his, qui sunt Antiochiæ, & Syriæ, & Cilíciæ, frátribus ex Géntibus, salútem. Quóniam audívimus quia quidam ex nobis exeúntes, turbavérunt vos verbis, everténtes ánimas vestras, quibus non mandávimus, plácuit nobis colléctis in unum, elígere viros, & míttere ad vos, cum charíssimis nostris Bárnaba, & Paulo, homínibus, qui tradidérunt ánimas suas pro nómine Dómini nostri Jesu Christi. Mísimus ergo Judam & Silam, qui & ipsi vobis verbis réferent éadem. Visum est enim Spirítui sancto, & nobis, nihil ultrà impónere vobis óneris quàm hæc necessária. Ut abstineátis vos ab immolátis simulachrórum & sánguine, & suffocáto, & fornicatióne, à quibus custodiéntes vos, benè agétis. Valéte.

℟. Spíritus in quo clamámus, pag(867) 531.

Lectio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 9. 1.

*Missio Apostolorum.*

IN illo témpore; Convocátis Jesus duódecim Apóstolis, dedit illis virtútem & potestátem super ómnia dæmónia, & ut lánguidos curárent. Et misit illos prædicáre regnum Dei. Et réliqua.

Homilía sancti Justini Mártyris.

*Apologia* I. *ad Antoninum Senatumque Romanum.* *Ann.* 150.

DUódecim viri número in mundum exiérunt iique ignári & idiótæ, nullâque dicéndi facultáte prǽditi, vi divíná omni hóminum géneri exposuérunt, missos se esse à Christo, qui omnes Dei verbum docérent. Ac nos qui quondam mútuis cǽdibus nosmetipsos contaminabámus non modò non gérimus bellum cum inimícis & hóstibus, sed étiam, ne mentiámur eósque qui nos quærunt, captémus & fallámus, libénter Christum profiténtes, mortem oppétimus. Sed audíte, quæso, quid de iis, qui ejus & doctrinam prædicavérunt, & advéntum potentiámque exposuérunt prædíctum sit à Prophéta & rege: In omnem terram sonus eórum exívit, & in fines Orbis terrárum eórum verba pervasérunt.

℟. Convocátis Jesus duódecim Apóstolis, * Misit illos prædicáre regnum Dei, † Allelúia, allelúia. *Luc.* 9. *v.* 1. 2.

℣. Qui sunt isti qui ut nubes volant? *Isa.* 60. 8. * Misit. ℣. Glória. † Allelúia.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. e. Dedit Apóstolis Jesus virtútem & potestátem super ómnia dæmónia; & ut languóres curárent, allelúia. *Luc.* 9. 1.

Orémus. *Oratio.*

ANnue, misericors Deus, ut, qui divina præcépta violándo, à paradísi felicitáte decídimus; duce Spíritu sancto, ad ætérnæ beatitúdinis redeámus ascénsum per tuórum custódiam mandatórum. Per Dóminum ... in unitáte ejúsdem.

*CANON.*

Ex statútis Synodálibus Ecclésiæ Rotomagénsis.

*Ann.* 1606. *Tit. de Sacram. Confirmationis.*

MOneant Curáti suos parochiános ut suscípiant Sacraméntum Confirmatiónis, & quando scíverint Epíscopum ventúrum ad suos términos, fáciant confitéri quotquot sunt qui non recepérunt prædíctum Sacraméntum, & móneant eos illud devótè suscípere, & non contémnere.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. a. Egréssi Apóstoli circuíbant per castélla, evangelizántes & curántes ubíque, allelúia. *Luc.* 9. 6.

FERIA SEXTA QUATUOR TEMPORUM.

*Duplex minus.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalmi* Deus, in adjutórium... In te, Dómine, sperávi... Os meum annuntiábit, *p.* 135. *& seqq.*

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO I. *Cap.* 2. 1.

*Vera scientia Christiana.*

EGo cùm veníssem ad vos, fratres, veni non in sublimitáte sermónis, aut sapiéntiæ, annúntians vobis testimónium Christi. Non enim judicávi me scire áliquid inter vos, nisi Jesum Christum, & hunc crucifíxum. Et ego in infirmitáte, & timóre, & tremóre multo fui apud vos. Et sermo meus, & prædicátio mea, non in persuasibílibus humánæ sapiéntiæ verbis, sed in ostensióne Spíritûs & virtútis: ut fides vestra non sit in sapiéntia hóminum, sed in virtúte Dei. Sapiéntiam autem lóquimur inter perféctos: sapiéntiam verò non hujus séculi, neque príncipum hujus séculi, qui destruúntur; sed lóquimur Dei sapiéntiam in mystério, quæ abscóndita est, quam prædestinávit Deus

ante sécula in glóriam nostram; quam nemo príncipum hujus séculi cognóvit: si enim cognovíssent, nunquam Dóminum glóriæ crucifixíssent. Sed sicut scriptum est: Quod óculus non vidit, nec auris audívit, nec in cor hóminis ascéndit, quæ præparávit Deus iis, qui díligunt illum. Nobis autem revelávit Deus per Spíritum suum: Spíritus enim ómnia scrutátur, étiam profúnda Dei.

℟. Confírmat nos Deus, p. (868) 532.

LECTIO II. *v. 11.*

*Per Spiritum Deus cognoscitur.*

QUis enim hóminum scit quæ sunt hóminis, nisi spíritus hóminis, qui in ipso est? ita & quæ Dei sunt, nemo cognóvit, nisi Spíritus Dei. Nos autem non spíritum hujus mundi accépimus, sed Spíritum qui ex Deo est, ut sciámus quæ à Deo donáta sunt nobis: quæ & lóquimur non in doctis humánæ sapiéntiæ verbis, sed in doctrína Spíritûs, spirituálibus spirituália comparántes. Animális autem homo, non pércipit ea, quæ sunt Spíritûs Dei. Stultítia enim est illi, & non potest intellígere: quia spirituáliter examinátur. Spirituális autem júdicat ómnia: & ipse à némine judicátur. Quis enim cognóvit sensum Dómini, qui instruat eum? Nos autem sensum Christi habémus.

℟. Si diligámus ínvicem, pag. (869) 533.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap. 5. 17.*

*Jesus liberat paralyticum à peccatis & ab infirmitate.*

IN illo témpore; Factum est in una diérum, & Jesus sedébat docens. Et erant Pharisǽi sedéntes, & legis doctóres, qui venérant ex omni castéllo Galilǽæ, & Judǽæ, & Jerúsalem: & virtus Dómini erat ad sanándum eos. Et réliqua.

Homilía sancti Ambrósii Epíscopi.

*De expos. Evang. secund. Luc. Lib. 5.*

NOn otiósa hujus paralýtici, nec angústa medicína est, quandò Dóminus & orásse præmíttitur: non útique propter suffrágium, sed propter exémplum. Imitándi enim spécimen dedit, non precándi ámbitum requisívit. Primum ómnium, quod antè díximus, unusquísque æger peténdæ precatóres salútis debet adhibére, per quos vitæ nostræ compágo resolú-

ta, actuúmque nostrórum clauda vestígia, verbi cœléstis remédio reformentur: sint ígitur áliqui monitóres mentis, qui ánimum hóminis quamvis exterióris córporis debilitáte torpéntem, ad superióra érigant: quorum rursùs adminículis & attóllere, & humiliáre se fácilis, ante Jesum locétur, Domínico vidéri dignus aspéctu. Humilitátem enim réspicit Dóminus: quia respéxit humilitátem ancíllæ suæ. Quorum fidem ut vidit, dixit: Homo, remittúntur tibi peccáta tua. Magnus Dóminus, qui aliórum mérito ignóscit áliis: & dùm álios probat, áliis reláxat erráta. Cur apud te, homo, colléga non váleat, cùm apud Deum servus & interveniéndi méritum, & jus hábeat impetrándi? Disce, qui júdicas, ignóscere: disce, qui æger es, impetráre. Si grávium peccatórum diffídis véniam, ádhibe precatóres, ádhibe Ecclésiam, quæ pro te precétur, cujus contemplatióne, quod tibi Dóminus negáre posset, ignóscat.

℞. Conveniébant turbæ multæ ut audírent, & curaréntur ab infirmitátibus suis. Et Jesus sedébat docens, & * Virtus Dómini erat ad sanándum eos, † Allelúia, allelúia. *Luc.* 5. *v.* 15. 17. ℣. Misericórdia tua advéniens, Dómine, sanábat illos. *Sap.* 16. 10. * Virtus. ℣. Glória. † Allelúia.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 5. a. Fílius hóminis habet potestátem in terra dimittèndi peccáta, allelúia. *Luc.* 5. 24.

Orémus. *Oratio.*

DA, quæsumus, Ecclésiæ tuæ, miséricors Deus, ut sancto Spíritu congregáta, hostíli nullátenùs incursióne turbétur. Per Dóminum nostrum... in unitáte ejúsdem Spíritûs sancti.

*CANON.*

Ex Concílio Rotomagénsi. *De sacram. Confirmationis,* *ann.* 1581. *can.* 2.

EPíscopi nonnísi conféssis & profiténtibus Sýmbolum Apostolórum Confirmatiónis Sacraméntum tradant. Júbeant verò ut mundâ & nítidâ fronte accédant.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 7. d. Stupor apprehéndit omnes & magnificábant Deum, & repléti sunt timóre, dicéntes: Quia vídimus mirabília hódiè, allelúia. *Luc.* 5. 26.

SABBATO

QUATUOR TEMPORUM.

*Duplex minus.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Psalmi* Exáudi, Dómine... Inimíci mei.... Miserére mei, Deus, *p.* 156. *& seqq.*

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corinthios.

LECTIO I. *Cap.* 12. 1.

*Nihil possumus nisi in Spiritu sancto.*

DE spirituálibus autem, nolo vos ignoráre, fratres. Scitis quóniam cùm Gentes essétis, ad simuláchra muta, prout ducebámini eúntes. Ideò notum vobis fácio, quòd nemo in Spíritu Dei loquens, dicit anáthema Jesu. Et nemo potest dícere, Dóminus Jesus, nisi in Spíritu sancto: Divisiónes verò gratiárum sunt, idem autem Spíritus. Et divisiónes ministratiónum sunt, idem autem Dóminus. Et divisiónes operatiónum sunt, idem verò Deus, qui operátur ómnia in ómnibus. 535.

℟. Quid orémus, *p.* 871.

LECTIO II. *v.* 7.

*Dona & operationes Spiritûs sancti.*

UNicuíque autem datur manifestátio Spíritûs ad utilitátem. Alii quidem per Spíritum datur sermo sapiéntiæ: alii autem sermo sciéntiæ secúndùm eúmdem Spíritum. Alteri fides in eódem Spíritu: alii grátia sanitátum in uno Spíritu: alii operátio virtútum, alii prophetía, alii discrétio spirítuum, alii génera linguárum, alii interpretatio sermónum. Hæc autem ómnia operátur unus atque idem Spíritus, dívidens singulis prout vult. Sicut enim corpus unum est, & membra habet multa, ómnia autem membra córporis, cùm sint multa, unum tamen corpus sunt: ita & Christus. 536.

℟. Non dedit nobis, *p.* 871.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 4. 38.

*Socrus Simonis & alii sanati.*

IN illo témpore; Surgens Jesus de Synagóga, introívit in domum Simónis: socrus autem Simónis tenebátur magnis fébribus. Et réliqua.

Homilía sancti Ambrósii Epíscopi.

*Lib.* 4. *in Cap.* 4. *Luc.*

VIde cleméntiam Dómini Salvatóris: nec indignatióne commótus, nec scélere offénsus, nec injúriâ violátus Judæam déserit: quin étiam ímmemor injúriæ, memor cleméntiæ, nunc docéndo, nunc liberándo, nunc sanándo, infídæ plebis corda demúlcet. Et benè sanctus Lucas virum à spíritu nequítiæ liberátum antè præmísit, & subdit féminæ sanitátem. Utrúmque enim sexum Dóminus curatúrus advénerat: sed prior sanári débuit, qui prior creá-

tus est, nec prætermítti illa, quæ mobilitáte magis ánimi, quàm pravitáte peccáverat. Fortássis étiam in typo mulíeris illíus socrus Simónis & Andréæ, váriis críminum fébribus caro nostra languébat, & diversárum cupiditátum immódicis æstuábat illécebris. Nec minórem febrem amóris esse díxerim, quàm calóris. I'taque illa ánimum, hæc corpus inflámmat. Febris enim nostra, avarítia est; febris nostra libído, est: febris nostra, luxúria est: febris nostra, ambítio est: febris nostra, iracúndia est.

℟. Jesus docébat in Sábbatis; & * Stupébant in doctrína ejus, quia in potestáte erat sermo ipsíus, † Allelúia, allelúia. *Luc.* 4. *v.* 31. 32. ℣. Sapiéntia in ecclésiis Altíssimi apériet os suum, & in plenitúdine sancta admirábitur. *Eccli.* 24. *v.* 2. 3. * Stupébant. ℣. Glória. † Allelúia.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. g. Omnes qui habébant infírmos ducébant illos ad Jesum: at ille síngulis manus impónens curábat eos, allelúia. *Luc.* 4. 40.

Orémus. *Oratio.*

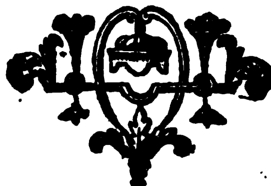
MEntibus nostris, quǽsumus, Dómine, Spíritum sanctum benígnus infúnde, cujus & sapiéntiâ cónditi sumus, & providéntiâ gubernámur. Per Dóminum... in unitáte ejúsdem Spíritûs.

*CANON.*

Ex Concílio Rotomagénsi. *An.* 1581. *Tit. de Sacram. Confirm. Can.* 3.

CA'veant pater & mater, ne líberos ad Sacraméntum Confirmatiónis téneant, propter cognatiónem, quæ in hujúsmodi Sacraménto inter confirmátum & tenéntem contráhitur.

*Finitâ Nonâ, terminatur Tempus Paschale.*



PROPRIUM

# PROPRIUM SANCTORUM.

## *Pars Verna.*

DIE IX.
SANCTI ANSBERTI Rotomagensis Pontificis
*Commemoratio ad Vesperas.*

*Ant.* 4. f. Ipsum elégit Dóminus ab omni vivénte, offérre sacrifícium Deo, incénsum, & bonum odórem pro pópulo suo. *Eccli.* 45. 20.

℣. Exaltávi eléctum de plebe mea; ℟. Oleo sancto meo unxi eum. *Ps.* 88. *v.* 20. 21.

*Oratio*, Omnípotens, *pag.* 546.

*In Officio noct. post tertium ℟. legitur Lectio, ut infrà.*

LECTIO IV.

*Ex ejus vita, autore Aigrado coævo apud Bollandum.*



Nsbértus in agro Vulcassíno ad ripam flúvii Itæ, patre Sivíno natus, à téneris annis in lítteris divínis, & humánis multùm profécit. Angadrísmæ Vírgini nobilíssimæ à patre cùm fuísset desponsátus, mútuo ambórum consénsu, quam sibi spopónderant, fides est solúta. In aulam à patre adscítus à Clotário tértio ánnuli régii curam accépit: rebus sæculáribus abjéctis, se cóntulit ad Fontinellénse monastérium, quod ante quinque annos sanctus Wandregíssilus constrúxerat. Aliórum factus exémplar, júdice Abbáte, dignus fuit sacerdótio quod à sancto Audoéno Rotómagi suscépit. Secúndus post Wandregíssilum in locum Lambérti Abbas suffféctus, doctrínâ & virtútibus omnes alúmnos in sui admiratiónem addúxit. In successórem à sancto Audoéno postulátus, & in aulam à Theodoríco tértio vocátus, Rotomagénsis Epíscopus consecrátus est à sancto Lambérto Lugdunénsi, cui in Abbátia Fontinellénsi succésserat. Póntifex factus, nulla charitátis, aut religiónis exémpla prætermísit. Censum, qui Epíscopo juxta

cánones persólvi consuéverat, presbýteris ad sacrárum ǽdium restauratiónem libénter dilargítus est. Ministrábat ipse paupéribus quos ad mensam adhibébat. Venerándum beáti Audoéni corpus in locum editiórem tránstulit, & novo contéxit sepúlchro. In urbe metropolitána hábuit Concílium, cui adfuérunt séxdecim Prǽsules, inter quos Rheménsis & Turonénsis Epíscopi numerántur. Pippíni invídiam súbiit, & in Hannóniam ad Altimonténse monastérium migráre compúlsus, ab Aldúlpho Abbáte benígnè excéptus est. Cùm compértâ ejus innocéntiâ & impetrátâ facultáte, réditum meditarétur, óbiit in Dómino, quinto Idus Februárii, circa annum sexcentésimum nonagésimum quintum. Ejus corpus Fontinéllam illátum, primùm in basílica sancti Pauli, deínde Baíni Tarvanénsis Epíscopi curâ unà cum córpore sancti Wandregisíli in basílica príncipis Apostolórum cónditum est. Gándavum pósteà translátum fuit, & ab Arnúlpho Flándriæ Cómite in Blandiniénsi Monastério collocátum anno nongentésimo quadragésimo quarto.

*Ad Laudes, commemoratio.*

*Ant.* 1. d. Dedit illi Dóminus legem vitæ, & disciplínæ, docére Jacob testaméntum suum, & judícia sua Israël. *Eccli.* 45. 6.

℣. Véritas mea, & misericórdia mea cum ipso, ℟. Et in nómine meo exaltábitur cornu ejus. *Ps.* 88. 25.

*Oratio.*

Omnípotens Deus, qui beátum Ansbértum Antístitem pópulo tuo præésse, & quibus prǽerat, verbo & exémplo prodésse voluísti; eódem intercedénte, pastóres Ecclésiæ tuæ cum grégibus sibi commíssis dírige in viam salútis ætérnæ; ut omnes, te donánte, tibi plácita cúpiant, & totâ virtúte perfíciant. Per Christum Dóminum nostrum.

## Die XXV.

[*vel an. Bissext.* Die XXVI.]

## S. PRÆTEXTATI Pontificis Rotomagensis & Martyris

*Commemoratio ad Vesperas.*

*Ant.* 5. f. Pro certo habet omnis qui te colit, Dómine, quòd vita ejus, si in probatióne fúerit, coronábitur. *Tob.* 3. 21.

℣. In Deo sperávi, ℟. Non timébo quid fáciat mihi homo. *Psal.* 55. 11.

*Oratio*, Præsta, Dómine, *ut infrà*, *p.* 547.

*In Offic. Noct. post tertium ℟. legitur Lectio, ut infrà*

LECTIO IV.

*Ex S. Greg. Tur. lib. 8.*

PRætextátus Clotárii primi, ejúſque liberórum regum ætáte Rotomagénſem Eccléſiam adminiſtrávit. Váriis Concíliis intérfuit; in quibus doctrínæ non minùs quàm humilitátis arguménta edit. A'rtibus Fredegúndis Chilperíci, apud quem grátiâ plúrimùm valúerat, inoffénſam incúrrit. A rege in exílium actus, ac póſtmodùm Lutétiæ in Concílio exhibitus, cùm objécta ſibi à rege crímina conſtánter diſſere cœpiſſet, falsâ quorúmdam perſuaſióne ductus, ut animum príncipis deliníret, eum ſe palam conféſſus eſt, & iterùm in exílium relegátus. Interfécto Chilperíco, flagitántibus cívibus, Gunrámni regis juſſu rédditus, ſedem recuperávit. Tum Matiſcónem ad Concílium ſe contulit; unde revérſus, Fredegúnde illi exílium exprobránte, more boni Paſtóris ſevériùs reſpóndit: Ego ſemper & in exílio, & extra exílium Epíſcopus fui, ſum, & ero. Sed ipsâ Domínicæ Reſurrectiónis die, cùm ad impléndâ eccleſiáſtica offícia, ad Eccléſiam properáret ſanctus Póntifex, antiphónas juxta conſuetúdinem per órdinem incépit; cúmque inter pſallendum fórmulæ decúmberet, cultro ſicárii confóſſus eſt; quo vúlnere accépto, plenas ſánguine manus ſuper altáre exténdens, preces cum gratiárum actióne Deo óbtulit: moxque in cubículum inter manus fidélium deportátus, in ſuum léctulum collocátus eſt: & ordinátâ domo ſuâ ſpíritum exhalávit.

*Ad Laudes, commemor.*

*Ant.* 7. g. Vitâ decéſſit univérſæ genti memóriam mortis ſuæ ad exémplum virtútis & fortitúdinis derelínquens. 2. *Mach.* 6. 31.

℣. Juſtus ut palma florébit, ℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur. *Pſ.* 91. 13.

*Oratio.*

PRæſta, Dómine, précibus noſtris cum exultatióne provéntum: ut beáti Prætextáti Mártyris tui atque Pontíficis, cujus paſſiónem ánnuâ devotióne recólimus, étiam conſtántiam ſubſequámur. Per Chriſtum.

DIE XXVII.

[*Anno Biſſext.* DIE XXVIII.]

SANCTÆ HONORINÆ Virginis & Martyris

*Commemoratio ad Veſperas.*

*Ant.* 6. f. Felix eſt ſtérilis, & incoinquináta, quæ neſcívit thorum in delícto. *Sap.* 3. 13.

℣. Mihi adhærére Deo bonum est: ℟. Pónere in Dómino Deo spem meam. *Ps.* 72. 28.

*Oratio*, Deus, qui inter cétera, *ut infrà.*

*In Officio nocturno post tertium Responsorium legitur Lectio, ut infrà.*

LECTIO IV.

*Ex act. Ordinis S. Benedicti* 4. *sec. p.* 2.

Honorína Virgo & Martyr in Diœcésibus Rotomagénsi, Parisiénsi, & Corisopiténsi præcípuè recólitur. Passa est in território Caleténsi. Invéntum est illíus corpus in villa Gerárdi, ad ripam Séquanæ, ubi flúvius Oceáno júngitur non longè à Portu Grátiæ. Extat in prædícta Villa Canonicórum Regulárium Diœcésis Rotomagénsis Priorátus, ubi viget adhuc sanctæ Mártyris célebris memória. Desinénte nono século, regnánte Cárolo Símplici, translátæ sunt Relíquiæ ad confluéntem Séquanæ, & I'saræ Parisiénsis Diœcésis, & depósitæ in templo Vírginis Deíparæ, quod Ivo, Comes Bellimóntis ad I'saram, Abbátiæ donávit Beccénsi, ut in eo Mónachi deservírent, anno millésimo octogésimo secúndo, tunc floréntе sancto Anſélmo Abbáte Beccénsi.

*Ad Laudes, commem.*

*Ant.* 4. d. Tu scis, Dómine, quia mundam servávi ánimam meam ab omni concupiscéntia. *Tob.* 3. 16.

℣. Psallam & intélligam in via immaculáta, ℟. Quando vénies ad me? *Ps.* 100. 2.

*Oratio.*

Deus, qui inter cétera potentiæ tuæ mirácula étiam in sexu frágili victóriam martyrii contulísti: concéde propítius ut qui beátæ Honorínæ Vírginis & Mártyris tuæ natalítia cólimus per ejus ad te exémpla gradiámur; Per Christum Dóminum nostrum.

DIE XXVIII.

[*Anno Bissext.* DIE XXIX.]

SS. MARTYRUM

Qui obiêre in charitatis officio, erga pestilentiâ conflictatos Alexandriæ.

*Commemoratio ad Vesperas.*

*Ant.* 6. f. In mundo pressuram habébitis, sed confidite, ego vici mundum. *Joan.* 16. 33.

℣. Custódit Dóminus ánimas Sanctórum suórum, ℟. De manu peccatóris liberábit eos. *Ps.* 96. 10.

*Oratio*, Da, quǽsumus, omnípotens Deus, *ut infrà.*

*In Officio nocturno post tertium Responsorium legitur Lectio, ut infrà.*

Ex Epiſtola ſancti Dionyſii Alexandríni Epiſcopi, de peſte quæ Alexándriæ graſſabátur.

*Apud Euſeb. lib. 7. cap. 22.*

LECTIO IV.

Repéntè ingruit lues illa, quæ ómnium ſpem opinionémque ſuperávit: neque enim à nobis abſtínuit, licèt plúrimùm in Gentíles graſſáta ſit. Plúrimi ex frátribus noſtris ob nímiam charitátem, curam omnem própriæ ſalútis abjiciéntes, dum ægros ſecúrè atque audácter inviſunt, eíſque aſsiduè miniſtrant, & curatiónem adhibent, in Chriſto unâ cum illis mórtui ſunt, aliórum ægritúdini libentíſſimè ſeſe impendéntes, & proximórum morbum in ſemetípſos quodámmodo attrahéntes, doloréſque eórum ſponte ſuâ expriméntes, atque extergéntes. Et hoc quidem pacto óptimi quique ex frátribus noſtris, quorum nonnúlli Presbyteri erant ac Diáconi, & ex pópulo laudatíſſimus quiſque mortem oppetiérunt; ádeò ut genus hoc mortis ob pietátem, fideíque conſtántiam nequáquam inférius martyrio cenſeátur. Hi ergo Sanctórum córpora ſupínis mánibus gremióque excipiéntes, óculos illis, & ora claudéntes, bajulántes éadem húmeris ſuis, componéntes, adhæreſcéntes illis, complecténtes, & veſtiméntis ornántes, paulò pòſt éadem offícia ab áliis conſecúti ſunt, cùm ſupérſtites ſemper eórum, qui præceſſerant veſtígiis inſiſterent. Gentíles verò prorſùs contrária his egérunt.

*Ad Laudes, commem.*

*Ant.* 2. D. Hi ſunt qui venérunt de tribulatióne magna, & lavérunt ſtolas ſuas, & dealbavérunt eas in ſánguine Agni. *Apoc.* 7. 14.

℣. In te, Dómine, ſperavérunt, ℟. Et liberáſti eos. *Pſ.* 21. 5.

*Oratio.*

Da, quæſumus, omnípotens Deus, intercedéntibus ſanctis Martyribus tuis, qui frátribus dirâ lue afflictis cum vitæ diſpéndio miniſtráre non timuérunt; nos eódem ſpíritu fervéntes neceſſitátibus Sanctórum communicáre. Per Chriſtum Dóminum noſtrum.

---

## FESTA MARTII.

---

DIE IV.

SANCTI ADRIANI Martyris, & Sociorum

*Commemoratio.*

*Oratio.*

Mártyrum tuórum, Dómine, Adriáni & ſociórum palmas ánnuâ celebra-

tióne venerántes, súpplices te rogámus, ut quos cœlésti glóriâ sublimásti, nobis pérpeti suffrágio concédas subvenire. Per Christum Dóminum nostrum.

*Post 3. ℞. legitur Lectio de S. Adriano.*

Ex libro Eusébii Cæsariénsis Epíscopi, de Martyribus Palæstinæ.

Lectio IV. *Cap.* 11.

CUm furor præsidis advérsùs Mártyres adhuc in ore ómnium versarétur, Adriánus & Eubúlus ex regióne Manganæa Cæsaréam ad réliquos Confessóres profécti; in ipso civitátis intróitu perinde ac céteri interrogáti sunt, cujus rei grátiâ advenissent. Confessíque id quod res erat, Firmiliáno exhibéntur. Qui nullâ dilatióne usus, post crebra ungulárum vérbera quibus látera eórum sulcáverat, eos ad béstias damnávit. Bíduo igitur interjécto, Adriánus quidem quinto die mensis Dystri, id est, ante diem tértium Nonas Mártias, quo die Natális Génii públici, ut Gentíles exístimant apud Cæsáream celebrátur, leóni objéctus, ac deinde gládio transfixus martyrium consummávit. Eubúlus verò ipsis Nonis Mártiis, cùm judex enixè ipsum rogásset, ut obláto diis sacrificio libertátem prout ipsi exístimant consequerétur, gloriósam mortem pro pietáte tolerátam huic cadúcæ vitæ antepónens, post béstias, non secus ac prior, ille jugulátus Cæsariénsium Mártyrum certámina últimus obsignávit.

Die VII.

SS. PERPETUÆ ET FELICITATIS, Martyrum

*Commemoratio pridiè in Vesperis.*

*Ant.* 4. d. Timor Dómini cum eléctis féminis gráditur, & cum justis & fidélibus agnóscitur. *Eccli.* 1. 16.

℣. Salvásti nos ex affligéntibus nos, ℞. Et odiéntes nos confudísti. *Ps.* 43. 8.

*Oratio*, Omnípotens, *ut infrà.*

*In Laudibus Matutinis.*

*Ant.* 1. a. Infirma mundi elégit Deus, ut confúndat fórtia, & non gloriétur omnis caro in conspéctu ejus 1. *Cor.* 1. *v.* 27. 29.

℣. In Deo laudábimur totâ die, ℞. Et in nómine tuo confitébimur in séculum. *Ps.* 43. 9

*Oratio.*

OMnípotens sempitérne Deus, qui infirma mundi éligis ut fórtia quæque confúndas; da nobis, inter-

cedéntibus beátis Martýribus tuis Perpétuâ & Felicitáte, ut spíritu tuæ veritátis armáti, mundum sive blandiéntem, sive sæviéntem víncere pro tui nóminis amóre valeámus; Per Christum Dóminum nostrum.

## DIE IX.

## SS. MARTYRUM,

### Qui pro sacris Libris interiêre

*Commemoratio pridiè in Vesperis.*

*Ant.* 6. f. In mundo pressúram habébitis, sed confídite, ego vici mundum. *Joan.* 16. 33.

℣. Custódit Dóminus ánimas Sanctórum suórum, ℟. De manu peccatóris liberábit eos. *Ps.* 96. 10.

*Oratio*, Præsta, quæsumus, *ut infrà.*

*Post tertium Responsorium legitur Lectio, ut infrà.*

Ex Actis sanctórum Saturníni, Datívi, & aliórum plurimórum Mártyrum in Africa.

*Apud Ruinart, anno* 304.

### LECTIO IV.

TEmpóribus Diocletiáni, & Maximiáni, bellum diábolus Christiánis indíxit isto modo, ut sacrosáncta Dómini testaménta Scriptu-rásque divínas ad exuréndum péteret, Basílicas Domínicas subvérteret, & ritus sacros, cœtúsque sanctíssimos celebrári Dómino prohibéret. Sed non tulit exércitus Dómini Dei tam immáne præcéptum. Et quamvis tradéndo Gentílibus Scriptúras Domínicas, atque Testaménta divína profánis ígnibus comburénda cecidére nonnúlli; conservándo tamen eas, & pro ipsis libénter suum sánguinem effundéndo fórtiter finiére quamplúrimi. Quique pleni Deo, devícto atque prostráto Diábolo, victrícem palmam in passióne gestántes, senténtiam in traditóres, atque in eórum consórtes, quâ illos ab Ecclésiæ communióne rejécerant cuncti Mártyres próprio sánguine consignábant. Fas enim non fúerat, ut in Ecclésia Dei simul essent Mártyres & Traditóres.

*In Laudibus Matutinis, commemoratio.*

*Ant.* 2. D. Hi sunt qui venérunt de tribulatióne magna, & lavérunt stolas suas, & dealbavérunt eas in sánguine Agni. *Apoc.* 7. 14.

℣. In te, Dómine, sperávérunt, ℟. Et liberásti eos. *Ps.* 21. 5.

*Oratio.*

PRæsta, quæsumus, Deus miséricors, ut recoléndo sanctos Mártyres, qui pótius elegérunt subíre mortem,

quàm Scriptúras ſacras comburéndas trádere, eórum æmulándo fidem & conſtántiam, in ómnibus advérſis habeámus ſolátio ſanctos Libros, qui ſunt in mánibus noſtris. Per Chriſtum Dóminum noſtrum.

### DIE XVII.

### S. PATRICII EPISCOPI

*Commemoratio in Veſperis.*

*Ant.* 4. f. Ipſum elégit Dóminus ab omni vivénte, offérre ſacrificium Deo, incénſum, & bonum odórem pro pópulo ſuo. *Eccli.* 45. 20.

℣. Exaltávi eléctum de plebe mea, ℟. O'leo ſancto meo unxi eum. *Pſ.* 88. *v.* 20. 21.

*Oratio*, Quæſumus, Dómine, *ut infrà.*

*Commemoratio in Laudibus Matutinis.*

*Ant.* 1. d. Dedit illi Dóminus legem vitæ, & diſciplínæ, docére Jacob teſtaméntum ſuum, & judícia ſua Iſraël. *Eccli.* 45. 6.

℣. Véritas mea, & miſericórdia mea cum ipſo, ℟. Et in nómine meo exaltábitur cor ejus. *Pſ.* 88. 25.

*Oratio.*

QUæſumus, Dómine, cleméntiam tuam, ut in hac die, quam tránſitu ſacro beáti Pontíficis Patrícii conſecráſti, des nobis illam ſequi doctrínam quam ille & verbo dócuit, & ópere complévit. Per Chriſtum Dóminum noſtrum.

### DIE XVIII.

### SANCTI CYRILLI

Epiſcopi Jeroſolymitani

*Commemoratio in Veſperis & Laudibus, ut in Communi.*

*Oratio.*

EXáudi, quæſumus, Dómine, preces noſtras, quas in beáti Cyrílli Pontíficis feſtivitáte deférimus; & qui tibi dignè méruit famulári, ejus intercedéntibus méritis ab ómnibus nos abſólve peccátis; Per Chriſtum Dóminum noſtrum.

### DIE XX.

### SANCTI JOACHIM

Patris B. Mariæ Virginis

*Commemoratio pridiè in Veſperis.*

1. d. *Ant.* Poſſidébit ſemen tuum portas inimicórum ſuórum; & benedicéntur in ſémine tuo omnes Gentes terræ. *Gen.* 22. *v.* 17. 18.

℣. Potens in terra erit ſemen ejus, ℟. Generátio rectórum benedicétur. *Pſ.* 111. 2.

*Oratio*, Deus, qui præ ómnibus, *ut infrà.*

*In Laudibus matutinis.*

*Ant.* 2. d. Teſtaménta ſéculi póſita ſunt apud illum; conſervávit legem Excélſi, & fuit in teſtaménto cum illo. *Eccli.* 44. *v.* 19. 20.

℣. In ætérnum servábo illi misericórdiam meam, ℟. Et testaméntum meum fidéle ipsi. *Ps.* 88. 29.

*Oratio.*

Deus, qui præ ómnibus Sanctis tuis beátum Jóachim Genitrícis Fílii tui patrem esse voluísti: concéde, quæsumus, ut cujus festa venerámur, ejus quoque perpétuò patrocínia sentiámus; Per eúmdem Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit & regnat.

## Die XXIV. Martii.

### *Canon.*

Ex sancto Augustíno.

*Lib. 4. de Trin. n. 9.*

Christus octávo Caléndas Aprílis concéptus créditur, quo & passus: ita monuménto novo, quo sepúltus est, ubi nullus erat mortuórum pósitus nec antè, nec pósteà, cóngruit úterus Vírginis, ubi nullus seminátus est mortálium. Natus autem tráditur octávo Caléndas Januárias.



# IN ANNUNTIATIONE ET INCARNATIONE DOMINI,

*TRIPLEX PRIMÆ CLASSIS.*

¶ *Si hoc Festum venerit in majori Hebdomada, vel intra Octavam Pascha, celebrabitur Feriâ II. post Dominicam in Albis, & ejus Officium ordinabitur ut dicetur infrà.*

IN PRIMIS VESPERIS.

*Psalmi de Feria.*

*Antiphona* 4. e.



SOLVE víncula colli tui, captíva fília Sion, quia ego ipse qui loquébar, ecce adsum. *Isa.* 52. *v.* 2. 6.

*Ant.* 5. a. Lauda & lætáre fília Sion; quia ecce ego vénio, & habitábo in médio tui. *Zach.* 2. 10.

*Ant.* 3. d. Propè feci justítiam meam, non elongábitur, & salus mea non morábitur. *Isa.* 46. 13.

*Ant.* 6. f. Dabo in Sion salútem, & in Israël glóriam meam. *Ibid. v.* 13.

*Ant.* 7. G. Propè est justus meus, egréssus est Salvátor meus. *Isa.* 51. 5.

*Capitulum. Isa.* 7. 14.

ECce Virgo concípiet & páriet Fílium, & vocábitur nomen ejus Emmánuel; bútyrum & mel cómedet, ut sciat reprobáre malum, & elígere bonum.

℟. Non auferétur sceptrum de Juda, & dux de femóre ejus, donec véniat qui mitténdus est, * Et ipse erit expectátio Géntium. *Gen.* 49. 10. ℣. Ecce concípies, María, & páries Fílium, & vocábis nomen ejus Jesum. *Luc.* 1. 31. * Et ipse. ℣. Glória Patri. * Et ipse.

*Hymnus. Sanct Vict.*

HÆc illa solémnis dies,
Dies salútis núntia,
Quâ missa cœlo, trístibus
Venére terris gáudia.

Unius omnes crímine,
Casu gravi lapsi sumus:
Ut ipse lapsos érigat,
Descéndit in terras Deus.

Qui, Patris ætérno sinu,
Ætérna proles náscitur,
Obnóxius fit témpori,

Alvum nec horret Virginis.
MORTA'LE corpus induit,
Orbi piándo víctima;
Sibíque format sánguinem,
Quo diluántur crímina.
MUNDI Redémptor qui venis,
Jesu, tibi laus máxima,
Cum Patre, cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

℣. Tu exúrgens miserébe-ris Sion; ℟. Quia tempus miseréndi ejus. *Ps.* 101. 14.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. D. Cessavérunt fortes, donec súrgeret Mater in I'sraël. Nova bella elégit Dóminus, & portas hóstium ipse subvértit. *Judic.* 5. *v.* 7. 8.

*Oratio*, Omnípotens sempitérne Deus, *ut infrà ad Laudes, pag.* 977.

*Commemoratio de Feria.*

AD COMPLETORIUM.

*Ant. & Psalmi de Feria occurrente. Cetera ut in Officio B. Mariæ in Sabbato, pag.* lxv.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Quod in María natum est de Spíritu sancto, * Veníte, adorémus. *Matth.* 1. 20.

*Psal.* Veníte, *p.* 2.

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

COElestis ales núntiat
Impléndi mox mystéria:
Virtúte fecúndâ Deus
Illápsus afflat Vírginem.
QUALIS futúro glória
Te, Virgo, de partu manet!
Concéptus in tuo sinu
Natus Dei, fiet tuus.
DE virgináli sánguine,
Quem sanctus aptat Spíritus,
Labis carens contágio
Verbi caro compíngitur.
NOBIS per hanc mortálibus
Lactéscit esca Cœlitum:
Nos pascit infántes homo,
Qui pascit A'ngelos Deus.
MUNDI Redémptor qui venis,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

*Antiphona & ℣. de Officio B. Mariæ in Sabbato, p.* lxvj.
*Psalmi de Officio parvo ejusdem, pag.* lxxvj.

IN I. NOCTURNO.

De Isaía Prophéta.

LECTIO I. *Cap.* 7. 10.

*Virgo paritura Emmanuël.*

ADjécit Dóminus loqui ad Achaz, dicens: Pete tibi signum à Dómino Deo tuo in profúndum inférni, sive in excélsum suprà. Et dixit Achaz: Non petam, & non tentábo Dóminum. Et dixit: Audíte ergo domus David: Numquid parum vobis est, moléstos esse homínibus, quia molésti estis & Deo meo? Propter hoc da-

bit Dóminus ipse vobis signum; Ecce Virgo concipiet & páriet Filium, & vocábitur nomen ejus Emmánuël; bútyrum & mel cómedet, ut sciat reprobáre malum, & elígere bonum.

℟. Creávit Dóminus novum super terram; * Fémina circúndabit virum. *Jer.* 31. 22. ℣. Quia non erit impossíbile apud Deum omne verbum. *Luc.* 1. 37. * Fémina.

LECTIO II. *Cap.* 11. 1.

*Vaticinium de Christi nativitate.*

EGrediétur virga de radíce Jesse, & flos de radíce ejus ascéndet, & requiéscet super eum Spíritus Dómini: Spíritus sapiéntiæ & intelléctûs, spíritus consílii & fortitúdinis, spíritus sciéntiæ & pietátis, & replébit eum spíritus timóris Dómini. Non secúndùm visiónem oculórum judicábit, neque secúndùm audítum áurium árguet; sed judicábit in justítia páuperes, & árguet in æquitáte pro mansuétis terræ: & percútiet terram virgâ oris sui, & spíritu labiórum suórum interfíciet ímpium. Et erit justítia cíngulum lumbórum ejus, & fides cinctórium renum ejus.

℟. Parávit Dóminus bráchium sanctum suum in óculis ómnium Géntium: & * Vidébunt omnes fines terræ salutáre Dei nostri. *Isa.* 52. 10. ℣. Vidébit omnis caro salutáre Dei. *Luc.* 3. 6. * Vidébunt.

LECTIO III. *Cap.* 35. 1.

*De futura consolatione eorum qui in Christum sunt credituri.*

LÆtábitur desérta & ínvia, & exultábit solitúdo, & florébit quasi lílium. Gérminans germinábit, & exultábit lætabúnda & laudans: glória Líbani data est ei; decor Carméli, & Saron; ipsi vidébunt glóriam Dómini, & decórem Dei nostri. Confortáte manus dissolútas, & génua debília roboráte. Dícite pusillánimis: Confortámini, & nolíte timére; ecce Deus vester ultiónem addúcet retributiónis; Deus ipse véniet, & salvábit vos. Tunc aperiéntur óculi cæcórum, & aures surdórum patébunt; tunc sáliet sicut cervus claudus, & apérta erit lingua mutórum; quia scissæ sunt in desérto aquæ, & torréntes in solitúdine; & quæ erat árida, erit in stagnum, & sitiens in fontes aquárum.

℟. Non auferétur sceptrum de Juda, & dux de fémore ejus, donec véniat qui mitténdus est; * Et ipse erit exspectátio Géntium. *Gen.* 49.

10. ℣. Ecce concípies, María, & páries Fílium, & vocábis nomen ejus Jesum. *Luc.* 1. 31. * Et ipse. ℣. Glória. * Et ipse.

IN II. NOCTURNO.

Ex libro tértio sancti Irenæi Epíscopi & Mártyris contra hæreses.

*Cap.* 21. *secul.* 2.

LECTIO IV.

DEus homo factus est, & ipse Dóminus salvábit nos, dans vírginis signum. Unus enim & idem Spíritus qui in Prophétis quidem præconávit, quis & qualis esset advéntus Dómini; ipse & in Apóstolis annuntiávit plenitúdinem témporum adoptiónis venisse, & proximásse regnum cœlórum, & inhabitáre intra hómines credéntes in eum, qui ex vírgine natus est Emmánuël. Quemádmodùm ipsi testificántur, quóniam priúsquàm convenísset Joseph cum María (manénte igitur eâ in virginitáte) invénta est in útero habens de Spíritu sancto. Et quóniam dixit ei Gábriel Angelus: Spíritus sanctus advéniet in te. Et quóniam Angelus in somnis dixit ad Joseph: Hoc autem factum est ut adimplerétur quod dictum est ab Isaía Prophéta: Ecce virgo in útero concípiet. Diligénter igitur significávit Spíritus sanctus generatiónem ejus quæ est ex Vírgine; & substántiam quóniam Deus: Emmánuël enim nomen hoc signíficat.

℟. Cùm orárem, & prostérnerem preces meas in conspéctu Dei mei, adhuc me loquénte in oratióne; * Ecce vir Gábriel citò volans locútus est mihi. *Dan.* 9. *v.* 20. 21. ℣. Ave grátiâ plena, Dóminus tecum, benedícta tu in muliéribus. *Luc.* 1. 28. * Ecce.

LECTIO V. *Cap.* 22.

ERrant ígitur qui dicunt eum nihil ex Vírgine accepísse, ut abjíciant carnis hereditátem; abjíciant autem & similitúdinem. Apóstolus Paulus in ea epístola, quæ est ad Gálatas, maniféstè ait: [Misit Deus Fílium suum factum de muliere.] Et rursùs in ea, quæ est ad Romános: [De Fílio autem, inquit, ejus, qui factus est ex fémine David secúndùm carnem.] Ceterùm supervácua est in Maríam descénsio ejus. Quid enim in eam descendébat, si nihil incipiébat súmere ab ea! aut si nihil sumpsísset ex María, nunquam eas, quæ à terra erant percepísset escas, per quas id, quod à terra sumptum est, nutrítur corpus. Nec quadragínta diébus,

quemádmodùm Móyses, & Elías, jejúnans esuríssset, corpus ejus suam quærens escam; nec David proclamásset in eum: Et super dolórem vúlnerum meórum apposuérunt; nec dixísset: Tristis est ánima mea; nec percússo látere exísset sanguis & aqua. Hæc enim ómnia signa carnis, quæ à terra sumpta est, quam in se recapitulátus est, suum plasma salvans.

℟. Hic erit magnus, & Fílius Altíssimi vocábitur, & dabit illi Dóminus Deus sedem David patris ejus: * Et regnábit in domo Jacob in ætérnum. *Luc.* 1. 32. ℣. Multiplicábitur ejus impérium, super sólium David sedébit; ut confírmet illud in justítia. *Isa.* 9. 7. * Et regnábit.

LECTIO VI.

QUem promísit Deus David, de fructu ventris ejus ætérnum suscitatúrum se regem, hic est qui ex vírgine, quæ fuit de génere David, generátus est. Propter hoc enim & de fructu ventris ejus Regem promísit, quòd erat próprium vírginis prægnántis, & non de fructu lumbórum ejus, nec de fructu renum ejus, quod est próprium viri generántis. Státuit autem & confirmávit fructum ventris, ut generatiónem ejus, qui erat futúrus ex vírgine pronuntiáret, quemádmodùm Elízabeth impléta Spíritu sancto testificáta est, dicens ad Maríam: Benedícta tu inter mulíeres, & benedíctus fructus ventris tui; significánte Spíritu sancto audíre voléntibus, repromissiónem, quam repromísit Deus de fructu ventris ejus suscitáre Regem, implétam esse in vírgine, hoc est, in Maríæ partu. Qui ígitur Joseph fílium eum volunt esse, illud transmútent quod apud David pósitum est, ubi promísit illi Deus de fructu ventris ejus suscitáre cornu, Christi regnum. Sed non intellexérunt.

℟. Jurávit Dóminus David veritátem, & non frustrábitur eum: * De fructu ventris tui ponam super sedem tuam. *Ps.* 131. 11. ℣. Locútus est ad Patres nostros, A'braham & sémini ejus in sécula. *Luc.* 1. 55. * De fructu. ℣. Glória Patri. * De fructu.

IN III. NOCTURNO.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Gálatas.

LECTIO VII. *Cap.* 4. 1.

*Per Christum sumus filii Dei.*

QUanto témpore heres párvulus est, nihil differt à servo, cùm sit Dóminus

ómnium, sed sub tutóribus & actóribus est usque ad præfinitum tempus à patre: ita & nos cùm essémus párvuli, sub eleméntis mundi erámus serviéntes. At ubi venit plenitúdo témporis misit Deus Fílium suum, factum ex mulíere, factum sub lege, ut, eos, qui sub lege erant, redímeret, ut adoptiónem filiórum reciperémus. Quóniam autem estis fílii, misit Deus Spíritum Fílii sui in corda vestra clamántem: Abba Pater. Itaque jam non est servus, sed fílius. Quod si fílius, & heres per Deum.

℟. Ubi venit plenitúdo témporis, misit Deus Fílium suum, factum ex mulíere, factum sub lege, * Ut eos, qui sub lege erant, redímeret. *Gal.* 4. *v.* 4. 5. ℣. Vocávit eum Salvatórem mundi. *Gen.* 41. 45. * Ut eos.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Titum.

Lectio VIII. *Cap.* 3. 3.

*Per Christum facti sumus in spe heredes vitæ æternæ.*

ERámus aliquándo & nos insipiéntes, incréduli, errántes, serviéntes desidériis, & voluptátibus váriis, in malítia & invídia agéntes, odíbiles, odiéntes ínvicem. Cùm autem benígnitas, & humánitas appáruit Salvatóris nostri Dei: non ex opéribus justítiæ, quæ fécimus nos, sed secúndùm suam misericórdiam salvos nos fecit per lavácrum regeneratiónis, & renovatiónis Spíritûs sancti, quem effúdit in nos abúndè per Jesum Christum Salvatórem nostrum: ut justificáti grátiâ ipsíus, herédes simus secúndùm spem vitæ ætérnæ.

℟. Dedit semetípsum pro nobis, * Ut nos redímeret ab omni iniquitáte, & mundáret sibi pópulum acceptábilem. *Tit.* 2. 14. ℣. Egréssus ejus ab inítio, à diébus æternitátis. *Mich.* 5. 2. * Ut nos.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

Lectio IX. *Cap.* 1. 26.

*Gabriel ad Mariam missus.*

IN illo témpore; Missus est Gábriël à Deo in civitátem Galilææ, cui nomen Názareth, ad Vírginem desponsátam viro, cui nomen erat Joseph, de domo David, & nomen Vírginis María. Et réliqua.

Homilía sancti Ambrósii Epíscopi.

*In Luc. lib.* 2.

LAtent quidem divína mystéria, nec fácilè juxta prophéticum dictum, quisquam hóminum potest scire consílium Dei; sed tamen ex

céteris factis, atque præcéptis Dómini Salvatóris póssumus intellígere, & hoc propensióris fuísse consílii, quòd ea potíssimùm elécta est, ut Dóminum páreret, quæ erat desponsáta viro. Cur autem non ántequàm desponsarétur impléta est? Fortásse, ne dicerétur, quòd concéperat ex adultério. Máluit autem Dóminus áliquos de suo ortu, quàm de Matris pudóre dubitáre. Et ingréssus ad eam A'ngelus dixit: Ave grátiâ plena, Dóminus tecum, benedícta tu inter mulíeres. Ipsa autem ut vidit eum, mota est in intróitu ejus. Disce vírginem móribus, disce vírginem verecúndiâ, disce vírginem orâculo, disce mystério. Trepidáre vírginum est, & ad omnes viri ingréssus pavére, omnes viri affátus veréri. Discant mulíeres propósitum pudóris imitári. Sola in penetrálibus, quam nemo virórum vidéret, solus A'ngelus reperíret; sola sine cómite, sola sine teste, ne quo degénere depravarétur affátu, ab A'ngelo salutátur. Soli Maríæ hæc salutátio servabátur. Benè enim sola grátiâ plena dícitur, quæ sola grátiam, quam nulla ália merúerat, consecúta est, ut grátiæ replerétur autóre.

℟. Dixit María ad A'ngelum: Ecce ancílla Dómini, * Fiat mihi secúndùm verbum tuum. *Luc.* 1. 38. ℣. Adorávit prona in terram, & ait: Ecce fámula tua sit in ancíllam. 1. *Reg.* 25. 41. * Fiat. ℣. Glória. * Fiat.

*Si venerit in Quadragesima post* IX. ℟. *legitur Homilia Feriæ occurrentis.*

*Deinde sine* ℟. *dicitur* Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* In humilitáte nostra memor fuit nostri Dóminus, ℟. Quóniam in ætérnum misericórdia ejus. *Psal.* 135. 23.

*Psalmi de Dominica.*

*Ant.* 8. g. Missus est A'ngelus Gábriël ad Vírginem Maríam desponsátam Joseph. *Luc.* 1. 27.

*Ant.* 4. e. Ingréssus A'ngelus ad eam, dixit: Ave grátiâ plena, Dóminus tecum. *Ibid.* 28.

*Ant.* 1. a. Cùm audísset, turbáta est in sermóne ejus, & cogitábat qualis esset ista salutátio. *Ibid.* 29.

*Ant.* 5. f. Dixit María.

*Loco Cantici* Benedícite, *dicitur sequens*

*Canticum. Isa.* 52. 7.

QUàm pulchri super montes, * pedes annuntiántis, & prædicántis pacem,

Annun-

Annuntiántis bonum, prædicántis salútem, * dicéntis Sion: Regnábit Deus tuus!

Vox speculatórum tuórum: * levavérunt vocem, simul laudábunt:

Quia óculo ad óculum vidébunt, * cùm convérterit Dóminus Sion.

Gaudéte, & laudáte simul, desérta Jerúsalem, * quia consolátus est Dóminus pópulum suum, redémit Jerúsalem.

Parávit Dóminus bráchium sanctum suum * in óculis ómnium Géntium:

Et vidébunt omnes fines terræ * salutáre Dei nostri.

*Ant.* Dixit María ad A'ngelum: Quómodò fiet istud, quóniam virum non cognósco? *Luc.* 1. 34.

*Ant.* 8. c. Respóndens A'ngelus, dixit ei: Spíritus sanctus supervéniet in te, & virtus Altíssimi obumbrábit tibi. *Ibid.* 35.

*Capitulum. Isa.* 62. *v.* 10. 11.

Leváte signum ad pópulos. Ecce Dóminus auditum fecit in extrémis terræ, dicite fíliæ Sion: Ecce Salvátor tuus venit: ecce merces ejus cum eo.

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

PULSUM patérnis sédibus,
Umbris tot annos óbsitum,
Cœléstis ignárum viæ,
*Pars Verna.*
Errábat humánum genus.

REX summus ecce cœlitum,
Nobis ut osténdat viam,
Secúmque ducat éxules,
Se sponte fecit éxulem.

PRÆBET sequéndum se ducem,
Vires dat ambulántibus;
Et ipse, quâ ducit, via,
Quò ducit, ipse términus.

DEUS, supréma Véritas,
Abscónsa velo córporis,
Puris vidénda méntibus,
Lustra tuo nos lúmine.

ET tu, tuórum sis memor,
O Virgo, quæ te súbditam
Dum dicis ancíllam Dei,
Regína mundi díceris.

MUNDI Redémptor qui venis,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, cumque Spíritu,
In sempitérna sécula. Amen.

℣. Misericórdiæ tuæ multæ, Dómine, ℟. Secúndùm judícium tuum vivífica me. *Ps.* 118. 156.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. d. Eréxit cornu salútis nobis in domo David púeri sui, sicut locútus est per os Sanctórum, qui à século sunt, Prophetárum ejus. *Luc.* 1. *v.* 69. 70.

*Oratio.*

DEus, qui in beátæ Maríæ Vírginis útero Verbum tuum, A'ngelo nuntiánte, carnem suscípere voluísti:

præsta supplícibus tuis, ut, qui verè eam genitrícem Dei crédimus, ejus apud te intercessiónibus adjuvémur. Per eúmdem Dóminum.

*Fit commem. Feria.*

*Ad Horas, in fine Hymnorum, Doxologia*, Mundi Redémptor qui venis, *&c. ut suprà.*

*Psalmi de Dominica.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 8. g. Missus est.

*In* ℟. *brevi* ℣. Qui natus es de Vírgine.

*CANON.*

Ex Concílio Lateranénsi.

*Ann.* 646. *Can.* 3.

SI quis secúndùm sanctos Patres non confitétur própriè, & secúndùm veritátem, Dei genitrícem sanctam sempérque Vírginem, & immaculátam Maríam, útpote ipsum Deum Verbum speciáliter & veráciter absque sémine concepisse ex Spíritu sancto, & incorruptibíliter eam genuisse, indissolúbili permanénte, & post partum ejúsdem virginitáte, condemnátus sit.

AD TERTIAM.

*Ant.* 4. e. Ingréssus A'ngelus.

*Capitulum. Gal.* 3. *v.* 8. 9.

DEus prænuntiávit A'brahæ: Quia benedicéntur in te omnes Gentes. I'gitur qui ex fide sunt, benedicéntur cum fidéli A'braham.

℟. *breve.* Memor fuit in séculum * Testaménti sui. *Repet.* Memor. ℣. Verbi quod mandávit in mille generatiónes. * Testaménti. ℣. Glória. *Repet.* Memor.

℣. Quod dispósuit ad A'braham, ℟. Et juraménti sui ad I'saac. *Ps.* 104. *v.* 8. 9.

AD SEXTAM.

*Ant.* 1. a. Cùm audisset.

*Capitulum. Isa.* 52. *v.* 9. 10.

COnsolátus est Dóminus pópulum suum, redémit Jerúsalem. Parávit Dóminus bráchium sanctum suum in óculis ómnium Géntium.

℟. *breve.* Dómini * Est assúmptio nostra. *Repet.* Dómini, ℣. Et sancti I'sraël regis nostri. * Est. *Ps.* 88. 19. ℣. Glória. *Repet.* Dómini.

℣. Jacob elégit sibi Dóminus, ℟. I'sraël in possessiónem sibi. *Ps.* 134. 4.

AD NONAM.

*Ant.* 8. c. Respóndens A'ngelus.

*Capitulum.* 1. *Joan.* 4 *v.* 14. 15.

TEstificámur quóniam Pater misit Fílium suum Salvatórem mundi. Quisquis conféssus fúerit quóniam Jesus est Fílius Dei, Deus in eo manet, & ipse in Deo.

℟. *breve.* Jurávit Dóminus * David veritátem. *Repet.*

Jurávit. ℣. Et non frustrábitur eum. * David. ℣. Glória. *Repet.* Jurávit.

℣. Propter David servum tuum, ℟. Non avértas fáciem Christi tui. *Psal.* 131. *v.* 11. 10.

AD VESPERAS.

*Psalmi de Officio Parvo B. Mariæ Virginis, pag.* xcj.

*Ant.* Missus, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum.* 1. *Tim.* 3. 16.

MAgnum est pietátis Sacraméntum, quod manifestátum est in carne, justificátum est in spíritu, appáruit A'ngelis, prædicátum est Géntibus, créditum est in mundo.

℟. Dixit María, IX. *de Officio nocturno.*

*Hymnus*, Hæc illa solémnis dies, *ut in primis Vesperis.*

℣. Sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus, ℟. Deus in médio ejus. *Ps.* 45. 5.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. e. Respéxit Dóminus humilitátem ancíllæ suæ, ecce enim ex hoc beátam me dicent omnes generatiónes, quia fecit mihi magna qui potens est. *Luc.* 1. *v.* 48. 49.

*Fit commemoratio Feriæ.*

AD COMPLETORIUM.

*Antiphona & Psalmi de Dominica, cetera ut in Officio beatæ Mariæ in Sabbato pag.* lxv.

---

*Si hoc Festum celebretur Tempore Paschali, Officium fit ut suprà, exceptis quæ notantur infrà.*

*In fine Invitatorii, Antiphonarum,* ℟℟. *&* ℣℣. *additur* Allelúia.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Dicuntur tres Psalmi cum tribus Antiphonis sequentibus.*

1. *Ant.* 3. a. In te benedicéntur univérsæ cognatiónes terræ, allelúia. *Gen.* 12. 3.

*Ps.* Dómine Dóminus noster, *pag.* 68.

2. *Ant.* 1. a. Partúriens páriet, & relíquiæ fratrum ejus converténtur ad fílios I'sraël, allelúia. *Mich.* 5. 3.

*Psal.* Eructávit, *pag.* 164.

3. *Ant.* 6. f. Verbum caro factum est, & habitávit in nobis, allelúia. *Joan.* 1. 14.

*Ps.* Fundaménta, *pag.* 167.

℣. Confirmáta est super nos misericórdia ejus, allelúia, ℟. Et véritas Dómini manet in ætérnum, allelúia. *Ps.* 116. 2.

*Benedictiones ut notantur pro Tempore Paschali.*

*Lectio I. ex Isaia*, Adjécit, *pag.* 555.

℟. I. Creávit Dóminus, *pag.* 556.

*Lectio II. ex S. Irenæo*, Deus homo factus est, *p.* 557.

℟. II. Hic erit magnus, *pag.* 558.

*Lectio III. Evangelium* Missus est, *cum Lectione Homiliæ, p.* 559.

℟. III. Dixit María, *p.* 560.

AD HORAS.

*In ℟℟. brevibus additur duplex* Allelúia.

DIE XXVI.

*Ad Laudes, pro commemoratione sancti Hermelandi Abbatis.*

*Ant.* 6. f. Fide demorátus est in terra repromissiónis tanquàm in aliéna. *Hebr.* 11. 9.

℣. Abscóndit me Dóminus in tabernáculo suo, ℟. In die malórum protéxit me. *Ps.* 26. 5.

*Oratio.*

INtercéssio nos, quǽsumus, Dómine, beáti Hermelándi Abbátis comméndet, ut quod nostris méritis non valémus, ejus patrocínio assequámur. Per Dóminum.

DIE XXVII.

*Pro commem. SS. Eutychii Subdiaconi & sociorum pro divinitate Verbi Alexandriæ occisorum.*

*Pridiè in Vesperis.*

*Ant.* 6. f. In mundo pressúram habébitis, sed confídite, ego vici mundum. *Joan.* 16. 33.

℣. Custódit Dóminus ánimas Sanctórum suórum, ℟. De manu peccatóris liberábit eos. *Psal.* 96. 10.

*Oratio,* Concéde, quǽsumus, *ut infrà ad Laudes.*

*In Laudibus, Ant.* 2. D. Hi sunt qui venérunt de tribulatióne magna, & lavérunt stolas suas, & dealbavérunt eas in sánguine Agni. *Apoc.* 7. 14.

℣. In te, Dómine, speravérunt, ℟. Et liberásti eos. *Ps.* 21. 5.

*Oratio.*

COncéde, quǽsumus, miséricors Deus, intercedéntibus sanctis Martýribus Eutýchio Subdiácono & áliis, qui fuso sánguine divinitáti Verbi testimónium perhibuérunt, ut, quem sincéra fide Deum tibi consubstantiálem prædicámus, íntegris móribus profiteámur eúmdem Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum.

FESTA APRILIS.

DIE II.

In Festo SANCTI FRANCISCI DE PAULA.

*Semiduplex.*

*De Communi unius Monachi, pag.* xxxiv.

*Si venerit in Quadragesima, de eo fit tantùm commemoratio ad utrasque Vesperas & Laudes, & Lectio de Sancto dicitur post III. Respons.*

*Si inciderit post Dominicam in Albis, vide Rubricam in Communi Sanctorum, p. j.*

*Fit commem. de Cruce ad Laudes & Vesperas.*

*Oratio*, Deus, humílium celsitúdo, *infrà ad Laudes.*

*Lectio j. de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio II. erit tertia Feriæ occurrentis.*

LECTIO III.

*Ex Actis sancti Francisci de Paula apud Bollandum & Papebr.*

FRanciscus, Paulæ in Calábria natus, à téneris annis solitúdinem diligere, ac jejúniis & oratiónibus vacáre cœpit. Ecclésiam propè Paulam ædificávit; ac prima ibi O'rdinis sui fundaménta fecit. Cúmque præ humilitáte, ómnium mínimus habéri vellet, alúmnos quoque suos Mínimos vóluit appellári. A Ludovico undécimo Francórum rege propter miraculórum famam expetitus, jubénte Sixto quarto, ad eum se cóntulit. Quem Rex magnò cum honóre excépit in palátio Plexítio prope Turónes; eóque in loco monastérium illi constrúxit. Ibi Franciscus mortis suæ præscius, ánimam Christo réddidit, anno ætátis circiter nonagésimo, salútis millésimo quingentésimo séptimo. Cujus corpus dies úndecim insepúltum, ita incorrúptum permánsit, ut suávem étiam odórem effláret. Eum Leo décimus in Sanctórum númerum adscripsit.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitul. Judic. 6. v. 15. 16.*

OBsecro, mi Dómine, in quo liberábo Israël? Ego mínimus in domo patris mei: dixítque ei Dóminus: Ego ero tecum.

*Oratio.*

DEus, humílium celsitúdo, qui beátum Franciscum Sanctórum tuórum glóriâ sublimásti; tribue, quæsumus, ut ejus méritis & imitatióne, promíssa humílibus præmia felíciter consequámur; Per Dóminum.

DIE VIII.

In Festo

SANCTI GALTERII Abbatis.

*Semiduplex.*

*Oratio*, Deus, cujus múnere, *p.* xxxv.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio ij. erit tertia Feriæ occurrentis.*

LECTIO III.

*Ex ejus vita autore coævo apud Bollandum.*

GAltérius à púero litteris eruditus, mundi transf-

fuga vitam ampléxus est Monásticam in Diœcési Meldénsi. Regéndo prope Pontísaram in Diœcési Rotomagénsi nuper erécto Monastério sancti Martini Abbas præfícitur. Sancti Benedícti cum suis régulam secútus, verbo & exémplo subditórum factus forma, áliis tamen se præfici ægrè ferens, clam recéssit in Abbátiam Cluniacénsem cui præerat sanctus Hugo: ubi aliquándiu ignótus, & à suis detéctus, & postulátus, Pontísaram rédiit compúlsus autoritáte Archiepíscopi Rotomagénsis, qui ad Abbátem Cluniacénsem rescrípserat. Philíppum primum de simónia, quæ pullulábat, sæpiùs admónuit. Fabis & aquâ conténtus, panem qui ei suppetébat ad victum, paupéribus distribuébat. Omnibus charus, vilis sibi vixit, & óbiit die Aprílis octávâ anno millésimo nonagésimo nono quo Pascha in ejúsdem mensis diem décimam incidébat. In Capélla sancti Martini sepúltus, váriis post óbitum cláruit miráculis.

## Die IX.

### In Festo SANCTI HUGONIS Pontificis Rotomagensis.

*Simplex.*

*Oratio*, Omnípotens Deus, pag. xix.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio ij. erit tertia Feriæ occurrentis.*

### Lectio III.

*Ex chron. Monast. S. Wandr. tom. 3. Spicil.*

Hugo, patre Drogóne Burgúndiæ duce, Pippíni Crassi fílio, matre Adaltrúde, Waratónis fíliâ natus, utróque avo, & pátruis Grimoáldo ac Carólo Martéllo Majóribus domûs régiæ charus, natálium splendórem meritórum glóriâ illustrávit. Cùm enim apud Ansflédem matérnam áviam piè educátus fuísset, ejus salutáribus mónitis ita profécit, ut sacris lítteris imbútus, ætátem sapiéntiâ & religióne prævérterit, abjectísque séculi illécebris, terrénas opes in cœléstia patrimónia transférre céperit. Ad Rotomagénsis Metrópolis Sedem evéctus, variárum Ecclesiárum sibi canónicè commendatárum, Parisiénsis nempè, & Bajocénsis Episcopátuum, ac illústrium prætéreà cœnobiórum Fontinéllæ & Gemmétici curam gessit, suæque liberalitátis memóriam eárum Ecclesiárum tábulis consignávit. Erga Fontinellénse Monastérium benéficum inprimis se præbuit, cui villas & vasa sacra dilargítus est, assignátis étiam súmptibus, quibus servi Dei

illius loci per unumquémque mensem cómmodè aleréntur. Gemmeticénse Cœnóbium præ cunctis Abbátibus, prædiis auxit. Demum, exácto in Pontificátu Rotomagénsi septénnio, ad piórum operum mercédem evolávit in cœlum, quinto Idus Aprilis. Ejus corpus in basílica sanctæ Dei Genitrícis honorificè cónditum, deinde Hasprām agri Cameracénsis óppidum, unâ cum sancti Aicárdi Abbátis córpore delátum est. Utriúsque Relíquiæ Gemméticum relátæ in capsis pretiósis servántur, & magno honóre recolúntur.

℟. Circuncinxit eum Dóminus zonâ glóriæ, & * Coronávit eum in vasis virtútis. *Eccli.* 45. 9. ℣. Supra ómnia, quæ póssidet, constítuit illum. *Luc.* 12. 44. * Coronávit. ℣. Glória. * Coronávit.

DIE X.

In Festo SANCTI GAUCHERII Presbyteri Rotomagensis.

*Duplex minus.*

*Si occurrerit in Quadragesima, vel in Octava Paschæ, transfertur.*

*Omnia de Communi unius Presbyteri, præter hæc quæ sequuntur, servato ritu Paschali juxta Rubricam in Communi Sanctorum, pag.* j.

*In primis Vesperis commemoratio omnium SS. Presbyterorum & Levitarum Diœcesis Rotomagensis.*

*Ant.* 1. a. Erunt Sacerdótes Dei & Christi, & regnábunt cum illo, allelúia. *Apoc.* 20. 6.

℣. Dómini est assúmptio nostra, allelúia, ℟. Et sancti Israël regis nostri, allelúia, *Ps.* 88. 19.

*Oratio*, Concéde, *ut infrà.*

[*Quando transfertur Festum, transfertur & comm.*]

*Fit commem. de Cruce.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitatorium.* Sacerdótem in ætérnum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Heb.* 5. 6.

*Dicuntur tres Psalmi Feriales cum tribus Antiphonis Nocturni de Communi, secundum Feriam, quibus additur* Allelúia, *sicut & ℣. & ℟℟.*

*Absolutiones & Benedictiones ut in Tempore Paschali.*

*Lectio j. de Script. occurr. ex duabus una, omittitur tertia Lectio Feria occurr.*

LECTIO II.

*Ex ejus vita à coævo, tom. 2. Bibl. mss. Labbe.*

GAuchérius natus Mulánti in Vulcassíno Fráncico Diœcésis Rotomagénsis, circa annum millésimum quinquagésimum: in humanióribus lítteris & christiánis institútis à Raynério erudítus, relíctis paréntibus, cum Ger-

mándo quem sibi sócium elégerat, Lemovicénsem pétiit provínciam, ut uni Deo & oratióni vacáret. Duce Humbérto canónico Lemovicénsi secéssit in silvam, ubi Ecclésiam ædificávit, quò plures convenérunt, ut sancti Presbyteri sermónibus & exémplis stimuláti, salúti consúlerent. Constrúxit domum, in qua accedéntes colligeréntur; quibus præfuit, hac tamen conditióne, ut Capítulo sancti Stéphani Lemovicénsis subderétur. Adjútor fuit sancti Stéphani in instituéndo Ordine Grandimonténsi, & plures qui sanctitáte conspícui evasérunt, in via edócuit salútis. Obiit ætátis anno octogésimo, & clarus miráculis, à Cœlestíno tértio summo Pontífice catálogo Sanctórum adscríptus est.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap. 10. 1.*

*Veri Pastoris descriptio.*

IN illo témpore; Dixit Jesus Pharisǽis: Amen, Amen dico vobis; qui non intrat per óstium in ovíle óvium, sed ascéndit aliúnde; ille fur est & latro. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.

*Epistolarum lib. 9. Epist. 40.*

ILle ad ovíle óvium intrat per óstium, qui intrat per Christum. Ipse autem per Christum ingrediétur, qui culmen regíminis ad officium portándi óneris súscipit, non ad appetítum glóriæ transitórii honóris. Curæ quoque suscépti ovílis solérter invígilat, ne oves Dei, aut pervérsi hómines prava loquéntes dilánient, aut maligni spíritus oblectaménta vitiórum persuadéntes devástent. Sed in his ómnibus ipse nos ínstruat, qui propter nos homo factus est.

*Post tertium ℟. dicitur Lect. IV. de sanctis Presbyteris & Levitis.*

Sermo sancti Policárpi Smirnénsis Epíscopi & Mártyris.

*Epistol. ad Philippens. c. 6. secul. 1. & 2.*

LECTIO IV.

OPórtet súbjici Presbyteris, & Diáconis tanquàm Deo & Christo. Presbyteri sint ad commiseratiónem proni, misericórdes erga cunctos; aberrántes reducéntes, visitántes infírmos omnes; non negligéntes víduam aut pupíllum, aut páuperem: sed semper providéntes bonum coram Deo & homínibus; abstinéntes ab omni ira, acceptióne personárum, judício injústo; longè recedéntes ab omni avarítia; non citò credéntes advérsùs áliquem; non sevéri nímiùm in judício: qui sciant nos om-

nes debitóres esse peccáti.

*Deinde sine* ℟. *dicitur* Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Psalmi de Feria, quinque Antiph. de Communi.*

*Pro commem. omnium sanctorum Presbyterorum & Levitarum Diœcesis Rotomag.*

*Ant.* 7. g. Sacerdótes tui, Dómine Deus, induántur salútem, & sancti tui læténtur in bonis, allelúia. 2. *Paral.* 6. 4.

℣. Sacerdótes tui induántur justítiam, allelúia. ℟. Et Sancti tui exsúltent, allelúia. *Ps.* 131. 9.

*Oratio.*

CONcéde, Dómine, ut, recoléntes memóriam sanctórum Presbyterórum & Levitárum novæ legis, qui treménda tua mystéria puro corde tractavérunt, sacrifícium justítiæ tibi contínuò sacrificántes, nunquàm excidámus à grátia ministérii, quam te donánte accépimus; Per Dóminum.

*Fit commem. de Cruce.*

*In ij. Vesp. fit commem. de S. Leone, & posteà de Cruce.*

DIE XI.

In Festo

SANCTI LEONIS

Papæ & Ecclesiæ Doctoris.

*Semiduplex.*

*Si venerit in Quadragesima, de eo fit commemoratio ad utrasque Vesperas & ad Laudes. Post tertium Respons. IV. Lectio de sancto Leone.*

*Si celebretur post Pascha, omnia de Communi unius Doctoris, servato ritu Paschali.*

*Oratio*, Excita, Dómine, *pag.* xxv.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Fontem sapiéntiæ Dóminum * Venite, adorémus, allelúia. *Eccli.* 1. 5.

*Ps.* Venite, *pag.* 2.

*Lectio prima de Scriptura occurrente ex duabus una. Lectio ij. est tertia Feriæ occurrentis.*

LECTIO III.

*Ex Epist. & Act. Conc. Eph. & Chalcedon.*

LEo Románus cùm esset Acólytus, senténtiam Zózimi Papæ, & epístolam Sixti presbyteri advérsùs Pelagiános ad Aurélium Carthaginénsem Epíscopum détulit. Factus Diáconus, Sixto Pontífici autor fuit ne recíperet Juliánum Pelagiánum, in communiónem Ecclésiæ subdolè irrepéntem, ut sedem amíssam recuperáret. Missus in Gálliam, ut dissidéntes inter se Aétium & Albínum Romános duces conciliáret, públicâ legatióne revocátur, ut Sixto succéderet. Quatiebátur interim totus penè Orbis Christiánus

váriis hæreticórum tempestátibus. Oriéntem Nestoriáni; Occidéntem Pelagianórum relíquiæ infestábant. Manichæos qui ex A'frica à Wándalis devastáta Romam conflúxerant, cùm cathólicæ communiónis spécie perfídiam suam tégerent, detéxit. Pelagianórum relíquias extínxit; & ad Ecclésiam redeúntes, errórem suum obsignátis tábulis damnáre jussit. Priscillianistárum renascéntem hǽresim, congregátâ ejus óperâ in Hispánia Sýnodo, proscrípsit. Coáctâ Romæ Occidentálium Sýnodo, quæ contra fidem in latrocínio Ephesíno acta fúerant, rescídit. Concílio quarto œcuménico apud Chalcédonem celebráto per legátos suos præfuit. Ibi perlécta est illíus ad Flaviánum epístola, quam ad se missam Galliárum Epíscopi summis láudibus excéperant; & ab univérsis acclamátum: Petrus per Leónem ita locútus est. Cujus Concílii definitiónem advérsùs Eútichen & Dióscorum ad eósdem Gálliæ Epíscopos transmísit. Missus à Valentiniáno Imperatóre ad A'ttilam, qui Aquiléïam expugnáverat, pacem inter eos compósuit. Romam revérsus Genseríco urbem invadénti persuásit, ut ab incéndio & cædibus abstinéret. Multa ad depósitum fídei pertinéntia, & ad régimen Ecclésiæ sanctè & utíliter decrévit. Plúrimis tandem functus labóribus, multísque luculénter scriptis, cùm Ecclésiam ab hæreticórum labe vindicásset, & Itáliam à barbarórum vastatióne; explétis in Pontificátu vigínti & ampliùs annis, âbiit ad Dóminum anno quadringentésimo sexagésimo primo: propter pietátem, eruditiónem, & tot res præclárè gestas, méritò Magni nómine commendátus.

## Die XIII.

### In Festo SANCTI JUSTINI Martyris.

*Simplex.*

*Oratio*, Deus, quo donánte, *pag.* viij.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio ij. est iij. de Feria occurrente.*

Ex libro sancti Hierónymi Presbýteri, de Scriptóribus Ecclesiásticis.

Lectio III.

JUstínus Philósophus, hábitu quoque Philosophórum incédens, de Neápoli urbe Palestínæ patre Prisco Bácchio, pro religióne Christi plúrimùm laborávit. In tantum, ut Antoníno Pio & fíliis ejus & Senátui librum

contra Gentes scriptum daret ignominiámque crucis non erubésceret, & álium librum successóribus ejúsdem Antoníni, Antoníno Vero, & Aurélio Cómmodo. Extat ejus & áliud volúmen contra Gentes: hic cùm in urbe Roma Crescéntem Cynicum, qui multa advérsùs Christiános blasphemábat, redargúeret gulósum & mortis tímidum, luxuriæque & libídinum sectatórem; ad extrémum stúdio ejus & insídiis accusátus, quòd Christiánus esset, pro Christo sánguinem fudit.

℟. Mendáces osténdit Dóminus, qui maculavérunt illum, * Et dedit illi claritátem ætérnam, allelúia. *Sap.* 10. 14. ℣. Oppréssum à nefandórum injúria erípuit illum Deus. 2. *Petr.* 2. 7. * Et dedit. ℣. Glória. * Et dedit.

## Die XVIII.

### In Festo SANCTI APOLLONII Senatoris Romani, Martyris, *Simplex.*

*Oratio*, Deus, quo donánte, *p.* viij.

*Lectio j. de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio ij. est iij. Feriæ occurrentis.*

Ex libro sancti Hierónymi Presbýteri, de Scriptóribus Ecclesiásticis.

### Lectio III.

Apollónius Románæ urbis Senátor sub Cómmodo príncipe à servo Sevéro próditus quòd Christiánus esset; impetráto ut ratiónem fídei suæ rédderet, insígne volúmen compósuit, quòd in Senátu legit. Nihilóminus senténtiâ Senátûs pro Christo cápite truncátus est; véteri apud eos obtinénte lege, absque negatióne non dimítti Christiános, qui semel ad eórum judícium pertrácti essent.

℣. Magis éligens afflígi, quàm temporális peccáti habére jucunditátem, * Invisíbilem tanquàm videns sustínuit, allelúia. *Hebr.* 11. *v.* 25. 27. ℣. Torménta suscépit, & in último spíritu constitútus. 2. *Mach.* 7. *v.* 8. 9. * Invisíbilem. ℣. Glória. * Invisíbilem.

## Die XX.

### In Festo SS. MARTYRUM Pro solemnitate Paschali occisorum. *Simplex.*

*Omnia de Communi plurium Martyrum, servato ritu Paschali.*

*Lectio j. de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio ij. est tertia Feriæ occurrentis.*

Ex libro primo Sancti Victóris Epíscopi Uticénsis de persecutióne Wandalórum in África.

LECTIO III.

Quodam témpore Paschális solémnitas agebátur, & cùm in quodam loco qui Régia vocitátur, ob diem Paschális honóris nostri sibimet clausam Ecclésiam reserárent, comperérunt Ariáni. Statim quidam Présbyter eórum congregátâ secum armatórum manu, ad expugnándam turbam accénditur innocéntum. Intróeunt evaginátis spatis, arma corrípiunt, álii quoque tecta conscéndunt, & per fenéstras Ecclésiæ sagíttas spargunt; & tunc fortè canénte pópulo Dei, Lector unus púlpito sistens, Allelúia cum melos canébat. Quo témpore sagíttâ in gútture jaculátus, cadénte de mánibus códice, mórtuus pòst cécidit ipse. Nam & álii quamplúrimi sagíttis & jáculis in médio crepídinis altáris probántur occísi. Qui gládiis tunc interémpti non sunt, pósteà pœnis attríti, régio jussu omnes penè necáti sunt præsértim maturióris ætátis.

℟. Decantavérunt, Dómine, nomen sanctum tuum, * Et victrícem manum tuam laudavérunt páriter, allelúia. *Sap.* 10. 20. ℣. In multo experiménto tribulatiónis, abundántia gáudii ipsórum fuit. 2. *Cor.* 8. 2. * Et victrícem. ℣. Glória. * Et victrícem.

*Oratio.*

Da, quǽsumus, omnípotens, Deus, ut intercessióne sanctórum Mártyrum quos in solemnitáte Paschali sibi consecrásti, similitúdinis mortis Christi & resurrectiónis partícipes simus. Per eúmdem Dóminum.

DIE XXI.

In Festo

S. ANSELMI, ABBATIS

Beccensis, deinde Cantuariensis Archiepíscopi.

*Simplex.*

*Omnia de Communi unius Pontificis servato ritu Paschali.*

*Oratio*, Exaudi, *p.* xix.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio ij. est tertia Feriæ occurrentis.*

LECTIO III.

*Ex ejus vita ab Eadmero illius familiari apud hist. Ecclesf. Anglic.*

Anselmus Augustâ urbe ad Alpinas radíces pósitâ, paréntibus non obscuris ortus est. Jam à pueritia virtúti déditus, toto ad vitam Monásticam stúdio ferebátur. Ætáte maturióri Lanfrán-

cum Priórem Beccénsem áudiit. Ibidem Mónachum proféssus, Prióris primò, deinde Abbátis, postrémò Archiepíscopi Cantuariénsis dignitátem & onus subíre coáctus est. Quo in gradu multò magis enituérunt illíus doctrína, prudéntia, piétas, sed præcipuè invícta in tuéndis Ecclésiæ júribus constántia. Quaprópter incúrrit in offensiónem tum Guillélmi Rufi, Anglórum regis, tum Henríci Guillélmi fratris, & regni successóris, à quibus & exsílium & bonórum addictiónem perpéssus est. Romam proféctus, in Concílio Barénsi summo fuit Ecclésiæ contra Græcos adjuménto. Pacátis utcúnque discórdiis, Londíni Concílium hábuit, in quo Henrícus ipse iis, quæ sibi injústè indicábat, ultrò renuntiávit; & multa cùm ad disciplínam instaurándam, tum ad tolléndos abúsus sancíta sunt. Sedátâ tandem pénitùs omni tempestáte, Cantuárii diutíno languóre conféctus, migrávit in cœlum, anno ætátis sexagésimo tértio. Sciéntiam ejus exímiam libri, quos plúrimos édidit, comméndant.

℟. In bonitáte & alacritáte ánimæ suæ * Plácuit Deo pro Israël. Ideò státuit illi testaméntum pacis, ut sit illi Sacerdótii dignitas, † In ætérnum, allelúia. *Eccli.* 45. *v.* 29. 30. ℣. Exémplum fidélium in verbo, in conversatióne, in charitáte, in fide. 1. *Timot.* 4. 12. * Plácuit Deo. ℣. Glória. † In ætérnum.

## Die XXIII.

## S. GEORGII MARTYRIS

*Commemoratio pridiè ad Vesperas.*

*Ant.* 5. f. Pro certo habet omnis qui te colit, Dómine, quòd vita ejus, si in probatióne fúerit, coronábitur, allelúia. *Tob.* 3. 21.

℣. In Deo sperávi, allelúia, ℟. Non timébo quid fáciat mihi homo, allelúia. *Ps.* 55. 11.

*Oratio*, Deus, qui beátum, *&c. ut infrà.*

*Ad Laudes, Ant.* 7. g. Vitâ decéssit univérsæ genti memóriam mortis suæ ad exémplum virtútis & fortitúdinis derelínquens, allelúia. 2. *Mach.* 6. 31.

℣. Justus ut palma florébit, allelúia, ℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur, allelúia. *Ps.* 91. 13.

*Oratio.*

Deus, qui beátum Geórgium corónas glóriâ Martýrii, da nos eódem intercedénte, Christi mórtui & resurgéntis ita mystéria venerári, ut vitæ novitáte éadem assequámur. Per Dóminum.

DIE XXV.
In Festo
SANCTI MARCI
Evangelistæ.
*Duplex majus.*

*Ad j. Vesp. Antiph. quinque de j. Vesp. Comm. Apost. servato ritu Paschali juxta.*

*Capitulum.* *Baruch 2. v. 27. 28.*

FEcísti in nobis, Dómine Deus noster, secúndùm omnem bonitátem tuam, & secúndùm omnem miseratiónem tuam illam magnam: sicut locútus es in manu púeri tui in die, quâ præcepísti ei scríbere legem tuam coram filiis Israël.

℟. Hic liber mandatórum Dei, & lex, quæ est in ætérnum. * Beáti sumus: quia, quæ Deo placent, manifésta sunt nobis, allelúia. *Baruch.* 4. *v.* 1. 4. ℣. Quod vídimus & audívimus de Verbo vitæ, annuntiámus vobis. 1. *Joan.* 1. 3. * Beáti. ℣. Glória. * Beáti.

*Hymnus.* *Sanctol. Vict.*

CHristi perénnes Núntii,
Detécta qui cœléstibus
Scriptis Dei mystéria
Totum per Orbem spárgitis.

Olim sub umbris cóndita,
Vates sacri quæ víderant;
Umbris procul cedéntibus
Vidístis hæc pleno die.

Humána quæ tulit Deus,
Divína quæ gessit homo,
Seris legénda pósteris,
Dictánte scripsístis Deo.

Loco remótos, témpore,
Vos rexit idem Spíritus:
Et quisque pro ductu Dei,
Pingéndo Christum réddidit.

Vos ut docéret, índuit
Vocis sonos, Verbum Patris;
Vestris adhuc in páginis
Nobis loqui non désinit.

Ætérne tu Verbi Pater,
Ætérne Fili, par Patri,
Et par utríque Spíritus,
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

℣. Dóminus dabit verbum evangelizántibus, allelúia. ℟. Virtúte multâ, allelúia. *Ps.* 67. 12.

*Oratio*, Deus, qui beátum Marcum, *ut infrà ad Laud.*

Ad Officium Nocturnum.

*Invit.* Christum sanctis manifestátum in Evangélio: * Venite, adorémus, allelúia. *Col.* 1. 26.

*Psal.* Venite, *pag.* 2.

*Hymnus.* *Sanct. Vict.*

SINÆ sub alto vértice,
Cœlo tonánte, lex data;
Inter tubas, & fúlgura
Præsens minabátur Deus.

Nunc, temperáto númine,
Per vela carnis blándiùs
Amat vidéri, lánguidis
Se lumen aptans sénsibus.

Inscúlpta saxo lex vetus
Præcépta, non vires dabat:
Inscrípta cordi lex nova,
Quidquid jubet, dat éxequi.

Scripsístis hanc fidâ manu,
Hanc voce, voci cónsonis
Hanc prædicástis móribus,
Signástis hanc & sánguine.

Afflánte divo Spíritu,
Quæ verba vitæ tráditis;
Hæc ille nostris ímprimat
Delénda nunquam córdibus.

Ætérne tu Verbi Pater,
Ætérne Fili, par Patri,
Et par utríque Spíritus,
Tibi, Deus, sit glória. Amen.

*Dicuntur cum Antiph. sequentibus tres Psalmi notati in Proprio Temporis.*

*Ant.* 4. d. Memor esto Dóminum Jesum Christum resurrexísse à mórtuis ex sémine David secúndùm Evangélium meum, allelúia. 2. *Timoth.* 2. 3.

*Ant.* 2. d. Scriba velox in lege parávit cor suum, ut investigáret legem Dómini, allelúia. 1. *Esd.* 7. *v.* 6. 10.

*Ant.* 3. c. Christus destrúxit mortem, illuminávit autem vitam per Evangélium, allelúia. 2. *Tim.* 1. 10.

℣. Confitémini Dómino, allelúia, ℟. Annuntiáte inter Gentes ópera ejus, allelúia. *Ps.* 104. 1.

*Lectio j. de Scriptura occurrente, ex duabus una. Omittitur III. Feria occurr.*

*Post. I. Lectionem.*

℟. Christus dedit quosdam quidem Apóstolos, álios verò Evangelístas ad consummatiónem sanctórum, * In opus ministérii, in ædificatiónem córporis Christi, allelúia. *Eph.* 4. *v.* 11. 12. ℣. Custodíte præcépta mea, & fácite ea, ego Dóminus qui sanctífico vos. *Levit.* 20. 8. * In opus.

Ex libro sancti Hierónymi Presbyteri, de Scriptóribus Ecclesiásticis.

LECTIO II. *Cap.* 18.

Marcus, discípulus & intérpres Petri, juxta quod Petrum referéntem audíerat, rogátus Romæ à frátribus breve scripsit Evangélium. Quod cùm Petrus audivísset, & probávit, & Ecclésiæ legéndum suâ autoritáte dedit. Méminit hujus Marci & Petrus in Epístola prima, sub nómine Babylónis figuráliter Romam significans: Salútat vos Ecclésia, quæ est in Babilóne colléctа, & Marcus filius meus. Assúmpto itaque Evangélio, quod ipse confécerat, perréxit in Ægyptum: & primus Alexándriæ Christum annúntians, constítuit Ecclésiam, tantæ doctrínæ & vitæ continéntiæ, ut omnes sectatóres Christi ad exémplum sui cógeret. Dénique Philo disertíssimus Judæórum, videns Alexándriæ primam Ecclésiam adhuc Judaïzántem, quasi in laudem gentis suæ li-

brum super eórum conversatióne scripsit. Et quómodò Lucas narrat Jerosólymæ credéntes ómnia habuísse commúnia: sic & ille, quod Alexándriæ sub Marco fieri doctóre cernébat, memóriæ trádidit. Mórtuus est autem octávo Nerónis anno, & sepúltus Alexándriæ, succedénte sibi Aniáno.

℟. Spíritus Dómini locútus est per me, * Et sermo ejus per linguam meam, allelúia. 2. *Reg.* 23. 2. ℣. Multis parábolis loquebátur Jesus verbum. *Marc.* 4. 33. * Et sermo.

Lectio sancti Evangélii secúndùm Marcum.

LECTIO III. *Cap.* 13. 9.

*Prædicitur passuros Christi discipulos.*

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Tradent vos in concíliis, & in synagógis vapulábitis, & ante prǽsides & reges stábitis propter me in testimónium illis. Et réliqua.

Homilía sancti Justíni Mártyris.

*Apologia 2. ad Antoninum Imp. Senatumque Romanum, anno* 150.

Qui à Géntibus orti sunt, cùm nihil umquam de Christo accepíssent ad illud tempus cùm Apóstoli Hierosólymis egréssi ea quæ illius erant nuntiavérunt, prophetiásque tradidérunt; tum gáudio fidéque compléti, idólis, id est simulácris núntium remisérunt; Deóque qui orígine caret, Christi benignitáte se consecrárunt. Atque ut intelligátis ante cógnitum & provísum esse, fore ut hæc maledícta in eos, qui Christum profiteréntur, jaceréntur: futurósque míseros eos, qui eum convítiis maledictísque afficerent veteráque institúta servánda esse cum laude dícerent: audíte quæ paucis verbis ab Isaía perstrícta sunt: Væ iis qui dúlcia amára esse dicunt, & quæ amára sunt dúlcia. Qui nostri causâ homo, factus cum ab ínferis excitátus esset eísque se ostendísset docuisséntque eos prophetías quibus hæc ómnia fore prædícta essent, légere; eúmque illi in cœlum reverténtem vidíssent atque credidíssent, vimque illinc ipsis missam, ab eo accepíssent & ad omne hóminum genus profécti essent, hæc docuérunt; appellatíque sunt Apóstoli.

℟. Doctrínam sapiéntiæ & disciplínæ scripsit: * Beátus, qui in istis versátur bonis: qui ponit illa in corde suo, sápiens erit semper, † Allelúia, allelúia. *Eccli.* 50. *v.* 29. 30. ℣. Quæcúnque scripta sunt,

sunt, ad nostram doctrínam scripta sunt. *Rom.* 15. 4. * Beátus. ℣. Glória. † Allelúia.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Bonum est psállere nómini tuo, Altíssime, allelúia, ℟. Ad annuntiándum manè misericórdiam tuam, allelúia. *Ps.* 91. *v.* 2. 3.

*Ant.* 8. g. Christum annuntiámus, docéntes in omni sapiéntia, ut exhibeámus omnem hóminem perféctum in Christo Jesu, allelúia. *Coloss.* 1. 28.

*Ant.* 1. D. Non spíritum hujus mundi accépimus, sed spíritum qui ex Deo est, & loquimur in doctrína Spíritus, allelúia. 1. *Cor.* 2. *v.* 12. 13.

*Ant.* 6. f. Implétum est tempus, & appropinquávit regnum Dei; pœnitémini, & crédite Evangélio, allelúia. *Marc.* 1. 15.

*Ant.* 7. C. Dignè Evangélio Christi conversámini, in uno spíritu unánimes, collaborántes fidei Evangélii, quia vobis donátum est, ut in Christum credátis, allelúia. *Philip.* 1. *v.* 27. 29.

*Antiph.* 5. a. Deo grátias, qui odórem notítiæ suæ manifestat per nos in omni loco, allelúia. 2. *Cor.* 2. 14.

*Capitulum.* *Ephes.* 3. 7.

EVangélii factus sum miníster, secúndùm donum grátiæ Dei, quæ data est mihi secúndùm operatiónem virtútis ejus.

*Hymnus*, CHRISTI perénnes, *ut suprà ad* j. *Vesp.*

℣. Declarátio sermónum tuórum illúminat, allelúia, ℟. Et intelléctum dat párvulis, allelúia. *Ps.* 118. 130.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. a. Præcepísti ei, Dómine, scríbere legem tuam coram fíliis Israël, allelúia. *Baruch* 2. 28.

*Oratio.*

DEus, qui beátum Marcum Evangelístam tuum, Evangélicæ prædicatiónis grátiâ sublimásti: tríbue, quæsumus, ejus nos semper & eruditióne profícere, & oratióne defendi. Per Dóminum nostrum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 8. g. Christum annuntiámus.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. D. Non spíritum.

*Capitulum.* 2. *Cor.* 4. 6.

DEus, qui dixit de ténebris lucem splendéscere, ipse illúxit in córdibus nostris, ad illuminatiónem sciéntiæ claritátis Dei, in fácie Christi Jesu.

℟. *br.* Eructávit cor meum verbum bonum, * Allelúia,

allelúia. *Repet.* Eructávit. ℣. Dico ego ópera mea regi. *Ps.* 44. 1. * Allelúia. ℣. Glória Patri. *Repet.* Eructávit.

℣. Mihi autem adhærére Deo bonum est, allelúia. ℟. Ut annúntiem omnes prædicaitónes tuas, allelúia. *Ps.* 72. 28.

AD SEXTAM.

*Ant.* 6. f. Implétum est tempus.

*Capitulum.* 1. *Petr.* 4. 17.

TEmpus est ut incípiat judícium à domo Dei. Si autem primùm à nobis; quis finis eórum, qui non credunt Dei Evangélio?

℟. *br.* Elóquia Dómini, elóquia casta, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Elóquia. ℣. Argéntum igne examinátum. *Ps.* 11. 7. * Allelúia. ℣. Glória Patri. *Repet.* Elóquia.

℣. Docuísti me, Deus, allelúia, ℟. Et pronuntiábo mirabília tua, allelúia. *Ps.* 70. 17.

AD NONAM.

*Ant.* 5. a. Deo grátias.

*Capitulum.* 2. *Petri* 1. 21.

NOn voluntáte humánâ alláta est aliquándo prophetía: sed Spíritu sancto inspiráti, locúti sunt sancti Dei hómines.

℟. *br.* Rectum est verbum Dómini, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Rectum. ℣. Et ómnia ópera ejus in fide. *Ps.* 32. 4. * Allelúia. ℣. Gloria Patri. *Repet.* Rectum.

℣. Lucérna pédibus meis verbum tuum, allelúia, ℟. Et lumen sémitis meis, allelúia. *Ps.* 118. 105.

AD VESPERAS.

*Ant.* Christum, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum.* 2. *Cor.* 2. 17.

NOn sumus sicut plúrimi, adulterántes verbum Dei, sed ex sinceritáte, sed sicut ex Deo, coram Deo, in Christo lóquimur.

*Hymnus*, CHRISTI perénnes, *ut suprà ad j. Vesp.*

℣. Suscitávit Dóminus testimónium in Jacob, allelúia, ℟. Et legem pósuit in Israël, allelúia. *Ps.* 77. 5.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 4. *irreg.* c. Hæc scripta sunt, ut credátis quia Jesus est Christus fílius Dei: & ut credéntes, vitam habeátis in nómine ejus, allelúia. *Joan.* 20. 31.

*Oratio*, Deus, qui, *ut suprà ad Laudes.*

DIE XXX.

In Festo

S. EUTROPII EPISCOPI & Martyris.

*Simplex.*

*Omnia de Communi unius Martyris, servato ritu Paschali.*

*Oratio*, Omnípotens, *p.* viij.

*Pro commem. S. Adjutoris Monachi Rotomagensis.*

*Ant.* 6. *irreg.* Assúmpsit eum Dóminus, atque portávit in húmeris suis. Dóminus solus dux ejus fuit, allelúia. *Deut.* 32. *v.* 11. 12.

℣. Quis dabit mihi pennas sicut colúmbæ, allelúia, ℟. Et volábo & requiéscam, allelúia. *Ps.* 54. 7.

*Oratio*, Omnípotens sempitérne, *ut infrà.*

*Lectio prima de Scriptura occurrente ex duabus una. Lect. secunda est tertia Feria occurrentis.*

LECTIO III.

*Ex S. Gregorio Turon. de gloria Mart. lib.* 1. *c.* 56.

EUtrópius Epíscopus, in Gállias ad prædicándam fidem missus, post adimplétum ritè munus, apud Sántonas, illíso ab incrédulis cápite, martyr occúbuit; & ob instántem persecutiónem loco minus digno sepúltus est. Cúmque témporum lapsu nulla nisi nóminis ejus & sanctitátis superésset memória, à fidélibus ut sanctus, non ut Martyr habebátur: donec eum pro Christo sánguinem fudísse fuit revelátum. Refert Gregórius Turonénsis Palládium Santonénsem Epíscopum, qui Concílio Parisiénsi quarto & Matisconénsi secúndo intérfuit, in ejus honórem circa annum Dómini sexcentésimum basílicam extruxísse, ad quam convocátis Abbátibus, dum è túmulo sacras Eutrópii Relíquias honorificéntiùs collocándas transférret, duo ex illis Abbátibus, amóto opertório, conspexérunt ictu secúris illísum caput. Quibus étiam nocte sequénti idem sanctus appáruit, dicens: Scitóte me per eam cicátricem, quam vidístis in cápite, martyrium consummásse. Ex quo, quòd Martyr esset innótuit pópulis; quia non áderat história passiónis.

℟. Post tempestátem, tranquíllum facis, Dómine, & post flétum, exultatiónem infúndis, * Sit nomen tuum, Deus Isráël, benedíctum in sécula, allelúia. *Tob.* 3. *v.* 22. 23. ℣. Qui vícerit, sic vestiétur vestiméntis albis. *Apoc.* 3. 5. * Sit nomen. ℣. Glória. * Sit nomen.

*Ad Laudes pro commemoratione S. Adjutoris.*

*Ant.* 6. f. Fide demorátus est in terra repromissiónis, tanquàm in aliéna, allelúia. *Hebr.* 11. 9.

℣. Abscóndit me Dóminus in tabernáculo suo, allelúia, ℟. In die malórum protéxit me, allelúia. *Ps.* 26. 5.

*Oratio.*

OMnípotens sempitérne Deus, terréna pro te calcántium merces magna

nimis; da nobis exémplo & intercessióne beáti Adjutóris cujus solémnia celebrámus, temporália despícere, & ad ætérna totâ mentis intentióne festináre. Per Christum.

## FESTA MAII.

### Die I.

### In Festo SS. APOSTOLORUM PHILIPPI ET JACOBI.

*Duplex majus.*

*Omnia de Communi SS. Apostolorum, præter ea quæ hic sunt propria, servato ritu Paschali.*

In primis Vesperis.

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

CUi se, relíctis ómnibus,
Addíxerant Apóstoli,
Tristes recénti fúnere
Jesum dolébant mórtuum.

At vos dolórem pónite:
Jam liber inter mórtuos,
Indígna mortis víncula
Rumpéndo, se probat Deum.

Perva'dit occlúsas fores;
Vestro vidére se choro,
Artus sacros dat tángere
Nec temnit oblátas dapes.

Serva'ta monstrat vúlnera,
Nostræ salútis óbsides:
O quanta nubes téstium
Fidem sepúltam súscitat!

Apostolórum sénsibus
Qui te reveláſti, Deus,
Nostris, vacíllet ne fides,
Et te revéla méntibus.

Sit laus Patri, laus Fílio,
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat;
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Oratio*, Dómine Deus, *ut infrà ad Laudes.*

Ad Officium nocturnum.

*Invit.* Fílium Dei primogénitum ex mórtuis, * Veníte, adorémus, allelúia. *Coloss.* 1. 18.

*Ps.* Veníte, *pag.* 2.

*Hymnus. Sanct. Vict.*

REgnis Patérnis débitus,
Cruóre quæ pandit suo,
Vos propter, hospes éxterus
Adhuc cólit terras Deus.

Ignóta tardis méntibus
Patére dat mystéria,
Per mille præságas sui
Se détegens imágines.

En immolándus à Patre,
Suum ferens lignum puer:
En Agnus ille, sánguine
Qui tincta servat límina.

Amóris ô quæ pígnora!
Nobis oves credit suas:
Ligáre dat, dat sólvere
Quæ solvit & ligat Deus.

Fac, Christe, tecum nos mori,
Tecum simul fac súrgere,
Terréna da contémnere,
Amáre da cœléstia.

Sit laus Patri, laus Fílio
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat,

Compar tibi laus, Spíritus. Amen.

*Super tres Psalmos notatos in Proprio de Tempore dicuntur tres Antiph. Nocturni occurrentis de Communi Apost. quibus additur*, Allelúia.

℣. Replétum est gáudio os nostrum, allelúia, ℟. Et lingua nostra exultatióne, allelúia. *Ps.* 125. 2.

*Lectio prima de Scriptura occurrente ex duabus una. Tertia Lectio Feriæ occurrentis omittitur.*

℟. Christus mórtuus est & resurréxit, & * Visus est Cephæ, deínde visus est Jacóbo, deínde Apóstolis ómnibus, allelúia. 1. *Cor.* 15. *v.* 3. 4. 5. 7. ℣. Appáret eis, qui fidem habent in illum. *Sap.* 1. 2. * Visus est.

LECTIO II.

*Ex Evangelio & Eusebio, lib. 3. hist. c.* 30. 31. 39.

PHilíppus Bethsaïdæ natus, unus ex duódecim Apóstolis fuit, qui primùm à Christo Dómino vocáti sunt, à quo Nathánaël cùm accepísset venísse Messíam in Lege promíssum, ad Dóminum dedúctus est. Cùm Christus hóminum insígnem multitúdinem páscere vellet, sic ad Philíppum affátus est: Unde emémus panes, ut mandúcent hi? Gentíles Salvatórem vidére cupiéntes, ad Philíppum accessérunt. Is accépto Spíritu sancto cùm Evangélium prædicásset, & Hierápolim Phrýgiæ tandem venísset, pro Christi nómine morte afféctus est. Jacóbus frater Dómini cognoménto Justus, ab ineúnte ætáte vinúm & síceram non bibit, carne abstínuit, nunquam tonsus, nec unguénto, nec bálneo usus est. Huic uni licébat íngredi in Sancta. In templum solus intráre, atque ibi génibus flexis pro peccátis pópuli supplex Deum precári consuéverat; ádeò ut génua ipsius instar caméli occallúerint, dùm assíduè Deum vénerans, & pro salúte pópuli vota fáciens humi sternerétur. Eum post Christi Ascensiónem Apóstoli Jerosolimórum Epíscopum constituérunt. Hic eò quòd Christum Dei Fílium prædicáret, ex pinnáculo templi præcipitátus est; cúmque nondum esset mórtuus, lapídibus primùm est impetítus; deínde licèt semivívus pro persecutóribus suis oráret, fullónis fuste in cápite percússus ánimam Deo réddidit. Huic adscríbi solet, inquit Eusébius, Epístola prima eárum, quæ Cathólicæ dicúntur.

℟. Vóluit Jesus exíre in Galilæam, & invénit Phi-

lippum, & dicit ei : * Séquere me, allelúia. *Joan.* 1. 43. ℣. Redémi te, & vocávi te nómine tuo : meus es tu. *Isa.* 43. 1. * Séquere.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Joánnem.

LECTIO III. *Cap.* 14. 1.

*Multæ mansiones in domo Dei.*

IN illo témpore, Dixit Jesus discípulis suis : Non turbétur cor vestrum. Créditis in Deum, & in me crédite. In domo Patris mei mansiónes multæ sunt. Et réliqua.

Homilía sancti Augustini Epíscopi.

*Tract. 67. in Joannem.*

ERigénda est nobis, fratres, ad Deum major inténtio, ut verba sancti Evangélii, quæ modò in nostris áuribus sonuérunt, étiam mente cápere utcúnque possímus. Ait enim Dóminus Jesus : [Non turbétur cor vestrum. Créditis in Deum, & in me crédite.] Ne mortem tanquàm hómines timérent, & ideò turbaréntur, consolátur eos, étiam se Deum esse contéstans. [Créditis, inquit, in Deum, & in me crédite.] Cónsequens est enim, ut, si in Deum créditis, & in me crédere debeátis : quod non esset cónsequens, si Christus non esset Deus.

℟. Virtúte magnâ * Reddébant Apóstoli testimónium resurrectiónis Jesu Christi Dómini nostri, & grátia magna erat in ómnibus illis, † Allelúia, allelúia. *Act.* 4. 33. ℣. Repléti fortitúdine Spíritûs Dómini, judício & virtúte. *Mich.* 3. 8. * Reddébant. ℣. Glória. † Allelúia.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Fílii Sion exúltent, allelúia, ℟. In rege suo allelúia. *Ps.* 149. 2.

*Ant.* 5. a. Erat Philíppus à Bethsaïda civitáte Andréæ & Petri, allelúia. *Joan.* 1. 44.

*Ant.* 4. e. Invénit Philíppus Nathánaël, & dicit ei : Quem scripsit Móyses, & Prophétæ, invénimus Jesum fílium Joseph à Názareth ; allelúia. *Ibid. v.* 45.

*Ant.* 1. a. Ego sum via, véritas, & vita : nemo venit ad Patrem, nisi per me : allelúia. *Joan.* 14. 6.

*Ant.* 7. C. Dicit Philíppus : Dómine, osténde nobis Patrem, & súfficit nobis, allelúia. *Joan.* 14. 8.

*Ant.* 3. g. Dicit Jesus : Philíppe, qui videt me, videt & Patrem, allelúia. *Ibid. v.* 9.

*Capitulum.* 1. *Joan.* 2. 24.

QUod audístis ab inítio, in vobis permáneat : si in vobis permánserit quod audístis ab inítio, & vos in Fílio, & Patre manébitis.

*Hymnus. Sanct. Vict.*

NAtus Parénti rédditus
Non vos amícos déseret:
Sub imbre lapsum flámmeo
Infúndet in vos Spíritum.

Hausto repléti Númine,
Terras in omnes líberi
Christum tubis cœléstibus
Christum Deum vulgábitis.

Non jam tenébit ámpliùs
Formído mortis ábditos:
Apérta non eúntibus
Addent moras perícula.

Vos ante reges fórtiter
Spernétis armátas neces:
Hæc nempè pro Christo mori
Supréma vobis glória.

Ora'te, firma sit Fides,
Excélsa se Spes érigat;
Illápsa nostris córdibus
Pellat timórem Cháritas.

Sit laus Patri, laus Fílio,
Qui nos, triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat:
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Confitébimur tibi, Deus, allelúia, ℟. Narrábimus mirabília tua, allelúia. *Ps.* 74. 1.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 5. f. Nos testes sumus ómnium, quæ fecit Jesus in regióne Judæórum & Jerúsalem, & præcépit nobis prædicáre pópulo, allelúia. *Act.* 10. *v.* 39. 42.

*Oratio.*

DO'mine Deus, qui Apóstolis tuis teípsum viam & veritátem exhibuísti; fac, intercedéntibus sanctis Philíppo & Jacóbo, ut, per te in lúmine vultûs tui ad te ambulántes, in te requiéscere, ac in ætérnum de te beátè vívere mereámur. Qui vivis.

Ad Horas, *Antip. de Laudibus. Capit. Respons. brev. & Versic. de Communi Apost. ritu Paschali.*

*Ad ij. Vesp. Antiph.* Erat Philíppus, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum. Act.* 10. *v.* 39. 40. 41.

QUem occidérunt Judæi suspendéntes in ligno, hunc Deus suscitávit tértiâ die; & dedit eum maniféstum fieri non omni pópulo, sed téstibus præordinátis à Deo; nobis qui manducávimus & bíbimus cum illo, postquàm resurréxit à mórtuis.

*Hymnus*, Cui se, relíctis, *ut in primis Vesperis.*

℣. Lætáti sumus pro diébus quibus nos humiliásti, allelúia; ℟. Annis quibus vídimus mala, allelúia. *Ps.* 89. 15.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Per Jesum Christum accépimus grátiam & Apostolátum, ad obediéndum fídei, allelúia. *Rom.* 1. 5.

*Oratio*, Dómine Deus, *ut suprà ad Laudes.*

*Comm. S. Athanasii Episcopi & Ecclesiæ Doctoris.*

*Ant.* 3. g. Ipse tanquàm imbres mittet elóquia sapiéntiæ suæ, & in oratióne confitébitur Dómino, allelúia. *Eccli.* 39. 9.

℣. Os justi meditábitur sapiéntiam, allelúia. ℟. Et lingua ejus loquétur judícium, allelúia. *Ps.* 36. 30.

*Oratio*, Præsta, quæsumus, *ut infrà, pag.* 1001.

## Die II.

## In Festo S. ATHANASII EPISCOPI & Ecclesiæ Doctoris.

*Semiduplex.*

Ad Officium Nocturnum.

*Invit.* Fontem Sapiéntiæ Dóminum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Eccli.* 1. 5.

*Psal.* Veníte, *p.* 2.

*Lectio prima de Scriptura occurrente ex duabus una.*

*Lectio secunda erit tertia Feriæ occurrentis.*

### Lectio III.

*Ex Rufino, Sozom. & aliis antiquis Scriptoribus.*

ATHanásius, ab Alexándro Alexandrínæ Ecclésiæ EpíscopoDiáconus ordinátus, ab eo ductus est ad Concílium Nicǽnum, ubi A'rii impietátem ácriter impugnávit. In Alexándri pauló pòst defúncti locum suffèctus, tranquíllo Episcopátûs inítio, diœcésim omnem perlustrávit. Sed cùm nullis aut précibus aut minis posset addúci ut A'rium fictè pœniténtem recíperet, Ariáni Meletiánis juncti struxérunt calumniárum technas omnes, ut ipsum Episcopátu dejícerent, quas coram Constantíno díluit, & eo jubénte Alexándriam rédiit. In Tyri Conciliábulo rursus Athanásium criminántes Ariáni, eum ad Imperatórem proféctum ut eórum vim effúgeret, quasi causam deseréntem Episcopátu abdicárunt. Constantíno cógnitâ eórum injustítiâ indignánti, mox ad áliam convérsi calúmniam, súggerunt comminátum esse Athanásium, prohibitúrum se ne consuéta annóna ex Ægýpto Constantinópolim deportarétur; quâ criminatióne motus Constantínus Athanásium Tréviros amandávit, ubi à MaximínoEpíscopo honorificè excéptus est. Alexándriam revocátus, id agénte apud Constántium fratrem Constantíno Junióre, uti mens Constantíni patris fúerat, novis íterum calúmniis impétitur. A Júlio Papa, cui Eusebiáni Concílium postulántes scrípserant, dum Romæ in Sýnodo judicátur ínnocens, adversárii judício licèt ab Athanásio priùs recusáto, Antiochíæ depónunt, & depósito, Gregórium Cappádo-

cem substítuunt. A Sýnodo Sardicénsi calúmniis hæreticórum vindicátus, Sedi suæ restitúitur. Séptimo pòst anno cùm à Constantino Ariánis addictíssimo ad mortem quærerétur, sex totis annis in Ægýpti monastériis, locísque desértis delítuit. Post Constántii mortem, permitténte Juliáno apóstatâ, revérsus, Concílium hábuit cum Christi Confessóribus de recipiéndis iis, qui ab Ariánis fúerant sedúcti; in quo res gravíssimas tantâ prudéntiâ definívit, ut Ecclésiam visus fúerit imminénti perículo eripuísse. A Juliáno ad mortem quæsítus, íterum discédere cógitur, & insequéntes se astúto consílio elúsit, delituítque Alexándriæ usque ad mortem Juliáni. Sub Joviáno Imperatóre cathólico pacíficè suam rexit Ecclésiam; sed rursus movénte persecutiónem Valénte Ariáno, in patérno monuménto quátuor menses latitáre coáctus est; & ex eo tandem, instánte pópulo, egréssus, post tot labóres ac ærúmnas, anno Episcopátûs quadragésimo sexto, Christi verò trecentésimo septuagésimo tértio in léctulo suo mórtuus est.

*Oratio.*

PRæsta, quǽsumus, omnípotens Deus, ut excelléntiam Verbi tui, quam beátus Athanásius assóruit, & conveniénter intellígere valeámus, & veráciter profitéri: Per eúmdem Dóminum.

Die III.

In Revelatione seu Inventione SANCTÆ CRUCIS.

*Duplex majus.*

In primis Vesperis.

*Ant.* 1. a. Levábit signum in natiónes, & congregábit prófugos Israël, & dispérsos Juda cólliget à quátuor plagis terræ, allelúia. *Isa.* 11. 12.

*Ant.* 6. F. Dabit lignum fructum suum; & scient quia ego Dóminus, cùm contrívero caténas jugi eórum, allelúia. *Ezech.* 34. 27.

*Ant.* 3. g. Quóniam potens es, Dómine, ex ómnibus salváre, exíguo ligno hómines transeúntes mare liberáti sunt, allelúia. *Sap.* 14. *v.* 4. 5.

*Ant.* 4. d. Dóminus osténdit Móysi lignum, quod cùm misísset in aquas, in dulcédinem versæ sunt, allelúia. *Exod.* 15. 25.

*Ant.* 6. *irr.* Benedíctum lignum per quod fit justítia, allelúia. *Sap.* 14. 7.

*Capitulum.* *Ezech.* 17. 24.

EXaltávi lignum húmile, & frondére feci lignum áridum: Ego Dóminus locútus sum, & feci.

℟. Radix Jesse, qui stat in signum populórum; * Ipsum Gentes deprecabúntur,

& erit sepúlchrum ejus gloriósum, †Allelúia, allelúia. *Isa.* 11. 10. ℣. Peccáta nostra ipse pértulit in córpore suo super lignum. 1. *Petr.* 2. 24. * Ipsum Gentes. ℣. Glória. † Allelúia, allelúia.

*Hymnus. Sanct. Victor.*

TELLUS, tot annos quid tegis
Nostræ salútis pígnora?
Crux monte toto quæritur,
Ultro tuos pandas sinus.

QUID dura fossóris manus,
Scrutáris alta víscera?
Celáre lignum sit pudor
Quo nostra surgit glória.

EN illa gemma pérdita,
Invénta tot labóribus:
En qui latébat érutus
Thesáurus agro pródiit.

REGÍNA quæsítam Crucem
Monstránte Christo répperit:
Oblíta fastus régios,
Sceptro repértam prætulit.

CRUX sancta, Christi córporis
Virtus salúbrem te facit:
Contíngit ut te mórtuus,
Vitæ prióri rédditur.

FULGÓRE cujus térrita
Pallent tremúntque tártara;
Hæc arma si quis índuat,
Ridébit hostis ímpetus.

QUI per Crucem nos líberas,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre, & almo Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

℣. Apud Dóminum misericórdia, allelúia. ℟. Et copiósa apud eum redémptio, allelúia. *Ps.* 129. 7.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Si posúerit pro peccáto ánimam suam, vidébit semen longævum, & volúntas Dómini in manu ejus dirigétur, allelúia. *Isa.* 53. 10.

*Oratio*, Deus, qui, *ut infrà ad Laudes.*

*Pro Comm. S. Athanasii.*

*Ant.* 6. *irr.* Qui docti fúerint, fulgébunt quasi splendor firmaménti: & qui ad justítiam erúdiunt multos, quasi stellæ in perpétuas æternitátes, allelúia. *Dan.* 12. 3.

℣. Annuntiávi justítiam tuam, allelúia, ℟. In Ecclésia magna, allelúia. *Ps.* 39. 10.

*Oratio*, Præsta, quǽsumus, *ut suprà.*

*Pro commemor. S. Alexandri Papæ & Martyris.*

*Ant.* 5. f. Pro certo habet omnis qui te cólit, Dómine, quòd vita ejus, si in probatióne fúerit, coronábitur, allelúia. *Tob.* 3. 21.

℣. In Deo sperávi, allelúia, ℟. Non timébo quid fáciat mihi homo, allelúia. *Ps.* 55. 11.

*Oratio*, Præsta, quǽsumus, *ut infrà*, *pag.* 590.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Jesum propter passiónem mortis glóriâ & honó-

te coronátum, * Veníte, adorémus, allelúia. *Hebr.* 2. 9.

*Psal.* Veníte, *p.* 2.

*Hymnus. Sanct. Vict.*

SIGNUM novi Crux fœderis,
Crux Orbis Arca náufragi,
Cùm jam perímus, tu ratis
In tuta transfers líttora.

PUNÍRE promptus crímina;
Reos sequens ultor Deus,
Mitéscit aspéctu tuo,
Iras & oblivíscitur.

LETHA'LE nunc vulnus ferat
Inférnus anguis mórsibus:
Læsi modò te víderint,
Repéntè tu medéberis.

ARA sub illa, par Deo
Sese litávit hóstia:
Hâc sede læsum Fílius
Placávit orátor Patrem.

CRUX sancta, Crux amábilis,
Crux tincta Christi sánguine,
Hauríre da nos lárgiùs
Vitam, Dei de fúnere.

QUI per Crucem nos líberas,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre & almo Spíritu
In sempitérna sécula. Amen.

*Super tres Psalmos Propriis de Tempore dicuntur*

*Ant.* 2. d. Crucifíxus est ex infirmitáte, sed vivit ex virtúte Dei, allelúia. 2. *Cor.* 13. 4.

*Ant.* 5. a. Quem vos interemístis, suspendéntes in ligno; hunc Salvatórem Deus exaltávit, ad dandam remissiónem peccatórum; allelúia. *Act.* 5. 30.

*Ant.* 1. a. Fecit útraque unum, solvens inimicítias in carne sua per crucem, allelúia. *Eph.* 2. *v.* 14. 16.

℣. Dícite in Géntibus, allelúia, ℟. Quia Dóminus regnávit, allelúia. *Ps.* 95. 10.

*Lectio prima de Scriptura occurrente ex duabus una.*

℟. I. Chirógraphum decréti, quod erat contrárium nobis, tulit de médio Christus, affigens illud cruci; & * Expólians principátus & potestátes, tradúxit confidénter, palam triúmphans illos in semetípso, allelúia. *Coloss.* 2. *v.* 14. 15. ℣. Confitémini Dómino, qui redémit nos ab inimícis nostris. *Ps.* 135. *v.* 1. 24. * Expólians.

Ex Epístola sancti Paulíni Epíscopi ad Sevérum.

*Epis.* 31. *novæ edit.*

LECTIO II.

ADriánus Imperátor exístimans se fidem Christiánam loci injúriâ peremptúrum, in loco passiónis simulácrum Jovis consecrávit; & Béthleem Adónidis fano profanáta est: ut tum quasi radix & fundaméntum Ecclésiæ tollerétur, si in iis locis idóla coleréntur, in quibus Christus natus est, ut paterétur; passus est, ut resúrgeret;

surréxit, ut regnáret; judicátus est, ut judicáret. Mansit hoc séculi prióris nefas in témpora nostris próxima Constantíni: qui princeps esse princípibus Christiánis non magis suâ quàm matris Hélenæ fide méruit. Regína illa venerábilis ut venit Jerosólymam, crucem Dómini studiosíssimè inquírere adórsa est. De loco tantùm passiónis cértior fieri stúduit. Jussit illicò, urgénte sine dúbio concéptæ revelatiónis instínctu, in ipsum locum óperam fossiónis accíngi; paratáque mox cívium páriter & militári manu, brevi labórem istius molitiónis hausit, & contra spem ómnium, sed secúndùm ipsíus tantùm Regínæ fidem, altâ egestióne, reserátis terræ sínibus, ábditæ Crucis arcána patuérunt. Sed cùm tres páriter cruces, ut quondam fixæ Dómino & latrónibus stéterant, repértæ fuíssent; gratulátio repertárum cœpit ánxiâ dubitatióne confúndi justo piórum metu, ne fórsitan, aut pro Cruce Dómini patíbulum latrónis elígerent, aut salutáre Lignum pro stípite latrónis abjiciéndo violárent. Respéxit pias fidéliter æstuántium curas Dóminus; & ipsi potíssimùm, quæ tam piæ solicitúdinis princeps erat, hujus consílii lumen infúdit, ut áliquem recèns mórtuum inquíri & inférri jubéret. Nec mora: verbum factum; cadáver illátum est; depónitur: jacénti una de crúcibus admovétur, & áltera: sed reórum ligna mors sprevit. Postrémò Domínicam Crucem prodit resurréctio; & ad salutáris Ligni tactum morte prófugâ funus excússum & corpus eréctum est; tremefactísque vivéntibus stetit mórtuus; & funébribus, ut Lázarus quondam, vínculis expedítus, illicò inter spectatóres suos redivivus incéssit.

℟. Qui peccátum non fecit, nec invéntus est dolus in ore ejus, * Peccáta nostra ipse pértulit in córpore suo super lignum, ut peccátis mórtui, justítiæ vivámus, allelúia. 1. *Pet.* 2. *v.* 22. 24. ℣. Disciplína pacis nostræ super eum, & livóre ejus sanáti sumus. *Isa.* 53. 5. * Peccáta.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Matthæum.

LECTIO III. *Cap.* 13. 44. *Thesaurus in agro absconditus.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Símile est regnum cœlórum thesáuro abscóndito in agro: quem qui invénit homo, abscóndit, & præ gáudio illíus vadit, &

vendit univérsa quæ habet, & emit agrum illum. Et réliqua.

Homilía sancti Andréæ Creténsis Epíscopi.

*Orat. in Exalt. S. Crucis.*

QUi Crucem póssidet, póssidet thesáurum. De auri me fórsitan putátis loqui thesáuro, aut margaritárum, ac lápidum pretiosórum Indiórum, quibus córporis sui studiósi, & nihil excélsi cogitántes sese oblectant. Ego verò id quod ómnium bonórum pulchérrimum est, re ac nómine thesáurum jure appelláverim: in quo, & per quem, & in quem salútis nostræ summa repósita, & prístino státui restitúta est. Si Crux non esset, Vita ligno clavis suffíxa non esset. Si clavis suffíxa non esset, ex látere Christi fontes immortalitátis sánguinem & aquam, quæ mundum éxpiant, non fudíssent. Si Crux non esset, mors prostráta non esset, inférnus non spoliátus, non enéctus nóxius serpens. Magna ígitur & pretiósa res Crux est. Magna quidem, quia multa per ipsam bona effécta sunt, pretiósa verò, quia Dei trophæum est, et in ipsa diábolus sauciátus, et cum eo mors devícta est.

℟. Mihi absit gloriári nisi in cruce Dómini nostri Jesu Christi; * Per quem mihi mundus crucifíxus est, & ego mundo, allelúia. *Galat.* 6. 14. ℣. Mihi adhærére Deo bonum est; pónere in Dómino Deo spem meam. *Ps.* 72. 28. * Per quem. ℣. Glória. * Per quem.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Redémit nos ab inimícis nostris, allelúia. ℟. In ætérnum misericórdia ejus, allelúia. *Ps.* 135. 24.

*Ant.* 3. c. Hoc sentíte in vobis, quod & in Christo Jesu: qui cùm in forma Dei esset, semetípsum exinanívit, allelúia. *Philip.* 2. *v.* 5. 6. 7.

*Ant.* 7. g. Humiliávit semetípsum factus obédiens usque ad mortem crucis; propter quod & Deus exaltávit illum, allelúia. *Ibid. v.* 8. 9.

*Ant.* 1. f. Vos qui erátis longè, facti estis propè in sánguine Christi, qui fecit útraque unum, allelúia. *Eph.* 2. *v.* 13. 14. [canticum Feriae] +

*Ant.* 2. d. Vetus homo noster simul crucifíxus est, ut destruátur corpus peccáti, & ultrà non serviámus peccáto, allelúia. *Rom.* 6. 6.

*Ant.* 4. f. Qui mórtuus est, justificátus est à peccáto: si autem mórtui sumus cum Christo, simul étiam vivémus cum Christo, allelúia. *Ibid. v.* 7. 8.

*Capitulum. Galat. 3. 13.*

CHristus nos redémit de maledícto legis, factus pro nobis maledíctum: quia scriptum est: Maledíctus omnis qui pendet in ligno: ut in Géntibus benedíctio Abrahæ fieret in Christo Jesu.

*Hymnus.*

O SOLA languórum Dei
Pendéntis in te cónscia!
Ejus dolóris & metûs
Dic verba, dic suspíria.
CLAVI pedes, clavi manus
Fixére duro stípiti,
Cinctum cruéntis vépribus
In te recumbébat caput.
CUM morte luctántis Dei
Legis suprémos spíritus:
Christus tuo, volens mori,
Vitam relíquit in sinu.
TU lectus in quo nos parit,
Suggéstus è quo nos docet,
Olim treméndum sóntibus
Eris tribúnal júdicis.
QUI per Crucem nos líberas,
Jesu, tibi sit glória
Cum Patre, cumque Spíritu
In sempitérna sécula. Amen.

℣. Deus Rex noster ante sécula, allelúia. ℟. Operátus est salútem in médio terræ, allelúia. *Ps.* 73. 12.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 5. a. In médio Jerúsalem lignum vitæ, & fólia ligni ad sanitátem Géntium, allelúia. *Apoc.* 22. 2.

*Oratio.*

DEus, qui in præclára salutíferæ Crucis Inventióne, passiónis tuæ mirácula suscitásti; concéde, ut vitális ligni prétio vitæ ætérnæ suffrágia consequámur; Qui vivis & regnas cum Deo Patre, in unitáte.

*Pro commem. sancti Alexandri Papæ & Martyris.*

*Ant.* 7. g. Vitâ decéssit univérsæ Genti, memóriam mortis suæ ad exémplum virtútis & fortitúdinis derelinquens, allelúia. 2. *Machab.* 6. 31.

℣. Justus ut palma florébit, allelúia. ℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur, allelúia. *Ps.* 91. 13.

*Oratio.*

PRæsta, quǽsumus, omnípotens Deus, ut, qui beáti Alexándri Papæ & Mártyris natalítia cólimus: à cunctis malis imminéntibus, ejus intercessióne liberémur: Per Dóminum nostrum.

AD PRIMAM.

*Ant.* 3. c. Hoc sentite.

AD TERTIAM.

*Ant.* 7. g. Humiliávit.

*Capitul. ad Galat.* 2. *v.* 19. 20.

CHristo confixus sum cruci. Vivo autem, jam non ego: vivit verò in me Christus. Quòd autem nunc vivo in carne: in fide vivo

Fílii Dei, qui diléxit me, & trádidit semetípsum pro me.

℟. *breve*. Exultábunt lábia mea, * Allelúia, allelúia. *Repet*. Exultábunt. ℣. Et ánima mea quam redemísti. *Ps*. 70. 23. * Allelúia. ℣. Glória. *Repet*. Exultábunt.

℣. Dicant qui redémpti sunt à Dómino, allelúia, ℟. Quos redémit de manu inimíci, allelúia. *Ps*. 106. 2.

AD SEXTAM.

*Ant*. 1. f. Vos qui erátis.

*Capitulum*. *Ephes*. 1. *v*. 5. 7.

PRædestinávit nos Deus in adoptiónem filiórum per Jesum Christum in ipsum, secúndùm propósitum voluntátis suæ, in quo habémus redemptiónem per sánguinem ejus.

℟. *breve*. Notam fecísti in pópulis virtútem tuam, * Allelúia, allelúia. *Repet*. Notam. ℣. Redemísti in bráchio tuo pópulum tuum. *Psal*. 76. *v*. 15. 16. * Allelúia. ℣. Glória. * Allelúia. *Repet*. Notam.

℣. Ego autem annuntiábo in séculum, allelúia. ℟. Cantábo Deo Jacob, allelúia. *Ps*. 74. 10.

AD NONAM.

*Ant*. 4. f. Qui mórtuus est.

*Capitulum*. 1. *Pet*. 2. *v*. 21. 22.

CHristus passus est pro nobis, vobis relínquens exémplum, ut sequámini vestígia ejus, qui peccátum non fecit, nec invéntus est dolus in ore ejus.

℟. *breve*. Redémit nos ab inimícis nostris, * Allelúia, allelúia. *Repet*. Redémit. ℣. In ætérnum misericórdia ejus. *Psal*. 135. 24. * Allelúia. ℣. Glória. *Repet*. Redémit.

℣. Dómine adjútor meus, allelúia, ℟. Et redémptor meus, allelúia. *Ps*. 18. 15.

AD VESPERAS.

*Antiphona*, *Capitulum*, *Hymn*. *ut suprà ad Laudes*.

℣. Dóminus illuminátio mea, allelúia, ℟. Et salus mea, allelúia. *Ps*. 26. 1.

*Ad* Magníficat, *Ant*. 7. C. Oportébat Christum pati, & resúrgere à mórtuis tértiâ die; & prædicári in nómine ejus pœniténtiam, & remissiónem peccatórum in omnes Gentes, allelúia. *Luc*. 24. *v*. 46. 47.

*Oratio*, Deus, qui in præclára, *ut suprà ad Laudes*.

*Pro commem. sanctæ Monnicæ viduæ*.

*Ant*. 6. f. Pars bona, múlier bona, in parte timéntium Deum dábitur viro pro factis bonis, allelúia. *Eccli*. 26. 3.

℣. A'nima mea exultábit in Dómino, allelúia. ℟. Et delectábitur super salutári suo, allelúia. *Ps*. 34. 9.

*Oratio*, Exáudi nos, Deus, *ut infrà ad Laudes*.

## Die IV.
## In Festo
## SANCTÆ MONNICÆ Viduæ.

*Semiduplex.*

*Omnia de Communi unius Mulieris, servato ritu Paschali.*

*Prima Lectio de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio ij. erit tertia Feriæ occurrentis.*

### Lectio III.

*Ex lib. Confess. S. August.*

MO'nnica sancti Augustíni dupliciter mater, quia eum & mundo & cœlo péperit; Patrícium cónjugem, cui velut Dómino semper servíerat, extrémo ejus vitæ témpore ad Christi fidem addúxit. Lapso in Manichæórum hæresim filio, cùm pro ejus conversióne multis lácrymis Deum precarétur, audívit à quodam Epíscopo: Fieri non potest ut filius istárum lacrymárum péreat. Terrâ maríque illum secúta, Medioláni innótuit Ambrósio, qui Augustíno gratulátus est quòd eam matrem habéret. Ibi cùm ad memórias Sanctórum, sicut in A'frica solébat, pultes cum pane & mero attulísset, atque ab ostiário prohiberétur; ubi hoc Epíscopum vetuísse cognóvit, tam piè obsecúta est, ut ipse mirarétur Augustínus, quòd tam fácilè accusátrix pótiùs consuetúdinis suæ, quàm disceptátrix illíus prohibitiónis effécta fuísset. Rédiens in A'fricam cum Augustíno, qui ejurátâ hæresi, ab Ambrósio baptizátus fúerat, cùm ad O'stia Tiberína constitísset, sic filium est allocúta: Fili, nullâ jam re deléctor in hac vita: quid hîc fáciam adhuc, & cur hîc sim néscio, jam consúmpta spe hujus séculi: unum erat propter quod in hac vita aliquántulùm immorári cupiébam, ut te Christiánum vidérem priúsquàm mórerer; cumulátiùs hoc mihi Deus meus præstitit, ut te étiam contémptâ felicitáte terrénâ servum ejus vídeam. Quinto pòst die in febrem íncidit: & astántem íntuens Augustínum cum fratre ejus Navígio: Ponétis hîc, inquit, matrem vestram; illud autem vos rogo ut ad altáre Dómini meminéritis mei. Die nono ægritúdinis suæ, ætátis anno quinquagésimo sexto ánimam Deo réddidit. Tum Evódius, succinénte totâ domo, cantáre cœpit psalmum, [ Misericórdiam & judícium cantábo tibi, Dómine. ] Juxta sepúlchrum pósito cadávere, priúsquam deponerétur, oblátum est pro ea, ut refert Augustínus,

gustinus, sacrificium prétii nostri Deo ad altáre, cui ipsa nullius diéi prætermissióne servierat, & unde nóverat dispensári víctimam sanctam, quâ delétum est chirógraphum contrárium nobis.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitulum.* 1. *Timoth.* 5. *v.* 3. 5.

VI'duas honóra quæ verè víduæ sunt; quæ autem verè vídua est & desoláta, speret in Deum, & instet obsecratiónibus nocte ac die.

*Oratio.*

EXáudi nos, Deus salutáris noster; ut, sicut de beátæ Mónnicæ festivitáte gaudémus; ita piæ devotiónis erudiámur affectu. Per Dóminum nostrum.

DIE VI.

In Festo SANCTI JOANNIS Ante Portam Latinam.

*Duplex minus.*

*Omnia de Communi unius Martyris, servato ritu Paschali, præter ea quæ sequuntur.*

IN PRIMIS VESPERIS.

*Capitulum. Isa.* 43. *v.* 2. 3.

CU'm ambuláveris in igne, non combuséris, & flamma non ardébit in te: quia ego Dóminus Deus tuus sanctus Israël Salvátor tuus.

*Pars Verna.*

℟. Confitébor, *ut infrà, pag. nova* 595.

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

URBEM Romúleam quis furor incitat?
Christi discípulus Cæsare júdice
Damnátus rápitur; nil venerábilis
Frontis caníties movet.
In fervens ólei conjícitur mare,
Nil æstus nócuit, flamma sed hóspiti
Parcit blanda suo; ceu pugil úngitur,
Hinc & fórtior éxilit.
EDI'CTO stériles pulsus in ínsulas,
Exul tunc sócio perfrúitur Deo:
Hinc ventúra videt, quæ cálamo notans
Sublústri nébulâ tegit.
SIC nos Christus amet, sic dóceat pati;
Discamúsque mori, fúneris ut sacri
Simus partícipes; non áliis patet
Cœlum conditiónibus.
PATRI máxima laus, máxima Fílio,
Amborúmque sacro máxima Flámini;
Hæc est certa fides, fóntibus è tuis,
Quam divínitùs háusimus. Amen.

℣. In Deo sperávi, alle-

lúia, ℟. Non timébo quid fáciat mihi homo, allelúia. *Ps.* 55. 11.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 5. f. Pro certo habet omnis, qui te colit, Dómine, quòd vita ejus, si in probatióne fúerit, coronábitur, allelúia. *Tob.* 3. 21.

*Oratio*, Deus, qui beátum Joánnem, *infrà*.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitatorium.* Fílium Dei primogénitum ex mórtuis, * Veníte, adorémus, allelúia. *Coloss.* 1. 18.

*Ps.* Veníte, *pag.* 2.

*Lectio prima de Scriptura occurrente ex duabus una.*

*Omittitur tertia Lectio Feriæ occurrentis.*

℟. Certámen forte dedit illi Dóminus * Ut vínceret, & sciret quóniam ómnium poténtior est sapiéntia, allelúia. *Sap.* 10. 12. ℣. Confortátus est fide, dans glóriam Deo. *Rom.* 4. 20. * Ut vínceret.

Ex libro sancti Hierónymi Presbyteri advérsùs Joviniánum.

LECTIO II. *Cap.* 14.

JOánnes unus ex Discípulis, qui mínimus tráditur fuisse inter Apóstolos, & quem fides Christi vírginem repérerat, virgo permánsit; & ideò plus amátur à Dómino, & recúmbit super pectus Jesu: & quod Petrus, qui uxórem habúerat, interrogáre non audet, illum rogat ut intérroget. Et post resurrectiónem, nuntiánte Maríâ Magdaléne quòd Dóminus resurrexísset, utérque cucúrrit ad sepúlchrum, sed ille prævénit prior. Cúmque essent in navi & piscaréntur in lacu Genézareth, Jesus stabat in líttore, nec sciébant Apóstoli quem vidérent: solus virgo vírginem agnóscit, & dicit Petro: Dóminus est. Est Joánnes, & Apóstolus, & Evangelísta, & Prophéta. Apóstolus, quia scripsit ad Ecclésias ut magíster: Evangelísta, quia librum Evangélii cóndidit, quod, excépto Matthæo, álii ex duódecim Apóstoli non fecérunt: Prophéta, vidit enim in Pathmos ínsula, in qua fúerat à Domitiáno príncipe ob Dómini martyrium relegátus, Apocalypsim, infiníta futurórum mystéria continéntem: refert autem Tertulliánus quòd Romæ missus in fervéntis ólei dólium, púrior, & vegétior exíverit, quàm intráverit.

℟. Propter opus Christi usque ad mortem accéssit, * Tradens ánimam suam, allelúia. *Philip.* 2. 30. ℣. Gloriosíssimam mortem compléctens, voluntárie præibat ad supplícium. 2. *Mach.* 6. 19. * Tradens.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Marcum.

LECTIO III. *Cap.* 10. 35.

*Honorem petentibus promittitur tribulatio.*

IN illo témpore; Accédunt ad Jesum Jacóbus & Joánnes filii Zebedæi, dicéntes: Magíster, vólumus, ut quodcúnque petiérimus, fácias nobis. At ille dixit eis: Quid vultis ut fáciam vobis; & dixérunt: Da nobis, ut unus ad déxteram tuam, & álius ad sinístram tuam sedeámus in glória tua. Et réliqua.

Homilía sancti Joánnis Chrysóstomi.

*Homil.* 66. *in Matth.*

ZEbedæi filii ad Jesum accedéntes, de primo consessu alloquúntur. Nam quóniam prope Jerúsalem erant, credebántque regnum Dei jamjam eventúrum, quod hujus vitæ ac seculáre opinabántur, hæc postulábant, ut ob honórem facíliùs étiam ómnia perícula possent evitáre; proptéreà Christus ab his eos cogitatiónibus abdúcens, perícula, sánguinem necémque ipsam expeténdam esse jubet. [Potéstis, inquit, bíbere cálicem quem ipse bibo?] Nec turbétur quisquam, si ádeò imperféctos dícimus Apóstolos fuisse. Nondum enim mystérium crucis erat consummátum, nondum grátia Spíritûs in corda ipsórum infúsa. Quare si stúdia virtútis ipsórum díscere cupis, quales post datam grátiam Spíritûs fúerint, consídera; & vidébis omnem ab illis turbatiónem ánimi fuisse superátam. Hac enim de causa eórum modò imperféctio revelátur, ut apértè percípere possis, quales súbitò per grátiam effécti fúerint.

℟. Confitébor nómini tuo, Dómine, quóniam adjútor & protéctor factus es mihi, * Et in médio ignis non sum æstuátus, † Allelúia, allelúia. *Eccli.* 51. *v.* 2. 6. ℣. Dóminus mihi ástitit, & confortávit me, liberátus sum de ore leónis. 2. *Timoth.* 4. 17. * Et. ℣. Glória. † Allelúia.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. c. Accéssit ad Jesum mater filiórum Zebedæi cum filiis suis, adórans, & petens áliquid ab eo, allelúia. *Matth.* 20. 20.

*Oratio.*

DEus, qui beátum Joánnem partícipem in tribulatióne & patiéntia Dómini Jesu, óleo sanctæ exultatiónis unxísti; fac nos, tantæ imitatióne virtútis, communicántes ejúsdem Christi passiónibus sic gaudére, ut in revelatióne glóriæ ejus gaudeámus exultántes; Qui tecum vivit.

AD PRIMAM.

*CANON.*

*Ex Tertulliano de præscript. Cap. 36.*

ISta quàm felix Ecclésia, cui totam dòctrínam Apóstoli cum sánguine suo profudérunt, ubi Petrus passióni Domínicæ adæquátur, ubi Paulus Joánnis éxitu coronátur, ubi Apóstolus Joánnes postéaquàm in óleum ígneum demérsus nihil passus est, in ínsulam relegátur.

AD VESPERAS.

*Hymnus.* Urbem Romúleam, *ut in primis Vesperis.*

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Accédunt ad Jesum Jacóbus & Joánnes fílii Zebedæi, & dixérunt: Da nobis, ut unus ad déxteram tuam, & álius ad sinístram tuam sedeámus in glória tua, allelúia. *Marc.* 10. *v.* 35. 37.

*Oratio,* Deus, qui beátum Joánnem, *ut suprà ad Laud.*

*Pro commemoratione sanctæ Mariæ Ægyptiæ pœnitentis.*

*Ant.* 4. d. Quid tibi vis in via Ægypti, ut bibas aquam túrbidam? Arguet te malítia tua, & avérsio tua increpábit te. *Jer.* 2. *v.* 18. 19.

*Non additur* Allelúia, *nec ad Versum sequentem.*

℣. Iniquitátem meam annuntiábo, ℟. Et cogitábo pro peccáto meo. *Ps.* 37. 19.

*Oratio,* Largíre nobis, *ut infrà ad Laudes.*

DIE VII.

In Festo

S. MARIÆ ÆGYPTIÆ

Pœnitentis.

*Semiduplex.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitatorium.* Dóminum vocántem peccatóres ad pœniténtiam * Veníte, adorémus. *Luc.* 5. 32.

*Non additur* Allelúia *nec ad Antiph.* ℣. *&* ℟. *Nocturni.*

*Psal.* Veníte, *pag.* 2.

*Hymnus.*

O Vos cum cítharis jungite cantus,
Cives æthérei, fémina sacris
Quondam pulsa ádytis, débita cœlo
Nunc ad sídereas tránsvolat arces.

Sacris quæ répulit lóngiùs arcens
Templi limínibus crímine fœdam,
Hæc est illa manus, quæ modò amíca,
Ablútam lácrymis ádmovet aris.

Hæc olim ténebris óbsita densis,
Jam cœlo nova lux úndique fulget,
Et monstrat fáciles prævia portus
Passis naufrágium triste pudóris.

Quæ non divus amor péctora mutat!
Ut cœli rádius fulsit ab alto,
Urbes, seque fugit; nulla sat altos
Quò se condat habet sylva recéssus.

Illi pro thálamo frígida rupes,
Lautis pro dápibus gráminis herba:
Nec soles cálidos veste repéllit,
Nec duras hyémes péllibus arcet.

Patri máxima laus, máxima Nato:
Sit laus æqua tibi Spíritus alme;
Qui, dum sacrílegum pellis amórem,
Puros insínuas córdibus ignes. Amen.

*Dicuntur tres Psalmi ut in Proprio Temporis, cum tribus Antiphonis sequentibus.*

1. *Ant.* 2. d. Prostérnens se Dómino, clamábat ad Dóminum, dicens: Súbveni, quæso te, Dómine Deus meus, mihi. *Judith* 9. *v.* 1. 3.

2. *Ant.* 1. f. Convérte me, & convértar, quia tu Dóminus Deus meus. *Jer.* 31. 18.

3. *Ant.* 5. a. Parcis ómnibus; quóniam tua sunt, Dómine, qui amas ánimas. *Sap.* 11. 27.

℣. Propter nomen tuum, Dómine, propitiáberis peccáto meo, ℟. Multum est enim. *Ps.* 24. 11.

*Lectio j de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

℟. I. Dómine, postquàm convertísti me, egi pœniténtiam; * Erúbui, quóniam sustínui oppróbrium adolescéntiæ meæ. *Jer.* 31. 19. ℣. Deus nunc annúntiat, ut omnes ubíque pœniténtiam agant. *Act.* 17. 30. * Erúbui.

*Lectio II. erit tertia Feriæ occurrentis.*

℟. II. Noli timére, non confundéris, confusiónis adolescéntiæ tuæ oblivíscéris, * Quia ut mulíerem derelíctam & mœréntem spíritu vocávit te Dóminus. *Isa.* 54. *v.* 4. 6. ℣. Miséricors Dóminus est & miserátor. *Jac.* 5. 11. * Quia.

LECTIO III.

*Ex sancta Mariæ Ægyptiæ vita, quæ à Sophronio scripta dicitur, & ex Vitis Patrum.*

Maria Ægyptia, duodecénnis, témpore Justíni Imperatóris, relíctis paréntibus Alexándriam venit: fuítque per annos septémdecim ea in civitáte peccátrix. Cùm autem Jerosólymam profécta, Calváriæ templum in festo Exaltatiónis sanctæ Crucis íngredi tentásset, ter divínitùs repúlsa est. His térrita, ac vitæ prætéritæ per-

tæsa, in átrio coram imágine Deiparæ Vírginis vovit pœniténtiam, & templum ingréditur. Unde recédens, ultra Jordánem in vastíssimam solitúdinem secéssit. Ibi, consúmpto viático, quod secum túlerat, detritísque véstibus, ignóta permánsit annis quadragínta septem, donec Zózimus Présbyter ei occúrreret, à quo obtínuit, ut vésperè in Cœna Dómini afférret sibi corpus & sánguinem Dómini, quorum participatióne tot annis caruerat. Deínde, Maríâ ita postulánte, post annum rédiit Zózimus, & invénit corpus ejus jacens in terra, in qua hæc scripta legit; Sépeli, Zózime, míseræ Maríæ corpúsculum, redde terræ quod suum est; & púlveri ádjice púlverem, orans Deum pro me, quæ mórior nocte salutíferæ Passiónis, post divínæ & sacræ Cœnæ communiónem. Córpori ejus leo advéniens, effóssâ úngulis terrâ, parávit sepúlchrum, & illud Zózimus terræ mandávit.

℟. Pœniténtibus dedit Deus viam justítiæ, & destinávit illis sortem veritátis: * Quàm magna misericórdia Dómini & propitiátio illíus converténtibus ad se! *Eccli.* 17. v. 20. 28. ℣. Deus ipse prior diléxit nos, & misit Fílium suum propitiatiónem pro peccátis nostris. 1. *Joan.* 4. 10. * Quàm magna. ℣. Glória. * Quàm magna.

Dicitur Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Ad meípsum ánima mea conturbáta est, ℟. Proptéreà memor ero tui de terra Jordánis. *Ps.* 41. 7.

*Ant.* 3. a. Confitéberis & laudábis Deum, & gloriáberis in miseratiónibus illíus, allelúia. *Eccli.* 17. 27.

*Ant.* 8. g. Quis, Deus, símilis tui, qui aufers iniquitátem, & transis peccátum reliquiárum hereditátis tuæ! allelúia. *Mich.* 7. 18.

*Ant.* 1. a. In moménto indignatiónis abscóndi fáciem meam parúmper à te, & in misericórdia sempitérna misértus sum tui, allelúia. *Isa.* 54. 8.

*Ant.* 2. D. Misericórdia mea non recédet à te, & fœdus pacis meæ non movébitur: dixit miserátor tuus Dóminus, allelúia. *Ibid.* v. 10.

*Ant.* 7. d. A'modò voca me: Pater meus, dux virginitátis meæ tu es, allelúia. *Jer.* 3. 4.

*Capitulum.* *Jer.* 2. 2.

HÆc dicit Dóminus: Recordátus sum tui, míserans adolescéntiam tuam, & charitátem desponsatiónis

tuæ, quando secúta es me in desérto, in terra, quæ non seminátur.

*Hymnus.*

ULtrix ipsa suos sævit in artus,
Per quos & pótuit pulchra placére;
Defórmis mácies íncubat ori,
Sed formam mélior grátia pensat.
In pœnam scélerum sæpè recúrsant
Importúna malæ gáudia vitæ:
Sed versans ánimo débita noxis
Tot torménta, graves cómprimit æstus.
Tandem digna polo dé-sere terras,
Placásti lácrymis Núminis iram;
Jám tu pasta sacro córpore Christi,
Ætérnæ cápias pábula mensæ.
Patri máxima laus, máxima Nato,
Sit laus æqua tibi, Spíritus alme,
Qui dum sacrílegum pellis amórem,
Puros insínuas córdibus ignes.
Amen.

℣. Bonum mihi quia humiliásti me, allelúia, ℟. Ut discam justificatiónes tuas, allelúia. *Ps.* 118. 71.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6 *irr.* Benedíctus Dóminus: quóniam mirificávit misericórdiam suam mihi, allelúia. *Ps.* 30. 22.

*Oratio.*

LArgíre nobis, miséricors Deus, ut beáta María Ægyptia, quæ te super ómnia diligéndo, suórum accépit véniam delictórum, pœniténtiæ salutáris donum nobis obtíneat; Per Dóminum.

Ad Primam.

*Ant.* 3. a. Confitéberis.

Ad Tertiam.

*Ant.* 8. g. Quis Deus.

*Capitulum. Osee* 2. *v.* 13. 14.

IBat post amatóres suos, & mei obliviscebátur, dicit Dóminus. Propter hoc ecce ego lactábo eam, & ducam in solitúdinem, & loquar ad cor ejus.

℟. *br.* Discédite à me omnes, qui operámini iniquitátem, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Discédite. ℣. Quóniam exaudívit Dóminus vocem fletûs mei. *Ps.* 6. 9. * Allelúia, ℣. Glória. *Repet.* Discédite.

℣. Dixi: Confitébor advérsùm me injustítiam meam Dómino, allelúia, ℟. Et tu remisísti impietátem peccáti mei, allelúia. *Ps.* 31. 5.

Ad Sextam.

*Ant.* 1. a. In moménto indignatiónis.

*Capitulum. Isa.* 44. 22.

DElévi ut nubem iniquitátes tuas, & quasi nébulam peccáta tua: revér-

tere ad me, quóniam redémi te.

℟. br. Dixi; nunc cœpi, * Allelúia, allelúia. Repet. Dixi. ℣. Hæc mutátio déxteræ Excélsi, Ps. 76. 11. * Allelúia. ℣. Glória. Repet. Dixi.

℣. Vias meas enuntiávi, allelúia, ℟. Et exaudísti me, allelúia. Ps. 118. 26.

AD NONAM.

Ant. 7. d. A'modò.

Capitulum. Jer. 3. 1.

FOrnicáta es cum amatóribus multis: tamen revértere ad me, dicit Dóminus, & ego suscípiam te.

℟. br. Delíctum meum cógnitum tibi feci, * Allelúia, allelúia. Repet. Delíctum. ℣. Et injustítiam meam non abscóndi Ps. 31. 5. * Allelúia. ℣. Glória. Repet. Delíctum.

℣. Misericórdia tua magna est super me, allelúia, ℟. Et eruísti ánimam meam ex inférno inferióri, allelúia. Ps. 85. 13.

AD VESPERAS.

Antiph. Confitéberis, cum céteris de Laudibus.

Capitulum. Is. 49. 26.

SCiet omnis caro, quia ego Dóminus salvans te, & Redémptor tuus fortis Jacob.

Hymnus, O vos cum citharis, suprà ad Noct.

℣. Adjútor meus tibi psallam, allelúia, ℟. Quia Deus suscéptor meus es, allelúia. Ps. 58. 18.

Ad Magníficat, Ant. 7. g. Ita gáudium erit in cœlo super uno peccatóre pœniténtiam agénte, allelúia. Luc. 15. 7.

Oratio, Largíre, ut suprà ad Laudes.

DIE IX.

In Festo

SANCTI GREGORII

Nazianzeni Epiſcopi & Eccleſiæ Doctoris.

Semiduplex.

Si hoc Festum occurrat in Vigilia Pentecostes, de eo fit tantùm commemoratio.

Omnia de communi unius Doctoris, servato ritu Paschali juxta Rubric. pag. j.

Oratio, Omnípotens, ut infrà ad Laudes.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

Invit. Fontem sapiéntiæ Dóminum * Veníte, adorémus, allelúia. Eccli. 1. 5.

Psal. Veníte, pag. 2.

Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus fit una.

Lectio secunda erit tertia Feriæ occurrentis.

LECTIO III.

Ex ipsius S. Greg. Carm. & Orat. ac ex antiq. Script. Eccles.

GRegórius, ob singulárem divinárum Litterárum

sciéntiam Theólogus appellátus, Naziánzi in Cappadócia secúnda natus est Gregório patre, qui póstea Nazianzénæ Ecclésiæ curam suscépit. Adoléscens, Cæsaréam primùm, deínde Alexándriam, hinc Athénas, discéndi stúdio, perréxit; ubi amicítiam iniit cum Basílio, & ab Atheniénsibus eloquéntiæ Proféssor est designátus. In pátriam revérsus, baptizátus est. Tum Présbyter à Patre, invitus licèt, creátus; mox, ne ab eódem Epíscopus consecrarétur, fugit in Ponti solitúdinem, ubi cum Basílio monásticæ vitæ institúta cóndidit. Imperánte Juliáno Naziánzum venit, ubi patrem nonagenárium, qui decéptus ab Ariánis confessióni Ariminénsi subscrípserat, addúxit ut subscriptiónem revocáret, eúmque mónachis & magnæ gregis parti quæ ab ipso defecíverat, reconciliávit. Sasimórum Ecclésiæ à Basílio præféctus, ne causa esset dissídii Basílium inter & A'nthimum Tyanénsem Epíscopum de Sasimórum óppido, Episcopátu cessit; & Naziánzum in auxílium patris eâ conditióne venit, ut illo vitâ functo recéderet. Constantinópolim ad restaurándam hujus civitátis Ecclésiam missus, Ariános & Apollinarístas expugnávit. Tantis perfúnctum labóribus Gregórium Petrus Alexandrínus Constantinopolitanórum Epíscopum per epístolas instítuit. Convocátâ deínde Constantinopolitánâ Sýnodo, Gregórius in Concílio, stúdio pacis, se ábdicans, dixit: Si vobis ullómodò dissídii causa sum, Jonam Prophétam vitæ integritáte non súpero, projícite me in mare, & hæ tumúltuum procéllæ conquiéscent. Post hæc à Sýnodo discédens, cùm Nectárius ei substitútus esset, Naziánzum se recépit: unde Cæsaréam proféctus, in laudem Basílii nuper defúncti oratiónem fúnebrem hábuit. Dehinc Naziánzum Præsule orbátam aliquándiu administrávit; eíque Ecclésiæ ab hæresi expurgátæ præficiéndum curávit Eulálium. Rus deínde secéssit, ubi mónachi vitam agens, gravíssimas carnis tentatiónes oratiónibus, jejúniis ac vigíliis superávit. Demum, Theodósio imperánte, decéssit; multis super ægros & energúmenos patrátis in vita miráculis.

## AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitulum. Jonæ 1. 12.*

Dixit ad eos; Tóllite me, & míttite in mare, &

cessábit mare à vobis: scio enim ego, quóniam propter me tempéstas hæc grandis venit super vos.

*Oratio.*

OMnípotens ætérne Deus, qui Ecclésiæ tuæ fílios sicut non cessas erudíre, ita non désinis adjuváre; da fidélibus tuis, intercessióne beáti Gregórii quem eis ætérnæ salútis minístrum tribuísti, ut, te miseránte, & sciéntiam recta faciéndi, & possibilitátem cápiant exequéndi. Per Dóminum.

## DIE XI.

## In Festo S. MAMERTI EPISCOPI.

*Simplex.*

*Omnia de Communi unius Pontificis, servato ritu Paschali.*

*Oratio*, Quæsumus, Dómine, cleméntiam, *pag.* xix.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus fit una.*

*Lectio secunda erit tertia Feriæ occurrentis.*

### LECTIO III.

*Ex Sidon. Apoll. Alcimo, Avito, Greg. Turon. Adone, &c.*

MAmértus circa témpora Clodovéi Magni post Simplícium Viennénsis Epíscopus, ipsâ Domínicæ Resurrectiónis vigíliâ, deflagránte regális palátii arce, cùm cives facultátibus domibúsque suis metuéntes ex Ecclésia discessíssent, ipse solus in ea remánsit, & lácrymis ac oratiónibus incéndium extínguere méruit. Sed jam ántea ferè per anni spátium frequéntes terræ motus plures ejúsdem civitátis domos & Basílicas concússerant: insóliti quoque sónitus noctúrni, & lupi, ursi, ac cervi per urbem oberrántes exitiále quiddam ac ferále minitabántur. Quæ flagélla ut avérteret, eâdem nocte, cívibus post extínctum incéndium ad Ecclésiam revérsis, ánimo concépit instituere solémnes Litanías usitátis sanctióres. Has Litanías solemnióres Mamértus pósteà indíxit triduo antè Ascensiónem Dómini celebrándas in jejúniis, compunctióne cordis, précibus & eleemósynis; ad quas univérsis fidélibus concurréntibus, coórta cessávit calámitas. Eas supplicatiónes mox in tota Gállia præscríptas & observâtas, Roma ipsa Leónis tértii autoritáte ampléxa est. Successórem hábuit Mamértus Hesýchium Senatórem, patrem sancti Alcimi Avíti, ejusdem sedis pósteà Epíscopi. Corpus Mamérti in Basílica Apostolórum extra muros Viennæ sepúltum, post multos annos

dicitur Aureliános allátum ad Basílicam sanctæ Crucis, unde extráctum à Calviniánis incéndio consúmptum est.

℟. Invocávit Dóminum omnipoténtem, * In oblatióne Agni invioláti, allelúia. *Eccli.* 46. 19. ℣. Póntifex debet pro pópulo & pro semetípso offérre pro peccátis. *Hebr.* 5. 3. * In oblatióne. ℣. Glória. * In oblatióne.

## Die XII.

### In Festo S. EPIPHANII EPISCOPI & Ecclesiæ Doctoris.

*Simplex.*

*De Communi unius Doctoris, servato ritu Paschali.*

*Oratia*, Deus qui pópulo tuo, *pag.* xxv.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus fit una.*

*Lectio secunda erit tertia Feria occurrentis.*

#### Lectio III.

*Ex Sozom. lib.* 61. *cap.* 32. & *Hieron. Epist.* 62. *cap.* 4.

Epiphánius in território Eleutheropolitáno in Palæstína ortus, ab ineúnte adolescéntia à præstantíssimis Mónachis institútus est. Apud Ægyptos, Palestínos, & Cyprios, & Mónachus, & Monachórum pater flóruit. A' Cýpriis eléctus est, ut Salamínæ (quæ tunc Constántia vocabátur,) totíus ínsulæ Metrópolis, onus Episcopále suscíperet. Qua ex re per univérsum Orbem máximam nóminis celebritátem adéptus est. Ex antiquórum lectióne eruditiónem, ex pietáte zelum hábuit, quem facíliùs exercébat, si quos veritáti repugnáre, vel nóverat vel suspicabátur; ita ut nec magno Chrysóstomo párceret, Theóphili calúmniis decéptus; sed si qua in his, ut homo peccávit, ardens hæc opéruit cháritas. Ita fuit liberális in egénos, ut facultátibus absúmptis, ubi opus esse videbátur, Ecclésiæ bona impéndere non recusáret. Insígni vitæ conversatióne, atque étiam miráculis cláruit adhuc supérstes. Fuit illi cum Athanásio, Basílio, Dámaso, Hilarióne familiáritas; cum Hierónymo summa conjúnctio, cujus Pauliniánum fratrem Presbýterum ordinávit, & hábuit. Móritur Arcádio príncipe, anno quadringentésimo tértio.

℟. Quæsívit verba utília, * Conscrípsit sermónes rectíssimos ac veritáte plenos, allelúia. *Eccli.* 12. 20. ℣. Potens exhortári in doctrína sana, & eos, qui contradícunt, argúere. *Tit.* 1. 9. * Conscrípsit. ℣. Glória. * Conscrípsit.

## Die XIV.
## In Festo
## S. PACHOMII ABBATIS.
*Simplex.*

*De Communi unius Abbatis, servato ritu Paschali.*

*Oratio*, Intercéssio, *pag.* XXXV.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus fit una.*

*Lectio secunda erit tertia Feriæ occurrentis.*

### Lectio III.
*Ex Vitis Patrum.*

Pachómius in Thebáïde natus paréntes idolólatras hábuit. Christianórum erga mílites benéficâ charitáte motus, Christi fidem & baptísmum suscépit, & Palæmonis disciplínæ se trádidit, ut cum eo vitam anachoréticam ágeret. Morabántur simul, texébant cilícia, & laborábant mánibus suis; vigíliis & contínuis ferè jejúniis corpus affligébant. Pachómius legéndis Scriptúris assíduus, eas memóriter dídicit. In vico Tabennénsi habitatóribus vácuo Monastérium cóndidit, Regulámque ab A'ngelo accépit, ad quam discípulos institúeret. Per quíndecim annos stans, & in dorsum quidem paríeti reclínans somnum cepit. Octo Monastéria Mónachis úndique ad illum accurréntibus ædificávit, præcípiens eis, ut habérent moderátum cibum, vilíssimam vestem, somnum étiam competéntem. Validióribus valióra ópera, infirmióribus levióra imponébat. In solemnitátibus ex vicínis locis Presbýteros advocábat, qui sacra perágerent, & discípulis, sibíque corpus & sánguinem Christi Dómini ministrárent. Nullum enim inter Mónachos qui clericátûs offício fungerétur admittébat. Constrúxit étiam Monastérium, in quo Vírgines Deo dicátæ Mónachos æmulabántur, prævia & imperánte ipsíus soróre. Pachómius tandem labóribus & áspero vivéndi génere consúmptus ánimam Deo réddidit circa annum Christi trecentésimum quadragésimum octávum.

℞. Opéruit cilício carnem suam, * Jejunávit & dormívit in sacco, & ambulávit demísso cápite, allelúia. 3. Reg. 21. 27. ℣. In vigíliis multis, in fame & siti, in frigore & nuditáte. 2. Corint. 11. 27. * Jejunávit. ℣. Glória. * Jejunávit.

## Die XVI.
## In Festo
## SS. MARTYRUM
## pro unitate Catholica occisorum.
*Simplex.*

*De Communi plurimum Mar-*

*tyrum, servato ritu Paschali.*
*Oratio*, Da, Dómine, *ut infrà.*

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio secunda erit tertia Feriæ occurrentis.*

Ex Epístola Petri Alexandrini Epíscopi de his quæ Alexándriæ gesta sunt, autóre Lúcio.

*Apud Theodoretum lib. 4. hist. cap. 22.*

LECTIO III.

PRovínciæ rector Palládius qui sectæ erat gentilis, colléctâ multitúdine, ímpetum in Ecclésiam fecit. Sanctárum Christi Vírginum vestem discidérunt. Multæ dum fústibus cápita verberabantur, mansérunt exánimes. ...c nec córpora quidem sepultúræ mandári permittebantur. Succéssor noster mittitur, qui Episcopátum prétio emerat. Lúcius quidam ab omnibus ubíque ortodóxis ...pe damnátus; in conspéc... ejus has laudes acclamá...nt: Benè advenísti, Epíscope, qui fílium negas. Ma...us impietátis ejus indivi...ius comes, colléctâ multi...dine Presbýteros ac Diáco...s novémdecim comprehén... His illi verbis coácti res...ndérunt: Rectæ ac piæ ...ctrínæ ad extrémum usque spíritum adhæsúri sumus. Accúrrit tota cívitas visúra athlétas Christi, qui flagra júdicis ipsos torquéntis toleránti â suâ superábant. Multi ex fléntibus rapti, laceráti, torti, ad metálla damnáti sunt viri, qui pro Ecclésiæ defensióne divíno zelo incénsi pugnáverant. Cum quibus Diáconus qui à charíssimo nostro Dámaso Epíscopo urbis Romæ consolatórias simul, & communicatórias lítteras attúlerat, mánibus post tergum revínctis públicè à carnifícibus ductus est. Navígium in mari conscéndit sicut céteri divínæ Crucis signo frontem suam consignans.

℟. Tanquàm aurum in fornáce probávit illos Dóminus, * Et quasi holocáusti hóstiam accépit illos, allelúia. *Sap.* 3. 6. ℣. Disténti sunt, non suscipiéntes redemptiónem, ut meliórem inveníren resurrectiónem. *Hebr.* 11. 35. * Et quasi. ℣. Glória. * Et quasi.

*Oratio.*

DA, Dómine, intercessióne sanctórum Mártyrum, qui pro dógmate à Cathólica Ecclésia definíto Unitátis adunáti pastóribus sánguinem effudére, nos iisdem fídei & unitátis vínculis tibi semper adhærére. Per Dóminum...

DIE XXVII.
In Festo
SANCTI ILDEVERTI
Episcopi.
*Simplex.*

*De Communi unius Pontificis, servato ritu Paschali.*

*Oratio*, Exáudi, *p.* xix.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus fit una.*

*Lectio secunda erit tertia Feriæ occurrentis.*

LECTIO III.
*Ex Fast. Eccles. Meld.*

ILdevértus nobílibus & piis paréntibus ortus à beáto Faróne Meldénsi Epíscopo in clericáli milítia institútus, & ad sacros O'rdines sublimátus, Présbyter factus est. In eo gradu arctiórem adhuc vitæ ratiónem cóluit, Scripturárum lectióni atténtus, cilício vestítus ad carnem, hábitu modésto, abstinéntiâ mirábili carnem crucifigens. Quaprópter ómnium votis sancto Faróni suffectus, gregem suum bonus Pastor, non solùm verbo & doctrínâ, quod præcípuum Epíscopi munus est, sed oratiónibus, eleemósynis, benignitáte, ómnium virtútum exémplo pascébat: cœlo tandem matúrus obdormívit in Dómino circa finem séptimi séculi. Sepúltus est in Basílica, quam ædificáverat Vignelíaci prope Meldas. Célebris est cultus sancti Ildevérti in collégio canonicórum Gornacénsium Diœcésis Rotomagénsis, ubi caput ipsíus in pretiósa capsa requiéscit, & frequénti populórum concúrsu honorátur.

℟. Hortabátur omnes in propósito cordis permanére in Dómino, * Quia erat vir bonus & plenus Spíritu sancto, allelúia. *Act.* 11. *v.* 23. 24. ℣. In diébus peccatórum corroborávit pietátem. *Eccli.* 49. 4. * Quia erat. ℣. Glória. * Quia erat.

DIE XXVIII.
In Festo
SANCTI GERMANI
Episcopi.
*Simplex.*

*Oratio*, Da, quǽsumus, *pag.* xix.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio secunda erit tertia Feriæ occurrentis.*

LECTIO III.
*Venant. Fortunat. Pict. Episc. secul. 1. Bened.*

GErmánus apud Æ'duos natus, Présbyter primùm, & Monastérii sancti Symphoriáni Æduénsis Abbas, morum sanctitáte ad Episcopátum Parisiénsis Ecclésiæ assúmptus est. Nihil ibi remísit de vitæ austeritá-

te, quam in Monastério égerat. Horâ noctis tértiâ Ecclésiam ingréssus, non recedébat ante dilúculum, céteris de Clero per tres vigílias sibi vicíssim ad psalléndum succedéntibus. Mira erat ejus in páuperes, máximè verò in servos captivósque rediméndos beneficéntia, & Childebérto regi tam probáta, ut ex régio ærário ad pias largitiónes ingéntem ei pecúniam subministráret. Caribértum unum è Francis régibus qui uxóris sorórem dúxerat, sacris interdíxit. Sigebértum per lítteras à cæde Chilperíci fratris deterrére conátus est, & suis mónitis reluctántem brevi moritúrum prædíxit. In Sýnodo Bituricénsi plúrimos Judæos Christo lucrátus est. Sedit in Concílio Parisiénsi tértio & quarto, & Turonénsi secúndo. O'biit quinto Caléndas Június, corpúsque ejus sepúltum fuit ad sanctum Vincéntium, & sub Pippíno rege in majórem basílicam hujus Monastérii, quòd hódiè ejus nómine San-germánum appellátur, translátum est.

℟. Tríbuit in simplicitáte, Præest in solicitúdine, miserétur in hilaritáte, allelúia. Rom. 12. 8. ℣. In omni ore quasi mel indulcábitur ejus memória. Eccli. 49. 2. * Præest. Glória. * Præest.

FESTA JUNII.

DIE II.

In Festo
SANCTORUM POTHINI
Lugdunensium Episcopi
& Sociorum Martyrum.

*Simplex.*

*Omnia de Communi plurium Martyrum, servato ritu Paschali.*

*Oratio*, Mártyris tui Pothíni & Sociórum, *pag.* xiij.

*Pro commem. SS. Marcellini Presbyteri, & Petri Exorcistæ Martyrum.*

*Ant.* 2. D. Hi sunt qui venérunt de tribulatióne magna, & lavérunt stolas suas, & dealbavérunt eas in sánguine Agni, allelúia. *Apoc.* 7. 14.

℣. In te, Dómine speravérunt, allelúia, ℟. Et liberásti eos, allelúia. *Ps.* 21. 5.

*Oratio*, Deus, qui nos ánnuâ, *pag.* xiij.

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio secunda erit tertia Feriæ occurrentis.*

Ex Epístola Ecclesiárum Viennénsis & Lugdunénsis ad Ecclésias Asiæ & Phrygiæ.

*Apud Euseb. hist. lib.* 5. *Cap.* 1.

LECTIO III.

BEatíssimus Pothínus Lugdunénsis Epíscopus no-

nagenário major, ob córporis infirmitátem vix spíritum trahens, sed præ cupiditáte martyrii mirâ alacritáte ánimi firmátus, ad tribúnal trahebátur. Quò perlátus, prosequéntibus ipsum magistrátibus civitátis, & univérsâ plebe váriis eum clamóribus impeténte, tanquam ipse Christus esset, egrégium édidit testimónium. Interrogátus à præside quisnam esset Christianórum Deus, respóndit: Si dignus fúeris, cognósces. Post hæc inhumánè raptátus & innúmeris plagis affectus est; cùm ii quidem, qui própiùs astábant, cálcibus & pugnis illum contumeliósè appéterent; qui verò lóngiùs distábant, quidquid ad manum erat, in ipsum conjícerent; omnes déniquè gravíssimi piáculi reos se existimárent, nisi pro sua quisque parte ei petulánter insultáret. Exinde vix adhuc spirans in cárcerem projéctus est, tandémque post bíduum ánimam exhalávit: Matúrus verò neóphytus, & Diáconus Ecclésiæ Viennénsis, nómine Sanctus, cum Blandína ancilla, ducti sunt ad béstias in amphiteátrum. Et Matúrus quidem ac Sanctus consuéta illic flagrórum vérbera pertulérunt, & bestiárum ipsos trahéntium morsus, ipsam postrémò férream cáthedram, cui superpósita Mártyrum membra, cum torreréntur, illórum nares molestíssimus nidor implébat. Hi ergo máximo certámine perfúncti, cùm vitálem spíritum diù protraxíssent, tandem juguláti sunt. Blandína autem post flagra, post béstias, post sartáginem retículo inclúsa, tauro objécta est, à quo diù in altum jactáta, demùm & ipsa víctimæ instar jugulata est.

℟. Abstérget Deus omnem lácrymam ab óculis eórum: & mors ultrà non erit, neque luctus, neque clamor: * Quia prima abiérunt, allelúia. *Apocal.* 21. 4. ℣. Accípient regnum decóris, & diadéma speciéi de manu Dómini. *Sap.* 5. 17. * Quia. ℣. Glória. * Quia.

*Ad Laudes, pro commem. SS. Marcellini & Petri.*

*Ant.* 6. f. In mundo pressúram habébitis, sed confídite, ego vici mundum, allelúia. *Joan.* 16. 33.

℣. Custódit Dóminus ánimas sanctórum suórum, allelúia, ℟. De manu peccatóris liberábit eos, allelúia. *Ps.* 96. 10.

*Oratio*, Deus, qui nos ánnuâ, *pag.* xiij.

Die

DIE III.
In Festo
SANCTÆ CLOTILDIS
Francorum Reginæ,
& Viduæ.
*Duplex minus.*

IN PRIMIS VESPERIS.
*Hymnus.*

THURE votívo sacra templa fument,
Glóriam regni cánimus Clotíldem:
Hac genus nostrum dídicit magístrâ
Crédere Christo.

VANA dum regem simulácra fallunt,
Quæ colit verum pia sponsa Numen,
Cállidas hostis malè blandiéntis
I'ndicat artes.

VIX parit natos; renuénte sponso,
Hos Deo reddit melióre partu:
Sicque se prolis dúplici paréntem
Múnere prodit.

QUEM Deum conjux venerátur, orat
Ipse Rex pugnâ ferè profligátus;
Et domum victor redit auditúrus
Verba salútis.

FORMA tu regni nova sis, Clotíldis:
Te novum factis iter edocénte,
*Pars Verna.*
I'nduit puros sibi facta dispar
Gállia mores.

SUMMA laus Patri, Genitóque summa,
Laus tibi compar utriúsque Nexus;
Tuque fac primæ pietátis ardor,
Christe, resúrgat.
Amen.

*Oratio*, Réspice, *ut infrà ad Laudes.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.
*Hymnus*, THURE votívo, *ut suprà.*

*Lectio prima de Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Tertia Lectio Feriæ occurrentis omittitur.*

LECTIO II.
*Ex Gregor. Turon. & aliis scriptoribus apud Duchesne.*

CLotíldis Chilperíci fília Clodovéo adhuc éthnico in conjúgium à pátruo Gundobáldo data, primogénitum Ingómerem, toleránte magis quàm approbánte Clodovéo, baptizári jussit. Cùm autem infántis in Albis defúncti mortem ægrè ferret Clodovéus, ac eam baptísmo tribúeret, gráviter Clotíldem objurgávit, asseevérans deos pátrios ob contémptum sui núminis irátos fílium eripuísse. At illa: Deo, inquit, omnipoténti creatóri ómnium grátias ago, qui me non usquequáque judicávit indígnam,

ut de útero meo génitum regno suo ascíret. Alterum quoque fílium Clodómerem baptizári curávit : quo páriter ægrotánte, irátus est rex, affírmans, fore ut idem ei quod fratri contíngeret : sed matris précibus convaluit. Clotíldis, quæ matrimónio consénserat, eâ lege, ut abjéctâ idololátriâ, verum Deum cóleret Clodovéus, non cessábat hortári príncipem, ut staret promíssis, ejúsque conversiónem ad fidem cum lácrymis & gemítibus enixè postulábat à Deo. At rex Francórum superstitiónibus nímiùm addíctus rem protráxit, donec in expeditióne Allemánnica inclinátam cernens suórum áciem, monitorúmque cónjugis memor, imploráto Christi auxílio, sese voto astrínxit ad suscipiéndam veri Dei Religiónem, si victóriam de hóstibus reportáret. Regína de rebus gestis cértior facta, Regi læta occúrrit apud Rhemos, & advocávit sanctum Remígium civitátis hujus Antístitem, à quo princeps fidem edóctus baptizátus est, & Chrísmate sacro inúnctus. Post Clodovéi mortem Turónes pétiit Clotíldis, ibíque ad sancti Martíni sepúlchrum pernox in vigíliis & oratiónibus, ceterísque piis opéribus inténta réliquum vitæ tempus exégit. Clodómeris in bello Burgúndico occísi fílios nepótes suos, Theobáldum, Guntárium, & Clodoáldum educávit : ac tandem plena diérum Turónis migrávit ad Dóminum, & Parísios inter psalléntum choros transláta, sepúlta est à fíliis Childebérto & Clotário régibus ad latus Clodovéi in sacrário basílicæ sancti Petri, nunc sanctæ Genovéfæ : ibíque ipsíus Relíquiæ in capsa argéntea repósitæ populórum públicæ veneratióni exponúntur. Apud Andeliacum, cujus præcípuam sancta Clotíldis fundáverat Ecclésiam, fit étiam quotánnis máximus populórum undequáque concúrsus, ejúsdem Sanctæ Relíquias reveréndi causâ, & ipsíus apud Deum intercessiónis postulándæ.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 13. 18.

*Parabola grani synapis, & fermenti in farina.*

IN illo témpore : Dicébat Jesus : Cui símile est regnum Dei, & cui símile æstimábo illud ? Símile est grano sinápis, quod accéptum homo misit in hortum suum, & crevit : & factum est in árborem magnam. Et réliqua.

Homilia sancti Ambrósii Epíscopi.

*Comment. lib. 7. in Evang. Luc. cap. 13.*

OPportúnè granum sinápis suprà díximus Christum, quia cor hóminis accéndit: eóque plerique ferméntum Christum putant, quòd virtútem attóllat accéptam. Et quia ferméntum ex farína ut non spécie géneri suo præstat: Christus quoque ex pátribus, æquális córpore, sed divinitáte incomparábilis præminébat. Igitur sancta Ecclésia quæ typo mulíeris illius evangélicæ figurátur, cujus farína nos sumus, Dóminum Jesum in interióribus nostræ mentis abscóndit, donec ánimi nostri secréta penetrália color sapiéntiæ cœléstis obdúcat.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitul. 1. Cor. 7. v. 13. 14.*

SI qua múlier fidélis habet virum infidélem, & hic consentit habitáre cum illa, non dimíttat virum: sanctificátus est enim vir infidélis per mulíerem fidélem.

*Hymnus.*

ORBATA conjux cónjuge príncipe
Secli nocívi tránsfuga nóbilis
Aulâ relíctâ, se, suísque,
Corde Deum meditátur unum.

ORTOS nepótes sánguine régio
Intaminátis móribus ímbuit:
Monstrat perénnes comparáre,
Christe, tibi militándo, palmas.

QUI sceptra patris júraque dívidunt
Natos poténti consílio juvat,
Si fortè peccant, filiórum
Facta piat sibi dura mater.

PRO gente jam fit víctima pública
Ingens volúptas paupériem pati,
Unúsque mentem tangit ardor
Oppróbrio crucis ebriári.

LAUS summa Patri, summaque Fílio,
Sit sancte compar laus tibi, Spíritus,
Tu quam dedísti per Clotíldem,
Fac fidei renovétur ardor. Amen.

*Oratio.*

RE'spice, quǽsumus, Dómine, Francórum benígnus impérium; & quibus per devótam sanctæ Clotíldis instántiam donum fidei contulísti, iísdem per ejus intercessiónem tribue sincérum Christiánæ pietátis afféctum. Per Dóminum.

*In ij. Vesp. Hymnus*, THURE votivo, *ut in j. Vesperis.*

DIE VIII.

In Festo

SANCTI GILDARDI

Pontificis Rotomagensis.

*Semiduplex.*

*Oratio*, Omnipotens, *p. xix.*

*Comm. S. Medardi Episc.*

*Ant.* 1. d. Dedit illi Dóminus legem vitæ & disciplínæ, docére Jacob testaméntum suum, & judícia sua Iſraël, allelúia. *Eccli.* 45. 6.

℣. Véritas mea & misericórdia mea cum ipso, allelúia. ℟. Et in nómine meo exaltábitur cornu ejus, allelúia. *Ps.* 88. 25.

*Oratio*, Misericórdiam, *ut infrà.*

*Lectio j. ex Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Lectio ij. erit tertia Feria.*

LECTIO III.

*Boll. Tom.* 3. 3. *Febr. Caint. Ann.* 486. 488.

GIldárdus ordinátus Présbyter anno quadringentésimo septuagésimo tértio, & eo múnere per quíndecim annos cum laude perfúnctus, Rotomagénsis Epíscopus consecrátus est. Anno quingentésimo undécimo tanquàm Metropolíta secúndæ Províncíæ Célticæ intérfuit Concílio primo Aurelianénsi, quod regnánte Clodovéo hábitum est. Sancto Laudo Constantiénsi Epíscopo manus impósuit, & plenus méritis óbiit in Dómino. Sepúltus est in Ecclésia Rotomagénsis civitátis Vírgini Deíparæ dedicáta, cui deínceps sancti Gildárdi nomen índitum est. Sanctum Flávium hábuit successórem qui anno quingentésimo trigésimo tértio sedit in Concílio Aurelianénsi secúndo.

*Pro commem. S. Medardi.*

*Ant.* 4. f. Ipsum elégit Dóminus ab omni vivénte offérre sacrifícium Deo, incénsum, & bonum odórem pro pópulo suo, allelúia. *Eccli.* 45. 20.

℣. Exaltávi eléctum de plebe mea, allelúia. ℟. Oleo sancto meo unxi eum, allelúia. *Ps.* 88. v. 20. 21.

*Oratio.*

MIsericórdiam tuam nobis, quæsumus, Dómine, sancti Medárdi Pontíficis intercéssio beáta concíliet, ut, qui incessábili culpâ offéndimus, ejúsdem assíduis précibus ab omni reátu liberémur. Per Christum.

DIE XI.

In Festo

SANCTI BARNABÆ

Gentium Apostoli.

*Duplex majus.*

IN PRIMIS VESPERIS.

*Capitulum. Isai.* 42. 6.

EGo Dóminus vocávi te in justítia, & apprehéndi

manum tuam, & servávi te, & dedi te in fœdus pópuli, in lucem Géntium.

℞. Relínquent Gentes idóla sua: * Vénient in Jerúsalem, & inhabitábunt in ea, & † Gaudébunt in ea omnes reges terræ, adorántes regem Israël, allelúia. *Tob.* 14. *v.* 8. 9. ℣. Paulus, & Bárnabas dixérunt: Quóniam repéllitis verbum Dei; ecce convértimur ad Gentes. *Act.* 13. 46. * Vénient. ℣. Glória Patri. † Gaudébunt.

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

COELO datur quiéscere,
Terris relíctis, Bárnaba:
Solémnis hæc affert tuis
Finem dies labóribus.

QUEM propter, agro véndito,
Opes cadúcas déseris
Magno repéndens fœnore
En fundus ipse fit tuus.

TU sacra per jejúnia,
Intérque solémnes preces,
Jubénte sancto Spíritu,
Christi creáris Núntius.

SIT laus Patri, laus Fílio,
Qui nos triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat,
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

*Oratio*, Deus, qui beátum, *ut infrà ad Laudes.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Tres Psalmi, ut notatur in Proprio de Tempore, cum tribus Antiphonis Versic. & Respons. de Communi.*

*Lectio prima ex Scriptura occurrente, ex duabus una.*

*Omittitur tertia Lectio Feria occurrentis.*

LECTIO II.

*Ex Actibus Apostolorum & Usuardo.*

BA'rnabas, qui & Joseph, Levítes génere, Cýprius orígine, prétium agri, quem possidébat, áttulit ad pedes Apostolórum, ad quos & pósteà Paulum addúxit recèns convérsum. Jerosólymis Antiochíam missus ab Ecclésia, quæ accéperat quosdam ibi discípulos, Dóminum Jesum Græcis annuntiásse, cùm vidísset grátiam Dei, gavísus est, & hortabátur omnes in propósito cordis permanére in Dómino. Proféctus est inde Tarsum, ut quǽreret Paulum, quem cùm invenísset, perdúxit Antiochíam: & annum totum conversáti sunt ibi in Ecclésia, & docuérunt turbam multam, ita ut cognominaréntur primùm Antiochíæ discípuli Christiáni. Postquàm autem ibi cum Prophétis & Doctóribus ministrássent Dómino Bárnabas & Saulus, & jejunássent; dixit Spíritus sanctus: Segregáte mihi Saulum & Bárnabam in opus ad quod assúmpsi eos. Tunc jejunántes & orántes,

imponentésque eis manus, dimisérunt illos. Et ipsi quidem missi à Spíritu sancto, abiérunt Seleúciam, & inde navigavérunt Cyprum, ac multas prætéreà urbes regionésque peragravérunt, prædicántes Evangélium & confirmántes ánimas discipulórum, exhortantésque ut permanérent in fide: & quóniam per multas tribulatiónes opórtet nos intráre in regnum Dei. Cùm autem Lystris propter claudum à Paulo sanátum pro diis haberéntur, vocaréntque turbæ Bárnabam Jovem, Paulum verò Mercúrium; illi conscissis túnicis suis prohibuérunt ne turbæ ipsis immolárent, constitutísque per síngulas Ecclésias Presbyteris, navigavérunt Antiochíam, unde erant tráditi grátiæ Dei in opus, quod complevérunt. Ortâ ibi seditióne, propter Judæos, qui volébant Gentes ad Deum convérsas circuncídi, statútum est ut Saulus & Bárnabas rem Jerúsalem ferrent ad Apóstolos, qui in Concílio nil ex legis jugo discípulis imponéndum decrevérunt, quàm hæc necessária: Ut ab immolátis, sánguine, & suffocáto, ac fornicatióne abstinérent; commendaruntque Bárnabam ac Paulum, ut qui pro Christi nómine suas tradíderant ánimas. Hinc revérsi sunt Antiochíam, unde pósteà Paulus Asiam pétiit, Bárnabas autem unà cum Joánne qui cognominátus est Marcus, navigávit in Cyprum; multísque demùm perfúnctus pro Christo labóribus, glorióso fine quiévit. Corpus ejus prope Salamínam Cypri Metrópolim, Zenóne imperánte, repértum est; ad cujus pectus erat Evangélium Matthæi, ipsíus Bárnabæ manu scriptum.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 10. 1.

*Missio Apostolorum.*

IN illo témpore; Designávit Dóminus & álios septuagínta duos, & misit illos binos ante fáciem suam, in omnem civitátem & locum, quò erat ipse ventúrus. Et réliqua.

Homilía sancti Gregórii Papæ.

*Hom.* 17. *in Evang.*

DOminus & Salvátor noster, fratres charissimi, aliquándo nos sermónibus, aliquándo verò opéribus ádmonet. Ipsa étenim facta ejus præcépta sunt: quia dùm áliquid tácitus facit, quid ágere debeámus innotéscit. Ecce enim binos in prædicatiónem discípulos mittit: quia duo sunt præcépta charitátis, Dei

videlicet amor, & próximi: & minus quàm inter duos, habéri cháritas non potest. Nemo enim própriè ad semetípsum habére charitátem dícitur, sed diléctio ad álterum tendit, ut esse cháritas possit. Ecce enim binos ad prædicándum Dóminus discípulos mittit: quátenus hoc tácitus nobis ínnuat: quia qui charitátem erga álterum non habet, prædicatiónis offícium suscípere nullátenus debet. Benè autem dícitur, quia misit eos ante fáciem suam in omnem civitátem & locum, quò erat ipse ventúrus: prædicatóres enim suos Dóminus séquitur, quia prædicátio prævenit, & tunc ad mentis nostræ habitáculum Dóminus venit, quando verba exhortatiónis præcúrrunt: atque per hoc véritas in mente suscípitur.

AD LAUDES MATUTINAS.

*Capitulum. Act. 13. v. 7. 12.*

PRocónsul Sérgius Paulus, accersítis Bárnaba & Paulo, desiderábat audíre verbum Dei, tunc cùm vidísset factum, crédidit admírans super doctrína Dómini.

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

PAULI labórum párticeps,
Consors & in perículis,
Vos unus ambo Spíritus
Vos una junxit cháritas.

QUAM vestra gens Christi fidem
Luci rebéllis réppulit,
Nil hæsitántes, éxteris
Portástis illam Géntibus.

FAC, Christe, nostris se tuum
Cum lumen offert méntibus,
Amóre ne noctis suæ
Cœléste donum réspuant.

SIT laus Patri, laus Fílio,
Qui nos triumphátâ nece,
Ad astra secum dux vocat;
Compar tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Annuntiavérunt ópera Dei, allelúia. ℟. Et facta ejus intellexérunt, allelúia. *Psal.* 63. 10.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 3. e. Cùm venissent Antiochíam Bárnabas & Paulus, & congregássent Ecclésiam, retulérunt quanta fecisset Deus cum illis, & quia aperuísset Géntibus óstium fídei, allelúia. *Act.* 14. 25.

*Oratio.*

DEus, qui beátum Bárnabam plenum fide, & Spíritu sancto, ad opus vocatiónis & conversiónis Géntium assúmere dignátus es; concéde ut mémores óperis & charitátis ejus, dignè Evangélio Christi, quod prædicávit, conversári mereámur. Per eúmdem .... in unitáte ejúsdem Spíritûs sancti Deus. Per ómnia.

AD TERTIAM.

*Capitulum. Act.* 13. 43.

SEcúti sunt multi Judæórum, & coléntium advenárum, Paulum & Bárnabam, qui loquéntes suadébant eis, ut permanérent in grátia Dei.

AD SEXTAM.

*Capitul. Act.* 13. *v.* 46. 47.

COnstánter Paulus & Bárnabas dixérunt : Vobis oportébat primùm loqui verbum Dei : sed quóniam repéllitis illud, & indígnos vos judicátis ætérnæ vitæ, ecce convértimur ad Gentes : sic enim præcépit nobis Dóminus.

AD NONAM.

*Capitulum. Act.* 11. 25.

PRoféctus est Bárnabas Tarsum, ut quǽreret Saulum : quem cùm invenísset, perdúxit Antiochíam. Et annum totum conversáti sunt ibi in Ecclésia, & docuérunt turbam multam.

AD VESPERAS.

*Capitulum. Act.* 13. *v.* 50. 51. 52.

JUdæí concitavérunt mulíeres religiósas & honéstas in Paulum & Bárnabam, & ejecérunt eos de fínibus suis : at illi, excússo púlvere pedum in eos, venérunt Icónium. Discípuli quoque replebántur gáudio, & Spíritu sancto.

*Hymnus*, Cœlo datur quiéscere, *ut ad primas Vesperas.*

DIE XVI.

SS. CYRICI ET JULITTÆ Matris ejus, Martyrum

*Commemoratio pridiè in Vesperis,*

*Ant.* 6. f. Immúndo pressúram habébitis.

℣. Custódit Dóminus.

*Oratio*, Deus, qui nos ánnuâ, *pag.* xiij.

*In Laudibus,*

*Ant.* 2. D. Hi sunt.

℣. In te, Dómine, *p.* xvj.

DIE XIX.

SANCTORUM GERVASII ET PROTASII, Martyrum.

*Commemoratio pridiè in Vesperis,*

*Ant.* 6. f. In mundo pressúram habébitis.

℣. Custódit Dóminus.

*Oratio*, Mártyrum tuórum, Dómine, *pag.* xiij.

*In Laudibus,*

*Ant.* 2. D. Hi sunt.

℣. In te, Dómine, *p.* xvj.

COMMUNE

# COMMUNE SANCTORUM.

## *Pars Verna.*

*In omni Officio de Sanctis dicuntur Psalmi de Feria, nisi aliter notetur.*

*Tempore Paschali post Antiphonas, Versiculos & Responsoria additur unum* Allelúia. *Ad Horas additur duplex* Allelúia *Responsoriis brevibus. Ubi in Proprio Sanctorum non notatur Invitatorium proprium Tempore Paschali in Festis semiduplic. & suprà, dicitur sequens*

*Invitatorium.* Justi in perpétuum vivent, * Allelúia. *Sapient.* 5. 16.

## COMMUNE APOSTOLORUM.

### In primis Vesperis.

*Antiphona Toni* 1. a.



Os Sacerdótes Dómini vocabímini: Minístri Dei nostri, fortitúdinem Géntium comedétis. *Isa.* 61. 6.

*Ant.* 2. D. Vocabúntur fortes justítiæ, plantátio Dómini ad glorificándum. *Ibid. v.* 3.

*Ant.* 3. a. Ædificábunt desérta à século, & ruínas antíquas érigent. *Ibid. v.* 4.

*Ant.* 4. e. Omnes qui víderint eos, cognóscent illos, quia isti sunt semen, cui benedíxit Dóminus. *Ibid. v.* 9.

*Ant.* 5. a. In terra sua dupplícia possidébunt, lætítia sempitérna erit eis. *Ibid. v.* 7.

*Capitulum. Isa.* 61. *v.* 8. 9.

DAbo opus eórum in veritáte, & fœdus perpétuum fériam eis. Et scient in Géntibus semen eórum, & germen eórum in médio populórum.

℟. In omnem terram exívit sonus eórum; * Et in fines orbis terræ verba eórum. *Ps.* 18. 5. ℣. Illi profécti prædicavérunt ubíque, Dómino cooperánte. *Marc.* 16. 20. * Et in fines. ℣. Glória Patri. * Et in fines.

*Hymnus.*

TArtari diræ páveant cohórtes;
Bella divínum meditátur agmen.

In suis unctis, Deus ipse miles
Prælia tentat.
PRÓDEUNT tecti gáleâ salútis:
Cum Crucis signo gladióque verbi
I'ntonant Christum, ruit ecce præceps
Hostis in umbras.
PAX tuos ergo manet alta fines,
Christe, jam liber tibi servit Orbis,
Jam tuis latè tua sponsa regnat
Tuta ministris.
SU'STINENT curas gregis, & quiéscit:
Léniunt flendo lácrymas geméntum;
Quam fidem verbis docuére, fuso
Sánguine firmant.
QUÆ fide, mundi ténebras repéllis
Laus tibi jugis Déitas suprema;
Fac ad ætérnæ dóciles regámur
Páscua vitæ. Amen.

℣. Magnificéntiam glóriæ sanctitátis tuæ loquéntur. ℟. Et mirabília tua narrábunt. *Ps.* 144. 5.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Quàm pulchri super montes pedes annuntiántis & prædicántis pacem, annuntiántis bonum, prædicántis salútem, dicéntis Sion: Regnábit Dóminus Deus tuus. *Isa.* 52. 7.

*Oratio propria.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Apóstolum confessiónis nostræ Jesum * Venite adorémus. *Hebr.* 3. 1.

*Psal.* Venite, *pag.* 2.

*Hymnus.* *Sanctol. Vict.*

SUPRÉME quales árbiter
Tibi minístros éligis,
Tuas opes qui vsibus
Vasis amas commíttere!
TOTUM per orbem núntii,
Nubes velut, citi volant:
Verbo graves, Verbo Deo,
Tonant, corúscant, pérpluunt.
CHRISTUM sonant, versa ruunt
Arces supérbæ dæmonum:
Circùm tubis clangéntibus
Sic versa quondam mœnia.
FAC, Christe, cœléstes tubæ
Somno graves nos éxcitent,
Accénsa de te lúmina
Pellant tenébras méntium.
UNI sit & Trino Deo
Supréma laus, summum decus,
De nocte qui nos ad suæ
Lumen vocávit glóriæ.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 5. a. Fecit ut essent duódecim cum illo, & ut mítteret eos prædicáre. *Marc.* 3. 14.

*Ant.* 7. c. Dedit illis potestátem curándi infirmitátes & ejiciéndi dæmónia. *Ibid.* v. 15.

*Ant.* 2. d. Ignobília mundi elégit Deus, & ea quæ non sunt, ut ea quæ sunt destrúeret. 1. *Cor.* 1. 28.

℣. Annuntiáte inter Gentes glóriam Dómini, ℟. In ómnibus pópulis mirabília ejus. *Psal.* 95. 3.

℟. I. Vocávit Jesus discípulos suos, & elégit duódecim ex ipsis, * Quos & Apóstolos nominávit. *Luc.* 6. 13. ℣. Laudémus viros gloriósos, & paréntes nostros in generatióne sua. *Eccli.* 44. 1. * Quos & Apóstolos.

℟. II. Sublevátis óculis in cœlum, dixit Jesus: Pro eis sanctífico meípsum, * Ut sint & ipsi sanctificáti in veritáte. *Joan.* 17. *v.* 1. 19. ℣. Sanctificábunt sanctum Jacob & Deum Iſraël prædicábunt. *Isa.* 29. 23. * Ut sint.

℟. III. Accédens Jesus locútus est úndecim discípulis, dicens: Eúntes docéte omnes Gentes. Et ecce ego vobíscum sum ómnibus diébus, * Usque ad consummatiónem séculi. *Matth.* 28. *v.* 18. 19. 20. ℣. Fílii eórum propter illos, usque in ætérnum manent. *Eccli.* 44. 13. * Usque. ℣. Glória Patri. * Usque.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 8. c. Exeúntes prædicábant ut pœniténtiam ágerent. *Marc.* 6. 12.

*Ant.* 3. g. Loquebántur verbum Dei cum fidúcia & virtúte magna. *Act.* 4. *v.* 31. 33.

*Ant.* 6. f. Beáti estis cùm maledíxerint vobis, & persecúti vos fúerint. *Matth.* 5. 11.

℣. Eúntes ibant & flebant. ℟. Mitténtes sémina sua. *Ps.* 125. 6.

℟. IV. Per manus Apostolórum * Fiébant signa & prodígia multa in plebe. *Act.* 5. 12. ℣. Pósuit in eis verba signórum suórum & prodigiórum. *Ps.* 104. 27. * Fiébant.

℟. V. Magnificábat eos pópulus: * Magis autem augebátur credéntium in Dómino multitúdo. *Act.* 5. *v.* 13. 14. ℣. Addúcent omnes de cunctis Géntibus donum Dómino. *Isa.* 66. 20. * Magis autem.

℟. VI. Cùm tradent vos, nolíte cogitáre quómodò aut quid loquámini: * Non vos estis qui loquímini, sed Spíritus Patris vestri, † Qui lóquitur in vobis. *Matth.* 10. *v.* 19. 20. ℣. Loquímini ad viros Juda, & ad habitatóres Jerúsalem. *Jerem.* 11. 2. * Non vos. ℣. Glória. † Qui lóquitur.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 1. D. Injecérunt in Apóstolos manus, & posuérunt eos in custódiam. *Act.* 4. 3.

*Ant.* 4. e. Cæsis denuntia-

vérunt ne omníno loqueréntur in nómine Jesu. *Act.* 5. 40.

*Ant.* 8. g. Tradidérunt ánimas suas pro nómine Dómini nostri Jesu Christi. *Act.* 15.26.

℣. Confitébimur tibi, Deus, & invocábimus nomen tuum; ℟. Narrábimus mirabília tua. *Psal.* 74. *v.* 1. 2.

℟. VII. Cùm pertransírent civitátes, tradébant eis * Custodíre dógmata. *Act.* 16. 4. ℣. Super muros tuos, Jerúsalem, constítui custódes. *Isa.* 62. 6. * Custodíre.

℟. VIII. Ibant gaudéntes à conspéctu concílii, quóniam digni hábiti sunt * Pro nómine Jesu contuméliam pati. *Act.* 5. 41. ℣. Dabo vos in nomen & in laudem ómnibus pópulis terræ. *Soph.* 3. 20. * Pro nómine.

℟. IX. Ludíbria & vérbera expérti sunt, insuper & víncula & cárceres: lapidáti sunt, secti sunt, tentáti sunt, in occisióne gládii mórtui sunt: * Circuiérunt egéntes, angustiáti, afflícti: quibus dignus non erat mundus. *Hebr.* 11. *v.* 36. 37. ℣. Deus tentávit eos, & invénit illos dignos se. *Sap.* 3. 5. * Circuiérunt. ℣. Glória. * Circuiérunt.

Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Sapiéntiam ipsórum narrent pópuli. ℟. Et laudem eórum núntiet ecclésia. *Eccli.* 44. 15.

*Ant.* 1. F. Exúlta cœlum, & sancti Apóstoli, quóniam judicávit Deus judícium vestrum. *Apoc.* 18. 20.

*Ant.* 8. c. Judícium datum est illis, & vixérunt, & regnavérunt cum Christo. *Ibid.* 20. 4.

*Ant.* 5. f. In generatiónibus gentis suæ glóriam adépti sunt, & in diébus suis habéntur in láudibus. *Eccli.* 44. 7.

*Ant.* 7. d. Gaudéte quòd nómina vestra scripta sunt in cœlis. *Luc.* 10. 20.

*Ant.* 2. d. In fundaméntis Jerúsalem, nómina duódecim Apostolórum Agni. *Ap.* 21. 14.

*Capitulum. Eph.* 2. *v.* 19. 20.

FRatres, jam non estis hóspites & ádvenæ, sed estis cives Sanctórum, & doméstici Dei; superædificáti super fundaméntum Apostolórum & Prophetárum, ipso summo anguléri lápide Christo Jesu.

*Hymnus.*

JAm non bella furunt: post data prælia
In longa plácidi pace quiéscitis;
Ætérnis toleráta
Mors pensátur honóribus.
Pœnas quanta breves glória víndicat!
Vos cœléstis habet cúria príncipes;

Bissénis duodéni
Regnátis modò sédibus.
Gens per vos Súperûm cœ-
tibus áddita
Cœlo vos géminis pláusibus
éxcipit,
Certat prompta corónas
Vestris néctere fróntibus.
Per vos assíduis culta labó-
ribus
Tellus nos ségetes pínguior
áttulit:
Vestram ferte supérni
Messem patris in hórrea.
Sit laus summa Patri, súm-
maque Fílio
Sit par sancte tibi glória, Spí-
ritus,
Qui Christi nova jura
Promúlgas per Apóstolos.
Amen.

℣. Constítues eos príncipes super omnem terram; ℞. Mémores erunt nóminis tui, Dómine, *Ps.* 44. *v.* 17. 18.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. d. In regeneratióne cùm séderit Fílius hóminis in sede majestátis suæ, sedébitis & vos super sedes duódecim, judicántes duódecim tribus Israël. *Matth.* 19. 28.

*Oratio propria.*

Ad Horas, *Antiphona de Laudibus, & sic deinceps.*

Ad Primam.

*Ant.* 1. F. Exúlta cœlum.

*Capitulum.* Regi seculórum, *ut in Psalterio.*

*CANON, ut habetur in Proprio de Tempore.*

*In Solemnibus & per Octavam, in Triplicibus primæ Classis & in die Octava; in Triplicibus secundæ Classis, non intra Octavam, nec à Septuagesima ad Pascha, in Responsoriis brevibus ad Horas dicuntur duo* Allelúia, *ut in Tempore Paschali.*

Ad Tertiam.

*Ant.* 8. c. Judícium datum est.

*Capitulum. Sap.* 3. 8.

Judicábunt natiónes & dominabúntur pópulis, & regnábit Dóminus illórum in perpétuum.

℞. *breve.* Sedérunt sedes, * In judício. *Repet.* Sedérunt. ℣. Sedes super domum David. *Ps.* 121. 5. * In judício. ℣. Glória. *Repet.* Sedérunt.

℣. Príncipes populórum congregáti sunt, ℞. Cum Deo Abraham *Ps.* 46. 10.

*Oratio propria.*

Ad Sextam.

*Ant.* 5. f. In generatiónibus.

*Capitulum. Judæ* 17.

Charíssimi, mémores estóte verbórum quæ prædícta sunt ab Apóstolis Dómini nostri Jesu Christi.

℞. *breve.* Annuntiavérunt cœli * Justítiam ejus. *Repet.* Annuntiavérunt. ℣. Et vidé-

runt omnes pópuli glóriam ejus. * Justítiam. ℣. Glória. *Repet.* Annuntiavérunt. *Ps.* 96. 6.

℣. Non sunt loquélæ neque sermónes, ℟. Quorum non audiántur voces eórum. *Ps.* 18. 4.

*Oratio propria.*

AD NONAM.

*Ant.* 2. d. In fundaméntis Jerúsalem.

*Capitulum. Apoc.* 21. 21.

DUódecim portæ, duódecim margarítæ sunt, per singulas: & singulæ portæ erant ex singulis margarítis.

℟. *breve.* Nimis honorificáti sunt * Amíci tui, Deus. *Repet.* Nimis. ℣. Nimis confortátus est principátus eórum. *Psal.* 138. 17. * Amíci ℣. Glória. *Repet.* Nimis.

℣. Dii fortes terræ ℟. Veheménter eleváti sunt. *Psal.* 46. 10.

*Oratio propria.*

AD VESPERAS.

*Antiphona.* Exúlta cœlum, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum. 2. Cor.* 5. 19.

POsuit in nobis Deus verbum reconciliatiónis: pro Christo ergo legatióne fúngimur, tanquàm Deo exhortánte per nos: obsecrámus pro Christo, reconciliámini Deo.

*In Festis Triplicibus,* ℟. IX. Ludíbria, *de Officio nocturno.*

*Hymnus,* TARTARI diræ, *ut in primis Vesperis.*

℣. Annuntiavérunt ópera Dei, ℟. Et facta ejus intellexérunt. *Psal.* 63. 10.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 8. g. Quæcúnque alligavéritis super terram, erunt ligáta & in cœlo: & quæcúnque solvéritis super terram, erunt solúta & in cœlo. *Matth.* 18. 18.

*Oratio propria.*

---

# COMMUNE UNIUS MARTYRIS.

## IN PRIMIS VESPERIS.

1. *Ant.* 2. d. Justus quasi leo confídens, absque terróre erit. *Prov.* 28. 1.

2. *Ant.* 3. a. Timórem & metum, & probatiónem indúcet super illum Dóminus: donec credat ánimæ illius. *Eccli.* 4. 19.

3. *Ant.* 1. a. In tentatióne Deus illum conservábit, non illidétur quasi in procélla navis. *Ibid.* 33. *v.* 1. 2.

4. *Ant.* 7. C. Firmábit illum, & lætificábit, & thesaurizábit super illum intelléctum justítiæ. *Ibid.* 4. *v.* 20. 21.

5. *Ant.* 6. f Usque in tempus sustinébit pátiens, & pósteà reddítio jucunditátis. *Ib.* 1. 29.

*Capitulum. Isa.* 12. 2.

ECce Deus Salvátor meus, fiduciáliter agam, & non timébo: quia fortitúdo mea & laus mea Dóminus.

*In Duplicibus minoribus & suprà.*

℟. Benedíctus vir, qui confídit in Dómino,* Erit Dóminus fidúcia ejus, † Non timébit cùm vénerit æstus. *Jer.* 17. *v.* 7. 8. ℣. Qui sustinúerit in finem, hic salvus erit. *Marc.* 13. 13. * Erit Dóminus. ℣. Glória. † Non timébit.

*Hymnus. Sanctol. Victor.*

FElix morte tuâ, qui cruciátibus
Cœlo difficilem rúmpere amas viam;
Et signáre cruóre
Quam Christo déderas fidem.

Pœnis victa quibus defíceret fides,
Tu pœnas ávidâ mente præóccupas,
Cui non súfficit una,
Ambis innúmeras neces.

Te pro lege sua magnánimum mori,
Te Christus púgilem spectat ab æthere:
Ne succúmbere possis,
Tecum prælia sústinet.

Et nos delícias, vana per ótia,
Gens infída Deo, quærimus ánxii:
Quid torpémus? inértes
Sanguis Mártyris éxcitat.

Patri máxima laus, máxima Fílio
Sit par sancte tibi glória, Spíritus;
Quo donánte corónam
Invíctus pugil óbtinet.
Amen.

℣. In Deo sperávi, ℟. Non timébo quid fáciat mihi homo. *Ps.* 55. 11.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 5. f. Pro certo habet omnis qui te colit, Dómine, quòd vita ejus, si in probatióne fúerit, coronábitur. *Tob.* 3. 21.

*Si sit Pontifex.*

*Oratio.*

DEus, qui in ómnium Sanctórum tuórum es virtúte mirábilis, da nobis beáti N. Mártyris tui atque Pontíficis festivitátem imitatióne celebráre, qui Fílii tui fidem verbo prædicávit, & confirmávit exémplo. Per eúmdem Dóminum.

*Alia Oratio.*

DEus, qui beátum N. Mártyrem tuum atque Pontíficem, ad prædicándum erudísti, & ad perseverándum roborásti: da nobis, ex ejus imitatióne fidéles instrúere exémplo, & confirmáre patiéndo. Per Dóminum.

*Si non sit Pontifex.*

*Oratio.*

PRæsta, quæsumus, omnípotens Deus, ut, qui beáti N. Mártyris tui natalítia cólimus, intercessióne ejus in tui nóminis amóre roborémur. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

DEus, qui beátum N. Mártyrem tuum virtúte constántiæ in passióne roborásti, ex ejus nobis imitatióne tribue, pro amóre tuo próspera mundi despícere, & nulla ejus advérsa formidáre. Per Dóminum.

*Temp. Pasch. si sit Pontifex.*
*Oratio.*

OMnipotens sempitérne Deus, qui in ómnium Sanctórum tuórum es virtúte mirábilis; da nobis beáti N. festivitátem imitatióne celebráre; qui Fílii tui Martyr & Póntifex, fidem, quam prædicávit, testimónio comprobávit, & confirmávit exémplo. Per eúmdem.

*Si non sit Pontifex.*
*Oratio.*

DEus, quo donánte beátus N. complantátus factus est similitúdini mortis Christi, concéde ut Mártyris tui exémplis & précibus adjúti, simus cum illo partícipes resurrectiónis ejúsdem Jesu Christi Fílii tui, qui tecum vivit.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Christum qui dat vincénti manna abscónditum *Venite adorémus. *Apoc.* 2. 17.

*Psal.* Veníte, *pag.* 2.

*Hymnus. Sanctol. Victor.*

EX quo, salus mortálium,
Fluxit sacer Dei cruor;
Homo redémptus ǽmulum
Deo litávit sánguinem.

NON jam crucis Christi pudet;
Deum fatéri mórtuum,
Pro mórtuo mori Deo
Est grande votum Mártyris.

PLENUS supérno Spíritu
Ridet minas, ridet cruces,
Tuâque fretus dexterâ,
Tibi, Redémptor, mílitat.

PARATA spectans prǽmia,
Secúrus ad pœnas volat;
Sic pugnat ut speret mori,
Et morte mortem víncere.

UNUS tot armátas manus
Stupénte lassat júdice;
Et tortus ipse qui cadit,
Torquéntibus fit fórtior.

DA, Christe, tanti mílitis
Æquáre facta fórtia:
Da sustinére pro tuo,
Quodcúnque durum, nómine.

ÆTERNE tu Verbi Pater,
Ætérne Fili, par Patri,
Et par utríque, Spíritus,
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 1. D. Qui certat in agóne, non coronátur nisi legítimè certáverit. 2. *Timoth.* 2. 5.

*Ant.* 2. d. Qui vícerit, non lædétur à morte secúnda. *Apoc.* 2. 11.

*Ant.* 3. c. Hæc est grátia, si propter Dei consciéntiam sústinet quis tristítias, pátiens injústè. 1. *Petr.* 2. 19.

℣. Diligam te, Dómine. ℟. Fortitúdo mea. *Ps.* 17. 1.

℟. I. Patiénter sústinens, * Destinávit non admíttere illícita propter vitæ amórem. 2. *Machab.* 6. 20. ℣. Conféssus bonam confessiónem coram multis téstibus. 1. *Timoth.* 6. 12. * Destinávit.

℟. II. Certámen forte dedit illi Dóminus * Ut vínceret, & sciret quóniam ómnium poténtior est sapiéntia. *Sap.* 10. 12. ℣. Confortátus est fide, dans glóriam Deo. *Rom.* 4. 20. * Ut vínceret.

℟. III. Custodívit illum ab inimícis, * Descéndit Dóminus cum illo in fóveam, & † In vínculis non derelíquit illum. *Sap.* 10. *v.* 12. 13. 14. ℣. Misérunt eum in cárcerem præcipiéntes custódi ut diligénter custódiret eum. *Act.* 16. 23. * Descéndit. ℣. Glória. † In vínculis.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 4. d. In fraude circunveniéntium illum áffuit illi Dóminus, & à seductóribus tutávit illum. *Sap.* 10. *v.* 11. 12.

*Ant.* 5. a. A'ttulit illi poténtiam advérsùs eos, qui eum deprimébant. *Ibid. v.* 14.

*Ant.* 6. *irreg.* Intrávit in ánimam servi sui, & stetit contra reges horréndos in porténtis & signis. *Ibid. v.* 16.

℣. Príncipes persecúti sunt me gratis, ℟. Et à verbis tuis formidávit cor meum. *Ps.* 118. 161.

℟. IV. Propter opus Christi usque ad mortem accéssit, * Tradens ánimam suam. *Philip.* 2. 30. ℣. Gloriosíssimam mortem compléctens, voluntáriè præibat ad supplícium. 2. *Mach.* 6. 19. * Tradens.

℟. V. Magis éligens affligi, quàm temporális peccáti habére jucunditátem: * Invisíbilem tanquàm videns, sustínuit. *Hebr.* 11. *v.* 25. 27. ℣. Torménta suscépit & in último spíritu constitútus. 2. *Mach.* 7. *v.* 8. 9. * Invisíbilem.

℟. VI. Beátus vir qui suffert tentatiónem: quóniam cùm probátus fúerit, * Accípiet corónam vitæ. *Jac.* 1. 12. ℣. Hic itaque mundus óbiit, per ómnia in Dómino confídens. 2. *Mach.* 7. 40. * Accípiet. ℣. Glória. * Accípiet.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 7. D. Liberávit me Dóminus ab ómni ópere malo; & salvum fáciet in regnum suum cœléste. 2. *Tim.* 4. 18.

*Ant.* 4. *irr.* d. Divítias æstimans impropérium Christi, aspiciébat in remuneratiónem. *Hebr.* 11. 26.

*Ant.* 8. g. Non sunt condignæ passiónes hujus tempo-

ris ad futûram glóriam. *Rom.* 8. 18.

℣. In Deo salutáre meum, ℟. Et glória mea. *Ps.* 61. 8.

℟. VII. Mendáces osténdit Dóminus, qui maculavérunt illum, * Et dedit illi claritátem ætérnam. *Sap.* 10. 14. ℣. Oppréssum à nefandórum injúria erípuit illum Deus. 2. *Petri* 2. 7. * Et dedit.

℟. VIII. Hanc tentatiónem ideò permísit Dóminus evenire illi, * Ut pósteris darétur exémplum patiéntiæ ejus. *Tob.* 2. 12. ℣. In labóribus plúrimis, in carcéribus abundántiùs, in plagis supra modum, in mórtibus frequénter. 2. *Cor.* 11. 23. * Ut pósteris.

℟. IX. Post tempestâtem, tranquíllum facis, Dómine, & post fletum, exultatiónem infúndis. * Sit nomen tuum, Deus Israël, benedíctum in sécula. *Tob.* 3. *v.* 22. 23. ℣. Qui vícerit, sic vestiétur vestiméntis albis. *Apoc.* 3. 5. * Sit nomen. ℣. Glória Patri. * Sit nomen.

Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Cantábo, Dómine, fortitúdinem tuam, ℟. Et exultábo manè misericórdiam tuam. *Ps.* 58. 17.

*Ant.* 5. a. Absque terróre requiéscet, & abundántiâ perfruétur, timóre malórum subláto. *Prov.* 1. 33.

*Ant.* 1. a. Data est ei coróna, & exívit vincens ut vinceret. *Apoc.* 6. 2.

*Ant.* 6. F. Erat Deus cum eo, & erípuit eum ex ómnibus tribulatiónibus ejus. *Act.* 7. *v.* 9. 10.

*Ant.* 3. A. Nunc réquiem dedit illi, & non est satan, neque occúrsus malus. 3. *Reg.* 5. 4.

*Ant.* 2. d. Hæc est victória quæ vincit mundum, fides nostra. 1. *Joan.* 5. 4.

*Capitulum.* 2. *Tim.* 4. *v.* 7. 8.

BOnum certámen certávi, cursum consummávi, fidem servávi: in réliquo repósita est mihi coróna justítiæ, quam reddet mihi Dóminus in illa die justus Judex.

*Hymnus.* *Sanctol. Victor.*

JAm non te lácerant carníficum manus,
Inter qui récubas coelítuum choros:
Nunc pro cárcere cæco
Fulgéntes hábitas domos.
NOn jam vincla manus, non cóhibent pedes,
Tu liber Súperûm regna perámbulas:
Quot plagis laniátus
Cœlo tot rádiis nites.
NEc te dira fames, nec sitis ámpliùs,
Nec probrósa premit te modò núditas:

Nunc te lúmine puro
Pascit Christus & índuit.
Sic tu Martyribus dexter ades, Deus,
Ut quos mors périmit, glória víndicet:
Confundísque tyránnum,
Dum quos déprimit, élevas.
Patri máxima laus, máxima Fílio,
Sit par sancte tibi glória, Spíritus;
Quo donánte corónam
Invíctus pugil óbtinet.
Amen.

℣. Justus ut palma florébit, ℟. Sicut cedrus Líbani multiplicábitur. *Ps.* 19. 13.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. g. Vitâ decéssit, univérsæ genti memóriam mortis suæ ad exémplum virtútis & fortitúdinis derelínquens. 2. *Mach.* 6. 31.

*Oratio, ut suprà ad primas Vesperas, nisi sit propria.*

*Si facienda sit commemoratio alterius Martyris, fit per Antiph. & ℣. ex ij. Vesperis, & sic in omni alio Communi.*

AD PRIMAM

*Ant.* 5. a. Absque terróre.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1, a. Data est.

*Capitulum.* *Apoc.* 2. 26.

QUi vícerit, & custodíerit usque in finem ópera mea, dabo illi potestátem super Gentes.

℟. *breve.* Glóriâ & honóre * Coronásti eum, Dómine. *Repet.* Glóriâ. ℣. Et constituísti eum super ópera mánuum tuárum. *Ps.* 8. *v.* 6. 7. * Coronásti. ℣. Glória Patri. *Repet.* Glóriâ & honóre.

℣. Posuísti, Dómine, in cápite ejus corónam ℟. De lápide pretióso. *Psal.* 20. 4.

AD SEXTAM.

*Ant.* 6. F. Erat Deus.

*Capitulum.* *Apoc.* 3. 10.

QUóniam servásti verbum patiéntiæ meæ, & ego servábo te ab hora tentatiónis, quæ ventúra est in orbem univérsum tentáre habitántes in terra.

℟. *breve.* Dóminus * Protéctor vitæ meæ. *Repet.* Dóminus. ℣. A' quo trepidábo? *Psal.* 26. 1. * Protéctor. ℣. Glória Patri. *Repet.* Dóminus protéctor.

℣. Dóminus firmaméntum meum, ℟. Et refúgium meum & liberátor meus. *Ps.* 17. 3.

AD NONAM.

*Ant.* 2. d. Hæc est victória.

*Capitulum.* *Apoc.* 3. 12.

QUi vícerit, fáciam illum colúmnam in templo Dei mei, & foras non egrediétur ámpliùs: & scribam super eum nomen Dei mei.

℟. *breve.* Magna est glória ejus * In salutári tuo. *Repet.* Magna est. ℣. Glóriam & ma-

gnum decórem impónes super eum. *Ps.* 20. 6. * In salutári. ℣. Glória Patri. *Repet.* Magna est.

℣. Dabis eum in benedictiónem, ℟. In séculum séculi. *Ibid. v.* 7.

AD VESPERAS.

*Antiphona.* Absque terróre, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum.* 2. *Cor.* 4. 17.

QUod in præsénti est momentáneum & leve tribulatiónis nostræ: supra modum in sublimitáte ætérnum glóriæ pondus operátur in nobis.

*In Triplicibus.* ℟. IX. Post tempestátem. *De Officio nocturno.*

*Hymnus*, Felix morte tuâ, *ut in primis Vesperis.*

℣. Convertísti planctum meum, Dómine, in gáudium mihi; ℟. Et circundedísti me lætítiâ. *Ps.* 29. 12.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. c. Factus es, Dómine, fortitúdo egéno in tribulatióne sua, spes à túrbine, umbráculum ab æstu. *Isa.* 25. 4.

*Oratio ut suprà ad j. Vesperas, nisi sit propria.*

---

COMMUNE

PLURIUM MARTYRUM.

In primis Vesperis.

1. *Ant.* 3. A. Justítia rectórum liberábit eos: & in insídiis suis capiéntur iníqui. *Prov.* 11. 6.

2. *Ant.* 5. a. O'culi Dómini præbent fortitúdinem his, qui corde perfécto credunt in eum. 2. *Paralip.* 16. 9.

3. *Ant.* 8. c. Eligéntur, & dealbabúntur, & quasi ignis probabúntur multi. *Dan.* 12. 10.

4. *Ant.* 1. d. Ibant prompti de cœlo habéntes adjutórem, & miserántem super eos Dóminum. 2. *Machab.* 11. 10.

5. *Ant.* 4. e. In paucis vexáti, in multis benè disponéntur. *Sap.* 3. 5.

*Capitulum.* *Isa. cap.* 51. *v.* 7. 8.

NOlíte timére oppróbrium hóminum; & blasphémias eórum ne metuátis: sicut enim vestiméntum, sic cómedet eos vermis; salus autem mea in sempitérnum erit.

*In Duplicibus & suprà.*

℟. Ruent in gládio, & in flamma, & in captivitáte, * Ut conflentur, & dealbentur usque ad tempus præfinitum. *Dan.* 11. *v.* 33. 35. ℣. Datum est béstiæ bellum fácere cum Sanctis. *Apoc.* 13. 7. * Ut conflentur. ℣. Glória. * Ut conflentur.

*Hymnus.*

QUanto, morte sacrâ quos tibi dévoves, Firmas, Christe, tuos róbore mílites!

Ad torménta vehit non pávidos mori,
Quam das ígnea cháritas.
Tyránni rábies sǽviat ímpotens;
Addat carcéribus férrea víncula;
Constánti púgiles péctore prǽlia,
Trunci córpore sústinent.
Alto de sólio nunc, Deus, áspice,
Non indígna tuo númine múnera;
Quot prostráta jacent córpora Mártyrum,
Astant tot tibi víctimæ.
Ad te, letífero vúlnere sáucii,
Vectántur flúidi flúmine sánguinis:
Dictáto duce te, Christe, perículo,
Tangunt líttora pátriæ.
Sed quid barbáries ímpia próficit?
Non hæc Christícolas vúlnera déprimunt:
Quondam nata Dei gens sacra fúnere,
Crescit sánguine Mártyrum.
Patri máxima sit, máxima Fílio,
Et par Spirítui, laus tibi Trínitas;
Quæ te martýribus pródiga prǽmium
Das, & vívere per neces. Amen.

℣. Custódit Dóminus ánimas Sanctórum suórum, ℟. De manu peccatóris liberábit eos. *Psal.* 96. 10.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. In mundo pressúram habébitis, sed confídite, ego vici mundum. *Joan.* 16. 33.

*Oratio.*

Deus, qui nos ánnuâ sanctórum Mártyrum tuórum N. & N. festivitáte lætíficas; concéde propítius; ut, quorum gaudémus méritis, accendámur exémplis. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

Mártyris tui N. (& sociórum) solémnia recenséntes, súpplices te, Dómine, deprecámur; ut in tua charitáte radicáti & fundáti, passiónes hujus témporis, glóriæ cœléstis amóre, ánimo voléntì sustineámus. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

Mártyrum tuórum, Dómine, N. & N. palmas ánnuâ celebratióne venerántes, súpplices te rogámus, ut, quos cœlésti glóriâ sublimásti, nobis pérpeti suffrágio concédas subveníre. Per Dóminum.

*Si sint Pontifices.*

*Oratio.*

BEatórum Mártyrum tuórum Pontíficum N. & N. nos quǽsumus, Dómine, festa tueántur: & eórum commendet orátio veneránda; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Filium tuum, qui tecum vivit.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Deum patiéntiæ & solátii, * Veníte adorémus. *Rom.* 15. 5.

*Psal.* Veníte.

*Hymnus.* *Santol. Vict.*

FORTES cadéndo Mártyres,
Quos empta fuso sánguine,
Cœléstis ornat púrpura,
Junctis canámus vócibus.
Implére vos omnes decet
Passo Deo quod défuit;
Per tot neces læso Patri
Fit plena Christus hóstia.
Quem lictor insánus sitit;
Quem cæcus effúndit furor,
Amor sacérdos pródigum
Christo cruórem cónsecrat.
SIC, Christe, robur Mártyrum,
Certáre das & víncere;
Tuósque múnerans, tua
Æquus corónas prǽmia.
ÆTÉRNE tu Verbi Pater,
Ætérne Fili par Patri,
Et par utríque, Spíritus,
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 1. d. Per multas tribulatiónes opórtet nos intráre in regnum Dei. *Act.* 14. 21.

*Ant.* 3. g. Vasa fíguli probat fornax, & hómines justos tentátio tribulatiónis. *Eccli.* 27. 6.

*Ant.* 7. b. Injícient vobis manus suas, & persequéntur, trahéntes ad reges & prǽsides. *Luc.* 21. 12.

℣. Multæ tribulatiónes justórum, ℟. Et de ómnibus his liberábit eos Dóminus. *Psal.* 33. 20.

℟. I. Vobis donátum est pro Christo, non solùm ut in eum credátis, sed * Ut étiam pro illo patiámini. *Philipp.* 1. 29. ℣. Dóminus Deus vester pro vobis ipse pugnábit. *Jos.* 23. 10. * Ut étiam.

℟. II. Beáti qui persecutiónem patiúntur propter justítiam: * Quóniam ipsórum est regnum cœlórum. *Matth.* 5. 10. ℣. Constántes effécti sunt, & pro légibus mori paráti. 2. *Machab.* 8. 21. * Quóniam.

℟. III. Tradent vos in tribulatiónem, & occídent vos, & éritis ódio ómnibus Géntibus, * Propter nomen meum. *Matth.* 24. 9. ℣. Confortámini & viríliter ágite in lege. 1. *Mach.* 2. 64. * Propter.

℣. Glória. * Propter.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 1. a. Fidélis Deus est qui confirmábit vos & custódiet à malo. 2. *Thess.* 3. 3.

*Antiph.* 6. f. Non injústus Deus, ut obliviscátur óperis vestri & dilectiónis quam ostendístis in nómine ipsius. *Hebr.* 6. 10.

*Ant.* 6. F. Exultábitis lætitiâ inenarrábili, & glorificátâ; reportántes finem fidei vestræ, salútem animárum. 1. *Petr.* 1. *v.* 9. 10.

℣. Deus noster refúgium & virtus; ℟. Adjútor in tribulatiónibus. *Psal.* 45. 2.

℟. IV. Tanquàm aurum in fornáce probávit illos Dóminus, * Et quasi holocáusti hóstiam accépit illos. *Sap.* 3. 6. ℣. Disténti sunt, non suscipiéntes redemptiónem, ut meliórem invenírent resurrectiónem. *Hebr.* 11. 35. * Et quasi.

℟. V. Tradidérunt córpora sua, * Ne servírent, & ne adorárent omnem deum, excepto Deo suo. *Dan.* 3. 95. ℣. Tradidérunt ánimas suas pro nómine Dómini nostri Jesu Christi. *Act.* 15. 26. * Ne servírent.

℟. VI. Decantavérunt, Dómine, nomen sanctum tuum, * Et victrícem manum tuam laudavérunt páriter. *Sap.* 10. 20. ℣. In multo experiménto tribulatiónis, abundántia gáudii ipsórum fuit. 2. *Cor.* 8. 2. * Et victrícem. ℣. Glória. * Et victrícem.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 5. a. Rex mundi defúnctos pro suis légibus in ætérnæ vitæ resurrectióne suscitábit. 2. *Machab.* 7. 9.

*Ant.* 1. d. Ecce beatificámus eos, qui sustinuérunt, quóniam miséricors Dóminus est. *Jac.* 5. 11.

*Ant.* 4. f. Justi in perpétuum vivent, & apud Dóminum est merces eórum. *Sap.* 5. 16.

℣. In humilitáte nostra memor fuit nostrî. ℟. Et redémit nos ab inimícis nostris. *Psal.* 135. *v.* 23. 24.

℟. VII. Abstérget Deus omnem lácrymam ab óculis eórum: & mors ultrà non erit, neque luctus, neque clamor, neque dolor erit ultrà, * Quia prima abiérunt. *Apoc.* 21. 4. ℣. Accípient regnum decóris, & diadéma speciéi de manu Dómini. *Sap.* 5. 17. * Quia prima.

℟. VIII. Metuéntes Dóminum sustinéte misericórdiam ejus; & crédite illi: * Et non evacuábitur merces vestra. *Eccli.* 5. *v.* 7. 8. ℣. Si benè faciéntes patiénter sustinétis, hæc est grátia apud Deum. 1. *Petr.* 2. 20. * Et non.

℟. IX. Ipsi vicérunt propter sánguinem Agni, & non dilexérunt ánimas suas usque ad mortem, * Proptéreà lætámini cœli, & qui habitátis in eis. *Apocal.* 12. *v.* 11. 12. ℣. Módico dolóre sustentáto, sub testaménto ætérnæ vitæ effécti sunt. 2. *Mach.* 7. 36. * Proptéreà. ℣. Glória Patri. * Proptéreà.

Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Vox exultatiónis & salútis, ℟. In tabernáculis justórum. *Psal.* 117. 15.

*Ant.* 6. f. Beáti qui lavant stolas suas in sánguine Agni. *Apoc.* 22. 14.

*Ant.* 1. a. Agnus reget illos, & dedúcet eos ad vitæ fontes aquárum. *Apoc.* 7. 17.

*Ant.* 7. c. Si coram homínibus torménta passi sunt, spes illórum immortalitáte plena est. *Sap.* 3. 4.

*Ant.* 3. c. Qui sponte obtulístis ánimas vestras ad perículum, benedícite Dómino. *Judic.* 5. 2.

*Ant.* 5. f. Gaudéte & exultáte, quóniam merces vestra copiósa est in cœlis. *Matth.* 5. 12.

*Capitulum. Sap.* 3. *v.* 1. 2. 3.

JUstórum ánimæ in manu Dei sunt, & non tanget illos torméntum mortis: visi sunt óculis insipiéntium mori, illi autem sunt in pace.

*Hymnus. Santol. Vict.*

QUAM, Christe, signásti viam
Primus, profúso sánguine,
Per hanc tui te fórtiter
Ducem sequúntur mílites.

OMNES in ostro spléndidi
Tuum tribúnal ámbiunt:
Accépta monstrant vúlnera,
Et per tot ora súpplicant.

AUDÍRE si nos réspuis,
Quos críminum moles gravat,
Audi tuos, qui sánguinem
Fudére pro te, Mártyres.

FAC, si tyránnus déficit
Ne blandiéndo móllius
Frangat volúptas péctora,
Ipsis tyránnis sævior.

ÆTÉRNE tu Verbi Pater,
Ætérne Fili, par Patri,
Et par utríque, Spíritus,
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

℣. In te, Dómine, speravérunt, ℟. Et liberásti eos. *Psal.* 21. 5.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 2. D. Hi sunt qui venérunt de tribulatióne magna, & lavérunt stolas suas, & dealbavérunt eas in sánguine Agni. *Ap.* 7. 14.

*Oratio ut suprà ad Vesperas, nisi sit propria.*

AD HORAS. *Ant. de Laudibus.*

## AD PRIMAM.

*Ant.* 6. f. Beáti.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. a. Agnus regit.

*Capitulum.* *Apoc.* 7. 15.

SUnt ante thronum Dei, & sérviunt ei die ac nocte in templo ejus, & qui sedet in throno habitábit super illos.

℟. *breve.* Lætámini in Dómino, * Et exultáte justi. *Repet.* Lætámini. ℣. Et gloriámini omnes recti corde. *Psal.* 31. 11. * Et exultáte justi. ℣. Glória. *Repet.* Lætámini.

℣. Exúltent justi in conspéctu Dei, ℟. Et delecténtur in lætítia. *Ps.* 67. 4.

AD SEXTAM.

*Ant.* 7. c. Si coram homínibus.

*Capitulum.* *Sapient.* 10. *v.* 17. 18.

REddidit justis Deus mercédem labórum suórum, & dedúxit illos in via mirábili, tránstulit illos per Mare Rubrum, & transvéxit illos per aquam nímiam.

℟. *breve.* Transívimus Per ignem & aquam. *Repet.* Transívimus. ℣. Et eduxísti nos in refrigérium *Ps.* 65. 12. Per ignem. ℣. Glória Patri. *Repet.* Transívimus.

℣. Anima nostra sicut passer erépta est, ℟. De láqueo venántium. *Ps* 123. 7.

AD NONAM.

*Ant.* 5. f. Gaudéte.

*Capitulum.* *Dan.* 3. 88.

LAudáte & superexaltáte Dóminum in sécula, quia éruit nos de inférno, & salvos fecit de manu mortis.

℟. *breve.* Benedíctus Dóminus, qui non dedit nos * In captiónem. *Repet.* Benedíctus. ℣. Déntibus eórum, * In captiónem. *Ps.* 123. 6. ℣. Glória. *Repet.* Benedíctus.

℣. Salvásti nos de affligéntibus nos. ℟. Et in nómine tuo confitébimur in séculum. *Ps.* 43. *v.* 8. 9.

AD VESPERAS.

*Ant.* 6. f. Beáti, qui lavant, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum.* *Sap.* 5. 1.

STabunt justi in magna constántia advérsus eos qui se angustiavérunt, & qui abstulérunt labóres eórum.

*In Tripl.* ℟. Ipsi vicérunt. IX. *de Officio Nocturno.*

*Hymnus*, QUANTO morte sacrâ, *ut in j. Vesperis.*

℣. Lætítia sempitérna super cápita eórum, ℟. Gáudium & lætítiam tenébunt. *Isa.* 51. 11.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Vidébunt fáciem Agni, & non egébunt lúmine solis, quóniam Dóminus Deus illuminábit illos, & regnábunt in sécula seculórum. *Apoc.* 22. *v.* 4. 5.

*Oratio, ut suprà ad j. Vesperas, nisi sit propria.*

# COMMUNE UNIUS PONTIFICIS.

## IN PRIMIS VESPERIS.

*Ant.* 1. D. Ipse erit eis in pastórem, & princeps in medio eórum. *Ezech.* 34. *v.* 23. 24.

*Ant.* 7. d. Quæsívit Dóminus sibi virum juxta cor suum: & præcépit ei ut esset dux super pópulum suum. 1. *Reg.* 13. 14.

*Ant.* 3. a. Quemcúnque elégerit Dóminus, ipse erit sanctus. *Num.* 16. 7.

*Ant.* 4. e. Gestábit judícium filiórum Israël in péctore suo; in conspéctu Dómini semper. *Exod.* 28. 30.

*Ant.* 8. c. Rogánte pro eis Sacerdóte, propítius erit eis Dóminus. *Levit.* 4. 20.

*Capitulum.* 1. *Reg.* 2. 35.

SUscitábo mihi Sacerdótem fidélem, qui juxta cor meum & ánimam meam fáciet: & ædificábo ei domum fidélem, & ambulábit coram Christo meo cunctis diébus.

*In Festis duplicibus, & suprà.*

℟. Factum est illi in testaméntum ætérnum, * Fungi Sacerdótio, & glorificáre pópulum suum † In nómine ejus. *Eccli.* 45. 19. ℣. Nec quisquam sumit sibi honórem, sed qui vocátur à Deo, tanquàm Aaron. *Hebr.* 5. 4. * Fungi. ℣. Glória Patri. † In nómine.

*Hymnus. Guill. Episc. Sancton.*

CHriste pastórum caput atque princeps,
Præsulis festam veneráta lucem,
Débitis supplex tua templa votis,
Turba frequéntat.

ILLE non vano ténuit reméndam
Spíritu sedem, próprio nec ausu:
Sed sacrum jussus, Dómino vocánte,
Sumpsit honórem.

Strénuum bello púgilem supérni
Chrísmatis pleno tuus unxit intùs
Spíritus cornu, posuítque sanctam
Páscere gentem.

FIT gregis pastor, pater atque forma:
Lætus impéndit sua, seque plebi:
O'mnium curas, sibi raptus uni
Sústinet omnes.

PRO reis orat, réficit geméntes,
E'rigit lapsos, tenebrásque pellit,
Fit potens verbo, docet alta, pravum
Cónterit hostem.

Fac ut illius précibus juvémur,
Christe, fac Patrem, pariterque tecum
Spíritum jugi celebrémus hymno
Omne per ævum.
Amen.

℣. Exaltávi eléctum de plebe mea. ℟. O'leo sancto meo unxi eum. *Ps.* 88. *v.* 20. 21.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 4. f. Ipsum elégit Dóminus ab omni vivénte, offérre sacrifícium Deo, incénsum, & bonum odórem pro pópulo suo. *Eccli.* 45. 20.

*Si sit Pontifex Rotomagensis.*

*Oratio.*

OMnípotens Deus, qui beátum N. Antístitem pópulo tuo præésse, & quibus præerat, verbo & exémplo prodésse voluísti; eódem intercedénte, pastóres Ecclésiæ tuæ cum grégibus sibi commíssis dírige in viam salútis ætérnæ; ut omnes, te donánte, tibi plácita cúpiant, & totâ virtúte perfíciant. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

EXáudi, quæsumus, Dómine, preces nostras, quas in beáti N. Pontíficis festivitáte deférimus; & qui tibi dignè méruit famulári, ejus intercedéntibus méritis ab ómnibus nos absólve peccátis. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

QUæsumus, Dómine, cleméntiam tuam, ut in hac die quam tránsitu sacro beáti Pontíficis N. consecrásti, des nobis illam sequi doctrínam quam ille & verbo dócuit, & ópere complévit. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

DA, quæsumus, omnípotens Deus, ut beáti N. Pontíficis veneránda festívitas & devotiónem nobis áugeat & salútem. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

MIsericórdiam tuam nobis, quæsumus, Dómine, sancti N. Pontíficis intercéssio beáta concíliet, ut, qui incessábili culpâ offéndimus, ejúsdem assíduis précibus ab omni reátu liberémur. Per Dóminum.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Christum pastórum príncipem, * Veníte, adorémus. 1. *Pet.* 5. 4.

*Ps.* Veníte. *pag.* 2.

*Hymnus.*

SE'dibus præsul súperis recépte,
A'dvola, terris sacra te repóscunt:
Nostra dum cantu tibi dedicáto
Templa resúltant.

Pro Deo vitam cúpidus pacísci,
O'tium durus sibi denegávit:
Prælium Christi, benè præliári,
Una volúptas.

Si reis vindex minitátur ira,
Súpplici defert prece vim Tonánti:
Et Deum jugis grege pro tuéndo
Víctima placat.

Docta dat præsul documénta Clero,
Légibus sacris pópulum coércet:
O'mnium curâ Pater, omnibúsque
O'mnia factus.

Quæ tuis formas pópulis minístros,
Laus tibi jugis, Déitas supréma,
Fac, ut in Clero sua prima virtus,
Christe, resúrgat.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 1. a. Quæsívit bona genti suæ: & plácuit illis potéstas ejus, & glória ejus ómnibus diébus. 1. *Machab.* 14. 4.

*Ant.* 2. d. Sancta glorificávit, & multiplicávit vasa Sanctórum. *Ibid.* v. 15.

*Ant.* 3. a. In ascénsu altáris sancti, glóriam dedit sanctitátis amíctum. *Eccli.* 50. 12.

℣. Constitútus sum ab eo,
℟. Super Sion montem sanctum ejus. *Ps.* 2. 6.

℟. I. Lex veritátis fuit in ore ejus, iníquitas non est invénta in lábiis ejus, * Et multos avértit ab iniquitáte. *Malach.* 2. 6. ℣. Suscipiébat omnes, prædicans regnum Dei. *Act.* 28. v. 30. 31. * Et multos.

℟. II. Invocávit Dóminum omnipoténtem, * In oblatióne Agni inviolátí. *Eccli.* 46. 19. ℣. Póntifex debet pro pópulo & pro semetípso offérre pro peccátis. *Hebr.* 5. 3. * In oblatióne.

℟. III. In lege Dómini congregatiónem judicávit, * Et in fide sua probátus est prophéta. *Eccli.* 46. 17. ℣. Quæritur inter dispensatóres, ut fidélis quis inveniátur. 1. *Cor.* 4. 2. * Et in fide. ℣. Glória * Et in fide.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 4. f. Bonus Pastor ánimam suam dat pro óvibus suis. *Joan.* 10. 11.

*Ant.* 2. D. Próprias oves vocat nominátim, & edúcit eas. *Ibid.* v. 3.

*Ant.* 7. a. Ante eas vadit, & oves eum sequúntur, quia sciunt vocem ejus. *Ibid.* v. 4.

℣. Non abscóndi misericórdiam tuam, Dómine, ℟. Et veritátem tuam à concílio multo. *Ps.* 39. 12.

℟. IV. Hortabátur omnes in propósito cordis permanére in Dómino, * Quia erat vir bonus & plenus Spíritu sancto. *Act.* 11. *v.* 23. 24. ℣. In diébus peccatórum corroborávit pietátem. *Eccli.* 49. 4. * Quia erat vir.

℟. V. Tríbuit in simplicitáte, * Præest in solicitúdine, miserétur in hilaritáte. *Rom.* 12. 8. ℣. In omni ore quasi mel indulcábitur ejus memória. *Eccli.* 49. 2. * Præest.

℟. VI. Exhíbuit seípsum sicut Dei minístrum, * In multa patiéntia, in castitáte, in sciéntia; † In charitáte non ficta. 2. *Cor.* 6. *v.* 4. 6. ℣. Zelándo zelum Dei, accépit testaméntum Sacerdótii ætérni. 1. *Machab.* 2. 54. * In multa. ℣. Glória Patri. † In charitáte.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 8. g. In omni ópere dedit confessiónem Sancto, & Excélso in verbo glóriæ. *Eccli.* 47. 9.

*Ant.* 6. f. Dedit illi Dóminus in præcéptis suis potestátem docére Jacob testimónia, & in lege sua lucem dare I'sraël. *Eccli.* 45. 21.

*Ant.* 5. a. Non recédet memória ejus, & nomen ejus requirétur à generatióne in generatiónem. *Eccli.* 39. 13.

℣. Pavit eos in innocéntia cordis sui; ℟. Et in intelléctibus mánuum suárum dedúxit eos. *Ps.* 77. 72.

℟. VII. In diébus ipsíus emanavérunt pútei aquárum, * Qui curávit gentem suam, & liberávit eam à perditióne. *Eccli.* 50. *v.* 3. 4. ℣. Seípsum præbuit exémplum bonórum óperum, in doctrína, in integritáte, in gravitáte. *Tit.* 2. 7. * Qui curávit.

℟. VIII. Circuncínxit eum Dóminus zonâ glóriæ, & * Coronávit eum in vasis virtútis. *Eccli.* 45. 9. ℣. Supra ómnia, quæ póssidet, constítuet illum. *Luc.* 12. 44. * Coronávit.

℟. IX. In bonitáte & alacritáte ánimæ suæ * Plácuit Deo pro I'sraël. I'deò státuit illi testaméntum pacis, ut sit illi Sacerdótii dignitas, † In ætérnum. *Eccli.* 45. *v.* 29. 30. ℣. Exémplum fidélium, in verbo in conversatióne, in charitáte, in fide. 1. *Tim.* 4. 12. * Plácuit Deo. ℣. Glória. † In ætérnum.

Te Deum.

AD LAUDES

MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Stabit in loco sancto ejus, ℟. I'nnocens mánibus & mundo corde. *Ps.* 23. *v.* 3. 4.

*Ant.* 4. d. Sacérdos magnus in vita sua suffúlsit domum, & in diébus suis cor-

roborávit templum. *Eccli.* 50. 1.

*Ant.* 7. c. Invéntus est perféctus, justus, & in témpore iracúndiæ factus est reconciliátio. *Eccli.* 44. 17.

*Ant.* 3. c. Fidélis servus, & prudens, quem constítuit Dóminus super famíliam suam. *Matth.* 24. 45.

*Ant.* 8. g. Beátus ille servus, quem cùm vénerit Dóminus ejus, & pulsáverit jánuam, invénerit vigilántem. *Ibid. v.* 46. *&* *Luc.* 12. *v.* 36. 37.

*Ant.* 5. f. Sacerdótes Dómini laudáte & superexaltáte eum in sécula. *Dan.* 3. 84.

*Capitulum.* *Hebr.* 5. 1.

OMnis Póntifex ex homínibus assûmptus, pro homínibus constitúitur in iis, quæ sunt ad Deum, ut ófferat dona, & sacrifícia pro peccátis.

*Hymnus. Guill. Episc. Sanct.*

JEsu Sacerdótum decus,
In hac die, quâ glóriâ
Sanctum corónas præsulem,
Votis adésto súpplicum.

Sui probátus præmium
Amóris & pignus tui,
A' Patre tráditos tibi
Accépit agnos páscere.

Hos novit & præit, vocans
In tua quemque páscua,
Victúmque præbet: áudiunt,
Sequúntur, & vivunt oves.

QUAM sentit errántem jugis,
Hanc nocte quærit ac die;
Et gaudet invéntam, suo
Portans ovíli réddere.

Arcet freméntes béstias,
Lupi retúndit ímpetus,
Dolósque fallit, vel mori
Charo parátus pro grege.

OFFERT frequéntem víctimam
Cum plebe pastor ínnocens,
Secúmque devótum gregem
Pius Sacérdos ímmolat.

Qui nos creávit laus Patri,
Laus qui redémit Fílio,
Qui charitáte nos foves
Sit par tibi laus, Spíritus.
Amen.

℣. Véritas mea, & misericórdia mea cum ipso, ℟. Et in nómine meo exaltábitur cornu ejus. *Ps.* 88. 25.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 1. d. Dedit illi Dóminus legem vitæ, & disciplínæ, docére Jacob testaméntum suum, & judícia sua Israël. *Eccli.* 45. 6.

*Oratio, ut suprà ad j. Vesperas, nisi sit propria.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 4. d. Sacérdos magnus.

AD TERTIAM.

*Ant.* 7. c. Invéntus est.

*Capitulum. Eccli.* 35. *v.* 1. 2.

QUi consérvat legem, multíplicat oblatiónem; sacrifícium salutáre est atténdere mandátis.

℟. *brev.* Justítiam tuam; * Non abscóndi in corde meo. *Repet.* Justítiam. ℣. Veritátem tuam; & salutáre tuum dixi. *Ps.* 39. 11. * Non abscóndi. ℣. Glória Patri. *Repet.* Justítiam.

℣. Deus meus, vólui, ℟. Et legem tuam in médio cordis mei. *Ibid.* 9.

AD SEXTAM.

*Ant.* 3. c. Fidélis servus.

*Capitulum.* 2. *Timot.* 2. 15.

SOllícitè cura teípsum probábilem exhibére Deo, operárium, inconfusíbilem, rectè tractántem verbum veritátis.

℟. *brev.* Circuívi, & immolávi * In tabernáculo ejus. *Repetitur* Circuívi. ℣. Hóstiam vociferatiónis. *Ps.* 26. 6. * In tabernáculo. ℣. Glória. *Repet.* Circuívi.

℣. In sancto appárui tibi, ℟. Ut vidérem virtútem tuam. *Ps.* 62. 3.

AD NONAM.

*Ant.* 5. f. Sacerdótes.

*Capitulum.* 1. *Timot.* 4. 16.

ATténde tibi, & doctrínæ, insta in illis. Hoc enim fáciens, & teípsum salvum fácies, & eos qui te áudiunt.

℟. *brev.* Sacerdótes tui, * Induántur justítiam. *Repet.* Sacerdótes. ℣. Et sancti tui exúltent. *Psal.* 131. 9. * Induántur. ℣. Glória. *Repet.* Sacerdótes.

℣. Sacerdótes ejus induam salutári, ℟. Et sancti ejus exultatióne exultábunt. *Ibid.* v. 16.

AD VESPERAS.

*Ant.* Sacérdos magnus, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum.* *Act.* 20. 28.

ATténdite vobis, & univérso gregi, in quo vos Spíritus sanctus pósuit epíscopos, régere Ecclésiam Dei.

*In Tripl.* ℟. Exhíbuit, VI. *de Officio nocturno.*

*Hymnus.* CHRISTE Pastórum, *ut in j. Vesperis.*

℣. Dedúxit eos in viam rectam, ℟. Ut irent in civitátem habitatiónis. *Ps.* 106. 7.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Státuit ei Dóminus testaméntum ætérnum, dedit illi Sacerdótium gentis, & beatificávit illum in glória. *Eccli.* 45. 8.

*Oratio, ut in primis Vesperis; nisi sit propria.*

---

COMMUNE
UNIUS DOCTORIS.

IN PRIMIS VESPERIS.

*Ant.* 1. a. Beátus vir, qui in sapiéntia morábitur, & in sensu cogitábit circunspectiónem Dei. *Eccli.* 14. 22.

*Ant.* 5. a. In pópulo hereditábit honórem, & nomen illíus erit vivens in ætérnum. *Eccli.* 37. 29.

*Ant.* 7. a. Denudábit illi Dóminus abscónsa sua, & thesaurizábit super illum sciéntiam & intelléctum justítiæ. *Eccli.* 4. 21.

*Ant.* 4. d. Tanquàm inundátio abundábit, & consílium illíus sicut fons vitæ. *Eccli.* 21. 16.

*Ant.* 6. f. Vir sápiens implébitur benedictiónibus, & vidéntes illum laudábunt. *Eccli.* 37. 27.

*Capitulum.* *Eccli.* 39. *v.* 12. 13.

Collaudábunt multi sapiéntiam ejus, & usque in séculum non delébitur, & nomen ejus requirétur à generatióne in generatiónem.

*In Duplicibus & suprà.*

℟. In médio Ecclésiæ apériet os ejus, * Et adimplébit illum Dóminus Spíritu sapiéntiæ & intelléctûs. *Eccli.* 15. 5. ℣. Alii datur sermo sapiéntiæ; álii sermo sciéntiæ, álteri fides in eódem Spíritu. 1. *Cor.* 12. 8. * Et adimplébit. ℣. Glória Patri. * Et adimplébit.

*Hymnus.* *Santol. Victor.*

O, Qui perpétuus nos mónitor doces,
Vox ætérna Patris, Christe, vicários
Doctóres; pátrias cùm rémeas domos,
Nobis quàm benè súppetis!

Hi semper vígilant, ne quid adúlterum
Corrúmpat fidei vírgineum decus;
Lædi vel léviter non pátitur fides,
His custódibus íntegra.

Infámes ábolent relliquias deûm;
Erróres ábigunt, crímina dédocent;
Christo restítuunt quos malè crédulos
Mendax lúserat hæresis.

Patrum canítiem, tot venerábiles
Rugas objíciunt, unde nitet fides;
Quæ sunt prisca, docent, quæ nova súbruunt:
Servant depósitum Dei.

Sit supréma tibi glória, Véritas,
Quæ per scripta Patrum quando foris sonas,
Nullo vocis egens corda doces sono,
Et te méntibus ínseris.
Amen.

℣. Os justi meditábitur sapiéntiam, ℟. Et lingua ejus loquétur judícium. *Ps.* 36. 30.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 3. g. Ipse tanquàm imbres mittet elóquia sapiéntiæ suæ, & in oratióne confitébitur Dómino. *Eccli.* 39. 9.

*Oratio.*

DEus, qui pópulo tuo ætérnæ salútis beátum N. minístrum tribuísti; præsta, quǽsumus, ut quem doctórem vitæ habúimus in terris, intercessórem habére mereámur in cœlis. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

EXcita, Dómine, in Ecclésia tua Spíritum, quo beátus N. servívit; ut, eódem nos replénte, studeámus amáre quod amávit, & ópere exercére quod dócuit. Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit & regnat.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Fontem sapiéntiæ Dóminum: * Veníte, adorémus. *Eccli.* 1. 5.

*Psal.* Veníte, *pag.* 2.

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

JAm nunc, quæ númeras tot tibi víndices,
Effer sidéreum, Relígio, caput:
Quot sunt mota tibi prælia, nóbiles
Tot nectis tibi láureas.

CUM per mille neces impíetas furit,
Oppónis válido péctore Mártyres:
Cùm per mille dolos décipit hæresis,
Doctóres tibi súscitas.

QUANDO sparsa lues úndique críminum,
Hi gliscens vítium prótinus ámputant:
Quando plúrima nox méntibus íncubat,
Hi plenum révehunt diem.

FIRMANT instábiles, & dúbios regunt;
Monstrant tuta procul líttora náufragis:
Nobis, qui véhimur cæca per ǽquora,
Lucent perpétuæ faces.

QUÆ dixére tuis cónsona sénsibus,
Nostris illa, Deus, córdibus ímprimas;
Quos terris cólimus, quos séquimur duces,
Fac nos móribus ássequi.

SIT supréma tibi glória, Véritas,
Quæ per scripta Patrum quando foris sonas
Nullo vocis egens corda doces sono,
Et te méntibus ínseris.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 2. d. Os prudéntis quǽritur in Ecclésia, & verba

illius cogitábunt in córdibus suis. *Eccli*. 21. 20.

*Ant*. 8. g. In corde illius requiéscit Sapiéntia; & indóctos quosque erúdiet. *Prov*. 14. 33.

*Ant*. 1. a. Parávit cor suum, ut investigáret in Israël præcéptum & judícium. 1. *Esdr*. 7. 10.

℣. Deus docuísti me à juventúte mea; ℟. Et usque nunc pronuntiábo mirabília tua. *Ps*. 70. 17.

℟. I. Dóminus dat sapiéntiam sapiéntibus, * Ipse revélat profúnda, & abscóndita; & lux cum eo est. *Dan*. 2, 21. ℣. Si quis índiget sapiéntiâ, póstulet à Deo, qui dat ómnibus affluénter. *Jac*. 1. 5. * Ipse.

℟. II. Beátus homo, quem tu erudíeris, Dómine, * Et de lege tua docúeris eum. *Ps*. 93. 12. ℣. Beátus qui legit, & audit verba prophetíæ. *Apoc*. 1. 3. * Et.

℟. III. Ipse palàm fáciet disciplínam doctrínæ suæ, * Et in lege testaménti Dómini gloriábitur. *Eccli*. 39. 11. ℣. Bonus homo de bono thesauro cordis sui profert bonum. *Luc*. 6. 45. * Et in lege. ℣. Glória Patri. * Et in lege.

IN II. NOCTURNO.

*Ant*. 6. f. Beátus homo, qui invénit sapiéntiam, & qui áffluit prudéntia. *Prov*. 3. 13.

*Ant*. 4. d. Moderátur sermónes suos, doctus & prudens est, & pretiósi Spíritûs vir erudítus. *Prov*. 17. 27.

*Ant*. 4. *irr*. d. Viæ ejus viæ pulchræ, & omnes sémitæ illius pacíficæ. *Prov*. 3. 17.

℣. Fac, Dómine, erudítos corde ℟. In sapiéntia. *Ps*. 89. 12.

℟. IV. Hic fuit gratus Deo, & erudítus est omni sapiéntiâ, * Et erat potens in verbis; & in opéribus suis. *Act*. 7. v. 20. 22. ℣. Cùmque esset sapientíssimus, dócuit pópulum. *Eccle*. 12. 9. * Et erat.

℟. V. Vir éloquens, potens in Scriptúris, * Docébat diligénter ea, quæ sunt Jesu. *Actor*. 18. v. 24. 25. ℣. Audítor sermónum Dei, novit doctrínam Altíssimi. *Num*. 24. 16. * Docébat.

℟. VI. Osténdit ex bona conversatióne operatiónem suam, * In mansuetúdine sapiéntiæ. *Jac*. 3. 13. ℣. Qui appropínquant pédibus ejus, accípient de doctrína illius. *Deut*. 33. 3. * In mansuetúdine. ℣. Glória Patri. * In mansuetúdine.

IN III. NOCTURNO.

*Ant*. 7. a. Doctrína viri

per patiéntiam nóscitur : & glória ejus est iníqua prætérgredi. *Prov.* 19. 11.

*Ant.* 5. a. Vir perítus multos erudívit, & ánimæ suæ suávis est. *Eccli.* 37. 22.

*Ant.* 4. e. Sápiens apériet os suum in oratióne, & Dóminus Spíritu intelligéntiæ replébit illum. *Eccli.* 39 7.

℣. Os meum loquétur Sapiéntiam ; ℟. Et meditátio cordis mei prudéntiam. *Psal.* 48. 4.

℟. VII. Quæsívit verba utília, * Conscrípsit sermónes rectíssimos ac veritáte plenos. *Eccli.* 12. 10. ℣. Potens exhortári in doctrína sana, & eos, qui contradícunt, argúere. *Tit.* 1. 9. * Conscrípsit.

℟. VIII. Scriba doctus in regno cœlórum, símilis est hómini patrifamílias, * Qui profert de thesáuro suo nova & vétera. *Matth.* 13. 52. ℣. Perféctio tua, Dómine, & doctrína tua viro sancto tuo. *Deuter.* 33. 8. * Qui profert.

℟. IX. Fílii Sion exultáte, & lætámini in Dómino Deo vestro, * Quia dedit vobis doctórem justítiæ. *Joël.* 2. 23. ℣. Deo autem grátias, qui odórem notítiæ suæ maniféstat. 2. *Cor.* 2. 14. * Quia. ℣. Glória Patri, * Quia.

Te Deum.

## AD LAUDES
### Matutinas.

℣. *Sacerd.* Os meum annuntiábit justítiam tuam, ℟. Totâ die salutáre tuum. *Ps.* 70. 15.

*Ant.* 3. A. Pósitus est prædicátor, doctor in fide & veritáte. 1. *Timoth.* 2. 7.

*Ant.* 4 *irr.* c. Bonus fuit miníster, & bonæ doctrínæ. 1. *Timot.* 4. 6.

*Ant.* 7. c. Auxílio adjútus Dei, nihil extrà dicens quàm ea quæ Prophétæ locúti sunt. *Act.* 26. 22.

*Ant.* 6. f. Prædicávit regnum Dei, docens quæ sunt de Dómino Jesu cum fidúcia. *Act.* 28. 31.

*Ant.* 2. d. Sapiéntiam ejus enuntiábit Ecclésia. *Eccli.* 39. 14.

*Capitulum.* *Jer.* 15. 16.

Invénti sunt sermónes tui, & comédi eos, & factum est mihi verbum tuum in gáudium & in lætítiam cordis mei.

*Hymnus.* *Sanctol. Victor.*

Vos succénsa Deo spléndida lúmina :
Vos sal, nos hómines quo sápimus Deum ;
Ævum, puri ánimo, móribus íntegri,
Quo condímur in álterum.

Per vos Relígio tutáque véritas ;

Per vos virgíneis fulget honóribus:
Per vos Christus amat pándere dívites
Thesáuros sapiéntiæ.

Vestris unda fluit pura canálibus;
Christi floret ager; munda nitet seges:
Lac aptum púeris, & sólidum viris
Cauti, sufficitis cibum.

Hi sunt, summe Deus, qui tibi mílitant;
Hi sunt, qui stábiles ædíficant domos:
Unâ docta cohors arma tenet manu,
Muros cónstruit álterâ.

Vicístis stygias vos quibus hǽreses,
Hæc nos accípimus tela supérstites:
His pugnámus adhuc, nec dúbio éxitu
His armis quoque víncimus.

Sit supréma tibi glória, Véritas,
Quæ per scripta Patrum quando foris sonas,
Nullo vocis egens corda doces sono,
Et te méntibus ínseris.
Amen.

℣. Pronuntiávi ómnia judícia oris tui: ℟. In via testimoniórum tuórum delectátus sum. *Ps.* 118. *v.* 13. 14.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. g. Qui fécerit, & docúerit, hic magnus vocábitur in regno cœlórum. *Matth.* 5. 19.

*Oratio, ut suprà ad j. Vesperas, nisi sit propria.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 3. A. Pósitus est.

AD TERTIAM.

*Ant.* 4. *irreg.* c. Bonus fuit.

*Capitulum. Sap.* 7. *v.* 7. 8.

Optávi, & datus est mihi sensus: & invocávi, & venit in me Spíritus sapiéntiæ: & præpósui illam regnis & sédibus, & divítias nihil esse duxi in comparatióne illíus.

℟. *brev.* Quàm dúlcia fáucibus meis * Elóquia tua, Dómine, *Repet.* Quàm. ℣. Super mel ori meo. *Ps.* 118. 103. * Elóquia tua. ℣. Glória Patri. *Repet.* Quàm.

℣. Ignítum elóquium tuum veheménter, ℟. Et servus tuus diléxit illud. *Ps.* 118. 140.

AD SEXTAM.

*Ant.* 7. c. Auxílio.

*Capitulum. Sap.* 7. *v.* 15. 16.

Mihi dedit Deus dícere ex senténtia, & præsúmere digna horum, quæ mihi dantur: quóniam ipse sapiéntiæ dux est, & sapiéntium emendátor: in manu enim illíus, & nos, & sermónes nostri.

℟. *breve.* Viam veritátis elégi, * Judícia tua non

sum oblítus. *Repet.* Viam. ℣. Adhǽsi testimóniis tuis, Dómine. *Ps.* 118. *v.* 30. 31. * Judícia. ℣. Glória Patri. *Repet.* Viam.

℣. Declarátio sermónum tuórum illúminat, ℟. Et intelléctum dat párvulis. *Ps.* 118. 130.

AD NONAM.

*Ant.* 2. d. Sapiéntiam.

*Capitulum. Sap.* 7. *v.* 13. 14.

Sapiéntiam sine fictióne dídici, & sine invídia commúnico, & honestátem illius non abscóndo; infinítus enim thesáurus est homínibus: quo qui usi sunt partícipes facti sunt amicítiæ Dei, propter disciplínæ dona commendáti.

℟. *brev.* Concupívi * Salutáre tuum, Dómine. *Repet.* Concupívi. ℣. Et lex tua meditátio mea est, * Salutáre. ℣. Glória. *Repet.* Concupívi.

℣. Vivet ánima mea, ℟. Et laudábit te. *Ps.* 118. *v.* 174. 175.

AD VESPERAS.

*Ant.* 3. A. Pósitus est, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum. Eph.* 4. *v.* 11. 12.

Fratres, ipse dedit quosdam quidem Apóstolos, quosdam autem Prophétas, álios veró Evangelístas, álios autem pastóres, & doctóres, ad consummatiónem Sanctórum, in opus ministérii, ad ædificatiónem córporis Christi.

*In Triplic.* ℟. Filii Sion, IX. *de Officio nocturno.*

*Hymnus.* O, QUI *ut in primis Vesperis.*

℣. Annuntiávi justítiam tuam, ℟. In Ecclésia magna. *Ps.* 39. 10.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. *irr.* Qui docti fúerint, fulgébunt quasi splendor firmaménti: & qui ad justítiam erúdiunt multos, quasi stellæ in perpétuas æternitátes. *Dan.* 12. 3.

*Oratio, ut suprà ad* 1. *Vesperas, nisi sit propria.*

---

# COMMUNE UNIUS PRESBYTERI vel Levitæ.

## IN PRIMIS VESPERIS.

*Ant.* 6. f. Lábia Sacerdótis custódient sciéntiam, & legem requírent ex ore ejus. *Malach.* 2. 7.

*Ant.* 4. e. Sacerdótes qui accédunt ad Dóminum sanctificéntur. *Exod.* 19. 22.

*Ant.* 3. A. Incénsum & panes Dei sui ófferunt, & ídeò sancti erunt. *Levit.* 21. 6.

*Ant.* 5. a. Qui habúerit máculam, non ófferet panes Deo suo, nec accédet ad ministérium ejus. *Ibid. v.* 17.

*Ant.* 7. g. Separábis eos de médio filiórum Israël, ut sint mei. *Num.* 8. 14.

*Capitul. Ezech.* 44. *v.* 28. 29.

POssessiónem non dábitis eis in I'sraël, ego enim posséssio eórum. Víctimam & pro peccáto & pro delícto ipsi cómedent, & omne votum in I'sraël ipsórum erit.

*In Festis duplicibus, & suprà.*

℟. Panes propositiónis erunt Aaron & filiórum ejus, ut cómedant eos in loco sancto. * Quia Sanctum sanctórum est de sacrifíciis Dómini jure perpétuo. *Levit.* 24. 9. ℣. Intrávit David in domum Dei, & panes propositiónis comédit, quos non licébat édere, nisi solis Sacerdótibus. *Matt.* 12.4. * Quia. ℣. Glória. * Quia.

*Hymnus.*

JAM satis fluxit cruor hostiárum,
Prístinæ cessent holocáusta legis,
Christe, quos formas, melióra libant
Sacra minístri.

PINGUE libámen, novus & sacérdos
Orbe jam toto Deus immolátur,
Se manu nostrâ litat incruénto
Fúnere Christus.

CHRISTE, fac semper tua sacra puro
Corde tractémus, manibúsque puris;
Cháritas aptos tua nos treméndis
A'pplicet aris.

LU'MINIS splendor, Patris una proles,
Christe, te pronus venerétur Orbis,
Qui sacerdótes per amóris almi
Flamen inúngis.
Amen.

℣. Sacrificáte sacrifícium justítiæ, ℟. Et speráte in Dómino. *Ps.* 4. 6.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 3. e. Oblátio justi impínguat altáre, & odor suavitátis est in conspéctu Altíssimi, sacrifícium illius accéptum est. *Eccli.* 35. 8.

*Oratio.*

DOmine, Deus omnípotens, qui fámulum tuum N. ut sacerdótio tibi fungerétur à pópulo segregásti; præsta, quæsumus, ut ejus exémpla sectántes, genus eléctum, regále sacerdótium, gens sancta, pópulus acquisitiónis éffici mereámur. Per Dóminum.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitatorium.* Sacerdótem in ætérnum * Veníte, adorémus. *Hebr.* 5. 6.

*Ps.* Veníte, *pag.* 2.

*Hymnus.* JAM satis, *ut in primis Vesperis.*

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 7. a. Ego sum Dómi-

nus: Sancti éritis, quia ego sanctus sum. *Lev*, 11. *v*. 45. 46.

*Ant*. 6. f. Vos qui estis príncipes familiárum Leviticárum, sanctificámini cum frátribus vestris. 1. *Paralip*. 15. 12.

*Ant*. 2. d. Erit hoc vobis legítimum sempitérnum, ut orétis pro fíliis I'sraël, & pro cunctis peccátis eórum. *Levit*. 16. 34.

℣. Dómini est assúmptio nostra, ℟. Et sancti I'sraël regis nostri. *Ps*. 88. 19.

℟. I. Ministráte Dómino Deo vestro, & pópulo ejus, sanctificáti immoláte: * Fratres étiam vestros ut possint juxta verba quæ locútus est Dóminus fácere, præparáte. 2. *Paral*. 35. *v*. 3. 6. ℣. Dignè Evangélio Christi conversámini, collaborántes fídei Evangélii. *Philip*. 1. 27. * Fratres.

℟. II. Audíte Levítæ: Sanctificámini, mundáte domum Dómini Dei, & * Auférte omnem immundítiam de sanctuário. 2. *Par*. 29. 5. ℣. Auférte ista hinc, & nolíte fácere domum Patris mei, domum negotiatiónis. *Joan*. 2. 16. * Auférte.

℟. III. Ineámus fœdus cum Dómino Deo I'sraël: Nolíte neglígere: * Vos elégit Dóminus ut stetis coram eo, & ministrétis ei. 2. *Paralip*. 29. *v*. 10. 11. ℣. Superædificámini domus spirituális, sacerdótium sanctum, offérre spirituáles hóstias, acceptábiles Deo. 1. *Pet*. 2. 5. * Vos elégit. ℣. Glória. * Vos elégit.

IN II. NOCTURNO.

*Ant*. 8. c. Hæc dicit Dóminus exercítuum: Intérroga sacerdótes legem. *Agg*. 2. 12.

*Ant*. 4. *irreg*. d. Cum fúerit controvérsia, stabunt in judíciis meis & judicábunt. *Ezech*. 44. 24.

*Ant*. 5. a. Vidéte quid faciátis: non enim hóminis exercétis judícium, sed Dómini. 2. *Par*. 19. 6.

℣. De vultu tuo judícium meum pródeat, ℟. O'culi tui tui vídeant æquitátes. *Psal*. 16. 2.

℟. IV. Agétis in timóre Dómini fidéliter & corde perfécto, ubicúnque quæstio est de lege: osténdite eis, ut non peccent in Dóminum: * Sic agéntes non peccábitis. 2. *Par*. 19. *v*. 9. 10. ℣. Nolíte judicáre secúndùm fáciem, sed justum judícium judicáte. *Joan*. 7. 24. * Sic.

℟. V. Surrexérunt Sacerdótes atque Levítæ benedicéntes pópulo, & * Exaudíta est vox eórum, perveníteque orátio in habitáculum sanctum cœli. 2. *Paralip*. 30. 27. ℣. Per probatiónem ministérii hujus glorificántes Deum.

2. *Cor.* 9. 13. * Exaudíta.

℟. VI. Exténdens Jesus manum, tétigit leprósum, & conféstim mundáta est lepra ejus, & ait illi Jesus: Vide, némini díxeris; sed * Vade, osténde te Sacerdóti. *Matt.* 8. *v.* 3. 4. ℣. Hic est ritus leprósi quando mundándus est: Adducétur ad Sacerdótem. *Levit.* 14. 2. * Vade. ℣. Glória. * Vade.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 1. F. Sacerdótes & Levítæ stabunt in conspéctu meo, ut ófferant mihi. *Ezec.* 44. 15.

*Ant.* 4. e. Effúdit in fundaménto altáris odórem divínum excélso príncipi. *Ibid. v.* 17.

*Ant.* 3. a. Pópulum meum docébunt quid sit inter sanctum & pollútum, mundum & immúndum. *Ibid. v.* 23.

℣. Ad Deum meum clamávi, ℟. Et exaudívit de templo sancto suo vocem meam. *Psal.* 17. 7.

℟. VII. O'btulit holocáustum Dómino, & * Clamávit ad Dóminum pro I'sraël, & exaudívit eum Dóminus. 1. *Reg.* 7. 9. ℣. Plúrimam hóstiam óbtulit Deo, per quam testimónium consecútus est esse justus. *Hebr.* 11. 4. * Clamávit.

℟. VIII. Confirmávit omnes húmiles pópuli sui: * Legem exquisívit, & ábstulit omne iníquum & malum. 1. *Malac.* 14. 14. ℣. Hic est qui fuit in Ecclésia, qui accépit verba vitæ dare nobis. *Act.* 7. 38. * Legem.

℟. IX. Qui benè præsunt Presbyteri, dúplici honóre digni habeántur, máximè qui labórant in verbo & doctrina: * Dicit enim Scriptúra: † Dignus est operárius mercéde suâ. 1. *Tim.* 5. *v.* 17. 18. ℣. Honorífica Sacerdótes: Da illis partem, sicut mandátum est tibi, primitiárum. *Eccli.* 7. 33. † Dicit. ℣. Glória. * Dignus.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Domus Aaron benedícite Dómino. ℟. Domus Levi benedícite Dómino. *Psal.* 134. *v.* 19. 20.

*Ant.* 7. c. Vide ministérium quod accepísti in Dómino, ut illud ímpleas. *Coloss.* 4. 17.

*Ant.* 6. f. Qui benè ministráverint, gradum bonum sibi acquírent, & multam fidúciam in fide. 1. *Tim.* 3. 13.

*Ant.* 2. D. Confortáre in grátia, quæ est in Christo Jesu: nemo mílitans Deo ímplicat se negótiis seculáribus. 2. *Timot.* 2. *v.* 1. 4.

*Ant.* 6. *irreg.* Ministráte in fide vestra virtútem, in virtúte autem sciéntiam. 2. *Petr.* 1. 5.

*Ant.*

*Ant.* 1. a. Grátias ago ei, qui me confortávit, Christo Jesu, quia fidélem me existimávit, ponens in ministério. 1. *Tim.* 1. 12.

*Capitulum.* 1. *Pet.* 1. 15.

SEcúndùm eum, qui vocávit vos, Sanctum, & ipsi in omni conversatióne sancti sitis, quóniam scriptum est: Sancti éritis: quóniam ego Sanctus sum.

*Hymnus.*

O Sacerdótum veneránda jura!
Cùm reum solvunt, Deus ipse solvit;
Cùm ligant sontem, Deus ipse sontis
Víncula nectit.

VERBA dum promunt, pópulus fidélis
E'xcipit vocem, cúpidus docéri,
Atque divínæ sacra verba legis
Mente recóndit.

DUM Sacerdótes tua sacra tractant,
Christe, fac sacris quibus applicásti
Cónsonent mores, populíque fiat
Forma sacérdos.

LU'MINIS splendor Patris una proles,
Christe, te pronus venerátur Orbis,
Qui Sacerdótes per amóris almi
Flamen inúngis.
Amen.

℣. I'mmola Deo sacrifícium laudis, ℟. Et redde Altíssimo vota tua. *Ps.* 49. 14.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. f. Fidúciam habémus per Christum ad Deum, qui & idóneos nos fecit minístros novi Testaménti, non litterâ sed spíritu. 2. *Cor.* 3. *v.* 4. 6.

*Oratio ut suprà ad primas Vesperas, nisi sit propria.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 7. C. Vide.

AD TERTIAM.

*Ant.* 6. f. Qui benè ministráverint.

*Capitulum.* *Exod.* 28. 41.

CUnctórum consecrábis manus, sanctificabísque illos, ut sacerdótio fungántur mihi.

℟. *br.* Voluntáriè * Sacrificábo tibi. *Repet.* Voluntáriè. ℣. Et confitébor nómini tuo, Dómine. *Ps.* 53. 8. * Sacrificábo tibi. ℣. Glória Patri. *Repet.* Voluntáriè.

℣. Circúndabo altáre tuum, Dómine. ℟. Ut áudiam vocem laudis. *Ps.* 25. 6.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Confortáre.

*Capitulum.* 2. *Paralip.* 31. *v.* 20. 21.

OPerátus est bonum, & rectum, & verum, coram Dómino Deo suo in univérsa cultúra ministérii domûs Dó-

mini, juxta legem & cæremónias, volens requírere Deum suum in toto corde suo: fecítque & prosperátus est.

℞. *breve*. Dómine, diléxi * Decórem domûs tuæ, *Repet*. Dómine. ℣. Et locum habitatiónis glóriæ tuæ. *Psal.* 25. 8. * Decórem. ℣. Glória. *Repet*. Dómine.

℣. Tabéscere me fecit zelus meus; ℞. Quia oblíti sunt verba tua inimíci mei. *Psal.* 118. 139.

AD NONAM.

*Ant*. 1. a. Grátias ago.

*Capitulum*. 1. *Tim*. 6. 11.

O Homo Dei, sectáre justítiam, pietátem, fidem, charitátem, patiéntiam, mansuetúdinem.

℞. *breve*. Ego sicut olíva fructífera * In domo Dei; *Repet*. Ego. ℣. Sperávi in misericórdia Dei in ætérnum. *Ps*. 51. 10. * In. ℣. Glória. *Repet*. Ego.

℣. Cantábo & psalmum dicam Dómino; ℞. Exáudi, Dómine, vocem meam. *Psal.* 26. *v*. 6. 7.

AD VESPERAS.

*Antiphonæ de Laudibus.*

*Capitul*. *Eccli*. 7. *v*. 31. 32. 33.

IN tota ánima tua time Dóminum, & sacerdótes illíus sanctífica: in omni virtúte dílige eum, qui te fecit, & minístros ejus ne derelínquas: honóra Deum ex tota ánima tua, & honorífica sacerdótes.

*In Triplicibus*. ℞. Qui bene præsunt IX. *de Officio Nocturno*.

℣. Elégit eum Dóminus ℞. Páscere hereditátem suam. *Psal.* 77. *v*. 70. 71.

*Hymnus*. JAM satis fluxit, *ut in primis Vesperis*.

*Ad* Magníficat. *Ant*. 5. f. Consummatióne fungens in ara, amplificáre oblatiónem excélsi regis, porréxit manum suam in libatióne, & libávit de sánguine uvæ. *Eccli.* 50. 15.

*Oratio, ut ad primas Vesperas, nisi sit propria.*

---

# COMMUNE UNIUS ABBATIS vel Monachi.

IN PRIMIS VESPERIS.

*Ant*. 8. g. Exultábit solitúdo, & florébit quasi lílium, exultábit lætabúnda & laudans. *Isai*. 35. *v*. 1. 2.

*Ant*. 3. c. Bonum est viro, cùm portáverit jugum ab adolescéntia sua, sedébit solitárius, & tacébit. *Thren*. 3. *v*. 27. 28.

*Ant*. 4. e. Erit quasi lílium quod transplantátur super aquas, quod ad humórem mittit radíces suas. *Jer*. 17. 8.

*Ant*. 7. d. Erúmpet radix

ejus ut Líbani, & erit quasi olíva glória ejus. *Osee* 14. ℣. 6. 7.

*Ant.* 2. D. Erit fólium ejus víride, nec aliquándo désinet fácere fructum. *Jerem.* 17. 8.

*Capitulum. Jerem.* 51. 6.

FU'gite de médio Babylónis, & salvet unusquísque ánimam suam : nolíte tacére super iniquitátem ejus : quóniam tempus ultiónis est à Dómino.

*In Duplicibus & suprà.*

℟. Erit vir sicut qui abscónditur à vento, * Et celat se à tempestáte. *Isai.* 32. 2. ℣. Fide obedívit in locum exíre ; & éxiit nésciens quò iret. *Hebr.* 11. 8. * Et celat se. ℣. Glória Patri. * Et celat se.

*Hymnus. Sanctol. Victor.*

JAM mundi líceat pángere tránsfugas :
Certo consílio quos Deus ábdidit,
Ne contágio secli
Mores láederet íntegros.

UT te possídeant, quem sitiunt, Deum,
Urbes, regna, suos, se quoque déserunt :
Totus víluit Orbis
Dum cœléstia cógitant.

ILLIS summa fuit glória, déspici ;
Illis divítiæ, paupériem pati,
Illis summa volúptas
Longo supplício mori ;

FAC nos, summe Deus, quæ pátimur mala
In pœnam scélerum ferre libéntiùs
Et, tellúre relíctâ,
Immortália quærere.

ÆTERNUS sit honos ingénito Patri ;
Sit par unígenæ glória Fílio
Sacri nexus amóris,
Laus compar tibi, Spíritus.
Amen.

℣. Quis dabit mihi pennas sicut colúmbæ ? ℟. Et volábo & requiéscam. *Ps.* 54. 7.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 6. *irr.* Assúmpsit eum Dóminus, atque portávit in húmeris suis. Dóminus solus dux ejus fuit. *Deut.* 32. *v.* 11. 12.

*Oratio, nisi sit propria.*

INtercéssio nos, quǽsumus Dómine, beáti N. Abbátis comméndet, ut quod nostris méritis non valémus, ejus patrocínio assequámur. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

DEus, cujus múnere beátus N. Abbas, ut Christum Fílium tuum alácriùs sequerétur, ómnia relíquit ; da cunctis sémitam mandatórum tuórum ingréssis, ut nec retrò respíciant, nec in via hǽreant ; sed ad te sine offensióne curréntes, vitam ætérnam ad quam vocáti sunt, apprehéndant. Per Dó-

minum nostrum Jesum Christum.

*Alia Oratio.*

OMnípotens sempitérne Deus, terréna pro te calcántium merces magna nimis; da nobis, exémplo & intercessióne beáti N. cujus solémnia celebrámus, temporália ómnia despícere; & ad ætérna totâ mentis intentióne festináre. Per Dóminum.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Jesum qui ductus est in desértum, * Veníte, adorémus. *Matth.* 4. 1.

*Psal.* Veníte, *p.* 2.

*Hymnus. Sanctol. Victor.*

TUâ beándos glóriâ
Miris, Deus, probas modis,
Qui, dum lates præséntior,
Votis amántum páscceris

PROCUL remóti, súplices
Tendunt manus, & pátriam
Per vota, per suspíria
Cœlum salútant éxules.

TE sola mors cùm det frui,
Sese necant labóribus;
Sese necant jejúniis,
Et, quâ licet, vellent mori.

QUAM, morte promtâ, férvidam
Emére palmam Mártyres,
Hic doctus in dies mori
Longo repórtat fúnere.

ÆTÉRNE tu Verbi Pater,
Ætérne Fili, par Patri,
Et par utríque, Spíritus,
Tibi, Deus, sit glória. Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 1. a. Quid prodest hómini, si mundum univérsum lucrétur, ánimæ verò suæ detriméntum patiátur? *Matth.* 16. 26.

*Ant.* 6. F. Quicúnque volúerit amícus esse séculi hujus, inimícus Dei constitúitur. *Jacobi* 4. 4.

*Ant.* 2. d. Quæ participátio justítiæ cum iniquitáte? aut quæ societas luci ad ténebras? 2. *Cor.* 6. 14.

℣. Ecce elongávi fúgiens,
℟. Et mansi in solitúdine. *Ps.* 54. 8.

℟. I. Majóres divítias æstimans thesáuro Ægyptiórum impropérium Christi; * Fide relíquit Ægyptum. *Hebr.* 11. 27. ℣. Dixit patri suo & matri suæ; Néscio vos, & frátribus suis, Ignóro vos. *Deuter.* 33. 9. * Fide.

℟. II. In cásulis habitándo cum coherédibus repromissiónis ejúsdem, * Expectábat fundaménta habéntem civitátem cujus ártifex & cónditor Deus. *Hebr.* 11. *v.* 9. 11. ℣. Secésserat in desértum locum ibíque cum suis vitam agébat. 2. *Mach.* 5. 27. * Expectábat.

℟. III. A'nimam castificávit in obediéntia charitátis * In fraternitátis amóre. 1. *Pet.* 1. 22. ℣. Mens justi medití-

tur obediéntiam. *Prov.* 15. 28. * In fraternitátis amóre. ℣. Glória Patri. * In fraternitátis amóre.

## IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 3. A. Circundúxit eum Dóminus, & dócuit, & custodívit quasi pupíllam óculi sui. *Deut.* 32. 10.

*Ant.* 6. f. Non hábuit ánimi sui tristítiam, & non éxcidit à spe sua. *Eccli.* 14. 2.

*Ant.* 5. a. Pauper gloriátur per disciplínam & timórem suum. *Eccli.* 10. 33.

℣. Elégi abjéctus esse in domo Dei mei, ℟. Magis quàm habitáre in tabernáculis peccatórum. *Ps.* 83. 12.

℟. IV. Multitúdinis credéntium erat cor unum, & ánima una; * Nec quisquam áliquid suum esse dicébat, sed erant illis ómnia commúnia. *Act.* 4. 32. ℣. Reliquérunt quæcúnque habébant. 1. *Machab.* 2. 28. * Nec quisquam.

℟. V. Opéruit cilício carnem suam, * Jejunávit & dormívit in sacco, & ambulávit demísso cápite. 3. *Reg.* 21. 27. ℣. In vigíliis multis, in fame & siti, in frígore & nuditáte. 2. *Cor.* 11. 27. * Jejunávit.

℟. VI. Iste pauper clamávit, * Et Dóminus exaudívit eum. *Ps.* 33. 7. ℣. Multùm valet deprecátio justi assídua. *Jacob.* 5. 16. * Et Dóminus. ℣. Glória Patri. * Et Dóminus.

## IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 7. a. Omnes obédiunt uni, & non est invídia, neque zelus inter eos. 1. *Mach.* 8. 16.

*Ant.* 4. d. Dixit illi Dóminus: Séquere me; & relíctis ómnibus, secútus est eum. *Luc.* 5. 27.

*Ant.* 8. c. Manducávit panem cum luctu & tremóre. *Tob.* 2. 5.

℣. Cogitávi dies antíquos, ℟. Et annos ætérnos in mente hábui. *Ps.* 76. 6.

℟. VII. Hic multis tempóribus continéntiæ propósitum ténuit, * Corpúsque & ánimam trádere conténtus pro perseverántia. 2. *Mach.* 14. 38. ℣. Secedébat in desértum, & orábat. *Luc.* 5. 16. * Corpúsque & ánimam.

℟. VIII. Fecit quod plácuit Deo, * Et spíritu magno vidit última. *Eccli.* 48. *v.* 25. 27. ℣. Grátias agens Deo, accépit fidúciam. *Act.* 28. 15. * Et spíritu.

℟. IX. In fide & lenitáte ipsíus * Dóminus sanctum fecit illum. *Eccli.* 45. 4. ℣. Gloriétur frater húmilis in exaltatióne sua. *Jac.* 1. 9. * Dóminus. ℣. Glória Patri. * Dóminus.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerdotalis.* Benedícite sancti & húmiles corde Dómino: ℟. Laudáte & superexaltáte eum in sécula. *Dan.* 3. 87.

*Ant.* 5. f. Iste custodívit ánimam suam, & memor fuit Dómini in toto corde suo. *Tob.* 1. *v.* 12. 13.

*Ant.* 2. D. Abjécit vestiméntum suum à se, & indútus est sacco, & sedit in cínere. *Jonæ* 3. 6.

*Ant.* 7. C. De labóre mánuum suárum victum quem cónsequi póterat, deferébat. *Tob.* 2. 19.

*Ant.* 8. c. Nocte & ante lucem egrediebátur ad oratiónem & deprecabátur Dóminum. *Judith* 12. 5.

*Ant.* 4. e. In solitúdine portávit te Dóminus, ut solet homo gestáre párvulum suum. *Deuter.* 1. 31.

*Capitulum.* 1. *Cor.* 9. 25.

FRatres; Omnis qui in agóne conténdit, ab ómnibus se ábstinet, & illi quidem ut corruptíbilem corónam accípiant, nos autem incorrúptam.

*Hymnus. Sanctol. Victor.*

QUid tu relíctis úrbibus,
Mortálium consórtia
Timens fugis? quid tu vides?
Solúsque tecum cógitas?
Mentis voláta líbero,
Percúrris ætérnas domos;
Et quæ negas mortálibus,
Transfers Deo commércia.
Præsens choris cœléstibus,
Sacro quiétus ótio,
Totus tuéndo númini,
Totus colèndo tu vacas.
Quàm pura, qui te díffigunt,
O Christe, libant gáudia!
Te propter antris ábditos
Tuo recóndis in sinu.
Ætérne tu Verbi Pater,
Ætérne Fili, par Patri;
Et par utríque, Spíritus,
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

℣. Abscóndit me Dóminus in tabernáculo suo; ℟. In die malórum protéxit me. *Psal.* 26. 5.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. f. Fide demorátus est in terra repromissiónis tanquàm in aliéna. *Hebr.* 11. 9.

*Oratio, ut suprà in j. Vesperis, nisi sit propria.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 5. f. Iste custodívit.

AD TERTIAM.

*Ant.* 2. D. Abjécit.

*Capitulum. Coloss.* 3. 5.

MOrtificáte membra vestra, quæ sunt super terram; fornicatiónem, immundítiam, libídinem, concupiscéntiam malam & avarítiam

quæ est simulacrórum sérvitus.

℟. *breve.* Pósui * Vestiméntum meum cilícium. *Repetitur* Pósui. ℣. Et opérui in jejúnio ánimam meam. *Psal.* 68. *v.* 11. 12. * Vestiméntum. ℣. Glória. *Repet.* Pósui.

℣. Cínerem tanquàm panem manducábam; ℟. Et potum meum cum fletu miscébam. *Ps.* 101. 10.

## Ad Sextam.

*Ant.* 7. C. De labóre.

*Capitulum.* 2. *Thess.* 3. 10.

CUm essémus apud vos, hoc denuntiabámus vobis, quóniam si quis non vult operári, nec mandúcet.

℟. *br.* In labóribus * A juventúte mea. *Repet.* In labóribus. ℣. Exaltátus autem humiliátus sum & conturbátus. *Psal.* 87. 16. * A juventúte. ℣. Glória. *Repet.* In labóribus.

℣. In factis mánuum tuárum meditábar. ℟. Expándi manus meas ad te. *Ps.* 142. *v.* 5. 6.

## Ad Nonam.

*Ant.* 4. e. In solitúdine.

*Capitulum.* *Osee* 2. *v.* 14. 15.

DUcam eum in solitúdinem, & loquar ad cor ejus, & canet ibi juxta dies juventútis suæ, & juxta dies ascensiónis suæ de terra Ægypti.

℟. *br.* Extráneus factus sum * Frátribus meis, *Repet.* Extráneus. ℣. Et peregrínus fíliis matris meæ. *Psal.* 68. 9. * Frátribus. ℣. Glória. *Repet.* Extráneus.

℣. Sépties in die laudem dixi tibi, ℟. Super judícia justítiæ tuæ. *Ps.* 118. 164.

## Ad Vesperas.

*Antiphonæ de Laudibus.*

*Capitulum.* *Coloss.* 3. *v.* 3. 4.

MOrtui estis, & vita vestra est abscóndita cum Christo in Deo: cùm Christus apparúerit vita vestra, tunc & vos apparébitis cum ipso in glória.

*In Tripl.* ℟. In fide, IX. *de Officio Nocturno.*

*Hymnus.* Jam mundi, *ut in j. Vesperis.*

℣. Beáta gens cujus est Dóminus Deus ejus; ℟. Pópulus quem elégit in hereditátem sibi. *Ps.* 32. 12.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. d. Omnis qui relíquerit domum vel fratres, aut patrem, aut agros propter nomen meum, céntuplum accípiet, & vitam ætérnam possidébit. *Matth.* 19. 29.

*Oratio, ut suprà ad j. Vesperas, nisi sit propria.*

# COMMUNE UNIUS LAICI.

## IN I. VESPERIS.

*Ant.* 1. a. Tenébit justus viam suam, & mundis mánibus addet fortitúdinem. *Job* 17. 9.

*Ant.* 2. d. Timénti Dóminum benè erit, & in diébus consummatiónis illíus benedicétur. *Eccli.* 1. 19.

*Ant.* 3. a. Timor Dómini delectábit cor, & dabit lætítiam, & gáudium, & longitúdinem diérum. *Ibid. v.* 12.

*Ant.* 4. d. Fortitúdo símplicis via Dómini; justus in ætérnum non commovébitur. *Prov.* 10. *v.* 29. 30.

*Ant.* 5. a. Quasi virens fólium germinábit, fructus justi lignum vitæ. *Proverb. v.* 28. 30.

*Capitulum. Eccli.* 39. 6.

COr suum tradet ad vigilándum dilúculo ad Dóminum, qui fecit illum, & in conspéctu Altíssimi deprecábitur.

*In Duplicibus & suprà.*

℟. Benedíctio Dei in mercédem justi, * Et in hora velóci procéssus illíus fructíficat. *Eccli.* 11. 24. ℣. Qui récipit justum in nómine justi, mercédem justi accípiet. *Matth.* 10. 41. * Et in hora. ℣. Glória. * Et in hora.

*Hymnus. Guillelmus Episcop. Sanct.*

SUMMI pusíllus grex Patris,
Timóre mentem sólvite;
Sui patérnus vos amor
Vult esse regni cómpotes.

GAUDÉTE; regnat ínclytus
Hic qui fugáci século
Ignótus, exósus sibi,
Qui pauper, & sciens pati.

ANGÚSTA pœniténtiæ
Ingréssus, & viam Crucis,
Per dura Christum prælia,
Per damna, non timet sequi.

CARNEM terit jejúniis;
Linguam domat siléntio;
In páuperum, parcus sibi,
Abscóndit & spargit sinu.

SAPÓRE verbi páscitur;
Totóque Legem péctore
Scrutátus, orat pérvigil;
Mens celsa versátur polo.

HAC surgit ad cœlum viâ;
Et nos eâdem da, Pater,
Da, Nate, da cum Spíritu,
Ad te veníre sémitâ.
Amen.

℣. Beátus vir, cujus est nomen Dómini spes ejus: ℟. Et non respéxit in vanitátes & insánias falsas. *Ps.* 39. 5.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 1. d. Assimilábitur viro sapiénti, qui ædificávit domum suam supra petram. *Matth.* 7. 24.

*Oratio.*

ADésto, Dómine, supplicatiónibus nostris, quas in beáti N. festivitáte deférimus; ut, qui nostræ

justítiæ fidúciam non habémus, ejus qui tibi plácuit, précibus adjuvémur. Per Dóminum.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invit.* Diligéntem justos Dóminum, * Veníte, adorémus. *Ps.* 145. 8.

*Psal.* Veníte, *pag.* 2.

*Hymnus. Santol. Victor.*

NON parta solo sánguine
Ornat Beátos púrpura:
Sunt incruénta, quæ suos
Habent triúmphos, prælia.

NON iste flammas, non cruces
Non sensit uncos péctines:
Crudélis & durus sibi
Se morte lentâ cónficit.

SI lictor illi défuit,
Si vincla, fustes, úngulæ;
Paráta pro Christo mori,
Hoc supplet omne cháritas.

CORPUS subégit cástitas,
Et líberam mentem fides,
Amor supérnis ígnibus
Totam litávit hóstiam.

VENIS apértis ómnibus,
Qui vellet ultro erúmpere,
Fraudátus optátâ viâ,
It fusus in fletum cruor.

DA, Christe, sic nos vívere,
Discámus ut semper mori;
Da post brevis vitæ dies,
Vitæ perénnis gáudia.

ÆTÉRNE tu Verbi Pater,
Ætérne Fili, par Patri,
Et par utríque, Spíritus
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

IN I NOCTURNO.

*Ant.* 8. g. Turris fortíssima nomen Dómini: ad ipsum currit justus, & exaltábitur. *Prov.* 18. 10.

*Ant.* 4. e. Quasi lux splendens, procédit & crescit usque ad perféctum diem. *Prov.* 4. 18.

*Ant.* 1. f. Corde præcépta súscipit, ámbulat simplíciter, ámbulat confidénter. *Prov.* 10. *v.* 8. 9.

℣. Beátus vir, qui timet Dóminum: ℟. In mandátis ejus cupit nimis. *Ps.* 111. 1.

℟. I. In lege Dómini volúntas ejus, * In lege ejus meditábitur die ac nocte. *Ps.* 1. 2. ℣. Quóniam opórtet semper oráre & non defícere. *Luc.* 18. 1. * In lege.

℟. II. Stabilíta sunt bona illíus in Dómino, * Eleemósynas illíus enarrábit omnis Ecclésia Sanctórum. *Eccli.* 31. 11. ℣. Qui séminat in benedictiónibus, de benedictiónibus & metet. 2. *Cor.* 9. 6. * Eleemósynas.

℟. III. Hic solus fugiébat consórtia ómnium, * Pergébat in Jerúsalem ad templum Dómini, & ibi adorábat Dóminum Deum Israël. *Tob.* 1. *v.* 5. 6. ℣. Fúgiens ejus, quæ in mundo est concupiscéntiæ corruptiónem. 2. *Petr.* 1. 4. * Pergébat. ℣. Glória Patri. * Pergébat.

IN II. NOCTURNO.

*Ant*. 5. a. Pietas ad ómnia útilis est, promissiónem habens vitæ, quæ nunc est, & futúræ. 1. *Timoth*. 4. 8.

*Ant*. 2. d. Ecce verè Israëlita, in quo dolus non est. *Joan*. 1. 47.

*Ant*. 6. f. Qui dicit se in Christo manére, debet, sicut ille ambulávit, & ipse ambuláre. 1. *Joan*. 2. 6.

℣. Lex Dei ejus in corde ipsíus, ℟. Et non supplantabúntur gressus ejus. *Ps*. 36. 31.

℟. IV. Qui se exáltat, humiliábitur, * Et qui se humíliat, exaltábitur. *Luc*. 14. 11. ℣. Eréxit eum Deus ab humilitáte ipsíus, & exaltávit caput ejus. *Eccli*. 11. 13. * Et qui se.

℟. V. Manifesténtur ópera ejus, * Quia in Deo sunt facta. *Joan*. 3. 21. ℣. Lætificábat Jacob in opéribus suis. 1. *Machab*. 3. 7. * Quia in Deo.

℟. VI. Qui servat verbum Christi, * Verè in hoc cháritas Dei perfécta est. 1. *Joan*. 2. 5. ℣. In séculum memória ejus in benedictióne. 1. *Machab*. 3. 7. * Verè. ℣. Glória Patri. * Verè.

IN III. NOCTURNO.

*Ant*. 1. *irreg*. Gáudium justo est fácere judícium. *Prov*. 21. 15.

*Ant*. 7. d. Pecúnias non accépit, & non accusávit illum homo. *Eccli*. 46. 22.

*Ant*. 3. c. Fecit quod rectum erat in conspéctu Dómini. 3. *Reg*. 22. 43.

℣. Servávi mandáta tua, & testimónia tua; ℟. Quia omnes viæ meæ in conspéctu tuo. *Ps*. 118. 168.

℟. VII. Qui ámbulat in justítiis, & lóquitur veritátem * Iste in excélsis habitábit. *Isa*. 33. *v*. 15. 16. ℣. Qui justus est, justificétur adhuc: & sanctus, sanctificétur adhuc. *Apoc*. 22. 11. * Iste.

℟. VIII. Claudit óculos suos ne vídeant malum; * Regem in decóre suo vidébunt óculi ejus, cernent terram de longè. *Isa*. 33. *v*. 15. 17. ℣. Qui facit voluntátem Dei, manet in ætérnum. 1. *Joan*. 2. 18. * Regem.

℟. IX. Ambulávit servus tuus in conspéctu tuo in veritáte, & justítia, & recto corde tecum, * Custodísti ei, Dómine, misericórdiam tuam grandem. 3. *Reg*. 3. 6. ℣. Habet vitam ætérnam, & in judícium non venit, sed tránsit à morte in vitam. *Joan*. 5. 24. * Custodísti. ℣. Glória Patri. * Custodísti.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd*. Lux orta est

justo. ℟. Et rectis corde lætítia. *Ps.* 96. 11.

*Ant.* 3. a. O'culus Dei respéxit illum in bono, miráti sunt in illo multi, & honoravérunt Deum. *Eccli.* 11. 13.

*Ant.* 4. *irr.* a. Pótuit tránsgredi, & non est trangréssus: fácere mala & non fecit. *Eccli.* 31. 10.

*Ant.* 2. D. Conservávit legem Excélsi, & fuit in testaménto cum illo. *Eccli.* 44. 20.

*Ant.* 8. c. Diléctus Deo & homínibus, cujus memória in benedictióne est. *Eccli.* 45. 1.

*Ant.* 1. F. De omni corde suo laudávit Dóminum, & diléxit Deum, qui fecit illum. *Eccli.* 47. 10.

*Capitulum. Eccli.* 31. *v.* 8. 9.

BEátus qui invéntus est sine mácula: & qui post aurum non ábiit, nec sperávit in pecúnia, & thesáuris: quis est hic, & laudábimus eum? fecit enim mirabília in vita sua.

*Hymnus. Sanctol. Victor.*

QUi te, Deus, sub íntimo
Amans recépit péctore,
Non ille terras ámplius
Suspírat, oblítus sui.

Quid ergo gaudes néctere
Tristes moras amántibus?
Terris retárdas éxules,
Cives polo quos déstinas.

Hinc fervet in dies amor;
In vota toti diffluunt;
Ad astra festinántibus
Fit pœna, vita lóngior.

Vix iste tardi córporis
Pondus moléstum sústinet;
Præ mortis óccupat diem
Ardens Deo se júngere.

Ætérne tu Verbi Pater,
Ætérne Fili, par Patri,
Et par utríque, Spíritus
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

*Vers.* Servávi mandáta tua, Dómine, *Resp.* Et testimónia *Psal.* 118. 168.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 6. f. Qui probátus, & perféctus est; erit illi glória ætérna. *Eccli.* tua. *Ps.* 31. 10.

*Oratio, ut suprà ad* 1. *Vesperas, nisi fuerit propria.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 3. a. O'culus Dei.

AD TERTIAM.

*Ant.* 4. *irr.* a. Pótuit.

*Capitulum. Jac.* 1. 27.

REligio munda, & immaculáta apud Deum hæc est visitáre pupíllos, & víduas in tribulatióne eórum; & immaculátum se custodíre ab hoc século.

℟. *breve.* Justítia ejus manet * In séculum séculi. *Repet.* Justítia. *Vers.* Cornu ejus exaltábitur in glória. *Ps.* 111. 9. * In séculum. ℣. Glória Patri. *Repet.* Justítia ejus.

*Vers.* Legem pone mihi,

Dómine, viam justificatiónum tuárum, ℟. Et exquíram eam semper. *Ps.* 118. 33.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. D. Conservávit.

*Capitulum. Eccli.* 33. *v.* 2. 3.

SA'piens non odit mandáta & justítias, credit legi Dei, & Lex illi fidélis.

℟. *breve.* Judícia Dómini vera * Justificáta in semetípsa. *Repet.* Judícia. *Vers.* In custodiéndis illis retribútio multa. *Ps.* 18. *v.* 10. 11. * Justificáta. *Vers.* Glória Patri. *Repet.* Judícia Dómini.

*Vers.* Custodívi vias Dómini, ℟. Nec ímpiè gessi à Deo meo. *Ps.* 17. 22.

AD NONAM.

*Ant.* 1. F. De omni corde.

*Capitulum. Job* 23. *v.* 11. 12.

VIam Dei custodívi, & non declinávi ex ea, à mandátis labiórum ejus non recéssi & in sinu meo abscóndi verba oris ejus.

℟. *breve.* Confitébor tibi * In directióne cordis. *Repet.* Confitébor. *Vers.* In eo quòd dídici judícia justítiæ tuæ. *Ps.* 118. 7. * In. *Vers.* Glória Patri. *Repet.* Confitébor.

*Vers.* Ambulábam in latitúdine. *Resp.* Quia mandáta tua exquisívi. *Ps.* 118. 45.

AD VESPERAS.

*Ant.* O'culus Dei, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum.* 1. *Petr.* 3. *v.* 10. 11.

QUi vult vitam dilígere, & dies vidére bonos, declínet à malo, & fáciat bonum: inquírat pacem, & sequátur eam.

*In Triplic. Resp.* Ambulávit IX. *de Officio nocturno.*

*Hymnus,* SUMMI pusíllus grex Patris, *ut suprà ad j. Vesperas.*

℣. Beátus vir, cui non imputávit Dóminus peccátum; ℟. Nec est in spíritu ejus dolus. *Ps.* 31. 2.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 7. g. Justum dedúxit Dóminus per vias rectas; & osténdit illi regnum Dei, & dedit illi sciéntiam sanctórum. *Sap.* 10. 10.

*Oratio, ut supra ad j. Vesperas nisi sit propria.*

---

# COMMUNE UNIUS VIRGINIS.

## IN PRIMIS VESPERIS.

*Ant.* 1. a. Non vocáberis ultrà derelícta, quia complácuit Dómino in te. *Isa.* 62. 4.

*Ant.* 2. d. Eris coróna glóriæ in manu Dómini, & diadéma regni in manu Dei tui. *Ibid. v.* 3.

*Ant.* 6. f. I'nduit eam Dóminus quasi sponsam ornátam monílibus suis. *Isa.* 61. 10.

*Ant.* 4. *irr.* a. Dábitur illi fídei donum eléctum, & sors in templo Dei acceptíssima. *Sap.* 3. 14.

*Ant.* 3. a. Habébit fructum in respectióne animárum sanctárum. *Ibid. v.* 13.

*Capitulum. Osee* 2. 19.

SPonsábo te mihi in sempitérnum; & sponsábo te mihi in justítia & judício, & in misericórdia, & in miseratiónibus.

*In Duplicibus, & suprà.*

℟. Concupíscet rex decórem tuum; quóniam * Ipse est Dóminus Deus tuus. *Ps.* 44. 12. ℣. Médiâ nocte clamor factus est; Ecce sponsus venit. *Matth.* 25. 6. * Ipse est. ℣. Glória Patri. * Ipse est.

*Si non sit Martyr,*

*Hymnus.*

VOs ô virgínei cum cítharis chori,
Agni delíciæ, pars gregis óptima
Sponsum virgíneo progénitum sinu
Puris tóllite láudibus.
Hæc est festa dies, cœlítibus sacra
Quâ plenâ rútilans óbvia lámpade
Sponso sponsa Deo próxima cóncinit
Virgo cántica vírgini.
Morta'les thálamos, córporis ímmemor
Solo digna Deo cónjuge, réspuit.
Sponso, perpétuo fœdere, júngitur
Sponsæ se Deus óbligat.
Ægro vix sua sunt pábula córpori,
Nil cernunt óculi, nil sonat áuribus
Morti, quod ráperet próvida præripit;
Unus fit Deus ómnia.
Fac ô Christe tuæ Vírginis æmulos
Nos instáre sacrâ, quâ gráditur viâ;
Qui gens sancta sumus, móribus íntegris
Uni fac tibi vívere.
Da te, summe Pater, tóllere láudibus
Da te, Christe, sequi láurea irginum
Fac incénsa tuis, Spíritus, árdeant
Flammis frígida péctora.
Amen.

*Si sit Martyr.*

*Hymnus. Sanctol. Victor.*

FEstis læta sonent æthera cántibus:
Nunc aptáte tubas, súmite týmpana,
Cœtus Angélici, dícite Vírginem,
Christi dícite Mártyrem.
Vestris illa fuit débita cœ́tibus,
Quæ mortális adhuc, nóbilis æmula
Ut vos exprímeret, dedídicit genus
Virgo córporis ímmemor.
Sed quid cogis amor! fórtiter ámbiit

Sponso virgíneum fúndere sánguinem;
Oblíti méminit tunc benè córporis,
Præclâræ sítiens necis.
Sic quâ parte minor, vos superéminet
Immortále genus, quæ pótuit mori,
Et per damna sui córporis, íntegram
Testári Dómino fidem.
Patri máxima laus, máxima Fílio;
Ambotúmque sacro máxima Flámini
A quo magnánimæ prælia sústinent,
Spreto fúnere, Vírgines. Amen.

*Vers.* Mihi adhærére Deo bonum est: ℞. Pónere in Dómino Deo spem meam. *Ps.* 72. 28.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Felix est stérilis, & incoinquináta, quæ nescívit thorum in delícto. *Sap.* 3. 13.

*Si sit Martyr,*
*Oratio.*

DEus, qui inter cétera poténtiæ tuæ mirácula étiam in sexu frágili victóriam martyrii contulísti: concéde propítius ut qui beátæ N. Vírginis & Mártyris tuæ natalítia cólimus per ejus ad te exémpla gradiámur. Per Dóminum nostrum Jesum Christum.

*Alia Oratio.*

OMnípotens, sempitérne Deus, cujus múnere beáta N. in virginitátis propósito, & in confessióne fidei roboráta, virginitátis ac martyrii palmam adépta est: da nobis, ita córporis ac mentis integritátem serváre, ut nec blandítiis carnis, nec malórum acerbitáte vincámur. Per Dóminum.

*Si sint plures Virgines & Martyres,*
*Oratio.*

DA nobis, quǽsumus, Dómine Deus noster, sanctárum Vírginum & Mártyrum N. N. palmas sincérâ devotióne venerári, ut, quas non póssumus satis dignè celebráre, humílibus saltem prosequámur obséquiis. Per.

*Si non sit Martyr,*
*Oratio.*

DEus, qui nos beátæ N. Vírginis tuæ ánnuâ festivitáte lætíficas; concéde propítius, ut ejus adjuvémur méritis cujus castitátis instrúimur exémplis. Per Dóminum.

*Alia Oratio.*

DEus, qui habitáculum tuum in corde pudíco constituísti; concéde, ut, qui fidélis sponsæ tuæ N. puritátem húmili venerámur obséquio, piæ devotiónis sequámur exémplo. Per Dóminum.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitator.* Agnum quem sequúntur Vírgines,* Veníte, adorémus. *Apoc.* 14. 4.

*Psal.* Veníte, *pag.* 2.

*Si non sit Martyr.*

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

COeléstis aula pánditur;
En sponsus; omnes óbviæ
Exíte Sponso Vírgini,
Exíte, sponsæ Vírgines.

Hæc nuptiális est dies,
Quæ, longa post suspíria,
Dat ómnibus, dat síngulis
Jam plénius frui Deo.

QUÆ casta vobis gáudia,
Quos afflet ignes, dícite:
Ab ore cujus púrior
Torrens volúptas éffluit.

HUNC propter unum víluit
Supérba regum púrpura:
Dotáta quæ sponso Deo,
Qui virgo terris ámbiat?

O virgináles núptiæ
Per quas caro fit spíritus!
O dulce vinclum, júngitur
Quo mens Deo, menti Deus!

SIT laus Patri, laus Fílio,
Sit par tibi laus, Spíritus
Divína qui perénnibus
Firmas sigíllis fœ́dera. Amen.

*Si sit Martyr.*

*Hymnus. Sanctol. Victor.*

VIrginum robur, Deus, atque custos:
Sexus imbéllis, médios per enses,
Dum faves, quas non súperat virîli
Péctore mortes!

PRO tuis armis animósa Virgo
Molle dat pœnis laceráre corpus;
Non suos sentit, memor ô tuórum,
Christe, dolórum!

NON graves plagæ, válidi nec ictus
I'ntegram possunt violáre mentem:
Quin sacri crescit magis obstinátus
Ardor amóris.

SPONSA dilécto placitúra Sponso,
Déspicit ruptum laniáta corpus:
Est suus truncis honor, & venústas
Est sua membris.

SUMMA laus Patri, genitóque Verbo,
Et tibi compar, utriúsque Nexus;
Fac tibi semper placeámus uni
Móribus æquis.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 7. a. Omnis ponderátio non est digna continéntis ánimæ. *Eccli.* 26. 20.

*Ant.* 1. d. Benedícat tibi Dóminus, pulchritúdo justítiæ, mons sanctus. *Jerem.* 31. 23.

*Ant.* 6. f. Qui adhæret Dó-

mino, unus spíritus est. 1. *Cor.* 6. 17.

℣. Defécit caro mea & cor meum: ℟. Deus cordis mei, & pars mea Deus in ætérnum. *Ps.* 72. 26.

℟. I. Tu honorificéntia pópuli nostri, quia * Fecísti viríliter, eò quòd castitátem amáveris. *Judith* 15. *v.* 10. 11. ℣. Non omnes cápiunt verbum illud, sed quibus datum est. *Matth.* 19. 11. * Fecísti.

℟. II. Múlier innúpta & virgo, * Cógitat quæ Dómini sunt; ut sit sancta córpore & spíritu. 1. *Corinth.* 7. 34. ℣. Quasi rosa plantáta super rivos aquárum. *Eccli.* 39. 17. * Cógitat.

℟. III. Lauda, fília Sion, * Júbila, Israël; † Lætáre & exúlta in omni corde fília Jerúsalem. *Soph.* 3. 14. ℣. Veni & osténdam tibi sponsam uxórem Agni. *Apoc.* 21. 9. * Júbila. ℣. Glória Patri. † Lætáre.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 2. d. O'mnium óculis gratiósa & amábilis videbátur. *Esther* 2. 15.

*Ant.* 6. f. Flétibus & lúctui apta induménta suscépit. *Esther* 14. 2.

*Ant.* 3. g. Pro unguéntis váriis, cínere implévit caput suum, & corpus suum humiliávit jejúniis. *Ibid.* *v.* 2.

℣. Retríbuet mihi Dóminus secúndùm justítiam meam; ℟. Et secúndùm puritátem mánuum meárum. *Ps.* 17. 21.

℟. IV. Erat hæc in ómnibus famosíssima; * Quóniam timébat Dóminum valdè, nec erat qui loquerétur de illa verbum malum. *Judith* 8. 8. ℣. Lumen ejus símile lápidi pretióso, tanquam lápidi jáspidis. *Apoc.* 21. 11. * Quóniam.

℟. V. Immortális est memória illíus: * Quóniam apud Deum nota est, & apud hómines. *Sap.* 4. 1. ℣. Cláritas Dei illuminávit eam, & lucérna ejus est Agnus. *Apoc.* 21. 23. * Quóniam.

℟. VI. In perpétuum coronáta, * Triúmphat incoinquinatórum certáminum præmium vincens. *Sapient.* 4. 2. ℣. Fructus Spíritûs est cháritas, modéstia, continéntia, cástitas. *Galat.* 5. *v.* 22. 23. * Triúmphat. ℣. Glória Patri. * Triúmphat.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 5. a. O quàm pulchra est casta generátio cum claritáte! *Sap.* 4. 1.

*Ant.* 2. D. Plenam mercédem recípias à Dómino ad quem venísti, & sub cujus confugísti alas. *Ruth* 2. 12.

*Ant.* 4. f. Dóminus tuus ignis consúmens est, Deus æmulátor. *Deut.* 4. 24.

*Vers.* Deus, qui præcinxit me

me virtúte, *Resp.* Et pósuit immaculátam viam meam. *Ps.* 17. 33.

℟. VII. Córpora vestra membra sunt Christi, * Membra vestra templum sunt Spíritûs sancti. 1. *Cor.* 6. *v.* 15. 19. ℣. Audi filiá, & vide, & inclína aurem tuam. *Psal.* 44. 11. * Membra vestra.

℟. VIII. Vírgines accipiéntes lámpades suas, * Exiérunt óbviàm sponso. *Matth.* 25. 1. ℣. Delectavérunt te fíliæ regum in honóre tuo. *Ps.* 44. *v.* 9. 10. * Exiérunt.

℟. IX. Venit sponsus, * Et quæ parátæ erant, † Intravérunt cum eo ad núptias, & clausa est jánua. *Matth.* 25. 10. ℣. Perdidísti, Dómine, omnes, qui fornicántur abs te. *Psal.* 72. 27. * Et quæ. *Vers.* Glória. † Intravérunt.

Te Deum.

## AD LAUDES MATUTINAS.

*Vers. Sacerd.* Vírgines laudent nomen Dómini, ℟. Quia exaltátum est nomen ejus solus. *Ps.* 148. *v.* 12. 13.

*Ant.* 7. a. Prudéntes vírgines accepérunt óleum in vasis suis cum lampádibus. *Matth.* 25. 4.

*Ant.* 1. F. Surrexérunt omnes vírgines illæ & ornavérunt lámpades suas. *Ibidem v.* 7.

*Pars Verna.*

*Ant.* 2. d. In resurrectióne, neque nubent, neque nubéntur, sed erunt sicut ángeli Dei in cœlo. *Matth.* 22. 30.

*Ant.* 5. a. Ex homínibus primítiæ Deo, & Agno; sine mácula sunt ante thronum Dei. *Ibid. v.* 4. 5.

*Ant.* 6. f. Hæc est generátio quæréntium Dóminum, quæréntium fáciem Dei Jacob. *Psal.* 23. 6.

*Capitulum.* 1. *Cor.* 7. 25.

De Virgínibus præcéptum Dómini non hábeo; consílium autem do, tanquàm misericórdiam consecútus à Dómino, ut sim fidélis.

*Si non sit Martyr,*

*Hymnus.*

Jesu coróna Vírginum,
Quem mater alma cóncipit,
Quæ sola virgo párturit,
Hæc vota clemens áccipe.

Quocúnque pergis, Vírgines
Sequúntur, atque láudibus
Post te canéntes cúrsitant,
Hymnósque dulces pérsonant.

Te deprecámur súpplices
Nostris ut addas sénsibus
Nescíre prorsus ómnia
Corruptiónis vúlnera.

Ætérne Sponse Vírginum
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

*Si sit Martyr,*

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

QUID sacram, Virgo, generósa Martyr
Ambiunt frontem dúplices corónæ?
Nempe non unum gémino repórtas
Hoste triúmphum.

MÓLLIOR fregit neque te volúptas;
Impotens flexit neque te tyránnus;
Tu graves pœnas, pariterque blandos
Vincis amóres.

LÍLIIS Sponsus récubat, rosísque;
Tu, tuo semper benè fida Sponso,
Et rosas Martyr, simul & dedísti
Lília Virgo.

SUMMA laus Patri, genitóque Verbo
Et tibi compar utriúsque Nexus,
Fac tibi semper placeámus uni,
Móribus æquis.
Amen.

℣. Psallam & intélligam in via immaculáta, ℟. Quando vénies ad me! *Ps.* 100. 2.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 4. d. Tu scis Dómine, quia mundam servávi ánimam meam ab omni concupiscéntia. *Tob.* 3. 16.

*Oratio, ut suprà ad j. Vesperas, nisi sit propria.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 7. a. Prudéntes.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. F. Surrexérunt.

*Capitulum. Sapientiæ 6. v. 19. 20.*

CUstodítio legum, consummátio incorruptiónis est. Incorrúptio autem facit esse próximum Deo.

℟. *breve.* Fiat cor meum immaculátum * In justificatiónibus tuis. *Repet.* Fiat. ℣. Ut non confúndar. *Psal.* 118. 80. * In justificatiónibus ℣. Glória Patri. *Repet.* Fiat.

℣. Sitívit in te ánima mea, ℟. Quàm multiplíciter tibi caro mea! *Ps.* 62. 2.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. d. In resurrectióne.

*Capitulum. Isa.* 61. 10.

ÆMulor vos Dei æmulatióne; despóndi enim vos uni viro vírginem castam exhibére Christo.

℟. *breve.* Adducéntur regi vírgines * Post eam: *Repet.* Adducéntur. ℣. Próximæ ejus afferéntur tibi. *Ps.* 44. 15. * Post eam. ℣. Glória Patri. *Repet.* Adducéntur.

℣. Afferéntur in lætítia & exultatióne, ℟. Adducéntur in templum regis. *Ibid. v.* 16.

### Ad Nonam.

*Ant.* 6. f. Hæc est.

*Capitulum. Zachar.* 9. 17.

QUid bonum Dómini est, & quid pulchrum ejus, nisi fruméntum electórum, & vinum gérminans vírgines.

℟. *breve.* Retríbuet mihi Dóminus * Secúndùm justítiam meam, *Repet.* Retríbuet. ℣. Et secúndùm puritátem mánuum meárum. *Ps.* 17. 25. * Secúndùm. ℣. Glória Patri. *Repet.* Retríbuet.

℣. Deus meus, impollúta via ejus, ℟. Protéctor est ómnium sperántium in se. *Ibid.* *v.* 31.

### Ad Vesperas.

*Antiph.* Prudéntes vírgines, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum.* 1. *Cor.* 7. *v.* 7. 8.

UNusquísque próprium donum habet ex Deo; dico non nuptis, bonum est illis, si sic permáneant.

*In Tripl.* ℟. Venit sponsus, IX. *de Officio nocturno.*

*Hymnus.* Vos ô virgínei, *vel* Festis læta sonent, *pro qualitate Festi, ut suprà ad j. Vesperas.*

℣. Deus, quid mihi est in cœlo? ℟. Et à te quid vólui super terram. *Ps.* 72. 25.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 5. f. Venérunt núptiæ Agni, & uxor ejus præparávit se, beáti qui ad cœnam nuptiárum Agni vocáti sunt. *Apoc.* 19. *v.* 7. 9.

*Oratio, dicitur ut suprà ad j. Vesperas, nisi sit propria.*

---

# COMMUNE UNIUS MULIERIS, vel Viduæ.

### In primis Vesperis.

*Ant.* 4. *irr.* c. Múlier fortis oblécṭat virum suum, & annos vitæ illíus in pace implébit. *Eccli.* 26. 2.

*Ant.* 2. D. Sicut sol óriens mundo in altíssimis Dei; sic mulíeris bonæ spécies in ornaméntum domûs ejus. *Ibid.* *v.* 21.

*Ant.* 5. a. Fáciat Dóminus hanc mulíerem, sicut Rachel & Liam quæ ædificavérunt domum Israël. *Ruth* 4. 11.

*Ant.* 1. *irr.* Sit exémplum virtútis, & hábeat célebre nomen. *Ibid.* *v.* 11.

*Ant.* 7. C. Fundaménta ætérna supra petram sólidam, & mandáta Dei in corde mulíeris sanctæ. *Eccli.* 26. 24.

*Capitulum. Prov.* 31. 10.

MUlíerem fortem quis invéniet? Procul & de últimis fínibus prétium ejus; confídit in ea cor viri sui,

& spóliis non indigébit.

*In Duplicibus, & suprà.*

℟. Fortitúdo & decor induméntum ejus, * Ridébit † In die novíssimo. *Prov.* 31. 25. ℣. Múlier colens Deum, cujus Dóminus appéruit cor. *Act.* 16. 14. * Ridébit. ℣. Glória Patri. † In die novíssimo.

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

ADéste, sanctæ Cónjuges,
En illa fortis fémina,
Ornáta quæ virtútibus,
Triúmphat inter cœlites.

Non illa luxu véstium,
Non crine torto spléndiut;
Cultu nitens sed símplice,
Puris placébat móribus.

Se sub serénis vúltibus
Austéra virtus óccuit;
Timet vidéri, ne suum,
Dum prodit, amíttat decus.

Pascénda cœlésti cibo,
Sacris studébat Lítteris,
Templo frequens, sed sédula
Redíbat ad curam domûs.

Ætérne tu Verbi Pater;
Ætérne Fili, par Patri;
Et par utríque, Spíritus,
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

℣. A'nima mea exultábit in Dómino, ℟. Et delectábitur super salutári suo. *Ps.* 34. 9.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 6. f. Pars bona, múlier bona, in parte timéntium Deum, dábitur viro suo pro factis bonis. *Eccli.* 26. 3.

*Oratio.*

TUórum corda fidélium, Deus miserátor, illústra; & beátæ N. précibus ac méritis, fac nos terréna despícere, & amáre cœléstia. Per Dóminum.

*Si sit Martyr,*

*Oratio.*

DEus, cujus grátiâ virtus in infirmitáte perfícitur, largíre nobis, quæsumus, beátæ N. Mártyris tuæ triúmphum recoléntibus, ut, quæ à te accépit ut vínceret, à te quoque vincéndi grátiam nobis obtíneat. Per Dóminum.

Ad Officium Nocturnum.

*Invitat.* Deum in quo sanctæ mulíeres speravérunt * Veníte, adorémus. 1. *Petr.* 3. 5.

*Ps.* Veníte, *pag.* 2.

*Hymnus. Sanctol. Vict.*

ARdet Deo quæ Fémina,
Latére frustra cógitat:
Quot indigéntes súblevat,
Tot próditur præcónibus.

Prodésse quærit ómnibus,
Curis honéstis ánxia;
Patróna, custos vírginum,
Secúnda mater órphanis.

Pannis laténtem vílibus
Christum fovébat hóspitem;
Quas dura subtráxit sibi,
Opes refúndit pródiga.

Pacem domi, pacem foris,
Alto colit siléntio;
Lites amat compónere

Ut una mens sit ómnibus.
ÆTÉRNE tu Verbi Pater
Ætérne Fili, par Patri;
Et par utríque, Spíritus,
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 3. c. Grátia super grátiam, múlier sancta & pudoráta. *Eccli.* 26. 19.

*Ant.* 5. a. Mulíeris bonæ beátus vir; númerus enim annórum illíus duplex. *Ibid.* v. 1.

*Ant.* 8. c. Múlier sensáta & tácita, non est immutátio erudítæ ánimæ. *Ibid.* v. 18.

℣. Meditátio cordis mei in conspéctu tuo semper. ℟. Dómine, adjútor meus & redémptor meus. *Ps.* 18. 15.

℟. I. Manum suam apéruit inopi,* Et palmas suas exténdit ad páuperem. *Prov.* 31. 20. ℣. Hæc erat plena opéribus bonis, & eleemósynis quas faciébat. *Act.* 9. 36. * Et palmas.

℟. II. Lex cleméntiæ in lingua ejus. * Considerávit sémitas domûs suæ, & panem otiósa non comédit. *Prov.* 31. v. 26. 27. ℣. Quod decet mulíeres promitténtes pietátem per ópera bona. 1. *Timot.* 2. 10. * Considerávit.

℟. III. Ingréssa est oratórium suum, & * Prostérnens se Dómino, clamábat ad Dóminum. *Judith* 9. 1. ℣. Jejúniis & obsecratiónibus sérviens nocte ac die. *Luc.* 2. 37. * Prostérnens se. ℣. Glória. * Prostérnens se.

IN II. NOCTURNO.

*Ant* 6 f. Quæsívit lanam & linum, & operáta est consílio mánuum suárum. *Prov.* 31. 13.

*Ant.* 4. *irreg.* d. Facta est quasi navis institóris, de longè portans panem suum. *Ibid.* v. 14.

*Ant.* 2. d. De nocte surréxit, dedítque prædam doméstícis suis. *Ibid.* v. 15.

℣. Perambulábam in innocéntia cordis mei, ℟. In médio domûs meæ. *Ps.* 100. 2.

℟. IV. Hæc confitebátur Dómino, & * Loquebátur de illo ómnibus, qui expectábant redemptiónem Isráël. *Luc.* 2. 38. ℣. Repléta sapiéntiâ, & femíneæ cogitatióni masculínum ánimum ínserens. 2. *Machab.* 7. 21. * Loquebátur.

℟. V. Consíderans in timóre castam conversatiónem; * Non fuit extrínsecùs capillatúra, aut circundátio auri. 1. *Petr.* 3. v. 2. 3. ℣. Accínxit fortitúdine lumbos suos, & roborávit bráchium suum. *Prov.* 31. 17. * Non fuit.

℟. VI. In opéribus bonis testimónium habens, fílios educávit; * Omne opus bonum subsecúta est. 1. *Timoth.* 5.

10. ℣. Laudent eam in portis ópera ejus. *Prov.* 31. 31. * Omne. ℣. Glória Patri. * Omne.

IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 1. a. Considerávit agrum, & emit eum: de fructu mánuum suárum plantávit víneam. *Prov.* 31. 16.

*Ant.* 7. d. Gustávit & vidit quia bona est negotiátio ejus. *Ibid. v.* 18.

*Ant.* 6. F. Manum suam misit ad fórtia, & dígiti ejus apprehendérunt fusum. *Ibid. v.* 19.

℣. Uxor tua sicut vitis abúndans, ℟. In latéribus domûs tuæ. *Ps.* 127. 3.

℟. VII. Surrexérunt fílii ejus, & beatíssimam prædicavérunt, * Vir ejus & laudávit eam. *Prov.* 31. 28. ℣. Múlier glória viri est: non enim vir ex muliere, sed múlier ex viro. 1. *Cor.* 11. *v.* 7. 8. * Vir ejus.

℟. VIII. Benedícta es à Dómino fília; * Scit enim omnis pópulus mulíerem te esse virtûtis. *Ruth* 3. *v.* 10. 11. ℣. O múlier magna est fides tua! *Matth.* 15. 28. * Scit enim.

℟. IX. Nunc ergo ora pro nobis; * Quóniam múlier sancta es, & timens Deum. *Judith* 8. 29. ℣. Fides tua te salvam fecit. *Luc.* 7. 50. * Quóniam. ℣. Glória Patri. * Quóniam.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Glorificábo nomen tuum in ætérnum, ℟. Quia misericórdia tua magna est super me. *Ps.* 85. *v.* 12. 13.

*Ant.* 8. g. Fallax grátia & vana est pulchritúdo: múlier timens Dóminum, ipsa laudábitur. *Prov.* 31. 30.

*Ant.* 1. a. Surget in judício cum generatióne ista, & condemnábit eam. *Matth.* 12. 42.

*Ant.* 2. d. Pudíca est, pacífica, modésta, plena misericórdiâ & frúctibus bonis. *Jacobi* 3. 17.

*Ant.* 4. e. Nunquam lætáta est ancílla tua, nisi in te, Dómine Deus. *Esther* 14. 18.

*Ant.* 3. A. Sperávit in Deo & perréxit in præcéptis illius. 2. *Paralip.* 17. *v.* 3. 4.

*Capitulum.* 1. *Timoth.* 2. 9.

MUlíeres in hábitu ornáto, cum verecúndia & sobrietáte ornántes se, & non in tortis crínibus, aut auro aut margarítis vel veste pretiósâ.

*Hymnus.* *Sanctol. Vict.*

O Jam beáta, quæ suo
Tandem solúta córpore,
Vinclis perenrióribus
Uni Deo conjúngitur.

Per quos gradus coelum petit,
Hâc ire vos omnes docet,

Junctæ jugáli vínculo
Et vos solútæ cónjuges.
Insígnis & nos Féminæ
Sequi decet vestígia,
Magnum vel ipsis quæ fuit
Virtútis exémplum viris.
Queis arsit illa, fac, Deus,
Flagrémus & nos ígnibus:
Eóque, quo te vis coli
Amóre, fac mens te colat.
Ætérne tu Verbi Pater,
Ætérne Fili, par Patri;
Et par utríque, Spíritus;
Tibi, Deus, sit glória.
Amen.

℣. Dilexísti justítiam, ℟. Et odísti iniquitátem. *Ps.* 44. 8.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 7. g. Orábat Dóminum Deum Israël, & munda manébat in tabernacúlo. *Judith* 12. *v.* 8. 9.

*Si non fuerit Oratio propria, dicetur ut suprà ad primas Vesperas.*

AD PRIMAM.

*Ant.* 8. g. Fallax.

AD TERTIAM.

*Ant.* 1. a. Surget.

*Capitulum. Act.* 2. *v.* 18. 19.

SUper ancíllas meas, in diébus illis effúndam de Spíritu meo, & prophetábunt, & dabo prodígia sursum, & signa in terra deórsum.

℟. *br.* Misericórdia tua * Ante óculos meos est, *Repet.* Misericórdia. ℣. Et complácui in veritáte tua. *Ps.* 25. 3. * Ante óculos. ℣. Glória. *Repet.* Misericórdia tua.

℣ Adhæsit ánima mea post te, Deus; ℟. Me suscépit déxtera tua. *Psal.* 62. 9.

AD SEXTAM.

*Ant.* 2. d. Pudíca est.

*Capitulum. Tob.* 10. 13.

MOnébant fíliam suam honoráre sóceros, dilígere maritum, régere famíliam, gubernáre domum, & seípsam irreprehensíbilem exhibére.

℟. *breve.* Custódiam vias meas, * Ut non delínquam in lingua mea. *Repet.* Custódiam. ℣. Notum fac mihi, Dómine, finem meum. *Ps.* 38. *v.* 1. 5. * Ut non delínquam. ℣. Glória. *Repet.* Custódiam.

℣. Ad ómnia mandáta tua dirigébar, ℟. Omnem viam iníquam ódio hábui. *Ps.* 118. 128.

AD NONAM.

*Ant.* 3. A. Sperávit.

*Capitulum. Eccli.* 40. 19.

FIlii & ædificátio civitátis confirmábit nomen, & super hæc múlier immaculáta computábitur.

℟. *breve.* Exultábo, Dómine, * In misericórdia tua. *Repet.* Exultábo. ℣. Quóniam respexísti humilitátem meam. *Psal.* 30. 8. * In misericórdia tua. ℣. Glória Patri. *Repet.* Exultábo.

℣. Ego in Dómino sperávi, ℟. Exultábo & lætábor. *Ps.* 30. 8.

AD VESPERAS.

*Ant.* Fallax grátia, *cum ceteris de Laudibus.*

*Capitulum.* 1. *Petri* 3. 1.

MUlieres súbditæ sint viris suis, ut & si qui non credunt verbo, per mulierum conversatiónem sine verbo lucrifiant.

*In Triplic.* ℟. Nunc ergo. IX. *de Officio Nocturno.*

*Hymnus.* ADÉSTE, *ut suprà ad primas Vesperas.*

℣. Anima mea Dómino vivet, ℟. Et semen meum sérviet ipsi. *Ps.* 21. 31.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 7. D. Manus Dómini confortávit te, & ideò eris benedícta in ætérnum. *Judith* 15. 11.

*Si non sit propria Oratio, dicitur ut suprà ad primas Vesperas.*

OFFICIUM DEDICATIONIS ECCLESIÆ

*Reperitur in Proprio Sanctorum, mense Octobri.*

# COMMUNE UNIUS PATRONI

## PRIVATÆ ALICUJUS ECCLESIÆ, VEL PATRONÆ, AUT ETIAM PLURIUM PATRONORUM.

### *SOLEMNE.*

*Omnia de Communi, exceptis quæ sequuntur.*

*Responsoriis, Versiculis, & Antiphonis post* Magníficat *&* Benedíctus, *additur unum* Allelúia. *In Responsoriis verò brevibus ad Horas dicuntur duo* Allelúia.

*Si non sit propria Oratio, dicitur sequens.*

*Oratio.*

PRotéctor noster áspice, Deus, & (intercedénte beáto N. quem apud te Patrónum nostrum) *vel* (intercedénte beátâ N. quam apud te Patrónam nostram) *vel* (intercedéntibus beátis N. N. quos apud te Patrónos nostros) instituísti, omnipotén-

tem & liberálem déxteram super nos dignéris semper exténdere. Per Dóminum.

*A die 2. Februarii usque ad Sabbatum ante Dominicam primam Quadragesimæ, & ab Octava Corporis Christi usque ad Adventum, Completorium ut in Psalterio. Reliquo verò anni tempore ut notatur in Proprio de tempore, excepto Hymno qui semper est*, DONA Deus.

*Ad Nocturnum repetitur Invitatorium integrum post quemlibet Versum Psalmi* Venite. *Dicuntur tria Nocturna.*

IN I. NOCTURNO.

De libro secúndo Machabæórum.

LECTIO I. *Cap. 15. 7.*

*Exemplum spei in Deum.*

MAchabæus semper confidébat cum omni spe auxílium sibi à Deo affutúrum. Et hortabátur suos ne formidárent ad advéntum Natiónum, sed in mente habérent adjutória sibi facta de cœlo, & nunc sperárent ab Omnipoténte sibi affutúram victóriam. Et allocútus est eos de Lege, & Prophétis, admonens étiam certámina, quæ fécerant prius, promptióres constítuit eos: & ita animis eórum eréctis simul ostendébat Géntium falláciam, & juramentórum prævaricatiónem.

LECTIO II. *v. 11.*

*Oratio Oniæ pro omni populo.*

SI'ngulos autem illórum armávit, non clypei, & hastæ munitióne, sed sermónibus óptimis, & exhortatiónibus, expósito digno fide sómnio, per quod univérsos lætificávit. Erat autem hujuscémodi visus: O'niam, qui fúerat summus Sacérdos, virum bonum & benígnum, verecúndum visu, modéstum móribus, & elóquio decórum, & qui à púero in virtútibus exercitátus sit, manus protendéntem, oráre pro omni pópulo Judæórum. Post hoc apparuísse & álium virum ætáte, & glóriâ mirábilem, & magni decóris habitúdine circa illum.

LECTIO III. *v. 16.*

*Fratrum amator.*

REspondéntem verò O'niam dixísse: Hic est fratrum amátor, & pópuli I'sraël, hic est qui multùm orat pro pópulo, & univérsa sancta civitáte, Jeremías Prophéta Dei. Extendísse autem Jeremíam déxteram, & dedísse Judæ gládium áureum, dicéntem: A'ccipe sanctum gládium munus à Deo, in quo dejícies adversários pópuli mei I'sraël. Exhortáti ítaque Judæ sermónibus bonis valdè, de quibus extólli posset ímpetus, & áni-

mi júvenum confortári, statuérunt dimicáre & confligere fórtiter, ut virtus de negótiis judicáret.

IN II. NOCTURNO.

Sermo sancti Bernárdi Abbátis.

LECTIO IV.

*In Vigilia SS. Petri & Pauli.*

TRia sunt quæ in festivitátibus Sanctórum vigilánter consideráre debémus: auxílium Sancti, exémplum ejus, confusiónem nostram. Auxílium ejus, quia qui potens in terra fuit, poténtior est in cœlis ante fáciem Dómini Dei sui. Si enim dùm hic víveret, miséretus est peccatóribus, & orávit pro eis: nunc tantò ámpliùs, quantò vériùs agnóscit misérias nostras, orat pro nobis Patrem: quia beáta illa pátria charitátem ejus non immutávit: sed augmentávit: neque enim quia impassíbilis omninò, ideò & incompassíbilis factus est.

LECTIO V.

DEbémus étiam atténdere exémplum ejus, quia quándiù in terris visus est, & cum homínibus conversátus est, non declinávit ad déxteram, neque ad sinístram, sed viam régiam ténuit, donec veníret ad illum, qui dicit: (Ego sum via, véritas, & vita.) Intuémini humilitátem óperum ejus, auctoritátem verbórum ejus, & tunc vidébitis quómodò tam verbo quàm exémplo lúxerit inter hómines: quália nobis vestígia derelíquerit, ut ambulémus per ea, & non errémus in eis. Verè juxta Prophétam: (Sémita justi recta est, rectus callis justi ad ambulándum.)

LECTIO VI.

SEd & diligentióri intúitu confusiónem nostram inspiciámus: quia homo ille símilis nobis fuit passíbilis, ex eódem luto formátus, ex quo & nos. Quid ergo est quod non solùm diffícile, sed & impossíbile crédimus, ut faciámus ópera quæ fecit? Confundámur fratres, & contremiscámus. Hómines isti fuérunt, qui præcessérunt nos, qui tam mirabíliter processérunt per vias vitæ, ut vix eos hómines fuísse credámus. Sic ergo in Sanctórum festivitátibus & gaudére & confúndi debémus: gaudére, quia Patrónos præmísimus; confúndi quia eos imitári non póssumus.

IN III. NOCTURNO.

De libro Apocalýpsis beáti Joánnis Apóstoli.

LECTIO VII. *Cap. 5. 6.*

VIdi, & ecce in médio throni, & quátuor animálium, & in médio senió-

rum, Agnum stantem, tanquàm occísum, habéntem córnua septem, & óculos septem; qui sunt septem spíritus Dei, missi in omnem terram. Et venit; & accépit de déxtera sedéntis in throno librum. Et cùm aperuisset librum, quátuor animália, & viginti quátuor senióres cecidérunt coram Agno, habéntes singuli cítharas, & phíalas áureas plenas odoramentórum, quæ sunt orationes Sanctórum: & cantábant cánticum novum.

*Si fuerit Dominica legitur pro VIII. Lectione Evangelium & Homilia Festi, & pro nona Lectione, Evangelium & Homilia Dominicæ occurrentis.*

LECTIO VIII. *Cap.* 8. 2.

Vidi septem A'ngelos stantes in conspéctu Dei, & datæ sunt illis septem tubæ. Et álius A'ngelus venit, & stetit ante altáre habens thuríbulum áureum: & data sunt illi incénsa multa, ut daret de oratiónibus Sanctórum ómnium super altáre áureum, quod est ante thronum Dei. Et ascéndit fumus incensórum de oratiónibus Sanctórum de manu A'ngeli córam Deo. Et accépit A'ngelus thuríbulum, & implévit illud de igne altáris, & misit in terram, & facta sunt tonitrua, & voces, & fúlgura, & terræ motus magnus.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO IX. *Cap.* 11. 5.

*Oratio perseverans omnia impetrat.*

In illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Quis vestrûm habébit amícum, & ibit ad illum médiâ nocte, & dicet illi: Amíce, cómmoda mihi tres panes. Et réliqua.

Homilía sancti Basílii Epíscopi.

*Constitut. Monast. Cap.* 1.

Hoc exémplum idcircò nobis propónitur à Dómino, ut in fide acres ac pertináces esse nos dóceat. Exémplum ab hómine ad álium hóminem sumit, ut intélligas nullâ labóris fatigatióne debére te à suscépto propósito desístere, ut vidélicet quandocúnque áliquid petíeris, neque impetráveris, tándiu persevéres, quoad ímpetres, si tamen ea petas, quæ voluntáti Dei non repúgnent. Neque dixeris: Peccátor sum, & proptéreà non exáudior. Ut enim diffidéntiæ ille tibi causam omnem præcíderet, illud adjécit: (Etsi non dabit illi surgens, eò quòd amícus ejus sit, propter improbitátem tamen dabit illi quotquot necessários.) At sæpe petívi, neque impetrá-

vi: prorsùs, quia non rectè petivísti, vidélicet aut dubitabúndus, aut áliud agens, aut quæ tibi utília non erant futúra. Quòd si & quæ tibi erant utília sæpe petiísti, at non perseverántiam adhibuísti: scriptum est enim: (Qui perseveráverit usque in finem hic salvus erit.)

*Si Festum Patroni venerit tempore Paschali, ex tribus Lect. 1. Noct. fiet una. Secunda erit prima de secundo Nocturno. Tertia verò Evangelium cum Homilia. ℟℟. sumentur ex Nocturno de Communi occurrente secundùm Feriam. Ad Nocturnum dicentur tres Antiph. cum tribus Psalmis, ut notantur in Proprio de Tempore pro die occurrente.*

*Diebus intra Octavam, omnia ut in die, exceptis quæ sequuntur.*

*Ritus est semiduplex & in die Octava duplex majus.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Tres Antiph. ℣. & ℟℟. de Nocturno diei secundùm Feriam occurrentem.*

*Lectio I. & II. de Scriptura occurrente. Fit una ex j. & ij. Lectio III. ut infrà pro qualibet die.*

*Dominicâ intra Octavam occurrente, totum Officium fit de Dominica ut in Psalterio, incipiendo à j. Vesperis quæ erunt integræ de Sabbato ante Dominicam occurrentem, cum commemoratione Octavæ in utrisque Vesperis & Laudibus.*

SECUNDA DIE.

Sermo sancti Gregórii Nisséni Epíscopi.

*Orat. de sancto Theodoro.*

Consideráte, hujus puri cultûs minístri studiósi, quanta res sit justus, quámque multas consequátur remuneratiónes: & cógnito pietátis fructu, imitámini consílium & aspiráte ad ánimum & voluntátem eórum, qui ita præ céteris honorántur. Cui regum talis honor habétur? quis est ex iis, qui supra modum inter hómines excéllere visi sunt, qui tali memóriâ celebrétur? Quis imperatórum, qui urbes munítas cepérunt, natiónes innúmeras subegérunt ádeò decantátus & famâ celebrátus est?

TERTIA DIE.

Sermo sancti Ambrósii Epíscopi.

*Epist. 22. ad Marcellinam sororem.*

Grátias tibi, Dómine Jesu, quòd hoc témpore tales nobis Sanctórum spíritus excitásti, quo Ecclésia tua sancta præsídia majóra desíderat. Agnóscant omnes quales ego propugnatóres requíram. Hos ego acquisívi tibi, plebs sanc-

ta, qui prosint ómnibus, némini nóceant: tales ego ámbio defensóres, tales mílites hábeo: hoc est, non séculi mílites, sed mílites Christi. Nullam de tálibus invídiam tímeo, quorum quò majóra, eò tutióra patrocínia sunt. Horum étiam illis ipsis, qui mihi eos ínvident, opto præsídia. Véniant ergo & vídeant stipatóres meos, tálibus me armis ambíri non nego. Nos etsi eos vidére non póssumus, sentímus tamen.

QUARTA DIE.

Sermo sancti Hierónymi Presbyteri.

*Contra Vigilantium.*

DIcis in libéllo tuo quòd dum vívimus mútuò pro nobis oráre póssumus: postquàm autem mórtui fuérimus, nullíus sit pro álio exaudiénda orátio. Si Apóstoli & Mártyres adhuc in córpore constitúti possunt oráre pro céteris, quando pro se adhuc debent esse sollíciti: quantò magis, post corónas, victórias & triúmphos! Unus homo Móyses sexcéntis míllibus armatórum ímpetrat à Deo véniam: & Stéphanus imitátor Dómini sui, & primus Martyr in Christo, pro persecutóribus véniam deprecátur: & postquàm cum Christo esse cœperint, minùs valébunt?

QUINTA DIE.

Sermo sancti Basílii Epíscopi.

*Orat. in 40. Martyres.*

PArátum est hic Christiánis auxílium, Ecclésia vidélicet Mártyrum, exércitus triumphántium, chorus laudántium Deum. Qui áliquâ prémitur angústiâ, ad hos cónfugit: qui rursùs lætátur, ad hos occúrrit: hic ut à malis liberétur; ille ut duret in rebus lætis. Hic múlier orans pro fíliis audítur; peregrinánti viro réditum incólumem, ægrotánti verò salútem implórat. O sanctum chorum! sacrum órdinem! ô cúneum inexpugnábilem! ô commúnes géneris humáni custódes! óptimi curárum sócii, precum adjutóres, legáti apud Deum potentíssimi, astra mundi, flores Ecclesiárum! Vos non terra contéxit, sed cœlum excépit.

SEXTA DIE.

Sermo sancti Cleméntis Papæ & Mártyris.

*Epist. 1. ad Corint. c. 32. 33. sec. 1.*

II glóriam & amplitúdinem consecúti sunt non per seipsos aut ópera sua, aut justas actiónes quas fecérunt; sed per voluntátem Dei. Et nos ígitur ex voluntáte illíus in Christo Jesu vocáti, non per nosípsos justi efficimur, neque per sapiéntiam nos-

tram, aut intelligéntiam, aut pietátem, aut ópera quæ in cordis sanctitáte operáti sumus; sed per fidem, per quam cunctos, qui unquam justi fuérunt, justificávit Deus omnípotens. Quid igitur faciémus fratres? cessábimus à bonis opéribus, & charitátem derelinquémus? néutiquam hoc à nobis fieri permittat Dóminus: sed cum diligéntia & alacritáte festinémus omne opus bonum perficere. Videámus quòd in bonis opéribus ornáti fuérunt omnes justi. Et ipse Dóminus cùm se opéribus decorásset, gavísus est. Habéntes itaque hoc exémplar, impigrè ad voluntátem ejus accedámus; ex totis víribus nostris operémur opus justítiæ.

## SEPTIMA DIE.

Sermo sancti Augustíni Epíscopi.

*Tract. 1. in Epist. 15. Joannis.*

JOánnes quid dixit? Et si quis peccáverit, advocátum habémus apud Patrem Jesum Christum. Sed dicit áliquis: Ergo Sancti non petunt pro nobis? Ergo Epíscopi vel Præpósiti non petunt pro pópulo? sed atténdite Scriptúras, & vidéte quia & Præpósiti commendant se pópulo. Nam Apóstolus dicit plebi: Orántes simul & pro nobis. Orat Apóstolus pro plebe. Orat plebs pro Apóstolo. Orámus pro vobis fratres, sed & vos oráte pro nobis: ínvicem pro se ómnia membra orent, caput pro ómnibus interpéllet.

*Ad Vesperas omnia ut in primis Vesperis Festi.*

## IN OCTAVA

*Duplex majus.*

*Officium ut in die, exceptis quæ sequuntur. Ad Officium Nocturnum novem Antiph. super novem Psalmos feriales. Versus, ℟℟. ex Nocturno occurrente secundùm Feriam.*

*Lect. I. de Scriptura occurrente, ex tribus fit una.*

Sermo sancti Bernárdi Abbátis.

*De sancto Clemente.*

LECTIO II.

PRetiósa in conspéctu Dómini mors sanctórum ejus. A'udiat peccátor & irascitur. Déntibus suis fremat & tabéscat. Deprehénsus est in astútia sua, cécidit in fóveam, quam fecit, in láqueum íncidit, quem teténdit. Invidiâ síquidem diáboli mors intrávit in orbem terrárum. Sed ecce pretiósa facta est mors Sanctórum. Audi ígitur hostis vitæ, mortis autor atténde: quid valet jam fraus tua, versútia tua quid nocet? immò verò ut plus dóleas, étiam ómnia cooperántur in

bonum his, qui secúndùm propósitum vocáti sunt Sancti.

Léctio sancti Evangélii secúndùm Lucam.

LECTIO III. *Cap.* 11. 5.

*Oratio perseverans omnia impetrat.*

IN illo témpore; Dixit Jesus discípulis suis: Quis vestrûm habébit amícum, & ìbit ad illum médiâ nocte, & dicat illi: Amíce, cómmoda mihi tres panes. Et réliqua.

Homilía sancti Ambrósii Epíscopi.

*In Luc. lib. 7.*

VIdes quòd iste qui médiâ nocte perréxit, tres panes ab amíco suo póstulans, & in ipsa peténdi intentióne persístens, non defraudétur orátis. Qui sunt isti tres panes, nisi impérii cœléstis aliméntum? Quòd si díligas Dóminum, non solùm tibi, sed áliis póteris emeréri. Nec solùm médiâ nocte Dóminus sed ómnibus propè docet vigilándum esse moméntis; venit enim & vespertínâ, & secúndâ, & tértiâ vigíliâ, & pulsáre consuévit. Beáti ítaque servi illi, quos cùm vénerit Dóminus, invénerit vigilántes. Si ergo desíderas ut virtus Dei præcíngat se, & minístret tibi, vigilándum est semper: multæ enim insídiæ sunt bonis, & gravis córporis somnus; quia si dormíre mens cœ́perit, vigórem suæ virtútis amíttit. E'xcita ígitur somnum tuum, ut pulses óstium Christi: quod aperíri sibi étiam Paulus expóscit, non solùm suis, sed étiam pópuli oratiónibus óbsecrans se juvári, ut aperiátur sibi óstium ad loquéndum mystérium Christi.



# OFFICIUM B. MARIÆ IN SABBATO,

## Et in Festis ejusdem, quæ non habent Officium proprium.

*Omnibus Sabbatis, præterquàm in Adventu, Quadragesima, Vigiliis cujuscunque Festi, intra Octavas, & nisi occurrat Festum semiduplex aut suprà, ac nisi Officium fieri debeat de Feria, propter Officium alicujus Dominicæ, quod eo die ponendum est, fit Officium de sancta Maria, more semiduplici, incipiendo à Vesperis Feriæ sextæ præcedentis, & terminatur ad Nonam.*

*Psalmi de Feria per totum Officium.*

FERIA SEXTA.

AD VESPERAS.

*Aniphona* 2. D.

SICUT lílium inter spinas, sic amíca mea inter fílias, allelúia. *Cant.* 2. 2.

*Ant.* 2. d. Ecce tu pulchra es amíca mea; óculi tui columbárum, allelúia. *Cant.* 1. 14.

*Ant.* 5. f. Fons hortórum; púteus aquárum vivéntium, quæ fluunt ímpetu de Líbano, allelúia. *Cant.* 4. 15.

*Ant.* 1. F. Pulchritúdinem candóris ejus admirábitur óculus, allelúia. *Eccli.* 43. 20.

*Ant.* 6. f. Quàm pulchra es, & quàm decóra charíssima, in delíciis, allelúia. *Cant.* 7. 6.

*Capitulum. Eccli.* 24. 24.

EGo mater pulchræ dilectiónis, & timóris, & agnitiónis & sanctæ spei.

*Cum fit de Festo duplici aut suprà, dicitur sequens*

℟. Dóminus possédit me in inítio viárum suárum, * A'ntequàm quidquam fáceret à princípio, allelúia. *Proverb.* 8. 22. ℣. Magníficat ánima mea Dóminum, quia respéxit humilitátem ancíllæ suæ. *Luc.* 1. 47. * A'ntequàm. ℣. Glória. * A'ntequàm.

*Hymnus.*

AVE maris stella,
Dei mater alma,
Atque semper Virgo,
Felix cœli porta.

SUMENS illud ave;
Gabriélis ore,
Funda nos in pace,
Mutans nomen Evæ.

SOLVE vincla reis,
Profer lumen cæcis,

Mala

Mala nostra pelle,
Bona cuncta posce.
MONSTRA te esse matrem,
Sumat per te preces,
Qui pro nobis natus,
Tulit esse tuus.
VIRGO singuláris,
Inter omnes mitis:
Nos culpis solútos,
Mites fac & castos.
VITAM præsta puram,
Iter para tutum,
Ut vidéntes Jesum
Semper collætémur.
SIT laus Deo Patri,
Summo Christo decus,
Spirítui sancto
Tribus honor unus.
Amen.

℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis, allelúia: ℟. Proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum, allelúia. *Ps.* 44. 3.

*Ad* Magnificat, *Ant.* 6. f. Fílius tuus vivit, allelúia, & ipse dominátur in omni terra, allelúia, allelúia. *Gen.* 45. 26.

*Oratio*, Deus, qui per, *ut infrà ad Laudes.*

*Comm. de Cruce, ut in Proprio, pag.* 406. Vide Supplementum post pag. xc.

AD COMPLETORIUM.

*Omnia ut in Feriis Temporis Paschalis, p.* 406. *excepto Hymno.*

VIRGÍNEIS títulis matris quæ jungit honóres,
Hac natos fóveat nocte benígna suos.

*Pars Verna.*

FULGIDA stella maris, fecli dum mérgimur undis,
Sit lux in ténebris, & benè fida quies.
SI sopor obrépit, casti fac mater amóris
Cor vígilans uno spiret amóre Dei.
O Regína potens própiùs res áspice nostras;
Dicáris pópuli vita, salúsque tui.
GLÓRIA summa Patri, compar sit glória Nato,
Quo péperit Virgo glória Spirítui. Amen.

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

*Invitatorium.* Jesum primogénitum ex mórtuis, * Veníte, adorémus, allelúia. *Col.* 1. 18.

*Ps.* Veníte, *pag.* 2.

*Hymnus.*

HIc asta dócilis gens sacra Christo:
Audi, docta datur Virgo magistra;
Factis corda suis érudit intùs,
Et virtútis iter prævia monstrat.
FERVET mille modis péctoris æstus;
Dum fit grata Deo, fit sibi vilis;
Quæ regem Súperûm cóncipit alvo,
Ancillæ título læta supérbit.
SECRÉTA plácidæ mentis in aula

Audit blanda Dei verba loquéntis;
Pro verbis tácitos, quos Deus afflat;
De puro gémitus corde rependit.
Sponso casta suo sponsa fidéle
Hic dat perpétui pignus amóris:
Hic desidériis icta supérnis,
Mens jam pasta Deo prærípit astra.
Sit laus summa Patri, summáque Nato,
Compar Spirítui glória sancto,
Quos in corde foves Vírginis æstus,
Nostris, alme Deus, córdibus infer.
Amen.

*Super tres Psalmos notatos in Proprio de Tempore dicuntur tres sequentes Antiph.*

*Ant.* 5. a. Surge, amíca mea, imber ábiit, & recéssit, allelúia. *Cant.* 2. *v.* 10. 11.

*Ant.* 7. D. Consúrge, indúere fortitúdine tuâ, indúere vestiméntis glóriæ tuæ, allelúia, *Isa.* 52. 1.

*Ant.* 3. a. Fílius meus vivit, súfficit mihi, allelúia, allelúia. *Genes.* 45. 28.

℣. Tu Dómine, adjuvísti me, allelúia, ℟. Et consolátus es me, allelúia. *Ps.* 85. 17.

*Duæ primæ Lectiones ex Scriptura occurrente, ex duabus primis fit una.*

℟. I. Secúndùm multitúdinem dolórum meórum in corde meo, * Consolatiónes tuæ, Dómine, lætificavérunt ánimam meam, allelúia. *Ps.* 93. 19. ℣. Ex hoc beátam me dicent omnes generatiónes. *Luc.* 1. 48. * Consolatiónes.

℟. II. Convertísti, Dómine, planctum meum in gáudium mihi; * Et circundedísti me lætítiâ, allelúia. *Ps.* 29. 12. ℣. Exultávit Spíritus meus in Deo salutári meo. *Luc.* 1. 47. * Et.

MENSE APRILI

Ex libro sancti Hierónymi Presbýteri advérsùs Joviniánum.

*Ex Apolog. ad Pammachium, pro lib. adversùs Jovinianum, in fine.*

LECTIO III.

Christus Virgo, mater Vírginis nostri, Virgo perpétua, mater & virgo. Jesus enim clausis ingréssus est óstiis: & in sepúlchro ejus, quod novum, & in petra duríssima fúerat excísum, nec ánteà quis, nec pósteà pósitus est. Hortus conclúsus, fons signátus: de quo fonte ille flúvius manat, juxta Joël, qui írrigat torréntem vel fúnium, vel spinárum: fúnium, peccatórum, quibus antè alligabámur: spinárum, quæ suffócant seméntem Patris fa-

millias. Hæc est porta orientális, ut ait Ezéchiel, semper clausa, & lúcida; opériens in se, vel ex se próferens sancta Sanctórum: per quam Sol justítiæ & Póntifex noster secúndùm órdinem Melchísedech ingréditur & egréditur.

MENSE MAIO.

Ex tractátu sancti Augustíni Epíscopi de Symbolo ad Catechúmenos.

*Lib. 3. cap. 4. in fine tom. 9.*

LECTIO III.

PEr féminam mors, per féminam vita: per Evam intéritus, per Maríam salus. Illa corrúpta secúta est seductórem: hæc íntegra péperit Salvatórem. Illa póculum à serpénte propinátum libénter accépit, & viro trádidit, ex quo simul mereréntur occídi: hæc, grátiâ cœlésti désuper infúsâ, vitam prótulit, per quam caro mórtua possit resuscitári. Quis est qui hæc operátus est, nisi Vírginis fílius, & vírginum sponsus: qui attulit matri fecunditátem, sed non ábstulit integritátem.

℟. Fecit Dóminus poténtiam in bráchio suo; * Dispérsit supérbos mente cordis sui: depósuit poténtes de sede, & † Exaltávit húmiles, allelúia. *Luc. 1. v. 51. 52.* ℣. Sumpsit María tympanum in manu sua, dicens. *Exod. 15. 20.* * Dispérsit. ℣. Glória Patri. † Exaltávit.

Te Deum.

AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Cantábo Dómino, qui bona tríbuit mihi, allelúia. ℟. Et psallam nómini Dómini altíssimi, allelúia. *Ps. 12. 6.*

*Antiph.* 1. a. Diléctus meus mihi & ego illi, qui páscitur inter lília, allelúia. *Cant. 2. 16.*

*Ant.* 7. C. Benedicéntur in te, & in sémine tuo omnes tribus terræ, allelúia. *Genes. 28. 14.*

*Ant.* 6. f. Multæ fíliæ congregavérunt divítias, tu supergréssa es univérsas, allelúia. *Prov. 31. 29.*

*Ant.* 3. a. Benedíxit te Dóminus in virtúte sua, quia per te ad níhilum redégit inimícos nostros, allelúia. *Judith 13. 22.*

*Ant.* 5. a. Vidérunt eam fíliæ, & beatíssimam prædicavérunt, & regínæ laudavérunt eam, allelúia. *Cant. 6. 8.*

*Capitulum. Galat. 4. v. 4. 5.*

UBi venit plenitúdo témporis, misit Deus Fílium suum, factum ex mulíere, factum sub lege; ut eos qui sub lege erant redímeret.

*Hymnus.*

QUALIS, Virgo, tibi glória surgit!
Ætérni sóboles diva paréntis
En illápsa tuam cœlitùs alvum,
Mollis membra sibi córporis aptat.
O felix! léviter quàm gravat intùs
Ipsum Numen onus! Virgo colénda,
Quæ nutríce parens úbere lactat,
Natum, quo géminus páscitur Orbis.
IN matrem résilit glória Nati;
In Natum résilit glória Matris:
O quàm chara Deo, quam Deus ipse
Consórtem próprii reddit honóris!
LAUS summæ Tríadi, quæ sibi sacra
Pectus virgíneum templa dicávit;
Quo vult te, Génitrix, Natus amári,
Te mens nostra colat semper amóre. Amen.

℣. Elégit eam Dóminus, allelúia, ℟. In habitatiónem sibi, allelúia. *Ps.* 131. 13.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 5. f. Benedíctus Dóminus, qui te diréxit in vúlnera cápitis príncipis inimicórum nostrórum, allelúia. *Judith* 13. 24.

*Oratio.*

DEus, qui per resurrectiónem Fílii tui Dómini nostri Jesu Christi mundum lætificáre dignátus es; præsta, quæsumus, ut per ejus genitrícem vírginem Maríam perpétuæ capiámus gáudia vitæ; Per eúmdem Dóminum.

*Commem. de Cruce*, p. 406.

AD PRIMAM.

*Ant.* 1. a. Diléctus.

AD TERTIAM.

*Ant.* 7. C. Benedicéntur.

*Capitulum.* *Eccli.* 24. 11.

IN ómnibus réquiem quæsívi, & in hereditáte Dómini morábor. Tunc præcépit mihi Creátor ómnium: & qui creávit me requiévit in tabernáculo meo.

℟. *breve.* Deus in médio ejus non commovébitur: * Allelúia, allelúia. *Repet.* Deus. ℣. Adjuvábit eam Deus manè dilúculo. *Psal.* 45. 6. * Allelúia, allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Deus.

℣. Oriétur in diébus ejus justítia, allelúia, ℟. Et abundántia pacis, allelúia. *Ps.* 71. 7.

AD SEXTAM.

*Ant.* 6. f. Multæ fíliæ.

*Capitulum.* *Cant.* 6. 9.

QUæ est ista, quæ progréditur quasi auróra consúrgens; pulchra ut luna, elécta ut sol, terríbilis ut castrórum ácies ordináta?

℟. *br.* Thronus ejus ſicut ſol in conſpéctu meo, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Thronus. ℣. Et ſicut luna perfécta. *Pſal.* 88. 38. * Allelúia, allelúia. ℣. Glória Patri. *Repet.* Thronus.

℣. In nómine meo, allelúia, ℟. Exaltábitur cornu ejus, allelúia. *Pſal.* 88. 38.

AD NONAM.

*Ant.* 5. a. Vidérunt.

*Capitulum. Gen.* 22. *v.* 17. 18.

POſſidébit ſemen tuum portas inimicórum ſuórum, & benedicéntur in ſémine tuo omnes Gentes terræ.

℟. *breve.* Aſtitit regína à dextris tuis, * Allelúia, allelúia. *Repet.* Aſtitit. ℣. In veſtítu deauráto, circúmdata varietáte. *Pſ.* 44. 10. * Allelúia, allelúia. ℣. Glória. *Repet.* Aſtitit.

℣. Díligit Dóminus portas Sion, allelúia, ℟. Super ómnia tabernácula Jacob, allelúia. *Pſal.* 86. 2.



# OFFICIUM PARVUM BEATÆ MARIÆ.

*Extra Chorum dicitur ad libitum. In Choro præter Octavas, dicitur in Festis Simplicibus & Feriis, modò Officium diei non sit de B. Maria.*

*Singulæ Horæ hujus Officii dicuntur post singulas Horas Officii diei.*

AD OFFICIUM NOCTURNUM.

Ave María, &c.

℣. Dómine lábia mea apéries, &c.

*Invit.* Jesum de María natum, * Veníte, adorémus. *Matth.* I. 16.

*Psal.* Veníte, *pag.* 2.

*Hymnus.*

O QUA'M glorífica luce coruscas,
Stirpis Davídicæ régia proles,
Sublímis résidens virgo María,
Supra Cœlígenas ætheris omnes.

TU cum virgíneo mater honóre,
Cœlórum Dómino péctoris aulam
Sacris viscéribus casta dedísti:
Humános Deus hinc índuit artus.

QUEM cunctus vénerans Orbis adórat,
Cui nunc ritè genu fléctitur omne,
A' quo, te précibus subveniénte,
Ætérni pétimus gáudia regni.

DIVÍNÆ Sóboli, qui dare Matrem
In terris vóluit, glória Patri;
Cujus Virgo parens gáudia Nato,
Quo fecúnda, tibi glória Flamen.

Amen.

IN I. NOCTURNO.

FERIA II. ET V.

*Ant. única.* 5. a. Quàm pulchra es.

*Psalmus* 18.

COELi enárrant glóriam Dei, * & ópera mánuum ejus annúntiat firmaméntum.

Dies diéi erúctat verbum,* & nox nocti índicat sciéntiam.

Non sunt loquélæ, neque sermónes, * quorum non audiántur voces eórum.

In omnem terram exívit sonus eórum, * & in fines orbis terræ verba eórum.

In sole pósuit tabernáculum suum ; * & ipse tanquam sponsus procédens de thálamo suo.

Exultávit ut gigas ad curréndam viam ; * à summo cœlo egréssio ejus.

Et occúrsus ejus usque ad summum ejus ; * nec est qui se abscóndat à calóre ejus.

Lex Dómini immaculáta , convértens ánimas ; * testimónium Dómini fidéle , sapiéntiam præstans párvulis.

Justítiæ Dómini rectæ , lætificántes corda : * præcéptum Dómini lúcidum , illúminans óculos.

Timor Dómini sanctus , pérmanens in sęculum séculi : * judícia Dómini vera , justificáta in semetípsa.

Desiderabília super aurum & lápidem pretiósum multùm , * & dulcióra super mel & favum.

Etenim servus tuus custódit ea ; * in custodiéndis illis retribútio multa.

Delícta quis intélligit ? ab occúltis meis munda me ; * & ab aliénis parce servo tuo.

Si mei non fúerint domináti , tunc immaculátus ero , * & emundábor à delícto máximo.

Et erunt ut compláceant elóquia oris mei ; * & meditátio cordis mei in conspéctu tuo semper.

Dómine adjútor meus , * & redémptor meus.

Glória Patri , & Fílio.

*Psalmus* 44.

ERuctávit cor meum verbum bonum : * dico ego ópera meá Regi.

Lingua mea cálamus scribæ * velóciter scribéntis.

Speciósus forma præ fíliis hóminum , diffúsa est grátia in lábiis tuis : * proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum.

Accíngere gládio tuo super femur tuum , * potentíssime.

Spécie tua , & pulchritúdine tuá , * inténde , prosperè procéde ,

Et regna propter veritátem , & mansuetúdinem , & justítiam : * & dedúcet te mirabíliter déxtera tua.

Sagíttæ tuæ acútæ , pópuli sub te cadent , * in corda inimicórum Regis.

Sedes tua , Deus , in séculum séculi : * virga directiónis , virga regni tui.

Dilexísti justítiam , & odísti iniquitátem : * proptéreà unxit te Deus Deus tuus óleo lætítiæ præ consórtibus tuis.

Myrrha , & gutta , & cásia à vestiméntis tuis , à dómibus ebúrneis : * ex quibus delectavérunt te fíliæ regum in honóre tuo.

Astitit regina à dextris tuis

in vestítu deauráto, * circúndata varietáte.

Audi fília, & vide; & inclína aurem tuam: * & oblivíscere pópulum tuum, & domum patris tui.

Et concupíscet Rex decórem tuum: * quóniam ipse est Dóminus Deus tuus, & adorábunt eum.

Et fíliæ Tyri in munéribus * vultum tuum deprecabúntur, omnes dívites plebis.

Omnis glória ejus fíliæ Regis ab intùs, * in fímbriis áureis circumamícta varietátibus.

Adducéntur Regi vírgines post eam: * próximæ ejus afferéntur tibi.

Afferéntur in lætítia & exultatióne: * adducéntur in templum Regis.

Pro pátribus tuis nati sunt tibi fílii; * constítues eos príncipes super omnem terram.

Mémores erunt nóminis tui: * in omni generatióne, & generatiónem.

Proptéreà pópuli confitebúntur tibi in ætérnum, * & in séculum séculi.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 45.

DEus noster refúgium, & virtus: * adjútor in tribulatiónibus, quæ invenérunt nos nimis.

Proptéreà non timébimus dum turbábitur terra: * & transferéntur montes in cor maris.

Sonuérunt, & turbátæ sunt aquæ eórum: * conturbáti sunt montes in fortitúdine ejus.

Flúminis ímpetus lætíficat civitátem Dei: * sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus.

Deus in médio ejus non commovébitur: * adjuvábit eam Deus manè dilúculo.

Conturbátæ sunt Gentes, & inclináta sunt regna: * dedit vocem suam, mota est terra.

Dóminus virtútum nobíscum; * suscéptor noster Deus Jacob.

Veníte, & vidéte ópera Dómini, quæ pósuit prodígia super terram; * áuferens bella usque ad finem terræ.

Arcum cónteret, & confringet arma; * & scuta combúret igni.

Vacáte, & vidéte quóniam ego sum Deus: * exaltábor in Géntibus, & exaltábor in terra.

Dóminus virtútum nobíscum; * suscéptor noster Deus Jacob.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* Quàm pulchra es amíca mea, quàm pulchra es! absque eo quod intrínsecùs latet. *Cant.* 4. 1.

℣. Vultum tuum deprecabúntur, ℟. Omnes dívites plebis. *Ps.* 44. 13.
Pater noster.

*Benedictiones ut ante Psalterium, secundùm Feriam.*

LECTIO I. *Eccli.* 24. 14.

AB inítio, & ante sécula creáta sum, & usque ad futúrum séculum non désinam, & in habitatióne sancta coram ipso ministrávi. Et sic in Sion firmáta sum, & in civitáte sanctificáta simíliter requiévi, & in Jerúsalem potéstas mea. Et radicávi in pópulo honorificáto, & in parte Dei mei herédítas illíus, & in plenitúdine sanctórum deténtio mea. Tu autem.

℟. Benedícta es tu fília, à Dómino Deo excélso * Præ ómnibus muliéribus super terram. *Judith* 13, 23. ℣. Benedícta tu in muliéribus, invenísti enim grátiam apud Deum. *Luc.* 1. *v.* 28. 30. * Præ ómnibus.

LECTIO II. *Isa.* 7. 10.

ADjécit Dóminus loqui ad Achaz, dicens: Pete tibi signum à Dómino Deo tuo in profúndum inférni, sive in excélsum suprà. Et dixit Achaz: Non petam, & non tentábo Dóminum. Et dixit: Audíte ergo domus David: Nunquid parum vobis est, moléstos esse homínibus, quia moléstí estis & Deo meo? Propter hoc dabit Dóminus ipse vobis signum. Ecce virgo concípiet, & páriet fílium, & vocábitur nomen ejus Emmánuël. Tu autem.

℟. Natiónes ad te vénient: nomen magnum invocábunt in te; maledícti erunt qui contémpserint te, & * Condemnáti erunt omnes qui blasphemáverint te. *Tob.* 13. *v.* 14. 15. 16. ℣. Beáta quæ credidísti, quóniam perficiéntur ea, quæ dicta sunt tibi à Dómino. *Luc.* 1. 45. * Condemnáti.

LECTIO III. *Ezech.* 44. 1.

COnvértit me A'ngelus ad viam portæ sanctuárii exterióris, quæ respiciébat ad Oriéntem: & erat clausa. Et dixit Dóminus ad me: Porta hæc clausa erit, non aperiétur, & vir non transíbit per eam: quóniam Dóminus Deus I'sraël ingréssus est per eam, eritque clausa príncipi. Princeps ipse sedébit in ea, ut cómedat panem coram Dómino. Tu autem.

℟. Beátam me dicent omnes generatiónes; * Quia fecit mihi magna qui potens est; & sanctum nomen ejus. *Luc.* 1. *v.* 48. 49. ℣. Magnificáte Dóminum mecum, & exaltémus nomen ejus in idípsum. *Ps.* 33. 4. * Quia. ℣. Glória. * Quia.

IN II. NOCTURNO.

FERIA III. ET VI.

*Ant. unica.* 6. f. Invéni.

*Psalmus* 47.

MAgnus Dóminus, & laudábilis nimis: * in civitáte Dei nostri, in monte sancto ejus.

Fundátur exultatióne univérsæ terræ mons Sion, * látera Aquilónis, cívitas Regis magni.

Deus in dómibus ejus cognoscétur, * cum suscípiet eam.

Quóniam ecce reges terræ congregáti sunt: * convenérunt in unum.

Ipsi vidéntes sic admiráti sunt, conturbáti sunt, commóti sunt: * tremor apprehéndit eos: ibi dolóres ut parturiéntis.

In spíritu veheménti * cónteres naves Tharsis.

Sicut audívimus, sic vídimus in civitáte Dómini virtútum, in civitáte Dei nostri: * Deus fundávit eam in ætérnum.

Suscépimus Deus misericórdiam tuam * in médio templi tui.

Secúndùm nomen tuum Deus, sic & laus tua in fines terræ: * justítiâ plena est déxtera tua.

Lætétur mons Sion, & exúltent fíliæ Judæ, * propter judícia tua, Dómine.

Circúndate Sion, & complectímini eam: * narráte in túrribus ejus.

Pónite corda vestra in virtúte ejus: * & distribúite domos ejus: ut enarrétis in progénie áltera.

Quóniam hic est Deus, Deus noster in ætérnum, & in séculum séculi: * ipse reget nos in sécula.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 84.

BEnedixísti, Dómine, terram tuam, * avertísti captivitátem Jacob.

Remisísti iniquitátem plebis tuæ, * operuísti ómnia peccáta eórum.

Mitigásti omnem iram tuam, * avertísti ab ira indignatiónis tuæ.

Convérte nos, Deus salutáris noster, * & avérte iram tuam à nobis.

Nunquid in ætérnum irascéris nobis? * aut exténdes iram tuam à generatióne in generatiónem.

Deus, tu convérsus vivificábis nos, * & plebs tua lætábitur in te.

Osténde nobis, Dómine, misericórdiam tuam, * & salutáre tuum da nobis.

A'udiam quid loquátur in me Dóminus Deus, * quóniam loquétur pacem in plebem suam.

Et super sanctos suos, *

& in eos qui convertúntur ad cor.

Verúntamen prope timéntes eum salutáre ipsíus; * ut inhábitet glória in terra nostra.

Misericórdia & véritas obviavérunt sibi; * justítia & pax osculátæ sunt.

Véritas de terra orta est; * & justítia de cœlo prospéxit.

E'tenim Dóminus dabit benignitátem, * & terra nostra dabit fructum suum.

Justítia ante eum ambulábit, * & ponet in via gressus suos.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 86.

FUndaménta ejus in móntibus sanctis: * díligit Dóminus portas Sion super ómnia tabernácula Jacob.

Gloriósa dicta sunt de te, * cívitas Dei.

Memor ero Rahab & Babylónis * sciéntium me.

Ecce alienígenæ, & Tyrus, & pópulus Æthíopum, * hi fuérunt illic.

Nunquid Sion dicet: Homo, & homo natus est in ea: * & ipse fundávit eam Altíssimus?

Dóminus narrábit in scriptúris populórum, & príncipum; * horum, qui fuérunt in ea.

Sicut lætántium ómnium * habitátio est in te.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* Invéni quem díligit ánima mea; ténui eum, nec dimíttam. *Cant.* 3. 4.

℣. Jurávit Dóminus David veritátem: ℟. De fructu ventris tui ponam super sedem tuam. *Ps.* 131. 11.

Pater noster.

*Benedictiones ut ante Psalterium, secundùm Feriam.*

LECTIO I. *Luc.* 1. 26.

MIssus est A'ngelus Gábriel à Deo in civitátem Galilææ, cui nomen Názareth, ad Vírginem desponsátam viro, cui nomen erat Joseph, de domo David, & nomen Vírginis, María. Et ingréssus A'ngelus ad eam dixit: Ave grátiâ plena: Dóminus tecum: Benedícta tu in muliéribus.

℟. Laudáte Dóminum, qui in me ancílla sua adimplévit misericórdiam, quam promísit dómui I'sraël, * Et interfécit in manu mea hostem pópuli sui. *Judith* 13. *v.* 17. 18. ℣. Fecit Dóminus poténtiam in bráchio suo; dispérsit supérbos mente cordis sui. *Luc.* 1. 51. * Et interfécit.

LECTIO II. *v.* 29.

QUæ cùm audísset, turbáta est in sermóne ejus, & cogitábat qualis esset ista salutátio. Et ait A'ngelus ei: Ne tímeas María, invenísti enim grátiam apud Deum:

ecce concípies in útero, & páries filium, & vocábis nomen ejus Jesum; hic erit Magnus, & filius Altíssimi vocábitur, & dabit illi Dóminus Deus sedem David patris ejus: & regnábit in domo Jacob, & regni ejus non erit finis.

℟. Magna facta est, & præclárior erat univérsæ terræ I'sraël: * Erat étiam virtúti cástitas adjúncta. *Judith* 16. *v.* 25. 26. ℣. Dixit María ad A'ngelum: Quómodò fiet istud, quóniam virum non cognósco. *Luc.* 1. 34. * Erat étiam.

LECTIO III. *v.* 34.

DIxit autem María ad A'ngelum: Quómodò fiet istud, quóniam virum non cognósco? Et respóndens A'ngelus dixit ei: Spíritus sanctus supervéniet in te, & virtus Altíssimi obumbrábit tibi. Ideóque & quod nascétur ex te Sanctum, vocábitur filius Dei. Et ecce Elizábeth cognáta tua, & ipsa concépit filium in senectúte sua: quia non erit impossíbile apud Deum omne verbum. Dixit autem María: Ecce ancílla Dómini, fiat mihi secúndùm verbum tuum.

℟. Benedícta tu à Deo tuo in omni tabernáculo Jacob: * Quóniam in omni gente quæ audíerit nomen tuum, magnificábitur super te Deus I'sraël. *Judith* 13. 31. ℣. Et ait A'ngelus ei: Ne tímeas María. *Luc.* 1. 10. * Quóniam. ℣. Glória. * Quóniam.

IN III. NOCTURNO.

FERIA IV. ET SABBATO.

*Ant.* 7. c. Quasi cedrus.

*Psalmus* 95.

CAntáte Dómino cánticum novum, * cantáte Dómino, omnis terra.

Cantáte Dómino, & benedícite nómini ejus, * annuntiáte de die in diem salutáre ejus.

Annuntiáte inter Gentes glóriam ejus, * in ómnibus pópulis mirabília ejus.

Quóniam magnus Dóminus, & laudábilis nimis; * terríbilis est super omnes deos.

Quóniam omnes dii Géntium dæmónia: * Dóminus autem cœlos fecit.

Conféssio & pulchritúdo in conspéctu ejus, * sanctimónia & magnificéntia in sanctificatióne ejus.

Afférte Dómino pátriæ Géntium, afférte Dómino glóriam & honórem, * afférte Dómino glóriam nómini ejus.

Tóllite hóstias, & introíte in átria ejus, * adoráte Dóminum in átrio sancto ejus.

Commoveátur à fácie ejus univérsa terra: * dícite in Géntibus, quia Dóminus regnávit.

Etenim corréxit orbem terræ, qui non commovébitur; * judicábit pópulos in æquitáte.

Læténtur cœli, & exúltet terra, commoveátur mare, & plenitúdo ejus; * gaudébunt campi, & ómnia quæ in eis sunt.

Tunc exultábunt ómnia ligna silvárum à fácie Dómini, quia venit; * quóniam venit judicáre terram.

Judicábit orbem terræ in æquitáte, * & pópulos in veritáte sua.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus 96.*

DO'minus regnávit, exúltet terra: * læténtur ínsulæ multæ.

Nubes & calígo in circúitu ejus: * justítia & judícium corréctio sedis ejus.

Ignis ante ipsum præcédet, * & inflammábit in circúitu inimícos ejus.

Illuxérunt fúlgura ejus orbi terræ: * vidit, & commóta est terra.

Montes sicut cera fluxérunt à fácie Dómini; * à fácie Dómini omnis terra.

Annuntiavérunt cœli justítiam ejus: * & vidérunt omnes pópuli glóriam ejus.

Confundántur omnes qui adórant sculptília: * & qui gloriántur in simulácris suis.

Adoráte eum omnes Angeli ejus: * audívit, & læetáta est Sion.

Et exultavérunt fíliæ Judæ * propter judícia tua, Dómine:

Quóniam tu Dóminus altíssimus super omnem terram: * nimis exaltátus es super omnes deos.

Qui dilígitis Dóminum, odíte malum: * custódit Dóminus ánimas sanctórum suórum, de manu peccatóris liberábit eos.

Lux orta est justo, * & rectis corde lætítia.

Lætámini, justi, in Dómino: * & confitémini memóriæ sanctificatiónis ejus.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus 97.*

CAntáte Dómino cánticum novum: * quia mirabília fecit.

Salvávit sibi déxtera ejus: * & bráchium sanctum ejus.

Notum fecit Dóminus salutáre suum: * in conspéctu Géntium revelávit justítiam suam.

Recordátus est misericórdiæ suæ, * & veritátis suæ dómui Israël.

Vidérunt omnes términi terræ * salutáre Dei nostri.

Jubiláte Deo omnis terra: * cantáte, & exultáte, & psállite.

Psállite Dómino in cíthara, * in cíthara & voce psalmi.

In tubis ductílibus, & voce tubæ córneæ, * jubiláte in conspéctu Regis Dómini.

Moveátur mare, & plenitúdo ejus; * orbis terrárum, & qui hábitant in eo.

Flúmina plaudent manu, simul montes exultábunt à conspéctu Dómini: * quóniam venit judicáre terram.

Judicábit orbem terrárum in justítia, * & pópulos in æquitáte.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* Quasi cedrus exaltáta sum in Líbano; & quasi cypréssus in monte Sion. *Eccli.* 24. 17.

℣. Homo natus est in ea,
℟. Et ipse fundávit eam Altíssimus. *Ps.* 86. 5.

Pater noster.

*Benedictiones ut ante Psalterium secundùm Feriam.*

LECTIO I. *Apoc.* 12. 1.

SIgnum magnum appáruit in cœlo: Múlier amícta Sole, & Luna sub pédibus ejus, & in cápite ejus coróna stellárum duódecim: & in útero habens, clamábat partúriens, & cruciabátur ut páriat. Et draco stetit ante mulíerem, quæ erat paritúra: ut cùm peperísset, fílium ejus devoráret. Et péperit fílium másculum, qui rectúrus erat omnes Gentes: & raptus est fílius ejus ad Deum, & ad thronum ejus, & múlier fugit in solitúdinem, ubi habébat locum parátum à Deo.

℟. In Deo honorábitur, & in plenitúdine sancta admirábitur, * Et in multitúdine electórum habébit laudem. *Eccli.* 24. *v.* 1. 3. 4. ℣. In útero habébit, & páriet Fílium, & vocábunt nomen ejus Emmánuël: quod est interpretátum, Nobíscum Deus. *Matth.* 1. 23. * Et in multitúdine.

LECTIO II. *v.* 9.

PRojéctus est draco ille magnus, serpens antíquus in terram, & ángeli ejus cum illo missi sunt. Et postquàm vidit draco quòd projéctus esset in terram, persecútus est mulíerem, quæ péperit másculum: & datæ sunt mulíeri alæ duæ áquilæ magnæ, ut voláret in desértum in locum suum, ubi álitur per tempus & témpora.

℟. Decóra facta es nimis, & profecísti in regnum: & * Egréssum est nomen tuum in Gentes propter spéciem tuam, quia perfécta eras in decóre meo. *Ezech.* 16. *v.* 13. 14. ℣. Ave grátiâ plena, Dóminus tecum. *Luc.* 1. 18. * Egréssum est.

LECTIO III. *v.* 15.

MIsit serpens ex ore suo post mulíerem aquam tanquàm flumen, ut eam fáceret trahi à flúmine. Et adjúvit terra mulíerem, & apéruit

ruit terra os suum, & absórbuit flumen, quod misit draco de ore suo. Et irátus est draco in mulierem: & ábiit fácere prælium cum réliquis de sémine ejus, qui custódiunt mandáta Dei, & habent testimónium Jesu Christi.

℟. Benedíctus Dóminus, qui creávit cœlum & terram: * Quia hódiè nomen tuum ita magnificávit, ut non recédat laus tua de ore hóminum. *Judith* 13. *v.* 24. 25.

℣. Benedíctus Dóminus Deus I'sraël. *Luc.* 1. 68. * Quia hódiè. ℣. Glória. * Quia hódiè.

## AD LAUDES MATUTINAS.

℣. *Sacerd.* Flúminis ímpetus lætíficat civitátem Dei: ℟. Sanctificávit tabernáculum suum Altíssimus. *Ps.* 45. 5.

*Ant.* 3. c. *sola.* Gloriósa.

*Psalmus* 62.

DEus, Deus meus; * ad te de luce vígilo.

Sitívit in te ánima mea: * quàm multiplíciter tibi caro mea!

In terra desérta, & ínvia, & inaquósa, sic in sancto appárui tibi, * ut vidérem virtútem tuam, & glóriam tuam.

Quóniam mélior est misericórdia tua super vitas; * lábia mea laudábunt te.

Sic benedícam te in vita mea, * & in nómine tuo levábo manus meas.

Sicut ádipe & pinguédine repleátur ánima mea, * & lábiis exultatiónis laudábit os meum.

Si memor fui tui super stratum meum, * in matutínis meditábor in te.

Quia fuísti adjútor meus, * & in velaménto alárum tuárum exultábo.

Adhæsit ánima mea post te; * me suscépit déxtera tua.

Ipsi verò in vanum quæsiérunt ánimam meam; * introíbunt in inferióra terræ, tradéntur in manus gládii, partes vúlpium erunt.

Rex verò lætábitur in Deo, laudabúntur omnes qui jurant in eo; * quia obstrúctum est os loquéntium iníqua.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 92.

DO'minus regnávit, decórem indútus est; * indutus est Dóminus fortitúdinem, & præcínxit se.

E'tenim firmávit orbem terræ, * qui non commovébitur.

Paráta sedes tua ex tunc; * à século tu es.

Elevavérunt flúmina, Dómine, * elevavérunt flúmina vocem suam.

Elevavérunt flúmina fluctus suos, * à vócibus aquárum multárum.

Mirábiles elatiónes maris ; * mirábilis in altis Dóminus.

Testimónia tua credibília facta sunt nimis : * domum tuam decet sanctitúdo, Dómine, in longitúdinem diérum.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 99.

JUbiláte Deo omnis terra;* servíte Dómino in lætítia.

Introíte in conspéctu ejus,* in exultatióne.

Scitóte quóniam Dóminus ipse est Deus ; ipse fecit nos, & non ipsi nos : * pópulus ejus & oves páscuæ ejus.

Introíte portas ejus in confessióne, átria ejus in hymnis, * confitémini illi.

Laudáte nomen ejus ; quóniam suávis est Dóminus, * in ætérnum misericórdia ejus, & usque in generatiónem & generatiónem véritas ejus.

*Canticum. Judith.* 13. 13.

APeríte portas, quóniam nobíscum est Deus, * qui fecit virtútem in Israël.

Laudáte Dóminum Deum nostrum, * qui non deséruit sperántes in se.

Et in me ancilla sua adimplévit misericórdiam suam, * quam promísit dómui Israël.

Et interfécit in manu mea,* hostem pópuli sui.

Confitémini illi omnes, quóniam bonus, * quóniam in séculum misericórdia ejus.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 150.

LAudáte Dóminum in sanctis ejus ; * laudáte eum in firmaménto virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus : * laudáte eum secúndùm multitúdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ : * laudáte eum in psaltério, & cíthara.

Laudáte eum in tympano, & choro : * laudáte eum in chordis, & órgano.

Laudáte eum in cymbalis benesonántibus ; laudáte eum in cymbalis jubilatiónis : * omnis spíritus laudet Dóminum.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* Gloriósa dicta sunt dote cívitas Dei. *Ps.* 86. 3.

*Capitulum. Prov.* 8. 22.

DOminus possédit me in inítio viárum suárum, ántequàm quidquam fáceret à princípio. Ab ætérno ordináta sum, & ex antíquis ántequàm terra fíeret.

*Hymnus.*

O Gloriósa Vírginum,
Regína cœlo céllsior,
Quanto, María, fœ́nore,
Reddis quod Eva pérdidit.

Cunctis Deum, Virgo, paris
Desiderátum Géntibus :
Vitam datam per Vírginem,
Gentes redémptæ pláudite.

Maria

MARÍA mater grátiæ
Mater misericórdiæ,
Tu nos ab hoste prótege
Et horâ mortis súscipe.
QUI natus es de Vírgine,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

℣. Elégit eam Dóminus,
℟. In habitatiónem sibi. *Ps.* 131. 13.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 5. f. Benedíctus Dóminus qui te diréxit in vúlnera cápitis príncipis inimicórum nostrórum. *Judith* 13. 24.

*Oratio.*

CONcéde nos fámulos tuos, quæsumus, Dómine Deus, perpétuâ mentis & córporis sanitáte gaudére: & gloriósâ beátæ Maríæ semper Vírginis intercessióne, à præsénti liberári tristítia, & ætérnâ pérfrui lætítiâ. Per Dóminum.

AD PRIMAM.

Ave María.

Deus in adjutórium meum inténde.

*Hymnus.*

MEMÉNTO, de Deo Deus,
Quòd matre natus Vírgine
Nostrî misértus, pérditi
Mundi redémptor véneris.
ET nos Dei Virgo parens,
Vultu benígno réspice;
Placábilem tuâ prece
Fac esse nobis Fílium.
QUI natus es de Vírgine,
Jesu, tibi sit glória,
Cum Patre cumque Spíritu
In sempitérna sécula.
Amen.

*Ant.* 7. C. Benedicéntur.

*Psalmus* 71.

DEus judícium tuum regi da, * & justítiam tuam fílio regis:

Judicáre pópulum tuum in justítia, * & páuperes tuos in judício.

Suscípiant montes pacem pópulo, * & colles justítiam.

Judicábit páuperes pópuli, & salvos fáciet fílios páuperum: * & humiliábit calumniatórem.

Et permanébit cum sole, & ante lunam, * in generatióne & generatiónem.

Descéndet sicut plúvia in vellus: * & sicut stillicídia stillántia super terram.

Glória Patri, & Fílio.

*Divisio Psalmi* 71.

ORiétur in diébus ejus justítia, & abundántia pacis: * donec auferátur luna.

Et dominábitur à mari usque ad mare, * & à flúmine usque ad términos orbis terrárum.

Coram illo prócident Æthíopes: * & inimíci ejus terram lingent.

Reges Tharsis, & ínsulæ

múnera ófferent:* reges A'rabum, & Saba dona addúcent:

Et adorábunt eum omnes reges terræ: * omnes Gentes sérvient ei:

Quia liberábit páuperem à potènte, * & páuperem, cui non erat adjùtor.

Glória Patri, & Fílio.

*Altera divisio Psalmi 71.*

PArcet páuperi & ínopi: * & ánimas páuperum salvas fáciet.

Ex usùris & iniquitáte rédimet ánimas eórum: * & honorábile nomen eórum coram illo.

Et vivet, & dábitur ei de auro Arábiæ, & adorábunt de ipso semper: * totâ die benedícent ei.

Et erit firmaméntum in terra in summis móntium, superextollétur super Líbanum fructus ejus: * & florébunt de civitáte sicut fœnum terræ.

Sit nomen ejus benedíctum in sécula: * ante solem pérmanet nomen ejus.

Et benedicéntur in ipso omnes tribus terræ: * omnes Gentes magnificábunt eum.

Benedíctus Dóminus Deus I'sraël, * qui facit mirabília solus.

Et benedíctum nomen majestátis ejus in ætérnum: * & replébitur majestáte ejus omnis terra: Fiat, fiat.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* Benedicéntur in te, & in sémine tuo omnes tribus terræ. *Genes.* 28. 14.

*Capitulum. Galat.* 4. v. 4. 5.

UBi venit plenitúdo témporis, misit Deus Fílium suum, factum ex muliere, factum sub lege, ut eos qui sub lege erant redímeret.

℟. *breve.* Thronus ejus sicut sol * In conspéctu meo. *Repet.* Thronus. ℣. Et sicut luna perféćta in ætérnum. *Ps.* 88. 38. * In conspéctu meo. ℣. Glória. *Repet.* Thronus.

℣. In nómine meo ℟. Exaltábitur cornu ejus. *Ps.* 88. 25.

*Oratio.*

GRátiam tuam, quǽsumus, Dómine, méntibus nostris infúnde, ut, qui A'ngelo nuntiánte Christi fílii tui incarnatiónem cognóvimus, per passiónem ejus & crucem ad resurrectiónis glóriam perducámur; Per eúmdem Dóminum.

AD TERTIAM.

Ave María.

Deus in adjutórium.

*Hymnus.* MEMÉNTO, *ut suprà ad Primam.*

*Psalmus* 115.

*Ant.* 6. f. Multæ fíliæ.

CRédidi, propter quod locútus sum: * ego autem humiliátus sum nimis.

Ego dixi in excéssu meo: * Omnis homo mendax.

Quid retríbuam Dómino, *

pro ómnibus quæ retríbuit mihi?

Cálicem salutáris accípiam; * & nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam coram omni pópulo ejus: * pretiósa in conspéctu Dómini mors sanctórum ejus.

O Dómine, quia ego servus tuus, * ego servus tuus, & fílius ancíllæ tuæ.

Dirupísti víncula mea; * tibi sacrificábo hóstiam laudis, & nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam in conspéctu omnis pópuli ejus, * in átriis domûs Dómini, in médio tui Jerúsalem.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 116.

LAudáte Dóminum omnes Gentes: * laudáte eum omnes pópuli:

Quóniam confirmáta est super nos misericórdia ejus: * & véritas Dómini manet in ætérnum.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 119.

AD Dóminum cum tribulárer clamávi, * & exaudívit me.

Dómine, líbera ánimam meam à lábiis iníquis, * & à lingua dolósa.

Quid detur tibi, aut quid apponátur tibi * ad linguam dolósam?

Sagíttæ poténtis acútæ, * cum carbónibus desolatóriis.

Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est: habitávi cum habitántibus Cedar; * multùm íncola fuit ánima mea.

Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus; * cùm loquébar illis, impugnábant me gratis.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* Multæ fíliæ congregavérunt divítias, tu supergréssa es univérsas. *Prov.* 31. 26.

*Capitulum. Eccli.* 24. 11.

IN ómnibus réquiem quæsívi, & in hereditáte Dómini morábor. Tunc præcépit, & dixit mihi Creátor ómnium: & qui creávit me requiévit in tabernáculo meo.

℟. *breve.* Deus in médio ejus * Non commovébitur. *Repet.* Deus. ℣. Adjuvábit eam Deus manè dilúculò *Ps.* 45. 6. * Non. ℣. Glória. *Repet.* Deus.

℣. Oriétur in diébus ejus justítia, ℟. Et abundántia pacis. *Ps.* 71. 7.

*Oratio.*

COrdibus nostris, quæsumus, Dómine, grátiam tuam benígnus infúnde; &, intercedénte sanctíssimâ Dei genitríce María, córpora nostra castitáte, & mentes

nostras humilitáte & charitáte sanctífica. Per eúmdem Dóminum.

## Ad Sextam.

Ave, María.

Deus in adjutórium.

*Hymnus.* Meménto, *ut suprà ad Primam.*

*Ant.* 3. a. Benedíxit.

*Psalmus* 120.

LEvávi óculos meos in montes, * unde véniet auxílium mihi.

Auxílium meum à Dómino, * qui fecit cœlum & terram.

Non det in commotiónem pedem tuum; * neque dormítet qui custódit te.

Ecce non dormitábit, neque dórmiet, * qui custódit Iſraël.

Dóminus custódit te, Dóminus protéctio tua * super manum déxteram tuam.

Per diem sol non uret te, * neque luna per noctem.

Dóminus custódit te ab omni malo; * custódiat ánimam tuam Dóminus.

Dóminus custódiat intróitum tuum, & éxitum tuum; * ex hoc nunc, & usque in séculum.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 122.

AD te levávi óculos meos, * qui hábitas in cœlis.

Ecce sicut óculi servórum, * in mánibus dominórum suórum;

Sicut óculi ancíllæ * in mánibus dóminæ suæ;

Ita óculi nostri ad Dóminum Deum nostrum, * donec misereátur nostri.

Miserére nostri, Dómine, miserére nostri; * quia multùm repléti sumus despectióne:

Quia multùm repléta est ánima nostra; * oppróbrium abundántibus, & despéctio supérbis.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 123.

NIsi quia Dóminus erat in nobis, dicat nunc Iſraël; * nisi quia Dóminus erat in nobis.

Cùm exúrgerent hómines in nos, * fortè vivos deglutiſſent nos.

Cùm irascerétur furor eórum in nos, * fórsitan aqua absorbuiſſet nos.

Torréntem pertransívit ánima nostra * fórsitan pertransiſſet ánima nostra aquam intolerábilem.

Benedíctus Dóminus, * qui non dedit nos in captiónem déntibus eórum.

A'nima nostra sicut paſſer erépta est * de laqueo venántium.

Láqueus contrítus est, * & nos liberáti sumus.

Adjutórium nostrum in nómine Dómini, * qui fecit cœlum & terram.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* Benedíxit te Dóminus in virtúte sua, quia per te ad níhilum redégit inimícos nostros. *Judith* 13. 22.

*Capitulum.* *Cant.* 6. 9.

QUæ est ista, quæ progréditur quasi auróra consúrgens; pulchra ut luna, eléčta ut sol, terríbilis ut castrórum ácies ordináta?

℟. *breve.* Elégit eam Dóminus * In habitatiónem sibi. *Repet.* Elégit. ℣. Hic habitábo, quóniam elégi eam. *Ps.* 131. *v.* 13. 14. * In. ℣. Glória. *Repet.* Elégit.

℣. In sole pósuit tabernáculum suum; ℟. Et ipse tanquàm sponsus procédens de thálamo suo. *Ps.* 18. 6.

*Oratio.*

DEus, cujus charitátis ardóre omnes sanctæ vírgines à beáta María exémplum virginitátis accipiéntes, præséntis séculi voluptátes ac delícias contempsérunt, imménsam pietátem tuam humíliter expóscimus, ut, ipsâ intercedénte, mereámur & nos Unigénito tuo Dómino nostro Jesu Christo adhærére; Qui tecum.

AD NONAM.

Ave, María.

Deus in adjutórium.

*Hymnus*, MEMÉNTO, *ut suprà ad Primam.*

*Ant.* 5. a. Vidérunt.

*Psalmus* 124.

QUi confídunt in Dómino, sicut mons Sion: * non commovébitur in ætérnum, qui hábitat in Jerúsalem.

Montes in circúitu ejus; * & Dóminus in circúitu pópuli sui, ex hoc nunc & usque in séculum.

Quia non relínquet Dóminus virgam peccatórum super sortem justórum; * ut non exténdant justi ad iniquitátem manus suas.

Bénefac, Dómine, bonis, * & rectis corde.

Declinántes autem in obligatiónes, addúcet Dóminus cum operántibus iniquitátem: * pax super Israël.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 125.

IN converténdo Dóminus captivitátem Sion, * facti sumus sicut consoláti.

Tunc replétum est gáudio os nostrum; * & lingua nostra exultatióne.

Tunc dicent inter Gentes: * Magnificávit Dóminus fácere cum eis.

Magnificávit Dóminus fácere nobíscum; * facti sumus lætántes.

Convérte, Dómine, captivitátem nostram, * sicut torrens in Austro.

Qui séminant in lácrymis,* in exultatióne metent.

Eúntes ibant & flebant, * mitténtes sémina sua.

Veniéntes autem vénient cum exultatióne, * portántes manípulos suos.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 127.

BEáti omnes qui timent Dóminum, * qui ámbulant in viis ejus.

Labóres mánuum tuárum quia manducábis, * beátus es, & benè tibi erit.

Uxor tua sicut vitis abúndans,* in latéribus domûs tuæ.

Fílii tui sicut novéllæ olivárum, * in circúitu mensæ tuæ.

Ecce sic benedicétur homo, * qui timet Dóminum.

Benedícat tibi Dóminus ex Sion; * & vídeas bona Jerúsalem ómnibus diébus vitæ tuæ.

Et vídeas fílios filiórum tuórum, * pacem super Israël.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* 6. a. Vidérunt eam fíliæ, & beatíssimam prædicavérunt, & regínæ laudavérunt eam. *Cant.* 6. 8.

*Capitul. Gen.* 22. *v.* 17. 18.

POssidébit semen tuum portas inimicórum suórum, & benedicéntur in sémine tuo omnes Gentes terræ.

℟. *breve.* A'stitit regína, * A' dextris tuis, *Repet.* A'stitit.

℣. In vestítu deauráto, circúndata varietáte. *Ps.* 44. 9. * A' dextris. ℣. Glória. *Repet.* A'stitit.

℣. Díligit Dóminus portas Sion ℟. Super ómnia tabernácula Jacob. *Ps.* 86. 2.

*Oratio.*

PRótege, Dómine, fámulos tuos, & beátæ Maríæ semper vírginis patrocíniis confidéntes, à cunctis hóstibus & perículis redde secúros; Per Dóminum.

## AD VESPERAS.

*Ant. unica.* 6. f. Quàm pulchra es.

*Psalmus* 109.

DIxit Dóminus Dómino meo: * Sede à dextris meis.

Donec ponam inimícos tuos, * scabéllum pedum tuórum.

Virgam virtútis tuæ emíttet Dóminus ex Sion, * domináre in médio inimicórum tuórum.

Tecum princípium in die virtútis tuæ in splendóribus sanctórum, * ex útero ante lucíferum génui te.

Jurávit Dóminus, & non pœnitébit eum; * Tu es sacérdos in ætérnum, secúndùm órdinem Melchísedech.

Dóminus à dextris tuis, * confrégit in die iræ suæ reges.

Judicábit in natiónibus,

implébit ruínas, * conquassábit cápita in terra multórum.

De torrénte in via bibet; * proptéreà exaltábit caput.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 112.

LAudáte púeri Dóminum, * laudáte nomen Dómini.

Sit nomen Dómini benedíctum, * ex hoc nunc, & usque in séculum.

A solis ortu usque ad occásum, * laudábile nomen Dómini.

Excélsus super omnes Gentes Dóminus, * & super cœlos glória ejus.

Quis sicut Dóminus Deus noster, qui in altis hábitat, * & humília réspicit in cœlo & in terra?

Súscitans à terra ínopem, * & de stércore érigens páuperem;

Ut cóllocet eum cum princípibus, * cum princípibus pópuli sui.

Qui habitáre facit stérilem in domo, * matrem filiórum lætántem.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 121.

LÆtátus sum in his, quæ dicta sunt mihi: * in domum Dómini íbimus.

Stantes erant pedes nostri * in átriis tuis, Jerúsalem.

Jerúsalem, quæ ædificátur ut cívitas; * cujus participátio ejus in idípsum.

Illuc enim ascendérunt tribus, tribus Dómini, testimónium Isráël, * ad confiténdum nómini Dómini.

Quia illic sedérunt sedes in judício, * sedes super domum David.

Rogáte quæ ad pacem sunt Jerúsalem; * & abundántia diligéntibus te.

Fiat pax in virtúte tua, * & abundántia in túrribus tuis.

Propter fratres meos, & próximos meos, * loquébar pacem de te.

Propter domum Dómini Dei nostri, * quæsívi bona tibi.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 126.

NIsi Dóminus ædificáverit domum, * in vanum laboravérunt qui ædíficant eam.

Nisi Dóminus custodíerit civitátem, * frustra vígilat qui custódit eam.

Vanum est vobis ante lucem súrgere: * súrgite postquàm sedéritis, qui manducátis panem dolóris.

Cùm déderit diléctis suis somnum; * ecce heréditas Dómini, fílii; merces, fructus ventris.

Sicut sagíttæ in manu poténtis; * ita fílii excussórum.

Beátus vir qui implévit desidérium suum ex ipsis; * non confundétur cùm loquétur inimícis suis in porta.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 147.

LAuda, Jerúsalem, Dóminum; * lauda Deum tuum Sion.

Quóniam confortávit seras portárum tuárum; * benedíxit fíliis tuis in te.

Qui pósuit fines tuos pacem; * & ádipe fruménti sátiat te.

Qui emíttit elóquium suum terræ; * velóciter currit sermo ejus.

Qui dat nivem sicut lanam; * nébulam sicut cínerem spargit.

Mittit crystállum suam sicut buccéllas; * ante fáciem frígoris ejus quis sustinébit?

Emíttet verbum suum, & liquefáciet ea; * flabit spíritus ejus, & fluent aquæ.

Qui annúntiat verbum suum Jacob, * justítias & judícia sua Isráël.

Non fecit táliter omni natióni; * & judícia sua non manifestávit eis.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* Quàm pulchra es, & quàm decóra, charíssima in delíciis! *Cant.* 7. 6.

*Capitulum. Eccli.* 24. 24.

EGo mater pulchræ dilectiónis, & timóris, & agnitiónis, & sanctæ spei.

*Hymnus.*

AVe maris stella,
Dei mater alma,
Atque semper virgo,
Felix cœli porta.

SUMENS illud ave,
Gabriélis ore,
Funda nos in pace,
Mutans nomen Hevæ.

SOLVE vincla reis,
Profer lumen cæcis,
Mala nostra pelle,
Bona cuncta posce.

MONSTRA te esse matrem,
Sumat per te preces,
Qui pro nobis natus,
Tulit esse tuus.

VIRGO singuláris
Inter omnes mitis:
Nos culpis solútos,
Mites fac & castos.

VITAM præsta puram,
Iter para tutum,
Ut vidéntes Jesum,
Semper collætémur.

SIT laus Deo Patri,
Summo Christo decus,
Spirítui sancto
Tribus honor unus. Amen.

℣. Diffúsa est grátia in lábiis tuis, ℟. Proptéreà benedíxit te Deus in ætérnum. *Ps.* 44. 3.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 8. g. Ave grátiâ plena, Dóminus tecum, benedícta tu in muliéribus. *Luc.* 1. 28.

*Oratio, ut suprà ad Laudes.*

AD COMPLETORIUM.

Ave María.

℣. Convérte nos Deus, &c.

Deus in adjutórium.

*Ant.* 4. a. Currémus.

*Psalmus* 128.

SÆpè expugnavérunt me à juventúte mea, * dicat nunc I'sraël.

Sæpè expugnavérunt me à juventúte mea; * étenim non potuérunt mihi.

Supra dorsum meum fabricavérunt peccatóres; * prolongavérunt iniquitátem suam.

Dóminus justus concídit cervíces peccatórum: * confundántur, & convertántur retrórsum omnes qui odérunt Sion.

Fiant sicut fœnum tectórum: * quod priúsquàm evellátur, exáruit;

De quo non implévit manum suam qui metit, * & sinum suum qui manípulos cólligit.

Et non dixérunt qui præteríbant: Benedíctio Dómini super vos, * benedíximus vobis in nómine Dómini.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 129.

DE profúndis clamávi ad te, Dómine: * Dómine, exáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendéntes, * in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine: * Dómine, quis sustinébit?

Quia apud te propitiátio est; * & propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus, * sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem, * speret I'sraël in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia, * & copiósa apud eum redémptio.

Et ipse rédimet I'sraël, * ex ómnibus iniquitátibus ejus.

Glória Patri, & Fílio.

*Psalmus* 130.

DO'mine, non est exaltátum cor meum; * neque eláti sunt óculi mei.

Neque ambulávi in magnis, * neque in mirabílibus super me.

Si non humíliter sentiébam; * sed exaltávi ánimam meam;

Sicut ablactátus est super matre sua, * ita retribútio in ánima mea.

Speret I'sraël in Dómino, * ex hoc nunc & usque in séculum.

Glória Patri, & Fílio.

*Ant.* Currémus in odórem unguentórum tuórum, & lætábimur in te. *Cantic.* 1. 3.

*Capitulum. Eccli.* 24. 20.

SIcut cinnamómum & bálsamum aromatízans odórem dedi: quasi myrrha elécta dedi suavitátem odóris.

*Hymnus.*

VIRGÍNEIS títulis matris quæ jungit honóres,
Hac natos fóveat nocte benígna suos.
FÚLGIDA stella maris, fecli dum mérgimur undis,
Sit lux in ténebris, & benè fida quies.
SI sopor obrépit, casti fac mater amóris
Cor vígilans uno spiret amóre Dei.
O Regína potens, própiùs res áspice nostras;
Dicáris pópuli vita, salúsque tui.
GLÓRIA summa Patri, compar sit glória Nato,
Quo péperit Virgo, glória Spirítui. Amen.

℣. Confiteántur tibi, Dómine, pópuli omnes, ℟. Terra dedit fructum suum. *Ps.* 66. 6. 7.

*Ad* Nunc dimíttis, *Ant.* 4. *irreg.* d. Benedictiónem ómnium Géntium dedit illi Dóminus. *Eccli.* 44. 25.

*Oratio.*

DEus, qui in sinu Vírginis matris castíssimæ requiéscere dignátus es, da nobis, ipsâ intercedénte, ut, inimíci per noctem devitémus insídias, & tu sis nostra quies & tutum præsídium, qui vivis & regnas.

*Tempore Paschali, ad Invitatorium, Antiphonas, Responsoria tam prolixa, quàm brevia, & Versiculos additur* Allelúia, *ut in aliis Officiis Temporis Paschalis.*



# SUPPLEMENTUM OFFICII BEATÆ MARIÆ IN SABBATO.

## AD COMPLETORIUM.

*Capitulum. Baruch* 5. *v.* 3. 4.

DEus osténdet splendórem suum in te, omni qui sub cœlo est; nominátur enim tibi nomen tuum à Deo in sempitérnum: Pax justítiæ & honor pietátis.

℣. Custódi me, Dómine, ut pupíllam óculi, ℟. Sub umbra alárum tuárum prótege me. *Ps.* 16. 8.

*Ad* Nunc dimíttis, *Ant.* 3. A. Per noctes quæsívi quem díligit ánima mea. *Cant.* 3. 1.

*Oratio.*

DEus, qui in sinu Vírginis matris tuæ castíssimæ requiéscere dignátus es: da nobis, ipsâ intercedénte, ut inimíci per noctem devitémus insídias, & tu sis nostra quies & tutum præsídium, qui vivis, & regnas.

## AD OFFICIUM NOCTURNUM.

### IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 5. a. Quàm pulchra es amíca mea, quàm pulchra es! óculi tui columbárum, absque eo quod intrínsecùs latet. *Cant.* 4. 1.

*Ant.* 4. e. Tota pulchra es, & mácula, non est in te. *Ibid. v.* 7.

*Ant.* 1. a. Pulchra es, suávis, & decóra, terríbilis ut castrórum ácies ordináta. *Cant.* 6. 3.

℣. Vultum tuum deprecabúntur ℟. Omnes dívites plebis. *Psal.* 44. 13.

### IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 6. f. Invéni quem díligit ánima mea; ténui eum, nec dimíttam. *Cant.* 3. 4.

*Ant.* 3. c. Ego quasi vitis fructificávi suavitátem odóris. *Eccli.* 24. 23.

*Ant.* 1. *irreg.* Flores mei fructus honóris, & honestátis. *Ibid. v.* 23.

℣. Jurávit Dóminus David veritátem: ℟. De fructu ventris tui ponam super sedem tuam. *Psal.* 131. 11.

### IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 7. c. Quasi cedrus exaltáta sum in Líbano, & quasi cypréssus in monte Sion. *Eccli.* 24. 17.

*Ant.* 8. g. In Sion firmáta sum, & in civitáte sanctificáta requiévi. *Ibid. v.* 15.

*Ant.* 4. *irreg.* d. Sub umbra illíus, quem desideráveram, sedi, & ordinávit in me charitátem. *Cant.* 2. *v.* 3. 4.

℣. Homo natus est in ea ℟. Et ipse fundávit eam Altíssimus. *Psal.* 86. 5.



# PSALMI POENITENTIALES

*Dicuntur cum Litaniis, flexis genibus, in omnibus sextis Feriis Quadragesima (in Choro post Laudes diei; extra Chorum, pro opportunitate temporis) quoties Officium fit de Feria. Litania autem, omissis Septem Psalmis, dicuntur in Festo sancti Marci, & in tribus diebus Rogationum.*

*Antiphona.* Dómine.

*Psalmus* 6.

DOmine, ne in furóre tuo árguas me; * neque in ira tua corrípias me.

Miserére mei, Dómine, quóniam infírmus sum; * sana me, Dómine, quóniam conturbáta sunt ossa mea.

Et ánima mea turbáta est valde: * sed tu, Dómine, úsquequo?

Convértere, Dómine, & éripe ánimam meam: * salvum me fac propter misericórdiam tuam.

Quóniam non est in morte qui memor sit tui: * in inférno autem quis confitébitur tibi?

Laborávi in gémitu meo; * lavábo per síngulas noctes lectum meum; lácrymis meis stratum meum rigábo.

Turbátus est à furóre óculus meus; * inveterávi inter omnes inimícos meos.

Discédite à me omnes, qui operámini iniquitátem; * quóniam exaudívit Dóminus vocem fletûs mei.

Exaudívit Dóminus deprecatiónem meam; * Dóminus oratiónem meam suscépit.

Erubéscant, & conturbéntur veheménter omnes inimíci mei; * convertántur, & erubéscant valdè velóciter.

Glória Patri, &c. *Et dicitur in fine cujusque Psalmi.*

*Psalmus* 31.

BEáti quorum remíssæ sunt iniquitátes, * & quorum tecta sunt peccáta.

Beátus vir cui non imputávit Dóminus peccátum, * nec est in spíritu ejus dolus.

Quóniam tácui, inveteravérunt ossa mea, * dum clamárem totâ die,

Quóniam die ac nocte graváta est super me manus tua: * convérsus sum in ærúmna mea, dum configitur spina.

Delíctum meum cógnitum tibi feci, * & injustítiam meam non abscóndi.

Dixi:Confitébor advérsùm me injustítiam meam Dómino : * & tu remisísti impietátem peccáti mei.

Pro hac orábit ad te omnis sanctus, * in témpore opportúno.

Verúntamen in dilúvio aquárum multárum, * ad eum non approximábunt.

Tu es refúgium meum à tribulatióne, quæ circúndedit me : * exultátio mea érue me à circundántibus me.

Intelléctum tibi dabo, & instruam te in via hac quâ gradiéris ; * firmábo super te óculos meos.

Nolíte fieri sicut equus & mulus, * quibus non est intelléctus.

In camo & fræno maxíllas eórum constringe, * qui non appróximant ad te.

Multa flagélla peccatóris; * sperántem autem in Dómino misericórdia circúndabit.

Lætámini in Dómino, & exultáte justi, * & gloriámini omnes recti corde.

*Psalmus 37.*

DO'mine, ne in furóre tuo árguas me, * neque in ira tua corrípias me :

Quóniam sagíttæ tuæ infíxæ sunt mihi, * & confirmásti super me manum tuam.

Non est sánitas in carne mea à fácie iræ tuæ ; * non est pax óssibus meis à fácie peccatórum meórum :

Quóniam iniquitátes meæ supergréssæ sunt caput meum, * & sicut onus grave graváta sunt super me.

Putruérunt & corrúptæ sunt cicatríces meæ, * à fácie insipiéntiæ meæ.

Miser factus sum, & curvátus sum usque in finem : * totâ die contristátus ingrediébar :

Quóniam lumbi mei impléti sunt illusiónibus, * & non est sánitas in carne mea.

Afflíctus sum & humiliátus sum nimis ; * rugiébam à gémitu cordis mei.

Dómine, ante te omne desidérium meum, * & gémitus meus à te non est abscónditus.

Cor meum conturbátum est, derelíquit me virtus mea; * & lumen oculórum meórum, & ipsum non est mecum.

Amíci mei, & próximi mei * advérsùm me appropinquavérunt & stetérunt ;

Et qui juxta me erant, de longè stetérunt ; * & vim faciébant qui quærébant ánimam meam ;

Et qui inquirébant mala mihi, locúti sunt vanitátes ; * & dolos totâ die meditabántur.

Ego autem tanquàm surdus non audiébam, * & sicut

nutus non apériens os suum :
Et factus sum sicut homo non áudiens, * & non habens in ore suo redargutiónes.
Quóniam in te, Dómine, sperávi, * tu exáudies me, Dómine Deus meus.
Quia dixi : Nequándo supergáudeant mihi inimíci mei ; * & dum commovéntur pedes mei, super me magna locúti sunt.
Quóniam ego in flagélla parátus sum ; * & dolor meus in conspéctu meo semper.
Quóniam iniquitátem meam annuntiábo, * & cogitábo pro peccáto meo :
Inimíci autem mei vivunt, & confirmáti sunt super me, * & multiplicáti sunt qui odérunt me iníquè.
Qui retríbuunt mala pro bonis, detrahébant mihi ; * quóniam sequébar bonitátem.
Ne derelínquas me, Dómine Deus meus, * ne discésseris à me.
Inténde in adjutórium meum, * Dómine Deus salútis meæ.

*Psalmus* 50.

MIserére mei, Deus, * secúndùm magnam misericórdiam tuam ;
Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum * dele iniquitátem meam.
A'mpliùs lava me ab iniquitáte mea, * & à peccáto meo munda me :
Quóniam iniquitátem meam ego cognósco, * & peccátum meum contra me est semper.
Tibi soli peccávi, & malum coram te feci, * ut justificéris in sermónibus tuis, & vincas cùm judicáris.
Ecce enim in iniquitátibus concéptus sum, * & in peccátis concépit me mater mea.
Ecce enim veritátem dilexísti : * incérta & occúlta sapiéntiæ tuæ manifestásti mihi.
Aspérges me hyssópo, & mundábor : * lavábis me, & super nivem dealbábor.
Audítui meo dabis gáudium & lætítiam ; & * exultábunt ossa humiliáta.
Avérte fáciem tuam à peccátis meis, * & omnes iniquitátes meas dele.
Cor mundum crea in me Deus, * & spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.
Ne projícias me à fácie tua ; * & spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.
Redde mihi lætítiam salutáris tui ; * & spíritu principáli confírma me.
Docébo iníquos vias tuas, * & ímpii ad te converténtur.
Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ ; * & exultábit lingua mea justítiam tuam.
Dómine, lábia mea apé-

ries; * & os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluisses sacrifícium, dedíssem útique; * holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus; * cor contrítum & humiliátum, Deus, non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion, * ut ædificéntur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes & holocáusta: * tunc impónent super altáre tuum vítulos.

*Psalmus* 101.

DO'mine, exáudi oratiónem meam; * & clamor meus ad te véniat.

Non avértas fáciem tuam à me; * in quacúnque die tríbulor, inclína ad me aurem tuam.

In quacúnque die invocávero te, * velóciter exáudi me;

Quia defecérunt sicut fumus dies mei, * & ossa mea sicut crémium aruérunt.

Percússus sum ut fœnum, & áruit cor meum, * quia oblítus sum comédere panem meum.

A voce gémitûs mei * adhæsit os meum carni meæ.

Símilis factus sum pellicáno solitúdinis; * factus sum sicut nictícorax in domicílio.

Vigilávi, * & factus sum sicut passer solitárius in tecto.

Totâ die exprobrábant mihi inimíci mei; * & qui laudábant me, advérsum me jurábant.

Quia cínerem tanquam panem manducábam, * & potum meum cum fletu miscébam.

A fácie iræ, & indignatiónis tuæ; * quia élevans allisísti me.

Dies mei sicut umbra declinavérunt, * & ego sicut fœnum árui.

Tu autem, Dómine, in ætérnum pérmanes, * & memoriále tuum in generatiónem & generatiónem.

Tu exúrgens miseréberis Sion; * quia tempus miseréndi ejus, quia venit tempus;

Quóniam placuérunt servis tuis lápides ejus, * & terræ ejus miserebúntur.

Et timébunt Gentes nomen tuum, Dómine, * & omnes reges terræ glóriam tuam;

Quia ædificávit Dóminus Sion; * & vidébitur in glória sua.

Respéxit in oratiónem humílium, & * non sprevit precem eórum.

Scribántur hæc in generatióne áltera; * & pópulus qui creábitur, laudábit Dóminum;

Quia prospéxit de excélso sancto suo; * Dóminus de cœlo in terram aspéxit,

Ut audiret gémitus compeditórum, * ut sólveret fílios interemptórum,

Ut annúntient in Sion nomen Dómini,* & laudem ejus in Jerúsalem;

In conveniéndo pópulos in unum & reges, * ut sérviant Dómino.

Respóndit ei in via virtútis suæ; * Paucitátem diérum meórum núntia mihi:

Ne révoces me in dimídio diérum meórum: * in generatiónem & generatiónem iinni tui.

Inítio tu, Dómine, terram fundásti, * & ópera mánuum tuárum sunt cœli.

Ipsi períbunt; tu autem ermanes; * & omnes sicut vestiméntum veteráscent:

Et sicut opertórium mutáïts eos, & mutabúntur; * tu iutem idem ipse es, & anni ui non defícient.

Filii servórum tuórum habitábunt; * & semen eórum n séculum dirigétur.

*Psalmus* 129.

DE profúndis clamávi ad te, Dómine; * Dómine, xáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendénes * in vocem deprecatiónis neæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine: * Dómine, quis sus-inébit?

Quia apud te propitiátio est: * & propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus; * sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem * speret I'sraël in Dómino;

Quia apud Dóminum misericórdia, * & copiósa apud eum redémptio:

Et ipse rédimet I'sraël * ex ómnibus iniquitátibus ejus.

*Psalmus* 142.

DO'mine, exáudi oratiónem meam, áuribus pércipe obsecratiónem meam in veritáte tua, * exáudi me in tua justítia;

Et non intres in judícium cum servo tuo, * quia non justificábitur in conspéctu tuo omnis vivens;

Quia persecútus est inimícus ánimam meam, * humiliávit in terra vitam meam;

Collocávit me in obscúris sicut mórtuos séculi, * & anxiátus est super me spíritus meus, in me turbátum est cor meum.

Memor fui diérum antiquórum, meditátus sum in ómnibus opéribus tuis, * in factis mánuum tuárum meditábar.

Expándi manus meas ad te; * ánima mea sicut terra sine aqua tibi.

Velóciter exáudi me, Dó-

mine, * defécit spíritus meus.

Non avértas fáciem tuam à me, * & símilis ero descendéntibus in lacum.

Audítam fac mihi manè misericórdiam tuam; * quia in te sperávi.

Notam fac mihi viam in qua ámbulem; * quia ad te levávi ánimam meam.

E'ripe me de inimícis meis, Dómine, ad te confúgi: * doce me fácere voluntátem tuam, quia Deus meus es tu.

Spíritus tuus bonus dedúcet me in terram rectam: * propter nomen tuum, Dómine, vivificábis me in æquitáte tua.

Edúces de tribulatióne ánimam meam, * & in misericórdia tua dispérdes inimícos meos;

Et perdes omnes qui tríbulant ánimam meam, * quóniam ego servus tuus sum.

*Ant.* Dómine, memor esto mei, & ne vindíctam sumas de peccátis meis, neque reminiscáris delícta mea, vel paréntum meórum. *Tob.* 3. 3.

## LITANIÆ.

Kyrie eléïson. Christe eléïson. Kyrie eléïson.
Christe audi nos. Christe exáudi nos.
Pater de cœlis Deus, Miserére nobis.
Fili Redémptor mundi Deus, Miserére nobis.
Spíritus sancte Deus, Miserére nobis.
Sancta Trínitas unus Deus, Miserére nobis.
Sancta María, Ora pro nobis.
Sancta Dei génitrix, ora.
Sancta Virgo Vírginum, ora.
Sancte Míchaël, ora.
Sancte Gábriël, ora.
Sancte Ráphaël, ora.
Omnes sancti A'ngeli & Archángeli, oráte.
Omnes sancti beatórum spirítuum órdines, oráte.
Sancte Joánnes Baptista, ora.
Sancte Joseph, ora.
Omnes sancti Patriarchæ & Prophétæ, oráte.
Omnes Sancti legis antiquæ oráte.
Sancte Petre, ora.
Sancte Paule, ora.
Sancte Andréa, ora.
Sancte Jacóbe, ora.
Sancte Joánnes, ora.
Sancte Thoma, ora.
Sancte Jacóbe, ora.
Sancte Philíppe, ora.
Sancte Bartholomæe, ora.
Sancte Matthæe, ora.
Sancte Simon, ora.
Saecte Thadæe, ora.
Sancte Matthía, ora.
Sancte Bárnaba. ora.
Sancte Luca, ora.
Sancte Marce, ora.
Omnes sancti Apóstoli & Evangelístæ, oráte pro nobis.

Omnes

Omnes sancti Discipuli Dómini, oráte.
Omnes sancti Innocéntes, oráte pro nobis.
Sancte Stéphane, ora.
Sancte Lauréntí, ora.
Sancte Vincénti, ora.
Sancte Nicási cum sóciis tuis, ora.
Sancte Dionysi cum sóciis tuis, ora.
Sancte Clare, ora.
Sancti Fabiáne, & Sebastiáne, oráte.
Sancti Joánnes & Paule, oráte pro nobis.
Sancti Cosma & Damiáne, oráte pro nobis.
Sancti Gervási & Protási, oráte pro nobis.
Omnes sancti Mártyres, oráte pro nobis.
Sancte Victríci, ora.
Sancte Gregóri Thaumatúrge, ora.
Sancte Felix, ora.
Omnes sancti Confessóres fidei, oráte.
Sancte Silvéster, ora.
Sancte Gregóri, ora.
Sancte Ambrósi, ora.
Sancte Augustíne, ora.
Sancte Hierónyme, ora.
Sancte Martíne, ora.
Sancte Mellóne, ora.
Sancte Nicoláe, ora.
Sancte E'vode, ora.
Sancte Gildárde, ora.
Sancte Románe, ora.
Sancte Audoéne, ora.
Sancte Ansbérte, ora.
Sancte Hugo, ora.
Sancte Tauríne, ora.
Sancte Laude, ora.
Sancte Sevére, ora.
Sancte Sinéri, ora.
Sancte Ursíne, ora.
Sancte Exúperi, ora.
Sancte Latuíne, ora.
Sancte Lauréntí, ora.
Sancte Hildevérte, ora.
Omnes sancti Pontífices & Confessóres, oráte.
Omnes sancti Doctóres, oráte pro nobis.
Sancte Antóni, ora.
Sancte Benedícte, ora.
Sancte Bernárde, ora.
Sancte Wandregisile, ora.
Sancte Philibérte, ora.
Sancte Hermelánde, ora.
Sancte Gerémare, ora.
Sancte Galtéri, ora.
Sancte Gauchéri, ora.
Sancte Clodoálde, ora.
Sancte Yvo, ora.
Sancte Domínice, ora.
Sancte Francísce, ora.
Omnes sancti Sacerdótes & Levítæ, oráte.
Omnes sancti Abbátes, & Religiósi, oráte.
Omnes sancti Mónachi, & Eremítæ, oráte.
Sancte Ludóvice, ora.
Sancte Wanínge, ora.
Omnes sancti Laïci, oráte.
Sancta Anna, ora.
Sancta María Magdaléna, ora.
Sancta A'gatha, ora.

Sancta Lúcia, ora.
Sancta Agnes, ora.
Sancta Cæcília, ora.
Sancta Catharína, ora.
Sancta Honorína, ora.
Sancta Anastásia, ora.
Sancta Genovéfa, ora.
Sancta Austrebérta, ora.
Sancta Clara, ora.
Sancta María Ægyptíaca, ora pro nobis.
Sancta Clotíldis, ora.
Sancta Bathíldis, ora.
Omnes sanctæ Vírgines & Víduæ, oráte.
Omnes Sancti & Sanctæ Dei, Intercédite pro nobis.
Propítius esto, Parce nobis, Dómine.
Propítius esto, Exáudi nos, Dómine.
Ab omni malo, Líbera nos, Dómine.
Ab omni peccáto, líbera.
Ab ira tua, líbera.
A súbitánea & improvísa morte, líbera.
Ab insídiis diáboli, líbera.
Ab ira, & ódio, & omni mala voluntáte, líbera.
A spíritu fornicatiónis, líbera nos, Dómine.
A fúlgure & tempestáte, líbera nos, Dómine.
A morte perpétua, líbera.
Per mystérium sanctæ Incarnatiónis tuæ, líbera.
Per Nativitátem tuam, líbera nos, Dómine.
Per baptísmum, & sanctum jejúnium tuum, líbera nos, Dómine.
Per crucem & passiónem tuam, líbera.
Per mortem & sepultúram tuam, líbera.
Per sanctam resurrectiónem tuam, líbera.
Per admirábilem ascensiónem tuam, líbera.
Per advéntum Spíritûs sancti paracléti, líbera.
In die judícii, líbera.
Peccatóres, Te rogámus, audi nos.
Ut Ecclésiam tuam sanctam régere & conserváre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut domnum Apostólicum, & omnes gradus Ecclésiæ in sancta religióne conserváre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut Antístitem nostrum, & omnes congregatiónes illi commíssas in tuo sancto obséquio conserváre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut Regem nostrum custodíre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut nobis indúlgeas, Te rogámus, audi nos.
Ut ad veram pœniténtiam nos perdúcere dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut inimícos sanctæ Ecclésiæ humiliáre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut Régibus & Princípibus

Christiánis pacem & veram concórdiam donáre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut cuncto pópulo Christiáno pacem & unitátem largíri dignéris, Te rogámus.
Ut nosmetipsos in tuo sancto servítio confortáre & conserváre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut mentes nostras ad cœléstia desidéria érigas, Te rogámus, audi nos.
Ut ómnibus benefactóribus nostris sempitérna bona retríbuas, Te rogámus, audi nos.
Ut ánimas nostras, fratrum, propinquórum, & benefactórum nostrórum ab ætérna damnatióne erípias, Te rogámus, audi nos.
Ut fructus terræ dare, & conserváre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut ómnibus fidélibus defúnctis réquiem ætérnam donáre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Ut nos exaudíre dignéris, Te rogámus, audi nos.
Fili Dei, Te rogámus.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Parce nobis, Dómine.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Exáudi nos, Dómine.
Agnus Dei, qui tollis peccáta mundi, Miserére nobis.

Christe audi nos. Christe exáudi nos.

Kyrie eléison. Christe eléison. Kyrie eléison.

Pater noster. *secretò.*

℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem. ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Dómine, ne memíneris iniquitátum nostrárum antiquárum, ℟. Citò antícipent nos misericórdiæ tuæ; quia páuperes facti sumus nimis. *Ps.* 78. 8.

℣. Adjuva nos, Deus salutáris noster, & propter glóriam nóminis tui, Dómine, líbera nos, ℟. Et propítius esto peccátis nostris propter nomen tuum. *Ps.* 78. 9.

℣. Orémus pro Pastóre nostro N. ℟. Dóminus consérvet eum, & vivíficet eum. *Ps.* 40. 3.

℣. Dómine, salvum fac Regem; ℟. Et exáudi nos in die quâ invocavérimus te. *Ps.* 19. 10.

℣. Orémus pro benefactóribus nostris; ℟. Exáudi de cœlo, Dómine, & dimítte peccáta servis tuis. 2. *Par.* 6. 27.

℣. Pro frátribus nostris absséntibus; ℟. Salvos fac servos tuos, Deus meus, sperántes in te. *Ps.* 85. 2.

℣. Pro infírmis, afflíctis & captívis; ℟. Líbera eos, Deus Isráël, ex ómnibus tribulatiónibus suis. *Ps.* 24. 22.

℣. Orémus pro fidélibus defúnctis. ℟. Edúcat eos Dóminus in lucem, & vídeant justítiam ejus. *Mich.* 7. 2.

℣. Memor esto congregatiónis tuæ, ℟. Quam possedísti ab inítio. *Ps.* 73. 2.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

℣. Dóminus vobíscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

DEus, cui próprium est miseréri semper, & párcere, súscipe deprecatiónem nostram; ut nos, & omnes fámulos tuos quos delictórum caténa constríngit, miserátio tuæ pietátis cleménter absólvat.

EXáudi, quǽsumus, Dómine, súpplicum preces, & confiténtium tibi parce peccátis; ut páriter nobis indulgéntiam tríbuas benígnus & pacem.

INeffábilem nobis, Dómine, misericórdiam tuam cleménter osténde; ut simul nos & à peccátis ómnibus éxuas, & à pœnis quas pro his merémur, erípias.

DEus, qui culpas delinquéntium districtè feriéndo pércutis, fletus quoque lugéntium non recúses; ut qui pondus tuæ animadversiónis cognóvimus, pietátis tuæ grátiam sentiámus.

DEus ómnium fidélium pastor & rector, fámulum tuum N. quem Pastórem Ecclésiæ tuæ præésse voluísti, propítius réspice: da ei, quǽsumus, verbo & exémplo, quibus præest, profícere: ut ad vitam, unà cum grege sibi crédito, pervéniat sempitérnam.

OMnípotens sempitérne Deus, miserére fámulo tuo Pontífici nostro N. & dírige eum secúndùm tuam cleméntiam in viam salútis ætérnæ; ut, te donánte, tibi plácita cúpiat, & totâ virtúte perfíciat.

QUǽsumus omnípotens Deus, ut fámulus tuus Rex noster N. qui tuâ miseratióne suscépit regni gubernácula, virtútum étiam ómnium percípiat increménta; quibus decénter ornátus, vitiórum monstra devitáre, hostes superáre, & ad te qui via, véritas & vita es, gratiósus váleat perveníre.

DEus, à quo sancta desidéria, recta consília, & justa sunt ópera; da servis tuis illam, quam mundus dare non potest, pacem; ut & corda nostra mandátis tuis dédita, & hóstium sublátâ formídine, témpora sint tuâ protectióne tranquílla.

URe igne sancti Spíritûs renes nostros, & cor-

nostrum, Dómine; ut tibi casto córpore serviámus, & mundo corde placeámus.

ACtiónes nostras, quæsumus, Dómine, aspirándo præveni, & adjuvándo proséquere; ut cuncta nostra orátio & operátio à te semper incípiat, & per te cœpta finiátur.

FIdélium Deus ómnium cónditor & redémptor, animábus famulórum famularúmque tuárum remissiónem cunctórum tríbue peccatórum; ut indulgéntiam quam semper optavérunt, piis supplicatiónibus consequántur.

OMnípotens sempitérne Deus, qui vivórum domináris simul & mortuórum, omniúmque miseréris, quos tuos fide & ópere futúros esse prænóscis; te súpplices exorámus, ut pro quibus effúndere preces decrévimus, quosque vel præsens séculum adhuc in carne rétinet, vel futúrum jam exútos córpore suscépit, intercedéntibus ómnibus Sanctis tuis, pietátis tuæ cleméntiâ, ómnium delictórum suórum véniam consequántur; Per Dóminum.

*Loco superioris Orationis, poterit dici sequens*

PIetáte tuâ, quæsumus, Dómine, nostrórum solve víncula delictórum; & intercedénte beátâ & gloriósâ semper Vírgine Dei genitríce Maríâ cum ómnibus Sanctis nos fámulos tuos, & omnem pópulum Christiánum in omni sanctitáte & religióne custódi; omnésque consanguinitáte ac familiaritáte, aut piâ áliquâ ratióne nobis conjúnctos à vítiis ómnibus purga, virtútibus illústra; pacem & salútem nobis tríbue; hostes visíbiles & invisíbiles rémove; pestem, cladem, & carnália desidéria repélle; áërem salúbrem, & fertilitátem indúlge; amícis & inimícis nostris veram charitátem largíre; & ómnibus fidélibus vivis ac defúnctis in terra vivéntium, vitam & réquiem ætérnam concéde; Per eúmdem Dóminum.

℣. Dóminus vobíscum;
℟. Et cum spíritu tuo.
℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℟. Amen.

# ORDO
## COMMENDATIONIS ANIMÆ
### Ante decessum.

*Primum dicuntur Litaniæ breves in hunc modum.*

KYrie eléison. Christe eléison. Kyrie eléison.
Sancta María, Ora pro eo, (*vel* ea.)
Omnes sancti A'ngeli & Archángeli, Oráte.
Sancte Abel, ora.
Omnis chorus justórum, ora.
Sancte A'braham, ora.
Sancte Joánnes Baptísta, ora.
Omnes sancti Patriárchæ & Prophétæ, oráte.
Sancte Petre, ora.
Sancte Paule, ora.
Sancte Andréa, ora.
Sancte Joánnes, ora.
Omnes sancti Apóstoli & Evangelístæ, oráte.
Omnes sancti Discípuli Dómini, oráte.
Omnes sancti Innocéntes, oráte pro eo.
Sancte Stéphane, ora.
Sancte Laurénti, ora.
Omnes sancti Mártyres, oráte pro eo.
Sancte Silvéster, ora.
Sancte Gregóri, ora.
Sancte Augustíne, ora.
Sancte Románe, ora.
Omnes sancti Pontífices & Confessóres, oráte.
Sancte Benedícte, ora.
Sancte Francísce, ora.
Omnes sancti Mónachi & Eremítæ, oráte.
Sancta María Magdaléna, ora pro eo.
Sancta Lúcia, ora.
Omnes sanctæ Vírgines & Víduæ, oráte.
Omnes Sancti & Sanctæ Dei, Intercédite pro eo.
Propítius esto, Parce ei, Dómine.
Propítius esto, Líbera eum (*vel* eam,) Dómine.
Propítius esto, líbera.
Ab ira tua, líbera.
A perículo mortis, líbera.
A mala morte, líbera.
A pœnis inférni, líbera.
Ab omni malo, líbera.
A potestáte diáboli, líbera.
Per nativitátem tuam, líbera eum, Dómine.
Per crucem & passiónem tuam, líbera.
Per mortem & sepultúram tuam, líbera.
Per gloriósam resurrectiónem tuam, líbera.

Per admirábilem ascensiónem tuam, líbera.
Per grátiam Spíritûs sancti parácleti, líbera.
In die judícii, líbera.
Peccatóres, Te rogámus.
Ut ei parcas, Te rogámus.
Kyrie eléïson. Christe eléïson. Kyrie eléïson.

*Deinde, cùm in agone sui exitûs anxiatur anima, dicitur*

PRoficíscere, ánima christiána, de hoc mundo, in nómine Dei Patris omnipoténtis, qui te creávit; in nómine Jesu Christi Fílii Dei vivi, qui pro te passus est; in nómine Spíritûs sancti, qui in te effúsus est; in nómine Angelórum & Archangelórum; in nómine Thronórum & Dominatiónum; in nómine Principátuum & Potestátum; in nómine Chérubim & Séraphim; in nómine Patriarchárum & Prophetárum; in nómine sanctórum Apostolórum & Evangelistárum; in nómine sanctórum Mártyrum & Pontíficum; in nómine sanctórum Sacerdótum & Monachórum; in nómine sanctárum Vírginum, & ómnium Sanctórum & Sanctárum Dei. Hódiè sit in pace locus tuus, & habitátio tua in sancta Sion; Per eúmdem Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

Orémus. *Oratio.*

DEus miséricors, Deus clemens, Deus qui secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum peccáta pœniténtium deles, & præteritórum críminum culpas véniâ remissiónis evácuas; réspice propítius super hunc fámulum tuum (*vel* hanc fámulam tuam) N. & remissiónem ómnium peccatórum suórum totâ cordis confessióne poscéntem deprecátus exáudi. Rénova in eo, (*vel* ea,) piíssime Pater, quidquid terrénâ fragilitáte corrúptum, vel quidquid diabólicâ fraude violátum est: & unitáti córporis Ecclésiæ membrum redemptiónis annécte. Miserére, Dómine, gemítuum, miserére lacrymárum ejus; & non habéntem fidúciam, nisi in misericórdia tua, ad tuæ Sacraméntum reconciliatiónis admítte; Per Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.

COmméndo te omnipoténti Deo, charíssime frater, (*vel* charíssima soror,) & ei cujus es creatúra commítto; ut cùm humanitátis débitum, morte interveniénte, persólveris; ad autórem tuum qui te de limo terræ formáverat, revertáris. Egrediénti ítaque ánimæ tuæ de córpore, spléndidus Angelórum cœtus occúrrat; judex

Apoſtolórum tibi ſenátus advéniat; candidatórum tibi Mártyrum triumphátor exércitus óbviet; liliáta rutilántium te Pontíficum turma circúndet; jubilántium te Vírginum chorus excípiat: beátæ quiétis in ſinu Patriarchárum te compléxus aſtríngat; mitis atque feſtívus Chriſti Jeſu tibi aſpéctus appáreat, qui te inter aſſiſténtes ſibi júgiter interéſſe decérnat. Ignóres omne quod horret in ténebris, quod ſtridet in flammis, quod crúciat in torméntis. Cedat tibi tetérrimus ſátanas cum ſatellítibus ſuis; in advéntu tuo te comitántibus A'ngelis contremíſcat, atque in ætérnæ noctis chaos immáne diffúgiat. Exúrgat Deus, & diſſipéntur inimíci ejus; & fúgiant qui odérunt eum à fácie ejus. Sicut déficit fumus, defíciant; ſicut fluit cera à fácie ignis, ſic péreant peccatóres à fácie Dei; & juſti epuléntur, & exúltent in conſpéctu Dei. Confundántur ígitur & erubéſcant omnes tartáreæ legiónes, & miníſtri ſátanæ iter tuum impedíre non áudeant. Líberet te à cruciátu Chriſtus, qui pro te crucifíxus eſt. Líberet te ab ætérna morte Chriſtus, qui pro te mori dignátus eſt. Conſtítuat te Chriſtus Fílius Dei vivi intra paradíſi ſui ſemper amœna viréntia, & inter oves ſuas te verus ille Paſtor agnóſcat. Ille ab ómnibus peccátis tuis te abſólvat; atque ad déxteram ſuam in electórum ſuórum te ſorte conſtítuat. Redemptórem tuum fácie ad fáciem vídeas; & præſens ſemper aſſiſtens, manifeſtíſſimam beátis óculis aſpícias veritátem. Conſtitútus (*vel* conſtitúta) ígitur inter ágmina Beatórum, contemplatiónis divínæ dulcédine potiáris in ſǽcula ſæculórum. ℟. Amen.

SU'ſcipe, Dómine, ſervum tuum (*vel* ancíllam tuam) in locum ſperándæ ſibi ſalvatiónis à miſericórdia tua. ℟. Amen.

LI'bera, Dómine, ánimam ejus ex ómnibus perículis inférni, & de láqueis pœnárum, & ex ómnibus tribulatiónibus. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, ſicut liberáſti Enoch & Elíam de commúni morte mundi. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus à morte, ſicut liberáſti Noë de dilúvio. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, ſicut liberáſti A'braham de Ur Chaldæórum. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, ſicut liberáſti Job de paſſiónibus ſuis. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, ſicut liberáſti I'ſaac de

óstia, & de manu patris sui Abrahæ. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, sicut liberásti Lot de Sódomis & de flamma ignis. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, sicut liberásti Móysen de manu Pharaónis regis Egyptiórum. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, sicut liberásti Daniélem de lacu leónum. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, sicut liberásti tres púeros de camíno ignis ardéntis & de manu regis iníqui. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, sicut liberásti Susánnam de falso crímine. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, sicut liberásti David de manu regis Saül, & de manu Góliath. ℟. Amen.

Líbera, Dómine, ánimam ejus, sicut liberásti Petrum & Paulum de carcéribus. ℟. Amen.

Et sicut beátam Theclam vírginem & mártyrem tuam liberásti, sic liberáre dignéris ánimam ejus, & tecum fácias in cœléstibus bonis gaudére. ℟. Amen.

Commendámus tibi Dómine ánimam fámuli tui (*vel* fámulæ tuæ) N. precamúrque te, Dómine Jesu Christe, salvátor mundi; ut propter quam ad terram misericórditer descendísti, Patriarchárum tuórum sínibus insinuáre non rénuas. Agnósce, Dómine, creatúram tuam, non à diis aliénis creátam, sed à te solo Deo vivo & vero; quia non est álius Deus præter te. Lætífica, Dómine, ánimam ejus in conspéctu tuo, & ne memíneris iniquitátum ejus antiquárum. Licèt enim peccáverit, tamen Patrem, & Fílium, & Spíritum sanctum non negávit, sed crédidit, & zelum Dei in se hábuit, & Deum qui fecit ómnia, fidéliter adorávit.

Orémus. *Oratio.*

Delícta juventútis, & ignorántias ejus, quæsumus, ne memíneris, Dómine, sed secúndùm magnam misericórdiam tuam memor esto illíus in glória claritátis tuæ. Aperiántur ei cœli; collæténtur illi A'ngeli. In regnum tuum, Dómine, creatúram tuam súscipe. Suscípiat eam sanctus Míchaël Archángelus Dei, qui milítiæ cœléstis méruit principátum. Véniant illi óbviàm sancti A'ngeli Dei, & perdúcant eam in civitátem cœléstem Jerúsalem. Suscípiat eam beátus Petrus Apóstolus, cui à Deo claves regni cœléstis tráditæ sunt. A'djuvet eam sanctus Paulus Apóstolus, qui dignus fuit esse vas

electiónis. Intercédat pro ea sanctus Joánnes eléctus Dei Apóstolus, cui reveláta sunt secréta cœléstia. Orent pro ea omnes sancti Apóstoli, quibus à Dómino data est potéstas ligándi atque solvéndi. Intercédant pro ea omnes Sancti & elécti Dei, qui pro Christi nómine torménta in hoc século sustinuérunt; ut vínculis cárnis exúta pervenire mereátur ad glóriam regni cœléstis, præstánte Dómino nostro Jesu Christo, qui cum Patre & Spíritu sancto vivit & regnat in sécula seculórum. ℟. Amen.

*Si anxiatur adhuc anima, dicitur Psalmus* 117. Confitémini Dómino, *pag.* 15. *& totus Psalmus* 118. Beáti immaculáti, *per Horas Dominicæ distributus*, *pag.* 16.

*Egressâ autem animâ, aspergitur corpus aquâ benedictâ, & dicitur*

℟. Justus es, Dómine; & omnes viæ tuæ, misericórdia, & véritas, & judícium: * Nunc Dómine, memor esto mei, & ne vindíctam sumas de peccátis meis. † Nunc, Dómine, præcipe in pace récipi spíritum meum. *Tob.* 3. 2. 3. 6.

℣. In manus tuas comméndo spíritum meum, *Luc.* 23. 46. * Nunc, Dómine, memor.

℣. Dómine Jesu, súscipe spíritum meum. *Act.* 7. 58. † Nunc Dómine, præcipe.

Kyrie eléison. Christe eléison. Kyrie eléison.

Pater noster, *&c.* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Dómine, líbera me. Nequándo rápiat ut leo ánimam meam, ℟. Dum non est qui rédimat, neque qui salvum fáciat. *Ps.* 7. *v.* 2. 3.

℣. In te Dómine sperávi, ℟. Non confúndar in ætérnum. *Ps.* 30. 2.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

℣. Dóminus vobíscum; ℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

Tibi, Dómine, commendámus ánimam fámuli tui (*vel* fámulæ tuæ) N. ut defúnctus (*vel* defúncta) século, tibi vivat; & quæ per fragilitátem humánæ conversatiónis peccáta commísit, tu véniâ misericordíssimæ pietátis abstérge; Per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

# OFFICIUM DEFUNCTORUM.

*Dicitur extra tempus Paschale primâ cujusque mensis die non impeditâ Festo Semiduplici vel majoris gradûs; alioquin aliâ sequenti die similiter non impeditâ. In Adventu & Quadragesima, Feriâ ij, cujuslibet Hebdomadæ similiter non impeditâ, præterquàm in majori Hebdomada. In Choro dicitur ut fert consuetudo Ecclesiarum: extra Chorum verò pro opportunitate temporis, ex devotione.*

*Quælibet Hora sequentis Officii incipitur absolutè, & in fine omnium Psalmorum, & Canticorum, dicitur* Réquiem ætérnam dona eis, Dómine; * Et lux perpétua lúceat eis.

## AD VESPERAS.

*Ant.* 3. c. O Dómine.

*Psalmus* 114.



DIléxi, quóniam exáudiet Dóminus * vocem oratiónis meæ.

Quia inclinávit aurem suam mihi; * & in diébus meis invocábo.

Circumdedérunt me dolóres mortis; * & perícula inférni invenérunt me.

Tribulatiónem & dolórem invéni, * & nomen Dómini invocávi.

O Dómine, líbera ánimam meam! * miséricors Dóminus, & justus, & Deus noster miserétur.

Custódiens párvulos Dóminus; * humiliátus sum, & liberávit me.

Convértere, ánima mea, in réquiem tuam; * quia Dóminus benefécit tibi.

Quia erípuit ánimam meam de morte, * óculos meos à lácrymis, pedes meos à lapsu.

Placébo Dómino * in regióne vivórum.

*Ant.* O Dómine, líbera ánimam meam! miséricors Dóminus, & justus, & Deus noster miserétur. *v.* 4. 5.

*Ant.* 2. d. Heu mihi.

*Psalmus* 119.

AD Dóminum cùm tribulárer clamávi, * & exaudívit me.

Dómine, líbera ánimam meam à lábiis iníquis, * & à lingua dolósa.

Quid detur tibi, aut quid

apponátur tibi * ad linguam dolósam ?

Sagíttæ poténtis acútæ, * cum carbónibus desolatóriis.

Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est: habitávi cum habitántibus Cedar; * multùm íncola fuit ánima mea.

Cum his qui odérunt pacem, eram pacíficus; * cùm loquébar illis, impugnábant me gratis.

*Ant.* Heu mihi, quia incolátus meus prolongátus est! *v.* 5.

*Ant.* 4. a. Dóminus.

*Psalmus* 120.

LEvávi óculos meos in montes, * unde véniet auxílium mihi.

Auxílium meum à Dómino, * qui fecit cœlum & terram.

Non det in commotiónem pedem tuum; * neque dormítet qui custódit te.

Ecce non dormitábit, neque dórmiet, * qui custódit Iśraël.

Dóminus custódit te, Dóminus protéctio tua * super manum déxteram tuam.

Per diem sol non uret te, * neque luna per noctem.

Dóminus custódit te ab omni malo; * custódiat ánimam tuam Dóminus.

Dóminus custódiat intróitum tuum, & éxitum tuum; * ex hoc nunc, & usque in sæculum.

*Ant.* Dóminus custódit te, Dóminus protéctio tua. *v.* 5.

*Ant.* 8. g. Apud te.

*Psalmus* 129.

DE profúndis clamávi ad te, Dómine: * Dómine, exáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendéntes * in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine: * Dómine, quis sustinébit ?

Quia apud te propitiátio est; * & propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus, * sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem, * speret Iśraël in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia, * & copiósa apud eum redémptio.

Et ipse rédimet Iśraël, * ex ómnibus iniquitátibus ejus.

*Ant.* Apud te propitiátio est: & propter legem tuam sustínui te, Dómine. *v.* 4.

*Ant.* 2. d. O'pera.

*Psalmus* 137.

COnfitébor tibi, Dómine, in toto corde meo, * quóniam audísti verba oris mei.

In conspéctu Angelórum

sallam tibi; * adorábo ad mplum sanctum tuum.

Et confitébor nómini tuo per misericórdia tua, & ritáte tua; * quóniam ma- iificásti super omne, nomen nctum tuum.

In quacúnque die invocá- ro te, exáudi me; * mul- licábis in ánima mea vir- tem.

Confiteántur tibi, Dómi- :, omnes reges terræ, * ia audiérunt ómnia verba is tui;

Et cantent in viis Dómi- , * quóniam magna est ória Dómini.

Quóniam excélsus Dómi- is, & humília réspicit, * alta à longè cognóscit.

Si ambulávero in médio ibulatiónis, vivificábis me;* super iram inimicórum eórum extendísti manum am, & salvum me fecit xtera tua.

Dóminus retríbuet pro me; ómine, misericórdia tua in culum, * ópera mánuum árum ne despícias.

*Ant.* O'pera mánuum tuá- m, Dómine, ne despícias. 8.

*Ad* Magníficat, *Ant.* 2. d. udívi vocem de cœlo, di- ntem mihi: Scribe: Beáti órtui, qui in Dómino mó- intur. *Apoc.* 14. 13.

Pater noster, &c. *ut infrà in Laudibus, excepto quod loco Psalmi* De profúndis *dicitur*

*Psalmus* 145.

LAuda, ánima mea, Dóminum, laudábo Dóminum in vita mea; * psallam Deo meo quándiù fúero.

Nolíte confídere in princípibus, * in fíliis hóminum, in quibus non est salus.

Exíbit spíritus ejus, & revertétur in terram suam; * in illa die períbunt omnes cogitatiónes eórum.

Beátus, cujus Deus Jacob adjútor ejus, spes ejus in Dómino Deo ipsíus, * qui fecit cœlum & terram, mare, & ómnia quæ in eis sunt.

Qui custódit veritátem in séculum, facit judícium injúriam patiéntibus; * dat escam esuriéntibus.

Dóminus solvit compedítos; * Dóminus illúminat cæcos.

Dóminus érigit elísos, * Dóminus díligit justos.

Dóminus custódit ádvenas, pupíllum & víduam suscípiet; * & vias peccatórum dispérdet.

Regnábit Dóminus in sécula, Deus tuus, Sion, * in generatiónem & generatiónem.

AD OFFICIUM NOCTURNUM

*Sequens Invitatorium dicitur tantùm in die Comme-*

*morationis omnium Defunctorum, & in die Depositionis defuncti, ubi dicuntur tria infrascripta Nocturna: aliis diebus (nisi aliter ex fundatione, vel consuetudine fieri oporteat) dicitur tantùm unum Nocturnum cum Laudibus, ut infrà notatur pro temporis diversitate.*

*Invit.* Deum cui ómnia vivunt, * Veníte, adorémus. *Luc.* 20. 38.

*Ps.* Vénite, *& in fine* Réquiem ætérnam dona eis, *&c.*

IN I. NOCTURNO.

*Ant.* 7. a. Dírige.

*Psalmus* 5.

VErba mea áuribus pércipe, Dómine, * intéllige clamórem meum.

Inténde voci oratiónis meæ, * Rex meus, & Deus meus.

Quóniam ad te orábo, Dómine, * manè exáudies vocem meam.

Manè astábo tibi, & vidébo, * quóniam non Deus volens iniquitátem tu es.

Neque habitábit juxta te malígnus, * neque permanébunt injústi ante óculos tuos.

Odísti omnes, qui operántur iniquitátem: * perdes omnes, qui loquúntur mendácium.

Virum sánguinum & dolósum * abominábitur Dóminus.

Ego autem in multitúdine misericórdiæ tuæ introíbo in domum tuam: * adorábo ad templum sanctum tuum in timóre tuo.

Dómine, deduc me in justítia tua; * propter inimícos meos dírige in conspéctu tuo viam meam.

Quóniam non est in ore eórum véritas; * cor eórum vanum est.

Sepúlchrum patens est guttur eórum, linguis suis dolósè agébant, * júdica illos Deus.

Décidant à cogitatiónibus suis, secúndùm multitúdinem impietátum eórum expélle eos, * quóniam irritavérunt te, Dómine.

Et læténtur omnes, qui sperant in te, * in ætérnum exultábunt, & habitábis in eis.

Et gloriabúntur in te omnes, qui díligunt nomen tuum, * quóniam tu benedíces justo.

Dómine, ut scuto bonæ voluntátis tuæ, * coronásti nos.

*Ant.* Dírige, Dómine Deus meus, in conspéctu tuo viam meam. *v.* 9.

*Ant.* 8. g. Convértere.

*Psalmus* 6.

DO'mine, ne in furóre tuo árguas me; * neque

in ira tua corripias me.

Miserére mei, Dómine, quóniam infirmus sum: * sana me, Dómine, quóniam conturbáta sunt ossa mea.

Et ánima mea turbáta est valdè: * sed tu, Dómine, úsquequò?

Convértere, Dómine, & éripe ánimam meam: * salvum me fac propter misericórdiam tuam.

Quóniam non est in morte qui memor sit tui: * in inférno autem quis confitébitur tibi?

Laborávi in gémitu meo, lavábo per síngulas noctes lectum meum; * lácrymis meis stratum meum rigábo.

Turbátus est à furóre óculus meus; * inveterávi inter omnes inimícos meos.

Discédite à me omnes, qui operámini iniquitátem; * quóniam exaudívit Dóminus vocem fletûs mei.

Exaudívit Dóminus deprecatiónem meam; * Dóminus oratiónem meam suscépit.

Erubéscant & conturbéntur vehementer omnes inimíci mei: * convertántur & erubéscant valdè velóciter.

*Ant.* Convértere, Dómine, & éripe ánimam meam: salvum me fac propter misericórdiam tuam. *v.* 5.

*Ant.* 4. *irr.* D. Justum adjutórium.

*Psalmus* 7.

DOmine Deus meus, in te sperávi; * salvum me fac ex ómnibus persequéntibus me, & líbera me.

Nequándo rápiat ut leo ánimam meam, * dùm non est qui rédimat, neque qui salvum fáciat.

Dómine, Deus meus, si feci istud, * si est iníquitas in mánibus meis:

Si réddidi retribuéntibus mihi mala, * décidam méritò ab inimícis meis inánis.

Persequátur inimícus ánimam meam, & comprehéndat, & concúlcet in terra vitam meam, * & glóriam meam in púlverem dedúcat.

Exúrge, Dómine, in ira tua, * & exaltáre in fínibus inimicórum meórum.

Et exúrge, Dómine Deus meus, in præcépto quod mandásti, * & synagóga populórum circúndabit te.

Et propter hanc * in altum regrédere:

Dóminus júdicat pópulos.* Júdica me, Dómine, secúndùm justítiam meam, & secúndùm innocéntiam meam super me.

Consumétur nequítia peccatórum, & díriges justum, * scrutans corda & renes Deus.

Justum adjutórium meum

à Dómino, * qui salvos facit rectos corde.

Deus judex justus, fortis & pátiens, * nunquid iráscitur per síngulos dies?

Nisi convérsi fuéritis, gládium suum vibrábit: * arcum suum teténdit, & parávit illum.

Et in eo parávit vasa mortis, * sagíttas suas ardéntibus effécit.

Ecce partúriit injustítiam, concépit dolórem, * & péperit iniquitátem.

Lacum apéruit, & effódit eum; * & íncidit in fóveam quam fecit.

Convertétur dolor ejus in caput ejus; * & in vérticem ipsíus iníquitas ejus descéndet.

Confitébor Dómino secúndùm justítiam ejus; * & psallam nómini Dómini altíssimi.

*Antiphona.* Justum adjutórium meum à Dómino, qui salvos facit rectos corde. *v.* 10. 11.

℣. In memória ætérna erit justus, ℟. Ab auditióne mala non timébit. *Ps.* 111. 7.

Pater noster *totum secretò.*

*Tres Lectiones sequentes leguntur sine absolutione, benedictione & titulo.*

*Recitantur novem sequentes Lectiones quando dicuntur tria Nocturna.*

LECTIO I. *Job Cap.* 13. 23.
*Job quærit à Deo propter quæ peccata tam graviter puniatur.*

RESpónde mihi: Quantas hábeo iniquitátes, & peccáta, scélera mea & delícta osténde mihi. Cur fáciem tuam abscóndis, & arbitráris me inimícum tuum? Contra fólium, quod vento rápipitur, osténdis poténtiam tuam, & stípulam siccam perséqueris. Scribis enim contra me amaritúdines, & consúmere me vis peccátis adolescéntiæ meæ. Posuísti in nervo pedem meum, & observásti omnes sémitas meas, & vestígia pedum meórum considerásti. Qui quasi putrédo consuméndus sum, & quasi vestiméntum, quod coméditur à tinea.

℟. Scio quòd Redémptor meus vivit, & in novíssimo die de terra surrectúrus sum: * Et in carne mea vidébo Deum Salvatórem meum. *Job* 19. *v.* 25. 26.

℣. Opórtet corruptíbile hoc indúere incorruptiónem: & mortále hoc indúere immortalitátem. 1. *Cor.* 15. 53. * Et in carne.

LECTIO II. *Job.* 14. 1.
*Fragilitas humana.*

HOmo natus de muliere, brevi vivens témpore, replétur multis misériis. Qui quasi

quasi flos egréditur, & contéritur, & fugit velut umbra, & nunquam in eódem statu pérmanet. Et dignum ducis super hujuscémodi aperíre óculos tuos, & addúcere eum tecum in judícium? Quis potest fácere mundum de immúndo concéptum sémine? nonne tu qui solus es? Breves dies hóminis sunt, númerus ménsium ejus apud te est, constituísti términos ejus qui præteríri non póterunt. Recéde páululùm ab eo, ut quiéscat; donec optáta véniat, sicut mercenárii dies ejus.

℟. Dómine omnípotens, anima in angústiis, & spíritus ánxius clamat ad te: Audi, Dómine, & miserére, quia peccávimus tibi. *Baruch* 3. *v.* 1. 2. ℣. Clamántes, & dicéntes: Dómine, miserére nostri, Fili David. *Matth.* 9. 27. * Audi.

LECTIO III. *Job* 14. 13.
*Job corporum vaticinatur resurrectionem.*

QUis mihi hoc tríbuat, ut in inférno prótegas me, & abscóndas me, donec pertránseat furor tuus, & constítuas mihi tempus, in quo recordéris mei? Putásne mórtuus homo rursùm vivat? cunctis diébus, quibus nunc mílito, expécto donec véniat immutátio mea. Vocábis me, & ego respondébo tibi: óperi mánuum tuárum pórriges déxteram. Tu quidem gressus meos dinumerásti, sed parce peccátis meis.

℟. Audi nunc oratiónem mortuórum I'sraël, & filiórum ipsórum, qui peccavérunt ante te, * Meménto manûs tuæ, & nóminis tui in témpore isto: quia tu es Dóminus Deus noster. *Baruch* 3. *v.* 4. 5. 6. ℣. Occísus es, Dómine, & redemísti nos Deo in sánguine tuo. *Apoc.* 5. 9. * Meménto. ℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, & lux perpétua lúceat eis. * Meménto.

IN II. NOCTURNO.

*Ant.* 3. A. In médio.

*Psalmus* 22.

DO'minus regit me, & nihil mihi déerit; * in loco páscuæ ibi me collocávit.

Super aquam refectiónis educávit me; * ánimam meam convértit.

Dedúxit me super sémitas justítiæ, * propter nomen suum.

Nam & si ambulávero in médio umbræ mortis, non timébo mala, * quóniam tu mecum es.

Virga tua, & báculus tuus, * ipsa me consoláta sunt.

Parásti in conspéctu meo

mensam, * advérsùs eos qui tríbulant me.

Impinguásti in óleo caput meum, * & calix meus inébrians quàm præclárus est!

Et misericórdia tua subsequétur me * ómnibus diébus vitæ meæ.

Et ut inhábitem in domo Dómini, * in longitúdinem diérum.

*Ant.* In médio umbræ mortis, non timébo mala: quóniam tu mecum es. *v.* 4.

*Ant.* 8. g. Delícta.

*Psalmus* 24.

AD te, Dómine, levávi ánimam meam: * Deus meus, in te confido, non erubéscam.

Neque irrídeant me inimíci mei: * étenim univérsi qui sústinent te, non confundéntur.

Confundántur omnes iníqua agéntes, * supervácuè.

Vias tuas, Dómine, demónstra mihi; * & sémitas tuas édoce me.

Dírige me in veritáte tua, & doce me; * quia tu es Deus salvátor meus, & te sustínui totâ die.

Reminíscere miseratiónum tuárum, Dómine, * & misericordiárum tuárum, quæ à século sunt.

Delícta juventútis meæ, * & ignorántias meas ne memíneris.

Secúndùm misericórdiam tuam meménto mei tu, * propter bonitátem tuam, Dómine.

Dulcis & rectus Dóminus; * propter hoc legem dabit delinquéntibus in via.

Díriget mansuétos in judício: * docébit mites vias suas.

Univérsæ viæ Dómini, misericórdia & véritas, * requiréntibus testaméntum ejus & testimónia ejus.

Propter nomen tuum, Dómine, propitiáberis peccáto meo; * multum est enim.

Quis est homo qui timet Dóminum? * legem státuit ei in via, quam elégit.

A'nima ejus in bonis demorábitur; * & semen ejus hereditábit terram.

Firmaméntum est Dóminus timéntibus eum; * & testaméntum ipsíus, ut manifestétur illis.

O'culi mei semper ad Dóminum; * quóniam ipse evéllet de láqueo pedes meos.

Réspice in me, & miserére mei; * quia únicus & pauper sum ego.

Tribulatiónes cordis mei multiplicátæ sunt: * de necessitátibus meis érue me.

Vide humilitátem meam, & labórem meum; * & dimítte univérsa delícta mea.

Réspice inimícos meos,

›óniam multiplicáti sunt, * : ódio iníquo odérunt me.

Custódi ánimam meam, & ›ue me: * non erubéscam, ›ióniam sperávi in te.

Innocéntes & recti adhæ-runt mihi; * quia sustínui te.

Líbera, Deus, I'sraël * ex ›nnibus tribulatiónibus suis.

*Ant.* Delícta juventútis ›eæ, & ignorántias meas › memíneris, Dómine. *v.* 7.

*Ant.* 4. e. Credo.

*Psalmus* 26.

DO'minus illuminátio mea, & salus mea, * quem ›mébo?

Dóminus protéctor vitæ ›ieæ, * à quo trepidábo?

Dum appròpiant super me ›océntes, * ut edant carnes ›ieas.

Qui tríbulant me inimíci ›iei, * ipsi infirmáti sunt, › cecidérunt.

Si consístant advérsùm me ›astra, * non timébit cor ›ieum.

Si exúrgat advérsùm me ›rælium, * in hoc ego spe-›ábo.

Unam pétii à Dómino, ›ianc requíram, * ut inhábi-›em in domo Dómini ómni-›us diébus vitæ meæ:

Ut vídeam voluptátem ›Dómini, * & vísitem tem-›plum ejus.

Quóniam abscóndit me in ›tabernáculo suo: * in die malórum protéxit me in ab-scóndito tabernáculi sui.

In petra exaltávit me, * & nunc exaltávit caput meum super inimícos meos.

Circuívi, & immolávi in tabernáculo ejus hóstiam vo-ciferatiónis: * cantábo, & psalmum dicam Dómino.

Exáudi, Dómine, vocem meam, quâ clamávi ad te: * miserére mei, & exáudi me.

Tibi dixit cor meum, ex-quisívit te fácies mea: * fá-ciem tuam, Dómine, requí-ram.

Ne avértas fáciem tuam à me; * ne declínes in ira à servo tuo.

Adjútor meus esto, ne de-relínquas me, * neque despí-cias me, Deus salutáris meus.

Quóniam pater meus & mater mea dereliquérunt me; * Dóminus autem as-súmpsit me.

Legem pone mihi, Dómi-ne, in via tua, * & dírige me in sémitam rectam propter inimícos meos.

Ne tradíderis me in ánimas tribulántium me; * quóniam insurrexérunt in me testes iníqui, & mentíta est iníqui-tas sibi.

Credo vidére bona Dómi-ni, * in terra vivéntium.

Expécta Dóminum, virí-liter age, & confortétur cor tuum, * & sústine Dóminum.

*Ant.* Credo vidére bona Dómini in terra vivéntium. *v.* 13.

℣. Cólloces eos Dóminus cum princípibus, ℟. Cum princípibus pópuli sui. *Psal.* 112. 8.

*Secretò*, Pater noster.

Ex Epístola sancti Cypriáni Epíscopi ad Antoniánum.

*Epist.* 55. *edit. nova.*

LECTIO IV.

ALiud est ad véniam stare, áliud ad glóriam pervenísse. Aliud missum in cárcerem non exíre inde, donec solvat novíssimum quadrántem, áliud statim virtútis, & fidei ardóre mercédem accípere. Aliud pro peccátis longo dolóre cruciátuum emundári, purgári diu igne; áliud peccáta ómnia passióne purgásse. Aliud dénique pendére in diem judícii ad senténtiam Dómini, áliud statim à Dómino coronári.

℟. Ego ad Dóminum aspíciam, expectábo Deum Salvatórem meum: consúrgam, cùm sédero in ténebris. Iram Dómini portábo, quóniam peccávi ei: * Edúcet me in lucem, vidébo justítiam ejus. *Mich.* 7. *v.* 7. 8. 9. ℣. Qui constitútus est à Deo judex vivórum & mortuórum. *Act.* 10. 42. * Edúcet me.

Ex Oratióne sancti Ambrósii Epíscopi, de óbitu Theodósii Imperatóris.

LECTIO V.

TU solus, Dómine, invocándus es, tu rogándus. Da réquiem perféctam servo tuo, réquiem illam, quam præparásti servis tuis. Illò convertátur ánima ejus, unde descéndit, ubi mortis acúleum sentíre non possit, ubi cognóscat mortem hanc non natúræ finem, sed culpæ. Diléxi, & ideò prósequor eum usque ad regiónem vivórum, nec déseram, donec fletu & précibus indúcam virum, quò sua mérita vocant, in montem Dómini sanctum, ubi perénnis vita.

℟. Miseréris ómnium, Dómine, quia ómnia potes, & dissímulas peccáta hóminum propter poeniténtiam. Nihil odísti eórum, quæ fecísti; * Parcis ómnibus: quóniam tua sunt, Dómine, qui amas ánimas. *Sap.* 11. *v.* 24. 25. 27. ℣. Quia tu es Christus Fílius Dei vivi, qui in hunc mundum venísti. * Parcis ómnibus. *Joan.* 11. 27.

De Sermóne sancti Augustíni Epíscopi, de Verbis Apóstoli.

*Serm.* 32.

LECTIO VI.

ORatiónibus sanctæ Ecclésiæ, & sacrifício sa-

lutári, & eleemósynis, quæ pro eórum spirítibus erogántur, non est dubitándum mórtuos adjuvári: ut cùm eis misericórdiùs agátur à Dómino, quàm eórum peccáta meruérunt. Hoc enim à pátribus tráditum univérsa obsérvat Ecclésia, ut pro eis qui in córporis & sánguinis Christi communióne defúncti sunt, cùm ad ipsum sacrifícium loco suo commemorántur, orétur; ac pro illis quoque id offérri commemorétur. Cùm eórum commendandórum causâ, ópera misericórdiæ celebrántur; quis eis dúbitet suffragári, pro quibus oratiónes Deo non inániter allegántur. Non omníno ambigéndum est ista prodésse defúnctis; sed tálibus, qui ita víxerint ante mortem, ut possint hæc utília eis esse post mortem.

℞. Clamávi ad te, Dómine, dixi: Tu es spes mea, pórtio mea in terra vivéntium. * Educ de custódia ánimam meam ad confiténdum nómini tuo. *Psal.* 141. *v.* 6. 8. ℣. Deus propítius esto mihi peccatóri. *Luc.* 18. 13. * Educ de custódia. ℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine; & lux perpétua lúceat eis. * Educ de custódia ánimam meam ad confiténdum nómini tuo.

## IN III. NOCTURNO.

*Ant.* 2. d. Compláceat.

*Psalmus* 39.

EXpéctans expectávi Dóminum, * & inténdit mihi.

Et exaudívit preces meas, * & edúxit me de lacu misériæ, & de luto fæcis.

Et státuit super petram pedes meos, * & diréxit gressus meos.

Et immísit in os meum cánticum novum, * carmen Deo nostro.

Vidébunt multi, & timébunt, * & sperábunt in Dómino.

Beátus vir cujus est nomen Dómini spes ejus; * & non respéxit in vanitátes & insánias falsas.

Multa fecísti tu, Dómine Deus meus, mirabília tua; * & cogitatiónibus tuis non est qui símilis sit tibi.

Annuntiávi, & locútus sum; * multiplicáti sunt super númerum.

Sacrifícium & oblatiónem noluísti, * aures autem perfecísti mihi.

Holocáustum & pro peccáto non postulásti: * tunc dixi: Ecce vénio.

In cápite libri scriptum est de me, ut fácerem voluntátem tuam: * Deus meus, vólui, & legem tuam in médio cordis mei.

Annuntiávi justítiam tuam in ecclésia magna, * ecce lábia mea non prohibébo: Dómine, tu scisti.

Justítiam tuam non abscóndi in corde meo, * veritátem tuam & salutáre tuum dixi.

Non abscóndi misericórdiam tuam, & veritátem tuam * à concílio multo.

Tu autem, Dómine, ne longè fácias miseratiónes tuas à me: * misericórdia tua & véritas tua semper suscepérunt me.

Quóniam circumdedérunt me mala, quorum non est númerus: * comprehendérunt me iniquitátes meæ, & non pótui ut vidérem.

Multiplicátæ sunt super capíllos cápitis mei, * & cor meum derelíquit me.

Compláceat tibi, Dómine, ut éruas me: * Dómine, ad adjuvándum me réspice.

Confundántur & revereántur simul, qui quærunt ánimam meam, * ut áuferant eam.

Convertántur retrórsùm, & revereántur, * qui volunt mihi mala.

Ferant conféstim confusiónem suam, * qui dicunt mihi: Euge, euge.

Exúltent & læténtur super te omnes quæréntes te; * & dicant semper: Magnificétur Dóminus, qui díligunt salutáre tuum.

Ego autem mendícus sum, & pauper; * Dóminus sollícitus est mei.

Adjútor meus, & protéctor meus tu es, * Deus meus, ne tardáveris.

*Ant.* Compláceat tibi, Dómine, ut éruas me: Dómine, ad adjuvándum me réspice.

*v.* 14.

*Ant.* 4. a. Sana, Dómine.

*Psalmus* 40.

BEátus qui intélligit super egénum & páuperem; * in die mala liberábit eum Dóminus.

Dóminus consérvet eum, & vivíficet eum, & beátum fáciat eum in terra, * & non tradat eum in ánimam inimicórum ejus.

Dóminus opem ferat illi super lectum dolóris ejus: * univérsum stratum ejus versásti in infirmitáte ejus.

Ego dixi: Dómine, miserére mei: * sana ánimam meam, quia peccávi tibi.

Inimíci mei dixérunt mala mihi: * Quando moriétur, & períbit nomen ejus?

Et si ingrediebátur ut vidéret, vana loquebátur, * cor ejus congregávit iniquitátem sibi.

Egrediebátur foras, * & loquebátur in idípsum.

Advérsùm me susurrábant

omnes inimíci mei, * advérsùm me cogitábant mala mihi.

Verbum iníquum constituérunt advérsùm me: * Nunquid qui dormit, non adjíciet ut resúrgat?

E'tenim homo pacis meæ, in quo sperávi, * qui edébat panes meos, magnificávit super me supplantatiónem.

Tu autem, Dómine, miserére mei, & resúscita me; * & retríbuam eis.

In hoc cognóvi, quóniam voluísti me: * quóniam non gaudébit inimícus meus super me.

Me autem propter innocéntiam suscepísti, * & confirmásti me in conspéctu tuo in ætérnum.

Benedíctus Dóminus Deus I'sraël à sǽculo, & usque in sǽculum: * Fiat, fiat.

*Ant.* Sana, Dómine, ánimam meam, quia peccávi tibi. *v.* 5.

*Ant.* 8. g. Sitívit.

*Psalmus* 41.

QUemádmodùm desíderat cervus ad fontes aquárum, * ita desíderat ánima mea ad te, Deus.

Sitívit ánima mea ad Deum fortem vivum: * quando véniam & apparébo ante fáciem Dei?

Fuérunt mihi lácrymæ meæ panes die ac nocte, * dum dícitur mihi quotídiè: Ubi est Deus tuus?

Hæc recordátus sum, & effúdi in me ánimam meam, * quóniam transíbo in locum tabernáculi admirábilis, usque ad domum Dei,

In voce exultatiónis, & confessiónis, * sonus epulántis.

Quare tristis es, ánima mea, * & quare contúrbas me?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi; * salutáre vultûs mei, & Deus meus.

Ad meípsum ánima mea conturbáta est: * proptéreà memor ero tui de terra Jordánis, & Hermóniim à monte módico.

Abýssus abýssum ínvocat, * in voce cataractárum tuárum.

O'mnia excélsa tua, & fluctus tui, * super me transiérunt.

In die mandávit Dóminus misericórdiam suam, * & nocte cánticum ejus.

Apud me orátio Deo vitæ meæ, * dicam Deo: Suscéptor meus es.

Quare oblítus es mei? * & quare contristátus incédo, dum affligit me inimícus?

Dum confringúntur ossa mea, * exprobravérunt mihi qui tríbulant me inimíci mei.

Dum dicunt mihi per síngulos dies: Ubi est Deus tuus? * quare tristis es, ánima mea, & quare contúrbas me?

Spera in Deo, quóniam adhuc confitébor illi; * salutáre vultûs mei, & Deus meus.

*Ant.* Sitívit ánima mea ad Deum fortem vivum: quando véniam, & apparébo ante fáciem Dei? *v.* 3.

℣. Ne avértas fáciem tuam à me, ℟. Ne declínes in ira à servo tuo. *Ps.* 26. 9.

*Secretò*, Pater noster.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO VII. *Cap.* 15. 1.

*Christus resurrexit à mortuis.*

NOtum vobis fácio, fratres, Evangélium, quod prædicávi vobis, quod & accepístis, in quo & statis, per quod & salvámini: quâ ratióne prædicáverim vobis, si tenétis, nisi frustra credidístis. Trádidi enim vobis inprímis, quod & accépi: quóniam Christus mórtuus est pro peccátis nostris secúndùm Scriptúras: & quia sepúltus est, & quia resurréxit tértiâ die secúndùm Scriptúras, & quia visus est Cephæ, & post hoc U'ndecim. Deínde visus est plus quàm quingéntis frátribus simul: ex quibus multi manent usque adhuc, quidam autem dormiérunt.

℟. Tu, Dómine, in sánguine testaménti tui * Emítte vinctos tuos de lacu, in quo non est aqua. *Zach.* 9. 11. ℣. Quóniam miséricors Dóminus es, & miserátor. *Jac.* 5. 11. * Emítte.

LECTIO VIII. *v.* 20.

*Futura corporum resurrectio, & ordo.*

NUnc autem Christus resurréxit à mórtuis primítiæ dormiéntium: quóniam quidem per hóminem mors, & per hóminem resurréctio mortuórum: & sicut in Adam omnes moriúntur, ita & in Christo omnes vivificabúntur. Unusquísque autem in suo órdine; primítiæ Christus: deínde ii, qui sunt Christi, qui in advéntu ejus credidérunt. Deínde finis; cùm tradíderit regnum Deo & Patri, cùm evacuáverit omnem principátum, & potestátem, & virtútem. Opórtet autem illum regnáre, donec ponat omnes inimícos sub pédibus ejus. Novíssima autem inimíca destruétur mors: O'mnia enim subjécit sub pédibus ejus. Cùm autem dicat: O'mnia subjécta sunt ei; sine dúbio præter eum, qui subjécit ei ómnia.

℟. Dómine, ne in furóre tuo árguas me, neque in ira tua corrípias me: * E'ripe ánimam meam: salvum me fac propter misericórdiam tuam. *Ps.* 6. *v.* 1. 5. ℣. Dómine Deus Rex seculórum, solus pius es. *Apoc.* 15. *v.* 3. 4. * E'ripe.

LECTIO IX. *v.* 28.

*Resurrectio corporum fidei fundamentum.*

CUm autem subjécta fúerint illi ómnia: tunc & ipse Fílius subjéctus erit ei, qui subjécit sibi ómnia, ut sit Deus ómnia in ómnibus. Alióquin quid fácient qui baptizántur pro mórtuis, si omninò mórtui non resúrgunt? ut quid & baptizántur pro illis? ut quid & nos periclitámur omni horâ? Quotídiè mórior per vestram glóriam, fratres, quam hábeo in Christo Jesu Dómino nostro. Si (secúndùm hóminem) ad béstias pugnávi E'phesi, quid mihi prodest, si mórtui non resúrgunt? manducémus, & bibámus, cras enim moriémur. Nolíte sedúci: Corrúmpunt mores bonos collóquia mala. Evigiláte justi, & nolíte peccáre: ignorántiam enim Dei quidam habent, ad reveréntiam vobis loquor.

*Dicitur Responsorium ut sequitur quoties fit Officium novem Lectionum.*

℟. Líbera me, Dómine, ab iis, qui odérunt me; neque absórbeat me profúndum: * Exáudi me, & réspice in me. † Inténde ánimæ meæ, & líbera eam. *Ps.* 68. *v.* 15. 16. 17. 19.

℣. Miserére mei, Dómine Fili David, Dómine ádjuva me. *Matth.* 15. *v.* 22. 25. * Exáudi me.

℣. Adversárius tanquàm leo rúgiens círcuit, quærens quem dévoret. 1. *Petr.* 5. 8. † Inténde.

℣. Justus vix salvábitur, ímpius & peccátor ubi parébunt? 1. *Pet.* 4. 18. * Exáudi me.

℣. Salvátor ómnium hóminum, máximè fidélium. 1. *Timot.* 4. 10. † Inténde.

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine, & lux perpétua lúceat eis.

*Repet.* Líbera me, *usque ad primum Versum.*

AD LAUDES MATUTINAS.

*Ant.* 3. A. Secúndùm.

*Psalmus* 50.

MIserére mei, Deus, * secúndùm magnam misericórdiam tuam;

Et secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum * dele iniquitátem meam.

A'mpliùs lava me ab iniquitáte mea, * & à peccáto meo munda me:

Quóniam iniquitátem meam

ego cognósco, * & peccátum meum contra me est semper.

Tibi soli peccávi, & malum coram te feci, * ut justificéris in sermónibus tuis, & vincas cùm judicáris.

Ecce enim in iniquitátibus concéptus sum, * & in peccátis concépit me mater mea.

Ecce enim veritátem dilexísti: * incérta & occúlta sapiéntiæ tuæ manifestásti mihi.

Aspérges me hyssópo, & mundábor: * lavábis me, & super nivem dealbábor.

Audítui meo dabis gáudium & lætítiam; * & exultábunt ossa humiliáta.

Avérte fáciem tuam à peccátis meis, * & omnes iniquitátes meas dele.

Cor mundum crea in me, Deus, * & spíritum rectum ínnova in viscéribus meis.

Ne projícias me à fácie tua; * & spíritum sanctum tuum ne áuferas à me.

Redde mihi lætítiam salutáris tui; * & spíritu principáli confírma me.

Docébo iníquos vias tuas; * & ímpii ad te converténtur.

Líbera me de sanguínibus, Deus, Deus salútis meæ; * & exultábit lingua mea justítiam tuam.

Dómine, lábia mea apéries; * & os meum annuntiábit laudem tuam.

Quóniam si voluísses sacrifícium, dedíssem útique; * holocáustis non delectáberis.

Sacrifícium Deo spíritus contribulátus; * cor contrítum & humiliátum, Deus, non despícies.

Benígnè fac, Dómine, in bona voluntáte tua Sion, * ut ædificéntur muri Jerúsalem.

Tunc acceptábis sacrifícium justítiæ, oblatiónes & holocáusta: * tunc impónent super altáre tuum vítulos.

*Ant*. Secúndùm multitúdinem miseratiónum tuárum, dele iniquitátem meam. *v.* 3.

*Ant*. 8. g. Exáudi.

*Psalmus* 64.

TE decet hymnus, Deus, in Sion; * & tibi reddétur votum in Jerúsalem.

Exáudi oratiónem meam; * ad te omnis caro véniet.

Verba iniquórum prævaluérunt super nos; * & impietátibus nostris tu propitiáberis.

Beátus quem elegísti, & assumpsísti, * inhabitábit in átriis tuis.

Replébimur in bonis domûs tuæ: * sanctum est templum tuum, mirábile in æquitáte.

Exáudi nos, Deus salutáris noster, * spes ómnium fínium terræ, & in mari longè.

Præparans montes in virtúte tua, accínctus poténtiâ: * qui contúrbas profúndum

maris, sonum flúctuum ejus.

Turbabúntur Gentes, & timébunt qui hábitant términos à signis tuis : * éxitus matutíni & véspere delectábis.

Visitásti terram, & inebriásti eam ; * multiplicásti locupletáre eam.

Flumen Dei replétum est aquis, parásti cibum illórum,* quóniam ita est præparátio ejus.

Rivos ejus inébria, multíplica genímina ejus ; * in stillicídiis ejus lætábitur gérminans.

Benedíces corónæ anni benignitátis tuæ ; * & campi tui replebúntur ubertáte.

Pinguéscent speciósa desérti, * & exultatióne colles accingéntur.

Indúti sunt aríetes óvium, & valles abundábunt fruménto : * clamábunt, étenim hymnum dicent.

*Ant.* Exáudi, Deus, oratiónem meam : ad te omnis caro véniet. *v.* 3.

*Ant.* 2. d. Propter nomen tuum.

*Psalmus* 142.

DO'mine, exáudi oratiónem meam, áuribus pércipe obsecratiónem meam in veritáte tua, * exáudi me in tua justítia.

Et non intres in judícium cum servo tuo, * quia non justificábitur in conspéctu tuo omnis vivens.

Quia persecútus est inimícus ánimam meam, * humiliávit in terra vitam meam.

Collocávit me in obscúris sicut mórtuos séculi ; * & anxiátus est super me spíritus meus, in me turbátum est cor meum.

Memor fui diérum antiquórum, meditátus sum in ómnibus opéribus tuis ; * in factis mánuum tuárum meditábar.

Expándi manus meas ad te, * ánima mea sicut terra sine aqua tibi.

Velóciter exáudi me, Dómine, * defécit spíritus meus.

Non avértas fáciem tuam à me, * & símilis ero descendéntibus in lacum.

Audítam fac mihi manè misericórdiam tuam, * quia in te sperávi.

Notam fac mihi viam, in qua ámbulem ; * quia ad te levávi ánimam meam.

E'ripe me de inimícis meis, Dómine, ad te confúgi : * doce me fácere voluntátem tuam, quia Deus meus es tu.

Spíritus tuus bonus dedúcet me in terram rectam ; * propter nomen tuum, Dómine, vivificábis me in æquitáte tua.

Edúces de tribulatióne ánimam meam, * & in mise-

ricórdia tua dispérdes inimícos meos;

Et perdes omnes, qui tríbulant ánimam meam, * quóniam ego servus tuus sum.

*Ant.* Propter nomen tuum, Dómine; vivificábis me; edúces de tribulatióne ánimam meam. *v.* 11.

*Ant.* 7. C. Miserére nostri.

*Canticum. Baruch* 3. 1.

DOmine omnípotens, Deus Isráël, * ánima in angústiis, & spíritus ánxius clamat ad te:

Audi, Dómine, & miserére, quia Deus es miséricors, & miserére nostri: * quia peccávimus ante te.

Quia tu sedes in sempitérnum, * & nos períbimus in ævum?

Dómine omnípotens, Deus Isráël, * audi nunc oratiónem mortuórum Isráël,

Et filiórum ipsórum qui peccavérunt ante te, & non audiérunt vocem Dómini Dei sui, * & agglutináta sunt nobis mala:

Noli meminísse iniquitátum patrum nostrórum, * sed meménto manûs tuæ, & nóminis tui in témpore isto:

Quia tu es Dóminus Deus noster, * & laudábimus te, Dómine.

*Ant.* Miserére nostri, Dómine, quia peccávimus ante te. *v.* 2.

*Ant.* 7. a. Omnis spíritus.

*Psalmus* 150.

LAudáte Dóminum in sanctis ejus; * laudáte eum in firmaménto virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus: * laudáte eum secúndùm multitúdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ: * laudáte eum in psaltério, & cíthara.

Laudáte eum in týmpano, & choro: * laudáte eum in chordis, & órgano.

Laudáte eum in cýmbalis benesonántibus; laudáte eum in cýmbalis jubilatiónis: * omnis spíritus laudet Dóminum.

*Ant.* Omnis spíritus laudet Dóminum. *v.* 6.

*Ad* Benedíctus, *Ant.* 2. d. Ego sum resurréctio, & vita: qui credit in me, etiámsi mórtuus fúerit, vivet: & omnis, qui vivit, & credit in me, non moriétur in ætérnum. *Joan.* 11. *v.* 25. 26.

*Deinde mediocri voce*, Pater noster, *secretò*, *usque ad Versum*, Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

*Psalmus* 129.

DE profúndis clamávi ad te, Dómine: * Dómine, exáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendéntes * in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine: * Dómine, quis sustinébit?

Quia apud te propitiátio est; * & propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus, * sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem * speret Israël in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia, * & copiósa apud eum redémptio.

Et ipse rédimet Israël * ex ómnibus iniquitátibus ejus.

Réquiem ætérnam dona eis, Dómine; & lux perpétua lúceat eis.

℣. Clamávi ad te, Dómine; dixi: Tu es spes mea, ℟. Pórtio mea in terra vivéntium. *Ps.* 141. 6.

℣. Educ de custódia ánimam meam, ad confiténdum nómini tuo, ℟. Me expéctant justi, donec retríbuas mihi. *Ps.* 141. 8.

℣. Custódi ánimam meam, & érue me: ℟. Non erubéscam quóniam sperávi in te. *Ps.* 24. 20.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

℣. Dóminus vobíscum; ℟. Et cum spíritu tuo.

*In depositione Pontificis.*

Orémus. *Oratio.*

DEus, qui inter Apostólicos Sacerdótes fámulum tuum N. Pontificáli fecísti dignitáte vigére; præsta, quæsumus, ut eórum perpétuo aggregétur consórtio; Per Dóminum nostrum Jesum Christum.

*In depositione Sacerdotis,*

*Oratio.*

PRæsta, quæsumus, Dómine, ut ánima fámuli tui N. Sacerdótis quem in hoc século commorántem sacris munéribus decorásti, in cœlésti sede gloriósa semper exúltet; Per Dóminum.

*In depositione Defuncti non Sacerdotis.*

*Oratio.*

INclína, Dómine, aurem tuam ad preces nostras, quibus misericórdiam tuam súpplices deprecámur; ut ánimam fámuli tui N. quam de hoc século migráre jussísti, in pacis ac lucis regióne constítuas, & Sanctórum tuórum júbeas esse consórtem; Per Dóminum.

*In depositione Defunctæ.*

*Oratio.*

QUæsumus, Dómine, pro tua pietáte miserére ánimæ fámulæ tuæ N. & à contágiis mortalitátis exútam,

in ætérnæ salvatiónis partem restítue; Per Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum, qui tecum vivit & regnat.

*In Anniversariis,*
*Oratio.*

DEus indulgentiárum Dómine, da ánimæ fámuli tui (*vel* fámulæ tuæ) N. cujus anniversárium depositiónis diem commemorámus, refrigérii sedem, quiétis beatitúdinem, & lúminis claritátem; [Per Dóminum.]

*In primo Anniversario dicitur tantùm prædicta Oratio; in aliis adduntur duæ sequentes sub eadem conclusione.*

*Pro Benefactoribus.*

DEus véniæ largítor, & humánæ salútis amátor; quæsumus cleméntiam tuam, ut nostræ congregatiónis fratres, propínquos, & benefactóres, qui ex hoc século transiérunt, beátâ Maríâ semper vírgine intercedénte cum ómnibus Sanctis tuis, ad perpétuæ beatitúdinis consórtium pervenire concédas.

*Pro omnibus Defunctis.*

FIdélium Deus ómnium cónditor & redémptor, animábus ómnium fidélium defunctórum remissiónem cunctórum tríbue peccatórum; ut indulgéntiam quam semper optavérunt, piis supplicatiónibus consequántur; Qui vivis & regnas cum Deo Patre in unitáte Spíritûs sancti Deus, per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

℣. Requiéscant in pace.
℟. Amen.

*Pro pluribus Defunctis,*
*Oratio.*

DEus, cui próprium est miseréri semper & párcere; propitiáre animábus famulórum famularúmque tuárum, & ómnia eórum peccáta dimítte; ut mortalitátis vínculis absolútæ, transíre mereántur ad vitam; Per Dóminum.

*Privatim pro defunctis Patre & Matre.*
*Oratio.*

DEus, qui nos patrem & matrem honoráre præcepísti; miserére cleménter animábus patris mei ac matris meæ, eorúmque peccáta dimítte; meque eos in ætérnæ claritátis gáudio fac vidére; Per Dóminum.

---

*A Vesperis Sabbati ante Dominicam primam Quadragesimæ, usque ad Vesperas Sabbati ante Festum sanctissimæ Trinitatis, dicuntur sequentes Lectiones in tria Nocturna distributæ juxta Feriam occurrentem, quoties dicitur tantùm unum Nocturnum.*

## FERIA II. ET V.

*Dicitur primum Nocturnum, ut suprà, pag. cx. cum sequentibus Lectionibus & Responsoriis.*

De libro Job.

LECTIO I. *Cap. 19. 20.*

*Job super futura resurrectione seipsum consolatur.*

PElli meæ, consúmptis cárnibus, adhǽsit os meum, & derelícta sunt tantúmmodò lábia circa dentes meos. Miserémini mei, miserémini mei, saltem vos amíci mei, quia manus Dómini tétigit me: Quare persequímini me, sicut Deus, & cárnibus meis saturámini? Quis mihi tríbuat ut scribántur sermónes mei? Quis mihi det ut exaréntur in libro stylo férreo, & plumbi láminâ, vel celte sculpántur in sílice? Scio enim quòd Redémptor meus vivit, & in novíssimo die de terra surrectúrus sum: & rursum circúndabor pelle meâ, & in carne mea vidébo Deum meum. Quem visúrus sum ego ipse, & óculi mei conspectúri sunt, & non álius: repósita est hæc spes mea in sinu meo.

℞. Scio quòd Redémptor meus vivit, & in novíssimo die de terra surrectúrus sum: * Et in carne mea vidébo Deum Salvatórem meum. *Job 19. v. 25. 26.* ℣. Opórtet corruptíbile hoc indúere incorruptiónem: & mortále hoc indúere immortalitátem. *1. Corinth. 15. 53.* * Et in carne.

Ex Homilía sancti Joánnis Chrysóstomi in Epístolam primam ad Corínthios.

*Homil. 41.*

LECTIO II.

NOn absque re qui adstat altári dum veneránda peragúntur mystéria clamat pro ómnibus qui in Christo dormiérunt. Non sunt enim res nostræ ludi scénici, absit: hæc enim fiunt ordinatióne Spíritûs. Iis ergo opem ferámus, & commemoratiónem eórum peragámus. Si enim Jobi fílios expiábat patris sacrifícium; quid dúbitas, an nobis pro eis qui excessérunt offeréntibus, eis exístat áliqua consolátio. Solet enim Deus étiam pro áliis gratificári. Et hoc ostendébat Paulus dicens, ut multis persónis, ejus quæ in nobis est donatiónis per multos grátiæ agántur pro nobis.

℞. Dómine omnípotens, ánima in angústiis, & spíritus ánxius clamat ad te: * Audi, Dómine, & miserére, quia peccávimus tibi. *Baruch 3. v. 1. 2.* ℣. Clamántes, & dicéntes: Dómine, miserére

nostri, Fili David. *Matth.* 9. 27. * Audi.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Thessalonicénses.

Lectio III. *Cap.* 4. 12.

*Resurrectionis futuræ modus.*

NOlumus vos ignoráre, fratres, de dormiéntibus, ut non contristémini, sicut & céteri, qui spem non habent. Si enim crédimus quòd Jesus mórtuus est, & resurréxit; ita & Deus eos, qui dormiérunt per Jesum, addúcet cum eo. Hoc enim vobis dícimus in verbo Dómini, quia nos qui vívimus, qui resídui sumus in advéntum Dómini, non præveniémus eos, qui dormiérunt. Quóniam ipse Dóminus in jussu, & in voce Archángeli, & in tuba Dei descéndet de cœlo: & mórtui, qui in Christo sunt, resúrgent primi. Deínde nos, qui vívimus, qui relínquimur, simul rapiémur cum illis in núbibus óbviàm Christo in áëra, & sic semper cum Dómino érimus. Itaque consolámini ínvicem in verbis istis.

℞. Líbera me, Dómine, ab iis qui odérunt me, neque absórbeat me profúndum: * Exáudi me, & réspice in me; † Inténde ánimæ meæ & líbera eam. *Ps.* 68. *v.* 15. 17.

℣. Miserére mei, Dómine Fili David; Dómine, ádjuva me. *Matth.* 15. *v.* 22. 25. * Exáudi me.

℣. Adversárius tanquam leo rúgiens circuit quærens quem dévoret. 1. *Petr.* 5. 8. † Inténde.

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine; & lux perpétua lúceat eis.

*Repetitur*, Líbera me, *usque ad Versum.*

FERIA III. ET VI.

*Dicitur II. Nocturnus, ut suprà pag.* cxviiij. *cum seqq. Lectionibus & Responsoriis.*

De Ezechiéle Prophéta.

Lectio I. *Cap.* 37. 1.

*Aridorum ossium reviviscentia.*

FActa est super me manus Dómini, & edúxit me in spíritu Dómini: & dimísit me in médio campi, qui erat plenus óssibus: & circumdúxit me per ea in Gyro: erant autem multa valde super fáciem campi, siccáque vehe-ménter. Et dixit ad me: Fili hóminis, putásne vivent ossa ista? Et dixi: Dómine Deus, tu nosti. Et dixit ad me: Vaticináre de óssibus istis: & dices eis: Ossa árida, audíte verbum Dómini. Hæc dicit Dóminus Deus óssibus his: Ecce ego intromíttam in vos spíritum, & vivétis: Et dabo super vos nervos, & succréscere

ceré fáciam super vos carnes, & superexténdam in vobis cutem: & dabo vobis spíritum, & vivétis, & sciétis quia ego Dóminus.

℟. Ego ad Dóminum aspiciam, expectábo Deum Salvatórem meum: consúrgam, cùm sédero in ténebris. Iram Dómini portábo, quóniam peccávi ei: * Edúcet me in lucem, vidébo justítiam ejus. *Mich.* 7. *v.* 7. 8. 9. ℣. Qui constitútus est à Deo judex vivórum & mortuórum. *Act.* 10. 42. * Edúcet.

Ex Epístola prima beáti Cleméntis Papæ & Mártyris, ad Corínthios.

*Cap.* 24. *Secul.* 1.

LECTIO II.

CONsiderémus, diléċti, quemádmodùm Dóminus contínuè nobis osténdat resurrectiónem quæ futúra est, cujus primítias fecit Dóminum Jesum Christum, súscitans eum à mórtuis. Intueámur, diléċti, quæ omni témpore fit, resurrectiónem. Dies & nox resurrectiónem nobis declárant; labat nox, exúrgit dies. Dies abit, nox ádvenit. Respiciámus fruges seméntis: quómodò fiat, ómnibus óbvium est. Egréssus est seminátor, & semen in terram jecit, atque jactis semínibus quæ árida & nuda cecidérunt in terram, témpore dissolvúntur, & post dissolutiónem magna providéntiæ Dómini virtus resúscitat ea; ac ex uno multum fructum próferr. An magnum ígitur & admirábile esse arbitrámur, si ómnium rerum ópifex resúrgere fáciat eos qui sanctè & in bonæ fídei confidéntia serviérunt illi.

℟. Miseréris ómnium, Dómine, quia ómnia potes, & dissímulas peccáta hóminum propter pœniténtiam. Nihil odísti eórum, quæ fecísti; * Parcis ómnibus: quóniam tua sunt, Dómine, qui amas ánimas. *Sap.* 11. *v.* 24. 25. 27. ℣. Quia tu es Christus Fílius Dei vivi, qui in hunc mundum venísti. *Joan.* 11. 27. * Parcis ómnibus.

De Epístola beáti Pauli Apóstoli ad Romános.

LECTIO III. *Cap.* 6. 3.

*Christi resurrectio, resurrectionis nostræ typus.*

QUicúnque baptizáti sumus in Christo Jesu, in morte ipsíus baptizáti sumus. Consepúlti enim sumus cum illo per baptísmum in mortem: ut quómodò Christus surréxit à mórtuis per glóriam Patris, ita & nos in novitáte vitæ ambulémus. Si enim complantáti facti sumus similitúdini mortis ejus: simul & resurrectiónis érimus. Hoc sciéntes, quia vetus ho-

mo noster simul crucifíxus est, ut destruátur corpus peccáti, & ultrà non serviámus peccáto. Qui enim mórtuus est, justificátus est à peccáto. Si autem mórtui sumus cum Christo: crédimus quia simul étiam vivémus cum Christo.

℟. Líbera me, Dómine, ab iis qui odérunt me, neque absórbeat me profúndum: * Exáudi me, & réspice in me; † Inténde ánimæ meæ, & líbera eam. *Ps.* 68. *v.* 15. 17.

℣. Miserére mei, Dómine Fili David; Dómine, ádjuva me. *Matth.* 15. *v.* 22. 25. * Exáudi me.

℣. Justus vix salvábitur, ímpius & peccátor ubi parébunt? 1. *Pet.* 4. 18. † Inténde.

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine; & lux perpétua lúceat eis.

*Repetitur*, Líbera me, *usque ad primum Versum.*

## FERIA IV. ET SABBATO.

*Dicitur tertium Nocturnum ut suprà, pag.* cxvij. *cum sequentibus Lectionibus & Responsoriis.*

De Isaía Prophéta.

Lectio I. *Cap.* 4. 3.

*Anima ablutis sordibus salva erunt.*

Omnis qui relíctus fúerit in Sion, & resíduus in Jerúsalem, sanctus vocábitur, omnis qui scriptus est in vita in Jerúsalem. Si ablúerit Dóminus sordes filiórum & filiárum Sion, & sánguinem Jerúsalem láverit de médio ejus, in spíritu judícii, & spíritu ardóris. Et creábit Dóminus super omnem locum montis Sion, & ubi invocátus est, nubem per diem, & fumum, & splendórem ignis flammántis in nocte; super omnem enim glóriam protéctio. Et tabernáculum erit in umbráculum diéi ab æstu, & in securitátem, & absconsiónem à túrbine, & à plúvia.

℟. Tu, Dómine, in sánguine testaménti tui * Emítte vinctos tuos de lacu, in quo non est aqua. *Zach.* 9. 11. ℣. Quóniam misericors Dóminus es, & miserátor. *Jac.* 5. 11. * Emítte.

Ex libro Enchirídii sancti Augustíni Epíscopi.

*Cap.* 68.

Lectio II.

Ligna, & fœnum, & stipula non absúrdè áccipi possunt rerum secularium quamvis lícitè concessárum tales cupiditátes, ut amitti sine ánimi dolóre non possint. Si Christus in corde fundaménti locum habet, id est, ut ei nihil anteponátur, & malit homo, qui tali dolóre úritur, rebus quas ita díligit,

magis carére quàm Christo: per ignem fit salvus. Post hanc vitam incredíbile non est nonnúllos fidéles per ignem quemdam purgatórium quantò magis minúsve bona pereúntia dilexérunt, tantò tàrdiùs citiúsve salvári; non tamen tales, de quibus dictum est, Regnum Dei non possidébunt; nisi conveniénter pœniténtibus éadem crímina remittántur.

℟. Dómine, ne in furóre tuo árguas me, neque in ira tua corrípias me: * E'ripe ánimam meam: salvum me fac propter misericórdiam tuam. *Ps.* 6. *v.* 1. 5. ℣. Dómine Deus Rex seculórum, solus pius es. *Apoc.* 15. *v.* 3. 4. * E'ripe.

De Epístola prima beáti Pauli Apóstoli ad Corínthios.

LECTIO III. *Cap.* 3. 11.

*Uniuscujusque opus quale sit ignis probabit.*

FUndaméntum áliud nemo potest pónere, præter id quod pósitum est, quod est Christus Jesus. Si quis autem superædíficat super fundaméntum hoc, aurum, argéntum, lápides pretiósos, ligna, fœnum, stípulam; uniuscujúsque opus maniféstum erit: Dies enim Dómini declarábit, quia in igne revelábitur: & uniuscujúsque opus quale sit, ignis probábit. Si cujus opus mánserit quod superædificávit, mercédem accípiet. Si cujus opus árserit, detriméntum patiétur: ipse autem salvus erit; sic tamen quasi per ignem.

℟. Líbera me, Dómine, ab iis qui odérunt me, neque absórbeat me profúndum: * Exáudi me, & réspice in me; † Inténde ánimæ meæ & líbera eam. *Psal.* 68. *v.* 15. 17.

℣. Miserére mei, Dómine Fili David; Dómine, ádjuva me. *Matth.* 15. *v.* 22. 25. * Exáudi me.

℣. Salvátor ómnium hóminum, máximè fidélium. 1. *Tim.* 4. 10. † Inténde.

℣. Réquiem ætérnam dona eis, Dómine; & lux perpétua lúceat eis.

*Repetitur*, Líbera me, *usque ad primum Versum.*



# COMMENDATIONES DEFUNCTORUM

*Dicuntur in Commemoratione omnium Fidelium defunctorum post Primam, dicto* Pretiósa, *ut ibidem notatur. Dicuntur etiam in die Depositionis defuncti, aut aliis diebus sequentibus, ex consuetudine vel devotione: sed tunc in Antiphonis & Orationibus (exceptâ Oratione* Fidélium) *quæ ponuntur in plurali, dicuntur in singulari. Absolutè incipitur à Responsorio.*

DO'mine Deus, audi nunc oratiónem mortuórum I'sraël, qui peccavérunt ante te. Noli meminísse iniquitátum patrum nostrórum, sed * Meménto manûs tuæ, & nóminis tui. *Baruch* 3. 4. 5.

℣. Occísus es, Dómine, & redemísti nos Deo in sánguine tuo. *Apocal.* 5. 9. * Meménto.

Orémus. *Oratio.*

TIbi, Dómine, commendámus ánimam fámuli tui N. ut defúnctus (*vel* fámulæ tuæ N. ut defúncta) século tibi vivat: & quæ per fragilitátem humánæ conversatiónis peccáta commísit, tu véniâ misericordíssimæ pietátis abstérge; Per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Alia Oratio.*

MIsericórdiam tuam, Dómine sancte, Pater omnípotens, ætérne Deus, pietátis affèctu rogáre pro áliis cógimur, qui pro nostris rogáre peccátis nequáquam sufficimus; tamen de tua confísi gratúita pietáte & bonitáte, cleméntiam tuam depóscimus, ut ánimam fámuli tui (*vel* fámulæ tuæ) ad te reverténtem, cum benignitáte suscípias: adsit ei A'ngelus testaménti tui Míchaël, & per manus sanctórum A'ngelórum tuórum inter Sanctos & eléctos tuos, in sinu A'brahæ, I'saac, & Jacob Patriarchárum tuórum eam collocáre dignéris, quátenus liberáta de princípibus tenebrárum & de locis pœnárum, nullis jam primævæ nativitátis, vel ignorántiæ, aut própriæ iniquitátis seu fragilitátis confundátur erróribus; sed agnoscátur à Sanctis tuis, & sanctæ beatitúdinis réquie perfruátur; ut cùm magni judícii dies advénerit, inter Sanctos & eléctos tuos resuscitátus, (*vel* resuscitáta) glóriâ maniféstæ contemplatiónis tuæ perpétuò satiétur; Per Christum Dóminum nos-

trum. ℟. Amen.

*Antiph. 4. irreg.* D. Qui timent.

*Psalmus*, In éxitu, *p.* 30.

*In cujus fine, & aliorum Psalmorum dicitur* Réquiem ætérnam, *&c.*

*Ant.* Qui timent Dóminum speravérunt in Dómino, adjútor eórum & protéctor eórum est. *Ps.* 113. 11.

Orémus. *Oratio.*

OMnípotens, sempitérne Deus, qui humáno córpori ánimam ad similitúdinem tuam inspiráre dignátus es: dum, te jubénte, pulvis in púlverem revértitur; tu imáginem tuam cum Sanctis & eléctis tuis sédibus ætérnis præcípias sociári; eámque ad te reverténtem de Ægypti pártibus, blandè leniterque suscípias, & A'ngelos tuos sanctos ei óbviàm mittas; viámque illi justítiæ demónstra, & portas glóriæ tuæ áperi. Repélle, quæsumus, Dómine, ab ea omnes príncipes tenebrárum; & agnósce depósitum fidéle quod tuum est. Súscipe, Dómine, creatúram tuam, non à diis aliénis creátam, sed à te solo Deo vivo & vero; quia non est álius Deus præter te, Dómine, & non est secúndùm ópera tua. Lætífica, clementíssime Pater, ánimam ejus, & clarífica eam in multitúdine misericórdiæ tuæ. Ne memíneris, quæsumus, iniquitátum ejus antiquárum, quas suscitávit furor mali desidérii: licèt enim peccáverit, tamen te non negávit; sed signo fidei insignita, te qui ómnia, & eam inter ómnia fecísti, fidéliter adorávit; Qui vivis & regnas Deus, per ómnia sécula seculórum. ℟. Amen.

*Ant.* 2. d. Circundedérunt.

*Psal.* Diléxi, *pag.* 61. Crédidi, *ibid.* Laudáte Dóminum omnes gentes, *p.* 161. Confitémini, *p.* 15. *Totus Psalmus*, Beáti immaculáti, *ad Horas Dominica distributus*, *p.* 16.

*Finitis Psalmis, dicitur*

*Ant.* Circundedérunt me dolóres mortis, & perícula inférni invenérunt me. O Dómine, líbera ánimam meam. *Ps.* 114. *v.* 3. 4.

Kyrie eléïson. Christe eléïson. Kyrie eléïson. Pater noster, *secretò.* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Clamávi ad te, Dómine; dixi: Tu es spes mea, ℟. Pórtio mea in terra vivéntium. *Ps.* 141. 6.

℣. Educ de custódia ánimam meam, ad confiténdum nómini tuo; ℟. Me expéctant justi, donec retríbuas mihi. *Ps.* 141. 8.

℣. Custódi ánimam meam, & érue me: ℟. Non erubés-

cam, quóniam sperávi in te. *Ps.* 24. 20.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101, 2.

℣. Dóminus vobíscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

DIri vúlneris novitáte percúlsi, & quodámmodò córdibus sauciáti, misericórdiam tuam, mundi Redémptor, flebílibus vócibus implorámus; ut chari nostri (*vel* charæ nostræ) N. ánimam, ad tuam cleméntiam, qui fons pietátis es, reverténtem, blandè lenitérque suscípias; & quas ex carnáli contagióne contráxit máculas, tu Deus, sólitâ bonitáte cleménter déleas, piè indúlgeas, obliviónì in perpétuum tradas; atque hanc laudem tibi cum céteris redditúram, & ad corpus próprium quandóque reversúram, Sanctórum tuórum cœtibus aggregári præcípias.

PArtem beátæ resurrectiónis obtíneat, quæsumus, Dómine, ánima fámuli tui (*vel* fámulæ tuæ) N. vitámque ætérnam habére mereátur in cœlis; per te, Jesu Christe Salvátor mundi, qui cum Patre, *&c.*

DEus, cui soli cómpetit medicínam præstáre post mortem, præsta, quæsumus, ut ánima fámuli (*vel* fámulæ tuæ) terrénis exúta contágiis, in tuæ redemptiónis parte numerétur; Per.

℣. Requiéscant in pace.

℟. Amen.

# PSALMI GRADUALES.

*Dicuntur quinque primi Psalmi sine* Glória Patri, *sed in fine ultimi dicitur*, Réquiem ætérnam, *&c.*

*Inchoantur absolutè sine Antiphona Psalmi*, Ad Dóminum cùm tribulárer, *p.* 62. Levávi óculos, *Ibid.* Lætátus sum, *Ibid.* Ad te levávi, *p.* 85. Nisi quia Dóminus. *p.* 86.

*Deinde dicitur flexis genibus*, Kyrie eléison, Christe eléison, Kyrie eléison. Pater noster, *secretè.* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Convértere, Dómine, úsquequo? ℟. Et deprecábilis esto super servos tuos. *Ps.* 89. 13.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam; ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

℣. Dóminus vobíscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

ABsólve, quæsumus, Dómine, ánimas famulórum

rum famularúmque tuárum, & ómnium fidélium defunctórum ab omni vínculo delictórum; ut in resurrectiónis glória, inter Sanctos & eléctos tuos resuscitáti respirent; Per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Post Orationem statim dicuntur sequentes alii quinque Psalmi absolutè; & in fine cujuslibet dicitur* Glória Patri.

*Psalmi*, Qui confidunt, *p.* 86. In converténdo, *Ibid.* Nisi Dóminus, *p.* 87. Beáti omnes, *p.* 104. Sæpe expugnavérunt, *p.* 105.

*Deinde dicitur flexis genibus*, Kyrie eléïson. Christe eléïson. Kyrie eléïson. Pater noster, *secretò.* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Memor esto congregatiónis tuæ; ℟. Quam possedísti ab inítio. *Ps.* 73. 2.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam. ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

℣. Dóminus vobíscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

DEus, cui próprium est miseréri semper & párcere, súscipe deprecatiónem nostram; ut nos & omnes fámulos tuos, quos delictórum caténa constringit, miserátio pietátis tuæ cleménter absólvat; Per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Similiter post hanc Orationem dicuntur sequentes quinque Psalmi, cum* Glória Patri, *in fine cujuslibet.*

*Psalmi*, De profúndis, *p.* 105. Dómine, non est exaltátum, *Ibid.* Meménto, Dómine, *p.* 125. Ecce quàm bonum, *pag.* 106. Ecce nunc benedícite, *p.* 33.

*Deinde dicitur flexis genibus*, Kyrie eléïson. Christe eléïson. Kyrie eléïson. Pater noster, *secretò.* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Deus ómnium, miserére plebi tuæ, ℟. Super quam invocátum est nomen tuum. *Eccli.* 36. 14.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

℣. Dóminus vobíscum;

℟. Et cum spíritu tuo.

*Oratio.*

PRætende, quæsumus, Dómine, fámulis & famulábus tuis déxteram cœléstis auxílii; ut te toto corde perquírant, & quæ dignè póstulant, cónsequi mereántur; Per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

# BENEDICTIO MENSÆ ante prandium.

*Qui benedicit mensam, incipit*, Benedícite. *Alii respondent*, Dóminus. *Deinde dicit* ℣. O'culi ómnium *&* *alii prosequuntur*, In te sperant, Dómine; & tu das escam illórum in témpore opportúno. A'peris tu manum tuam, & imples omne ánimal benedictióne. *Ps.* 144. *v.* 15. 16.

℣. Glória Patri. ℟. Sicut erat. Kýrie eléïson. Christe eléïson. Kýrie eléïson. Pater noster, *secretò usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo. *Posteà dicitur*,

Orémus.

BE'nedic, Dómine, nos, & hæc † tua dona, quæ de tua largitáte sumus sumptúri; per Christum Dóminum nostrum. ℟. Amen.

*Lector dicit*, Jube, Dómine, benè dícere.

*Benedictio*, Mensæ cœléstis partícipes fáciat nos Rex ætérnæ glóriæ. ℟. Amen.

GRATIARUM ACTIO POST PRANDIUM.

*Dicto in fine Lectionis*, Tu autem, Dómine, miserére nostri. ℟. Deo grátias, *qui benedixit mensam, incipit* ℣. Confiteántur tibi, Dómine, ómnia ópera tua, ℟. Et Sancti tui benedícant tibi. *Ps.* 144. 10. ℣. Glória Patri. ℟. Sicut erat.

*Posteà dicit*, A'gimus tibi grátias, omnípotens Deus, pro univérsis benefíciis tuis, qui vivis & regnas in sécula seculórum. ℟. Amen.

*Deinde alternatim dicitur Psalmus*, Miserére mei, Deus, *p.* 173. *vel Psalmus*, Laudáte Dóminum omnes gentes, *pag.* 161.

*In fine* Glória Patri; *deinde* Kýrie eléïson. Christe eléïson. Kýrie eléïson. Pater noster, *secretò usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Dispérsit, dedit paupéribus; ℟. Justítia ejus manet in séculum séculi. *Ps.* 111. 9.

℣. Benedícam Dóminum in omni témpore, ℟. Semper laus ejus in ore meo. *Ps.* 33. 2.

℣. In Dómino laudábitur ánima mea: ℟. A'udiant mansuéti, & læténtur. *Ps.* 33. 3.

℣. Magnificáte Dóminum mecum, ℟. Et exaltémus nomen ejus in idípsum. *Psal.* 33. 4.

℣. Sit nomen Dómini benedíctum, ℟. Ex hoc nunc & usque in séculum. *Ps.* 112.

RETribúere dignáre, Dómine, ómnibus nobis bona faciéntibus, propter nomen tuum vitam ætérnam. ℞. Amen.

℣. Benedicámus Dómino. ℞. Deo grátias.

℣. Fidélium ánimæ per misericórdiam Dei requiéscant in pace. ℞. Amen.

Pater noster, *secretò, quo finito dicitur*, ℣. Deus det nobis suam pacem. ℞. Amen.

# BENEDICTIO MENSÆ ante cœnam.

*Qui benedicit mensam, dicit*, Benedícite, *& alii respondent*, Dóminus. *Deinde incipit* ℣. Edent páuperes, *& alii prosequuntur*, Et saturabúntur: & laudábunt Dóminum qui requírunt eum: vivent corda eórum in séculum séculi. *Ps.* 21. 27.

℣. Glória Patri. ℞. Sicut erat. Kyrie eléïson. Christe eléïson. Kyrie eléïson. Pater noster, *secretò usque ad* ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℞. Sed líbera nos à malo.

Orémus.

BE'nedic, Dómine, nos, & hæc † tua dona, quæ de tua largitáte sumus sumptúri; per Christum Dóminum nostrum. ℞. Amen.

*Lector dicit*, Jube, Dómine, benè dícere.

*Benedictio*, Ad cœnam vitæ ætérnæ perdúcat nos Rex ætérnæ glóriæ. ℞. Amen.

## GRATIARUM ACTIO POST CŒNAM.

*In fine cœnæ dicitur*, ℣. Memóriam fecit mirabílium suórum miséricors & miserátor Dóminus: ℞. Escam dedit timéntibus se. *Ps.* 110. 4.

℣. Glória Patri, & Fílio, & Spirítui sancto: ℞. Sicut erat in princípio, & nunc, & semper, & in sécula seculórum. Amen.

*Qui benedixit mensam, dicit*,

BEnedíctus Deus in donis suis, & sanctus in ómnibus opéribus suis; qui vivit & regnat in sécula seculórum. ℞. Amen.

*Posteà dicitur alternatim Psalmus*, Laudáte Dóminum omnes gentes, *p.* 161. *& reliqua, ut suprà post prándium.*

IN JEJUNIIS, *ad refectionem fit Benedictio mensæ & Gratiarum actio, ut notatum est pro cœna.*

# ITINERARIUM.

*Viator, in ipso itineris ingressu, si solus fuerit, dicat quæ sequuntur in singulari; si cum sociis, in plurali, ut sequitur.*

*Ant.* In viam pacis.

*Canticum*, Benedíctus Dóminus Deus I'sraël, *p.* 13.

*Ant.* In viam pacis & prosperitátis dírigat nos omnípotens & miséricors Dóminus: & A'ngelus Ráphaël comitétur nobíscum in via, ut cum pace, salúte, & gáudio revertámur ad própria.

Kýrie eléïson. Christe eléïson. Kýrie eléïson. Pater noster, *secretò*. ℣. Et ne nos indúcas in tentatiónem; ℟. Sed líbera nos à malo.

℣. Salvos fac servos tuos, ℟. Deus meus, sperántes in te. *Ps.* 85. 2.

℣. Mitte nobis, Dómine, auxílium de sancto, ℟. Et de Sion tuére nos. *Ps.* 19. 2.

℣. Esto nobis, Dómine, turris fortitúdinis ℟. A' fácie inimíci. *Ps.* 60. 4.

℣. Nihil profíciat inimícus in nobis, ℟. Et fílius iniquitátis non appónat nocére nobis. *Ps.* 88. 23.

℣. Benedíctus Dóminus die quotídiè: ℟. Prósperum iter fáciat nobis Deus salutárium nostrórum. *Ps.* 67. 20.

℣. Vias tuas, Dómine, demónstra nobis; ℟. Et sémitas tuas édoce nos. *Ps.* 24. 4.

℣. U'tinam dirigántur viæ nostræ. ℟. Ad custodiéndas justificatiónes tuas! *Ps.* 118. 5.

℣. Erunt prava in dirécta, ℟. Et áspera in vias planas. *Isa.* 40. 4.

℣. A'ngelis suis Deus mandávit de te, ℟. Ut custódiant te in ómnibus viis tuis. *Ps.* 90. 11.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

℣. Dóminus vobíscum, ℟. Et cum spíritu tuo.

Orémus. *Oratio.*

Deus, qui fílios I'sraël per maris médium sicco vestígio ire fecísti, quique Magis iter ad te stellâ duce pandísti; tríbue, quæsumus, iter prósperum, tempúsque tranquíllum; ut, A'ngelo tuo sancto cómite, ad eum quò pérgimus locum, ac demum ad ætérnæ salútis portum perveníre felíciter valeámus.

Deus, qui A'braham púerum tuum de Ur Chaldæórum edúctum, per omnes suæ peregrinatiónis vias illæsum custodísti; quæsumus, ut nos fámulos tuos custodíre dignéris: esto nobis, Dómine, in procínctu suffrágium, in via solátium, in æstu um-

bráculum, in plúvia & frigore teguméntum, in lassitúdine vehículum, in adversitáte præsídium, in lúbrico báculus, in naufrágio portus; ut, te duce, quò téndimus, prósperè perveniámus, & demum incólumes ad própria redeámus.

ADésto, quǽsumus, Dómine, supplicatiónibus nostris: & viam famulórum tuórum in salútis tuæ prospéritáte dispóne; ut inter omnes viæ & vitæ hujus varietátes tuo semper protegámur auxílio.

PRæsta, quǽsumus, omnípotens Deus, ut família tua per viam salútis incédat; & beáti Joánnis Præcursóris hortaménta sectándo, ad eum quem prædíxit, secúra pervéniat, Dóminum nostrum Jesum Christum Fílium tuum; Qui tecum. ℟. Amen.

℣. Procedámus cum pace in nómine Dómini. ℟. Amen.

# PRÆPARATIO AD MISSAM pro opportunitate Sacerdotis facienda.

*Ant.* Dómine.

*Psalmus* 83.

QUàm dilécta tabernácula tua, Dómine virtútum! * concupíscit & déficit ánima mea in átria Dómini.

Cor meum & caro mea * exultavérunt in Deum vivum.

E'tenim passer invénit sibi domum, * & turtur nidum sibi, ubi ponat pullos suos.

Altária tua, Dómine virtútum, * Rex meus, & Deus meus.

Beáti, qui hábitant in domo tua, Dómine, * in sǽcula sæculórum laudábunt te.

Beátus vir, cujus est auxílium abs te, * ascensiónes in corde suo dispósuit, in valle lacrymárum, in loco quem pósuit.

E'tenim benedictiónem dabit legislátor, ibunt de virtúte in virtútem; * vidébitur Deus deórum in Sion.

Dómine Deus virtútum, exáudi oratiónem meam, * áuribus pércipe, Deus Jacob.

Protéctor noster áspice, Deus, * & réspice in fáciem Christi tui.

Quia mélior est dies una in átriis tuis * super míllia.

Elégi abjéctus esse in domo Dei mei, * magis quàm habitáre in tabernáculis peccatórum.

Quia misericórdiam & veritátem díligit Deus, * grá-

tiam & glóriam dabit Dóminus.

Non privábit bonis eos, qui ámbulant in innocéntia: * Dómine virtútum, beátus homo qui sperat in te.

*Psalmus* 84.

BEnedixísti, Dómine, terram tuam, * avertísti captivitátem Jacob.

Remisísti iniquitátem plebis tuæ, * operuísti ómnia peccáta eórum.

Mitigásti omnem iram tuam, * avertísti ab ira indignatiónis tuæ.

Convérte nos, Deus salutáris noster, & * avérte iram tuam à nobis.

Nunquid in ætérnum irascéris nobis? * aut exténdes iram tuam à generatióne in generatiónem.

Deus, tu convérsus vivificábis nos, * & plebs tua lætábitur in te.

Osténde nobis, Dómine, misericórdiam tuam, * & salutáre tuum da nobis.

A'udiam quid loquátur in me Dóminus Deus, * quóniam loquétur pacem in plebem suam.

Et super sanctos suos, * & in eos qui convertúntur ad cor.

Verúntamen prope timéntes eum salutáre ipsíus; * ut inhábitet glória in terra nostra.

Misericórdia & véritas obviavérunt sibi; * justítia & pax osculátæ sunt.

Véritas de terra orta est; * & justítia de cœlo prospéxit.

E'tenim Dóminus dabit benignitátem, * & terra nostra dabit fructum suum.

Justítia ante eum ambulábit, * & ponet in via gressus suos.

*Psalmus* 85.

INclína, Dómine, aurem tuam, & exáudi me; * quóniam inops & pauper sum ego.

Custódi ánimam meam, quóniam sanctus sum: * salvum fac servum tuum, Deus meus, sperántem in te.

Miserére mei, Dómine, quóniam ad te clamávi totâ die: * lætífica ánimam servi tui, quóniam ad te, Dómine, ánimam meam levávi.

Quóniam tu Dómine, suávis & mitis, * & multæ misericórdiæ ómnibus invocántibus te.

A'uribus pércipe, Dómine, oratiónem meam, * & inténde voci deprecatiónis meæ.

In die tribulatiónis meæ clamávi ad te, * quia exaudísti me.

Non est símilis tui in diis, Dómine, * & non est secúndùm ópera tua.

Omnes Gentes quascúm-

quæ fecísti, vénient, & adorábunt coram te, Dómine, * & glorificábunt nomen tuum.

Quóniam magnus es tu, & fáciens mirabília; * tu es Deus solus.

Deduc me, Dómine, in via tua, & ingrédiar in veritáte tua; * & lætétur cor meum, ut tímeat nomen tuum.

Confitébor tibi, Dómine Deus meus, in toto corde meo, * & glorificábo nomen tuum in ætérnum;

Quia misericórdia tua magna est super me, * & eruísti ánimam meam ex inférno inferióri.

Deus, iníqui insurrexérunt super me, & synagóga poténtium quæsiérunt ánimam meam, * & non proposuérunt te in conspéctu suo.

Et tu Dómine Deus miserátor & miséricors, * pátiens, & multæ misericórdiæ, & verax.

Réspice in me, & miserére mei, * da impérium tuum púero tuo, & salvum fac fílium ancíllæ tuæ.

Fac mecum signum in bonum, ut vídeant qui odérunt me, & confundántur, * quóniam tu, Dómine, adjuvísti me, & consolátus es me.

*Psalmus 115.*

CRédidi, propter quod locútus sum: * ego autem humiliátus sum nimis.

Ego dixi in excéssu meo: * Omnis homo mendax.

Quid retríbuam Dómino, * pro ómnibus quæ retríbuit mihi?

Cálicem salutáris accípiam; * & nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam coram ómni pópulo ejus: * pretiósa in conspéctu Dómini mors sanctórum ejus.

O Dómine, quia ego servus tuus, * ego servus tuus, & fílius ancíllæ tuæ.

Dirupísti víncula mea; * tibi sacrificábo hóstiam laudis, & nomen Dómini invocábo.

Vota mea Dómino reddam in conspéctu omnis pópuli ejus, * in átriis domûs Dómini, in médio tui, Jerúsalem.

*Psalmus 129.*

DE profúndis clamávi ad te, Dómine: * Dómine, exáudi vocem meam.

Fiant aures tuæ intendéntes * in vocem deprecatiónis meæ.

Si iniquitátes observáveris, Dómine: * Dómine, quis sustinébit?

Quia apud te propitiátio est; * & propter legem tuam sustínui te, Dómine.

Sustínuit ánima mea in verbo ejus, * sperávit ánima mea in Dómino.

A custódia matutína usque ad noctem * speret Israël in Dómino.

Quia apud Dóminum misericórdia, * & copiósa apud eum redémptio.

Et ipse rédimet Israël * ex ómnibus iniquitátibus ejus.

Glória Patri, & Fílio, & Spirítui sancto.

Sicut erat in princípio, & nunc & semper.

*Ant.* Dómine, memor esto mei; & ne vindíctam sumas de peccátis meis, neque reminiscáris delícta mea, vel paréntum meórum. *Tob.* 3. 3.

KYrie eléïson. Christe eléïson. Kyrie eléïson. Pater noster, *&c.* Et ne nos, *&c.* ℣. Ego dixi: Dómine, miserére mei; ℟. Sana ánimam meam, quia peccávi tibi. *Ps.* 40. 5.

℣. Convértere, Dómine, úsquequo? ℟. Et deprecábilis esto super servos tuos. *Psal.* 89. 13.

℣. Fiat misericórdia tua, Dómine, super nos, ℟. Quemádmodùm sperávimus in te. *Psal.* 32. 22.

℣. Sacerdótes tui induántur justítiam; ℟. Et sancti tui exúltent. *Ps.* 131. 9.

℣. Ab occúltis meis munda me, Dómine, ℟. Et ab aliénis parce servo tuo. *Ps.* 18. 13.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

Orémus.

AUres tuæ pietátis, mitíssime Deus, inclína précibus nostris, & grátiâ sancti Spíritûs illúmina cor nostrum; ut tuis mystériis dignè ministráre, teque ætérnâ charitáte dilígere mereámur.

DEus, cui omne cor patet, & omnis volúntas lóquitur, & quem nullum latet secrétum; purífica per infusiónem sancti Spíritûs cogitatiónes cordis nostri, ut te perféctè dilígere, & dignè laudáre mereámur.

URe igne sancti Spíritûs renes nostros, & cor nostrum, Dómine; ut tibi casto córpore serviámus, & mundo corde placeámus.

MEntes nostras, quǽsumus, Dómine, Paraclétus qui à te procédit illúminet; & indúcat in omnem, sicut tuus promísit Fílius, veritátem.

ADsit nobis, quǽsumus, Dómine, virtus Spíritûs sancti; quæ & corda nostra cleménter expúrget, & ab ómnibus tueátur advérsis.

DEus, qui corda fidélium sancti Spíritûs illustratióne docuísti; da nobis in eódem Spíritu recta sápere, & de ejus semper consolatióne gaudére.

Conscientias nostras, quæsumus Domine, visitando purifica; ut veniens Dominus noster Jesus Christus Filius tuus, paratam sibi in nobis inveniat mansionem; qui tecum vivit.

# GRATIARUM ACTIO post Missam.

*Ant.* Benedicite.

*Canticum trium puerorum. Dan. 3. 57.*

BEnedicite omnia opera Domini Domino: * laudate & superexaltate eum in secula.

Benedicite Angeli Domini Domino: * benedicite cœli Domino.

Benedicite aquæ omnes, quæ super cœlos sunt, Domino: * benedicite omnes virtutes Domini Domino.

Benedicite sol & luna Domino: * benedicite stellæ cœli Domino.

Benedicite omnis imber & ros Domino: * benedicite omnes spiritus Dei Domino.

Benedicite ignis & æstus Domino: * benedicite frigus & æstus Domino.

Benedicite rores & pruina Domino: * benedicite gelu & frigus Domino.

Benedicite glacies & nives Domino: * benedicite noctes & dies Domino.

Benedicite lux & tenebræ Domino: * benedicite fulgura & nubes Domino.

Benedicat terra Dominum; * laudet & superexaltet eum in secula.

Benedicite montes & colles Domino, * benedicite universa germinantia in terra Domino.

Benedicite fontes Domino: * benedicite maria & flumina Domino.

Benedicite cete, & omnia quæ moventur in aquis Domino: * benedicite omnes volucres cœli Domino.

Benedicite omnes bestiæ & pecora Domino: * benedicite filii hominum Domino.

Benedicat Israël Dominum; * laudet & superexaltet eum in secula.

Benedicite Sacerdotes Domini Domino: * benedicite servi Domini Domino.

Benedicite spiritus & animæ justorum Domino: * benedicite sancti & humiles corde Domino.

Benedicite Anania, Azaria, Misaël Domino; * laudate & superexaltate eum in secula.

Benedicamus Patrem, & Filium cum sancto Spiritu;

* laudémus & superexaltémus eum in sécula.

*Psalmus* 150.

LAudáte Dóminum in sanctis ejus; * laudáte eum in firmaménto virtútis ejus.

Laudáte eum in virtútibus ejus: * laudáte eum secúndùm multitúdinem magnitúdinis ejus.

Laudáte eum in sono tubæ: * laudáte eum in psaltério, & cíthara.

Laudáte eum in tympano, & choro: * laudáte eum in chordis, & órgano.

Laudáte eum in cymbalis benesonántibus; laudáte eum in cymbalis jubilatiónis: * omnis spíritus laudet Dóminum.

*Ant.* Benedícite sacerdótes Dómini Dómino; laudáte & superexaltáte eum in sécula. *Dan.* 3. 84.

*Posteà Sacerdos dicit*,

KYrie eléïson. Christe eléïson. Kyrie eléïson. Pater noster, &c. Et ne nos, *&c.* ℣. Confiteántur tibi, Dómine, ómnia ópera tua; ℟. Et Sancti tui benedicant tibi. *Ps.* 144. 10.

℣. Exultábunt Sancti in glória; ℟. Lætabúntur in cubílibus suis. 149. 5.

℣. Non nobis, Dómine, non nobis, ℟. Sed nómini tuo da glóriam. *Ps.* 113. 1.

℣. Dómine, exáudi oratiónem meam, ℟. Et clamor meus ad te véniat. *Ps.* 101. 2.

Orémus.

DEus, qui tribus púeris mitigásti flammas ígnium; concéde propítius, ut nos fámulos tuos non exúrat flamma vitiórum.

ACtiónes nostras, quæsumus Dómine, aspirándo præveni, & adjuvándo proséquere; ut cuncta nostra orátio & operátio, à te semper incípiat, & per te cœpta finiátur.

DA nobis, quæsumus, Dómine, vitiórum nostrórum flammas extínguere; qui beáto Lauréntio tribuísti tormentórum suórum incéndia superáre; per Christum Dóminum nostrum.

℟. Amen.



LITANIÆ

# PSALMORUM INDEX.

# CANTICORUM INDEX.



# HYMNORUM INDEX.

*Hymni caractere italico designati ad usum hujus Breviarii de novo editi sunt.*

# INTONATIONES,
# MEDIATIONES,
# TERMINATIONES
## ET NEUMATA OCTO TONORUM.

1. *Intonatio adhibetur tantùm ad primum Psalmi Versum; reliqui Versus à Nota dominante in directum resumuntur: in Canticis verò*, Benedictus, Magnificat *&* Nunc dimittis *singuli Versus inchoantur ut primus, eaque intonatio primi Versûs nunquam omittitur in Canticis Evangelicis, etiamsi Canticum incipiat ut Antiphona: tunc enim incipitur Canticum nullâ habitâ ratione intonationis Antiphonæ.*

2. *Mediatio fit paulò diversè in aliis Versibus, & non est prorsus eadem ac in primo Versu exceptis primo & sexto tono. Item quando est dictio monosyllaba vel Hebræa non declinata.*

3. *Terminatio in omnibus Versibus semper fit ut in primo Versu.*

4. *Terminationes per Litteras alphabeticas* a, b, c, d, e, f, g, *designantur: quæ Litteræ notis cantûs respondent hoc modo:*

| a | b | c | d | e | f | g |
|---|---|---|---|---|---|---|
| la | si | ut | re | mi | fa | sol |

5. *Neuma sive jubilum in Festis Triplicibus primæ classis & suprà, fit in fine cujusque Antiphonæ. In Festis verò Triplicibus secundæ classis & infrà, fit tantùm in fine ultimæ Antiphonæ Vesperarum, Officii nocturni, & Laudum; post Antiphonas Canticorum Evangelicorum; & in fine Antiphonæ, Primæ, Tertiæ, Sextæ, Nonæ, & Completorii.*

6. *Fit etiam in fine Hymni* Te Deum.

7. *Nunquam fit Neuma in fine Antiphonæ ad* Nunc dimittis, *nec in quacunque Commemoratione in fine Antiphonæ; item à Feria V. in Cœna Domini, ad primas Vesperas Sabbati in Albis exclusivè, & à primis Vesperis Pentecostes inclusivè usque ad primas Vesperas Trinitatis exclusivè: non fit etiam*

*in Officio parvo Beatæ Mariæ & in Officio Defunctorum.*
*Fit Neuma in fine Versuum Pascha & Pentecostes.*

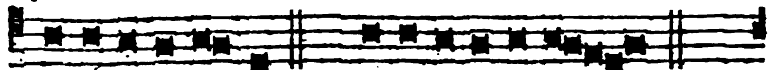
## PRIMI TONI.



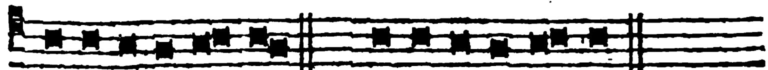

I-xit Do-minus Do-mi-no me- o. Do- nec



ponam i- ni-micos tu- os. E u o u a e. d.

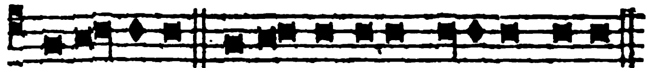


E u o u a e. D. E u o u a e. f.



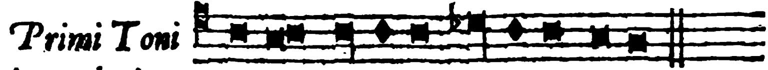
E u o u a e. F. E u o u a e. a.

*Elevatio Canticorum.*



Ma-gni- fi-cat. Et e- xul-tavit ſpi-ritus me-us.

*Primi Toni irregularis.*

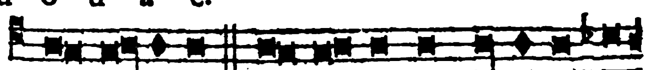


Di- xit Do-minus Do-mino me- o.

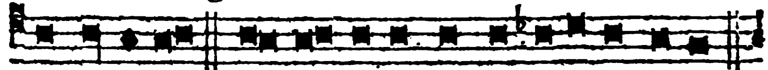


E u o u a e.

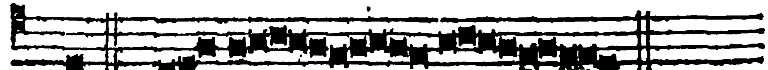
*Elevatio Canticorum.*



Ma- gni- ficat. Be- ne- dictus Do-minus De-



us I-ſra- ël. Et e- re-xit cor-nu ſa-lu-tis no-bis.



*Neuma primi Toni.*

SECUNDI TONI.

COn-fi-te-bor ti-bi, Do-mi-ne, in to-to cor-de me- o. Magna o-pe-ra Domi- ni. Memen- to, Do- mi-ne, Da-vid. In- dutus est. E u o u a e. d.

*Elevatio Cantico-rum.* Ma-gni- fi-cat a- nima, &c. Be-ne-di- ctus Domi-nus De- us I- sra-ël. Et e-re- xit cornu sa- lu- tis no- bis.

*Alter cantus secundi Toni.* Con-fite-bor ti-bi, Do-mine, in to-to cor- de me- o. De-co-rem in- du-tus est. Do mi-ne, David. E u o u a e. D.

*Elevatio Cantico-rum.* Ma-gni- fi- cat. Nunc di-mit- tis ser-vum tu-um, Do-mine. Qui- a vi- de-runt o-cu- li me- i.

*Neuma secundi Toni.*

TERTII TONI.

B E-a- tus vir qui ti- met Dominum. Po-tens in ter-

ra e- rit semen e-jus. Cre-di-di propter quod locu-

tus sum. E u o u a e. c. E u o u a e. a.

E u o u a e. A. E u o u a e. g.

E u o u a e. e.

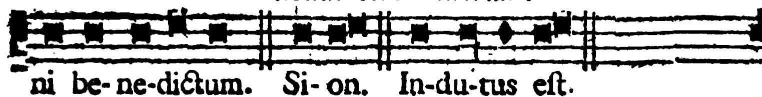
*Elevatio Canticorum.* Ma-gni- fi-cat. Et e- xul- ta-vit spi- ri-tus

me- us. Be-ne- di-ctus Domi-nus De- us I- sra- ël.

*Neuma tertii Toni.*

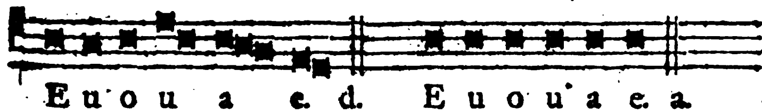
QUARTI TONI.
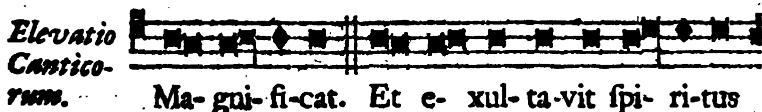
L Auda- te pu- e- ri Do- minum. Sit nomen Domi-

















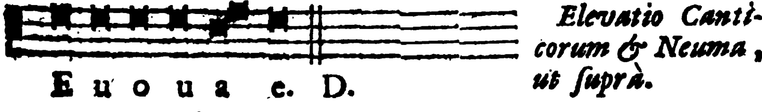

## *Neuma quarti Toni.*



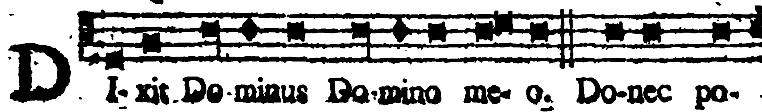


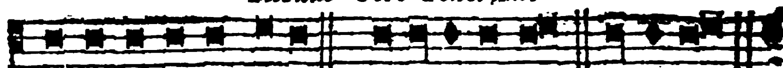




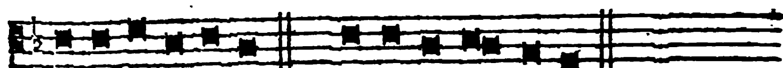




## QUINTI TONI.

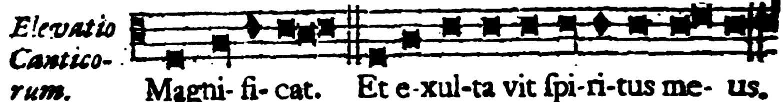




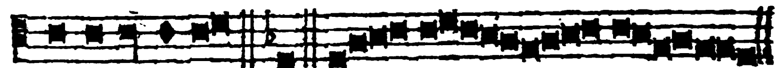
nam i- ni-mi-cos tu- os. Læta-bi-tur Rex. I-ſra- ël.



E u o u a e a. E u o u a e. f.

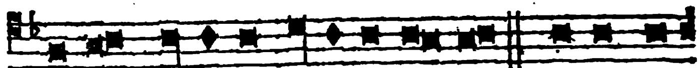


*Elevatio Canticorum.* Magni- fi- cat. Et e-xul-ta vit ſpi-ri-tus me- us.

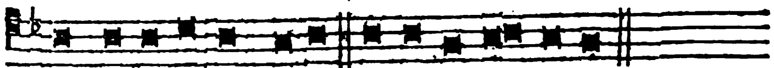


De-us I-ſra- ël. ***Neuma quinti Toni.***

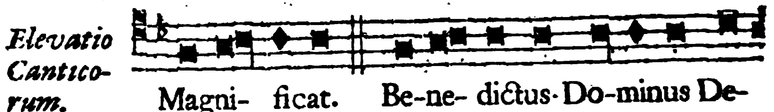
## SEXTI TONI.



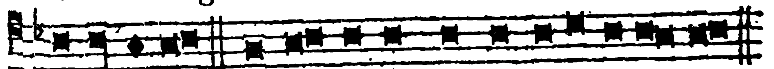
DIxit Do-mi-nus Domino me- o. Donec po-



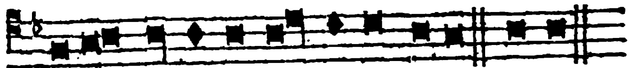
nam i-ni-mi-cos tu-os. E u o u a e. f.



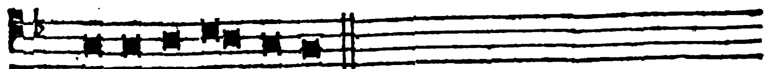
*Elevatio Canticorum.* Magni- ficat. Be-ne- dictus Do-minus De-
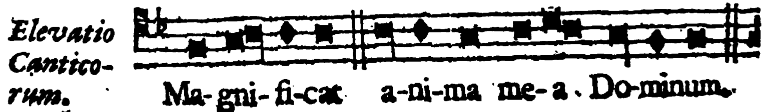


us I-ſra-ël. Et e- re-xit cor-nu ſa-lu-tis no-bis.



*Alter Cantus.* Di-xit Do-mi-nus Domi-no me-o. Donec,&c.



E u o u a e. F.



*Elevatio Canticorum.* Ma-gni-fi-cat a-ni-ma me-a. Do-minum.

Be- ne- di-ctus Do-mi-nus De- us I-ſra-ël. Et e- re-

xit cornu ſa-lu-tis nobis. *Sexti Toni irregularis.* Di-xit

Domi-nus Do-mi-no me- o. Memento, Do-mi-ne, Da-

vid. Læ-ta-bi- tur Rex. E u o u a e.

*Elevatio Cantico-rum.* Magni- fi-cat Be-ne-di-ctus Do-minus De-

us I- ſra-ël. *Neuma ſexti Toni.*

SEPTIMI TONI.

DIxit Do-minus Do-mi-no me- o. Do-nec po-

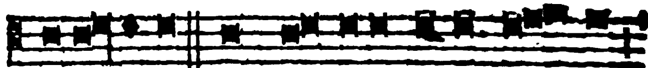
nam i-ni-micos tu- os. Cre-di-di pro-pter quod lo-

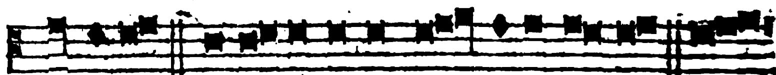
cu-tus ſum. E u o u a e. D. E u o u a e. d.

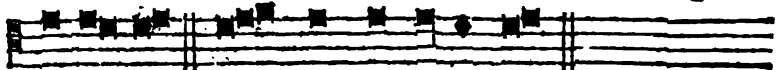
E u o u a. e. C. E u o u a e. c.

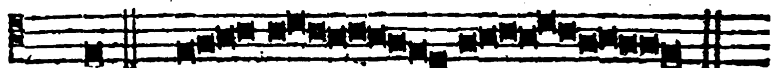
E u o u a e. b. E u o u a e. a. E u o u a e. g.

*Elevatio Canticorum.*



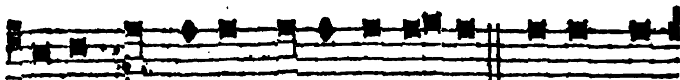



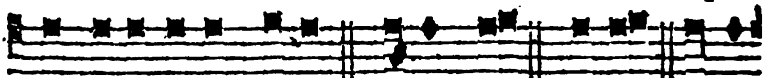



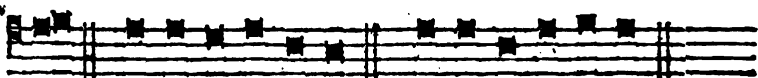
*Neuma Septimi Toni.*



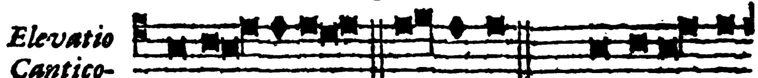

## OCTAVI TONI.

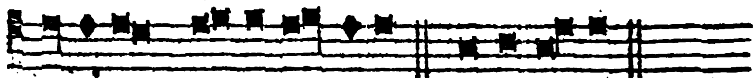


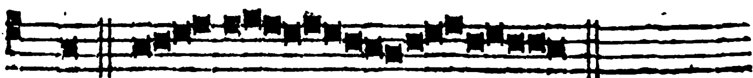




*Elevatio Canticorum.*



*Neuma Octavi Toni.*

